प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
(जैन विश्व भारती)

स्व० श्री बिरधीचन्दजी गोठी
एवं
मदनचन्दजी गोठी
की
पुण्य स्मृति
में
श्री जयचन्दलालजी
सूरजमलजी गोठी
परिवार (सरदारशहर)
के
आर्थिक सौजन्य
से
प्रकाशित

प्रकाशन तिथि
विक्रम सवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वा निर्वाण दिवस)

पृष्ठाक ११५०

मूल्य : ६०)

मुद्रक —
एस. नारायण एण्ड सस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाडी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI

II

BHAGAWAI

VIĀHAPANNATTI

(Bhagawati Sūtra with Original Text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCHĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN
(Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Published by the kind munificence of the members of the family of Sri Jaichand Lal Surajmal Gouti (Sardar Shahar) in sacred memory of Birdhichandji Gouti and Madan Chandji Gouti

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 1150

Rs. 90/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् वना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के वहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् वना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे संलग्न हो गया। अत मेरे इस अन्तस्तोष मे मैं उन सवको समभागी वनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति मे सविभागी रहे हैं। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		मुनि नथमल
	सहयोगी	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति मे उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सवको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य वने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,	जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।	होकर भी आगम-प्रधान था ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,	सत्य-योग मे प्रवर चित्त था,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥	उसी भिक्षु को विमल भाव से ।
विलोडियं आगमदुद्धमेव,	जिसने आगम-दोहन कर कर,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।	पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,	श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥	जयाचार्य को विमल भाव से ।
पवाहिया जेण सुयस्स धारा,	जिसने श्रुत की धार वहाई,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।	सकल सघ मे मेरे मन मे ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,	हेतुभूत श्रुत - सम्पादन मे,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥	कालुगणी को विमल भाव से ।

•

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई मे विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा मे उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर मे 'गाधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर मे ही क्यो न स्थापित की जाये ? दोनो सस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बाते उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गाधी विद्या-मन्दिर' सस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपडा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगो के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर मे भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गाधी विद्या-मन्दिर' की प्रवन्ध समिति के सदस्यो को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर मे स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियो के वृन्द सहित कर्नाटक मे नंदी पहाडी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच मे पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप मे आगे बढाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाडी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल मे पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनवद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप मे परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर मे स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहा महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी वैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से सावना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान मे होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नही किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से '६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-सशोधन का कार्य हाथ मे लिया। स० २०१३ मे लाडनूं मे आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनो वाद सुजानगढ मे दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना मे प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा मे कदम आगे वढे। पर अन्त मे प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन कीरूपरेखा इस प्रकार रही—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थमाला · मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला . मूलपाठ, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियो सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।

३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनो का प्रस्तुतीकरण।

४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमो से सम्वन्धित कथाओ का सकलन और अनुवाद।

५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला . आगमो का सक्षिप्त वर्गीकृत रूप मे प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रथमाला मे—(१) दसवेआलिय तह उतरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्राय. समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नही हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला मे—(१) दसवेआलिय एव (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्राय. समाप्त हुआ पर प्रकाशित नही हो पाया।

तीसरी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला मे कोई ग्रथ प्रकाशित नही हुआ ।

पाँचवी ग्रथमाला मे दो ग्रथ निकल चुके है · १. दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और २. उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति ख. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य मे सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति मे प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानो मे ज्यो-के-त्यो गूँज रहे है— "धन देने वाले तो मिल सकते है, पर जो इस प्रकाशन-कार्य मे जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्ही तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यो के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण मे श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना मे सम्पादित आगमो के सग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अचल से हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप मे ११ अगो को तीन खण्डो मे 'अगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड मे आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अग है ।
दूसरे खण्ड मे भगवती—पाँचवाँ अंग है ।

तीसरे खण्ड मे ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अग है ।

इस तरह ग्यारह अगो का तीन खण्डो मे प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है ।

ठाणाग सानुवाद सस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप मे 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप मे है । इसमे सभी आगमो का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटको के रूप मे दिया जा रहा है ।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने मे जिन महानुभावो के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हे संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए विना नही रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र है। इस सम्वन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

कार्य की प्रारंभिक व्यवस्था मे जैन विश्व भारती के उपसभापति श्री माणिकचदजी सेठिया एव श्री मोतीलालजी नाहटा ने मुझे वडा ही सहयोग दिया।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोडिया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त वन्धुओ को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये विना नही रह सकता, जिनका सतत् सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे वल देता रहा।

सन् १९७३ मे मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था मे लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मुद्रण की व्यवस्था बैठाई। कार्यारभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलव होने से कार्य मे द्रुतगति नही आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे वढा। स्वल्प समय मे इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम सपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा सपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैने इससे अधिक कुछ और नही किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर सस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप मे उस समय जनता के कर-कमलो मे आ रहे है, जवकि जगत्वद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वी निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, असारी रोड
२१, दरियागज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रो के मौलिक विभाग दो है—अग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते है। उनकी सख्या वारह है—१ आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग ४ समवायाग ५ व्याख्याप्रज्ञप्ति ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशा ८. अतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदशा १० प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। वारहवा अग अभी प्राप्त नही है। शेष ग्यारह अग तीन भागो मे प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग मे चार अग है,—१. आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग और ४ समवायाग, दूसरे भाग मे केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग मे शेष छह अग।

प्रस्तुत भाग अग साहित्य का दूसरा भाग है। इसमे व्याख्याप्रज्ञप्ति का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ मे सक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नही है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागो की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग मे ग्यारह अगो की भूमिका और पाचवे भाग मे उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

प्रस्तुत आगम का पाठ-सशोधन सात प्रतियो और टीकाओ के आधार पर किया गया है। हम पाठ-सशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नही चलते, किन्तु अर्थ-मीमासा, पूर्वापरप्रसग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रो के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान मे रखकर मूल पाठ का निर्धारण करते है। प्रस्तुत सूत्र की मूल टीका आज उपलब्ध नही है। चूर्णि उपलब्ध है किन्तु वह हमे प्राप्त नही हुई। अभयदेव सूरि ने अपनी वृत्ति मे जहा-जहा मूल टीका और चूर्णि को उद्धृत किया है, उसका भी हमने पाठ-निर्धारण मे उपयोग किया है। लिपिकारो ने समय-समय पर पाठ का सक्षेप किया है। उस सक्षेपीकरण के अनेक रूप मिलते है। पाठ-सशोधन मे प्रयुक्त प्रतियो मे क्रोधोपयुक्त आदि भगो की चार वाचनाए मिलती है। उनमे पाठ का सक्षेप भिन्न-भिन्न प्रकार से किया गया है, देखें—आगम पृ० ३६। लिपिभेद के कारण भी पाठ मे गलतिया हुई है। १।३६५ सूत्र मे प्रादोषिकी क्रिया के लिए 'पाओसियाए' पाठ है। कुछ प्रतियो मे 'पाउसियाए' पाठ मिलता है। प्राचीन लिपि मे 'ओ'

और 'उ' का भेद करना कठिन होता है। यही कारण है कि आधुनिक प्रतियो मे बहुलतया 'ओ' के स्थान मे 'उ' मिलता है। जो प्रतिया भाषाविद् लिपिकारो द्वारा लिखी गईं, उनमे 'ओकार' मिलता है, किन्तु जो केवल लिपिको द्वारा लिखी गई, उनमे 'ओकार' के स्थान मे 'उकार' हो गया। 'ओवासतरे' और 'उवासतरे' यह पाठ-भेद भी उक्त कारण से ही हुआ है। देखें—सूत्र १।३६२ (पृ० ६६), सूत्र १।४४४ (पृ० ७७)।

८।२४२ सूत्र मे 'छेत्तेहिं' पाठ है। लिपिभेद होते-होते 'वित्तेहिं', 'छत्तेहिं', 'चित्तेहिं'—इस प्रकार अनेक पाठ बन गए। ८।३०१ मे 'तदा' के स्थान पर 'तहा' पाठ हो गया।

कुछ प्रतियो मे सक्षिप्त वाचना है। वृत्तिकार को भी सक्षिप्त वाचना प्राप्त हुई थी इसलिए उन्होने लिखा कि अन्ययूथिक वक्तव्यता स्वय उच्चारणीय है। ग्रन्थ के बडा होने के भय से वह लिखी नही गई। वृत्तिकार ने वृत्ति मे सक्षिप्त पाठ को पूर्ण किया। कुछ लिपिको ने वृत्ति के पाठ को मूल मे लिखा और पूर्ण पाठ की वाचना सक्षिप्त पाठ की वाचना से भिन्न हो गई[1]।

कुछ आदर्शो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो वाचनाओ का मिश्रण मिलता है। सूत्र २।४७ (पृ० ८८) मे 'खदया पुच्छा' यह सक्षिप्त पाठ है। किसी लिपिकार ने प्रति के हासिये (Margin) मे अपनी जानकारी के लिए इसका पूरा पाठ लिख दिया और उसकी प्रतिलिपियो मे सक्षिप्त और विस्तृत—दोनो पाठ मूल मे लिख दिए गए, देखें—५।१२२ सूत्र का पादटिप्पण (पृ० २०६), २।११८ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० ११२)। ११।५६ मे पूरा पाठ और 'जहा ओवाइए' यह सक्षिप्त पाठ—दोनो साथ-साथ लिखे हुए है। असोच्चा केवली के प्रकरण मे भी ऐसा ही मिलता है। कुछ प्रतियो मे वृत्ति मे उद्धृत पाठ का समावेश हुआ है, देखें—२।७५ सूत्र का दूसरा पादटिप्पण (पृ० ६६)। कही-कही वृत्तिकार द्वारा किया हुआ वैकल्पिक अर्थ भी उत्तरवर्ती प्रतियो मे मूल पाठ के रूप मे स्वीकृत हो गया, देखें—५।५१ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० १६४)।

पाठ-सशोधन मे दूसरे आगमो के पाठो को भी आधार माना जाता है। २।६४ सूत्र मे 'चियत्ततेउरघरप्पवेसा' इस पाठ के अनन्तर सभी प्रतियो मे 'बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' यह पाठ है। वहा इसकी अर्थ-सगति नही होने के कारण वृत्तिकार को 'तैर्युक्ता इति गम्य' यह लिखना पडा, किन्तु ओवाइय और रायपसेणइय सूत्र को देखने से पता चलता है कि उक्त पाठ प्रतियो मे जहा लिखित है वहां नही होना चाहिए। उक्त दोनो सूत्रो के आधार पर आलोच्य पाठ का क्रम इस प्रकार बनता है—'ओसह-भेसज्जेण पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति।'

२२।१ सूत्र मे सभी आदर्शो मे 'सारकल्लाण जाव केवइ' पाठ लिखित है, किन्तु यहां 'जाव' का कोई प्रयोजन नही है। भगवती ८।२१७ तथा प्रज्ञापना के प्रथम पद के आधार पर 'जाव' के स्थान पर 'जावति' पाठ प्रमाणित होता है।

---

१ इह सूत्रेऽन्ययूथिकवक्तव्य स्वयमुच्चारणीय, ग्रन्थगौरवभयेनाऽलिखितत्वात्तस्य, तच्चेदम्। वृत्तिपत्र १०६।

पाठ मे वर्ण-परिवर्तन से वहुत वार अर्थ नही वदलता किन्तु कही-कही अर्थ समझने मे कठिनाई होती है और वह वदल भी जाता है। ६।६० सूत्र में 'हव्वि' पाठ है उसके 'हेट्ठि' और 'हिट्ठि'—ये दो पाठान्तर मिलते हैं। वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने यहा 'हव्वि' का अर्थ 'सम' किया है, देखे—वृत्ति पत्र २७१। स्थानाग सूत्र (८।४३) मे इसी प्रकरण मे 'हेट्ठि' पाठ है। वहा अभयदेवसूरि ने उसका अर्थ 'ब्रह्मलोक के नीचे' किया है, देखे—स्थानागवृत्ति पत्र ४१०।

कही-कही लेखक के समझभेद और लिपिभेद के कारण भी पाठ का परिवर्तन हुआ है। ६।१६५ सूत्र मे 'ओघरेमाणी-ओघरेमाणी' पाठ है। कुछ प्रतियो मे यह पाठ 'उवधरेमाणीओ-उवधरेमाणीओ' इस रूप मे मिलता है। एक प्रति मे यह पाठ 'उवरिधरेमाणीओ-उवरिधरेमाणीओ' इस रूप मे वदल गया।

पाठ-परिवर्तन के कुछेक उदाहरण इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि पाठ-सशोधन मे केवल प्रतियो या किसी एक प्रति को आधार नही माना जा सकता। विभिन्न आगमो, उनकी व्याख्याओ और अर्थसंगति के आधार पर ही पाठ का निर्धारण किया जा सकता है।

संक्षेपीकरण और पाठ-संशोधन की समस्या

देवर्धिगणि ने जव आगम सूत्र लिखे तव उन्होने सक्षेपीकरण की जो शैली अपनाई उसका प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करना वहुत कठिन कार्य है और वह कठिन इसलिए है कि उत्तरकाल मे अनेक आगमधरो ने अनेक वार आगम पाठो का सक्षेपीकरण किया है। सभव है कुछ लिपिको ने भी लेखन की सुविधा के लिए पाठ-सक्षेप किया है।

१३।२५ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे भवनपति देवो के प्रकार आदि जानने के लिए दूसरे शतक के देवोद्देशक की सूचना दी गई है, किन्तु वहा (२।११७, पृ० १११) विस्तृत पाठ नही है अपितु प्रज्ञापना के स्थानपद को देखने की सूचना मिलती है। १६।३३ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे तृतीय शतक (सूत्र २७, पृ० १३०) देखने की सूचना दी गई है, किन्तु वहा पाठ पूरा नही है। वहा 'रायपसेणइय' सूत्र देखने की सूचना दी गई है।

१६।७१ सूत्र के सक्षिप्त पाठ मे उद्रायण का प्रकरण (१३।११७, पृ० ६१४) देखने की सूचना है। वहा पाठ पूरा नही है। इसी प्रकार १६।१२१, १८।५६, १६।७७ मे विस्तृत पाठ की सूचनाए है, किन्तु सूचित स्थलो मे पाठ विस्तृत नही है।

उक्त सूचनाओ के आधार पर यह अनुमान होता है कि जिस समय मे पाठ सक्षिप्त किए गए उस समय सूचित स्थलो के पाठ पूर्ण थे। उसके पश्चात् किसी अनुयोगधर आचार्य ने उन पूर्ण पाठो का भी सक्षेपीकरण कर दिया। सक्षेपीकरण के लिए 'जाव', 'जहा' आदि पदो का प्रयोग किया गया है। कही-कही 'जाव' का अनावश्यक-सा प्रयोग हुआ है। वह या तो लिपिक का प्रमाद रहा है या प्रवाह के रूप में वह लिखा गया है। जहा 'जाव' का प्रयोग है वहा लिपिकारो ने पर्याप्त स्वतन्त्रता वरती है। किसी ने 'पावफल जाव कज्जति' लिखा है तो किसी ने 'पावफलविवाग जाव कज्जति' लिखा है। कही-कही 'विंद' (७।१६६), 'पयोग' (८।१७), 'सहस्स' (१६।१०३) जैसे छोटे

पाठो के स्थान पर भी 'जाव' पद लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के पाठ-सक्षेप लिपिकारो द्वारा समय-समय पर किए हुए प्रतीत होते है।

वर्तमान मे प्रस्तुत आगम की मुख्य दो वाचनाए मिलती है—सक्षिप्त और विस्तृत। सक्षिप्त वाचना का ग्रन्थ परिमाण १५७५१ अनुष्टुप् श्लोक परिमाण माना जाता है। विस्तृत वाचना का ग्रन्थ परिमाण सवा लाख अनुष्टुप् श्लोक माना जाता है। अभयदेवसूरि ने सक्षिप्त वाचना को ही आधार मानकर प्रस्तुत आगम की वृत्ति लिखी है। हमने इस पाठ सपादन मे 'जाव' आदि पदो द्वारा समर्पित पाठो की यथावश्यक पूर्ति की है। उससे इसका ग्रन्थ परिमाण १९३१९ अनुष्टुप् श्लोक, १६ अक्षर अधिक हो गया है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।४९	निगम	नियम	(ता)
१।२२४	अप्पिया	अप्पिता	(क)
१।२२४	एतेसिं	तेतेसिं	(क, ता, म)
१।२३७	वइ०	वति०	(ता)
१।२३९	वइ०	वयि०	(ता)
१।२४५	मायो	माओ०	(ता)
१।२७३	पोयत	पोदत	(क, ता, व, म, स)
१।२७६	कज्जइ	किज्जइ	(व, स)
१।२८१	पाणाइवाय	पाणायवाय	(स)
१।२८१	नेरइयाण	नेरतियाणं	(अ, व, स)
१।२९८।२	उवओगे	ओवओगे	(ता)
१।३१५	अहे	अघे	(ता)
१।३५४	करेज्ज	करिज्ज करेज्जा	(क) (स)
१।३५७	दुहिए	दुक्खिए	(क, ता, म)
१।३५७	दुग्गवे	दुगघे	(अ, म, स)
१।३६३	आरिय	यारिय	(क, ता)
१।३६४	चउ	चतु	(ता)
१।३६५	पाओसिया	पायोसिया	(अ, व)
१।३७०	सय	सत	(ता)
१।३७१	सधिज्जमाणे	सघेज्जमाणे	(ता)
१।३७१	निसिट्ठे	निसट्ठे	(क, ता)
१।३७१	काइयाए	कातियाए	(ता)
१।३८५	पाणाइवाय०	पाणायवाय०	(व, स)

१।३८६	ह्रस्सी	हुस्सी, ह्रस्वी	हस्सी (क) (व); (स);
१।४१५	जहा	जधा	(अ, व, स)
१।४२४	सामाइयस्स	सामातियस्स	(ता)
१।४२५	जइ	जति	(अ, क, व, म, स)
१।४३४	किवणस्स	किविणस्स	(ता)
२।२६	मागहा	मागधा	(ता)
२।४१	वियट्टभोई	वियट्टभोती	(अ, ता, व, म, स)
२।५७	सामाइयमाइयाइ	सामाइगमादीयाति सामातियमातियाइ(स) (क)	
२।६६	धमणि०	धवणि०	(क, ता, व, म)
२।६६	रयणीए	रतणीए	(ता)
२।६८	आरूहेइ	आरूभेइ	(क, म)
२।६८	खाइमसाइम	खातिमसातिम	(व, स)
२।६८	सयमेव	सतमेव	(ता)
२।९४	अवगुय०	अवगुत०	(म)
२।९४	खाइमसाइमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।४	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
३।२१	ईसाणे	तीसाणे	(ता)
३।२५	मोयाओ	मोतातो	(क, ता)
३।३३	खाइमसाइमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।११२	सयणिज्जाओ	सतणिज्जाओ	(ता)
३।११२	तिवर्ति	तिपर्ति	(ता)
३।१४३	वेयति	वेदति	(ता)
३।१४८	समय०	समत०	(ता)
५।३	'पडीण'	'पदीण'	(ता, म)
५।६०	आउए	आउगे	(ता)
५।७९	रयहरणमायाए	रतहरणमाताए	(ता)
५।८२	वेयावडिय	वेदावडिय	(व, म)
५।११०	समयसि	समतसि	(ता)
५।१३९	'लोइय'	'लोतिय'	(अ, स)
६।६३	सकसाईहिं	सकसादीहिं	(ता)
६।६३	सजोगी	सजोति	(ता)
६।७९	नागो	नाओ	(ता, म)
६।९०	कण्हरातीओ	कण्हरायीतो	(व)

६।१६६	कालग	कालत	(क)
७।१७६	० जय ०	० जत ०	(ब)
७।२१३	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
८।२४८	अणुप्पदायव्वे	अणुप्पतातव्वे	(ता)
८।३१५	गोय	गोद	(ब)
८।३४७	अणादीय०	अणातीत०	(ता)
८।४२०	सातणयाए	सादणताए	(क, व, म)
८।४३१	इस्सरिय०	दिस्सरिय०	(म)
८।४३१	इस्सरिय	तिस्सरिय०	(म)
९।४३	सकसाई	सकसादी	(अ, ता)
९।९४	अहिओ (अ),	अहितो अधितो	(क) (ता)
९।१७४	मय०	मद० मत०	(ता) (व)
९।१६९	सवणयाए	समणयाए	(अ)
११।१३३	धूव	धूम	(ता)
११।१३४	नीव	नीम	(ता, ब)
११।१४२	पउमसर	पदुमसर	(ता)
१६।११३	नियम	नितम	(व)
१७।३८	एयणा	एतणा	(ता, च)
१८।१००	मायिमिच्छ०	मादिमिच्छ०	(व)
१९।८५	जति इदियाणि	जर्दिदियाणि	(ता)
३०।२२	सजोगी	सजोती	(ख)

प्रति परिचय

(अ) भगवती वृत्ति (पंचपाठी) मूलपाठ सहित (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र १८९ तथा पृष्ठ ३७८ है। प्रत्येक पत्र १३$\frac{1}{2}$ इच लम्बा तथा ४$\frac{3}{4}$ इच चौडा है। पत्रो मे मूलपाठ की १ से २३ तक पक्तिया हैं। प्रत्येक पक्ति मे ८० से ८५ तक अक्षर है। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक ढग से लिखी गई है। वीच मे वावडी भी है। लिपि-सवत् नही लिखा गया है। अनुमानत यह प्रति १५-१६ वी शताब्दि की लगती है।

(क) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पूनमचन्द बुधमल दूधोड़िया, छापर के सग्रहालय की है। इसके पत्र ३३३ व पृष्ठ ६६६ है। प्रत्येक पत्र १०$\frac{1}{2}$ इच लम्बा तथा ४$\frac{1}{2}$ इच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र मे १५ पक्तिया

तथा प्रत्येक पंक्ति मे ५२ से ५५ तक अक्षर है। प्रति सुन्दर और कलात्मक है। बीच-बीच मे लाल पाइया तथा बावडी है। लिपि-सवत् नही दिया गया है। यह प्रति अनुमानत १६ वी सदी की है।

(ख) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जेसलमेर भडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४२२ तथा पृष्ठ ८४४ है। प्रत्येक पृष्ठ मे ३ से ६ तक पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे १३० से १४० तक अक्षर है। अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ मगल महा श्रीः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ रा ॥

लिपि-सवत् नही दिया गया है। यह प्रति अनुमानत. १२ वी शताब्दी की होनी चाहिए।

(ता) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ३४८ तथा पृष्ठ ६९६ है। प्रत्येक पृष्ठ मे ५ से ९ तक पक्तिया और प्रत्येक पक्ति मे १३० से १४० तक अक्षर है। अतिम पत्र पर चित्र किये हुए है।

अतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

। छ। भगवइ समत्ता ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ सवत् १२३५ विशाख वदि एकादश्या गुरौ अपरान्हे लेखकवणचडेन लिखितमिति ॥

(ब) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति तेरापथी सभा, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४७८ तथा ९५६ पृष्ठ है। प्रत्येक पत्र १०½ इच लम्बा तथा ४½ इच चौडा है। प्रत्येक पत्र मे १६ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ३८ से ४२ अक्षर है। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक है। प्रत्येक पत्र मे तीन स्थानो पर बावडी तथा लाल लाइने है और हरताल से काम किया हुआ है। अतिम प्रशस्ति के अभाव मे लिपि-सवत् अज्ञात है। यह अनुमानतः १६ वी शताब्दि की प्रति लगती है।

(म) भगवती सूत्र मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४८२ तथा पृष्ठ ९६४ हैं। प्रत्येक पत्र १०¾ इच लम्बा तथा ४¾ इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे १३ पक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पत्रो के बीच-बीच मे लाल पाइया तथा बावडी है।

इसके अन्त मे लिपि-सवत् दिया हुआ नही है, पर यह प्रति लगभग १६ वी शताब्दी की होनी चाहिए।

अंतिम प्रशस्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ ग्रंथाग्र १५७७५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥

छ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥ छ ॥

प्रति मे अनेक स्थलो पर सस्कृत मे टिप्पण भी दिये हुए है ।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केशर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे संघीय पुस्तकालय की है । इसके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ है । पत्र के मध्य मे मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है । यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है । किसी पाठक ने मुद्रित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हरताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है । जहा ऐसा किया गया है वहा प्राय. शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है । इसके प्रत्येक पृष्ठ मे मूल पाठ की ४ से १५ तक पक्तियां और प्रत्येक पक्ति मे ४५ से ५३ तक अक्षर है । प्रशस्ति मे लिखा है—

श्री भगवती सूत्र सम्पूर्णं ॥ छ ॥ श्री विवाहपन्नत्ती पचम अग सम्मत्त ॥ शुभ भवतु । ग्रथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्र० ३४२६१ ॥ श्री ॥ लिषित यती डाहामल्ल श्री नागोरमध्ये स० १८४८ माह शु १५ ।

वृ (वृपा) मुद्रित

प्रकाशक —श्रीमती आगमोदय समिति ।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है । आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाए हो चुकी हैं । देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई । उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए । उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी । आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका । अन्तत हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी । इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी है । वाचना का अर्थ अध्यापन है । हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्यश्री का हमे सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है ।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सवल पा और अधिक भारी बनू।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन मे पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी,-पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, वालचन्द्रजी, विजयराजजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (डूंगरगढ), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमन्नालाल जी वोरड का योग रहा है। पाठ-सम्पादन का कार्य स० २०२९ पौष कृष्णा ९ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) मे आरम्भ किया गया और वह सं० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली मे पूरा हुआ।

प्रति शोधन मे मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने वहुत श्रम किया है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है।

कार्यनिष्पत्ति मे इनके योगका मूल्याकन करते हुए मैं इन सवके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नही किया जा सकता। यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हे परम हर्ष होता।

आगम के प्रवन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य मे सलग्न रहे है। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील है। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकाश समय आगम-सेवा मे लगा रहे है। 'अगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन मे इन्होने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओ ने पाठ-सम्पादन मे प्रयुक्त सामग्री के सयोजन मे वड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्तिमात्र है। वास्तव मे यह हम सव का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सवने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
१-१०-७४

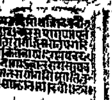
मुनि नथमल

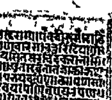
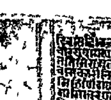
'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदार शहर)।

'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'अ' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (गणेशदास गधैया हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।


'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली मे लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायाग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम मे छत्तीस हजार प्रश्नो का व्याकरण है[1]। तत्त्वार्थवार्त्तिक, षट्खण्डागम और कसायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम मे साठ हजार प्रश्नो का व्याकरण है[2]।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमो की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमे विपयवस्तु की विविधता है। सम्भवत विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नही होगी जिसकी इसमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे चर्चा न हो। उक्त दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलत इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड गया, जैसे—भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति। अनेक शताब्दियो पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान मे व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्वन्ध मे अनेक सूचनाए मिलती है। समवायाग मे वताया गया है कि अनेको देवो, राजो और राजर्षियो ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमे स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात है[3]। आचार्य अकलक के अनुसार प्रस्तुत आगम मे जीव है या नही है—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित है[4]। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम मे प्रश्नोत्तरो के साथ-साथ छियानवे हजार छिन्नच्छेद नयो[5] से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है[6]।

---

१ समवाओ, सूत्र ९३; नदी, सूत्र ८५।

२ तत्त्वार्थवार्त्तिक १।२०, षट्खण्डागम १, पृ० १०१, कसायपाहुड १, पृ० १२५।

३. समवाओ, सूत्र ९३।

४. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

५ जिस व्याख्या पद्धति मे प्रत्येक श्लोक और सूत्र की स्वतन्त्र, दूसरे श्लोको और सूत्रो से निरपेक्ष व्याख्या की जाती है उस व्याख्यापद्धति का नाम छिन्नच्छेद नय है।

६ कसायपाहुड भाग १, पृ० १२५।

उक्त सूचनाओ से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओ ने अनेक नए रहस्यो का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयो मे जाते है तो हमे प्रतीत होता है कि इन रहस्यो का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवो के छह निकाय वतलाए। उनमे त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। वनस्पति निकाय के जीव अव विज्ञान द्वारा भी सम्मत है। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायो के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नही हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवो का केवल अस्तित्व ही नही वतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास सज्ञाएं आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवो का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-, मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल बाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम से नही लेते—कभी कम समय से और कभी अधिक समय से लेते हैं। उनमे आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते है। उनमे स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धारायें अस्पष्ट होती हैं[1]।

मनुष्य जैसे श्वासकाल मे प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल मे केवल वायु को ही ग्रहण नही करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलो को ग्रहण करते है[2]।

पृथ्वी की भाति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते है, आहार आदि करते है। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवो के विविध पक्षो का अध्ययन कर उनके रहस्यो को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवो पर पर्याप्त शोध नही की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमे महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते है कि वनस्पति मे दस सज्ञाए होती है। वे संज्ञाए निम्न प्रकार है—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा, क्रोध सज्ञा, मान सज्ञा, माया सज्ञा, लोभ संज्ञा, ओघ सज्ञा और लोक सज्ञा। इन संज्ञाओ का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप मे वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप में मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप मे की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इगित करना है कि इस आगम मे ऐसे सैकडो विषय प्रतिपादित है जो सामान्य बुद्धि द्वारा ग्राह्य नही हैं। उनमे से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधो द्वारा अव ग्राह्य हो चुके हैं और अनेक विषयो को परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवो की गतिविधियो के प्रत्यक्षतः प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तो का ही विकास नही होता, किन्तु अहिंसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवो के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

---

१ भगवई १।१।३२, पृ० ६।

२. भगवई ६।३४।२५३,२५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पाच मूल द्रव्यो का प्रतिपादन किया। वे पंचास्तिकाय कहलाते है। उनमे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनो अमूर्त्त होने के कारण अदृश्य है। जीवास्तिकाय अमूर्त्त होने के कारण दृश्य नही है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] मूर्त्त होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के सयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम मे जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थो या दर्शनग्रन्थो मे सुलभ नही है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नही है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमे हजारो प्रश्नोत्तर चर्चित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक सघ के आचार्य मखलिगोशाल, जमालि, शिवराजर्षि, स्कन्दक सन्यासी आदि प्रकरण बहुत महत्त्वपूर्ण है। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालासवेसियपुत्त, तुगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय है। गणित की दृष्टि से पार्श्वापत्यीय गागेय अनगार के प्रश्नोत्तर बहुत मूल्यवान् है।

भगवान् महावीर के युग मे अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म सघ के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म सघ के मुनि और परिव्राजको के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेय लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम मे ऐसे अनेक प्रसग प्राप्त होते है जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणो से प्रस्तुत आगम पढने मे रुचिकर, ज्ञानवर्धक, संयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायाग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक है[१]। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान मे इसके एक सौ अड़तीस शत या शतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते है। प्रथम बत्तीस शतक स्वतन्त्र है। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक बारह-बारह शतको के समवाय हैं। चालीसवा शतक इक्कीस शतको का समवाय है। इकचालीसवा शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अडतीस शतक होते है। उनमे इकचालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक है।

शतको मे उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८४१	४	१०	७५३
२	१०	२३८१८	५	१०	२५६९१
३	१०	३६७०२	६	१०	१८६५२

१ समवाओ, सूत्र ९३; नन्दी, सूत्र ८५।

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
७	१०	२४६३५	२५	१२	४५१०३
८	१०	४८५३४	२६	११	४४५५
९	३४	४५८५९	२७	११	१९०
१०	३४	९९०७	२८	११	६९४
११	०२	३२३३८	२९	११	१०२७
१२	१०	३२८०८	३०	११	४७६४
१३	१०	२१९१४	३१	२८	२३४४
१४	१०	१६०३३	३२	२८	३६३
१५		३९८१२	३३ (१२)	१२४	३०८९
१६	१४	१५९३९	३४ (१२)	१२४	८९६४
१७	१७	८४१२	३५ (१२)	१३२	४१८१
१८	१०	२२४४३	३६ (१२)	१३२	७३१
१९	१०	८०२७	३७ (१२)	१३२	११५
२०	१०	१९८७१	३८ (१२)	१३२	८७
२१ (आठ वर्ग)	८०	१६३०	३९ (१२)	१३२	१३९
२२ (छह वर्ग)	६०	१०६८	४० (२१)	२३१	२७३४
२३ (पाच वर्ग)	५०	७१५	४१	१९६	३५१६
२४	२४	३९९२६	कुल १३८	कुल १९२३[1]	कुल ६१८२२४

भाषा और रचना-शैली

प्रस्तुत आगम की भाषा प्राकृत है। कही-कही शौरसेनी के प्रयोग भी मिलते है। इसमे देशी शब्दो का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है, जैसे—खत्त, डोगर (७।११७), टोल (७।११९), मग्गओ (७।१५२), वोंदि (३।११२), चिक्खल्ल (८।३५७)।

इसकी भाषा बहुत सरल और सरस है। अनेक प्रकरण कथा-शैली मे लिखे गए है। जीवन-प्रसग, घटनाए और रूपक स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते है। स्थान-स्थान पर कठिन विषयो को उदाहरणो द्वारा समझाया गया है।

प्रस्तुत आगम की रचना गद्य शैली मे हुई है। कही-कही स्वतन्त्र रूप से प्रश्नोत्तरो का क्रम चलता है और कही-कही किसी घटनाक्रम के बाद उनका क्रम चलता है। प्रतिपाद्य विषय का सकलन करने के लिए सग्रहणी गाथाओ के रूप मे कुछ पद्य भाग भी मिलता है।

---

१ बीसवें शतक के छठे उद्देशक मे पृथ्वी, अप् और वायु—इन तीनो की उत्पत्ति का निरूपण है। एक परम्परा के अनुसार यह एक उद्देशक है, दूसरी परम्परा के मत मे ये तीन उद्देशक हैं। इस परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के कुल उद्देशक १९२५ हैं।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगम के पाठ-शोधन मे लगभग सवा वर्ष लगा। इसमे अनेक मुनियो का योग रहा। उन सवको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य मे अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे है, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने मे इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एव समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूँगा।

भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी का सबसे बडा सकलन-ग्रन्थ जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार नई दिल्ली
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti'. The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati'. According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries[1]. On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Śatkhandāgama and Kaśaya-Pāhuda the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries[2]

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas. It is multifarious in its contents. Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly. From the aforesaid point of view, this Āgama was held in high esteem. The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i.e.'Vāyākhyā Prajñapti'. Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title. Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajnapti'.

The Content

Different sources provide copicious information regarding the contents of the present Āgama. 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail. Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeewa, Ajeewa, Loka and Aloka have been explained in detail[3]. According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jīwa exists or not, have been answered in this Āgama.[4] According to Ācharya Veersena, alongwith the queries and answers, predictive śubha (auspicious) and aśubha (in-auspicious)[5] have been described by ninetysix thousand Ćhinnaććheda Nayas[6].

1 Samawao, Sutra 93 ; Nandi, Sutra 85.

2 Tatwartha Vartika 1/20, Satkhanadagama 1, page 101, Kasaya-Pahuda-1, page 125.

3 Samawao Sutra 93

4 Tatwartha' vartika 1/0

5 Kasayapahuda Pt I, p 125

6 The explaination-method, in which each sloka and sutra is explained independently without considering other slokas and sutras, is called 'chinnacchedanaya'

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications. Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries. When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before.

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas). The living beings of the Trasa-kāya(mobile beings)group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanaspati nikāya) are supported by the modern Science also. The four groups of living beings—the earth. the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science. Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc., but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc. also. The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years. They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more. They aspire every moment for food and take it. The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them. The other currents of consciousness are indistinct.[1]

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora[2].

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc. Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings. Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away. These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world.

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Augha' consciousness and world consciousness Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

---

1. Bhagawai, 1-1-32, page 9.
2. Bhagawai, 9-34-253, 254, page 464.

This topic has been mentioned as an example. The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common sense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkshma jīva) being perceivably proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also.

Lord Mahavira has expounded the five principal substances. They are named as Panchāstikāya. In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāśāstikāya, the three being formless are invisible Though Jīvāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body. Pudgalāstikāya, being concrete, is visible. The multiformity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala. A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works. The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries From the historical point of view, the chapters on Ācharya Mankkhali Gosāla, Jamāli, Śivarājarsi, Skanda Sanyāsi etc. are of great importance. From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramanopāsaka, Roha Anagāra, Somila Brāhmaṇa, Lord Parśwa's disciple Kālās-vesiya-putta, śrāvakas of Tungīya City etc. are the topics worth reading From the view point of Mathematics, discussions of Pārśwa-patyīya Gāngeya Anāgāra are of great value.

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults. Cultic bigots were almost un-heard. Munis and Parivrājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discusssions with the Munīs and Parivrājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely. There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age. In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspring of self-control and equilibrium and promoter of knowledge.

Divisions and Sections

According to Samawāyānga and Nandi Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyayanas,ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddesakas[1]. The present volume of it differs from the said account.

1. Samawao, Sutra 93, Nandi, Sutra 85,

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirytwo Śatakas are independent ones. The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas. The forty-first śataka is independent. In all, there are one hundred and thiryeight śatakas. In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones.

The Uddeśakas and syllables in the Śatakas are as follows :

Śataka	*Uddeśaka*	*Total syllables*
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

Sataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 („ „)	124	8964
35 („ „)	132	4181
36 („ „)	132	731
37 („ „)	132	115
38 („ „)	132	87
39 („ „)	132	139
40 (29 „)	231	2734
41	196	3516
138	19231[1]	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākrit. Here and there the usages of Saurseni are also found. In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like khatta (खत्त), Dongar (7/117 डोंगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मग्गओ), Bondi (3/112 बोंदि), Cikkhalla (8/357 चिक्खल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet. Many topics have been dealt with in the style of fable narration. Reminiscences, anecdots and allegories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing aporopriate examples in many places.

The present Āgama has been written down in prose style. Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident Some verse-part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic.

1 In the twentieth Sataka of the sixth Uddesaka, the theory of the origin of the earth, the water, and the air, has been expounded According to one tradition, this is one Uddesaka, but the others hold it as comprised of three Uddesakas. According to this tradition, the Agama under review has 1925 Uddesakas in all,

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama. In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis. I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most volumenous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Ācharya Tulasi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i e. the Anga-Pravista and the Anga-Vāhya. The Anga-Pravista Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal diciples of Lord Mahāvira. They are twelve in number . 1. Āchārānga, 2. Sūtrakṛtānga, 3. Sthānānga, 4. Samawāyānga, 5. Vyākhyā-Prajñapti, 6. Jñata Dharma-Kathā, 7 Upāsaka-Daśā, 8. Anta-krita-Daśā, 9. Anuttaro-papātika Daśā, 10 Praśna-Vyākarana, 11. Vipāka-Śruta, 12. Dṛiṣtiwāda. The twelfth Anga is, at present, not available.

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttani. The first volume has four Angas, i.e, 1. Āchārānga, 2 Sūtrakṛitānga, 3. Sthānānga and 4. Samawāyānga. The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajñapti' and the third contains the rest six Angas.

The present work is the second volume of the Anga-Suttāni. It has the original text of the Vyākhyā-Prajñapti with its recentions A brief preface has been added in the beginning. An elaborate preface and the word-index have not been added to it. It is planned to publish them in two independent volumes. Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof.

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm-leaf manuscripts) and vṛitties (commentaries) According to the method of text redemption in vouge, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as main, but redeem the original text with the help of Artha-mīmānsā (critical meaning), former and later contexts, preceding text (Poorwa-Pātha) and the text of other Āgama-Sūtras and the explanation in the Vṛitti (commentary). The original commentary of the Bhagwati is extinct at present. The chūrṇi (commentary) was available but we could not get it. We have made use of the original Tīka and chūrṇi portions quoted by Abhayadeva Sūri in his vṛitti. The scribes, from time to time have abridged the text. Many forms

of the abridgement are found. In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions. The abridgement of the text found in them has been done in different ways (See, page 39). There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters. In sūtra 1/365, the reading Pāosiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya'. In the old script, it is difficult to differenciate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O', The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only. (See, page 66, Sūtra 1/392 ; page 77, Sūtra 1/444).

In Sūtra 8/242, the reading is 'Čhettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittehin', 'Čhattehin', 'Čittehin' occured. 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301. There is an obridged 'Vaćna' (lesson) in same manucripts. The commentator, too, received the abridged 'Vaćna'. So he wrote 'Anya Yūthik waktawyata' is to be understood by one himself. It has not been written down lest the work should get bulky[1]'. The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text. And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text.

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place. In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā' Puććhā' is the abridged text. Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding. And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 ; the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112) In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Asoććā Kewalī' also. In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included. (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99) In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sutra 5/51, page 194).

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis. In all the manuscripts, after the text 'Ćiyatante uragharappawesā' in Sutra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guna-weramanapaćća-

---

1. Iha Sutra Anya Yuthika waktawayam Swayamuecaraniyam Grantha—gaurawa —bhayenalikhitatatwattasya taccedam, Vrittipatra 106,

khāna-pōs-hōwa-wasehın'. Due to the inconsistency ın ıts meanıng there, the commentator had to wrıte 'Taıryuktā itı gamyam', but, on seeıng the Sutras 'owā-ıya' and 'Rāyapaśena-ıya', it ıs found that this readıng should not be there where ıt has been wrıtten down. On the basıs of both the above-mentıoned Sūtras, the order of the text ın vıew is constructed thus—'O-saha-Bhesaȷȷenam Paḍılābhemānā bahūhin Sīlawwaya-gūṇa weramaṇa-Paććakhāna Posahowa-wāsehin ahāparıggahı-e-hın tawokamméhın appānam bhāwemānā wiharantı'. In sūtra 2/1, in all the specimens, the text ıs sārakallāṇa Jāwa kewa-ın' but 'Jāwa' serves no purpose here. On the basis of 8/217 of the Bhagwati as well as the first stenza of the Prajnāpanā, here the text is ascertaıned to be 'Jāwatı, ınstead of 'Jāwa'.

In many ınstances, the meanıng does not change by an alteratıon of letter but dıfficulty arıses in understandıng the meanıng and sometimes ıt changes too In Sūtra 6/90, the readıng is 'hawwin'; and 'hetthın' as well as 'hıtthin' the two recensıons are also found. The commentator Abhayadeva Sūrı has given the meaning as 'Sama' there. (See the commentary-leaf 271). In the sthānānga Sūtra (143), on the same topıc, the readıng ıs as, 'hitṭhin'. Abhayadeva Sūri has gıven its meaning there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānānga-vṛittı leaf 410).

In same places the varıent readings occur due to the mıs-understandıng of the transcrıber and difference ın characters in scrıpts. In Sūtra 9/195, the readıng ıs as 'Odharémānī-odharémaṇī'. In some specimens this readıng ıs found ın the form of 'uwadharemānīo-uwadharemānīo'. In one copy, this readıng is changed ınto 'uwarı-dhare-māṇīo-uwarı-dhare-manīo'.

A few examples of recensıons have been cited here to show that manuscripts or only one particular copy cannot be taken as the basis ın the redemption of the text. It can be redeemed only on the basis of various Āgamas, theır commentarıes and consistency of their meanıng.

The problem of abridgement and redemption of the text

It is a task to lay down authentically the method of abridgement adopted by Devardhigaṇi at the tıme of wrıting the Āgama Sūtras. And, ıt ıs a task because many Āgamadharas have abridged the Āgama-text in later periods Probably, same transcribers too, for the sake of convenience of transcribıng, have abridged the text.

In the abridged text of sūtra 13/25, the dewoddeśaka of the second Śataka has been referred to ındicate the kınds of Bhawanpatı Dewas etc., but the full text is not there (2/117, page 11l) and the sthānpada of the Prajnāpnā has been referred to. Likewıse, in the abridged text of Sūtra 16/33, the third

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapasenạ-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyana (13/117, page 614) only not to find the full text there. In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to.

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also The words 'Jāwa', 'Jahā' etc. have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment. The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa'. If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti, the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added. The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vaćnās, abridged and full. The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anustupa Ślokas The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anustupa Ślokas. Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama. In editing the text, we have, as far as needed; completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc, resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anustupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	Nigama	Niyama	(Tā)
1/224	Appiyā	Appitā	(Ka)
1/224	Etesin	Tetesin	(Ka, Tā, Ma)
1/237	Wai.	Wati	(Tā)
1/239	Wai.	Wayī.	(Tā)
1/245	Māyo	Māo	(Tā)
1/273	Poyantam	Podantam	(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)
1/276	Kajjai	Kijjai	(Ba, Sa)
1/281	Pāṇā-i-Wāya	Pāṇāyawāya	(Sa)

1/281	Nera-i-yanam	Neratiyānam	(A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Owa oge	(Tā)
1/315	Ahe	Adhe	(Tā)
1/354	Karejja	Karijja (Ka) Karejjā (Sa)	
1/357	Duhı-é	Dukkhi-e	(Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Dugandhe	(A, Ma, Sa)
1/363	Āriyam	Yariyam	(Ka, Tā)
1/364	ća-u	ćatu	(Tā)
1/365	Pa-O-sıā	Pāyosıā	(A, ba)
1/370	Saya	Sata	(Tā)
1/371	Sandhijjamāne	Sandhejja. māne	(Tā)
1/371	Nısitthe	Nısatthe	(Ka, Tā)
1/371	Kā-ı-ya-e	Kātıyā-e	(Tā)
1/385	Pānā-ı-wāya	Pāṇāyawāyao	(Ba, Sa)
1/389	Hṛıssi	Hussı	(Ba);
		Hṛıswı	(Sa);
		Hassi	(Ka)
1/415	Jahā	Jadh ā	(A, Ba, Sa)
1/424	Sāmā-i-yassa	Sāmātıyassa	(Tā)
1/425	Ja-i	Jatı	(A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kıwanassa	Kıwınassa	(Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā	(Tā)
2/41	Viyadda bhoī	Viyaddabhotī	(A, Tā, Bā, Ma, Sa)
2/57	Sāmā-i-yama-i-yāin	Sāmā-ı-mādīy-ātım	(Ka, Ba)
		Sāmātiyamā-tiyāın	(Sa)
2/66	Dhamayio	Dhawaṇi	(Ka, Tā, Ba, Ma)
2/66	Rayanīye	Ratnīye	(Tā)
2/68	Ārūhe-i	Ārūbhe-i	(Ka, Ma)
2/68	Khā-ima-Sāimam	Khatimā-Sāti-mam	(Ba, Sa)
2/68	Sayamewa	Satmewa	(Tā)
2/94	Awanguya o	Awanguta o	(Ma)
2/94	Khā-ima sā-i-meṇam	Khātima-Sātimenam	(Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāne	Nīsaṇe	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ima Sā-ımena	Khātim-Sātı-meṇam	(Ba,Sa)
3/112	Sayaṇıjjā o	Sataṇijjā o	(Tā)
3/112	Niwatim	Nıpatım	(Tā)
3/143	Weyatı	Wedatı	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	'Paḍiṇa'	'Padıṇa'	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharana māyā-e	Rataharana-māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwadıyam	Wedāwadiyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansi	Samatansı	(Tā)
5/139	'Lo-ı-ya'	'Lo-tı-ya'	(A, Sa)
6/63	Sakasā-ī-hin	Sakasādīhin	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajotı	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kanharātīo	Kanharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Aṇuppadāyawwe	Aṇuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Anādīyā o	Anātīta	(Tā)
8/420	Sātānayāe	Sādanatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issarıyao	Dissariya o	(Ma)
8/431	Issarıya	Nıssariya	(Ma)
9/43	Sakasāı	Sakasādı	(A, Tā)
9/94	Ahi-o	Ahıto (Ka),	Adhıto (Tā)
9/174	Maya	Mada o (Tā)	Mata o (ba)
9/169	Sawaṇayāe	Samanayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Nīyamam	Nītamam	(Ba)
17/38	ćyana	cyaṇa	(Ta, Ba)

18/100	Mayimiccha o	Madimīccha o	(Ba)
19/85	Jati indiyāni	Jadindiyāni	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh.)

Manuscripts used :

(A) Bhagawati-vritti (Panćapaṭhī). Manuscript with original Text.

This manuscript is from the Gadhaiya Library, Sardarshahr. It contains 189 leaves and 278 pages. Each leaf is $13\frac{1}{2}$" in length and $4\frac{3}{4}$" in width. There are 1 to 23 lines of the original text on each leaf and each line has 80—85 letters The copy has been prepared in a beautiful and artistic manner. There is a 'Wāwaṛi' (hollow space) also in the centre. The year of the transcription has not been given. It is estimatedly written in the 15th-16th century.

(Ka) *Bhagwati Text* (*Manuscript*)

This copy is from the Poonamchand Budhamal Dūdhoria, Ćhapar library It has 333 leaves and 666 pages. Each leaf is $10\frac{1}{2}$" long and $4\frac{1}{2}$". wide. There are 15 lines on each leaf and each line has 52-55 letters. The copy is a beautiful and artistic one. There are intermitant Pāis (full-stops) in red ink and wāwaṛi (hollow space). It dates back probably to the 16th ceuntry

(kha) *The text on the palm-leaf* (*Manuscript*)

This manuscript has been received from Madan Chand ji Gothi, Sardar Shahr. It belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the original written on Tāla Patra. It has 422 leaves and 844 pages. Every page contains 3 to 6 lines and there are 130-140 letters in each line. The concluding eulogy has been written as || ćha || Mangalam Mahā śrī || || ćha ćha || ćha || Rā"

The year of the transcription has not been given but estimatedly it should be of the 12th century.

(Tā) *The text of the Palm-leaf* (*Manuscript*).

This manuscript belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the Script written on the Talpatra. This, too, has been received from Madan Chand ji Gothi of Sardar Shahr. It has 348 leaves and 696 pages. Each leaf has 5 to 9 lines and there are 130-140 letters in each line. The last leaf is illustrated. The concluding eulogy reads as follows :—

|| ćha || Bhagwati Samattā || ćha || || ćha || || ćha || Sambat 1235 Viśākha-wad ekādasyām gurau aparāhṇe lekhaka -waṇa ćanḍena likhitam"

(Ba) *The text of Bhagawati* (*Manuscript*)

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages. Each leaf is 10½" long and 4½" wide. There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters. The copy has been attractively and artistically prepared. There are three 'Wawadīs' and red lines in it. 'Hartal' (orpiment) has been used. The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown Estimatedly, it dates back to the 16th century.

(Ma) *Bhagwati Sutra Text* (*Manuscript*)

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages. Each leaf is 10¼" long and 4½" wide. Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line. There are intermittant 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century. The concluding eulogy reads as follows :—

ćha || Granthāgram 15775 || ćha || ćha || || ćha || Srī || ćha || Srī Kalyānamastu || Śubham Bhawatu || ćha || Śri || Śri || ćha || ćha ||

The script has notes in Sanskrit in many places.

(Sa) *Bhagwati Sutra* (*Tripathi*)

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun. It has 602 leaves and 1204 pages. The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given obove and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript. Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect. Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it and each line contains 45-53 letters.

The concluding eulogy reads as follows :—

Srī Bhagwati Sūtram Sampūrnam || ćha || Srī Vivāha Pannatti Pañćamam angam Sammattam || Śubham Bhavatu || Kalayanamastu Granthāgram 15675 Ubhaya Milane Gran. 34291 || Srī || Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore Madhye Sam. 1848 Māha Śu. 15 ||

Wṛi, (Wṛipā) Printed

Publisher : Śrīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vāćnā' has a very ancient history in the Jaina tradition. There had been four 'Vāćnās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries. There was no well planned Āgama-Vāćnā after Dewardhigaṇi. The Āgamas, written in his Vāćnā-time, have become very much disordered during the long past period A well planned 'Vaćnā' was the need of the day again to set them in order. Āćārya Tulsī had tried for a well planned congreagational Vaćnā but it could not materialize. Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vāćnā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congraegational. With this decision in view, our work on this Āgama-Vāćnā began.

Āćārya Tulsī is the Head of this Vāćan. Vāćān means to teach. There are many aspects of teaching in our 'Vāćnā', i.e., redemption of the text, translation, critical study etc. etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Āćarya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice. Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties.

In the editing of the present Āgama Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji have given constant help to me in various ways. Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śri Kanmalji, Čhatramalji, Amolakćandji Dinkarji, Poonamćandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārāćandji, Balćandji, Vijairajji, Manilalji, Mahendra Kumarji (second) Sampatmalji (Doongargarh), Śantikumarji, Mohanlalji (Śārdūl) and Manna lalji Boraḍ. The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Paush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974).

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji and Dulaharajji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmeṭ).

Valueing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in editing of the Āgama, late Śrī Madan ćandji Gothi is very much missed

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning. He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate. He has highly shown his faith and dedication in this publication of the'Āgama Suttani'

Sri Khem Chand ji Sethiā, President of the Jain Viśwa Bhārati and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text.

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar **Muni Nathmal**

New Delhi

भगवई विसयाणुक्कम

•

अट्ठमं सतं सू० १-५०४ पृ० ३१५-३९७

•

नवमं सतं सू० १-२६३ पृ० ३६८-४६५

•

दसमं सतं सू० १-१०३ पृ० ४६६-४८४

•

एक्कारसं सतं सू० १-१६६ पृ० ४८५-५३७

सत्ति-पद ११३, सक्कस्स सत्ति-पद ११५, जभगदेव-पद ११७, सरूवि-सकम्मलरस-पद १२३, अत्ताणत्त-पोग्गल-पद १२६, इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पद १२६ देवाण भासासहस्स-पद १३०, सूरिय-पद १३२ समणाण तेयलेस्सा-पद १३६ केवलि-पद १३८।

पन्नरसमं सतं — सू० १-१६० — पृ०-६५४-७०६

गोसालग-पद १, भगवओ विहार-पद २०, पढम-मासखमण-पद २२, दोच्च-मासखमण-पद ३० तच्च-मासखमण-पद ३७, चउत्थ-मासखमण-पद ४४, गोसालस्स सिस्सरूवेण अगीकरण-पद ५३, तिलथंभय-पद ५७, वेसियायण-बालतवस्सि-पद ६०, तिलथभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अववकमण-पद ७२, गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पद ७६, गोसालस्स पुव्वकहा-उवसहार-पद ७७, गोसालस्स अमरिस-पद ७६, गोसालस्स आणदथेरसमवखे अवकोसपदसण-पद ८२, आणदथेरस्स भगवओ निवेदण-पद ६७, आणदथेरेण गोयमाइण अणुण्णवण-पद ६६, गोसालस्स भगवत पइ अवकोसपुव्व ससिद्धतनिरूवण-पद १०१, भगवया गोसालग-वयणस्स पडियार-पद १०२, गोसालस्स पुणरवकोस-पद १०३, गोसालेण सव्वाणुभूतिरस भासरासिकरण-पद १०४, गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पद १०७, गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद ११०, सावत्थिए जणपवाद-पद ११५, गोसालेण समणाण पसिणवागरण-पद ११६, गोसालस्स सघभेद-पद ११६, गोसालस्स पडिगमण-पद १२०, गोसालेण नाणासिद्धत-परूवण-पदं १२१, अयपुल-आजीविओवासय-पदं १२८, गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पद] १३६, गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्व कालधम्म-पद १४१, गोसालस्स नीहरण-पद १४२, भगवओ रोगायक पाउब्भवण-पदं १४३, सीहस्स माणसियदुक्ख-पद १४७, भगवया सीहस्स आसासण-पद १४६, सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पद १५३, भगवओ आरोग्ग-पद १६२, सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पद १६४, सुनक्खत्तस्स उववाय-पद १६५, गोसालस्स भवब्भमण-पद १६६।

सोलसम सतं — सू० १-१३४ — पृ० ७१०-७३७

वाउयाय-पद १, अगणिकाय-पद ५, कतिकिरिय-पद ६, अधिकरणी-अधिकरण-पद ८, जीवाण जरा-सोग-पद २८, सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पद ३३, सक्क-सवधि-वागरण-पद ३५, चेय-अचेय-कड-कम्म-पद ४१, कम्म-पद ४४, असिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पद ४७, नेरइयाण निज्जरा-पद ५१, सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पद ५४, गगदत्तदेवस्स संदब्भे परिणममाण-परिणय-पद ५५, गगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं ५६, गगदत्तदेवेण नट्टउवदसण-पद ६१, गगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पद ६५, सुविण-पद ७६, भगवओ महासुमिण-दसण-पद ६१, सुविण-फल-पद ६२, गध-पोग्गल-पदं १०६, लोगस्स चरिमते जीवाजीवादिमग्गणा-पद ११०, परमाणुपोग्गलस्स गति-पद ११६, किरिया-पद

संकेत निर्देशिका

● ० ये दोनो विन्दु पाठपूर्ति के द्योतक हैं। पाठपूर्ति के प्रारभ मे भरा विन्दु [●] और उसके समापन मे रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखे—पृष्ठ ५ सूत्र ११।

(?) कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] आदर्शों मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखे—पृष्ठ ७४ सूत्र ४३९।

[ ] आदर्शों मे प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण मे अनावश्यक व्याख्याश पाठ को कोष्ठक मे रखा गया है। देखे—पृष्ठ १०५ सूत्र ९७।

' ' यह दो या उससे अधिक शब्दो के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखे—पृष्ठ ३। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण मे उसके पूर्ति-स्थल का निर्देश है। देखे—पृष्ठ ३ सूत्र ६ और पृष्ठ ७ सूत्र ७।

× क्रॉस (×) पाठ न होने का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण १०।

० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली विन्दु (०) अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण २, पृष्ठ ४ टिप्पण ७।

'जहा' आदि पर टिप्पण मे दिए गए सूत्राक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ १६ टिप्पण ५।

अ, क, ख, ता, ब, म, स—देखे—सम्पादकीय मे 'प्रति परिचय' शीर्षक।

क्व० क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० सक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखे—पृष्ठ ५ टिप्पण १०।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ४।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ५।

पू० पूर्णपाठार्थ द्रष्टव्यम्। देखे—पृष्ठ ४ टिप्पण १६।

पू० प० पूरक-पाठ परिशिष्ट। देखे—पृष्ठ १२ टिप्पण ४।

अं०	अतगडदसाओ	**दसा०**	दसासुयक्खधो
अ०	अणुओगदाराइ	**ना०**	नायाधम्मकहाओ
उत्त०	उत्तरज्झयणाणि	**प०**	पण्णवणा
उ०	उवगा	**भ०**	भगवई
उवा०	उवासगदसाओ	**राय०**	रायपसेणइय
ओ०	ओवाइयं	**व०**	ववहारो
ज०	जबुद्दीवपण्णत्ती		
जी०	जीवाजीवाभिगम		
ठा०	ठाण		

—०—

भगवई

विआहपण्णत्ती

पढमं सतं

पढमो उद्देसो

मंगल-पद

१. नमो[1] अरहंताण[2],
नमो सिद्धाण,
नमो आयरियाण[3],
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं[4] ॥

२. नमो बंभीए[5] लिवीए ॥

संगहणी-गाहा

रायगिह १-चलण २-दुक्खे, ३-कखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावते ७-नेरइए, ८-बाले[6] ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥

३. नमो सुयस्स ॥

उक्खेव-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं[7] नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

५. तस्स ण रायगिहस्स नगरस्स बहिया[9] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था ॥

६. 'सेणिए राया, चिल्लणा देवी'[10] ॥

---

१. णमो (क) ।
२. अरिहं° (अ, क, वृपा), अरुह° (वृपा) ।
३. आरिआण (क) ।
४. लोए सव्व° (अ, क, ता, ब, म, वृपा) ।
५. बभीए (ता, ब) ।
६. पाले (ना) ।
७. णाम (क) ।
८. ओ० सू० १ ।
९. बहिं (ना) ।
१०. × (ना, ब) ।

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे[1] पुरिसुत्तमे[2] पुरिससीहे[3] पुरिसवरपोंडरीए[4] पुरिसवरगंधहत्थी[5] लोगुत्तमे[6] लोगनाहे[7] लोगपदीवे[8] लोगपज्जोयगरे[9] अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए[10] धम्मदेसए[11] धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते[12] मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी[13] सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाह[14] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव[15] •पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥

८. परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। पडिगया परिसा[16] ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'[17] सत्तुस्सेहे समचउरससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे[18] कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे[19] महातवे ओराले[20] घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी 'उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयलेस्से'[21] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[22] अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तते णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

---

१. सयं° (अ)।
२. पुरिसोत्तमे (अ); पुरुमुत्तमे (व)।
३. पुरुससीहे (ता) सर्वत्र।
४. पुरुसवरपुंडरीए (ता)।
५. °हत्थीए (अ)।
६. लोगोत्तमे (अ, व)।
७. °नाहे लोगहिए (अ)।
८. °पईवे (ता, क)।
९. °करे (क)।
१०. °दए बोहिदए (अ, ता)।
११. धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे (अ); धम्मदए धम्मदेसए (क, ता, व), धम्म-दएत्ति पाठान्तरम् (वृ०)।
१२. मुक्के (क)।
१३. सव्वदंसी (ता)।
१४. °बाहमपुणरावत्तयं (अ, व); सिवमचल-मरुज° (क)।
१५ सं० पा०—जाव समोसरण। ओ० सू० १६-५१।
१६. पू०—ओ० सू० ५२-८१।
१७. गोयमे गोत्तेण (अ, ता, व); गोयम-सगुत्ते णं (क); गोयमगोत्तेण (म)।
१८. °रिसह° (क, म)।
१९. तत्ततवे घोरतवे (क)।
२०. उराले (अ, ता, व, म, वृपा)।
२१. °तेयलेसे (अ); °तेअलेस्से (क); °तेउलेस्से (म); मूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरसंखित्तविउलतेयलेस'त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ)।
२२. उड्ढजाणू (क, ता); उड्ढजाणु (म)।

समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे[1] सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे[2] पज्जुवासमाणे एव वयासी[3]—

चलमाण-पदं

११ से नूणं भते ! चलमाणे चलिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे[4] वेदिए ? पहिज्जमाणे पहीणे[5] ? छिज्जमाणे[6] छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? 'दज्झमाणे दड्ढे'[7] ? मिज्जमाणे[8] मए[9] ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ?

हता गोयमा ! चलमाणे चलिए[10]। °उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए।° निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ॥

१२. एए ण भंते ! नव पदा[11] कि एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ?

गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे[12]—एए ण चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उप्पण्णपक्खस्स ।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए णं पच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा विगयपक्खस्स ॥

नेरइयाणं ठितिआदि-पद

१३ नेरइयाण भते ! केवइय[13] काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

---

१. णाइदूरे (क), णाउदूरे (ता, म)।
२ पजलिउडे (अ, क); पजलिपुडे (म)।
३. वयासि (ता), वदासी (म)।
४. विदिज्जमाणे (अ,ब); वेविज्जमाणे (क)।
५. पहिए (ता)।
६. [illegible] (ब)।
७ दज्झमाणे दड्ढे (ता)।
८. मेज्ज (अ, ब) ; मिज (म)।
९ मडे (क), मिए (ता)।
१०. सं० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
११. पदा (ता)।
१२ पहिए (अ, क, ब, म)।
१३ केवइयं (अ, क, ता), केवइ (ब)।

१४. नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति वा ? णीससंति वा ?
जहा उस्सासपदे[1] ॥

१५. नेरइया ण भते ! आहारट्ठी ?
हंता गोयमा ! आहारट्ठी । जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्व—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, कि वाऽऽहारेति सव्वओ वावि ?
कतिभागं सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमति ? ॥१॥

१६. नेरइयाण भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा[3] पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ?

गोयमा ! नेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया, परिणमति[4] य ।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, परिणमिस्सति ।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, णो परिणमिस्सति ॥

१७. नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ? पुच्छा—
जहा परिणया[5] तहा चियावि ॥

१८. एवं—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा ।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'[6] उदीरिया[7] वेइया[8] य निज्जिण्णा ।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,[9] चउव्विहा पोग्गला होति[10] ॥१॥

---

१. प० ७ ।
२. प० २८।१ ।
३. आहारिज्जस्स० (क) ।
४. परिणमयति (ता) ।
५. भ० १।१६ ।
६. चिया य उवचिया (अ), चित उवचित (म)
७. उदीरिय (ता) ।
८. वेतिया (म) ।
९. पदमी (ब) ।
१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—
नेरइयाए भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला निज्जिण्णा । तहेव ।

१९ नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला भिज्जंति ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२०. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला चिज्जंति ?
गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च[1] दुविहा पोग्गला चिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२१. एवं उवचिज्जंति[2] ॥

२२ नेरइया ण भंते ! कइविहे पोग्गले उदीरेंति[3] ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति, त जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२३. सेसावि एवं चेव भाणियव्वा[4]—वेदेंति, निज्जरेंति ॥

२४. एवं[5]—ओयट्टेंसु[6], ओयट्टेंति, ओयट्टिस्संति ।
संकामिंसु, संकामेंति, संकामिस्संति ।
निहत्तिंसु,[7] निहत्तेंति, निहत्तिस्संति ।
निकाएंसु, निकायंति, निकाइस्संति[8] ।

संगहणी-गाहा

भेदिया[9] चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
ओयट्टण संकामण, निहत्तण निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हंति, ते किं तीतकालसमए गेण्हंति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति ? अणागयकालसमए गेण्हंति ?
गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हंति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति, नो अणागयकालसमए गेण्हंति ॥

२६ नेरइया ण भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए[10] उदीरेंति, ते किं तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति ? पडुप्पन्नकालसमए[11] घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति ? गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ?

---

१. °मभिकिच्च (अ, ब) ।
२ °ज्जति वि (ता) ।
३. उदीरति (क) ।
४. °यव्वा एव (अ, क, ता) ।
५ ×(अ, क, व, म) ।
६ उय° (क, ता, म); अपवर्त्तनस्य चोपलक्षणात्वादुद्वर्त्तनमपीह दृश्यम् (वृ) ।
७. निव° (ता) सर्वत्र ।
८. अतोग्रे अ, क, व, म प्रतिषु एतावानतिरिक्त- पाठो लभ्यते—
सव्वेसु वि कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च ।
९. भेतिय (क) ।
१० ×(अ, व) ।
११. °समय (क, ता, ब, म) ।

गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति, नो पडुप्पन्नकालसमए घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ॥

२७. एवं—वेदेंति, निज्जरेंति[1] ॥

२८. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं बंधंति ? अचलियं कम्मं बंधंति ?
गोयमा ! नो चलियं कम्मं बंधंति, अचलियं कम्मं बंधंति ॥

२९. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं उदीरेंति ? अचलियं कम्मं उदीरेंति ?
गोयमा ! नो चलियं कम्मं उदीरेंति, अचलियं कम्मं उदीरेंति ॥

३०. एवं—वेदेंति, ओयट्टेंति, संकामेंति, निहत्तेंति[2], निकाएंति[3] ॥

३१. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं निज्जरेंति ? अचलियं कम्मं निज्जरेंति ?
गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति ॥

संगहणी-गाहा

बंधोदयवेदोयट्टसंकमे[4] तह निहत्तणनिकाए ।
अचलियं-कम्मं तु भवे, चलियं जीवाउ निज्जरए[5] ॥१॥

३२. एवं[6] ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

---

१. निज्जरंति (ता, ब) ।
२. निवत्तेति (ता) ।
३ अतोग्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठो लभ्यते—
सव्वेसु अचलियं नो चलियं ।
'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलियं अचलियं ।
४. °वट्ट° (अ), ° व्वट्ट° (ता) ।
५. निज्जरिए (अ, ता, ब); निज्जरइ (क) ।
६. अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्या 'जहा नेरइयाणं' इत्यादि समर्पणपदानि लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववर्ति—नैरयिकपदे तानि न विद्यन्ते, तेन संक्षिप्तैव वाचना मूलपाठ-रूपेणादृता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥
असुरकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, णीससंति वा,
असुरकुमाराणं भंते ! आहारट्ठी ?
हंता आहारट्ठी ।
असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—
आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए

ठितिपदे[1] तहा भाणियव्वा सव्वजीवाणं। आहारो वि जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्वो, एत्तो आढत्तो—नेरइया णं भते ! आहारट्ठी ? जाव

य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

असुरकुमारा ण भते ! किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ, खेत्तकालभावपण्णवणागमेण सेस जहा नेरइयाण जाव ते ण तेसि पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! सोइदियत्ताए ५ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए ४ इट्ठत्ताए ५ इच्छियत्ताए भिज्जियत्ताए उड्ढत्ताए, णो अहत्ताए सुहत्ताए, णो दुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति।

असुरकुमाराण पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? असुरकुमाराभिलावेण जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

नागकुमाराण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ।

नागकुमारा ण भते ! केवइकालस्स आणमति वा ४ ?

गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण मुहुत्तपुहुत्तस्स आणमति वा ४।

नागकुमारा ण भते ! आहारट्ठी ? हताआहारट्ठी।

नागकुमाराण भते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! नागकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेस जहा असुरकुमाराण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

एव सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराण ति।

पुढविकाइयाण भते ! केवईय काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ।

पुढविकाइया केवइकालस्स आणमति वा ४ ?

गोयमा ! वेमाताए आणमति वा ४।

पुढविकाइया ण आहारट्ठी ?

हता आहारट्ठी।

पुढविकाइयाण केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

पुढविकाइया किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ जहा नेरइयाण जाव निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचदिसिं। वण्णओ कालनीलपीतलोहियहालिद्दसुक्किल्लाणि, गधओ सुरभिगंध २ रसओ तित्त ५ फासओ कक्खड ८ सेस तहेव। णाणत्त कइभाग आहारेति ? कइभाग फासाएति ?

गोयमा ! असखिज्जइभाग आहारेंति, अणतभाग फासाएति जाव ते ण तेसि पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! फासिदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। सेस जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति। एव जाव वणस्सइ-

१. प० ४।

२. प० २८।१।

दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

काइयाण, नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए ।

बेइंदियाण ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ।

बेइंदियाण आहारे पुच्छा, गोयमा ! आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से ण असखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सेस तहेव जाव अणंतभाग आसाएंति ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ?

गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति । जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसि णं पोग्गलाणं असखिज्जइभाग आहारेंति, णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासिज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाण अणासाइज्जमाणाण अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?

गोयमा ! जिब्भिदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

बेइंदियाणं भंते ! पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाइं ३ पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । तेइंदियाणं घाणिंदियजिब्भिदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

चउरिंदियाणं चक्खि(क्खु)दियघाणिंदियजिब्भिदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊणं ऊसासो वेमायाए । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ । आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स । सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

एवं मणुस्साणवि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स, सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति ।

वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं, परिणमंति अवसेसं जहा नागकुमाराणं । एवं जोइसियाणवि, नवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स । आहारो जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स । सेसं तहेव ।

वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया । ऊसासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं । आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं । सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति (क, ता, वृ, प० २८।१) ।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा ण भंते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, परारभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ॥
अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ॥

३४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, [१]•परारंभा वि, तदुभयारभा वि, णो अणारभा ? अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारंभा° ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ससारसमावण्णगा य, अससार-समावण्णगा य।
तत्थ ण जे ते अससारसमावण्णगा, ते ण सिद्धा। सिद्धा ण नो आयारभा,[२] •नो परारभा, नो तदुभयरभा°, अणारभा।
तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सजया य, असजया य।
तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्त-सजया य।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया, ते ण नो आयारंभा, नो परारभा,[३] •नो तदु-भयारभा°, अणारभा।
तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, ते सुहं जोग पडुच्च नो आयारभा[४], •नो परा-रंभा, नो तदुभयारभा°, अणारभा। असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि,[५] •परारभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा।
तत्थ ण जे ते असजया[६], ते अविरति पडुच्च आयारभा वि[७], •परारंभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा। से तेणट्ठेणं[८] गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा[९] •आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, नो अणारंभा। अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा,° अणारभा ॥

३५. नेरइया ण भते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारंभा ?

---

१. स० पा०—एव पडिउच्चारेतव्व।
२. स० पा०—आयारभा जाव अणारभा।
३. स० पा०—परारभा जाव अणारभा।
४. स० पा०—आयारभा जाव अणारभा।
५. स० पा०—वि जाव नो।
६. अस्सजया (ता, व)।
७ स० पा०—वि जाव नो।
८ एणट्ठेणं (अ, क), एतेणट्ठेण (ता,व, म)।
९. स० पा०—जीवा जाव अणारभा।

गोयमा ! •नेरइया आयारभा वि[1], परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारभा ॥

३६. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारभा वि,° नो अणारभा[3] ॥

३७. एवं जाव[4] पचिंदियतिरिक्खजोणिया । मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—सिद्धविरहिया भाणियव्वा । वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया[5] ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया[6] । कण्हलेसस्स[7], नीललेसस्स काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा, नवर—पमत्ताप्पमत्ता न भाणियव्वा[8] । तेउलेसस्स, पम्हलेसस्स, सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवर—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

---

१. स० पा०—वि जाव नो ।

२. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

३ अणारभा एव असुरकुमारा वि जाव (ता) ।

४. पू० प० २ ।

५. भ० १।३५, ३६ ।

६ भ० १।३३, ३४ । 'सिद्धा न भाणियव्वा' इति अव्याहर्तव्यम् । 'सिद्धानामलेश्यत्वात्'—इति वृत्तिकार' ।

७. किण्ह° (अ) ।

८. कण्हलेस्सा ण भंते ! जीवा कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारंभा ? अणारभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, नो अणारभा ।
अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारंभा ।
से केणट्ठेण जाव अणारंभा ?
गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संजया य असंजया य ।
तत्थ ण जे ते सजया ते सुह जोग पडुच्च नो आयारभा जाव अणारभा ।
असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा ।
तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा । से तेणट्ठेण जाव अणारभा ।
नीलकापोतलेश्याना एष एव गम' ।
तेउलेस्सा ण भते ! जीवा किं आयारभा जाव अणारभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया आयारभा वि जाव नो अणारभा, अत्थेगइया आयारभा वि जाव नो अणारभा, अत्थेगइया नो आयारभा जाव नो अणारभा ।
से केणट्ठेण ?
गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पण्णत्ता, त जहा—सजया य असजया य ।
तत्थ णं जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्तसजया य ।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया ते ण नो आयारभा जाव अणारभा ।
तत्थ णं जे ते पमत्तसजया ते सुह जोग पडुच्च नो आयारभा जाव अणारभा ।
असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा ।
तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च आयारभा वि जाव नो अणारभा । से तेणट्ठेण जाव अणारभा ।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३९. इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ?
गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे ॥

४० [1]•इहभविए भंते ! दंसणे ? परभविए दंसणे ? तदुभयभविए दंसणे ?
गोयमा ! इहभविए वि दंसणे, परभविए वि दंसणे, तदुभयभविए वि दंसणे° ॥

४१. इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए चरित्ते ?
गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते ॥

४२ [2]•इहभविए भंते ! तवे ? परभविए तवे ? तदुभयभविए तवे ?
गोयमा ! इहभविए तवे, नो परभविए तवे, नो तदुभयभविए तवे ॥

४३. इहभविए भंते ! संजमे ? परभविए संजमे ? तदुभयभविए संजमे ?
गोयमा ! इहभविए संजमे, नो परभविए संजमे, नो तदुभयभविए संजमे° ॥

असंवुड-संवुड-अणगार-पदं

४४. असंवुडे[3] णं भंते ! अणगारे[4] सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ ?

पद्मशुक्ललेश्यानां एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्ण-लेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि अप्रशस्त-भावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति एतद्मतमनुसृत्य तैरेव पाठरचना कृता—"कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?

गोयमा ! आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?

गोयमा ! अविरइं पडुच्च" एवं नील-कापोतलेश्यादंडकावपीति । किन्तु अभयदेव-सूरिणामेतद्मतं पर्यालोच्यमस्ति—

(१) सूत्रकारेण 'पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा' इति निर्देशः कृतः किन्तु 'संजतासंजता न भाणियव्वा' इति न सूचितम् ।

(२) कषायकुशीलसंयता षट्सु लेश्यासु भवन्ति । प्रस्तुतागमस्य २५ शतके षष्ठोद्देशे एतत् साक्षाल्लिखितमस्ति—कसायकुसीले पुच्छा । गोयमा ! सलेस्से होज्जा णो अलेस्से होज्जा । जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते ! कतिसु लेसासु होज्जा । गोयमा ! छल्लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद् व्याख्यातमस्ति—कषायकुशीलस्तु, षट्स्वपि सकषायमाश्रित्य (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे कृष्णलेश्यजीवस्य मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु हुज्जा (प० १७।३) । अस्यागमस्य वृत्तिकृता सहेतुकमिदं व्याख्यातम्—इह लेश्यानां प्रत्येकमसंख्येय-लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अध्यवसाय-स्थानानि, तत्र कानिचिन्मंदानुभावान्यध्यव-सायस्थानानि, प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यन्ते, अतएव कृष्ण-नील-कापोतलेश्या प्रमत्तसंय-तस्यापि गीयन्ते (प्र०वृ) ।

(४) प्रथमशतकस्य १०१ सूत्रं द्रष्टव्यम् ।

१. सं० पा०—दंसणं पि एमेव ।
२. सं० पा०—एवं तवे संजमे ।
३ अस्संवुडे (ता) ।
४ अणगारे किं (अ, ब) ।

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

४५. से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—असवुडे ण अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ°, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
गोयमा ! असवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबधणवद्धाओ धणियबधणवद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ[2] दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ[3] तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ[4] बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[5] दीहमद्ध चाउरत[6] संसारकतार अणुपरियट्टइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ।।

४६. सवुडे णं भते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
हता ! सिज्झइ,[7] •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ।।

४७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडे ण अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अंतं करेइ ?
गोयमा ! सवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ[8] धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ, वहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ । पकरेइ; आउय च ण कम्म न बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवयइ[9] । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सवुडे अणगारे सिज्झइ[10], •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं° अत करेइ ।।

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८. जीवे ण भते ! अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा[11] देवे सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ।।

---

१. स० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।
२. हस्स° (ता), रहस्स° (स) ।
३ ° भागाओ (ता, म) ।
४. ° सयाओ (क) ।
५. अणवयग्ग (व) ।
६ चाउरत (व, म, स) ।
७ स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
८ ° प्पग ° (स) ।
९ वीतीवतति (क, व, म) ।
१० स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
११. पिच्चा (अ, क, व) ।

४९. से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे° इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम[2]-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए, अकामबंभचेरवासेण, 'अकामसीतातव-दंस-मसग'[3]-अण्हाणग[4]-सेय-जल्ल-मल-पंक-परिदाहेणं 'अप्पतरं वा भुज्जतरं'[5] वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

५०. केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इहं[6] असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे[7] इ वा, चंपयवणे इ वा, चूयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे[8] इ वा, नग्गोहवणे[9] इ वा, छत्तोहवणे[10] इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुंभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा, णिच्चं[11] कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलुइय-गोच्छिय-जमलिय[12]-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्तपिंडिमंजरि-वडेंसगधरे[13] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

एवामेव[14] तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहिं, बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा[15] उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसो-भेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

एरिसगा णं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं अस्संजए[16] •अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपाव-कम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए° देवे सिया ॥

---

१ स० पा०—केणट्ठेणं जाव इओ ।
२ नियम (ता) ।
३ वृत्तौ 'अकामसीतातव-दंस-मसग' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः ।
४ अकामअण्हाणग (क, वृ) ।
५ °तरो वा भुज्जतरो (अ, ता, व, म), 'अप्पतरो वा भुज्जतरो वा काल' ति प्राकृतत्वेन विभक्तिविपरिणामादल्पतरं वा भूयस्तरं वा बहुतरं कालं यावत् (वृ) ।
६. इहं मणुस्सलोगंसि (अ, क, व, म, स) ।
७. सत्ति° (म) ।
८ लाउय° (अ, क, ब, स), लोअ° (म) ।
९ × (अ, क, ता); प्रत्यंतरे—णिग्गोहवणे इ वा (अ), णिग्गोह° (स) ।
१०. छत्तोअ° (क); छिन्नो° (ब); × (म), छन्नो (स) ।
११ × (अ, क, ता, व) ।
१२ जमइय (अ) ।
१३ °पेडि° (क), °वेण्टमंजरि° (ता) ।
१४. एवमेव (ता, म) ।
१५ वितिण्णा (क, व, वृपा); × (वृ) ।
१६ स० पा०—अस्संजए जाव देवे ।

५१—सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगवं महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

बीओ उद्देसो

५२. रायगिहे नगरे समोसरण । परिसा णिग्गया जाव[1] एव वयासी—

कम्म-वेयण-पदं

५३ जीवे ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५४ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ ? अत्थेगइयं नो वेदेइ ?
गोयमा ! उदिण्णं वेदेइ, 'नो अणुदिण्ण'[2] वेदेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५५. एव[3]—जाव वेमाणिए ॥

५६. जीवा ण भते ! सयकड दुक्खं वेदेति ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति ? अत्थेगइय नो वेदेति ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेति, नो अणुदिण्णं वेदेति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५८. एव—जाव[4] वेमाणिया ॥

५९. जीवे ण भते ! सयकड आउय वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ । जहा[5] दुक्खेण दो दडगा तहा आउएण वि दो दडगा—एगत्त-पोहत्तिया[6] ॥

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सास-नीसासा[7] ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. भ० १।८-१० ।
२. अणुदिण्णं नो (स) ।
३. एव चउव्वीसदडएण (स) ।
४ पू० प० २ ।
५. भ० १।५३-५८ ।
६. पोहत्तिया । एगत्तेण जाव वेमाणिया । पुहत्तेणं तहेव (व, म, स) ।
७ °णिस्सासा (ता) ।

६१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा? नो सव्वे समुस्ससानीसासा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति[1], बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससति; अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण उस्ससति, अभिक्खण नीससति। तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ॥

६२ नेरइया णं भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे[2] समट्ठे ॥

६३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ॥

६४. नेरइया ण भते ! सव्वे समवण्णा !
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवण्णतरागा[3]। •तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा°। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ॥

६६. नेरइया ण भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७ से केणट्ठेण[4] •भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया° नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा

---

१. परिणमति (ता)।
२. तिणट्ठे, (क म)।
३. स० पा०— °तरागा तहेव।
४ स० पा०—केणट्ठेण जाव नो।

ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा ॥

६८. नेरइया ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ॥

७०. नेरइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

७१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नेरइया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी[1], मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी[2] ॥
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरभिया, पारिग्गहिया[3], मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।
तत्थ ण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि ण पच किरियाओ कज्जति[4], तं जहा—आरंभिया[5], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया । एव सम्मामिच्छदिट्ठीण पि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ॥

७२. नेरइया ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७३. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ॥

७४. असुरकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा[6] ? सव्वे समसरीरा ?

---

१. सम्मा° (अ) ।
२. सम्मामिच्छा° (ता, म) ।
३ परि° (अ, म) ।
४ किज्जति (अ, क, व) ।
५ स० पा०—आरभिया जाव मिच्छा° ।
६. ° हारगा (अ, ता, व, म) ।

जहा[1] नेरइया तहा भाणियव्वा, नवरं—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ[2] [पुव्वोववन्ना महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा। पच्छोववन्ना पसत्था। सेस तहेव][3] ॥

७५ एव—जाव[4] थणियकुमारा[5] ॥

७६ पुढविकाइयाण[6] आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा[7] णेरइयाणं ॥

७७ पुढविकाइया[8] ण भते ! सव्वे समवेदणा ?
हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णी[9] असण्णिभूत[10] अणिदाए वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७६. पुढविकाइया णं भते ! सव्वे समकिरिया ?
हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८०. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छदिट्ठी[11]। ताण णेयतियाओ[12] पच किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया[13], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया०, मिच्छादसणवत्तिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८१. समाउया, समोववन्नगा जहा[14] नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२. जहा[15] पुढविकाइया तहा जाव[16] चउरिंदिया ॥

८३. पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[17] णेरइया, नाणत्तं किरियासु।

८४. पचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१ भ० १।६०-७३।

२. परिवण्णेयव्वाओ (अ, क, व, स), परि-त्थल्लेयव्वाओ (ता); परित्थणोतव्वाओ (म), कर्म्मादीनि नारकापेक्षया विपर्ययेण वाच्यानि (वृ)।

३ अ, क, ता, स एषु चतुर्षु आदर्शेषु असौ कोष्ठकवर्ती पाठो नास्ति। व, म सके-तितयोरादर्शयोरसौ लभ्यते। असौ च व्याख्यातोस्ति तेन कोष्ठके गृहीत।

४. पू० प० २।

५ ० कुमारा ण (अ, क, ता, ब, म, स)।

६. ० कातिया (म)।

७. भ० १।६०-६७।

८ ० क्काइया (क, ता, स)।

६ असण्णी य (अ, व)।

१०. असण्णीभूय (ता, स)।

११. मायामिच्छ० (अ); मायीमिच्छा० (ता); मायामिच्छा० (म)।

१२. णेएतियाओ (ता), णियइयाओ (स)।

१३. सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा०।

१४ भ० १।७२, ७३।

१५ भ० १।७६-८१।

१६. पू० प० २।

१७. भ० १।६०-६६, ७२, ७३।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—असजया य, संजया-संजया य ।
तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।
असजयाणं चत्तारि । मिच्छदिट्ठीणं पच । सम्मामिच्छदिट्ठीणं पच ।।

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६. [1]मणुस्सा णं भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य । तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति ।
तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति; अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खण परिणामेंति, अभिक्खण उस्ससंति, अभिक्खणं नीससंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ।

८८ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८९ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ।।

---

१ स० पा०—मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्तं जे महासरीरा ते वहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खणं आहारेंति सेस जहा नेरइयाणं जाव वेयणा ।

९०. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥

९२. मणुस्सा णं भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९३. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा । तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥

९४. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—मस्साणु नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा । तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा° ॥

९६ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया, अस्संजया, सजयासजया ।
तत्थ णं जें ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागसंजया य, वीतरागसजया य ।
तत्थ णं जे ते वीतरागसजया, ते णं अकिरिया ।
तत्थ णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, तेसि ण एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसंजया, तेसि ण दो किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरभिया य, मायावत्तिया य ।

तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि ण आइल्लाओ[1] तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।

असंजयाण चत्तारि किरियाओ कज्जति—आरभिया पारिग्गहिया, माया-वत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।

मिच्छदिट्ठीणं पच—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया, मिच्छादसणवत्तिया ।

सम्मामिच्छदिट्ठीण पच ।।

९८. मणुस्सा[2] ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वेसमोववन्नगा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

९९. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समो-ववन्नगा ?

गोयमा ! मणुस्सा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा । (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा । (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समो-ववन्नगा ।

१०० वाणमतर[3]-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] असुरकुमारा, नवर—वेयणाए णाणत्त-मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया ।।

---

१. आदिमाओ (क, ता, म) ।

२ ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणगते समर्पणपाठे 'सेस जहा नेरइयाण जाव वेयणा' इति उल्लेखोस्ति, अतोनन्तर क्रियासूत्र नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहण न कृतम् । समायुषः सूत्र क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद् नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्न नास्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहण कृतमिति सभाव्यते । तदस्माभि· साक्षाल्लिखितम् ।

३. प्रज्ञापनाया (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टास्ति, यथा—वाणमतरा ण जहा असुर-कुमारा ण ।

एव जोइसिय-वेमाणियाण वि । णवर ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइ-मिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मद्दिट्ठी-उववण्णगा य । तत्थ ण जे ते माइमिच्छ-द्दिट्ठोववण्णगा ते ण अप्पवेदणतरागा । तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठोववण्णगा ते ण महावेदणतरागा ।

४. भ० १।७४ ।

१०१. सलेस्सा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?
ओहियाणं[1], सलेस्साणं, सुक्कलेस्साणं—एतेसि ण तिण्हं एक्को गमो।
कण्हलेस्स[2]-नीललेस्साणं पि एगो[3] गमो, नवरं—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउव-वन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा।
मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरागा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा।
काउलेस्साण वि एसेव[4] गमो, नवर—नेरइइ जहा ओहिए दडए तहा भाणि-यव्वा।
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'[5] जहा ओहिओ दडओ तहा भाणियव्वा, नवर—मणुस्सा सराग-वीयरागा न भाणियव्वा।

संगहणी-गाहा

दुक्खाउए उदिण्णे, आहारे कम्म-वण्ण-लेस्सा य।
समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा[6] ॥१॥

लेस्सा-पदं

१०२. कइ ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा। लेस्साण बीओ[7] उद्देसो भाणियव्वो जाव[8] इड्ढी॥

जीवाणं भवपरिवट्टण-पदं

१०३ जीवस्स ण भते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते, त जहा—नेरइयससारसचिट्ठ-णकाले, तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसचिट्ठणकाले, देव-ससारसचिट्ठणकाले[9]॥

१०४. नेरइयससारचिट्ठणकाले[10] ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले॥

१०५. तिरिक्खजोणियसंसार[11] •संचिट्ठणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते• ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—असुन्नकाले य, मिस्सकाले य॥

---

१. पू०—भ० १।६०-७३।
२ ०लेस्सा (ता, म)।
३. एसो (अ, ता, व)।
४. एसोव (अ)।
५. जस्सत्थि (क, ता, ब)।
६. बोद्धव्वा (क, ता, म)।
७ बीयओ (अ, ब, स); वितिओ (क)।
८ प० १७।२।
९. ० काले प (अ, क, ता, व, म, स)।
१० नेरइयाण० (अ, ब, स)।
११. ०जोणिससार० (अ, क, ता, ब, म); स० पा०— ०ससारपुच्छा।

१०६. [1]●मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ।।

१०७ देवसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले° ।।

१०८. एतस्स ण भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स[2] य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ।।

१०९. तिरिक्खजोणियाण सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे ।।

११० मणुस्स-देवाण य[3] ●सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ।।

१११. एयस्स ण भते ! नेरइयससारसचिट्ठणकालस्स[4], ●तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसचिट्ठणकालस्स, देवससारसचिट्ठणकालस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ?° विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसचिट्ठणकाले, नेरइयससारसचिट्ठणकाले असखेज्जगुणे, देवससारसचिट्ठणकाले असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकाले अणतगुणे ।।

अंतकिरिया-पदं

११२. जीवे ण भते ! अतकिरियं करेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अतकिरियापयं[5] नेयव्व ।

११३. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाण, अविराहियसजमाण, विराहियसजमाण, अविराहियसजमासजमाण, विराहियसजमासंजमाण, असण्णीण, तावसाण, कदप्पियाण, चरग-परिव्वायगाण, किब्विसियाण, तेरिच्छियाण[6], आजीवियाण आभिओगियाण[7], सलिंगीण दंसणवावण्णगाण—एतेसि ण देवलोगेसु उववज्जमाणाण कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण उवरिमगेवेज्जएसु । अविराहियसजमाण जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे विमाणे । विराहियसजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ।

---

१. स० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं ।
२. मीसा° (ता, व, म) ।
३. सं० पा०—य जहा नेरइयाणं ।
४ सं० पा०—°कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिए ।
५ प० २० ।
६. तेरच्छियाण (अ, व, स) ।
७ आभियोगियाण (अ, व, म), आभोगियाण (स) ।

अविराहियसजमासजमाणं जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। विराहियसंजमासंजमाण जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण जोइसिएसु। असण्णीणं जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण वाणमतरेसु।

अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण[1] वोच्छामि—

तावसाण जोतिसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाण बंभलोए कप्पे, किव्बिसियाण लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुए कप्पे, आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिगीणं दसणवावन्नगाण उवरिमगेविज्जएसु ॥

असण्णि-आउय-पदं

११४ कतिविहे ण भते ! असण्णिआउए पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयअसण्णिआउए[2], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए ॥

११५ असण्णी ण भते ! जीवे किं नेरइयाउय पकरेइ ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेइ ? मणुस्साउय पकरेइ ? देवाउय पकरेइ ?

हता गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेइ, मणुस्साउयं पि पकरेइ, देवाउय पि पकरेइ ।

नेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ ।

तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ ।

मणुस्साउय[3] •पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ ।

देवाउय पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पकरेइ° ॥

११६ एयस्स ण भते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स, मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे[4] •कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा° ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे[5], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असखेज्जगुणे ।

११७. सेवं भते ! सेव भते[6] !

---

१. उक्कोसग (क, ता, ब, म, स) ।
२. नेरइयस्स ° (ता) ।
३. स० पा०—मणुस्साउए वि एव चेव, देवा जहा नेरइया ।
४ स० पा०—कयरे जाव विसेसाहिए वा ।
५. सखेज्ज ° (अ, क, ब, म) ।
६ भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

कंखामोहणिज्ज-पदं

११८. जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे ॥

११९. से भंते ! किं १ देसेण देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे ४. सव्वेण सव्वे कडे ॥

१२०. नेरइयाण भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे[1] ॥

१२१. ●से भंते ! कि १. देसेणं देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३. सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे° ४ सव्वेणं सव्वे कडे ॥

१२२. एवं जाव[2] वेमाणियाण दंडओ भाणियव्वो ॥

१२३. जीवा णं भंते ! कखामोहणिज्ज कम्म करिसु ?
हंता करिसु ॥

१२४ तं भंते ! कि १. देसेणं देस करिसु ? २. देसेण सव्व करिसु ? ३ सव्वेण देस करिसु ? ४ सव्वेण सव्व करिसु ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसं करिसु २ नो देसेण सव्व करिसु ३. नो सव्वेण देस करिसु । ४. सव्वेण सव्वं करिसु ॥

१२५. एएणं अभिलावेणं दंडओ भाणियव्वो, जाव[3] वेमाणियाण ॥

१२६ एवं करेंति । एत्थ वि दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

१२७. एवं करिस्सति । एत्थ वि दंडओ जाव[5] वेमाणियाण ॥

१२८. एव चिए, चिणिसु, चिणति, चिणिस्सति । उवचिए, उवचिणिसु, उवचिणति, उवचिणिस्सति । उदीरेसु, उदीरेति, उदीरिस्सति । वेदेसु, वेदेति, वेदिस्सति । निज्जरेसु, निज्जरेति, निज्जरिस्सति ।

संगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥

---

१. स० पा०—कडे जाव सव्वेण ।
२. पू० प० २ ।
३, ४, ५. पू० प० २ ।

१२९. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
हता वेदेति ।।

१३०. कहण्णं[1] भंते ! जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि कारणेहि सकिया, कखिया, वितिगिछिया[2], भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना—एवं खलु जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ।।

सद्धा-पदं

१३१. से नूण भते ! तमेव सच्च णीसक, जं जिणेहि पवेइयं ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ।।

१३२ से नूण भते ! एव मण धारेमाणे, एव पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?
हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे[3] •एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए° भवति ।।

अत्थि-नत्थि-पद

१३३. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?
हंता गोयमा[4] ! •अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्त नत्थित्ते° परिणमइ ।

१३४. 'ज ण'[5] भते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तं कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][6] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][7] ।।

१३५. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ।
जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ।।

१३६. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ? "•नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ?
हता गोयमा ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज । नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ।।

---

१. कह ण (क); कह ण (व, स) ।
२ वितिगछिया (अ, व, स), वितिगिच्छिता (क), वितिकिंछिगा (म) ।
३. स० पा०—धारेमाणे जाव भवति ।
४. स० पा०—गोयमा जाव परिणमइ ।
५ त (अ, व, स); × (ता) ।
६, ७ कोष्ठकवर्त्तिपाठ. व्याख्याशोस्ति ।
८. स० पा०—जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा ।

१३७. ज ण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं, त कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्ज] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज] ॥

१३८. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ।
जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज°, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ॥

भगवओ समता-पदं

१३९ जहा ते भते ! एत्थ गमणिज्ज, तहा ते इह गमणिज्ज ? जहा ते इह गमणिज्ज, तहा ते एत्थ गमणिज्ज ?
हता गोयमा ! जहा मे एत्थ गमणिज्ज[1], °तहा मे इह गमणिज्ज । जहा मे इहं गमणिज्जं°, तहा मे एत्थं गमणिज्जं ॥

कंखामोहणिज्जस्स बधादि-पदं

१४०. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं बधति ?
हता बधंति ॥

१४१ कहण्ण[2] भंते ! जीवा कंखामोहणिज्ज कम्म बधति ?
गोयमा ! पमादपच्चया, जोगनिमित्त[3] च ॥

१४२. से णं भंते ! पमादे किपवहे[4] ?
गोयमा ! जोगप्पवहे ॥

१४३. से णं भते ! जोए किपवहे ?
गोयमा ! वीरियप्पवहे ॥

१४४. से णं भते ! वीरिए किपवहे ?
गोयमा ! सरीरप्पवहे ॥

१४५. से ण भंते ! सरीरे किपवहे ?
गोयमा ! जीवप्पवहे ॥

१४६. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

---

१. स० पा०—गमणिज्ज जाव तहा ।
२. कह ण (अ) ।
३ °निमित्तय (क) ।
४. किंपभवे (क, वृपा) सर्वत्र ।

१४७ से नूणं भते ! अप्पणा चेव उदीरेति ? अप्पणा चेव गरहति ? अप्पणा चेव संवरेति[1] ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव[2] •उदीरेति। अप्पणा चेव गरहति। अप्पणा चेव सवरेति° ॥

१४८ 'ज ण'[3] भते ! अप्पणा चेव उदीरेति, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, त कि—१ उदिण्णं उदीरेति ? २ अणुदिण्ण उदीरेति ? ३ अणुदिण्णं उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! १. नो उदिण्ण उदीरेति। २ नो अणुदिण्ण उदीरेति। ३ अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म उदीरेति। ४. नो उदयाणतरपच्छाकड[4] कम्म उदीरेति ॥

१४९. जं ण भते ! अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म उदीरेति, त कि उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेण, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेणं, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति। णो त अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभविय कम्मं उदीरेति ॥

१५० एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५१. से नूण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ ? अप्पणा चेव गरहइ ? अप्पणा चेव सवरेइ ?
हता गोयमा ! [5]•अप्पणा चेव उवसामेइ। अप्पणा चेव गरहइ। अप्पणा चेव सवरेइ ॥

---

१. सवरइ (अ, व, म, स)।
२ स० पा०—त चेव उच्चारेतव्व।
३ त (अ, क, ता, व, म, स), क्वचित्प्रयुक्त-प्रत्याधारेण स्वीकृतोऽसौ पाठ।
४ उदयअणतर° (अ, क, ता, व, स)।
५ स० पा०—एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवर अणुदिण्ण उवसामेइ सेसा पडिसेहेयव्वा तिण्णि। ज तं भते ! अणूदिण्ण उवसामेइ त कि उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा। से नूण भते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा। से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प° एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेइ एव जाव परक्कमेइ वा।

१५२ ज ण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव सवरेति, त कि—१. उदिण्ण उवसामेइ ? २ अणुदिण्ण उवसामेइ ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उवसामेइ ?

गोयमा ! १ नो उदिण्ण उवसामेइ। २ अणुदिण्ण उवसामेइ। ३. नो अणु-दिण्णं उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ। ४. नो उदयाणतरपच्छाकड कम्मं उवसामेइ ॥

१५३ ज ण भते ! अणुदिण्ण उवसामेइ, त किं उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उवसामेइ। णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ॥

१५४ एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५५. से नूण भते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति। अप्पणा चेव गरहति ॥

१५६ ज ण भते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति त किं—१ उदिण्ण वेदेति ? २ अणुदिण्ण वेदेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म वेदेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ?
गोयमा ! १ उदिण्ण वेदेति। २. नो अणुदिण्ण वेदेति। ३. नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्मं वेदेति। ४. नो उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ॥

१५७ ज ण भते ! उदिण्ण वेदेति त कि उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरि-सक्कार-परक्कमेण उदिण्ण वेदेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्णं वेदेति ?

गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्ण वेदेति। नो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अवलेण, अवीरि-एण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्ण वेदेति ॥

१५८. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, वलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५९. से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति। अप्पणा चेव गरहति ॥

१६० ज ण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, त कि—
१. उदिण्ण निज्जरेति ? २ अणुदिण्ण निज्जरेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म निज्जरेति ? ४ उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ?
गोयमा ! १ नो उदिण्ण निज्जरेति । २. नो अणुदिण्ण निज्जरेति । ३. नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म निज्जरेति । ४ उदयाणतरपच्छाकडं कम्म निज्जरेति ।।

१६१ ज ण भते ! उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति त कि उट्ठाणेणं, कम्मेण, वलेण, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्जरेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, वलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति । णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदयाणंतरपच्छाकडं कम्म निज्जरेति ।।

१६२. एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार°-परक्कमेइ वा ।।

१६३. नेरइया णं भते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
जहा[1] ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव[2] थणियकुमारा ।।

१६४ पुढविक्काइया ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
हता वेदेति ।।

१६५. कहण्ण भते ! पुढविक्काइया कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेसि ण जीवाण णो एव तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा, मणे इ वा, वई ति वा—अम्हे ण कंखामोहणिज्जं कम्म वेदेमो, वेदेति पुण ते ।।

१६६ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ।
सेस त चेव जाव[3] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।।

१६७ एव जाव[4] चउरिंदिया ।।

१६८ पचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव[5] वेमाणिया जहा[6] ओहिया जीवा ।।

---

१. भ० १।१२६-१६२ ।
२ पू० प० २ ।
३. भ० १।१३२-१६२ ।
४ पू० प० २ ।
५ पू० प० २ ।
६. भ० १।१२६-१६२ ।

१६९. अत्थि णं भते ! समणा वि निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्म वेएति ?
'हता अत्थि'[1] ॥

१७० कहण्ण भते ! समणा निग्गथा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि नाणतरेहि, दसणतरेहि[2], चरित्ततरेहि[3], लिगतरेहि, पवयणतरेहि, पावयणतरेहि, कप्पतरेहि, मग्गतरेहि, मततरेहि[4], भंगतरेहि, णयतरेहि, नियमतरेहि, पमाणतरेहि सकिता कखिता वितिकिच्छिता[5] भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना—एव खलु समणा निग्गथा कखामोहणिज्जं कम्म वेदेति ॥

१७१ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसकं, ज जिणेहि पवेदित ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसकं, ज जिणेहि पवेदितं ॥

१७२. एवं जाव[6] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३ सेवं भते ! सेवं भते[7] !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४ कति णं भते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव[8]—अणुभागो समत्तो ।

सगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह[9] बधति ? कतिहि व ठाणेहि बधती पगडी ?
कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५. जीवे ण भंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णेण उवट्ठाएज्जा ?
हता उवट्ठाएज्जा[10] ॥

---

१. हतत्थि (ता) ।
२. दरिसणतरेहिं (क) ।
३ चरित्ततरेहिं तित्थतरेहिं (क) ।
४. मततरेहिं (अ, व); × (क) ।
५. वितिकिंछिया (ता) ।
६ भ० १।१३२-१६२ ।
७. भ० १।५१ ।
८. प० २३।१ ।
९. किह (अ, क, ता, म); कहिं (स) ।
१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१७७ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो पडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१७८ जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेण कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ।।

१७९. से भते' ! •कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ।।

१८० जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?° बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! 'बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा । सिय बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा'[२] ।।

१८१. [३]•जीवे णं भते ! मोहणिज्जेण कडेणं कम्मेण उवसंतेण उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा ।।

१८२. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१८३. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! 'नो बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा'[४] ।।

१८४. जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेणं कम्मेण उवसतेण अवक्कमेज्जा ?
हता अवक्कमेज्जा ।।

१८५. से भते ! कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ।।

---

१. स० पा०—भते जाव बालपडियवीरियत्ताए ।

२. वाचनान्तरे त्वेवम्—'बालवीरियत्ताए नो पडियवीरियत्ताए नो बालपडियवीरियत्ताए' (वृ) ।

३. स० पा०—जहा उदिण्णेणं दो आलावगा तहा उवसतेण वि दो आलावगा भाणियव्वा, नवरं उवट्ठाएज्जा पडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपडियवीरियत्ताए ।

४ वृद्धैस्तु काञ्चिद्वाचनामाश्रित्येद व्याख्यातं—मोहनीयेनोपशान्तेन सता न मिथ्यादृष्टि-र्जायते, साधु. श्रावको वा भवतीति (वृ) ।

१८६. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो पंडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा। बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा° ॥

१८७. से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे ॥

१८८. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! पुव्वि से एयं एवं रोयइ। इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ—एवं खलु एयं एवं ॥

कम्ममोक्ख-पदं

१८९. से नूणं भंते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स[1] वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं[2] तस्स अवेदइत्ता[3] मोक्खो ?
हंता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा[4] •जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१९०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयस्स वा[5] •तिरिक्खजोणियस्स वा, मणु-स्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ?
एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पदेसकम्मे य, अणु-भागकम्मे य।
तत्थ णं जं णं[6] पदेसकम्मं तं नियमा वेदेइ। तत्थ णं जं णं अणुभागकम्मं तं[7] अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णो वेदेइ।
णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—इमं कम्मं अयं जीवे अब्भोवगमियाए[8] वेदणाए वेदेस्सइ, इमं कम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेदेस्सइ।
अहाकम्मं, अहानिकरणं जहा जहा तं भगवया दिट्ठं तहा तहा तं विप्परि-णमिस्सतीति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयस्स वा[9], •तिरिक्ख-जोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

---

१. मणूसस्स (क, ता), मणुसस्स (ब, म, स)।
२. × (अ, स)।
३. अवेदयत्ता (अ, ब), अवेइत्ता (म, स)।
४. सं० पा०—वा जाव मोक्खो।
५. सं० पा०—वा जाव मोक्खो।
६. तं (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. × (ता)।
८. अब्भोवमियाए (क)।
९. सं० पा०—वा जाव मोक्खो।

पोग्गल-जीवाणं तेकालियत्त-पदं

१६१ एस ण भते ! पोग्गले[1] तीत अणतं सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण पोग्गले तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ।।

१६२ एस णं भते ! पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! [2]•एस ण पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया° ।।

१६३ एस ण भते ! पोग्गले अणागयं अणंत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! [3]•एस ण पोग्गले अणागय अणतं सासयं समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ।।

१६४ [4]•एस णं भते ! खधे तीत अणत सासय समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ।।

१६५ एस ण भते ! खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ।।

१६६. एस ण भते ! खधे अणागय अणंत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ।।

१६७ एस णं भते ! जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ।।

१६८. एस ण भते ! जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ।।

१६६. एस ण भते ! जीवे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे अणागय अणत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ।।

मोक्ख-पदं

२०० छउमत्थे ण भते ! मणूसे[5] तीत अणत सासय समय—केवलेण सजमेणं, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहिं[6] सिज्झिसु ?

---

१. पोग्गलेति परमाणुरुत्तरत्रस्कन्धग्रहणात् (वृ) ।
२. स० पा०—त चेव उच्चारेयव्व ।
३. स० पा०— त चेव उच्चारेयव्व ।
४, स० पा०—एव खधेण वि तिण्णि आलावगा । एव जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।
५ मणुस्से (अ, म) ।
६, °मातांहि (ता, म) ।

बुज्झिसु[1] ? •मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु° ? सव्वदुक्खाणं अंत करिंसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ [2]•छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणतं सासयं समयं —केवलेण सजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेणं बभचेरवासेण, केवलाहि पवयण-मायाहि नो सिज्झिसु ? नो बुज्झिसु ? नो मुच्चिसु ? नो परिनिव्वाइसु ? नो सव्वदुक्खाण° अत करिसु ?
गोयमा ! जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा[3] केवली भवित्ता तओ पच्छा 'सिज्झंति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायंति'[4], सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा । से तेणट्ठेण गोयमा[5] ! •एव वुच्चइ छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणंतं सासयं समय—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं सवरेणं, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि नो सिज्झिसु, नो बुज्झिसु, नो मुच्चिसु, नो परिनिव्वाइंसु, नो°सव्वदुक्खाण अंतं करिसु ।।

२०२. पडुप्पण्णे वि एव[6] चेव, नवरं—सिज्झति भाणियव्वं ।।

२०३. अणागए वि एवं[7] चेव, नवरं—सिज्झिस्सति भाणियव्व ।।

२०४. जहा[8] छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ[9] वि । तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।।

२०५. केवली ण भते ! मणूसे तीत अणत सासयं समय[10] •सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिनिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाणं अतं करिसु ?
हता गोयमा ! केवली ण मणूसे तीतं अणत सासय समय सिज्झिसु, बुज्झिसु, मुच्चिसु, परिनिव्वाइसु, सव्वदुक्खाण अत करिसु ।।

२०६. केवली णं भते ! मणूसे पडुप्पण्ण सासय समय सिज्झंति ? बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायति ? सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता गोयमा ! केवली णं मणूसे पडुप्पण्णं सासय समय सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

---

१. स० पा०—बुज्झिसु जाव सव्व° ।
२. स० पा०—त चेव जाव अत ।
३. जिणे (अ, क, ता, ब, स) ।
४. 'सिज्झती' त्यादिपु चतुर्षु पदेपु वर्त्तमान-निर्देशस्य शेपोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिसु सिज्झति मिज्झिस्सती' त्येवमतीतादिनिर्देशो द्रष्टव्यः (वृ) ।
५. सं० पा०—गोयमा जाव सव्व° ।
६. भ० १।२००, २०१ ।
७. भ० १।२००, २०१ ।
८. भ० १।२००-२०३ ।
९. परमोहिओ (अ, क ता, ब, म, वृपा) ।
१०. स० पा०—समय जाव अत हता सिज्झिसु जाव अते एते तिण्णि आलावगा भाणि-यव्वा । छउमत्थस्स जहा नवर सिज्झिसु सिज्झति सिज्झिस्सति ।

२०७. केवली णं भते ! मणूसे अणागय अणत सासय समय सिज्झिस्सति ? बुज्झिस्सति ? मुच्चिस्सति ? परिनिव्वाइस्सति ? सव्वदुक्खाणं अत करिस्सति ?
हंता गोयमा ! केवली ण मणूसे अणागयं अणत सासय समयं सिज्झिस्सति, बुज्झिस्सति, मुच्चिस्सति, परिनिव्वाइस्सति, सव्वदुक्खाणं अत करिस्सति° ।।

२०८ से नूण भते ! तीत अणतं सासयं समय, पडुप्पण्ण वा सासय समयं, अणागयं अणतं वा सासय समय जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] ? °बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अतं करेसु वा ? करेति वा ? करिस्सति वा ? °
हता गोयमा ! तीत अणतं सासय[2] °समय, पडुप्पण्ण वा सासय समय, अणागय अणत वा सासय समयं जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा°, करिस्सति वा ।।

२०९. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ।।

२१० सेवं भते ! सेवं भते[3] !

पंचमो उद्देसो

पुढवि-पदं

२११. कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा[4], °सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा°, तमतमा ।।

---

१. स० पा०—सिज्झति जाव अतं करिस्सति । द्रष्टव्य १।२०१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२. स० पा०—सासयं जाव करिस्सति ।
३. भ० १।५१ ।
४. स० पा०—रयणप्पभा जाव तमतमा ।

२१२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेग पंचूण, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३. केवइया ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एव—

चोयट्ठी[1] असुराण, चउरासीई य होइ नागाण ।
बावत्तरि सुवण्णाणं, वाउकुमाराण छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीण, विज्जुकुमारिद-थणियमग्गीण ।
छण्ह पि जुयलयाण[2], छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४. केवइया ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा असखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव[3] असंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५ सोहम्मे ण भते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

बत्तीसट्ठावीसा, बारस-अट्ठ[4]-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइ, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए[5] सत्तुत्तरं सय च मज्झमए ।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणावसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

पुढवी ट्ठिति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव सठाणे ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दस ठाणा[6] ॥४॥

---

१. चोवट्ठी (क); चोसट्ठी (म, स) ।
२. जुवलयाण (अ, क, ता, व) ।
३. पू० प० २ ।
४. अट्ठ य (क, ता, म) ।
५. हेट्ठिमेसु (क, ता, म), हेट्ठिमएसु (स) ।
६ ठाणे (अ, व) ।

२१६. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ठिती, समयाहिया जहण्णिया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिया ठिती जाव असंखेज्ज-समयाहिया जहण्णिया ठिती । तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ॥

२१७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा १. कोहोवउत्ता । २ अहवा कोहो-वउत्ता य, माणोवउत्ते य । ३ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य[1] । ४. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ५. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[2] । ६. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । ७ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य[3] । ८. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य । ९. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य । १०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ११. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[4] । १२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । १३ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । १६ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १७. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १८ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १९. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । २०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

---

१. 'म' प्रती—अतोग्रे एवं माया वि लोभो वि कोहेण भइयव्वो अथवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य पच्छा माणेण लोभेण य पच्छा मायाए लोभेण य पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भणियव्वो ते कोह अमुचता कोह अमुचता एव सत्तावीस भगा णेयव्वा ।

२. 'ता' प्रती—अतोग्रे एवं सत्तावीस भगा णेतव्वा ।

३. 'क', 'व' प्रत्योः—अतोग्रे एव सत्तावीस भगा णेतव्वा ।

४ 'अ' प्रती—अतोग्रे एव कोहे माणेण लोभेणं चत्तारि भगा ८ एवं कोहेणं मायाए लोभेण चत्तारि भगा १२ अहवा कोहोवउत्ता माणो-वउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभो-वउत्ता २ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६ अहवा कोहोव-उत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते य ७ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोव-उत्ता लोभोवउत्ता ८ एवं सत्तावीस भगा णेयव्वा ।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। २१ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २३. कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ताय। २५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २६ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २७ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य॥

२१८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य। एव असीतिभगा[1] नेयव्वा।

---

१. १—(८)—१. कोहोवउत्ते २. माणोवउत्ते ३. मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५. कोहोवउत्ता ६. माणोवउत्ता ७. मायोवउत्ता ८. लोभोवउत्ता।
२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते १०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते १२. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४ कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते १६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता १७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते २०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१. माणोवउत्ते मायोवउत्ते २२. माणोवउत्ते मायोवउत्ता २३. माणोवउत्ता मायोवउत्ते २४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५. माणोवउत्ते लोभोवउत्ते २६. माणोवउत्ते लोभोवउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते २८. माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९. मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ३०. मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ३१. मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३२. मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।
३—(३२)—
३३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एवं जाव सखेज्जसमयाहियाए ठितीए, असखेज्जसमयाहियाए ठितीए तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठितीए सत्तावीसं भगा भाणियव्वा[1] ।।

२१९. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ओगाहणा, पदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा जाव असखेज्जपएसाहिया जहण्णिया ओगाहणा । तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ।।

२२०. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ?
असीइभगा भाणियव्वा[2] जाव सखेज्जपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा ।
असंखेज्जपदेसाहियाए जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणाण, तप्पाउग्गुक्कोसि-

---

४८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४९. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५१. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५३. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५४. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५८. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५९. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७४. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७९ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

१. भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।

याए ओगाहणाए वट्टमाणाणं[1] सत्तावीस भगा[2] ॥

२२१. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए[3] •तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु॰ एग-मेगंसि निरयावासंसि नेरइयाण कइ सरीरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए जाव[4] वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीसं भगा[5] ॥

२२३. एएणं गमेण तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[6] नेरइयाण सरीरया किसघयणा[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्ह सघयणाण असंघयणी नेवट्ठी, नेव छिरा[8], नेव ण्हारूणि। जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया[9] असुहा अमणुण्णा अमणामा एतेसि[10] सरीर-संघायत्ताए परिणमंति ॥

२२५. इमीसे णं भंते ? रयणप्पभाए जाव[11] छण्ह सघयणाणं असघयणे वट्टमाणा नेर-इया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[12] ॥

२२६. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव[13] नेरइयाण सरीरया किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा[14] ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता, तत्थ ण जे ते उत्तर-वेउव्विया ते वि हुडसठिया पण्णत्ता ॥

२२७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[15] हुडसठाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीस भगा[16] ॥

२२८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[17] नेरइयाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता ॥

२२९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[18] काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीस भगा ॥[19]

---

१. वट्टमाणाण नेरइयाण दोसु वि (अ), वट्ट-माणाणं जाव नेरइयाण दोसु वि (क, स), वट्टमाणाण दोसु वि (म)।
२. भ० १।२१७।
३. स० पा०—पुढवीए जाव एगमेगंसि।
४. भ० १।२१७।
५. भ० १।२१७।
६. भ० १।२१६।
७. किंसघयणी (क, ता, स)।
८. च्छिरा (ता, म, स)।
९. अप्पिता (क)।
१०. तेतेसिं (क, ता, म)।
११. भ० १।२१७।
१२ भ० १।२१७।
१३. भ० १।२१६।
१४. 'नेरइयाण सरीरया' इति शेषः।
१५. भ० ।२१७।
१६. भ० १।२१७।
१७. भ० १।२१६।
१८. भ० १।२१७।
१९ भ० १।२१७

२३०. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[1] नेरइया कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिण्णि वि ॥

२३१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[2] सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भंगा[3] ॥

२३२. एव मिच्छदसणे वि ॥

२३३. सम्मामिच्छदसणे असीतिभगा[4] ॥

२३४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[5] नेरइया कि नाणी, अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि[6] नाणाइ नियमा । तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

२३५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[7] आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[8] ॥

२३६. एव तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ भाणियव्वाइं ॥

२३७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[9] नेरइया कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
तिण्णि वि ॥

२३८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[10] मणजोए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[11] ॥

२३९. एव वइजोए ॥

२४०. एव कायजोए ॥

२४१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव[12] नेरइया कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता[13] ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[14] सागारोवओगे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भगा[15] ॥

---

१. भ० १।२१६ ।
२. भ० १।२२७ ।
३. भ० १।२१७ ।
४. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
५. भ० १।२१६ ।
६. तिण्णि वि (ता) ।
७. भ० १।२१७ ।
८. भ० १।२१७ ।
९. भ० १।२१६ ।
१०. भ० १।२१७ ।
११. भ० १।२१७ ।
१२. भ० १।२१६ ।
१३. अणगारोवउत्ता (अ), अणागारोवयुत्ता (ता) ।
१४ भ० १।२१७ ।
१५. भ० १।२१७ ।

२४३. एव अणागारोवउत्ते वि सत्तावीस भंगा[1] ।।

२४४. एवं सत्त वि पुढवीओ[2] नेयव्वाओ, नाणत्त लेसासु ।।

संगहणी-गाहा

काऊ य दोसु, तइयाए मीसिया, नीलिया चउत्थीए ।
पचमियाए मीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ।।१।।

असुरकुमारादीणं नाणादसासु कोहोवउत्तादि भंग-पदं

२४५. चउसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमाराणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता । जहण्णिया ठिई जहा[3] नेरइया तहा, नवरं—पडिलोमा भगा भाणियव्वा ।
सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवउत्ता ।
अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ता य । एएण गमेण नेयव्व जाव[4] थणियकुमारा, 'नवर—नाणत्त जाणियव्वं'[5] ।।

२४६. असखेज्जेसु ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि पुढविक्काइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा—जहण्णिया ठिई जाव[6] तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ।।

२४७. असखेज्जेसु ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा पुढविक्काइया कि कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ता वि, माणोवउत्ता वि, मायोवउत्ता वि, लोभोवउत्ता वि ।
एवं पुढविक्काइयाण सव्वेसु वि ठाणेसु अभगयं, नवरं—तेउलेस्साए असीति-भगा[7] ।।

२४८. एव आउक्काइया वि ।।

२४९. तेउक्काइय—वाउक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभगय ।।

२५०. वणप्फइकाइया जहा[8] पुढविक्काइया ।।

---

१. भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२११ ।
३. भ० १।२१६-२४३ ।
४. पू० प० २ ।
५. तच्च नारकाणामसुरकुमारादीना च सहनन-सस्थानलेश्यासूत्रेषु भवति (वृ) ।
६. भ० १।२१६ ।
७. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
८. भ० १।२४७ ।

२५१. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइ चेव, नवरं—अब्भहिया सम्मत्ते। आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे य एएहिं असीइभंगा। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं सत्तावीसं भंगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभंगयं॥

२५२. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा[1], नवरं—जेहिं सत्तावीसं भंगा तेहिं अभंगयं कायव्वं[2]॥

२५३. मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीतिभंगा तेहिं ठाणेहिं मणुस्साणं वि असीतिभंगा भाणियव्वा। जेसु सत्तावीसा तेसु अभंगयं, नवरं—मणुस्साणं अब्भहियं जहण्णियाए ठिईए, आहारए य असीतिभंगा॥

२५४. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं जं जस्स जाव अणुत्तरा॥

२५५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पदं

२५६. जावइयाओ[4] णं भंते! ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति?

हंता गोयमा! जावइयाओ णं ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि[5] °य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं° हव्वमागच्छति॥

२५७. 'जावइयं णं'[6], भंते! खेत्तं उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ? उज्जोएइ? तवेइ? पभासेइ?

---

१. भ० १।२१६-२४३।

२. कायव्वं जत्थ असीति तत्थ असीतिं चेव (अ)।

३. भ० १।५१।

४. जावइया (अ)।

५. सं० पा०—वि जाव हव्व °।

६. जावइयाओ ण (अ); जावइयाण्णं (ता); जावइया ण (म, स); स्वीकृतपाठे 'ण' पदस्य योगे 'जावइय' पदस्य अनुस्वारलोपो जातः।

हंता गोयमा ! जावतियं णं खेत्तं [1] •उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ° पभासेइ ॥

२५८. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेइ ? अपुट्ठं ओभासेइ [2] ?
•गोयमा ! पुट्ठं ओभासेइ, नो अपुट्ठं ॥

२५९. तं भंते ! किं ओगाढं ओभासेइ ? अणोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! ओगाढं ओभासेइ, नो अणोगाढं ॥

२६०. तं भंते ! किं अणंतरोगाढं ओभासेइ ? परंपरोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणंतरोगाढं ओभासेइ, नो परंपरोगाढं ॥

२६१. तं भंते ! किं अणुं ओभासेइ ? बायरं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणुं पि ओभासेइ, बायरं पि ओभासेइ ॥

२६२. तं भंते ! किं उड्ढं ओभासेइ ? तिरियं ओभासेइ ? अहे ओभासेइ ?
गोयमा ! उड्ढं पि ओभासेइ, तिरियं पि ओभासेइ, अहे पि ओभासेइ ॥

२६३. तं भंते ! किं आइं ओभासेइ ? मज्झे ओभासेइ ? अंते ओभासेइ ?
गोयमा ! आइं पि ओभासेइ, मज्झे पि ओभासेइ, अंते पि ओभासेइ ॥

२६४. तं भंते ! किं सविसए ओभासेइ ? अविसए ओभासेइ ?
गोयमा ! सविसए ओभासेइ, नो अविसए ॥

२६५. तं भंते ! किं आणुपुव्विं ओभासेइ ? अणाणुपुव्विं ओभासेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्विं ओभासेइ, नो अणाणुपुव्विं ॥

२६६. तं भंते ! कइदिसिं ओभासेइ ?
गोयमा ! नियमा° छद्दिसिं ओभासेइ ॥

२६७. एवं—उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ॥

फुसणा-पदं

२६८. से नूणं भंते ! सव्वंति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! सव्वंति [3] •सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति° वत्तव्वं सिया ॥

२६९. तं [4] भंते ! किं पुट्ठं फुसइ ! ? अपुट्ठं फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठं जाव [5] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

---

१. सं० पा०—खेत्तं जाव पभासेइ ।
२. सं० पा०—ओभासेइ जाव छद्दिसिं ।
३. सं० पा०—सव्वंति जाव वत्तव्वं ।
४. एतत् सूत्रं वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति, प्रकरणानुसारि चापि न दृश्यते, किन्तु सर्वासु प्रतिषु उपलब्धमस्ति ।
५. भ० १।२५८-२६६ ।

२७०. लोयते भंते ! अलोयंतं फुसइ ? अलोयते वि लोयंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! लोयते अलोयत फुसइ, अलोयते वि लोयत फुसइ ॥

२७१. तं भते ! कि पुट्ठ फुसइ ? अपुट्ठ फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठ फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[1] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७२ दीवते भते ! सागरत फुसइ ? सागरते वि दीवंत फुसइ ?
हंता गोयमा ! दीवते सागरतं फुसइ, सागरते वि दीवंतं फुसइ जाव[2] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७३. •[3]उदयते भंते ! पोयत[4] फुसइ ? पोयते वि उदयतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! उदयते पोयंतं फुसइ, पोयते उदयंतं फुसइ जाव[5] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७४. छिद्दते भंते ! दूसतं फुसइ ? दूसते वि छिद्दंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छिद्दंते दूसतं फुसइ, दूसते वि छिद्दंत फुसइ जाव[6] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७५. छायंते भते ! आयवत फुसइ ? आयवते वि छायत फुसइ ?
हंता गोयमा ! छायते आयवतं फुसइ, आयवते वि छायंतं फुसइ जाव[7] नियमा° छद्दिसि फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि णं भते ! जीवाणं पाणाइवाए णं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

२७७. सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[8] निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिया तिदिसि, सिया चउदिसि, सिया पंचदिसि ॥

२७८ सा भंते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२७९. सा भते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

२८०. सा भते कि 'आणुपुव्वि कडा'[9] कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ । जा य

---

१. भ० १।२५८-२६६ ।
२. भ० १।२५८-२६६ ।
३. स० पा०—एवं एएणं अभिलावेण उदयते पोयत छिद्दते दूसंत छायते आयवत जाव नियमा ।
४. पोदंत (क, ता, व, म, स) ।
५, ६, ७. भ० १।२५८-२६६ ।
८. भ० १।२५९-२६६ ।
९. आणुपुव्विकडा (अ, क, व) ।

कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा, नो अणाणुपुव्वि 'कडा ति'[1] वत्तव्व सिया ॥

२८१. अत्थि णं भते ! नेरइयाण पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

२८२. सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[2] नियमा छद्दिसि कज्जइ ॥

२८३. सा भते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२८४. त चेव जाव[3] नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्व सिया ॥

२८५. जहा[4] नेरइया तहा एगिदियवज्जा भाणियव्वा जाव[5] वेमाणिया । एगिदिया जहा[6] जीवा तहा भाणियव्वा ॥

२८६. जहा[7] पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे,[8] •माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादंसणसल्ले—एवं एए अट्ठारस । चउवीस दंडगा भाणियव्वा ॥

२८७. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति जाव[9] विहरति ॥

रोहस्स पण्ह-पदं

२८८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी रोहे णामं अणगारे पगइभद्दए[10] पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे[11] मिउमद्दव-सपन्ने[12] अल्लीणे[13] विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्डजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. कडा इति(क), कड त्ति (ब, स) ।
२. भ० १।२५९-२६६ ।
३. भ० १।२७६, २८० ।
४. भ० १।२८१-२८४ ।
५. पू० प० २ ।
६. भ० १।२७६-२८० ।
७. भ० १।२७६-२८५ ।
८. स० पा०—कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले ।
९. भ० १।५१।
१०. °भद्दए पगइमउए पगइविणीए (अ क, ता. ब, म, स, वृ) ।
११. °माय ° (ता) ।
१२. °सपुण्णे (स) ।
१३ आलीणे भद्दए (अ, क, ब); अल्लीणे भद्दए (ता, म, स, वृ) । आदर्शेषु वृत्तौ च 'पगइभद्दए' इत समादाय 'विणीए' एत-दतानि सर्वाण्यपि पदानि वर्तन्ते, किन्तु औपपातिक (६१, ११६) सूत्रस्य संदर्भे 'पगइमउए पगइविणीए भद्दए' एतानि त्रीणि पदानि द्विरुक्तानि सन्ति, तानि पाठान्तरे गृहीतानि । द्रष्टव्य भ० २।७० सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२८९. ततेण से रोहे अणगारे[1] जायसड्ढे जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

२९०. पुव्वि भते ! लोए, पच्छा अलोए ? पुव्वि अलोए, पच्छा लोए ?
रोहा ! लोए य अलोए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते[3]—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ।।

२९१. पुव्वि भते ! जीवा, पच्छा अजीवा ? पुव्वि अजीवा, पच्छा जीवा ?
[4]• रोहा ! जीवा य अजीवा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९२. पुव्वि भते ! भवसिद्धिया[5], पच्छा अभवसिद्धिया ? पुव्वि अभवसिद्धिया, पच्छा भवसिद्धिया ?
रोहा ! भवसिद्धिया य, अभवसिद्धिया य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९३ पुव्वि भते ! सिद्धि, पच्छा असिद्धी ? पुव्वि असिद्धी, पच्छा सिद्धी ?
रोहा ! सिद्धी य असिद्धी य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९४ पुव्वि भते ! सिद्धा, पच्छा असिद्धा ? पुव्वि असिद्धा, पच्छा सिद्धा ?
रोहा ! सिद्धा य असिद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! °

२९५. पुव्वि भते ! अडए, पच्छा कुक्कुडी ? पुव्वि कुक्कुडी, पच्छा अंडए ?
रोहा ! से ण अडए कओ ?
भयव ! कुक्कुडीओ ।
सा ण कुक्कुडी कओ ?
भते ! अडयाओ ।
एवामेव रोहा ! से य अडए, सा य कुक्कुडी पुव्वि पेते, पच्छा पेते—'दो वेते'[6] सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९६. पुव्वि भते ! लोयंते, पच्छा अलोयते ? पुव्वि अलोयते, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अलोयते य[7] •पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा°, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

---

१. भगव अणगारे (क, ब), अणगारे भगव (ता) ।
२. भ० १।१० ।
३. वेते (ता) ।
४. स० पा०—जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य । एवं भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा ।
५ भवसिद्धीया (क, ता, स) ।
६. दुवेए (स) ।
७. सं० पा०—य जाव अणाणुपुव्वी ।

२९७. पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? [1]•पुव्वि सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा लोयंते ?०
रोहा ! लोयते य सत्तमे ओवासंतरे य पुव्वि पेते[2], •पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा०, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९८. एवं लोयंते य सत्तमे य तणुवाए। एवं घणवाए, घणोदही, सत्तमा पुढवी। एवं लोयंते एक्केक्केणं संजोएतव्वे इमेहिं ठाणेहि, त जहा—

संगहणी-गाहा

ओवास-वात-घणउदहि-पुढवि-दीवा य सागरा वासा।
नेरइयादि[3] अत्थिय, समया कम्माइ[4] लेस्साओ ॥१॥
दिट्ठी दंसण-नाणे, सण्ण-सरीरा य जोग-उवओगे।
दव्व-पएसा-पज्जव, अद्धा किं पुव्वि लोयते ॥२॥

२९९. [5]•पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा अतीतद्धा ? पुव्वि अतीतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयते य अतीतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३००. पुव्वि भते ! लोयंते, पच्छा अणागतद्धा ? पुव्वि अणागतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयते य अणागतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०१. पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा सव्वद्धा ? पुव्विं सव्वद्धा, पच्छा लोयते ?
रोहा ! लोयते य सव्वद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०२. जहा[6] लोयतेणं सजोइया सव्वे ठाणा एते, एवं अलोयंतेण वि संजोएतव्वा सव्वे ॥

३०३. पुव्वि भंते ! सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा सत्तमे तणुवाए[7] ? •पुव्विं सत्तमे तणुवाए, पच्छा सत्तमे ओवासतरे ?
रोहा ! सत्तमे ओवासत्तरे य सत्तमे तणुवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०४. एव सत्तम ओवासतरं सव्वेहिं सम सजोएतव्व जाव[8] सव्वद्धाए ॥

३०५. पुव्वि भते ! सत्तमे तणुवाए ? पच्छासत्तमे घणवाए[9] ? •पुव्वि सत्तमे घणवाए, पच्छा सत्तमे तणुवाए ?

---

१. स० पा०—पुच्छा।
२. स० पा०—पेते जाव अणाणुपुव्वी।
३. चउवीस दडगा।
४. कम्माइ (अ, क, व, म, स)।
५. स० पा०—पुव्वि भते ! लोयते पच्छा सव्वद्धा।
६. भ० १।२९७-३०१।
७. स० पा०—तणुवाए०।
८. भ० १।२९८-३०१।
९. स० पा० घणवाए०।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! ०

३०६ एव[1] तहेव नेयव्व जाव[2] सव्वद्धा ।।

३०७ एव उवरिल्ल एक्केक्कं संजोयतेणं, जो जो हिट्ठिल्लो त तं छड्डतेण नेयव्वं जाव[3] अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव[4] अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[5] विहरइ ।।

लोयट्ठिति-पदं

३०९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर जाव[6] एव वयासी—

३१०. कतिविहा ण भते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिति पण्णत्ता, त जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए। २. वायपइट्ठिए उदही। ३. उदहिपइट्ठिया पुढवी। ४. पुढविपइट्ठिया तस-थावरा पाणा। ५. अजीवा जीवपइट्ठिया। ६. जीवा कम्मपइट्ठिया। ७. अजीवा जीवसगहिया। ८. जीवा कम्मसगहिया ।।

३११. से[7] केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव[7] जीवा कम्मसंगहिया ?

गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ[8], वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि सित बधइ, बधित्ता मज्झे[9] गठि बधइ, बधित्ता उवरिल्लं गंठि मुयइ, मुइत्ता उवरिल्ल देस वामेइ, वामेत्ता उवरिल्लं देस 'आउयायस्स पूरेइ'[10], पूरेत्ता उप्पि सित बंधइ, बधित्ता मज्झिल्लं गठि मुयइ। से नूण गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ[11]।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा कम्मसगहिया।

से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बंधइ, बधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियसि[12] उदगसि ओगाहेज्जा। से नूण गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ।

एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसंगहिया ।।

---

१. एव पि (क, ता, ब, म, स)।
२. भ० १।२९८-३०१।
३. भ० १।२९८-३०१।
४. भ० १।३०१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।१०।
७ भ० १।३१०।
८. बत्थि० (क)।
९. मज्झिल (व)।
१०. आउयाए सपूरेइ (अ)।
११. चेट्ठइ (अ), चेष्टति (ब)।
१२. अत्थाहमपार० (वृपा)।

जीव-पोग्गल पदं

३१२. अत्थि ण भते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
हता अत्थि ॥

३१३. से केणट्ठेण भते[1] ! •एव वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए° चिट्ठति ?
गोयमा ! से जहाणामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ ।
अहे ण केइ पुरिसे तसि हरदसि एगं महं[2] नाव सयासव[3] सयछिद्दं[4] ओगाहेज्जा । से नूण गोयमा ! सा नावा तेहि आसवदारेहिं आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ?
हता चिट्ठइ ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य[5] •पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए° चिट्ठति ॥

सिणेहकाय-पदं

३१४. अत्थि ण भते ! सदा समित सुहुमे सिणेहकाए पवडइ ?
हता अत्थि ॥

३१५. से भते ! कि उड्ढे पवडइ[6] ? अहे पवडइ ? तिरिए पवडइ ?
गोयमा ! उड्ढे वि पवडइ, अहे वि पवडइ, तिरिए वि पवडइ ॥

३१६. जहा से बायरे आउयाए अण्णमण्णसमाउत्ते चिरं पि दीहकालं चिट्ठइ तहा ण से वि ?
णो इणट्ठे समट्ठे । से ण खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ।

३१७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. स० पा०—भते जाव चिट्ठति ।
२. महा (ता) ।
३. सदा° (अ, क, ता, व, स) ।
४. सदाछिड्ड (अ), सतछिड्ड (ता); सदछिड्ड (व) ।
५. स० पा०—य जाव चिट्ठति ।
६. पडइ (अ, व) ।
७. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देसं उववज्जइ ? २. देसेण सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं देसं उववज्जइ ? ४. सव्वेण सव्वं उववज्जइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसं उववज्जइ । २. नो देसेणं सव्वं उववज्जइ । ३. नो सव्वेण देस उववज्जइ । ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ॥

३१९. जहा नेरइए, एव जाव[1] वेमाणिए ॥

३२०. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ । २ नो देसेण सव्व आहारेइ । ३ सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२१. एव जाव[2] वेमाणिए[3] ॥

३२२. नेरइए ण भते ! नेरइएहितो[4] उव्वट्टमाणे, कि—१. देसेण देस उव्वट्टइ ? २ [5]•देसेणं सव्व उव्वट्टइ ? ३ सव्वेण देस उव्वट्टइ ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उव्वट्टइ । २. नो देसेण सव्व उव्वट्टइ । ३. नो सव्वेण देस उव्वट्टइ । ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ॥

३२३. एव जाव वेमाणिए ॥

३२४. नेरइए ण भते ! नेरइएहितो उव्वट्टमाणे, कि—१ देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १ नो देसेणं देस आहारेइ । २ नो देसेण सव्व आहारेइ । ३ सव्वेण वा देस आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

---

१. पू० प० २ ।
२ पू० प० २ ।
३. वेमाणिया (म) ।
४. नेरइएसु (ता, म) ।
५. स० पा०—जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्ट-माणे वि दडगो भाणियव्वो । नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेण देस आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देस आहारेइ । सव्वेण वा सव्व आहारेइ । एव जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे कि देसेण देस उववण्णे एसो वि तहेव जाव सव्वेण सव्व उववण्णे । जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दडगा तहा उववण्णेण उव्वट्टेण वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा—सव्वेण सव्वं उववण्णे, सव्वेण वा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ । एएण अभिलावेण उववण्णे वि उव्वट्टे वि नेयव्व ।

३२५. एव जाव वेमाणिए ॥

३२६. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१. देसेण देस उववण्णे ? २. देसेण सव्व उववण्णे ? ३. सव्वेण देस उववण्णे ? ४. सव्वेण सव्व उववण्णे ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उववण्णे। २. नो देसेण सव्व उववण्णे। ३. नो सव्वेण देस उववण्णे। ४ सव्वेणं सव्व उववण्णे ॥

३२७. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२८. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१ देसेण देस आहारेइ ? २. देसेणं सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ। २. नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेण वा देस आहारेइ। ४ सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२९. एवं जाव वेमाणिए ॥

३३०. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्टे, कि–१ देसेण देस उव्वट्टे ? २. देसेण सव्व उव्वट्टे ? ३. सव्वेण देसं उव्वट्टे ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टे ?
गोयमा ! १ नो देसेणं देस उव्वट्टे। २ नो देसेण सव्व उव्वट्टे। ३ नो सव्वेण देस उव्वट्टे। ४. सव्वेण सव्व उव्वट्टे ॥

३३१. एव जाव वेमाणिए ॥

३३२. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्टे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्वं आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसं आहारेइ। २. नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेण वा देसं आहारेइ। ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३३३. एव जाव वेमाणिए ॥°[1]

३३४. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि–१ अद्धेण अद्ध उववज्जइ ? २ अद्धेण सव्व उववज्जइ ? ३. सव्वेण अद्ध उववज्जइ ? ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ?
जहा पढमिल्लेण अट्ठ दडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दडगा भाणियव्वा, नवर— जहि देसेणं देस उववज्जइ, तहि अद्धेण अद्ध उववज्जइ इति भाणियव्व, एय नाणत्तं। एते सव्वे वि सोलस दंडगा भाणियव्वा ॥

विग्गहगइ-पद

३३५. जोवे ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णए ? अविग्गहगइसमावण्णए ?
गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावण्णए, सिय अविग्गहगइसमावण्णए ॥

---

१. अस्मिन्नालापके वृत्तिकृता पाठान्तरस्य उल्लेख कृतोस्ति—'पुस्तकान्तरे तूत्पादतदाहारदडकानन्तरमुत्पादे सत्युत्पन्नतदाहारदडकौ ततस्तूत्पादप्रतिपक्षत्वादुद्वर्त्तनाया उद्वर्त्तनातदाहारदडकौ उद्वर्त्तनाया चोद्वृत्तस्यादित्युद्वृत्ततदाहारदडकौ' (वृ)।

३३६. एवं जाव[1] वेमाणिए ।।

३३७. जीवा ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ।।

३३८. नेरइया ण भंते ! कि विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एव जीव—एगिंदियवज्जो तियभंगो ।

आयु-पदं

३३९. देवे ण भंते ! महिड्ढिए[2] महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे[3] महाणुभावे अविउक्कंतिय चयमाणे[4] किंचिकाल[5] हिरिवत्तिय[6] दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय[7] आहारं नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ तं आउयं पडिसवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा, मणुस्साउय वा ?
हंता गोयमा ! देवेण महिड्ढिए[8] °महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कंतिय चयमाणे किंचिकाल हिरिवत्तिय दुगछावत्तियं परीसहवत्तिय आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा° मणुस्साउयं वा ।

गब्भ-पदं

३४०. जीवे ण भंते ! गब्भ वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ ? अणिंदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिंदिए वक्कमइ ।।

३४१. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ ? सिय अणिंदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! दव्विंदियाइ पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ । भाविंदियाइ पडुच्च सइंदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिंदिए वक्कमइ ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. महड्ढिए (क) ।
३. महासुक्खे (अ) ; महासोक्खे (म, वृपा) ।
४. चय चयमाणे (अ, ता, व, म, स, वृपा) ।
५. कचि° (ता) ।
६ हिरिवित्तिय (स) ।
७ परिस्सह ° (क, ता, स) ।
८ स० पा०—महिड्ढिए जाव मणुस्साउय ।

३४२. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ। सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी वक्कमइ ? सिय असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारयाइं[1] पडुच्च असरीरी वक्कमइ। तेया-कम्माइ पडुच्च ससरीरी वक्कमइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ-सिय ससरीरी वक्कमइ। सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४४. जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ?
गोयमा ! माउओय पिउसुक्क—त तदुभयसंसिट्ठं[2] तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥

३४५. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ?
गोयमा ! ज से माया नाणाविहाओ रसविगतीओ[3] आहारमाहारेइ, तदेकदेसेण ओयमाहारेइ ॥

३४६. जीवस्स ण भते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिघाणे इ वा 'वते इ वा पित्ते इ वा'[4] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४७. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! जीवे ण गब्भगए समाणे जमाहारेइ त चिणाइ, त जहा—सोइदियत्ताए,[5] •चक्खिदियत्ताए, घाणिदियत्ताए, रसिदियत्ताए°, फासिदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिज-केस-मसु-रोम-नहत्ताए। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवस्स ण गब्भगयस्स समाणस्स णत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिघाणे इ वा वते इ वा पित्ते इ वा ॥

३४८. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे पभू मुहेण कावलिय आहारमाहारित्तए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४९. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! जीवे ण गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ, अभिक्खण आहारेइ, अभिक्खण परिणामेइ, अभिक्खण उस्ससइ, अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ, आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ[6]।

---

१. आहारादी (अ, व), आहाराइ (ता, स)।
२. °संसिट्ठ कलुस किव्विस (अ, क, म, स)।
३. रसवतीओ (अ, क, व, म), रसवित्तीओ (ता)।
४. × (अ, क, ता, व) एते पदे वृत्तावपि न व्याख्याते।
५. स०पा०—सोइदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए।
६. नीससति (अ, क, ता, म, स)।

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा[1]—तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ ।

अवरा वि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा[2]—तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं गब्भगए समाणे॰ नो पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ।।

माइय-पेइय-अंग-पदं

३५०. कइ णं भंते ! माइयंगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिए, मत्थुलुंगे[4] ।।

३५१. कइ णं भंते ! पेतियंगा[5] पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ पेतियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केस-मंसु-रोम-नहे ।।

३५२. अम्मापेइए[6] णं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतियं कालं संचिट्ठइ, अहे णं समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-कालसमयंसि वोच्छिण्णे भवइ ।।

गब्भस्स नरगगमण-पदं

३५३. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ।।

३५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से णं सण्णी पंचिदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म[7] पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ,[8] समोहणित्ता चाउरंगिणिं सेणं[9] विउव्वइ, विउव्वित्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ ।

से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए, अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं

---

१. पुत्तजीव फुडा (वृ) ।
२. माउजीव फुडा (वृ) ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।
४. ॰ लुए (अ, क, स), ॰ लिंगे (म) ।
५. पितियंगा (अ, म, स) ।
६. ॰ पिइए (अ, म, स) ।
७. निसम्मा (ता) ।
८. समोहणइ (अ, स) ।
९. सेण्णं (क, ता, व, म, स) ।

करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! • एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा°, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

गब्भस्स देवलोगगमण-पद

३५५. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५६. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! से णं सण्णी पंचिदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे[2] तिव्वधम्माणुरागरत्ते ।
से णं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्ग-पिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज देवलोगेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५७. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे उत्ताणए[3] वा पासल्लए[4] वा अबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा ? चिट्ठेज्ज वा ? निसीएज्ज वा ? तुयट्टेज्ज वा ? माउए सुयमाणीए[5] सुवइ ? जागरमाणीए जागरइ ? सुहियाए सुहिए भवइ ? दुहियाए दुहिए भवइ ?
हंता गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे[6] •उत्ताणए वा पासल्लए वा अबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा । माउए सुयमाणीए सुवइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ° दुहियाए दुहिए भवइ ।
अहे णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छति सममागच्छति[7], तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति ।
वण्णवज्झाणि य से कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं—नो उवसंताइं भवंति,

---

१. स० पा०—गोयमा जाव अत्थे° ।
२. ° जाइसड्ढे (ब, स) ।
३. उत्ताणे (ता) ।
४. पोसल्लए (अ), पासिल्लए (क); पासल्लिए (ता, म) ।
५. सुवमाणीए (क, ता, म) ।
६. स० पा०—समाणे जाव दुहियाए ।
७. सम्ममा° (अ, व, स, वृपा) ।

तओ भवइ दुरूवे दुवण्णे 'दुग्गधे दुरसे'[1] दुफासे अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'[2] या वि भवइ ।

वण्णवज्भाणि य से कम्माइ नो बद्धाइ[3] •नो पुट्ठाइं नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइं नो अभिनिविट्ठाइ नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइं—उवसताइ भवंति, तओ भवइ सुरूवे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे° 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'[4] या वि भवइ ।।

३५८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[5] ।।

अट्ठमो उद्देसो

बालस्स आउय-पद

३५९. एगंतबाले णं भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति ? तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ?

गोयमा ! एगतबाले ण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेति, तिरियाउयं वि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति, नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ।।

पडियस्स आउय-पदं

३६०. एगंतपडिए ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति[6] ? •तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा

---

१. दुगधे (म) ।
२. ° वयणपच्चाए (अ, क, ता, ब, म, स), स्थानाङ्गे (८।१०) 'पच्चायाए' इत्येव पाठोऽस्ति ।
३. स० पा०—पसत्थ नेयव्व जाव आदेज्ज° ।
४. ° वयणपच्चाए (क, ता) ।
५. भ० १। ५१ ।
६. स० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? °देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडिए णं मणुस्से[1] आउयं सिय पकरेति, सिय णो पकरेति, जइ पकरेति णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरियाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६१. से केणट्ठेणं जाव[2] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडियस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पण्णायंति, त जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

बालपंडियस्स आउय-पदं

३६२. बालपंडिए णं भंते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति[3] ? •तिरिक्खाउय पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरिक्खाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति°, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६३. से केणट्ठेणं जाव[4] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं[5] धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म[6] देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ ।
'से तेणं[7] देसोवरम-देसपच्चक्खाणेणं णो नेरइयाउयं पकरेति जाव[8] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

---

१. मणूसे (ता) ।
२. भ० १।३६० ।
३. सं० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।
४. भ० १।३६२ ।
५. यारियं (क, ता) ।
६. निसम्मा (अ, ता, व) ।
७. सेणं ते (क); सेणं तेण (ता, व) ।
८. भ० १।३६० ।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा दहसि वा उदगसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा नूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा पव्वयसि वा पव्वयविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए[1] मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय[2] त्ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपास उद्दाति[3], ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय[4] तिकिरिए, सिय चउकिरिए[5], सिय पचकिरिए ।।

३६५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बधणयाए, णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[6]—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए वि, बधणताए वि—णो मारणताए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[7], पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए[8] वि, बधणताए वि, मारणताए वि, तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय° पंचकिरिए ।।

३६६. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव[10] वणविदुग्गसि वा तणाइ ऊसविय-ऊसविय अगणिकायं निसिरइ—तावं च णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।।

३६७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए[11]—•णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—तावं

---

१. मियवत्तिए (अ), मियवत्तीए (स) ।
२. मिए (अ, ता, ब, म, स) ।
३. उड्डाइ (अ, क, ता, ब, स) ।
४. जाव च ण से पुरिसे कच्छसि वा जाव कूडपासं उड्डाइ ताव च णं से पुरिसे सिय (क, ता, म, स) ।
५. चतु° (ता) ।
६. पाउसियाए (अ, ब, म) ।
७. पायोसियाए (ब) ।
८. उद्दणयाए (ता) ।
९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पच° ।
१०. भ० १।३६४ ।
११. सं० पा०—उस्सवणयाए तिहि, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि नो दहणयाए चउहि, जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि ।

च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहि किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, णो दहणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, दहणयाए वि, तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए°—पचहि किरियाहि पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३६८. पुरिसे णं भंते ! कच्छसि वा जाव[1] वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते 'मिय त्ति'[2] काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरति, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए।

३६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए निसिरणयाए—णो विद्धसणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए निसिरणताए वि, विद्धसणताए वि—णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहि पुट्ठे।

जे भविए निसिरणयाए वि, विद्धसणयाए वि, मारणताए वि—ताव च ण से पुरिसे[3] °काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणाति-वायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहि पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३७०. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव[4] वणविदुग्गसि वा ? मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय त्ति काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए आयत-कण्णायतं उसु आयामेत्ता चिट्ठेज्जा, अण्णयरे[5] पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा[6] असिणा सीसं छिंदेज्जा, से य उसू ताए चेव पुव्वायामणयाए तं

१. भ० १।३६४।
२. मिए त्ति (अ); मिया ति (ता, म); मिये ति (व, स)।
३. स० पा०—पुरिसे जाव पचहिं।
४. भ० १।३६४।
५. अण्णे य से (क, ता, म)।
६. सत° (ता)।

मियं विंधेज्जा, से णं भंते ! पुरिसे कि मियवेरेण पुट्ठे ? पुरिसवेरेण पुट्ठे ? गोयमा ! जे मियं मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे ? जे पुरिसं मारेइ, से° पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
से नूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, सधिज्जमाणे[2] सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे[3] त्ति वत्तव्व सिया ?
हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे[4], •सधिज्जमाणे सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे° निसिट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ।
से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—जे मियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ।
अतो छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[5], •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहि किरियाहि पुट्ठे । बाहिं छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[6] •अहिगरणियाए, पाओसियाए° पारितावणियाए—चउहि किरियाहिं पुट्ठे ॥

३७२ पुरिसे णं भते ! पुरिसं सत्तीए समभिधसेज्जा, सयपाणिणा[7] वा से असिणा सीसं छिदेज्जा, ततो णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तं पुरिस सत्तीए समभिधंसेति[8], सयपाणिणा[9] वा से असिणा सीसं छिदति—ताव च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए[10] •पाओसियाए, पारितावणियाए°, पाणातिवातकिरियाए—पंचहि किरियाहिं पुट्ठे ।
आसण्णवधएण य अणवकंखणवत्तीए[11] णं पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भते ! पुरिसा सरिसया[12] सरित्तया[13] सरिव्वया सरिसभडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धि संगामं संगामेंति तत्थ णं एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे परायिज्जति[14] । से कहमेयं भते ! एवं ?

---

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस° ।
२. संधेज्जमाणे (ता) ।
३. निसट्ठे (क, ता) ।
४. स० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।
५. स० पा०—काइयाए जाव पचहिं ।
६. स० पा०—काइयाए जाव पारिया°; कातियाए (ता) ।
७. सपाणिणा (क, ता) ।
८. अभिघसेइ (अ, व, स) ।
९. सपाणिणा (क, ता) ।
१०. स० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा° ।
११. अणवकंखवत्तीए (अ, स) ।
१२. सरसया (ब) ।
१३. सरिसत्तया (ता) ।
१४. पराइणिज्जइ (अ, ता, ब); पराएज्जइ (स) ।

गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ॥

३७४ से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—सवीरिए परायिणति ? अवीरिए° परायिज्जति ?

गोयमा ! जस्स णं वीरियवज्झाइ कम्माइ नो बद्धाइ नो पुट्ठाइं[2] •नो निहत्ताइ नो कडाइं नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ° नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइ—उवसंताइं भवति से ण परायिणति।

जस्स ण वीरियवज्झाइ कम्माइं बद्धाइ[3]• पुट्ठाइ निहत्ताइ कडाइं पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइं° उदिण्णाइ णो उवसताइ भवंति से ण पुरिसे परायिज्जति, से तेणट्ठेण। गोयमा ! एव वुच्चति—सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ॥

वीरिय-पदं

३७५. जीवा ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ॥

३७६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसार समावण्णगा य।

तत्थ णं[4] जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा। सिद्धा णं अवीरिया। तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा[5] ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य। तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया। तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया वि, अवीरिया वि। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सवीरिया वि, अवीरिया वि ॥

३७७. नेरइया ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ॥

३७८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया ? करण-वीरिएण सवीरिया य ? अवीरिया य ?

गोयमा ! जेसि णं नेरइयाण अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-

---

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव परायिज्जति।
२. स० पा०—पुट्ठाइ जाव नो।
३. सं० पा०—बद्धाइ जाव उदिण्णाइं।
४. × (क, ता, ब, म)।
५. ° वण्णया (क, ता, म)।

परक्कमे, ते णं नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया।

जेसि णं नेरइयाण णत्थि उट्ठाणे[1] •कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे, ते ण नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया। से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया। करण-वीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य॥

३७९. जहा नेरइया एवं जाव[2] पचिंदियतिरिक्खजोणिया॥

३८०. [3]•मणुस्सा णं भते! कि सवीरिया? अवीरिया?
गोयमा! सवीरिया वि, अवीरिया वि॥

३८१. से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि? अवीरिया वि?
गोयमा! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसि-पडिवण्णगा य।
तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करण-वीरिएण अवीरिया। तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि, अवीरिया वि। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि, अवीरिया वि°॥

३८२. वाणमतर-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] नेरईया॥

३८३. सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[5] विहरइ॥

नवमो उद्देसो

गुरु-लघु-पदं

३८४. कहण्ण[6] भते! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छंति?
गोयमा! पाणाइवाएण मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेण परिग्गहेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न- 'परपरिवाय-अरति-रति'[7]-मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा! जीवा गरुयत्तं[8] हव्वमागच्छंति॥

---

१. स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।
२ पू० प० २।
३. स० पा०—मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवर सिद्धवज्जा भाणियव्वा।
४. भ० १।३७७, ३७८।
५ भ० १।५१।
६. कह ण (अ, ब)।
७. रतिअरतिपरपरिवाय (अ, ब, स)।
८. गुरुयत्त (ब)।

३८५ कहण्ण भते ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण[1] •मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेण मेहुणवेरमणेण परिग्गहवेरमणेण 'कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस°-मिच्छादसणसल्ल वेर-मणेण'[2]—एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ।।

३८६. [3]•कहण्ण भते ! जीवा ससार आउलीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[4] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार आउलीकरेति ।।

३८७. कहण्ण भते ! जीवा ससारं परित्तीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[5] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार परित्तीकरेति ।।

३८८. कहण्ण भते ! जीवा ससारं दीहीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[6] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार दीहीकरेति ।।

३८९. कहण्णं भते जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[7] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ।।

३९० कहण्ण भते ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[8] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ।।

३९१. कहण्ण भते ! जीवा ससार वीतिवयति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[9] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार वीतिवयति ।।

३९२. सत्तमे णं भते ! ओवासतरे[10] किं गरुए[11] ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

---

१. पाणायवाय° (ब, स);
स० पा०—पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छा° ।
२. स्थानाङ्ग १।११४-१२६ क्रोधादीनामग्रे 'विवेगे' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।
३. स० पा०—एव ससार आउलीकरेति एव परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एव ह्रस्सीकरेति एव अणुपरियट्टति एव वीईवयति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ।
४. भ० १।३८४ ।
५. भ० १।३८५ ।
६ भ० १।३८४ ।
७. भ० १।३८५ ।
८. भ० १।३८४ ।
९. भ० १।३८५ ।
१०. उवासतरे (क, ब, म, स) ।
११. गुरुए (अ) ।

३९३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ॥

३९४. एव सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ॥

३९५. ओवासतराइ सव्वाइ जहा[1] सत्तमे ओवासतरे ॥

३९६. 'जहा तणुवाए एव—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा'[2] ॥

३९७. नेरइया ण भते ! कि गरुया[3] ? °लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! विउव्विय-तेयाइ पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया, णो अगरुयलहुया । जीवं च कम्मग[4] च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

३९९. एव जाव[5] वेमाणिया, नवर—नाणत्त जाणियव्व सरीरेहि ॥

४००. धम्मत्थिकाए[6] °ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०१. अहम्मत्थिकाए णं भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०२. आगासत्थिकाए णं भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०३ जीवत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए° ॥

४०४ पोग्गलत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ॥

४०५ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ–णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ? अगरुयलहुए वि ?
गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए,

---

१. भ० १।३९२ ।
२. 'एव गरुयलहुए' इति पाठ एकस्मिन् क्वचित् प्रयुक्ते आदर्शे लभ्यते । एतत् सग्रहगाथायाश्चरणद्वयमस्ति तेन पूर्वोक्तस्यापि 'ओवास' पदस्य पुनरुल्लेखोत्र जातोस्ति ।
३. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।
४. कम्मक (क), कम्मग (वृत्तौ लिपि पाठसकेते) ।
५ पू० प० २ ।
६. सं० पा०—धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थि° चउत्थपएग ।

अगरुयलहुए । अगरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०६. [1]•समया णं भंते ! किं गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया ॥

४०७. कम्माणि णं भंते ! किं गरुयाइं ? लहुयाइं ? गरुयलहुयाइं ? अगरुयलहुयाइं ?
गोयमा ! णो गरुयाइं, णो लहुयाइं, णो गरुयलहुयाइं, अगरुयलहुयाइं° ॥

४०८. कण्हलेस्सा णं भंते ! किं गरुया[2] ?• लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

४०९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्सा णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च ततियपदेणं,[3] भावलेस्सं पडुच्च चउत्थपदेणं[4] ॥

४१०. एवं जाव[5] सुक्कलेसा ॥

४११. दिट्ठी-दंसण-'णाण-अण्णाण'[6]-सण्णाओ चउत्थएणं पदेणं नेतव्वाओ ॥

४१२. हेट्ठिल्ला चत्तारि[7] सरीरा नेयव्वा[8] ततिएणं पदेणं । कम्मयं[9] चउत्थएणं पदेणं ॥

४१३. मणजोगो, वइजोगो चउत्थएणं पदेणं, कायजोगो ततिएणं पदेणं ॥

४१४. सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थएणं पदेणं ॥

४१५. सव्वदव्वा, सव्वपएसा, सव्वपज्जवा जहा[10] पोग्गलत्थिकाओ[11] ॥

४१६. तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा चउत्थएणं[12] पदेणं ॥

पसत्थ-पदं

४१७. से नूणं भंते ! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ?
हंता गोयमा ! लाघवियं[13] •अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं° पसत्थं ॥

४१८. से नूणं भंते ! अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ?

---

१. सं० पा०—समया कम्माणि य चउत्थपदेणं ।
२. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।
३. गरुयलहुया ।
४. अगरुयलहुया ।
५. भ० १।१०२ ।
६. नाणाण्णाण (ता) ।
७. ओरालियवेउव्वियआहारगतेया ।
८. नायव्वा (अ, ब स) ।
९. कम्मया (क, म, स), कम्मइए (ता) ।
१०. जधा (अ, ब, स) ।
११. भ० १।४०४ ।
१२. चउत्थेणं (क, ता, ब, म) ।
१३. सं० पा०—लाघविय जाव पसत्थं ।

हता गोयमा ! अकोहत्त अमाणत्त[1] •अमायत्त अलोभत्त समणाणं निग्गंथाण° पसत्थ ॥

कखापदोस-पदं

४१९. से नूण भते ! कंखापदोसे खीणे समणे निग्गथे अंतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा ?

बहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह[2] पच्छा संवुडे काल करेइ ततो पच्छा सिज्झति[3] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंत करेति ?

हता गोयमा ! कखापदोसे[4] खीणे[5] •समणे निग्गथे अतकरे भवति, अतिम-सरीरिए वा ।

वहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह पच्छा सवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाण° अत करेति ॥

इह-पर-भवियाउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, एव भासति, एवं पण्णवेति, एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तं जहा—इहभवियाउय[6] च, परभवियाउय च ।

ज समय इहभवियाउयं पकरेति, तं समय परभवियाउय पकरेति ।

ज समय परभवियाउय पकरेति, त समय इहभवियाउय पकरेति ।

इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउय पकरेति,

परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउय पकरेति ।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएण दो आउयाइ पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च ॥

४२१. से कहमेय[7] भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[8] एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइं पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च ।

जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[9], •एवं भासेमि, एव पण्णवेमि, एव° परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, त जहा— इहभवियाउय वा, परभवियाउयं वा ।

---

१. स० पा०—अमाणत्त जाव पसत्थ ।
२. अहा (अ, ता, व, म) ।
३ स० पा०—सिज्झति जाव अत ।
४. कख° (अ, व, स) ।
५ स० पा०—खीणे जाव अत ।
६. °आउग (क) ।
७. °मेत (ता, म), °मेव (स) ।
८. भ० १।४२० ।
९. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव परूवेमि ।

जं समयं इहभवियाउयं पकरेति, णो तं समयं परभवियाउयं पकरेति ।
जं समयं परभवियाउयं पकरेति, णो तं समयं इहभवियाउयं पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउयं पकरेति ।
परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउयं पकरेति ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ॥

४२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरति ॥

कालासवेसियपुत्त-पदं

४२३. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते[2] एवं वयासी—
थेरा सामाइयं न याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा पच्चक्खाणं न याणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा संजमं न याणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा संवरं न याणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा विवेगं न याणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति ।
थेरा विउस्सग्गं न याणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं न याणंति ॥

४२४. तए णं थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वदासी—
जाणामो णं अज्जो ! सामाइयं, जाणामो णं अज्जो ! सामाइयस्स[3] अट्ठं[4] ।
जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणं, जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! संजमं, जाणामो णं अज्जो ! संजमस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! संवरं, जाणामो णं अज्जो ! संवरस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! विवेगं, जाणामो णं अज्जो ! विवेगस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! विउस्सग्गं, जाणामो णं अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठं ॥

४२५. तते णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ[5] णं अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइयं, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठं जाव[6] जइ णं अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्गं, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं । के भे[7]

---

१. भ० १।५१ ।
२. भगवं (अ, ब) ।
३. सामातियस्स (ता) ।
४. सं० पा०—अट्ठं जाव जाणामो ।
५. जति (अ, क, ब, म) ।
६. भ० १।४२३ ।
७. ते (ब, म) ।

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1] ।
•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सजमे, आया णे अज्जो ! सजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संवरे, आया णे अज्जो ! सवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ।।
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ° विउस्सग्गस्स अट्ठे ।।

४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एवं वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे—अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठ अज्जो ! गरहह[3] ?
कालासा[4] ! सजमट्ठयाए ।।

४२८. से भते ! कि गरहा सजमे ? अगरहा सजमे ?
कालासा ! गरहा सजमे, णो अगरहा संजमे। गरहा वि य ण सव्व दोस पविणेति, सव्व बालिय परिण्णाए। एव खु णे आया संजमे उवहिते भवति। एव खु णे आया सजमे उवचिए भवति। एव खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति ।।

४२९. एत्थ ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे सबुद्धे थेरे भगवते वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एएसि ण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[5] अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाणं[6] अविण्णायाणं अव्वोकडाण[7] अव्वोच्छिण्णाण अणिज्जूढाण अणुवधारियाण एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।

इदाणि भते ! एतेसि पयाणं जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाण मुयाण[8] विण्णायाणं वोगडाण वोच्छिण्णाण णिज्जूढाण उवधारियाण[9] एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि। एवमेय से जहेय[10] तुब्भे वदह ।।

४३०. तए ण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—सद्दहाहि

---

१. स० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
२. भ० १।४२३ ।
३ गरहह (व) ।
४. कालास (स) ।
५. अबोहियाए (अ, स) ।
६ असुयाणं (म), वृत्तौ 'अस्मृताना' इति व्याख्यातमस्ति ।
७. अव्वोगडाण (अ,व,स); अवोकडाण (क,म) ।
८. सुयाण (व); × (म) ।
९. अवधारियाण (म) ।
१०. जहेद (ता) ।

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेय अम्हे वदामो ॥

४३१. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइय सपडिक्कमणं धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध[1] ॥

४३२. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमणं धम्मं उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

४३३. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे अण्हाणय अदतवणय[2] अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकटगा बावीस परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे[3] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भते ति ! भगव गोयमे समण भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—से नूण भते ! सेट्ठियस्स[4] य तणुयस्स य किवणस्स[5] य खत्तियस्स य 'समा चेव'[6] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हता गोयमा ! सेट्ठियस्स[7] •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव° अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ॥

४३५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स[8] •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

आहाकम्म-पदं

४३६. 'आहाकम्म ण'[9] भुजमाणे समणे निग्गथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

---

१. कुरुष्व इति गम्यम् (वृ)।
२. अदंतवण्णयं (क); अदतघुवणय (ता, व, स)।
३. परिणिव्वुए (अ, ता, व); परिणिव्वुते (क, म)।
४. सेट्ठिस्स (ता, व), सिट्ठिस्स (म)।
५. किविणस्स (ता)।
६ समच्चेव (व, म)।
७ स० पा०—सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण°।
८. स० पा०—तणुयस्स जाव कज्जइ।
९. आहाकम्मे ण (क), आहाकम्म ण (ता), आहाकम ण (व), आहाकम्मणं (म)।

गोयमा ! आहाकम्म णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ[1], •हस्सकालठिइयाओ दीहकाल-ठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्साया-वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

४३७. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[2] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ, आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ[3], •आउकायं णावकंखइ, तेउकायं णावकंखइ, वाउकायं णावकंखइ, वणस्सइकायं णावकंखइ°, तसकायं णाव-कंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकंखइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ॥

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्जं णं भंते ! भुजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, •[4]दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवयइ ॥

४३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[5] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं

१. सं० पा०—पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ ।
२. भ० १।४३६ ।
३. सं० पा०—णावकंखइ जाव तसकायं ।
४. सं० पा०—जहा संवुडे, नवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय णो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ ।
५. भ० १।४३८ ।

नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाण पुढविकायं[1] अवकखइ जाव[2] तसकायं अवकंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं (आहारं ?[3]) आहारेइ ते वि जीवे अवकंखइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ॥

४४०. से नूणं भंते! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ? सासए बालए, बालियत्तं असासयं? सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं?

हंता गोयमा! अथिरे पलोट्टइ[5], °नो थिरे पलोट्टइ। अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ। सासए बालए, बालियत्तं असासयं। सासए पंडिए°, पंडियत्तं असासयं॥

४४१. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[6] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

परसमयवत्तव्वया-पदं

४४२. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति[7], °एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—

एवं खलु चलमाणे अचलिए[8]। °उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए। वेदिज्जमाणे अवेदिए। पहिज्जमाणे अपहीणे। छिज्जमाणे अच्छिण्णे। भिज्जमाणे अभिण्णे। दज्झमाणे अदड्ढे। मिज्जमाणे अमए°। निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ[9] न[10] साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णति?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं नत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति।

---

१. पुढविक्कायं (ता, म, स)।
२. भ० १।४३७।
३. द्रष्टव्यं—भ० १।४३७ सूत्रम्।
४. भ० १।४३८।
५. सं० पा०—पलोट्टइ जाव पंडियत्त।
६. भ० १।५१।
७. सं० पा०—एवमाइक्खति जाव परूवेंति।
८. सं० पा०—अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
९. एगततो (क, म); एगतओ (ता)।
१०. णो (ता)।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?

तिण्ह परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि'[1], तिहा[2] वि कज्जति।

दुहा कज्जमाणा[3] एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ—एगयओ वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति। एव[4] चत्तारि।

पच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, एगयओ साहणित्ता[5] दुक्खत्ताए कज्जति। दुक्खे वि य ण से सासए सया समित[6] उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य।

पुव्वि[7] भासा भासा। भासिज्जमाणी भासा अभासा। भासासमयवितिक्कंतं च ण भासिया भासा।

जा सा पुव्वि भासा भासा। भासिज्जमाणी भासा अभासा। भासासमयवितिक्कत च ण भासिया भासा। सा कि भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

अभासओ ण सा भासा। नो खलु सा भासओ भासा।

पुव्वि किरिया दुक्खा। कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। किरियासमयवितिक्कत च ण कडा किरिया दुक्खा।

जा सा पुव्वि किरिया दुक्खा। कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। किरियासमयवितिक्कत च णं कडा किरिया दुक्खा। सा कि करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?

अकरणओ णं सा दुक्खा। नो खलु सा करणओ दुक्खा—सेव वत्तव्वं सिया।

अकिच्चं दुक्ख, अफुस दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्टु-अकट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया॥

ससमयवत्तव्वया-पद

४४३—से कहमेय भते ! एव ?

---

१. दुविहा (व)।
२. तिविहा (व, स)।
३. किज्जमाणा (व)।
४. एव जाव (अ, क, ता, व, म, स); अत्र 'जाव' पद प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते। किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति।
५. साहणित्ता (ता, व)।
६ समिय (अ, स)।
७. पुव्वं (क, म, स)।

गोयमा ! जण्ण[1] ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[2] वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया ।

जे ते एवमाहसु, मिच्छा[3] ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एव खलु चलमाणे चलिए[4] । •उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदिज्जमाणे वेदिए । पहिज्जमाणे पहीणे । छिज्जमाणे छिण्णे । भिज्जमाणे भिण्णे । दज्झमाणे दड्ढे । मिज्जमाणे मए° । निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?

दोण्ह परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति।

ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले—एगयओ परमाणुपोग्गले भवति ।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?

तिण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि कज्जति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति । एव[5] चत्तारि[6] ।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति । एगयओ साहणित्ता खधत्ताए कज्जति । खधे वि य ण से असासए सया समित उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य ।

पुव्वि भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवितिक्कत च ण भासिया भासा अभासा ।

---

१. ज ए (ता) ।

२. भ० १।४४२ ।

३. मिच्छ (ता) ।

४. स० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।

५. एव जाव (अ, क, ता, व, म, स), अत्र 'जाव' पद प्रवाहपतितमायातमिति सभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति ।

६. अस्य पाठस्य रचना एव सभाव्यते—
चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,
कम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ?
चउण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थि सिणेहकाए, तम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति ।
ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि

जा सा पुव्वि भासा अभासा। भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमय-वितिक्कत च ण भासिया भासा अभासा। सा कि भासओ भासा? अभासओ भासा?

भासओ ण भासा, नो खलु सा अभासओ भासा।

पुव्वि किरिया अदुक्खा।[1] •कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरियासमय-वितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा।

जा सा पुव्वि किरिया अदुक्खा। कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरिया-समयवितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। सा कि करणओ दुक्खा? अकरणओ दुक्खा?°

करणओ ण सा दुक्खा। नो खलु सा अकरणओ दुक्खा—सेव वत्तव्व सिया। किच्च दुक्ख, फुस दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख, कट्टु-कट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया॥

इरियावहिया-सपराइया-पद

४४४. अण्णउत्थिया ण भते! एवमाइक्खति[2], •एव भासति, एवं पण्णवेति, एव परूवेति°—एव खलु एगे जीवे एगेणं समएण दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—इरियावहिय[3] च, सपराइय च।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, त समय सपराइय पकरेइ।

•[4]ज समय सपराइय पकरेइ, त समय इरियावहियं पकरेइ।

इरियावहियाए पकरणयाए सपराइय पकरेइ।

सपराइयाए पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, त जहा—इरिया-वहिय च, सपराइय च॥

४४५. से कहमेयं भते! एव?

गोयमा! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति,

---

कज्जति। दुहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ वि दुपएसिए खधे। अहवा एगयओ तिपएसिए खधे—एगयओ परमाणु-पोग्गले भवइ।

तिहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ एगे-एगे परमाणुपोग्गले भवइ।

चउहा कज्जमाणा चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति।

१ स० पा०—जहा भासा तहा भाणियव्वा किरिया वि जाव करणओ।

२ स० पा०—एवमाइक्खति जाव एव।

३. रिया० (अ, ता, व, म)।

४ स० पा०—परउत्थियवत्तव्व णेयत्व ससमय-वत्तव्वयाए णेयव्व जाव इरियावहियं, 'क', 'ता' सकेतितयोरादर्शयोर्वृत्तौ च सक्षिप्तपाठो लभ्यते। शेषादर्शेषु वृत्तिकृता विस्तारं नीतः

एव परूवेंति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, जाव[1] इरियावहिय च, सपराइय च।

जे ते एवमाहसु। मिच्छा ते एवमाहसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएणं एक्क किरिय पकरेइ, त जहा—इरियावहिय वा, सपराइय वा।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, नो त समय सपराइयं पकरेइ।

ज समय सपराइय पकरेइ नो त समय इरियावहिय पकरेइ।

इरियावहियाए पकरणयाए नो सपराइयं पकरेइ।

सपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहिय पकरेइ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, त जहा°—इरियावहिय वा, सपराइय वा॥

उपपात-पदं

४४६. निरयगई ण भते! केवतिय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥

३४७ एव वक्कतीपय[2] भाणियव्व निरवसेस॥

४४८. सेवं भते! सेव भते त्ति जाव[3] विहरइ॥

पाठो दृश्यते। अत्र च १।४२०, ४२१ सूत्रानुसारेण स पूर्ति नीतोस्ति।

१. भ० १।४४४।

२. प० ६।

३ भ० १।५१।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ 'ऊसास खदए वि य, २ समुग्घाय ३,४ पुढविंदिय ५ अण्णउत्थि ६ भासा य।
७ देवा य ८ चमरचंचा, ९,१० समयक्खित्तत्थिकाय बीयसए'[1] ॥१॥

उक्खेव-पद

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था—वण्णओ[2]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। पडिगया परिसा॥

सासुस्सास-पदं

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

जे इमे भंते! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा जाणामो पासामो।

जे इमे पुढविकाइया जाव[4] वणप्फइकाइया—एगिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा न याणामो न पासामो।

एए णं भंते! जीवा आणमंति वा? पाणमंति वा? ऊससंति वा? नीससंति वा?

हंता गोयमा! एए वि णं जीवा आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा॥

---

१. × (अ, ता, ब, म, स)।
२. ओ० सू० १।
३. भ० १।९, १०।
४. भ० १।४३७।

३. किण्ण[1] भंते ! एते जीवा आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! दव्वओ[2] अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठितियाइं[3], भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

४ जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा ऊससंति वा, नीससंति वा ताइं किं एगवण्णाइं[4] •जाव• किं पंचवण्णाइं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि जाव[5] पंचवण्णाइं पि आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि जाव सुक्किलाइं पि आणमंति वा, पणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। आहारगमो नेयव्वो[7] जाव—

५. पुढविकाइया णं भंते ! कइदिसं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं° ॥

६. किण्णं भंते ! नेरइया आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

तं चेव जाव[8] नियमा छद्दिसिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

७. जीव-एगिंदिया वाघाय-निव्वाघाया च भाणियव्वा[9]। सेसा नियमा छद्दिसिं ॥

८. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

हंता गोयमा ! वाउयाए णं[10] •वाउयाए चेव आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा°, नीससंति वा ॥

वाउकायस्स कायट्ठिइ-पदं

९. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?

---

१. किं ण (ता)।
२. दव्वओ णं (अ, म, स)।
३. °ठितीयाइं (अ, क, ता, व, म, स)।
४. सं० पा०—एगवण्णाइं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पंचदिसं।
५, ६, ७ प० २८।१।
८ प० २८।१।
९. प० २८।१।
१०. सं० पा०—वाउयाए णं जाव नीससंति।

हंता गोयमा[1] ! °वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाति ॥

१०. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

११ से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

१२ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

मडाइ-नियंठ-पदं

१३. मडाई[2] णं भंते ! नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे[3], नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं[4] हव्वमागच्छइ ?
हंता गोयमा ! मडाई णं नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे, नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्ण-संसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं[4] हव्वमागच्छइ ॥

१४. से णं भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया । भूए त्ति वत्तव्वं सिया । जीवे त्ति वत्तव्वं सिया । सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । विण्णु[5] त्ति वत्तव्वं सिया । 'वेदे त्ति'[6] वत्तव्वं सिया । पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१५. से केणट्ठेणं पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! जम्हा आणमइ वा, पाणमइ वा, उस्ससइ वा, नीससइ वा तम्हा पाणे त्ति वत्तव्वं सिया ।
जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्वं सिया ।

---

१. स० पा०—गोयमा जाव पच्चायाति ।
२. मडादी (ता) ।
३. ° पवधे (व) ।
४. इत्थत्त (अ, ता, व, स, वृपा), इत्तत्थं (क); वृत्ती 'इत्यर्थं—एनमर्थम्' इति व्याख्यातमस्ति, तेन तत्रापि इत्तत्थमिति पाठः सभाव्यते ।
५. विन्नुय (व) ।
६. वेदाति (क, ता, व, म) ।

जम्हा जीवे जीवति[1], जीवत्त आउयं च कम्म उवजीवति[2] तम्हा जीवे त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा 'तित्तकडुकसायंबिलमहुरे रसे'[3] जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्व सिया।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्खं तम्हा वेदे त्ति वत्तव्व सिया। से तेणट्ठेणं[4] पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्व सिया॥

१६. मडाई णं भंते! नियठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे[5], °पहीणससारे, पहीणसंसार-वेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे°, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ?

हंता गोयमा! मडाई णं नियठे[6] °निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे, पहीणससारे, पहीणससारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे° नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ॥

१७. से ण भंते! कि ति वत्तव्व सिया?

गोयमा! सिद्धे त्ति वत्तव्व सिया। बुद्धे त्ति वत्तव्वं सिया। मुत्ते त्ति वत्तव्व सिया। पारगए त्ति वत्तव्वं सिया। परंपरगए त्ति वत्तव्व सिया। सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अतकडे[7] सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्व सिया॥

१८. सेवं भंते! सेव भंते! त्ति भगव गोयमे समणं भगव महावीर वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

१९. तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

खदयकहा-पदं

२०. तेण कालेणं तेण समएण कयगला नाम नगरी होत्था—वण्णओ[8]॥

२१. तीसे णं कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[9]॥

२२. तए ण समणे भगव महावीरे उप्पन्ननाणदसणधरे[10] °अरहा जिणे केवली जेणेव कयंगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. जीवेति (क)।
२. उवजीवेइ (ब)।
३. °कटु° (ब); °महुररसे (ता, म)।
४. तेणट्ठेणं जाव (अ, क, ता, ब, म)।
५. स० पा०—निरुद्धभवपवचे जाव निट्ठिय°।
६. स० पा०—नियठे जाव नो।
७. अतगडे (क)।
८. ओ० सू० १।
९. ओ० सू० २-१३।
१०. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरे जाव समोसरए।

अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ जाव[10] समोसरण । परिसा निग्गच्छइ ।।

२३. तीसे ण कयगलाए नयरीए अदूरसामते सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[2] ।।

२४. तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स[3] अतेवासी खदए[4] नामं कच्चायणसगोत्त परिव्वायगे परिवसइ[5]-रिव्वेद[6]-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद[7]-इतिहास-पचमाणं निघट्टुछट्ठाण—चउण्ह वेदाण सगोवगाण सरहस्साण सारए धारए[8] पारए सडगवी सट्ठिततविसारए, सखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे[9], अण्णेसु य बहूसु बभण्णएसु[10] परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए या वि होत्था ।।

२५ तत्थ ण सावत्थीए नयरीए पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए[11] परिवसइ ।।

२६ तए ण से पिंगलए नाम नियठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ[12] जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेव पुच्छे—मागहा[13] !

१ किं सअते[14] लोए ? अणते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणते जीवे ? ३ सअता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव[15] आइक्खाहि वुच्चमाणे एव ।।

२७ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते पिगलएण नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेव पुच्छिए समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो सचाएइ पिगलयस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किचि वि पमोक्खमक्खाइउ, तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

२८ तए ण से पिगलए नियंठे वेसालियसावए खदयं कच्चायणसगोत्त दोच्चं पि तच्च पि इणमक्खेव पुच्छे—मागहा !

---

१. ओ० सू० १६-२१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. गद्दभालिस्स (व) ।
४. खडए (व) ।
५. वसइ (अ) ।
६ रिउव्वेद (अ, व, स); रिजुव्वेद (क) ।
७. अथव्वण० (अ); अरथव्वेय (क), अथव्ववेद (ता, म), अहव्वेद (व) ।
८. ग्रारए धारए (अ, क, म, स); वारए (व, वृ); धारए (वृपा) ।
९ जोतिसांअयणे (ता) ।
१०. बम्हण्णए (क) ।
११. वेसालीसावए (क, ता); वेसालियस्सावए (म) ।
१२. कयाए (स) ।
१३. मागधा (ता) ।
१४. संते (ता) ।
१५. एतावता (अ, क, व); एत्तावताव (ता, म) ।

१. किं सग्रंते लोए[1] ? •ग्रणते लोए ? २. सग्रंते जीवे ? ग्रणंते जीवे ? ३. सग्रंता सिद्धी ? ग्रणता सिद्धी ? ४. सग्रते सिद्धे ? ग्रणंते सिद्धे ?० ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव ग्राइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ।।

२९. तए णं से खदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएण नियठेणं वेसालियसावएणं दोच्च पि तच्चं पि इणमक्खेव पुच्छिए समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए[2] भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

३०. तए ण सावत्थीए नयरीए सिघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह०-पहेसु महया जणसंमद्दे[4] इ वा जणवूहे इ वा[5] •जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो ग्रण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासेइ, एव पण्णवेइ, एवं परूवेइ—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे ग्राइगरे जाव[6] सिद्धिगतिनामधेय ठाणं संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव कयंगलाए नयरीए वहिया छत्तपलासए चेइए ग्रहापडिरूवं ग्रोग्गहं ग्रोगिण्हित्ता सजमेण तवसा ग्रप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं ग्ररहंताण भगवताण नामगोयस्सवि सवणयाए, किमग पुण ग्रभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि ग्रारियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स ग्रट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल देवयं चेइय पज्जुवासामो । एयं णे पेच्चभवे इयभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए ग्राणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुप्पडोयारेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, ग्रण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितग्रो जाव[7] महया उक्किट्ठसीहनाय-बोल-कलकलरवेण पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झमज्झेण०निग्गच्छति ।।

३१. तए ण तस्स खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स ग्रंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म इमेयारूवे ग्रज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

१. सं० पा०—लोए जाव केण ।
२. ० गिंछिए (अ) ।
३. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. ० सद्दे (अ, म, वृपा) ।
५. सं० पा०—जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ ।
६. भ० १।७ ।
७. ओ० सू० ५२ ।

'एवं खलु समणे भगव महावीरे कयगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वदामि नमसामि'[१]। सेय खलु मे समण भगव महावीरं वंदित्ता, नमसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासित्ता इमाइ च णं एयारूवाइं अट्ठाइ हेऊइं पसिणाइ कारणाइं[२] वागरणाइं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदंडं च कुडिय च कंचणियं च करोडिय च भिसियं च केसरिय च छण्णालय[३] च अकुसयं च पवित्तय[४] च गणेत्तिय च छत्तय च वाहणाओ[५] य पाउयाओ[६] य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदंड-कुडिय-कचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसजुत्ते[७], धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणेव कयगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

३२ गोयमाइ[८]! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एव वयासी—
दच्छिसि णं गोयमा! पुव्वसंगइय।
क[९] भते!?
खदय नाम।
से काहे वा? किह वा? केवच्चिरेण वा?

३३ एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[१०]। तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अतेवासी खदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। त चेव जाव[११] जेणेव ममं अतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते[१२] बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अतरा पहे वट्टइ। अज्जेव ण दच्छिसि[१३] गोयमा!

३४. भत्तेति! भगव गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—पहू णं भते! खदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे

---

१. × (क, ता, व)।
२. × (अ, व, म)।
३. छण्हालय (ता)।
४ पवित्तिय (क)।
५. पाहणाओ (ता)।
६. ओवाइय (सू० ११७) सूत्रे 'पाउयाओ' इति पदं नास्ति, प्रस्तुतप्रकरणे पि किंचिदग्रे 'छत्तोवाहणसंजुत्ते' इत्यत्रापि तन्नास्ति।
७. ° वाणह ° (क)।
८. ° दि (क, ता, म)।
९. क त (अ, क, ता)।
१०. ओ० सू० १।
११. भ० २।२५-३१।
१२. अदूराइते (क); अदूरियाते (व)।
१३. दिच्छसि (अ, स); दच्छसि (म)।

भवित्ता[1] अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइत्तए ?

हंता पभू ॥

३५. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरागतं[3] जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,[4] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—हे खंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं[5] खंदया ! सागयमणुरागयं खंदया ! से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिय-सावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा ! किं सअंते लोगे ? अणंते लोगे ? एवं तं चेव जाव[6] जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए । से नूणं खंदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?[7]

हंता अत्थि ॥

३७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—'से केस णं गोयमा'[8] ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव[9] रहस्स-कडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि ?

३८. तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—एवं खलु खंदया ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं ममं एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया !

३९. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामो णं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो[10] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं॰ पज्जुवासामो ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

४०. तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महा-वीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोई[11] यावि होत्था ॥

---

१. भवित्ता णं (क, ता, ब, स) ।

२. आगाराओ (अ, क, ब, स) ।

३. अदूरआगय (अ, ब, स); अदूरमागत (ता) ।

४. पच्चुगच्छइ (अ, क, ता, म); पत्थुगच्छइ (ब) ।

५. रेफस्य आगमिकत्वात् (वृ) ।

६. भ० २।२६-३५ ।

७. अत्थे समत्थे (क, वृ); अट्ठे समट्ठे (वृपा) ।

८. से केणं गोयमा (अ, व); केस णं गोयमा से (ता) ।

९. आय (ता) ।

१०. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो ।

११. वियट्टभोति (अ, ता, ब, म, स) ।

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स[1] सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाण सिव धन्न मगल्ल[2] अणलकियविभूसियं लक्खण-वजण-गुणोववेय सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाण चिट्ठइ ॥

४३. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओराल[3] •सिगारं कल्लाणं सिवं धन्न मंगल्ल अणलकियविभूसियं लक्खण-वजण-गुणोववेय सिरीए° अतीव-अतीव उवसोभेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए णदिए[4] पीइमणे[5] परमसोमणस्सिए[6] हरिसवसविसप्प-माणहियए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ[7], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे° पज्जुवासइ ॥

४४. खदयाति ! - समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्त एव वयासी—से नूणं तुम खदया ! सावत्थीए नयरीए पिगलएणं नियठेण वेसालियसावएणं इणम-क्खेव पुच्छिए—मागहा !

१. कि सअते लोए ? अणते लोए ? २. सअते जीवे ? अणते जीवे ? ३. सअता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एव त चेव जाव[8] जेणेव ममं अतिए तेणेव हव्वमागए। से नूण खदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ॥

४५. जे वि य ते खदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—कि सअते लोए ? अणते लोए ?—तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु मए खदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ ण एगे लोए सअते।

खेत्तओ णं लोए असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खभेणं, असखे-ज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते।

कालओ ण लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए[9] सासए अक्खए अव्वए अव-ट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अते।

---

१. वियट्टाभोगिस्स (ता, व, म)।
२. मगल्ल सस्सिरीय (क)।
३. स० पा०—ओराल जाव अतीव।
४. × (अ, क, ब, म, स)।
५. पीतमणे (अ, स)।
६. परमसोमणसिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. स० पा०—करेइ जाव पज्जुवासइ।
८. भ० २।२६-३५।
९. णितिए (अ, क, ता), णितए (व)।

भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा[1] ! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥

४६. जे वि य ते खंदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंते जीवे ? ° अणंते जीवे ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु[3] •मए खंदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ°।

दव्वओ णं एगे जीवे सअंते ।

खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण अंते ।

कालओ णं जीवे न कयाइ न आसी[4], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, नत्थि पुण[5] से अंते ।

भावओ णं जीवे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चारित्तपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा ! दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥

४७. जे वि य ते खंदया[6] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे । एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ° ।

दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता ।

खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थि पुण से अंते ।

---

१. × (क, ब) ।
२. सं० पा०—खंदया जाव अणंता ।
३. सं० पा०—खलु जाव दव्वओ ।
४. सं० पा०—आसी जाव निच्चे ।
५ पुणाइ (ता, ब, म) ।
६. सं० पा०—खंदया पुच्छा ।

कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी[1], °न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण सा अंता।
भावओ ण सिद्धीए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अंता।
सेत्तं खंदया! °दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणंता॥

४८. जे वि य ते खंदया[2]! °अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—
किं सअंते सिद्धे? अणंते सिद्धे?
तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।°
दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते।
खेत्तओ णं सिद्धे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते।
कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते।
भावओ णं सिद्धे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता[3] अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते।
सेत्तं खंदया! दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते॥

४९. जे वि य ते खंदया! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[4] °पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—
केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा?
तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु खंदया! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे य, पंडियमरणे य।
से किं तं बालमरणे?
बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
१. वलयमरणे २. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १० सत्थोवाडणे

---

१. सं० पा०—कालओ य भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा, तत्थ।
२. सं० पा० खंदया जाव किं अणंते सिद्धे तं चेव जाव दव्वओ।
३. जाव पज्जवा (अ, क, ता, व, म, स)।
४. सं० पा०—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था।

११ वेहाणसे १२. गद्धपट्ठे—इच्चेतेण खदया ! दुवालसविहेण बालमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाणसंजोएइ, अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण सजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[1] चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ । सेत्त मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्त बालमरणे ।

से किं तं पडियमरणे ?

पडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पाओवगमणे[2] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से कि तं पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अप्पडिकम्मे ।

सेत्त पाओवगमणे ।

से कि तं भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्त भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेण खंदया ! दुविहेणं पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ[3], •अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाणं विसजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग चाउरत ससारकतार° वीईवयइ ।

सेत्त मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्त पडियमरणे ।

इच्चेएण खंदया ! दुविहेण मरणेणंमरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥

५०. एत्थ ण से खदए कच्चायणसगोत्ते सबुद्धे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

५१. तए ण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा[4] ॥

---

१. अणवयग्ग (अ, ब); अणावइग्गं (म) ।
२. पाओय० (ता, म) ।
३. सं० पा—विसंजोएइ जाव वीईवयइ ।
४. ओ० सू० ७१-७७ ।

५२. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिऐ णदिऐ पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि णं भते ! निग्गथ पावयण,
पत्तियामि णं भते ! निग्गंथं पावयण,
रोएमि णं भते ! निग्गथ पावयण,
अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
एवमेयं भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !— से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाय अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदड च कुडिय च जाव[2] धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता[3] •वदइ नमसइ, वदित्ता °नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।
से जहानामए केइ गाहावई अगारसि झियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे[4] मोल्लगरुए[5], त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा 'पुरा य'[6] हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।
एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[7] वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'[8] भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय[9] विविहा रोगायका परीस-

---

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठे जाव हियए, ° हिदये (क) ।
२. भ० २।३१ ।
३. स० पा०—करेत्ता जाव नमसित्ता ।
४. अप्पसारे (अ, क, ता, ब, स, वृ); एतद् परिवर्तन लिपिहेतुक सभाव्यते । वृत्तिकारेण परिवर्तित पाठो लब्ध', तथैव व्याख्यात. । अथवा वृत्तावपि भारस्य साररूपेण परिवर्तन जात स्यात् । अर्थमीमासया भारपदस्यैवात्र सगतिर्वर्तते ।
५. ° गुरुए (क, स) ।
६. पुराए (अ, ता, ब), पुरा (क, म) ।
७. धेज्जे (अ), पेज्जे (म) ।
८. अणुमए बहुमए (ता) ।
९. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ) ।

होवसग्गा[1] फुसतु त्ति कट्टु एस मे[2] नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय[3] धम्ममाइक्खिय॥

५३. तए ण समणे भगवं महावीरे खदयं कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेइ,[4] °सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय° धम्ममाइक्खइ[5]—एव देवाणुप्पिया! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एवं निसीइयव्वं, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं, एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमियव्वं, अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि[6] पमाइयव्व॥

५४ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमेइ, अस्सि च ण अट्ठे णो पमायइ॥

५५. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते[7] कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू[8] धन्ने खतिखमे जिइदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दते इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरइ॥

५६. तए णं समणे भगव महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ॥

५७. तए ण से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइ[9] एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वदासी—इच्छामि ण भते! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।

---

१. परिस्सहो° (ता, म)।
२. × (अ, क, ता, ब, म)।
३. °वित्तिय धुव (क); °वित्तिय (ता,म,स)।
४. स० पा०—पव्वावेइ जाव धम्म०।
५. ° माइक्खाइ (अ, ता, ब, स)।
६. × (अ, ब, स)।
७. वय° (अ)।
८. लज्ज (अ, ब)।
९. सामाइगमादियार्ति (क, ब), सामातियमातियाइ (स)।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

५८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव[1] नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

५९. तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्त अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं[2] काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासेत्ता[3] •पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्टेत्ता अणुपालेत्ता आणाए° आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव[4] •महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तं चेव[5] ॥

६०. एवं[6] तेमासिय, चउम्मासियं, पचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तराातिदिय, दोच्चसत्तरातिदियं, तच्चसत्तरातिदिय, रातिदियं[7], एगरातियं[8] ॥

६१. तए णं से खदए अणगारे एगरातिय भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव[9] आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं[10] •वंदइ नमंसइ, वदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसवच्छरं[11] तवोकम्मउवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं ॥

६२ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठे जाव[12] नमसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसपज्जित्ता णं विहरति, तं जहा—

पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

दोच्चं मास छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

---

१. भ० २।५२ ।

२. × (ता, म, वृ); समं (म, स), स्थानाङ्गे (७१३) 'अहासम्म' इति पद नास्ति, केवलं 'सम्म' वर्तते ।

३. सं० पा०—फासेत्ता जाव आराहेत्ता ।

४ सं० पा०—भगव जाव नमसित्ता ।

५. भ० २।५८, ५९ । चेव एव दोमासिय (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. भ० २।५८-५९ ।

७ अहोरातिदियं (अ, ता, म, स) ।

८ एगरातिदिय (अ, क, म, स) ।

९. भ० २।५९ ।

१०. स० पा०—महावीर जाव नमसित्ता ।

११. गुणरयण (क, ता, म, स) ।

१२. भ० २।५२ ।

एव तच्चं मासं अट्ठमअट्ठमेण। चउत्थ मास दसमदसमेण। पचम मासं बारसमबारसमेण। छट्ठं मासं चउद्दसमचउद्दसमेणं। सत्तम मास सोलसमसोल-समेण। अट्ठमं मासं अट्ठारसमअट्ठारसमेण। नवम मास वीसइमवीसइमेणं। दसमं मास बावीसइमबावीसइमेण। एक्कारसमं मास चउवीसइमचउवीसइमेण। बारसमं मास छव्वीसइमंछव्वीसइमेण। तेरसम मासं अट्ठावीसइमंअट्ठावीसइ-मेण। चउद्दसमं मास तिसइमतिसइमेण। पण्णरसमं मासं बत्तीसइमबत्तीसइ-मेण। सोलसं मास चोत्तीसइमचोत्तीसइमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य॥

६३ तए ण से खदए अणगारे गुणरयणसवच्छरं तवोकम्म अहासुत्त अहाकप्प जाव[1] आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

६४. तए ण से खदए अणगारे तेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणु-भागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे[2] निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए[3] किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था। जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ। से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-'तिल-भडग-सगडिया'[4] इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया[5] इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव खदए[6] अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेण अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ॥

६५. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे समोसरण जाव[7] परिसा पडिगया॥

६६ तए णं तस्स खदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[8] °पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—

१. भ० २।५९।
२. भुक्खे (अ, म)।
३ ° किडिय° (अ, ब)।
४. तिलसठगसगडिया (वृपा)।
५ इगालकट्ठसगडिया (अ, ब)।
६ खदए वि (ता, म)।
७. ओ० सू० १९-८०।
८. स० पा—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था।

एव खलु अह इमेण एयारूवेणं ओरालेण[1] •विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेण सिवेण धन्नेणं मगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए° किसे धमणिसतए[2] जाए। जीवजीवेण गच्छामि, जीवंजीवेणं चिट्ठामि[3], •भास भासित्ता वि गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि, भास भासिस्सामीति गिलामि।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडगसगडिया इ वा, एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ°, एवामेव अह पि ससद्द गच्छामि, ससद्द चिट्ठामि।

त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए,[4] फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपडुरे[5] पभाए, रत्तासोयप्पकासे[6], किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीरं वदित्ता नमंसित्ता[7] •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे° पज्जुवासित्ता समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहि सद्धिं विपुलं पव्वय 'सणियं-सणिय'[8] दुरुहित्ता[9] मेहघणसनिगासं[10] देवसन्निवात पुढवीसिलापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसथारग सथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगवं महावीरे[11] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे° पज्जुवासइ॥

---

१. उरालेण (क ता, म, स); सं० पा०—ओरालेण जाव किसे।
२. धवणि° (क, ता, व, म)।
३. स० पा०—चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव।
४. रतणीए (ता)।
५. अहपंडरे (ख, ता, व); अहापडुरे (स)।
६. °प्पगासे (क), °सकासे (ता)।
७. सं० पा०—नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता।
८. सणित सणितं (क)।
९. दुहित्ता (क, म); द्रूहित्ता (ता); रुहित्ता (व), दुरूहित्ता (स)।
१०. मेघ° (अ)।
११. स० पा०—महावीरे जाव पज्जुवासइ।

६७. खंदयाइ ! समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव खदया ! पुव्वरत्तावरत्त[1]•कालसमयंसि धम्मजागरियं॰ जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं विउलेणं तं चेव जाव[3] कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ[5] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰ हि-यए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पया-हिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता॰ नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[7], आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं[8] सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहघणसन्निगासं देव-सन्निवातं पुढविसिलापट्टयं[9] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[10] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स।

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे[12] भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महा-वीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[13] मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए। इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

---

१. पुव्वरत्तावररत्त॰ (क); सं॰ पा॰—पुव्व-रत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स।
२. सं॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. भ॰ २।६६।
४. भ॰ २।६६।
५. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
६. सं॰ पा॰—करेइ जाव नमंसित्ता।
७. आरुभेइ (क, म)।
८. कडादीहिं (अ, ब, स), कडायीहिं (ता, म)।
९. ॰ वट्टय (अ, क, म, स)।
१०. ओ॰ सू॰ २१।
११. ओ॰ सू॰ २१।
१२. मे से (क, ब, म, स)।
१३. भ॰ १।३८४।

सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्च-क्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव[1] मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय[2] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ॥

६९. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए॥

७०. तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हंति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहंति[3], पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमं-सित्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे 'पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे[4] विणीए'[5]। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरुहेत्ता[6], समणा[7] य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं[8]॰ सणियं-सणियं दुरुहित्ता जाव[9] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते॰ आणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभंडए॥

७१. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?

गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी—एवं खलु

---

१. भ० २।५२।
२. द्रष्टव्यं २।५२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
३. पच्चोसक्कंति (स)।
४. अलीणे (क, व)।
५. औपपातिके (६१, ११६) एतावान् एव पाठोस्ति। अत्र केषुचिदादर्शेषु 'पगइभद्दए पगइविणीए' इति पाठोप्यस्ति तथा 'मिउ-मद्दवसंपन्ने भद्दए विणीए' इत्यपि वर्तते। इति द्विरुक्तमस्ति तेन औपपातिकपाठ एव समीचीनोस्ति।
६. आरोवेत्ता (अ, क, ता, व, स); आरोहेत्ता (म)।
७. समणे (अ, ता, व, म)।
८. सं० पा०—पव्वयं तं चेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए।
९. भ० २।६८, ६९।

गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपण्णे अल्लीणे विणीए०, से ण मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता[2] •जाव[3] मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता० आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।।

७२. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता तत्थ ण खदयस्स वि देवस्स बावीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७३. से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति[4] ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ।।

बीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४. कइ ण भते ! समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—१. वेदणासमुग्घाए २. कसायसमुग्घाए ३ मारणतियसमुग्घाए ४ वेउव्वियसमुग्घाए ५. तेजससमुग्घाए ६. आहारगसमुग्घाए ७. केवलियसमुग्घाए । छाउमत्थियसमुग्घायवज्ज[5] समुग्घायपदं नेयव्वं[6] ।।

---

१. स० पा०—पगइभद्दए जाव सेरा ।

२. स० पा०—आरुहेत्ता त चेव सव्वं अविसेसित णेयव्व जाव आलोइय० ।

३. भ० २।६८, ६६ ।

४. गमिहिति (अ, व, स), गच्छिहौ (ता) ।

५. एव समुग्घायपद छाउमत्थियसमुग्घायवज्ज भाणियव्वं जाव—वेमाणियाण । कसायसमुग्घाया, अप्पाबहुय । अणगारस्स णं भते ! भावियप्पणो केवली समुग्घाए जाव—सासत, अणागयद्ध चिट्ठति ? समुग्घायपद नेयव्व (अ, व) ।

६. सूत्रकृता प्रज्ञापनाया: 'मणस्सा जहा जीवा, नवर—मरणसमुग्घाएण समोहया असखेज्जगुणा' इत्येव पाठोत्र विवक्षित, अत परवर्ती छाद्मस्थिकसमुद्घातप्ररूपकपाठो नात्र अधिकृतोस्ति । द्रष्टव्यम्—प्रज्ञापना, पद ३६ ।

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५. कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१ रयणप्पभा २. सक्कर-प्पभा ३. वालुयप्पभा ४ पंकप्पभा ५. धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७. तमतमा। जीवाभिगमे[1] नेरइयाणं जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो[2] जाव—

७६. 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'[3]
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७. कइ णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—१. सोइंदिए २. चक्खिंदिए ३. घाणिंदिए ४ रसिंदिए ५ फासिंदिए। पढमिल्लो इंदियउद्देसओ[4] नेयव्वो[5] जाव[6]—

७८ अलोगे णं भंते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं फुडे ?

---

१. जी० ३।२।

२. अतोग्रे 'क, ता, म' संकेतितादर्शेषु 'पुढवी ओगाहित्ता, निरया संठाणमेव बाहल्लं। जाव किं' एव पाठो वर्तते। शेषादर्शेषु 'बाहल्ल' इति पदस्याग्रे 'विक्खंभ-परिक्खेवो, वण्णो गंधो य फासो य जाव किं' एव पाठोस्ति। वृत्तिकृता एका टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रपुस्तकेषु च पूर्वार्द्धमेव लिखितं, शेषाणां विवक्षितार्थाना यावच्छब्देन सूचितत्वात्। असौ गाथा जीवाभिगमस्य नारकद्वितीयोद्देशकार्थसंग्रहपरा वर्तते

३. अत्र संक्षिप्तपाठः। जीवाभिगमे (३।२) पूर्णपाठः एवमस्ति—इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कंसि निरयावासंसि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नेरइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४. प० १५।१।

५. अतोग्रे सर्वादर्शेषु 'संठाणं बाहल्लं पोहत्तं जाव अलोगे' इति पाठोस्ति, इह च सूत्रपुस्तकेषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शेषास्तु तदर्था यावच्छब्देन सूचिताः (वृ)।

६. प० १५।१।

गोयमा ! नो धमत्थिकाएणं फुडे जाव[1] नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे जाव[1] नो अद्धासमएणं फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वगासे अणंतभागूणे ।।

पंचमो उद्देसो

परिचारणा-वेद-पदं

७९. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवेंति—

१. एवं खलु नियंठे कालगए समाणे देवब्भूएणं[3] अप्पाणेणं से ण तत्थ नो अण्णे देवे, नो अण्णेसि देवाणं देवीओ 'आभिजुंजिय-अभिजुंजिय'[4] परियारेइ, नो अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेइ ।

२. एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।

[6]°जं समयं इत्थिवेयं वेएइ तं समयं पुरिसवेयं वेएइ ।

जं समयं पुरिसवेयं वेएइ तं समयं इत्थिवेयं वेएइ ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेयं वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेयं वेएइ ।

एवं खलु एगे वि य ण जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा°—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।।

८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च । जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

---

१. प० १५।१ ।
२. प० १५।१ ।
३. प्राकृतत्वात् भकारस्य द्वित्वम् ।
४. अहियुंजिय (व) ।
५. अप्पणो ° (अ, क, ता, व); अप्पिणिच्चियाओ (वृ); अप्पणिज्जियाओ (ठा० ३।६) ।
६. सं० पा०—एवं परउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेद ।
७. भ० २।७९ ।

१. एवं खलु णियठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति[1]—महिड्ढिएसु[2] •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोक्खेसु° महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु। से ण तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव[3] दस दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे[4] •पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसि देवाणं देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२ एगे वि य णं जीवे एगेण समएण एगं वेद वेदेइ, त जहा—इत्थिवेदं वा, पुरिसवेद वा।

ज समयं इत्थिवेद वेदेइ नो त समय पुरिसवेद वेदेइ।

ज समय पुरिसवेदं वेदेइ, नो त समय इत्थिवेदं वेदेइ।

इत्थिवेदस्स उदएण नो पुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं नो इत्थिवेदं वेदेइ।

एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थीवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

इत्थी इत्थिवेदेण उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ। पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थि पत्थेइ। दो वि ते अण्णमण्णं पत्थेति, त जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थि॥

गब्भ-पदं

८१. उदगब्भे[6] ण भते! उदगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण एक समय, उक्कोसेण छम्मासा॥

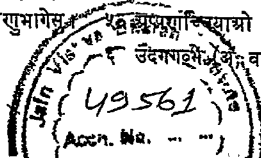
८२ तिरिक्खजोणियगब्भे ण भते! तिरिक्खजोणियगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठ संवच्छराइ॥

८३. मणुस्सीगब्भे णं भते! मणुस्सीगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस संवच्छराइ॥

८४. कायभवत्थे ण भते! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउवीसं सवच्छराइ॥

---

१ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति दृश्यम् (वृ)।
२. स० पा०—महिड्ढिएसु जाव महाणुभागेसु।
३. ठा० ८।१०।
४. स० पा०—पभासेमाणे जाव पडिरूवे।
५. अप्पणिच्चियाओ (अ, क, ता, ब)।
६. उदगगब्भे (अ, ब, स); दगगब्भे (वृपा)।



८५. मणुस्स-पंचेंदियतिरिक्खजोणियबीए णं भंते ! जोणिब्भूए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥

८६. एगजीवे णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वामागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह'[1] वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स[2] जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

८७. एगजीवस्स णं भंते ! एगभवग्गहणेणं[3] केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

८८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—°जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! इत्थीए[5] पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेहं 'चिणंति, चिणित्ता'[6] तत्थ णं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। से तेणट्ठेणं[7] °गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वामागच्छंति ॥

८९. मेहुणण्णं[8] भंते ! सेवमाणस्स केरिसए[9] असंजमे कज्जइ ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं[10] वा बूरनालियं[11] वा तत्तेणं कणएणं समभिद्धंसेज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥

९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[11] विहरइ ॥

९१. तए णं समणे भवगं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

तुंगियानयरी-समणोवासय-पदं

९२. तेणं कालेण तेण समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[12] ॥

९३. तीसे णं तुंगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[13] पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[14] ॥

---

१. दोण्ह वा तिण्ह (अ, स)।
२. पुहुत्तस्स (क, स)।
३. एगजीव० (स)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव हव्व०।
५. इत्थीए य (क, ता, ब, म)।
६. संचिणति, संचिणित्ता (म)।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव हव्व०।
८. मेहुणं (अ); मेहुणेणं (स)।
९. केरिसे (अ, ता, ब, स)।
१०. रूवनालियं (क); रूयण्णालियं (ता); रूवणालिय (म)।
११. पूर० (ता, ब)।
११. भ० १।५१।
१२. ओ० सू० १।
१३. दिसाभागे (क)।
१४. ओ० सू० २-१३।

९४. तत्थ ण तुगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसति—अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा वहुधण-वहुजायरूव-रयया आयोगपयोगसपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलयप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-'पावासव'[1]-सवर-निज्जर[2]-किरियाहिकरणबध[3]-पमोक्खकुसला[4] असहेज्जा[5] देवासुर-नागसुवण्ण जक्खरक्खस्सकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगादिएहिं[6] देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ[7] अणतिक्कमणिज्जा, निग्गथे पावयणे निस्सकिया निक्कखिया निव्वितिगिच्छा[8] लद्धट्ठा[9] गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता[10] अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा[11] 'चियत्तंतेउरघरप्पवेसा'[12] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[13] पडिपुण्ण पोसहं सम्म अणुपालेमाणा, समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण—'खाइम-साइमेण'[14] वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुंछणेण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेण'[15] पडिलाभेमाणा बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि[16] तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति ।।

---

१. पावासव (ता) ।

२ निज्जरा (अ) ।

३. °हिगरणकुसला (अ) ।

४. प्पमोक्ख° (क, ता, म, स), मोक्ख° (व) ।

५ असहेज्ज (अ, क, ता, व, म, स); असाहाय्यास्ते च ते देवादयश्चेति कर्मधारयः अथवा व्यस्तमेवेदम् (वृ) ।

६ °महोरगादी° (अ, म, स) ।

७. पवयणाओ (व) ।

८. निव्वितिगिंछिया (ता) ।

९. लद्धिट्ठा (व) ।

१०. ° प्पेमाणुराव° (ता) ।

११. अपगुय° (क); अवगुत ° (म) ।

१२. चियत्ततेउरपरघर °(ता) । अतोग्रे सर्वेषु आदर्शेषु 'बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरामण-पच्चक्खाण—पोसहोववासेहिं' इति पाठो दृश्यते । वृत्तिकृतापि असौ अत्रैव व्याखात., वाक्यरचनायाः सम्बन्धयोजनार्थं च 'नैर्युक्ता इति गम्यम्' इति उल्लिखितम् । किन्तु ओवाइय — रायपसेणइयसूत्रयोरवलोकनेन प्रतीयते असौ पाठ 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तर युज्यते । ओवाइयसूत्रे (१२०) 'पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे' । रायपसेणइयसूत्रे (६९८) 'पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणे ।' अनयो. पाठयोराधारेण अत्रापि असौ पाठ. 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तर गृहीतः ।

१३ चाउद्दसि° (ता) ।

१४ खातिम-सातिमेणं (व, स) ।

१५ × (क) ।

१६ अहापडि° (स, वृ) ।

९५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दसणसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा[1] जिइंदिया[2] जियपरीसहा जीवियास[3]—मरण-भयविप्पमुक्का[4] •तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा °कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा[5] पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडा अहाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छति'[6], उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

९६. तए णं तुंगियाए नयरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[7]-महापह-पहेसु जाव[8] एगदिसाभिमुहा निज्जायंति ॥

९७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[9]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अण्णमण्ण° सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना जाव[10] अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाण थेराणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए[11]? °एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! थेरे भगवंते वंदामो नमंसामो[12] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगलं देवयं चेइय पज्जुवा-सामो। एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

---

१. × (क)।
२. जितेंदिया (अ, क, व); जितिंदिया (म)।
३. जीवियासा (अ, ता, ब, स)।
४. सं० पा०—मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया°।
५. × (अ, व)।
६. तेणेवाग° (अ, क, व)।
७. × (अ, क, व, म, स)।
८. राय० सू० ६८७-६८९।
९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव सद्दावेंति।
१०. राय० सू० ६८६।
११. सं० पा०—पज्जुवासणयाए जाव गहणयाए।
१२. सं० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति।

यत्ताए० भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ 'वत्थाइं पवर परिहिया'[1] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो[2] पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ[3] 'मेलायंति, मेलायित्ता'[4] पायविहारचारेण तुगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फवतिए[5] चेइए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते पंचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छति, [त जहा—१ सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३ एगसाडिएण उत्तरासगकरणेणं ४. चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेण ५. मणसो एगत्तीकरणेण][6] जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता[7] •वदंति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता० तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ।।

९८. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसि समणोवासयाणं तीसे 'महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेति, तं जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण[8] ।।

९९. तए ण ते समणोवासया थेराण भगवताण अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, 'करेत्ता एव'[10] वयासी—सजमेणं भते ! किफले ? तवे[11] किफले ?

१००. तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एवं वयासी[12]—संजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले ।।

१०१. तए ण ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ ण भते ! संजमे अणण्हयफले, तवे वोदाणफले । किपत्तिय ण भते ! देवा देवलोएसु उववज्जति ?

---

१. पवराइं परिहिया (क); वत्थाइ पवराइ-परिहिय त्ति क्वचिद्दश्यते, क्वचिच्च वत्थाइ पवर परिहिय त्ति (वृ) ।
२. गेहेहिंतो (म, स) ।
३. एगओ (ता) ।
४. मिलायति २ (अ, म) ।
५. पुप्फवतीए (अ, क, व, स) ।
६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश : प्रतीयते ।
७. स० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।
८. महइमहालियाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति। जहा केसि सामिस्स, जाव समणोवासियत्ताए आणाए आराहए भवति जाव धम्मो कहिओ (अ, म, स), महइमहालियाए जाव धम्मो कहिओ (क, ता, ब) ।
९. भ० २।४३ ।
१०. करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासति २ एवं (ता, म, स); करेत्ता जाव एवं (क) ।
११. तवे णं भते ! (अ) ।
१२. वदिसु (क) ।

१०२. तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं मेहिले नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वसंजमेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ णं कासवे नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस[1] अट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।।

१०३. तए णं ते समणोवासया थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा[2] थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवादियंति, उवादिएत्ता[3] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

१०४. 'तए णं ते थेरा अण्णया कयाइ तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिग्गच्छंति[4], बहिया जणवयविहारं विहरंति[5] ।।

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ।।

१०६. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[7] संखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१०७. तए णं[8] भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि[9] पढमाए पोरिसीए[10] सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं[11] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

---

१. एसे (क, ब, म) ।
२. × (क, ता, ब) ।
३. उवादिएत्ता उट्ठाए उट्ठेन्ति उट्ठेत्ता थेरे भगवंते तिक्खुत्तो वंदंति नमंसंति २ थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति (अ, म, स) ।
४. पडिनिक्खमंति (अ) ।
५. × (ता, ब) ।
६. भ० १।७, ८ ।
७. भ० १।९ ।
८. ण से (अ, क, ता, म, स); णं समणे (ब) ।
९. ° गंसि (ता) ।
१०. पोरसीए (क, ता, म) ।
११. भायणाइं वत्थाइं (अ, ब, स) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ।।

१०८. तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं 'सोहेमाणे-सोहेमाणे'[1] जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडइ।

१०९. तए ण[2] भगव गोयमे रायगिहे नगरे[3] •उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-दाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहि इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ पुच्छिया—सजमे ण भते ! किंफले ? तवे किंफले ?

तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले त चेव जाव[4] पुव्वतवेण, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस मट्ठे[5], नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ।

से कहमेय मन्ने[6] एवं ।।

११०. तए ण[7] भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव[8] समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय[9]•मचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे°-सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाणं पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर[10] •वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता° एवं वदासी—एवं खलु भते ! अह तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे राय-

---

१. सोहेमाणे (क, ता, ब) ।
२. ण से (अ, क, ब, म, स) ।
३. स० पा०—नयरे जाव अडमाणे ।
४. भ० २।१०१, १०२।
५. मट्ठे समट्ठे (क), अट्ठे (ता) ।
६. भते ! (अ, ब) ।
७. ण से (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. सं० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।
१०. स० पा०—महावीर जाव एवं ।

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? तं चेव जाव[1] सच्चे णं एस मट्ठे,[2] नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

तं[3] पभू णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अप्पभू ? समिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु असमिया[4] ? आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलि-उज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

पभू णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, नो 'चेव णं'[5] अप्पभू । [6]समिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । आउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एया-रूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । पलिउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।° सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आय-भाववत्तव्वयाए ।

अहं पि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति । कम्मि-याए देवा देवलोएसु उववज्जंति । संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।।

---

१. भ० २।९९-१०२ ।
२. अट्ठे (ता) ।
३. एवं (ब) ।
४. अस्समिया (क, ता, म) ।
५. × (अ, क, ब) ।
६. सं० पा०—तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समिय आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चे ।

१११. तहारूव ण भते ! समण वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किफला पज्जुवासणा ?

गोयमा ! सवणफला ।

से णं भते ! सवणे किफले ?

नाणफले ।

से णं भते ! नाणे किंफले ?

विण्णाणफले ।

से ण भंते ! विण्णाणे किफले ?

पच्चक्खाणफले ।

से ण भंते ! पच्चक्खाणे किफले ?

सजमफले ।

से ण भते ! संजमे किफले ?

अणण्हयफले ।

से ण भते ! अणण्हए किंफले ।

तवफले ।

से ण भते ! तवे किफले ?

वोदाणफले ।

से ण भते ! वोदाणे किफले ?

अकिरियाफले ।

सा ण भते ! अकिरिया किफला ?

सिद्धिपज्जवसाणफला—पण्णत्ता गोयमा !

संगहणी-गाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुड-पदं

११२. अन्नउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, भासंति, पण्णवेति, परूवेति—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ ण महं एगे हरए[1] अघे[2] पण्णत्ते—अणेगाइ जोयणाइं आयाम-विक्खभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे, सस्सिरीए[3] °पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । तत्थ णं बहवे ओराला

---

१. ° हरगे (ता) ।

२. अप्पे (अ, क, व, म, स); क्वचित्तु हरए त्ति न दृश्यते 'अघ' इत्यस्य च स्थाने 'अप्पे' त्ति दृश्यते (वृ) ।

३ सं० पा०—सस्सिरीए जाव पडिरूवे ।

बलाहया ससेयति समुच्छति वासंति। तव्वइरित्ते य ण सया समियं उसिणे-उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ।

११३. से कहमेय भते ! एवं ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाइक्खति, मिच्छ ते एवमाइक्खति[1]। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अदूरसामते, एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते—पच धणु-सयाइ आयाम-विक्खभेण, नाणादुमसडमडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ ण बहवे उसिणजोणिया[2] जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए[3] वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति[4]। तव्वइरित्ते वि य णं सया समिय उसिणे-उसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे[5] पासवणे। एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

११४ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ ॥

छट्ठो उद्देसो

भासा-पदं

११५. से नूण भते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एव भासापद[6] भाणियव्व ॥

सत्तमो उद्देसो

ठाण-पदं

११६. कति[7] णं भते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया ॥

---

१. एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्वं (अ, स), एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्व जाव (क, ता, म)।
२. उसिणजोणीया (अ, ता, म, स); उसुण-जोणीया (ब)।
३. उदत्ताए (ता)।
४. उवचयति (अ, ब)।
५. महातवोतीर° (क, ता, ब, म)।
६. प० ११।
७. कतिविहा (अ, ता, म)।

११७. कहि णं भंते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे[1] देवाण वत्तव्वया सा भाणियव्वा[2]। उववाएणं[3] लोयस्स असखेज्जइभागे एव सव्व भाणियव्वं, जाव[4] सिद्धगडिया समत्ता।[5]
कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्त मेव सठाणं।
जीवाभिगमे जो[6] वेमाणिउद्देसो[7] सो[8] भाणियव्वो सव्वो ॥

अट्ठमो उद्देसो

चमरसभा-पदं

११८. कहि ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[9] सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे[10] दीवे मंदरस्सं पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे[11] दीव-समुद्दे वीईवइत्ता[12] अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदयं[13] समुद्द बायालीसं जोयणसयसहस्साइ[14] ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिछिकूडे[15] नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोसं च उव्वेहेण मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खं-भेण, [उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खभेण,] मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं, दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मज्झे एग जोयण-सहस्स तिण्णि य इगयाले[16] जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, उवरिं दोण्णि

---

१. प० २।
२. भाणियव्वा नवर भवणा पण्णत्ता (अ, क, ता, व, म, स), नवर भवणा पण्णत्त त्ति क्वचिद् दृश्यते तस्य च फल न सम्यगव-गम्यते (वृ)।
३ उववादेण (अ, क, व, म)।
४. प० २।
५. सम्मत्ता (क, व, म, स)।
६. जाव (अ)।
७. वेमाणियुद्देसो (ता, व)।
८ × (अ, म, स)।
९ असुररण्णो (क, ता, व)।
१०. जबूदीवे (म)।
११ °मसखेज्ज (ता, व, स)।
१२ वीति ° (अ, क, ब, म)।
१३ अरुणोद (क, म)।
१४. जोयणसहस्साइ (अ, क, ता, म, स)।
१५. तिगिच्छि° (क); तिगिच्छ० (म)।
१६. इयाले (अ)।

य जोयणसहस्साइं, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण,[1] मूले वित्थडे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए[2] महामउंदसंठाण-संठिए सव्वरयणामए अच्छे[3] °सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरिईए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए, वणसंडेण य सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ[4]॥

११९. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—वण्णओ[5]॥

१२०. तस्स ण बहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, पणुवीसं[6] जोयणसयं विक्खंभेणं। पासायवण्णओ[7]। उल्लोयभूमिवण्णओ[8]। अट्ठजोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासणं सपरिवारं[9] भाणियव्वं॥

१२१. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स दाहिणे णं छक्कोडिसए पणवन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पण्णासं च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणसहस्साइं, ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचा नामं रायहाणी पण्णत्ता एगं जोयणसय-सहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबूदीवप्पमाणा।

---

१. उव्वेहेण गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पमाणेण नेयव्वं, नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं जाव (क, ता, ब, वृ)। अ, म, स संकेतितादर्शेषु द्वयोवर्णयोर्मिश्रणं दृश्यते।

२. ° विग्गहे (अ, ब, स)।

३. सं० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे।

४. राय० सू० १८६-२०१।

५. राय० सू० २४-३१।

६. पण० (अ, स)।

७. राय० सू० २०४।

८. राय० सू० २४-३४, भ० वृत्ति।

९. तच्चैवम्—तस्स णं सिंहासणस्स अवरुत्तरे णं, उत्तरे णं, उत्तरपुरत्थिमे णं, एत्थ णं चमरस्स चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीणं, चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवं पुरत्थिमे णं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं पंच भद्दासणाइं सपरिवाराइं, दाहिणपुरत्थिमे णं अब्भिंतरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीणं चउव्वीसं भद्दासणसाहस्सीओ, एवं दाहिणे णं पच्चत्थिमे णं सत्तण्हं अणियाहिवईणं मज्झिमाए अट्ठावीसं भद्दासण-साहस्सीओ, दाहिणपच्चत्थिमे णं बाहिराए बत्तीसं भद्दासणसाहस्सीओ, सत्त भद्दासणाइं, चउद्दिसिं आयरक्खदेवाणं चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओ (वृ)।

ओवारियलेण सोलसजोयणसहस्साइं आयाम-विक्खभेणं, पण्णास जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, सव्वप्पमाण वेमाणियप्पमाणस्स अद्धं नेयव्व[1] ॥

नवमो उद्देसो

समयखेत्त-पदं

१२२. किमिद भंते ! समयखेत्ते त्ति पवुच्चति ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा, दो य समुद्दा, एस णं एवइए समयखेत्तेति पवुच्चति ॥

१२३. तत्थ णं अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतरे। एवं जीवाभिगम-वत्तव्वया नेयव्वा जाव[2] अब्भितर-पुक्खरद्ध जोइसविहूण[3] ॥

---

१. एतदेव वाचनान्तरे उक्तम्—'चत्तारि परिवाडीओ पासायवडेंसगाण अद्धद्धहीणाओ (वृ), राय० सू० २०४-२०८।

२ जी० ३।

३. वाचनान्तरे तु 'जोइसअट्ठविहूण' ति इत्यादि वहु दृश्यते, तत्र 'जबुद्दीवे णं भते ! कइ चदा पभासिसु वा ३ ? कति सूरीया तविंसु वा ३ ? कइ नक्खत्ता जोइ जोइसु वा ३ ? इत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्क-सूत्राणि, तथा—से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे ?, गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण लवणस्स दाहिणे ण जाव तत्थ २ वहवे जबूरुक्खा जबूवण्णा जाव उवसोहेमाणा चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे इत्यादीनि प्रत्येकमर्थसूत्राणि च सन्ति, ततश्चैतद्विहीन यथा भवत्येव जीवाभिगमवक्तव्यतया नेय अस्योद्देशकस्य सूत्रं 'जाव इमा गाह' त्ति संग्रहगाथा, सा च—"अरहत समय वायर, विज्जू थणिया वलाहगा अगणी। आगर निहि नइ उवराग निग्गमे वुड्ढिवयणं च (वृ)।

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४. कति णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१२५. धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ[1] °नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ।।

१२६. अधम्मत्थिकाए[2] °णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ।।

---

१. स० पा०—कयाइ जाव णिच्चे ।
२. स० पा०—अधम्मत्थिकाए एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ।

१२७ आगासत्थिकाए[1] •णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।°
गुणओ अवगाहणागुणे ।।

१२८ जीवत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे[2], •अगधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ ।
दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणताइं जीवदव्वाइं ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे ।।

१२९. पोग्गलत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे[5] ? •कतिगधे ? कतिरसे° ? कतिफासे ?
गोयमा ! पंचवण्णे, पंचरसे, दुगधे, अट्ठफासे,
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे ।

---

१. स० पा०—आगासत्थिकाए वि एव चेव नवर खेत्तओ ण आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणते चेव जाव गुणओ ।
२. स० पा०—अवण्णे जाव अरूवी ।
३. स० पा०—दव्वओ जाव गुणओ ।
४. स० पा०—आसि जाव णिच्चे ।
५. स० पा०—कतिवण्णे जाव कतिफासे ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ।

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं।

खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते।

कालओ न कयाइ न आसि[1], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे।

भावओ वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते।

गुणओ गहणगुणे॥

१३०. एगे भंते! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३१. एवं दोण्णि,[2] 'तिण्णि, चत्तारि'[3] पंच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा। भंते! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३२. एगपदेसूणे वि य णं भंते! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?

से नूणं गोयमा! खंडे चक्के? सगले चक्के?
भगवं! नो खंडे चक्के, सगले चक्के।
[4]•खंडे छत्ते? सगले छत्ते?
भगवं! नो खंडे छत्ते, सगले छत्ते।
खंडे चम्मे? सगले चम्मे?
भगवं! नो खंडे चम्मे, सगले चम्मे।
खंडे दंडे? सगले दंडे?
भगवं! नो खंडे दंडे, सगले दंडे।
खंडे दूसे? सगले दूसे?

---

१. सं० पा०—आसि जाव णिच्चे।
२. दोण्णि वि (अ, स), दो (क)।
३. तिण्णि वि चत्तारि वि (अ, स)।
४. सं० पा०—एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोदए।

भगवं ! नो खडे दूसे, सगले दूसे ।
खडे आयुहे ? सगले आयुहे[1] ?
भगव ! नो खडे आयुहे, सगले आयुहे ।
खडे मोदए ? सगले मोदए[2] ?

भगवं ! नो खडे मोदए, सगले मोदए ।° से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ।।

१३४. से किखाइ[3] ण भते ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा, ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एकग्गहणगहिया—एस ण गोयमा ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ।।

१३५ एवं अधम्मत्थिकाए वि । आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाया वि एवं चेव, नवर—तिण्ह पि पदेसा अणता भाणियव्वा । सेस तं चेव ।।

जीवत्त-उवदंसण-पदं

१३६ जीवे ण भते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदसेतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! जीवे ण सउट्ठाणे[4] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं° उवदसेतीति वत्तव्व सिया ।।

१३७ से केणट्ठेण[5] °भते ! एव वुच्चइ—जीवे ण सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति° वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! जीवे ण अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, अणताण सुयनाण-पज्जवाण, अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणंताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाण, अणंताण विभगनाणपज्जवाण, अणंताणं चक्खुदंसण-पज्जवाणं, अणताणं अचक्खुदंसणपज्जवाण, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाण, अणंताण केवलदसणपज्जवाण उवओग गच्छइ । उवओगलक्खणे ण जीवे । से एएणट्ठेण एव वुच्चइ—गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे[6] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदंसेतीति° वत्तव्वं सिया ।।

---

१. आउहे (क, व) ।
२ मोयए (अ, क, व, स) ।
३ किंखाइए (ता) ।
४. स० पा०—सउट्ठाणे जाव उवदसेतीति ।
५ स० पा०—केणट्ठेणं जाव वत्तव्व ।
६ स० पा०—सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं ।

आगास-पदं

१३८. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे[1] य अलोयागासे य ।।

१३९. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि; अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा[2], •बेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिंदियदेसा, पंचिंदियदेसा°, अणिंदियदेसा ।
जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा[3], •बेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिंदियपदेसा, पंचिंदियपदेसा°, अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।
जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोग्गला ।
जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ।।

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा[4] ? •जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?°
गोयमा ! नो जीवा[5], •नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेस°, नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ।।

अत्थिकाय-पदं

१४१. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ।।

---

१. ° कासे (क, ता, म) ।
२. सं० पा०—एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
३. सं० पा०—एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
४. सं० पा०—जीवा पुच्छा तह चेव ।
५. सं० पा०—जीवा जाव नो ।

१४२. [1]•अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४३. लोयाकासे णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४४. जीवत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४५. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ° ॥

फुसणा-पदं

१४६. अहोलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति ॥

१४७. तिरियलोए णं भंते[2] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ॥

१४८. उड्ढलोए णं भंते[3] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसति ॥

१४९. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ॥

१५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
जहा रयणप्पभा तहा घणोदहि-घणवाय-तणुवाया वि ॥

१५१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।
ओवासंतराइं सव्वाइं ॥

---

१. सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंच वि एक्काभिलावा ।
२. सं० पा०—भंते पुच्छा ।
३. सं० पा०—भंते पुच्छा ।

१५२. जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया[1] एवं जाव[2] अहेसत्तमाए[3] ॥
एवं सोहम्मे कप्पे जाव[4] ईसीपब्भारा पुढवी—एते सव्वे वि असंखेज्जइभागं फुसंति। सेसा पडिसेहियव्वा।

१५३. एवं अधम्मत्थिकाए, एवं लोयाकासे वि।

संगहणी-गाहा

पुढवोदही घण-तणू, कप्पा गेवेज्जणुत्तरा सिद्धी।
संखेज्जइभाग अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥

---

१. भाणिया (अ, ता, व, स)।
२. भ० २।१४६-१५१; २।७५।
३. अहेसत्तमाए जंबुद्दीवाइया दीवसमुद्दा (अ, ता, म)।
४. अ० सू० २८७।

तइयं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ केरिसविउव्वणा २ चमर ३. किरिय ४,५. जाणित्थि ६ नगर ७ पाला य।
८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए[1] दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नाम नयरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे ण मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नदणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ॥

३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'[4] सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

देवविकुव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण सत्तुस्सेहे जाव[5] पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे ण भंते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए[6] ? केमहज्जुतीए ? केमहाबले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुभागे ? केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए,[7] •महज्जुतीए, महाबले, महायसे, महासोक्खे°, महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं,[8] चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए[9] तावत्तीसगाणं[10],

---

१. सदे (ता)।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. × (ता)।
५ भ० १।९, १०।
६. केमहड्ढीए (क, म)।
७. स० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे।
८. भवण° (अ, क, ता, म)।
९. तावत्तीसाए (अ, ता, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—तावत्तीसगाणं जाव विहरइ।

•चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, चउसट्ठीए आयरक्ख-देवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं चमरचंचा रायहाणिवत्थव्वाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणे॰ विहरइ। एमहिड्ढीए,[1] •एमहज्जुतीए, एमहाबले, एमहायसे, एमहासोक्खे,॰ एमहाणुभागे। एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्विय समुग्घाएणं समोहण्णइ,[2] समोहणित्ता 'संखेज्जाइं जोयणाइं'[3] दंडं[4] निसिरइ, तं जहा—रयणाणं[5] •वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं॰ रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायइ[6], परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति। पभू णं गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं[7] करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा! पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे[8] करेत्तए।

एस णं गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे[9] विसए विसयमेत्ते वुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्संति वा॥

५. जइ णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? जाव[11] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए?

---

१. स॰ पा॰—एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे।
२. समोहणइ (अ, ता, स)।
३ संखेज्जाणि जोयणाणि (अ, ब)।
४. उड्ढ दंड (ता, म)।
५ स॰ पा॰—रयणाणं जाव रिट्ठाणं। अस्य-पूर्तिः—'रायपसेणइय' (१०) सूत्रेण कृता। भगवतीवृत्तौ तु एतत् पूर्तिरित्थमस्ति—वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोतीरसाणं अंकाणं अंजणाणं रयणाणं जायरूवाणं अंजणपुलयाणं फलिहाणं।
६. परियाति (क)।
७. अरगाढावगाढ (अ, ता, ब)।
८. अरगाढावगाढे (अ, क, ता, ब)।
९ अतमेता॰ (ता)।
१०. भ॰ ३।४।
११ भ॰ ३।४।

गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्ढीया[1] •महज्जुतीया महाबला महायसा महासोक्खा° महाणुभागा। ते णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणियाण, साणं-साणं अग्गमहिसीण जाव[2] दिव्वाइं भोगभोगाइ भुंजमाणा विहरंति। एमहिड्ढीया जाव[3] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[4] दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ।

पभू ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे केवलकप्पं जंबुद्दीव दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि देवीहि य आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थडं संथड फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वहूहिं असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्णे विति-किण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए।

एस णं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्संति वा।

६. जइ ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा एमहिड्ढीया जाव[5] एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया[6] देवा केमहिड्ढीया[7] ?

तावत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा। लोयपाला तहेव, नवरं—संखेज्जा दीव-समुद्दा भाणियव्वा[8]।

७. जइ ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवा एमहिड्ढीया जाव[9] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्ढियाओ जाव[10] केवइयं च ण पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढियाओ

---

१. स० पा०—महिड्ढीया जाव महाणुभागा।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।४।
६. तायत्ती ° (क)।
७ महड्ढिया (स)।
८. भाणियव्वा वहूहिं असुरकुमारेहि देवेहिं देवेहि य आइन्ने जाव विकुव्विस्सति वा (अ, व)।
९. भ० ३।४।
१०. भ० ३।४।

जाव[1] महाणुभागाओ[2]। ताओ णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणिय-साहस्सीण, साण-साणं महत्तरियाण[3], साण-साण परिसाणं जाव[4] एमहिड्ढीयाओ। अण्णं जहा लोगपालाणं अपरिसेसं।

८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं दोच्चे[5] गोयमे समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तच्च गोयम वायुभूति अणगार एव वदासि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए त चेव एव सव्वं अपुट्ठवागरणं नेयव्वं अपरिसेसिय[6] जाव[7] अग्गमहिसीण वत्तव्वया समत्ता।

९. तेण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[8] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे मम एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[9] जाव[10] महाणुभागे। से ण तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण त चेव सव्वं अपरिसेस भाणियव्वं जाव[11] अग्गमहिसीण[12] वत्तव्वया समत्ता।

१० से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमादि! समणे भगव महावीरे तच्च गोयम वायुभूति अणगार एवं वयासी—जं ण गोयमा! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए त चेव सव्व जाव[13] अग्गमहिसीओ। सच्चे ण एसमट्ठे। अह पि ण गोयमा! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एव खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[14] त चेव जाव[15] अग्गमहिसीओ। 'सच्चे णं एसमट्ठे'[16]।

---

१. भ० ३।४।
२. महाणुभावाओ (ता)।
३. मयहरिया० (अ, व)।
४. भ० ३।४।
५. × (क, ता, म)।
६. अपरिसेसं (अ, क, स)।
७. भ० ३।४-७।
८. भ० १।१०।
९. एमहिड्ढीए (अ, क, ता, व)।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४-७।
१२. अग्गमहिसीओ (अ, क, ता, व)।
१३. भ० ३।४-७।
१४. महिड्ढीए सो चेव वितिओ गमो भाणियव्वो (अ, ब, म, स)।
१५. भ० ३।४-७।
१६ सच्चमेसे अट्ठे (अ, क, ता, ब)।

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगार वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

१२. 'तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चे णं गोयमेण अग्गिभूतिणा अणगारेणं सद्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव' पज्जुवासमाणे एवं वयासी'[२]—जइ णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[३] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, बली णं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए ? जाव[४] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

'गोयमा ! बली णं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव[५] महाणुभागे । जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं भाणियव्वं, सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहि य'[६] ॥

---

१. भ० १।१० ।

२. ततेणं से दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे तच्चेणं गोतमेणं वायुभूइणा अणगारेणं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेणं गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगवं महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी (क, ता), अत्र प्रश्नकर्ता तृतीयो गोतमो वर्तते तेन प्रस्तुतवाचना समीचीना न दृश्यते ।

३. भ० ३।४ ।

४ भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. गोयमा ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए, से णं तत्थ तीसाए भवणावास-सयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्हं सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं जाव भुंजमाणे विहरति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्व, नवरं—सातिरेग केवलकप्प जंबुद्दीव भाणियव्व सेसं त चेव निरवसेस नेयव्व, नवरं—णाणत्त जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहिं (अ); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीण आतरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एवं जहा चमरस्स, नवर—साइरेगं जंबुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए इमे वुइए विसए जाव विउव्विस्सति वा (क); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्हं सट्ठीणं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एव जहा चमरस्स, नवरं साइरेग केवलकप्पं जंबुद्दीव

१३. सेव भते ? सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे 'वायुभूई अणगारे समणं भगव महावीरं वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[1] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे° पज्जुवासइ'[2] ।।

१४. तते ण से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—जइ ण भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, धरणे ण भते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! धरणे ण नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्ह सामाणियसाहस्सीण, तायत्तीसाए तावत्तीसगाण, चउण्हं लोगपालाण, छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि, च जाव[6] विहरइ। एवतिय च णं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे जाव[7] पभू केवलकप्पं जबुद्दीव दीव जाव तिरियं सखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहि नागकुमारीहि जाव विकुव्विस्सति वा।

सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिसीओ य तहेव जहा[8] चमरस्स, नवरं— सखेज्जे दीव-समुद्दे भाणियव्वे ।।

१५. एवं जाव[9] थणियकुमारा, वाणमतरा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ।।

१६ भतेत्ति[1] भगव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी— जइ ण भंते ! जोइसिदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, सक्के ण भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव[11] केवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए ?

दीव भाणितव्व सेस तहेव जाव विउव्वि-स्सति वा।

जइण भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयण-राया एवमहिड्ढीए जाव एवतिय च ण पभू विउव्वित्तए, बलिस्सण भते। वइरोयणस्स वइ° सामाणिया देवा केमहिड्ढीया एव सामाणिया तावत्तीसा तावत्तीसा लोगपाल-ग्गमहिसीओ य जहा चमरस्स, नवर— सातिरेग जबुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहि-सीदेवीए इमे वतिए विसए जाव विउव्वि-स्सति वा (ता)।

१. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ।
२. वायुभूई जाव विहरइ (अ, ब, म, स)।
३. भ० ३।१२।
४. भ० ३।१२।
५. भ० ३।४।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।४।
८. भ० ३।५-७।
९. पू० प० २।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे। से णं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण, चउरासीए[2] सामाणियसाहस्सीणं,[3] •तायत्तीसाए तावत्तीसगाण, चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईण॰, चउण्हं चउरासीण आयरक्खसाहस्सीणं, अण्णेसिं च जाव[4] विहरइ। एमहिड्ढए जाव[5] एवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव[6] चमरस्स तहेव भाणियव्व, नवर—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव।

एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते[7] बुइए, नो चेव णं सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१७ जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[8] एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासि तीसए नाम अणगारे पगइभद्दए[9] •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे॰ विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए[10] सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए[11] ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे।

तए ण तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[12] गच्छइ [त जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इदियपज्जत्तीए, आणापाणुपज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए[13]]

तए णं त तीसय देव पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[14] गयं समाण सामाणियपरिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धाविति वद्धावित्ता एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिएहिं

---

१. भ० ३।४।
२. चउरासीतीए (क, ता, म)।
३ स० पा०—सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्ह।
४. भ० ३।४।
५ भ० ३।४।
६. भ० ३।४-७।
७. विसयमेत्ते ण (म, स)।
८. भ० ३।४।
९ स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
१०. मासिय (क, व)।
११. असखेज्जभाग॰ (अ, व), असखेज्जभागमेत्ताए (स)।
१२ पज्जत्तभाव (ता)।
१३. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्यांश: प्रतीयते ?
१४. पज्जत्तभाव (अ, स)।

दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। जारिसिया[1] णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केण वि देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया ण सक्केण देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

से ण भंते। तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव[2] महाणुभागे। से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्ह आयरक्खदेव-साहस्सीण, अण्णेसिं च बहूण वेमाणियाण देवाणं, देवीण य जाव[3] विहरइ। एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव[5] एस ण गोयमा! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१८. जइ ण भते! तीसए देवे महिड्ढीए जाव[6] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स ण भंते! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? तहेव सव्व जाव[7] एस ण गोयमा! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स[8] देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

तावत्तीसय—लोगपालग्गमहिसी ण जहेव[9] चमरस्स, नवर—दो केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अण्णं त चेव॥

१९. सेव भते! सेवं भंते! त्ति दोच्चे गोयमे जाव[10] विहरइ॥

२०. भतेति! भगव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव[11] °महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वदासी—जइ ण भते! सक्के देविदे देवराया

१. जारिसाण (अ, ब)।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।१६।
६. भ० ३।४।
७ भ० ३।१७।
८ सामाणिय (अ)।
९. भ० ३।६, ७।
१०. भ० १।५१।
११. स० पा०—भगव जाव एव।

महिड्ढीए जाव[1] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? एवं तहेव[2], नवरं—साहिए दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तहेव॥

२१. जइ णं भंते ! ईसाणे[3] देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव[5] विणीए अट्ठमंअट्ठमेण अणिक्खित्तेण, पारणए आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता,[6] तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे। जा तीसए वत्तव्वया[7] सच्चेव[8] अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि, नवरं—सातिरेगे दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव।

एवं सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं जाव[9] एस णं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विंसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

२२ एवं सणंकुमारे वि,[10] नवरं—चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अदुत्तरं च णं तिरियमसंखेज्जे।

एवं[11] सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं[12]। असंखेज्जे दीव-समुद्दे सव्वे विकुव्वंति, सणंकुमाराओ आरद्धा[13] उवरिल्ला लोगपाला[14] सव्वे वि असंखेज्जे दीव-समुद्दे विकुव्वंति॥

---

१. भ० ३।१६।
२. भ० ३।१६।
३. तीसाणे (ता)।
४ भ० ३।४।
५. भ० ३।१७।
६. झोसइत्ता (अ, व, स); झोसेत्ता (ता, म)।
७. भ० ३।१७।
८ सा० (ता)।
९. भ० ३।५-७।
१०. भ० ३।१६।
११. भ० ३।५-७।
१२ यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणामुत्पत्तिर्नास्ति तथापि या. सौधर्मोत्पन्नाः समयाधिकपल्योपमादिदशपल्योपमान्तस्थितयोऽपरिगृहीतदेव्यस्ताः सनत्कुमारदेवाना भोगाय सपद्यन्ते इति कृत्वाग्रमहिष्य इत्युक्तम् (वृ); इत्यपि सभाव्यते 'अग्गमहिसीण' इति पाठः आदर्शेषु प्रवाहरूपेण आगतः, वृत्तिकृता सगत्यर्थं उक्तव्याख्या कृता।
१३. आरद्ध (अ)।
१४. लोगवाला (म)।

२३. एवं माहिंदे वि, नवरं—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे।
एवं बंभलोए वि, नवरं—अट्ठ केवलकप्पे।
एवं लंतए वि, नवरं—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे।
महासुक्के सोलस केवलकप्पे। सहस्सारे सातिरेगे सोलस।
एवं पाणए वि, नवरं—बत्तीसं केवलकप्पे।
एवं अच्चुए वि, नवरं—सातिरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव॥

२४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव[1] विहरइ॥

तामलिस्स ईसाणिंद-पदं

२५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ[2] नयरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3] जाव[4] परिसा पज्जुवासइ॥

२७. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया[5] ईसाणे कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव[6] दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्ता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।

२८. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—अहो णं भंते! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[7] महाणुभागे। ईसाणस्स णं भंते! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते? कहिं अणुपविट्ठे?
गोयमा! सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे॥

२९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सरीरं गते! सरीरं अणुपविट्ठे?
गोयमा! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा। तीसे णं[8] •कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं

---

१. भ० ११५१।
२. मोतातो (क, ता)।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० १६-५२।
५. देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबर वत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे (अ, म, स)।
६. राय० सू० ७-१२०।
७. भ० ३।४।
८. सं० पा०—कूडागारसालदिट्ठंतो भाणियव्वो।

पासति, पासित्ता तं कूडागारसाल अतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चति—सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे° ॥

३०. ईसाणेण भते! देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे? किण्णा पत्ते? किण्णा अभिसमण्णागए? के वा एस आसि पुव्वभवे? किनामए वा? किंगोत्ते वा? कयरंसि वा गामसि वा नगरंसि वा जाव[1] सण्णिवेसंसि वा[2]? कि वा दच्चा? कि वा भोच्चा? कि वा किच्चा? कि वा समायरित्ता? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म? ज ण ईसाणेणं देविंदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए?

३१. एवं खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती[3] नाम नयरी होत्था—वण्णओ[4] ॥

३२ तत्थ ण तामलित्तीए नयरीए तामली नाम मोरियपुत्ते गाहावई होत्था—अड्ढे दित्ते जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥

३३ तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाणं सुपरक्कताण[7] सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेण वड्ढामि सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहि वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त कि णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं[8] °सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाण° कडाण कम्माणं 'एगतसो खय'[9] उवेहमाणे विहरामि?

त जावताव[10] अहं हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-सबधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय चेइय विणएण पज्जुवासइ, तावता मे सेय कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[11] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. भ० १।४६।
२ वा किं वा सोच्चा (क)।
३. तामलत्ती (म)।
४. ओ० सू० १।
५ भ० २।९४।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. सुपरि° (अ, म), सुप्पर° (क, ता, स); सुप्परि° (व)।
८. स० पा०—सुचिण्णाण जाव कडाण।
९. °सोक्खय (अ, क, व, म, स)।
१०. जाव (व)।
११. भ० २।६६।

जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहग[1] करेत्ता विउल 'असण-पाण-खाइम-साइम'[2] उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण[3],-संबधि-परियण आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबंधि-परियणं विउलेण असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[4] वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुबे[5] ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणं जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय मुडे भवित्ता पाणामाए[6] पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणं इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ वाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[7] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणयसि[8] आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता त तिसत्तक्खुत्तो उदएण[9] पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारित्तए त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेय दारुमयं पडिग्गहगं करेइ, करेत्ता विउल असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे[11] भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासणवरगए तेणं[12] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजणेण सद्धिं त विउल असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुइभूए त मित्त[13]-•नाइ-नियग-सयण-सवधि-°परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ[14]-•नियग-सयण-सबधि° परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुबे ठावेइ, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

---

१. पडिग्गहय (अ, म, स)।
२. असण पाण खाइम साइम (अ, स)।
३. × (क, ता, व, म, स)।
४. खातिमसातिमेण (व, स);
५. कुडुवे (ता)।
६. पाणायामाए (व)।
७. पगज्झिय २ (स)।
८. पारणसि (म)।
९. दएण (ता, म)।
१०. भ० २।६६।
११. अप्पमहग्घालकारभूसितसरीरे (ता)।
१२. तए णं (अ, ता, व, म, स)।
१३. स० पा०—मित्त जाव परियण।
१४. स० पा०—नाइ जाव परियणस्स।
१५. स० पा०—नाइ जाव परियण।

सबंधि-°परियणं जेट्ठपुत्त च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य ण समाणे इमं एयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हइ —कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण जाव आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूव अभिग्गहं[1] अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्भिय-पगिज्भिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य ण पारणयसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ[2], पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडित्ता सुद्धोयण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारेइ॥

३४. से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—पाणामा पव्वज्जा?
गोयमा! पाणामाए ण पव्वज्जाए पव्वइए समाणे ज जत्थ पासइ—इंदं वा खंदं वा रुद्द वा सिव वा वेसमण वा अज्जं वा कोट्टकिरियं[3] वा राय वा[4] •ईसरं वा तलवरं वा माडबियं वा कोडुबिय वा इब्भं वा सेट्ठि सेणावइ वा° सत्थवाहं[5] वा काक वा साण वा पाणं[6] वा—उच्च पासइ उच्चं पणाम करेइ, नीय पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणाम करेइ। से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा॥

३५ तए ण से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेण विपुलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेण सुक्के लुक्खे[7] •निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसतए जाए यावि होत्था।

३६. तए ण तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे°समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण[9] •पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेणं सिवेण धन्नेण मंगल्लेण सस्सिरीएणं° उदग्गेणं उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे जाव[10] धमणिसंतए जाए, त अत्थि जा[11] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय

---

१. अभिग्गह अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); 'उवगा' (३।४२) सूत्रे सोमिलस्य प्रव्रज्याप्रसगे एतत् पद नास्ति। अत्रापि तथैव युक्तमस्ति।
२ पच्चोरुहइ (अ, ब)।
३. ° इरिय (ता)।
४. सं० पा०—राय वा जाव सत्थवाह।
५. सत्थाहं (ता)।
६ पाणग (अ)।
७. भुक्खे (अ, क, ब, स), स० पा०—लुक्खे जाव धमणि०।
८. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
९ स० पा०—विपुलेण जाव उदग्गेण।
१०. भ० ३।३५।
११. × (अ); ता (ता); इ (ब)।

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य[1] परियायसगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता पादुग[2]-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहित्ता[3] संलेहणा भूसणा भूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते[4] °तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहइ, आलिहित्ता सलेहणाभूसणाभूसिए° भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

३७. तेण कालेण तेण समएण बलिचचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८. तए ण ते बलिचचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासि—एव खलु देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, अय च ण देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे[5] नियत्तणिय-मडल आलिहित्ता सलेहणाभूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह तामलि बालतवस्सि बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्प पकरावेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बलिचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिदे[6] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता जाव[7] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइ विकुव्वति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए 'उद्धयाए दिव्वाए'[8] देवगईए तिरिय असखेज्जाणं दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेण 'वीईवयमाणा-वीईवयमाणा'[9]

---

१. य पच्छासंगतिए य (अ, म)।
२. पाउग (अ, क, व, म)।
३. आलिभित्ता (ता)।
४. स० पा०—जलते जाव आपुच्छइ २ तामलित्तीए एगते एडेइ जाव भत्त°।
५. दिसाभाए (क, ता)।
६. रुयंयिदे (अ, व); रुयइदे (क, ता, म)।
७. राय० सू० १०।
८. दिव्वाए उद्धयाए (अ, क, ता, व, स, वृ)।
९. एते पदे 'रायपसेणइय'(१०)सूत्रात् पूरिते।

जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेति, उवदसेत्ता तामलि बालतवस्सि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति[1], करेत्ता वदंति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिय वदामो नमसामो[2] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासामो। अम्हण्ण[3] देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इंदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! बलिचच रायहाणि आढाह[4] परियाणह सुमरह, अट्ठ बधह, निदाण पकरेह, ठितिपकप्प पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे काल किच्चा बलिचचाए[5] रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए ण तुब्भे अम्ह इदा भविस्सह, तए ण तुब्भे अम्हेहिं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरिस्सह ।।

३९. तए ण से तामली बालतवस्सी तेहिं बलिचचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुर-कुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणेइ[6], तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

४०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि मोरियपुत्त दोच्च पि तच्च पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति जाव[7] अम्ह च ण देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा[8] •अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इंदाहिट्ठिआ इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणु-प्पिया ! बलिचचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठ बंधह, निदाणं पकरेह°, ठितिपकप्प पकरेह जाव दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे[9] •एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणेइ°, तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

४१. तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

४२ तेण कालेणं तेणं समएण ईसाणे कप्पे अणिदे अपुरोहिए या वि होत्था ।।

---

१. पकरेंति (अ, ता)।
२. स० पा०—नमसामो जाव पज्जवासामो।
३. अम्हाणं (अ, स)।
४. आढह (अ, स)।
५. बलिचचा (अ, व, म, स)।
६. परियाणइ (अ, क, ता, म); परियाणाइ (व)।
७. भ० ३।३८।
८. स० पा०—अणिदा जाव ठिति०।
९. स० पा०—समाणे जाव तुसिणीए।

४३. तए ण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठि वाससहस्साइं परियागं पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए[1] अंगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहियकालसमयसि ईसाणदेविदत्ताए[2] उववण्णे ।।

४४. तए ण से ईसाणे देविदे देवराया अहुणोववण्णे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[3] भासा-मणपज्जत्तीए][4] ।।

४५. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि बालतवस्सि कालगतं जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववण्ण पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[5] जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छति, वामे पाए[6] सुबेण[7] बधति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहति[8], तामलित्तीए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ढ-विकड्ढि'[9] करेमाणा, महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयासि—केस[10] णं भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियलिंगे[11] पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस ण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविदे देवराया ?—त्ति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलति[12] निदति खिसंति गरहति अवमण्णंति तज्जेति तालेति परिवहेति पव्वहेति, आकड्ढ-विकड्ढि करेति, हीलेत्ता[13] •निंदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता° आकड्ढ-विकड्ढि करेत्ता एगते एडंति, एडित्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

४६. तए ण ते[14] ईसाणकप्पवासी[15] बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाणं निंदिज्जमाण[16] •खिसिज्जमाण गरहिज्जमाणं अवमण्णिज्जमाण तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाणं परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाणं° आकड्ढ-

---

१. ° दूसतरियसि (अ); ° दूसतरिय (व) ।
२. ईसाणे ° (अ, ता) ।
३. भ० ३।१७ ।
४. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।
५. भ० ३।३८ ।
६. पायसि (क) ।
७. सुदेण (अ) ।
८. उट्ठुहति (अ, व, म, स) ।
९. आकट्ट-विकट्टिं (क, ब, म, स) ।
१०. से के (अ, व) ।
११. सइंगिहिय ° (क, ता, व) ।
१२. हीलयति (ता) ।
१३. स० पा०—हिलेत्ता जाव आकड्ढ ।
१४. × (अ, व) ।
१५. ईसाणसि (व) ।
१६. स० पा०—निंदिज्जमाण जाव आकड्ढ ।

विकड्ढि कीरमाणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ता[1] जाव[2] मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगंते एडेंति, एडेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया॥

४७. तए णं ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[3] मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचारायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ॥

४८. तए णं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था॥

४९. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं[4] रायहाणिं इंगालब्भूयं जाव[5] समजोइब्भूयं पासंति, पासित्ता भीआ तत्था[6] तसिआ[7] उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा चिट्ठंति॥

५०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अहो! णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी[8] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी[9] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे° लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तं खामेमो णं देवाणुप्पिया! खमंतु णं

---

१. आसुरत्ता (व, म)।
२. भ० ३।४५।
३. भ० ३।४५।
४. बलिचंचा (अ, क, व, म, स)।
५. भ० ३।४८।
६. उत्तत्था (ता, स)।
७ तेसिया (व), सुसिया (स); हस्तलिखितवृत्तौ क्वचित्तसियत्ति शुषितानदरसाः, क्वचिच्च 'सुसियत्ति' शुषितानदरसा इति लभ्यते।
८. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।
९. स० पा०—देविड्ढी जाव लद्धे।

देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[1] णं देवाणुप्पिया ! णाइ[2] भुज्जो[3] एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेंति ॥

५१. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे तं दिव्वं देविड्ढिं जाव[4] तेयलेस्सं पडिसाहरइ । तप्पभिति च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया[5] बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति[6] •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं° पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[7] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ॥

५२. ईसाणस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं[8] कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

५३. ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता° कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[10] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदु-क्खाणं° अंतं काहिति ॥

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चतरा चेव ईसिं उन्नयतरा[11] चेव ? ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीयतरा चेव ईसिं निण्णतरा चेव ?

हंता गोयमा ! सक्कस्स तं चेव सव्वं नेयव्वं ॥

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—

---

१. खतुमरिहतु (अ, ब); खमतुमरिहतु (ता, स) ।
२. णाइ (ता, स) ।
३. भुज्जो-भुज्जो (अ, क, स) ।
४. भ० ३।५० ।
५. ° वत्थव्वा (अ, ता, ब, म, स) ।
६. आढायति (क, ता); स० पा०—आढति जाव पज्जुवासति ।
७. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
८. केवइ (ता) ।
९. स० पा०—आउक्खएण जाव कहिं ।
१०. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अंत ।
११. उन्नयरा (अ, ता, ब, व, स) ।

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए। देसे णीए, देसे निण्णे। से तेणट्ठेण गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जाव[1] ईसिं निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५७. से भंते ! किं आढामाणे[2] पभू ? अणाढामाणे[3] पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५९. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६०. पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंद देवरायं सपक्खिं[4] सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
[5]•हंता पभू ॥

६१ से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२ पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
हंता पभू ॥

६३. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेण देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६५. [6]•से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

---

१. भ० ३।५४।
२. आढामीणे (अ, क, ता, ब, म); आढायमाणे (स)।
३. अणाढामीणे (अ, क, ता, ब, म); अणाढायमाणे (स)।
४. सपक्खं (क, ता)।
५. स० पा०—जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा।
६. स० पा०—जहा पादुब्भवा।

६६. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्केणं देविंदेण देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६७. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! [आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६८. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति[1] ?
हंता अत्थि ॥

६९. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे वा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति इति भो ! सक्का ! देविंदा ! देवराया ! दाहिणड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! ईसाणा ! देविंदा ! देवराया ! उत्तरड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! इति भो ! त्ति ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

७०. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

७१. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति । तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

सणंकुमार-पदं

७२ सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए[2] ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए[3], नो अभवसिद्धिए । [4]°सम्म-

---

१. × (अ, ब, क) ।
२. ° बोहीए (अ, ब, स) ।
३. भवसिद्धीए (ता) ।
४. सं० पा०—एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्वं ।

दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए । सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे, नो अचरिमे° ॥

७३ से केणट्ठेणं भंते !

गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारे ण देविंदे देवराया भवसिद्धिए[1], °नो अभवसिद्धिए । सम्मद्दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणतसंसारिए । सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे°, नो अचरिमे ॥

७४. सणंकुमारस्स ण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पण्णत्ता ॥

७५. से ण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[2] °भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिइ° ? कहि उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[3] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ।[4]

संगहणी-गाहा

छट्ठट्ठमासो, अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा ।
तीसग-कुरुदत्ताणं, तव-भत्तपरिण्ण-परियाओ ॥१॥
उच्चत्त विमाणाणं, पाउब्भव पेच्छणा य सलावे ।
किच्च विवादुप्पत्ती, सणंकुमारे य भवियत्तं[5] ॥२॥

---

१. सं० पा०—भवसिद्धिए जाव नो ।
२. स० पा०—आउक्खएण जाव कहिं ।
३. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अंत ।
४. भ० १।५१ ।
५. भवियव्वं (ता); अतोग्रे सर्वेष्वादर्शेषु 'मोया सम्मत्ता' इति पाठोस्ति, वृत्तिकृतापि व्याख्यातोसौ, किन्तु मोया-प्रकरणं तामलितापसप्रकरणात् पूर्वमेव समाप्तम्, तेन नावश्यकोसौपाठः ।

बीओ उद्देसो

७७. तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ।।

७८. तेण कालेणं तेण समएण चमरे असुरिदे असुरराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि, चउसट्ठीए सामाणियसाहसहि जाव[2] नट्टविहि उवदसेत्ता जामेव दिसि[3] पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ।।

७९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

८०. एव जाव[4] अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव[5] अत्थि ण भते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?

णो इणट्ठे समट्ठे ।।

८१. से कहि खाइ ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए[6] एव असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ।।

८२. अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए ?

हता अत्थि ।।

८३. केवतियण्ण[8] भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पण्णत्ते ?

गोयमा ? जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्चं पुण पुढविं गया य गमिस्सति य ।।

८४. किंपत्तियण्ण[9] भते ! असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ?

गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए—एव खलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ।।

८५ अत्थि ण भते ? असुरकुमाराण देवाण तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ?

हता अत्थि ।।

८६. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाणं तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! जाव असखेज्जा दीव-समुद्दा, नदिस्सरवर पुण दीव गया य गमिस्सति य ।।

८७. किंपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ?

---

१. ओ० सू० १६-५२ ।
२. राय० सू० ७-१२० ।
३. दिसं (ता, व, म, स) ।
४. अ० सू० २८७ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. असीउत्तर० (अ, व, म, स) ।
७. प० २ ।
८. केवतियं ए (स) ।
९. किंपत्तिय ए (अ, ता, व, म) ।

गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवतो[1], एएसि णं जम्मणमहेसु वा, निक्खमणमहेसु वा, नाणुप्पायमहिमासु[2] वा, परिनिव्वाणमहिमासु वा—एव खलु असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीव गया य गमिस्संति य ॥

८८. अत्थि णं भंते असुरकुमाराण देवाणं उड्ढं गतिविसिए ?
हंता अत्थि ॥

८९. केवतियण्णं भते ! असुरकुमाराणं देवाण उड्ढ गतिविसए ?
गोयमा ! 'जाव अच्चुतो'[3] कप्पो, सोहम्मं पुण कप्प गया य गमिस्सति य ॥

९०. किपत्तियण्णं भते ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण भवपच्चइए[4] वेराणुबधे, ते ण देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेति[5] अहालहुसगाइ रयणाइ गहाय आया। एगंतमत अवक्कमति ॥

९१. अत्थि ण भते ! तेसि देवाणं अहालहुसगाइ रयणाइं ?
हंता अत्थि ॥

९२. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
तओ से पच्छा कायं पव्वहति ॥

९३ पभू ण भते ! असुरकुमारा देवा तत्थ गया चेव[6] समाणा ताहि अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे । ते ण ततो पडिनियत्तति, ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छति[7] । जइ ण ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणति, पभू ण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए । अह ण ताओ अच्छराओ नो आढंति,[8] नो परियाणति, नो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहि अच्छराहि सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए । एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्पं गया य गमिस्सति य ॥

९४. केवइयकालस्स[9] णं भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्पं गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! अणंताहि 'ओसप्पिणीहि, अणताहि उस्सप्पिणीहि'[10] समतिक्कताहि

---

१. भगवता (क, ब, स) ।
२. नाणुप्पत्ति ० (क) ।
३. जावच्चुए (अ ता, ब, म, स) ।
४. ०पच्चइय (अ, ब, म, स) ।
५. तासेति २ (ता) ।
६. च्चेव (ता) ।
७. इह समागच्छति (अ, ब) ।
८. आढायति (क, ता, म, स) ।
९. केवइकालस्स (अ, क, ब, म, स) ।
१०. उस्सप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं (अ, ब, स) ।

अत्थि ण एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९५. किं निस्साए ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! से जहानामए इह सबरा[1] इ वा बब्बरा इ वा टकणा[2] इ वा चुचुया[3] इ वा पल्हा[4] इ वा पुलिंदा इ वा एग मह 'रण्णं वा'[5] गड्ढं वा दुग्ग वा दरि वा विसम वा पव्वय वा नीसाए सुमहल्लमवि आसबल वा हत्थिबल वा जोहबल वा धणुबलं वा आगलेंति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा नण्णत्थ[6] अरहंते वा अरहंतचेतियाणि वा अणगारे वा भाविअप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९६ सव्वे वि णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । महिड्ढिया ण असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९७. एस वि य ण भंते । चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ?
हंता गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढ उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९८. अहो णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुईए[7] •जाव[8] महाणुभागे । चमरस्स ण भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते° ? कहिं अणुपविट्ठे ?
कूडागारसालादिट्ठतो[9] भाणियव्वो[10] ।।

९९. चमरेण भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी •[11]दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे° किण्णा लद्धे ? पत्ते ? अभिसमण्णागए ?

१००. एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[12] ।।

---

१. सव्वरा (अ, ब) ।
२. ढकणा (क) ।
३. भुभुया (ब), चूचुया (अ), (क, व); भुत्तुया (स) ।
४. पण्हाया (अ); पण्हवा (क, ता); पण्हा (व, स) ।
५. × (अ, क, ब, म) ।
६. × (अ, ता, ब) ।
७. स० पा०—महज्जुईए जाव कहिं ।
८. भ० ३।४ ।
९. ° सालदिट्ठतो (क, ता, ब, म) ।
१०. भ० ३।२९ ।
११. स० पा०—त चेव ।
१२. ओ० सू० १; एतद्वर्णन 'नंदणवण-सन्निभिप्पगासे' एतावदेव ग्राह्यम् ।

१०१. तत्थ ण बेभेले सण्णिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे दित्ते[1] •जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए या वि होत्था ॥

१०२. तए णं तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुटुवजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाणं सुपरक्कताणं सुभाणं कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहि वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं कि णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाण जाव कडाणं कम्माणं एगतसो खयं उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-सबधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता, विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणं आमतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणं जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता•, सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणे[4] •इमं एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणसि• आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिगहगं गहाय बेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडित्ता ज मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे त पथे पहियाण दलइत्तए।

---

१. स० पा०—जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय करेत्ता जाव विउल असणपाणखाइमसाइम जाव सयमेव।

२. भ० ३।१४।

३. भ० ३।३६।

४. स० पा०—त चेव जाव आयावण•।

'जं मे' दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं काग-सुणयाण' दलइत्तए। 'जं मे'[1] तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए। ज मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे त अप्पणा आहारं आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहारं आहारेइ ॥

१०३. तए णं से पूरणे वालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं वालतवोकम्मेणं[3] •सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था ॥

१०४. तए णं तस्स पूरणस्स वालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[4] धमणिसतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता, पादुग-कुडिय-मादीय उवगरणं चउप्पुडयं दारुमय च पडिग्गहगं एगते एडित्ता, वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मडल आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीयं उवगरणं दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणियमंडलं आलिहित्ता सलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणु-

---

१. मुणकाए (क, ता); सुणगाए (म)।
२. जम्मे (ता)।
३. सं० पा०—त चेव जाव वेभेलस्स।
४ भ० ३।३५।
५. भ० २।६६।

पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोय-संडे[1] उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि,[2] दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसणयणे ईसिपब्भारगएण[3] काएण, अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसपज्जेत्ता णं विहरामि ॥

१०६. तेण कालेण तेण समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

१०७. तए णं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, कालमासे काल किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इंदत्ताए उववण्णे ॥

१०८. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति-भाव[4] गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[5] भास-मणपज्जत्तीए[6]] ॥

१०९. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव[7] सोहम्मो कप्पो, पासइ य तत्थ—

सक्कं देविंदं देवरायं, मघवं पाकसासणं ।
सयक्कतुं[8] सहस्सक्खं, वज्जपाणिं पुरंदरं[9] ॥

•दाहिणड्ढलोगाहिवइं बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवइं एरावणवाहणं सुरिंदं अरयवरवत्थधरं आलइयमालमउडं नव-हेम-चारुचित्त-चंचल-कुंडल-विलिहिज्ज-माणगंडं भासुरबोंदिं पलबवणमालं दिव्वेणं वण्णेण जाव[10] दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव[11] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे[12] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं एस अपत्थियपत्थए[13] दुरंतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे

१. असोयवणसडे (क, म, स) ।
२. परिगिण्हामि (स) ।
३. ईसिं° (क, स) ।
४. भ० ३।४३ ।
५. पज्जत्तभाव (व) ।
६. भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
८. सयक्कउं (क, ता) ।
९. स० पा०—पुरंदरं जाव दस ।
१०. उवा० २।४० ।
११. उवा० २।४०; भ० ३।१६ ।
१२. इमे एया° (क, व) ।
१३. °पत्थिए (व, म, स) ।

ज ण ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए[1] •दिव्वाए देवज्जुतीए° 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[2] उप्पि अप्पुस्सुए दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—केस ण एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ?

११०. तए ण ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिदेण असुररण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[3]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएणं विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया जाव[4] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ।।

१११. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाण देवाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एव वयासी—अण्णे खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अण्णे खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सक्क देविदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए[6] त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था ।।

११२. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ओहि पउजइ[7], पउजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ[8], आभोएत्ता[9] इमेयारूवे अज्झत्थिए[10]•चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे°समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जबूदीवे दीवे भारहे वासे सुसुमारपुरे[11] नयरे असोगसडे[12] उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ता ण विहरत्ति, त सेय खलु मे समण भगव महावीर णीसाए सक्क देविद देवराय सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सयणिज्जाओ[13] अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूस परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

---

१. सं० पा०—देवड्ढीए जाव दिव्वे ।
२. एतान्यपि अत्र सप्तम्यन्तानि पदानि विद्यन्ते ।
३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
४. भ० ३।१०६ ।
५. आसुरत्ते (अ, व) ।
६. अच्चासादेत्तए (अ, ता, व, स) ।
७ पयुजइ (ता) ।
८ आलोएइ (व) ।
९. अतोग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहार्यम् ।
१०. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
११. सुसमारपुरे (स) ।
१२. ° वणसडे (अ, क, ता, व, म, स) ।
१३. सत्तणिज्जाओ (ता) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयणं परामुसइ, एगे अवीए[1] फलिहर-यणमायाए महया अमरिस वहमाणे चमरचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेणं-णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव तिगिछिकूडे[2] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जाव[3] उत्तरवेउ-व्विय[4] रूव विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरिय असखे-ज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अतिए तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[5], •करेत्ता वदइ, नमंसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते! तुब्भं नीसाए सक्क देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमेइ, अवक्कमेत्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोह-णित्ता जाव[6] दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ[7] एग मह घोरं घोरा-गार भीम भीमागारं भासुरं[8] भयाणीयं गभीर उत्तासणय कालड्ढरत्त-मास-रासिसकास[9] जोयणसयसाहस्सीय[10] महावोदि विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ[11] वग्गइ[12] गज्जइ, हयहेसियं करेइ, हत्थिगुलगुलाइय करेइ, रहघणघणाइयं करेइ, पायदद्दरगं करेइ, भूमिचवेडय दलयइ, सीहणादं नदइ, उच्छोलेइ पच्छोलेइ, तिवतिं[13] छिदइ, वाम भुय ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए अंगुट्ठणहेण य वितिरिच्छं मुह विडवेइ, महया-महया सद्देण कलकलरवं करेइ एगे अवीए[14] फलिहरयणमायाए उड्ढ वेहास उप्पइए—खोभते चेव[15] अहेलोयं कपेमाणे व[16] मेइणीतल[17] साकड्ढते[18] व तिरियलोय, फोडेमाणे व अबरतलं,

---

१. अवितिए (क, ता)।
२. तिगिच्छि (ता, म); तिगिच्छ (व)।
३. राय० सू० १०।
४. °वेउव्वियरूव (म)।
५. स० पा०—करेइ जाव नमसित्ता।
६. राय० सू० १०।
७. समोहणइ (अ, स)।
८. भामर (क, ता)।
९. भासरासि ° (अ)।
१०. जोतण ° (ता)।
११. बहुलासु प्रतिषु क्रियानन्तर सर्वत्र क्त्वा-प्रत्ययस्स प्रयोगा दृश्यन्ते, यथा—अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता।
१२. × (क, ता, व, म)।
१३. तिपतिं (ता)।
१४. अव्वितिए (क, ता, व)।
१५. च्चेव (ता)।
१६. तिव (ता); वा (व, म)।
१७. मेयणि° (अ); मेतिणी° (क, म); मेदिणी° (ता)।
१८. आकड्ढते (अ, म, स), आसाकड्ढते (व)।

कत्थइ गज्जते, कत्थइ विज्जुयायंते, कत्थइ वासं वासमाणे[1], कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमंतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे[2], जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे[3], फलिहरयणं अंबरतलंसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे[4] ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेंसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एगं पायं पउमवरवेइयाए करेइ, एगं पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो इंदकीलं आउडेइ, आउडेत्ता एवं वयासी—कहिं णं भो[6]! सक्के देविंदे देवराया? कहिं णं ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ[7]? •कहिं णं ते तायत्तीसयतावत्तीसगा? कहिं णं ते चत्तारि लोगपाला? कहिं णं ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ? कहिं णं ताओ तिण्णि परिसाओ? कहिं णं ते सत्त अणिया? कहिं णं ते सत्त अणियाहिवई?° कहिं णं ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ? कहिं णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु त्ति कट्टु तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं फरुसं गिरं निसिरइ।

११३. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तं अणिट्ठं[8] •अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं° अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—हं भो! चमरा! असुरिंदा! असुरराया! अपत्थियपत्थया[10]! •दुरंतपंतलक्खणा! हिरिसिरिपरिवज्जिया!° हीणपुण्णचाउद्दसा! अज्ज न भवसि, नाहि[11] ते सुहमत्थीति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ, परामुसित्ता तं जलंतं फुडंतं तडतडंतं[12] उक्कासहस्साइं विणि-

१. वासेमाणे (अ, क)।
२. वित्तासमाणे (अ)।
३. विपलासमाणे (अ)।
४. विउब्भासेमाणे (ता)।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरिय०।
६. से (क)।
७. सं० पा०—°सामाणियसाहस्सीओ जाव कहिं।
८. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणाम।
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे।
१०. सं० पा०—अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°
११. नहि (व)।
१२. तडवडंत (ता), तडातडंत (व)।

म्मुयमाणं-विणिम्मुयमाणं, जालासहस्साइं पमुंचमाण-पमुंचमाणं, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणं-पविक्खिरमाण, फुलिगजालामालासहस्सेहिं चक्खुविक्खेवदिट्ठिपडिघातं पि पकरेमाणं हुयवहअइरेगतेयदिप्पतं जइणवेग फुल्लकिंसुयसमाण महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुरण्णो वहाए वज्ज निसिरइ ॥

११४. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया त जलतं जाव[1] भयंकरं वज्जमभिमुह आवयमाण पासइ, पासित्ता झियाइ पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडवे[2] सालवहत्थाभरणे उड्ढपाए अहोसिरे कक्खागयसेयं पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव[3] तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव[4] जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगवं सरणं' इति वुयमाणे मम दोण्ह वि पायाण अतरसि झत्ति वेगेण समोवडिए[5] ॥

११५. तए ण तस्स सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहते[7] वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाणं अरहंताण भगवताण अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु ओहि पउंजइ, मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[8] दिव्वाए देवगईए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जाव[9] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम चउरंगुलमसंपत्त वज्जं पडिसाहरइ, अवियाइ मे गोयमा ! मुट्ठिवाएण केसग्गे वीइत्था ॥

११६. तए ण से सक्के देविदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासि—एव खलु भते ! अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेण असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए। तए णं मए परिकुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए

१. भ० ३।११२।
२. °विडए (अ, क); °पिडए (व)।
३. भ० ३।११२।
४. भ० ३।११२।
५. समोवइए (ता)।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. अरहतं (क); अरहता (ता)।
८. भ० ३।११२।
९. भ० ३।११२।

वज्जे निसट्ठे[1]। तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰समुप्पज्जित्था–नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया[3], •नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताण भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु॰ ओहिं पउजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[4] जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाण चउरंगुलमसपत्त वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्टयाए ण इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु ण देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[5] णं देवाणुप्पिया ! नाइ[6] भुज्जो एव करणयाए[7] त्ति कट्टु मम वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमि विदलेइ[8], विदलेत्ता चमरं असुरिंदं असुररायं एव वदासि—मुक्को सि णं भो चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं—नाहिं[9] ते[10] दाणि[11] ममातो[12] भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं[13] पडिगए॥

११७. भतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[14] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेवं अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए ?
हंता पभू॥

११८. से केणट्ठेणं[15] •भते ! एव वुच्चइ—देवे णं महिड्ढीए जाव[16] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं॰ गेण्हित्तए ?
गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते[17] समाणे पुव्वामेव सिग्घगई[18] भवित्ता ततो पच्छा

---

१. निसिट्ठे (अ, स)।
२. स॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था।
३. सं॰ पा॰—तहेव जाव ओहिं।
४. भ॰ ३।११५।
५. ॰मरुहंतु (अ, स)।
६. नाइं (ता, व)।
७. पकरणयाए (वृ, स)।
८. दालेइ (अ, क, व, स), दलइ (म)।
९. णाहिं (अ, क, ता); नहि (व)।
१०. भे (व)।
११. इदाणि (क, म)।
१२. ममतो (अ, क)।
१३. दिसं (ता, व, म)।
१४. भ॰ ३।४।
१५. सं॰ पा॰—केणट्ठेणं जाव गेण्हित्तए।
१६. भ॰ ३।४।
१७. खित्ते णं (अ), विखित्ते (स)।
१८. सिग्घागई (व)।

मदगती भवति, देवे ण महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्विं पि पच्छा वि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव। से तेणट्ठेण जाव पभू गेण्हित्तए ॥

११९. जइ ण भते ! देवे[1] महिड्ढीए जाव[2] पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण गेण्हित्तए, कम्हा ण भते ! 'सक्केण देविदेण देवरण्णा'[3] चमरे असुरिंदे असुरराया नो सचाइए[4] साहत्थि गेण्हित्तए ?

गोयमा ! असुरकुमाराण देवाण अहे गइविसए 'सीहे-सीहे'[5] चेव तुरिए-तुरिए चेव, उड्ढ गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव। वेमाणियाण देवाण उड्ढ गइविसए सीहे-सीहे चेव। तुरिए-तुरिए चेव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव।

जावतिय खेत्त सक्के देविदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केण समएण, तं वज्जे दोहि, ज वज्जे दोहि, त चमरे तिहि। सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकडए, अहेलोयकंडए[6] संखेज्जगुणे।

जावतिय खेत्त चमरे असुरिंदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केण समएण, तं सक्के दोहि, ज सक्के दोहि, त वज्जे तीहिं। सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकडए, उड्ढलोयकंडए सखेज्जगुणे।

एव खलु गोयमा ! सक्केण देविदेणं देवरण्णा चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए साहत्थि गेण्हित्तए ॥

१२०. सक्कस्स ण भते ! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त सक्के देविदे देवराया अहे ओवयइ एक्केण समएण तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढ सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२१ चमरस्स ण भते ! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढ उप्पयइ एक्केणं समएण, तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, अहे सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२२. [7]•वज्जस्स ण भते ! उड्ढं अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त वज्जे अहे ओवयइ एक्केण समएण, तिरिय विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढ विसेसाहिए भागे गच्छइ॰॥

---

१. देविंदे (अ, ता, व, स)।

२ भ० ३।११८।

३. सक्के देविंदे देवराया (स)।

४. सचाइति (अ); सचाएति(स)।

५. सिग्घे-सिग्घे (अ, स)।

६. अहो० (अ, व)।

७. स० पा०—वज्ज जहा सक्कस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्व।

१२३. सक्कस्स ण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले सखेज्जगुणे ॥

१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवर—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥

१२५. वज्जस्स पुच्छा।
गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ॥

१२६. एयस्स ण भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए ण दोण्णि[1] वि तुल्ला सव्वत्थोवा। सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले सखेज्जगुणे। चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ॥

१२७ तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केण देविंदेणं देवरण्णा महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि सीहासणसि ओहयमणसकप्पे चितासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ॥

१२८. तए णं चमर असुरिदं असुरराय सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसकप्प जाव[2] झियायमाण पासति, पासित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु जएण विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—कि ण देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पा चितासोयसागरसपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

१२९. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समण भगव महावीरं नीसाए सक्के देविदे देवराया सयमेव अच्चासाइए। तए ण तेणं परिकुविएण समाणेणं मम वहाए वज्जे निसट्ठे[3]। त भद्दण्ण[4] भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि[5] पभावेण अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे

१. विण्णि (ता, म)।
२. भ० ३।१२७।
३. निसिट्ठे (अ, स)।
४. भद्द ण (अ, स)।
५. जस्सीस (ता)।

इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपिज्जत्ता णं विहरामि। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[1] पज्जुवासामो त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[2] सव्विड्ढीए जाव[3] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं[4] •करेत्ता वंदेता° नमंसित्ता एवं वयासि-एवं खलु भंते! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए[5]। •तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे°। तं भद्दण्णं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्सम्हि पभावेणं अकिट्ठे[6] •अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इह अज्ज उवसंपज्जित्ता णं° विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया[7]! •खमंतु णं देवाणुप्पिया! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्टु ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जाव[8] बत्तीसइबद्धं[9] नट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

१३०. एवं खलु गोयमा! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[10] •दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए। ठिई सागरोवमं महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[11] अंतं काहिइ॥

१३१. किंपत्तियं णं भंते! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो? गोयमा! तेसि णं देवाणं अहुणोववण्णाणं[12] वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जइ—अहो! णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव[14] अभिसमण्णागए, जारिसिया णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया णं अम्हेहिं वि जाव अभिसमण्णागए। तं गच्छामो णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया

---

१. भ० २।३०।
२. भ० ३।४।
३. राय० सू० ५८।
४. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता।
५. सं० पा०—अच्चासाइए जाव तं।
६. सं० पा०—अकिट्ठे जाव विहरामि।
७. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव उत्तर°।
८. राय० सू० ६५-१२०।
९. बत्तीसविहं (क)।
१०. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभि°।
११. भ० २।७३।
१२. अहुणोववण्णगाण (अ, व)।
१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ।
१४. भ० ३।१३०।

दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं। तं जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं।

एवं खलु गोयमा! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो॥

१३२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[1]॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पदं

१३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था जाव[2] परिसा पडिगया॥

१३४. तेणं कालेणं तेणं समएणं[3] °समणस्स भगवओ महावीरस्स° अंतेवासी मंडिअपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[4] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—कइ णं भंते! किरियाओ पण्णत्ताओ?

मंडिअपुत्ता! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिआ, पाओसिआ[5], पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया॥

१३५. काइया णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-किरिया[6] य॥

१३६. अहिगरणिआ णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजोयणाहिगरणकिरिया[7] य, निवत्त-णाहिगरणकिरिया[8] य॥

१३७. पाओसिआ[9] णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-सिआ य॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।४-८।
३. सं० पा०—समएणं जाव अंतेवासी।
४. भ० १।२८८, २८६।
५. पायो° (क, ता)।
६. दुप्पयुत्त° (ता)।
७. °करण° (क, ता, स)।
८. °करण° (ता, ब, स)।
९. पादोसिया (अ, क, ब); पाओसिगा (ता)।

१३८. पारियावणिआ णं भंते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता'[1] ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपारियावणिआय, परहत्थपारियावणिआ य ॥

१३९. पाणाइवायकिरिया णं भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता ?'[2]
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्णपाणाइवायकिरिया य, परहत्थपाणाइवायकिरिया य ॥

किरिया-वेदणा-पदं

१४०. पुव्वि भते ! किरिया, पच्छा वेदणा ? पुव्वि वेदणा, पच्छा किरिया ?
मडिअपुत्ता ! पुव्वि किरिया, पच्छा वेदणा। णो पुव्वि वेदणा, पच्छा किरिया ॥

१४१ अत्थि ण भते ! समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

१४२. कहण्णं[3] भते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?
मडिअपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तं च। एवं खलु समणाण निग्गंथाण किरिया कज्जइ ॥

अंतकिरिया-पदं

१४३. जीवे णं भते ! सया समितं[4] एयति वेयति[5] 'चलति फदइ घट्टइ'[6] खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ ?
हता मडिअपुत्ता ! जीवे णं सया समितं एयति[7] •वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं त भावं परिणमइ ॥

१४४. जाव च ण भते ! से जीवे सया समितं[8] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भावं° परिणमइ, तावं च ण तस्स जीवस्स अते अत किरिया भवइ ?
नो इणट्ठे[9] समट्ठे ॥

१४५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित[10] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ, तावं च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया न भवति ?
मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित[11] •एयति वेयति चलति फंदइ

---

१. पुच्छा (ब)।
२. पुच्छा (ता, ब)।
३. कह णं (अ, क, ब); कहं ण (ता); कहि ण (स)।
४ समिय (अ, ता, ब, म, स)।
५. वेदति (ता)।
६. चलेइ फदेइ घट्टेइ (अ, ब, स)।
७. स० पा०—एयति जाव तं।
८. स० पा०—समित जाव परिणमइ।
९. तिणट्ठे (अ, क, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—समित जाव अते।
११. स० पा०—समित जाव परिणमइ।

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, ताव च णं से जीवे—'आरभइ सारभइ समारभइ'[1], आरभे वट्टइ सारंभे वट्टइ समारभे वट्टइ, 'आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे'[2], आरभे वट्टमाणे सारभे वट्टमाणे समारभे वट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणयाए[3] सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ॥

से तेणट्ठेण मंडिअपुत्ता ! एवं वुच्चइ—जावं च ण से जीवे सया समितं एयति[4] •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया न भवति ॥

१४६. जीवे णं भते ! सया समित नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ?

हता मडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित[6] •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त तं भाव परिणमइ ॥

१४७. जाव च णं भते ! से जीवे नो एयति[7] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भावं परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया भवइ ?

हंता[8] •मडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ॥

१४८. से केणट्ठेण[9] •भते ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ?

मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित नो एयति[10] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नी खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं त भाव परिणमइ, तावं च ण से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरभे वट्टइ नो सारभे वट्टइ नो समारभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरभे अवट्टमाणे सारभे अवट्टमाणे समारभे अवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाणं

१. आरभइ सारभइ समारंभइ (अ, स)।
२. आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे (अ, क, ता, स)।
३. क्वचित्पठ्यते—'दुक्खणयाए' इत्यादि, तच्च व्यक्तमेव, यच्च तत्र 'किलामणयाए उद्द्वणयाए, इत्यधिकमभिधीयते° (वृ)।
४. स० पा०—एयति जाव परिमणइ।
५. स० पा०—एयति जाव नो।
६. स० पा०—समित जाव नो।
७. स० पा०—एयति जाव नो।
८. स० पा०—हता जाव भवइ।
९. स० पा०—केणट्ठेण जाव भवइ।
१०. स० पा०—एयति जाव नो।

जीवाण सत्ताण अदुक्खावणयाए[1] •असोयावणयाए अजूरावणयाए अतिप्पावणयाए अपिट्टावणयाए° अपरियावणयाए वट्टइ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क[2] तणहत्थयं जायतेयसि पक्खिवेज्जा, से नूण मडिअपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ?

हंता मसमसाविज्जइ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं मडिअपुत्ता! से उदयबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ?

हंता विद्धसमागच्छइ।

से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति[3]। अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरयसि एगं महं नाव सतासवं सतच्छिद्दं ओगाहेज्जा, से नूणं मडिअपुत्ता! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं[4] आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति?

हंता चिट्ठति।

अहे ण केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइं पिहेइ, पिहेत्ता नावा-उस्सिचणएण उदय उस्सिचेज्जा से नूण मडिअपुत्ता! सा नावा तसि उदयसि उस्सित्तसि समाणसि खिप्पामेव उदाइ[5]?

हंता उदाइ।

एवामेव मडिअपुत्ता! अत्तत्ता-संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स[6] •भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स° गुत्तबंभयारिस्स, आउत्त गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स[7] निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछण गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया[8] सुहुमा इरियावहिया[9] किरिया कज्जइ—सा पढमसमय-

---

१ स० पा०—अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए।
२. सुक्क (अ, व)।
३ चिट्ठइ हंता चिट्ठइ (ता, म, स)।
४. °द्दारेहिं (ता, व, म)।
५. तुदाति (ता), उद्दाइ (म); उड्ढ उदाइ (स)
६. रिया° (ता, व, म); स० पा०—इरियासमितस्स जाव गुत्तबंभयारिस्स।
७. सर्वेष्वपि पदेषु 'आउत्त' इति पदं गम्यम्।
८. वेमाता (ता), सपेहाए (वृपा)।
९. रिया० (अ, ता, व)।

वद्धपुट्ठा[1], वितियसमयवेइया[2], ततियसमयनिज्जरिया[3]। सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म वावि[4] भवति। से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समित नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घटइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया भवइ॥

पमत्तापमत्तद्धा-पदं

१४६. पमत्तसजयस्स णं भते! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं पमत्तद्धा कालओ केवच्चिर[6] होइ?
मडिअपुत्ता! एगं जीव पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा॥

१५०. अप्पमत्तसजयस्स णं भंते! अप्पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य ण अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ?
मंडिअपुत्ता! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं 'देसूणा पुव्वकोडी'[7] नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं॥

१५१. सेवं भते! सेवं भते! त्ति भगव मडिअपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

लवणसमुद्द-वुड्ढि-हाणि-पदं

१५२. भतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसंइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कम्हा णं भते! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगे वड्ढइ वा? हायइ वा?
लवणसमुद्दवत्तव्वया[8] नेयव्वा जाव[9] लोयट्ठिई, लोयाणुभावे॥

१५३. सेव भते! सेव भंते? त्ति जाव[10] विहरति[11]॥

---

१. °समत° (ता)।
२. बीयसमयवेतिला (क); °वेदिता (ता); वीय° (व)।
३. टितिय° (व)।
४. चावि (ता)।
५. स° पा°—एयति जाव अते।
६. केवचिर (अ, क)।
७. पुव्वकोडी देसूणा (क, ता, ब, म, स)।
८. जहा जीवाभिगमे लवण° (स)।
९. जी° ३ मन्दरोद्देशक.।
१०. भ° १।५१।
११. विहरइ किरिया समत्ता(अ, क, ता, व, म,स)

चउत्थो उद्देसो

भाविअप्प-पदं

१५४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देव वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणं[1] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं पासइ। ३. अत्थेगइए देवं पि पासइ, जाणं पि पासइ। ४. अत्थेगइए नो देव पासइ, नो जाणं पासइ ॥

१५५. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहयं जाणरूवेणं जामाणि[2] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. [3]•अत्थेगइए देविं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देविं पासइ। ३. अत्थेगइए देवि पि पासइ, जाण पि पासइ। ४. अत्थे गइए नो देविं पासइ, नो जाण पासइ° ॥

१५६. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवं सदेवीअं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेण जामाणं जाणइ-पासइ ?
[4]•गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं सदेवीअं पासइ, नो जाणं पासइ। २. अत्थेगइए जाण पासइ, नो देवं सदेवीअ पासइ। ३ अत्थेगइए देव सदेवीअ पि पासइ, जाणं पि पासइ। ४. अत्थेगइए नो देवं सदेवीअ पासइ, नो जाण पासइ° ॥

१५७ अणगारे णं भते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ ? बाहिं पासइ ?
[5]•गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पासइ, नो बाहिं पासइ। २. अत्थेगइए रुक्खस्स बाहिं पासइ, नो अतो पासइ। ३. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पि पासइ, बाहिं पि पासइ। ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो अंतो पासइ, नो बाहिं पासइ° ॥

१५८. [6]•अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं मूलं पासइ ? कंदं पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स मूल पासइ, नो कंदं पासइ। २. अत्थेगइए रुक्खस्स कंदं पासइ, नो मूलं पासइ। ३. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पि पासइ, कदं पि पासइ। ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो मूल पासइ, नो कंदं पासइ° ॥

---

१. जायमाण (अ, क, ब, स)।
२. जाइमाणिं (अ, ब); जायमाणिं (क, स)।
३. स० पा०—एव चेव।
४. स० पा०–एतेण अभिलावेण चत्तारि भंगा।
५. सं० पा०—चउभगो।
६. स० पा०—एवं किं मूलं पासइ, कदं पासइ ? चउभगो।

१५९. मूलं पासइ ? खंधं पासइ ? चउभंगो ॥
१६०. एवं मूलेणं[1] [जाव ?] बीजं संजोएयव्वं ॥
१६१. एवं कंदेण वि समं संजोएयव्वं जाव बीयं ॥
१६२. एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं ॥
१६३. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ ? बीयं पासइ ? चउभंगो[2] ॥

वाउकाय-पदं

१६४ पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं इत्थिरुवं वा पुरिसरूवं वा [आसरूवं वा[3] ?] हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा जुग्गरूवं वा गिल्लिरूवं वा थिल्लिरूवं[4] वा सीयरूवं वा संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाए[5] ण विकुव्वमाणे एगं महं पडागासंठियं रूवं विकुव्वइ ॥
१६५. पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

---

१. एवमिति मूलकंदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कंदादिपदानि वाच्यानि यावद्बीजपदम् । तत्र मूलम्, कंदः, स्कन्ध , त्वक्, शाखा, प्रवालम्, पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, बीजम् चेति दश पदानि, एषां च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसयोगा. भङ्गा.–

१. मूल कंद　२. मूल स्कंध
३. मूल त्वक्　४. मूल शाखा
५. मूल प्रवाल　६. मूल पत्र
७. मूल पुष्प　८. मूल फल
९. मूल बीज　१०. कंद स्कंध
११. कंद त्वक्　१२. कंद शाखा
१३. कंद प्रवाल　१४. कंद पत्र
१५. कंद पुष्प　१६. कंद फल
१७. कंद बीज　१८. स्कंध त्वक्
१९. स्कंध शाखा　२०. स्कंध प्रवाल
२१. स्कंध पत्र　२२. स्कंध पुष्प
२३. स्कंध फल　२४. स्कंध बीज
२५. त्वक् शाखा　२६. त्वक् प्रवाल
२७. त्वक् पत्र　२८. त्वक् पुष्प
२९. त्वक् फल　३०. त्वक् बीज
३१. शाखा प्रवाल　३२. शाखा पत्र
३३. शाखा पुष्प　३४. शाखा फल
३५. शाखा बीज　३६. प्रवाल पत्र
३७. प्रवाल पुष्प　३८. प्रवाल फल
३९. प्रवाल बीज　४०. पत्र पुष्प
४१. पत्र फल　४२. पत्र बीज
४३. पुष्प फल　४४. पुष्प बीज
४५. फल बीज (वृ) ।

२. चउभंगो एवं (ता) ।
३. १७९ सूत्रे 'आसरूव' इति पाठो विद्यते वृत्तावपि तस्योल्लेखोस्ति, तेनात्रापि संभाव्यते ।
४. खिल्लि° (क) ।
५. वाउयाए (क, ता) ।

१६६. से भंते ! किं आइड्ढीए[1] गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

१६७. [2]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

१६८. से भंते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ° ॥

१६९. से भंते ! किं ऊसिओदयं[3] गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ ॥

१७०. से भंते ! किं एगओपडागं गच्छइ ? दुहओपडागं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ, नो दुहओपडागं गच्छइ ॥

१७१. से भंते ! किं वाउकाए ? पडागा[4] ?
गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा ॥

बलाहक-पदं

१७२. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं वा जाव[5] संदमाणियरूवं वा परिणामेत्तए ?
हंता पभू ॥

१७३. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ।
हंता पभू ॥

१७४. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! नो आइड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ॥

१७५. [6]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयकम्मुणा गच्छइ, परकम्मुणा गच्छइ ॥

१७६. से भंते ! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयप्पयोगेणं गच्छइ, परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

१७७ से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

---

१ आयड्ढीए (अ, ब, स), आतिड्ढीए (क, म)
२. सं० पा०—जहा आयड्ढीए एवं अयकम्मुणा वि आयप्पयोगेण वि भाणियव्वं ।
३. ऊसिओदग (म, स) ।
४. पडाग वा (ता) ।
५. भ० ३।१६४ ।
६. सं० पा०—एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेणं, परप्पयोगेणं । ऊसिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

१७८. से भंते ! किं बलाहए ? इत्थी ?
गोयमा ! बलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ॥

१७९. एवं[1] पुरिसे, ग्रासे, हत्थी ॥

१८०. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता ग्रणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
जहा[2] इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ॥

१८१. [3]•से भंते ! किं एगग्रोचक्कवालं गच्छइ ? दुहग्रोचक्कवाल गच्छइ ?
गोयमा ! एगग्रोचक्कवालं पि गच्छइ, दुहग्रोचक्कवालं पि गच्छइ° ॥

१८२. जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया[4] तहेव[5] ॥

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,[6] से ण भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं[7] दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा। एव जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा। जाव[8]—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए[9]•, से ण भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ° ?
गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ॥

१८५. जीवे ण भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइ दव्वाइ परियाइत्ता[10] कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, त जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ॥

---

१. भ० ३।१७३-१७८।
२. भ० ३।१७३-१७८।
३. सं० पा०—नवर एगग्रो चक्कवालं पि दुहओवक्कवाल पि भाणियव्व।
४. सदमाणिया ण (अ, व, स)।
५. भ० ३।१७३-१७८।
६. उववज्जइए (अ)।
७. जं लेसाइ (अ, स)।
८. जाव जीवेण भते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भते किंलेसेसु असुरकुमारेसु उपवज्जइ? जल्लेसाइ दव्वाइ परियाइत्ता काल करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ। त कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एव जहा नेरइयाण नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एव जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता); पू० प० २।
९. स० पा०—पुच्छा।
१०. परियाइतित्ता (अ, व, स)।

भाविअप्प-विकुव्वणा-पदं

१८६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभारं[1] पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१८७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
हंता पभू ।।

१८८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१८९. •[2]अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
हंता पभू° ।।

१९०. से भंते ! किं माई विकुव्वइ ? अमाई ? विकुव्वइ
गोयमा ! माई विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वइ ।।

१९१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[3]—•माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ?
गोयमा ! माई णं पणीयं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा वामेति । तस्स णं तेणं पणीएणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिजा बहलीभवंति, पयणुए मंस-सोणिए भवति । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—सोइंदियत्ताए[4] •चक्खिदियत्ताए घाणिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए° फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए, सुक्कत्ताए, सोणियत्ताए ।
अमाई णं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा णो वामेइ । तस्स णं तेणं लूहेणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिजा पयणूभवंति, बहले मंस-सोणिए । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—उच्चारत्ताए पासवणत्ताए[5] •खेलत्ताए सिंघाणत्ताए वंतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताए° सोणियत्ताए । से तेणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ।।

---

१. वेब्भारं (ता) ।
२. सं० पा०—एवं चेव बितिओ वि आलावगो नवरं परियातिइत्ता पभू ।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो ।
४. सं० पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए ।
५. सं० पा०—पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए ।
६. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

१९२. माई णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[1] कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमाई णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, अत्थि तस्स आराहण ॥

१९३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

पंचमो उद्देसो

१९४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[3] सदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१९५. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[4] सदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥

१९६. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइआइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[5] पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीव दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वितिकिण्ण[6] •उवत्थडं संथड फुडं अवगाढा-वगाढं करेत्तए° । एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा । एव परिवाडीए नेयव्व जाव[7] संदमाणिया ॥

१९७. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपायं[8] गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

---

१. अणालोतिय° (अ, ब, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० ३।१६४।
४. भ० ३।१६४।
५. भ० ३।४ ।
६. स हा०—वितिकिण्ण जाव एस ।
७. भ० ३।१६४।
८. असि चम्म° (ता) ।

१९८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू असिचम्म (पाय ?) हत्थकिच्च-गयाइ रूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, त चेव जाव[1] विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा ।।

१९९. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएण[2] अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं[3] उप्पएज्जा ?
हता[4] उप्पएज्जा ।।

२००. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइयाइ पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइ विकुव्वित्तए ?
एव चेव जाव[5] विकुव्विसु वा, विकुव्वतिवा वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०१. एव दुहओपडाग पि ।

२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइत काउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओजण्णोवइतकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ।।

२०३. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओजण्णोवइतकिच्चगयाइं रूवाइ विकुव्वित्तए ?
तं चेव जाव[6] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।

२०४. एव दुहओजण्णोवइयं पि ।।

२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थिय काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपल्हत्थिय किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढ वेहासं उप्पएज्जा ?
त चेव जाव[7] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०६. एव दुहओपल्हत्थिय पि ।।

२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियंक काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपलियककिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
तं चेव जाव[8] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०८. एवं दुहओपलियक पि ।।

---

१. भ० ३।१९६ ।
२. एगततोपडागा० (ता) ।
३. वेहायस (व) ।
४. हंता गोयमा (अ, ता, व, स) ।
५. भ० ३।१९६ ।
६. भ० ३।१९६ ।
७. भ० ३।२०२, २०३ ।
८. भ० ३।२०२, २०: ।

भाविअप्प-अभिजुंजरण-पदं

२०९. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा विग्घरूवं वा विगरूवं[1] वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं[2] वा अभिजुंजित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१०. अणगारे णं[3] •भंते ! भाविअप्पा बाहिरिए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा वग्घरूवं वा विगरूवं वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं वा अभिजुजित्तए ?
हंता पभू° ॥

२११. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा (पभू ?) एगं महं आसरूवं वा अभिजुजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

२१२. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

२१३. [4]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

२१४. से भंते! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ !
गोयमा ! आयप्पयोगेणं गच्छइ, नो परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

२१५. से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

२१६. से णं भंते ! किं अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे ॥

२१७. एवं जाव[5] परासररूवं वा ॥

२१८. से भंते ! किं 'मायी विकुव्वइ[6]', ? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ॥

---

१. वग° (क, ता, व, म) ।
२. इह अन्यान्यपि शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (वृ) ।
३. सं० पा०—एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ।
४. सं० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।
५. भ० ३।२०९, २११-२१६ ।
६. मायी अभिजुंजइ" अधिकृतवाचनायां 'मायी विक्कुव्वइ' त्ति दृश्यते (वृ) ।

२१९. मायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु आभियोगिएसु[1] देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥

२२०. अमायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ ॥

२२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।

संगहणी-गाहा

१. इत्थी असी पडागा, जण्णोवइए य होइ बोद्धव्वे[3] ।
पल्हत्थिय पलियंके, अभिओग विकुव्वणा मायी ॥

छट्ठो उद्देसो

भावियप्प-विकुव्वणा-पदं

२२२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२२३. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । 'सेसं दंसण-विवच्चासे'[4] भवइ । से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ॥

---

१. आभियोगेसु (अ, ब, स); आभिओग्गिएसु (ता) ।
२. भ० १।५१ ।
३. बोधव्वे (अ, क, म, स) ।
४. से से दसणे विवच्चासे (अ, व, स, वृ); से से दसणे विवरीए विवच्चासे (वृपा) ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।

२२५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी[1] •वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए° रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥

२२६. [2]•से भते ! किं तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२७. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! ° तस्स ण एव भवइ—एवं खलु अह वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ°, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२८. अणगारे णं भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं, रायगिहं च नगरं, अतरा[4] एगं मह जणवयग्गं[5] समोहए, समोहणित्ता वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं अतरा[6] एगं मह जणवयग्गं जाणति-पासति ?
हता जाणति-पासति ।

२२९. से भते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३०. से केणट्ठेणं[7] •भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एवं भवति—एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अंतरा एगे मह जणवयग्गे, नो खलु एस मह वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभगनाणलद्धी इड्ढि जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेस दसण-विवच्चासे'[8] भवति । से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ॥

---

१. स० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।
२. स० पा०—त चेव जाव तस्स ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव अण्णहाभावं ।
४. अतरा य (क, ता, ब) ।
५. जणवयवग्गं (क, म, स, वृ); अत्र स्वीकृत: पाठ: समीचीन: प्रतिभाति । वृत्तिकृत: सम्मुखवर्तिषु आदर्शेषु 'जणवयवग्ग' इति पाठ आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।
६. तं० च अतरा (क, ता, ब, म) ।
७. स० पा०—केणट्ठेण जाव पासइ ।
८. से से दसणे विवच्चासे (अ, क, ब, स) ।
९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।

२३१. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगर समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

२३२. से भते ! कि तहाभाव[1] जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ।।

२३३. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एवं खलु अह रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेण[2] °गोयमा ! एव वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२३४. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसिं नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

२३५. से भते ! कि तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ।।

२३६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एव भवइ—एवं खलु अहं वाणारसि नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ° ।।

२३७. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिह नगर, वाणारसि च नगरि, अतरा एगं मह जणवयग्ग[3] समोहए, समोहणित्ता रायगिह नगरं, वाणारसि च नगरि, अतरा[4] एगं मह जणवयग्ग जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

---

१. तहारूव (क) ।
२. स० पा०—वितिओ वि आलावगो एवं चेव नवर वाणारसीए समोहणा णेयव्वा । रायगिहे नगरे रूवाइ जाणइ पासइ ।
३. जणवयवग्ग (क, म, स), जणवदग्ग (ता) ।
४. त च अंतरा (क, ता, व, म) ।

२३८. से भते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एव भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु मम वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। सेस दसण-अविवच्चासे भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२४०. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूव वा नगररूवं वा जाव[1] सण्णिवेसरूव वा विउव्वित्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४१. [2]°अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एग मह गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूव वा विउव्वित्तए ?
हता पभू° ॥

२४२. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा त चेव जाव[3] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२४३. एवं जाव[4] सण्णिवेसरूव वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४. चमरस्स णं भते ! असुरिदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते ण आयरक्खा—वण्णओ[5] ॥

२४५. एव सव्वेसि इदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा[6] ॥

२४६. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. भ० १।४९।
२. स० पा०—एव वित्तिओ वि आलावगो नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभु।
३. भ० ३।१८६।
४. भ० १।४९।
५. राय० सू० ६६४; वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे (व, म); अय च पुस्तकान्तरे साक्षाद् दृश्यत एव (वृ)।
६. प० २।
७. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

लोगपाल-पदं

२४७. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे ॥

२४८. एएसि णं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—संझप्पभे वरसिट्ठे सयजले वग्गू ॥

२४९. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय[1]-गहगण[2]-नक्खत्त तारारूवाण बहूइं जोयणाइं जाव[3] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए, सत्तवण्णवडेंसए, चंपयवडेंसए, चूयवडेंसए[4], मज्झे सोहम्मवडेंसए ॥

सोम-पदं

२५०. तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं[5] आयाम-विक्खभेण, उयालीसं[6] जोयणसयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य[7] अडयाले जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[8] अभिसेओ, नवरं—सोमो देवो ॥

२५१. संझप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे, सपक्खि, सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[9] ओगाहित्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

---

१. सूरिम (क, ता, म)।
२. गह (ता)।
३. राय० सू० १२४, १२५।
४. भूय० (व, म, स)।
५. अड्ढ० (ता)।
६. ऊया० (क, ता, व)।
७. × (अ, स)।
८. राय० सू० १२६-१८०।
९. जोयणसयसहस्साइं (क, व)।

सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता—एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबु-द्दीवप्पमाणा। वेमाणियाणं पमाणस्स अद्ध नेयव्वं[1] जाव[2] ओवारियलेणं[3] सोलस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते। पासायाणं चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि॥

२५२. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ, वायकुमारा[4], वायकुमारीओ[5], चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, तारारूवा—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति॥

२५३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—गहदंडा इ वा, गहमुसला इ वा, गहगज्जिया इ वा, गहजुद्धा[6] इ वा, गहसिंघाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'[7] अब्भरुक्खा इ वा, सब्भा इ वा, गंधव्वनगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा, विज्जुया इ वा, पंसुवुट्ठी इ वा, जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चंदोवरागा इ वा सूरोवरागा इ वा, चंदपरि-वेसा[8] इ वा, सूरपरिवेसा[9] इ वा, पडिचंदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इंदधणू इ वा, उदगमच्छा[10] इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा, पईणवाया इ वा[11], •दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढवाया इ वा, अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा, वाउक्कलिया इ वा, वायमंडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मंडलियावाया इ वा, गुंजावाया इ वा, झंझावाया इ वा°, संवट्टयवाया इ वा, गामदाहा इ वा, जाव[12] सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुल-क्खया, वसणब्भूया मणारिया[13]—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देवि-

---

१. राय० सू० २०४-२०८।
२. भ० २।१२१।
३. उवगारियलेण (अ, स)।
४. वायु° (क); वाउ° (ता)।
५. वायु° (क); वाउ° (ता)।
६. एव गहजुद्धा (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. × (अ, ता, म, स)।
८. °परिएसा (ब, म)।
९. °परिएसा (ब, म)।
१०. उदगमच्छगे (ब, म)।
११. स० पा०—पईणवाया इ वा जाव संवट्टय-वाया।
१२. भ० १।४९।
१३. मकारोलाक्षणिक.।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया[1] अविण्णाया, तेसिं वा सोमकाइयाण देवाणं ॥

२५४. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[2] होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सण्णिच्चरे[3] चंदे सूरे सूक्के बुहे वहस्सई राहू ॥

२५५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभागं[4] पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं[5] देवाणं एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एमहि-ड्ढीए जाव[6] महाणुभागे सोमे महाराया ॥

यम-पदं

२५६ कहि ण भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सोहम्मवडेसयस्स[7] महाविमाणस्स दाहिणे णं सोहम्मे कप्पे असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे[8] पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसय-सहस्साई—जहा सोमस्स विमाण तहा जाव[9] अभिसेओ। रायहाणी तहेव जाव[10] पासायपंतीओ ।

२५७ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा[11]-°उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति, त जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवयकाइया[12] इ वा, पेतकाइया इ वा, पेतदेवयकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा, निरयपाला[13], अभियोगा[14]—जे यावण्णे तहप्पगारा[15] सव्वे ते तब्भत्तिगा, तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा[16]-°उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति ॥

---

१ असुया (अ, क, म); अस्मृतपदस्य असुयं अमुय इतिरूपद्वय भवति । वृत्तिकृता असु-यत्ति अस्मृता इति व्याख्यातम् ।
२. अहाभिण्णाता (क, ता)
३ सणिचरे (अ); सण्णिच्छरे (क, ब, म); सणिचरे (ता) ।
४. सइंभाग (ता), सत्तिभाग (व, म) ।
५ अहापच्चभिण्णायाण (क); अहापच्चभिण्णा-ताण (ता) ।
६. भ० ३।४ ।
७. सोहम्मवडसयस्स (स) ।
८. विमाणो (क. ता, व) ।
९. भ० ३।२५० ।
१०. भ० ३।२५१ ।
११. स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।
१२. जमदेवतक्काइया (ता); जमदेवकाइया (म, स) ।
१३. निरयवाला (अ) ।
१४. आभियोग्गा (ता, व) ।
१५. तप्पगारा (ता, व) ।
१६. स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।

२५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—डिंबा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा[1] इ वा, महारुहिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा, मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा कण्णवेयणा इ वा, नहवेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा[2] इ वा, एगाहिया इ वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया[3] इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ वा, 'सासाइवा, सोसा'[4] इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा, अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा[5] इ वा, भगंदला[6] इ वा, हिययसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पाससूला इ वा, कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कव्वड-मारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडंबमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी इ वा, सवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'[7] जे यावण्णे[8] तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा जमकाइयाण देवाण ॥

२५९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[9] होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अबे अंबरिसे चेव, सामे सबले त्ति यावरे।
रुद्दोवरुद्दे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
'असिपत्ते धणू कुंभे'[10], वालुए[11] वेतरणी[12] त्ति य।
खरस्सरे महाघोसे, एते[13] पण्णरसाहिया ॥२॥

---

१. एवं महापुरिस° (अ, क, ता, व, म. स)।
२. भूमग्गहा (ता)।
३. चतुत्थया (ता, म)।
४. खासा इ वा सासा (अ)।
५. अरसा (अ); हरिसा व, म)।
६. भगंदरा (ता)।
७. ° भूयमणारिया (अ, क. ता); °भूतामणा-रिया (व)।
८. जे या वि अन्ने (ब, म)।
९. अहाभिण्णाया (क, ता)।
१०. असी य असिपत्ते कुभे (क, वृ); असिपत्त धणू कुभे (वृपा)।
११. वालू (अ, ता, ब, म, स)।
१२. वेदरणी (व, म)।
१३. एमेए (क, व, वृ)।

२६०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सतिभागं पलिग्र ठिई पण्णत्ता, ग्रहावच्चाभिण्णायाण देवाण एगं पलिग्रोवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे जमे महाराया ॥

वरुण-पदं

२६१. कहि ण भते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयंजले नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमे णं जहा सोमस्स तहा विमाण-रायधाणीग्रो भाणियव्वा जाव[2] पासादवडेसया, नवरं—नाम-नाणत्त ॥

२६२ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो[3] •इमे देवा ग्राणाउववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति, त जहा—वरुणकाइया इ वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा, नागकुमारीग्रो, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीग्रो, थणियकुमारा, थणियकुमारीग्रो—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4], •तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो ग्राणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति ॥

२६३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—ग्रइवासा इ वा, मंदवासा इ वा, सुवुट्ठी इ वा, दुवुट्ठी[5] इ वा, उदब्भेदा[6] इ वा, उदप्पीला[7] इ वा, ग्रोवाहा[8] इ वा, पवाहा इ वा, गामवाहा इ वा, जाव[9] सण्णिवेसवाहा इ वा, पाणक्खया[10], •जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो ग्रण्णाया ग्रदिट्ठा ग्रसुया ग्रमुया ग्रविण्णाया°, तेसिं वा वरुणकाइयाण देवाणं ॥

२६४. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा ग्रहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—

कक्कोडए कद्दमए, ग्रंजणे संखवालए पुडे ।
पलासे मोए जए, दहिमुहे[11] ग्रयपुले कायरिए ॥

---

१. भ० ३।४ ।
२. भ० ३।२५०, २५१ ।
३. स० पा०—महारण्णो जाव चिट्ठति ।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ।
५. मदवुट्ठी (अ, क, ता, व, म) ।
६. दउब्भेदा (क, ब) ।
७. दउप्पीला (क, ब) ।
८. उदवाहा (अ, क) ।
९. भ० ३।२५८ ।
१०. स० पा०—पाणक्खया जाव तेसिं ।
११. ओहिमुहे (क); उदधिमुहे (ता) ।

२६५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाणं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे वरुणे महाराया॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! तस्स ण सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे णं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव[2] पासादवडेंसया॥

२६७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, त जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,'[3] दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4] •तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति॥

२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तंबागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा'[5] सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, बीयवासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गंधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, बीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गंधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला[6] इ वा, दुक्काला इ वा, अप्पग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्खा इ वा, दुब्भिक्खा इ वा, कयविक्कया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइ वा—चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाइ वा, पहीणसेतुयाइ वा, पहीणमग्गाइ[7] वा, पहीणगोत्तागाराइ वा, उच्छण्णसामियाइ वा, उच्छण्णसेतुयाइ वा, (उच्छण्णमग्गा इ वा?) उच्छणगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-तिग-चउक्क-

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।२५०, २५१।
३. × (क, ता, म)।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति।
५. एवं सिसाग हिरण्ण° (ता)।
६. सुयाला (ता)।
७. × (क, ता, ब, म)।

चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वा' नगरनिद्धमणेसु[1] वा, सुसाण-गिरि-कदर-सति-सेलोवट्ठाण-भवणगिहेसु सनिक्खित्ताइं[2] चिट्ठति, न ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो 'अण्णायाइ अदिट्ठाइं असुयाइं अमुयाइं अविण्णयाइ'[3] तेसिं वा वेसमणकाइयाणं देवाणं ।।

२६९. सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—पुण्णभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुण्णरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामे[4] समिद्धे अमोहे असगे[5] ।।

२७०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे वेसमणे महाराया ।।

२७१. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[7] ।।

अट्ठमो उद्देसो

२७२. रायगिहे नगरे जाव[8] पज्जुवासमाणे एव वयासी—असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्च जाव[9] विहरति ?

गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरति, तं जहा—चमरे असुरिदे असुरराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे, वेसमणे[10], वरुणे ।।

---

१. °द्धवणेसु (वृ) ।
२. सनिक्खित्ता (अ, ता) ।
३. अन्नाया अदिट्ठा असुया असुया अविण्णाया (अ, क, ता, व) ।
४. सव्वकाम (अ, ता, म) ।
५ असमे (अ), असते (क, स) ।
६. भ० ३।४ ।
७. भ० १।५१ ।
८. भ० १।४-१० ।
९ भ० ३।४ ।
१० स्थानागे ४।१२२ सूत्रे 'दाक्षिणात्यलोकपालेषु यौ तृतीयचतुर्थौ तौ ओदीच्येषु चतुर्थतृतीयौ स्त.। प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च नैष क्रमो लभ्यते । वृत्तिकृता अस्य क्रमस्य पाठान्तररूपेणोल्लेखः कृतः—इह च पुस्तकान्तरेऽयमर्थो दृश्यते—दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रतिसूत्र यौ तृतीयचतुर्थौ तावौदीच्येषु चतुर्थतृतीयाविति । किन्तु वैमानिकदेवेषु वृत्तिकृता तृतीयचतुर्थयोर्व्यत्यय. स्वीकृत.—सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वेन्द्रापेक्षयोत्तरेन्द्रसम्बन्धिना लोकपालाना तृतीयचतुर्थयो व्यत्ययो वाच्य. (वृ) । असौ क्रम. पूर्वक्रमाद् भिन्नोस्ति । अस्माभिः सर्वत्र स्थानाङ्गानुसारी एक एव क्रमः स्वीकृत. ।

२७३. नागकुमाराणं भंते ![1] •देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[2] विहरंति ?◦
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले,सेलवाले, संखवाले, भूयाणंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'संखवाले, सेलवाले'[3] ।।

२७४. जहा नागकुमारिंदाणं एताए वत्तव्वयाए नीयं एवं इमाणं नेयव्वं—
सुवण्णकुमाराणं—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे ।
विज्जुकुमाराणं—हरिकंत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकंत-सुप्पभकंता ।
अग्गिकुमाराणं—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह[4]-तेउकंत-तेउप्पभा ।
दीवकुमाराणं—पुण्ण-विसिट्ठ[5]-रूय-रूयंस-रूयकंत-रूयप्पभा ।
उदहीकुमाराणं—जलकंत-जलप्पभ-जल-जलरूय[6]-जलकंत-जलप्पभा ।
दिसाकुमाराणं—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीहविक्कमगती ।
वाउकुमाराणं—वेलंब-पभंजण-काल-महाकाल-अंजण-रिट्ठा ।
थणियकुमाराणं—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नंदियावत्त-महानंदियत्ता ।
एवं भाणियव्वं जहा[7] असुरकुमारा[8] ।।

२७५. पिसायकुमाराणं[9] •भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[10] विहरंति ?◦
गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य ।
अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ।।१।।
किन्नर-किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ।।२।।

एते वाणमंतराणं देवाणं ।।

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. भ० ३।४ ।
३. सेलवाले संखवाले (अ, क, म) ।
४. तेउसीह (अ) ।
५. वसिट्ठ (ता, ब); विसट्ठ (स) ।
६. जलरूय (अ); जलरते (ठा० ४।१२२) ।
७. भ० ३।२७२ ।
८. अतोग्रे आदर्शेषु वृत्तौ च सांकेतिक. पाठो वर्तते । वृत्तिकृता तस्योल्लेख एवं कृतः— सो १ का २ चि ३ प्प ४ ते ५ रु ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन दाक्षिणभवनपतीन्द्राणां प्रथमलोकपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथाया, साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३ प्पभ ४ तेउ ५ तह रुए चेव ६ । जल तह ७ तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा उ ।। एवं द्वितीयादयोप्ययभ्यूह्या. (वृ) ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. भ० ३।४ ।

२७६. जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव[1] विहरंति, तं जहा—चंदे य, सूरे य ॥
२७७. सोहम्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्च जाव[2] विहरंति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरंति, त जहा—सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणे देविंदे देवराया, सोमें, जमें, 'वेसमणे, वरुणे'[3]।
एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा। जे य इंदा ते य भाणियव्वा ॥
२७८. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

२७९. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कइविहे णं भते ! इंदियविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए[6] पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियविसए चक्खिदियविसए घाणिंदियविसए रसिंदियविसए फासिंदियविसए। जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ नेयव्वो अपरिसेसो ॥

---

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।४।
३. वरुणे वेसमणे (क, व, म, स)।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. वाचनान्तरे च—'इंदियविसए उच्चावय—सुब्भिणो' त्ति दृश्यते, तत्र इन्द्रियविषयसूत्रं दर्शितमेव, उच्चावयसूत्र त्वेवम्—'से नूण भते ! उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं परिणममाणा पोग्गला परिणमतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा !' इत्यादि, 'सुब्भिणो त्ति, इदं सूत्रं पुनरेवम्—'से नूण भते ! सुब्भिसद्दपोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हंता गोयमा !' इत्यादि।

दसमो उद्देसो

२८०. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया, चंडा, जाया। एवं जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ[2]' कप्पो ॥

२८१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. जावच्चुओ (अ, क, व); ठा० ३।१४३-१६०; जी० ३।
३. भ० १।५१।

चउत्थं सतं

१, २, ३, ४ उद्देसो

संगहणी-गाहा

चत्तारि विमाणेहि, चत्तारि य होंति रायहाणीहि।
नेरइए लेस्साहि य, दस उद्देसा चउत्थसए ॥१॥

१. रायगिहे नगरे जाव[1] एवं वयासी—ईसाणस्स ण भंते! देविंदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे[2]' ॥

२. एएसि ण भंते! लोगपालाण कइ विमाणा पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, त जहा—सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥

३. कहि ण भंते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव[3] ईसाणे नाम कप्पे पण्णत्ते। तत्थ णं जाव[4] पंच वडेंसया पण्णत्ता, त जहा—अंकवडेंसए, फलिहवडेंसए, रयणवडेंसए, जायरूववडेंसए, मज्झे[5] ईसाणवडेंसए ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. वरुणे वेसमणे (व)।
३ प० २।
४. प० २।
५. मज्झे तत्थ (अ); मज्झे यत्थ (क, ता, म)।

४. तस्स णं ईसाणवडेसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइं, जहा सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव[1] अच्चणिया समत्ता ॥

५. चउण्ह वि लोगपालाण विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवरं—ठिईए नाणत्तं—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया धणयस्स होंति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाणं ॥१॥

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६. रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव[2] वरुणे महाराया ॥

नवमो उद्देसो

७. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए[3] नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए लेस्सापए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं ॥

---

१. भ० ३।२५०-२७१ ।
२. भ० ३।२५०-२७१ ।
३. अनेरइए ण भते ! (अ, स) ।

दसमो उद्देसो

८. से नूण भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेस पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवं चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव[1]—

संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ-सकिलिट्ठुण्हा ।
गइ-परिणाम-पएसोगाह-वग्गणायणमप्पबहुं ॥१॥

९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

१. जावेत्यादि परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वार-परिसमाप्ति यावदित्यर्थः (वृ)।
२. भ० १।५१।

पंचमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ चंप-रवि २ अनिल ३ गठिय ४ सद्दे ५-६ छउमाउ ७[1] एयण ८ नियंठे ।
९ रायगिह १० चपा-चदिमा य दस पंचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पदं

१. तेण कालेणं तेण समएणं चंपा नाम नगरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे ण चपाए नगरीए पुण्णभद्दे नाम चेइए होत्था—वण्णओ[3] । सामी समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

३. तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण जाव[5] एव वयासी—जबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[6] पाईण-दाहिणमागच्छति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति[7], दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति[8], पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छति ?

हता गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छति ॥

---

१. ममायु (अ, स) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० २।१३ ।
४. भ० १।७, ८ ।
५. भ० १।९, १० ।
६. पादीण° (अ, ता) ।
७. °पदीण° (ता, म) ।
८. उदीचि° (क, ता, व, म) ।

जंबुद्दीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पदं

४. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे[1] दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम[2]-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे[3] दिवसे जाव पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ।।

५. जया णं भंते ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि दिवसे भवइ; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे जाव उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ।।

६ जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।।

७. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तर[4]-•दाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता° राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ।।

८. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे जाव राई भवइ ।।

---

१. उत्तरड्ढेवि (अ, ता, स) ।
२. पुरत्थिमेण (अ, ता) ।
३. दाहिणड्ढे वि (ता) ।
४. स० पा०—उत्तर जाव राई ।

९. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ; जया णं पच्चत्थिमे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तदा णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥

१०. एवं एएणं कमेणं ओसारेयव्वं—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई। सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई।
सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा चउद्दसमुहुत्ता राई।
पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई। पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा पण्णरसमुहुत्ता राई।
चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई।
तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई ॥

११. जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि, जया णं उत्तरड्ढे, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ ॥

१२. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे णं वि; जया णं पच्चत्थिमे[1], तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥

जंबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया-पदं

१३. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे[2] वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ?

---

१. पच्चत्थिमे णं वि (अ, क, ता, ब, म, स)। २. उत्तरड्ढे वि (स)।

हता गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तह चेव जाव पडिवज्जइ ॥

१४. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ; जया ण पच्चत्थिमे ण वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण[1] °जबुद्दीवे दीवे° मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतरपच्छाकडसमयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ने भवइ ?

हता गोयमा ! जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं एव चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवइ ॥

१५. एव जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाण तहा आवलियाएवि भाणियव्वो । आणापाणूणवि[2], थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणवि । एएसि सव्वेसि जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥

१६. जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमंताण पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाण अभिलावो तहेव हेमताण वि, गिम्हाण वि भाणियव्वो जाव[3] उऊए । एवं तिण्णि वि । एएसि तीसं आलावगा भाणियव्वा ॥

जंबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पदं

१७. जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएण अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव[4] अणंतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ॥

१८. जहा अयणेण अभिलावो तहा सवच्छरेण वि भाणियव्वो । जुएण वि, वाससएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियगेण वि, तुडिएण वि—एवं पुव्वगे, पुव्वे, तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अववगे, अववे[5], हूहूयगे, हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणगे, नलिणे, अत्थणिउरगे, अत्थणिउरे, अउयगे, अउए, णउयगे, णउए, पउयंगे पउए, चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे सीसपहेलिया—पलिओवमेण, सागरोवमेण वि भाणियव्वो ॥

---

१. स० पा०—तयाण जाव मदरस्स ।
२. °पाणूएण (व) ।
३. भ० ५।१३-१५ ।
४. भ० ५।१३, १४ ।
५. अपपे (व, म) ।

१६. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ?
हंता गोयमा ! त चेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो ।।

२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ।।

लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीण[1]-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जच्चेव जबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा[2], नवर—अभिलावो इमो जाणियव्वो ।।

२२. जया ण भंते ! लवणसमुद्दे[3] दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तं चेव जाव[4] तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवति ।।

२३. एएणं अभिलावेण नेयव्व जाव[5] जया ण भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया ण उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी[6], °नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थ काले पण्णत्ते° समणाउसो ?
हंता गोयमा ! जाव समणाउसो[7] ।।

२४. धायइसडे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव जबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसडस्स वि भाणियव्वा, नवरं—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणियव्वा[8] ।।

२५. जया णं भंते ! धायइसडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे, तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एव चेव जाव राई भवइ ।।

---

१. उदीचि (अ) ।
२. भ० ५।३ ।
३. लवणे समुद्दे (क, ब, स) ।
४. भ० ५।४ ।
५. भ० ५।५-१८ ।
६. स० पा०—ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।
७. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।
८. भ० ५।३ ।

२६. जया णं भते ! धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं धायइसडे दीवे मदराणं पव्वयाणं उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥

२७. एव एएणं अभिलावेण नेयव्व जाव[1] जया णं भते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी, तया णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे वि; तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नत्थि ओसप्पिणी जाव[2] समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो[3] ॥

२८ जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया[4] तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं—कालोदस्स नाम भाणियव्वं ॥

२६. अब्भितरपुक्खरद्धे ण भते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया[5] तहेव अब्भितरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवर—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया ण अब्भितरपुक्खरद्धे मदराण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ॥

३० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

वाउ-पदं

३१. रायगिहे नगरे जाव[7] एव वयासी—अत्थि ण भते ! ईसिं पुरेवाया[8] पत्था[9] वाया मदा वाया 'महावाया वायति ?'[10]
हता अत्थि ॥

---

१. भ० ५।५-१८ ।
२. भ० ५।१६ ।
३. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।
४ भ० ५।२१-२३ ।
५. भ० ५।२४-२७ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८ सत्रेहवाता. (वृ) ।
९ पच्छा (अ, क, ता, स) ।
१०. महावाता वाता वातति (क, ता) सर्वत्र ।

३२. अत्थि णं भंते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ?
हता अत्थि ।।

३३. एव पच्चत्थिमे णं, दाहिणे ण, उत्तरे ण, उत्तर-पुरत्थिमे ण, 'दाहिणपच्चत्थिमे णं, दाहिण-पुरत्थिमे ण'[1] 'उत्तर-पच्चत्थिमे णं ।।

३४. जया ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे णं ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ?
हता गोयमा ! जया णं पुरत्थिमे ण ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति; जया ण पच्चत्थिमे ण ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

३५. एव दिसासु, विदिसासु[2] ।।

३६. अत्थि णं भते ! दीविच्चया[3] ईसि पुरेवाया[4] ?
हता अत्थि ।।

३७. अत्थि ण भते ! सामुद्दया ईसि पुरेवाया[5] ?
हता अत्थि ।।

३८. जया णं भते ! दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[6], तया ण सामुद्दया वि ईसि पुरेवाया[7], जया णं सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[8], तया णं दीविच्चया वि ईसिं पुरेवाया[9] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जया णं दीविच्चया ईसि पुरेवाया[10], णो ण तया सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[11], जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया[11], णो ण तया दीवि-च्चया ईसिं पुरेवाया[12] ?
गोयमा ! तेसि ण वायाण अण्णमण्णविवच्चासेणं लवणसमुद्दे वेल नाइक्कमइ । से तेणट्ठेणं जाव णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

---

१. दाहिणपुरत्थिमे ण दाहिणपच्चत्थिमे ण (स)
२. एव विदिसासु (क, ता) ।
३. दीविच्चता (ब) ।
३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११,
१२. पू० भ० ५।३१ ।

४०. अत्थि णं भंते ! ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ?
हंता अत्थि ॥

४१. कया णं भंते ! ईसि पुरेवाया जाव[1] वायंति ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रियति[2], तया णं ईसि पुरेवाया जाव वायंति ॥

४२. अत्थि णं भंते ! ईसि पुरेवाया[3] ?
हंता अत्थि ॥

४३. कया णं भंते ! ईसि पुरेवाया[4] ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तया णं ईसि पुरेवाया जाव[5] वायंति ॥

४४. अत्थि णं भंते ! ईसि पुरेवाया[6] ?
हंता अत्थि ॥

४५. कया णं भंते ! ईसि पुरेवाया पत्था वाया[7] ?
गोयमा ! जया णं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा अप्पणो[8] परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरेंति तया णं ईसि पुरेवाया जाव[9] वायंति[10] ॥

४६. वाउयाए णं भंते ! वाउयायं चेव आणमति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति वा ? नीससति वा ?
[11]•हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससंति वा ॥

४७. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?
हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ॥

४८. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

---

१. भ० ५।४० ।
२. रियति (अ, क, स) ।
३,४. पू० भ० ५।४० ।
५. भ० ५।४० ।
६,७. पू० भ० ५।४० ।
८. अप्पणो वा (क, ता, ब) ।
९. भ० ५।४० ।
१०. इह चैकसूत्रेणैव वायुवानकारणत्रयस्य वक्तु शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरण तद्विचित्रत्वात्सूत्रगतेरिति मन्तव्य, वाचनान्तरे त्वाद्य कारण महावातवर्जिताना, द्वितीय तु मन्दवातवर्जिताना, तृतीय तु चतुर्णामप्युक्तमिति [वृ] ।
११. सं० पा०—जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ ।

४६. से भंते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

५०. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स ण चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ° ॥

ओदणादीणं किंसरीरत्त-पदं

५१. अह णं भते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए ण किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे घणे दव्वे—एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणि-ज्झामिया, अगणिझूसिया[1], अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च आउजीव-सरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा[2] ति वत्तव्व सिया ॥

५२. अह णं भते ! अये, तबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए ण किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ? अये, तबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए ण पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[3] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

५३. अह ण भते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिंगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'[4]—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च तसपाणजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[5] 'अगणिजीवसरीरा ति'[6] वत्तव्व सिया ॥

---

१. °झूसिया अगणिसेविया (अ, स)। वृत्तौ अगणिझूसिया इति पदस्य अग्निना सेवितानि वा इति वैकल्पिकोर्थः आसीत् सएव केपुचित् उत्तरवर्त्यादर्शेषु मूलपाठरूपेण स्वीकृतोभूत्।
२. अगणिकायसरीरा (स)।
३ भ० ५।५१।
४. सिंग-खुर-नखज्झामे (अ, ता, स)।
५. भ० ५।५१।
६. अगणि त्ति (अ, स)।

५४. अह णं भंते ! इंगाले, छारिए, भुसे[1], गोमए—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिंदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामिया वि जाव[2] पंचिंदियजीवसरीरप्पयोग-परिणामिया[3] वि । तओ पच्छा सत्थातीया जाव[4] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ।।

लवणसमुद्द-पदं

५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ?
एवं नेयव्वं जाव[5] लोगट्ठिई, लोगाणुभावे ।।

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ।।

तइओ उद्देसो

आउ-पकरण-पडिसंवेदण-पदं

५७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवेंति परूवेंति[7]—से जहा-नामए जालगंठिया सिया—आणुपुव्विगढिया[8] अणंतरगढिया परंपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-सभारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठइ, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाति-सहस्सेसु[9] बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति ।
एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ[10], तं जहा—इह-भवियाउयं च, परभवियाउयं च ।
जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ[11] ।
•जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।

---

१. तुसे (क) ।
२. भ० २।१३६ ।
३. °परिणता (म) ।
४. भ० ५।५१ ।
५. जी० ३ मदरोद्देशक ।
६. भ० १।५१ ।
७. एवं परूवेंति (क, व, स)।
८. आणुपुव्वि° (व, स) ।
९. आयति° (क); आयाति° (व) ।
१०. पडिसंवेदयंति (अ, क, व, म) ।
११. सं० पा०—पडिसंवेदेइ जाव से ।

इहभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए परभवियाउयं पडिसंवेदेइ,
परभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए इहभवियाउयं पडिसवेदेइ।
एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइं पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च° ॥

५८. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण त अण्णउत्थिया त चेव जाव परभवियाउय च। जे ते एवमाहसु तं मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—से जहानामए जालगंठिया सिया[1]—•आणुपुव्विगढिया अणतरगढिया परपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-संभारियत्ताए° अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स वहूहि आजातिसहस्सेहि बहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति।
एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एगं आउय पडिसवेदेइ, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउय वा।
ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समयं परभवियाउय पडिसवेदेइ।
ज समय परभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समयं इहभवियाउय पडिसवेदेइ।
इहभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो परभवियाउय पडिसवेदेइ।
परभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो इहभवियाउय पडिसवेदेइ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

साउयसंकमण-पदं

५९. जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कि साउए सकमइ ? निराउए सकमइ ?
गोयमा ! साउए सकमइ, नो निराउए संकमइ ॥

६०. से ण भते ! आउए[2] कहि कडे ? कहि समाइण्णे ?
गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ॥

६१. एव जाव[3] वेमाणियाणं दडओ ॥

६२. से नूण भते ! जे 'ज भविए जोणि'[4] उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, त

---

१. स० पा०—सिया जाव अण्णमण्णघडत्ताए।
२. आउगे (ता)।
३. पू० प० २।
४. विभक्तिपरिणामाद् यो यस्या योनावुत्पत्तु योग्य इत्यर्थ. (व)।

जहा—नेरइयाउयं वा[1] ? •तिरिक्खजोणियाउयं वा ? मणुस्साउयं वा ?° देवाउयं वा ?

हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा, तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा देवाउयं वा ।

नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा[2], •सक्करप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, वालुयप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, पंकप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, धूमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, तमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा°, अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा ।

तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा[3], •बेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, तेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, चउरिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा° ।

मणुस्साउयं दुविहं[4] •पकरेइ, तं जहा—सम्मुच्छिममणुस्साउयं वा, गब्भवक्कंतियमणुस्साउयं वा° ।

देवाउयं चउव्विहं[5] •पकरेइ, तं जहा—भवणवासिदेवाउयं वा, वाणमंतरदेवाउयं वा, जोइसियदेवाउयं वा, वेमाणियदेवाउयं वा° ॥

६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

चउत्थो उद्देसो

छउमत्थ-केवलीणं सद्दसवण-पदं

६४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहीसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, पिरिपिरियासद्दाणि[7] वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भंभासद्दाणि वा, होरंभसद्दाणि वा, भेरिसद्दाणि वा, झल्लरीसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, विततानि वा, घणाणि वा, झुसिराणि[8] वा ?

---

१. स० पा०—नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं ।

२. स० पा०—रयणप्पभापुढविणेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा° ।

३. स० पा०—भेदो सव्वो भाणियव्वो ।

४. स० पा०—मणुस्साउयं दुविहं ।

५. स० पा०—देवाउयं चउव्विहं ।

६. भ० १।५१ ।

७. परि° (अ, स) ।

८. सुसिराणि (क) ।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा जाव भुसिराणि वा।
ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?
गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सुणेइ[1]।
•जाइं भंते ! पुट्ठाइं सुणेइ ताइं किं ओगाढाइं सुणेइ ? अणोगाढाइं सुणेइ ?
गोयमा ! ओगाढाइं सुणेइ, नो अणोगाढाइं सुणेइ।
जाइं भंते ! ओगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं सुणेइ ? परंपरोगाढाइं सुणेइ ?
गोयमा ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ, नो परंपरोगाढाइं सुणेइ।
जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणूइं सुणेइ ? बादराइं सुणेइ ?
गोयमा ! अणूइं पि सुणेइ, बादराइं पि सुणेइ।
जाइं भंते ! अणूइं पि सुणेइ बादराइं पि सुणेइ ताइं किं उड्ढं सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरियं सुणेइ ?
गोयमा ! उड्ढं पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरियं पि सुणेइ।
जाइं भंते ! उड्ढं पि सुणेइ अहे वि सुणेइ तिरियं पि सुणेइ ताइं किं आइं सुणेइ ? मज्झे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?
गोयमा ! आइं पि सुणेइ, मज्झे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ।
जाइं भंते ! आइं पि सुणेइ मज्झे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइं किं सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?
गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ।
जाइं भंते ! सविसए सुणेइ ताइं किं आणुपुव्विं सुणेइ ? अणाणुपुव्विं सुणेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्विं सुणेइ, नो अणाणुपुव्विं सुणेइ।
जाइं भंते ! आणुपुव्विं सुणेइ ताइं किं तिदिसिं सुणेइ जाव छद्दिसिं सुणेइ ?
गोयमा ! ° नियमा छद्दिसिं सुणेइ॥

६५. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?
गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ॥

६६. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं[2] केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?
गोयमा ! केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ-पासइ॥

---

१. स० पा०—सुणेइ जाव नियमा। २. णं भंते ! (स)।

६७ से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणतिय सद्द जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! केवलीण पुरत्थिमे ण मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । एवं दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढं, अहे मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ ।
सव्व जाणइ केवली, सव्व पासइ केवली ।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली ।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली ।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली ।
अणते नाणे केवलिस्स, अणते दसणे केवलिस्स ।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दसणे केवलिस्स[2] । से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण आरगय वा, पारगय वा सव्वदूर-मूलमणतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ॥

छउमत्थ-केवलीणं हास-पदं

६८ छउमत्थे ण भते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
हता हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ॥

६९. जहा ण भते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा, तहा ण केवली वि हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७० से केणट्ठेण[4] •भंते ! एव वुच्चइ—जहा ण छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो ण तहा केवली हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! ज ण जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसति वा, उस्सुयायति वा । से ण केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ॥

७१. जीवे ण भते ! हसमाणे वा, उस्सुयमाणे वा कइ[6] कम्मपगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा । एव जाव[7] वेमाणिए[8] । पोहत्तएहि जीवेगिदियवज्जो तियभगो ॥

---

१. स० पा०—त चेव केवलीण आरगय वा पारागय वा जाव पासइ ।
२. वाचनान्तरे तु 'निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धे' त्ति विशेषणत्रय ज्ञानदर्शनयोरधीयते (वृ) ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।
४. स० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।
५. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।
६. कति (क, ब, म) ।
७. पू० प० २ ।
८. वेमाणिए नेरइया ण भते ! हसमाणा कइ°

छउमत्थ-केवलीणं निद्दा-पदं

७२. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हंता निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ॥

७३. [1]•जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा णं केवली वि निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा, पयलायंति[2] वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ॥

७५. जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा, पयलायमाणे वा कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[3] वेमाणिए । पोहत्ति-एसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥

गब्भसाहरण-पदं

७६. [4]से नूणं भंते ! हरि-नेगमेसी[5] सक्कदूए इत्थीगब्भं संहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ ? गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरइ ? जोणीओ जोणिं साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥

७७. पभू णं भंते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए[5] इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा, रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

. गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविहबंधगा । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य (क, व, म, स) ।

१. सं० पा०—जहा हसेज्ज वा तहा नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा पयलायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि अण्णं तं चेव ।

२. पयलाइंति (स) ।

३. पू० प० २ ।

४. हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (अ, क, ता), हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (स), 'हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी' इति द्वयर्थक पद द्वयो र्वाचनायो समिश्रणेन जातम् ।

५. सक्कस्स णं दूते (व, स), सक्कस्स दूए (म) ।

हंता पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचि[1] आवाहं वा विवाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा। एसुहुमं[2] च णं साहरेज्ज वा, नीहरेज्ज वा।

अइमुत्तग-पदं

७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते[3] नामं कुमार-समणे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए॥

७९ तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए[5] बहिया संपट्ठिए विहाराए॥

८०. तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहयं वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता 'णाविया मे, णाविया मे' नाविओ विव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि[6] पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ। तं च थेरा अद्दक्खु[7]। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे, से णं भंते! अइ-मुत्ते कुमार-समणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति[8] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति?

८१ अज्जोति! समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए जाव[9] विणीए, से णं अइमुत्ते कुमार-समणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव[10] अंतं करेहिति। तं मा णं अज्जो! तुब्भे अइमुत्तं कुमार-समणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह[11]। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह। अइमुत्ते णं कुमार-समणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव॥

८२ तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हंति[12], •अगिलाए उवगिण्हंति, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं° वेयावडियं[13] करेंति॥

---

१. किंचि वि (स)।
२ तेसुहुमं (ता)।
३ अतिमुत्ते (क, ब, म)।
४. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
५ रतहरणमाताए (ता)।
६ उदगंसि कट्टु (क, ता, ब, म, स)।
७ अदक्खु (ता, म)।
८ सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
९. भ० ५।७८।
१०. भ० २।७३।
११. अवमण्णह परिभवह (वृपा)।
१२. सं० पा०—संगिण्हंति जाव वेयावडियं।
१३. वेदावडियं (ब, म)।

महासुक्कागयदेव-पण्ह-पदं

८३. तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काओ कप्पाओ, महासामाणाओ[1] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[2] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया। तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं[3] वंदंति नमंसंति, मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति—

८४. कति णं भंते[4]! देवाणुप्पियाणं अंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[5] अंतं करेहिंति? तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अंतेवासी-सयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतं करेहिंति।

तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ[6] •चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा नमंसमाणा अभिमुहा[7] •विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासंति॥

८५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[8] अदूरसामंते उड्ढंजाणू[9] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तए णं तस्स भगवओ गोयमस्स झाणंत-रियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[10] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु दो देवा महिड्ढिया जाव[11] महाणुभागा समणस्स भग-वओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया[12], तं नो खलु अहं ते देवे[13] जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इहं हव्वमा-गया? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव[14] पज्जु-वासामि, इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेइ,

---

१. महासमाणाओ (अ, ब, म), महासग्गाओ (स)। एकस्मिन्नादर्शे 'महासग्गाओ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु समवायांगसूत्रस्य सप्त-दशसमवायस्य (१८) संदर्भे 'महासामाणाओ' इत्येव पाठ: समीचीनोस्ति।
२. भ० ३।४।
३. महावीरं मणसा चेव (अ, स); महावीरं मणसा (ब, म)।
४. × (क, ता, ब, म)।
५. भ० २।७३।
६. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
७. सं० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासंति।
८. भ० १।६।
९. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ।
१०. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
११. भ० ३।४।
१२. पादुब्भूता (क, ब, म)।
१३. देवा (ता, ब)।
१४. भ० २।३०।

संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासइ ॥

८६. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—से नूणं तव गोयमा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[2] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए, से नूणं गोयमा ! अट्ठे[3] समट्ठे[4] ?
हंता अत्थि । तं गच्छाहि णं गोयमा ! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति ॥

८७. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

८८. तए णं ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं[5] पासंति, पासित्ता हट्ठ[6]•तुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव अब्भुवगच्छंति[7] जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति जाव[8] नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ[9] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[10] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया । तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो—कइ णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[11] अंतं करेहिंति ? तए णं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं[12] मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासीसयाइं जाव अंतं करेहिंति । तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा चेव पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[13] पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगवं गोयमं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

देवाणं नोसंजयवत्तव्वया-पदं

८९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति जाव[14] एवं वयासी —देवा णं भंते ! संजया ति वत्तव्वं सिया ?

---

१. भ० १।१० ।
२. भ० ५।८५ ।
३. अत्थे (अ, क, ता, स) ।
४. समत्थे (अ) ।
५. इज्जमाणं (ब) ।
६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
७. पच्चुवगच्छति २ (अ, क, ता, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. महासग्गाओ (स) ।
१०. भ० ३।४ ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अम्हे (क, म) ।
१३. भ० २।३० ।
१४. भ० १।१० ।

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अब्भक्खाणमेय देवाणं[1] ॥

९०. देवा ण भते ! असजता[2] ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । निट्ठुरवयणमेय देवाण[3] ॥

९१ देवा ण भते ! णो सजयासजया ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । असब्भूयमेय देवाणं ॥

९२ से किं खाइ ण भते ! देवा ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! देवा ण नोसजया ति वत्तव्व सिया ॥

देवभाषा-पदं

९३ देवा ण भते ! कयराए भासाए भासति ? कयरा व भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा ण अद्धमागहाए भासाए भासति । सा वि य ण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ॥

छउमत्थ-केवलीणं नाणभेद-पदं

९४ केवली ण भते ! अतकर वा, अतिमसरीरिय[4] वा जाणइ-पासइ ?
हता[5] जाणइ-पासइ ॥

९५. जहा ण भते ! केवली अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ, तहा[6] ण छउमत्थे[7] वि अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा ॥

९६ से कि त सोच्चा ?
सोच्चा ण केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स[8] वा, केवलिसावियाए वा, केवलि-उवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा । से त सोच्चा ॥

९७ से कि त पमाणे ?
पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओगदारे तहा नेयव्व पमाण जाव[9] तेण पर सुत्तस्स वि अत्थस्स वि नो अत्तागमे, नो अणतरागमे, परपरागमे ॥

---

१. × (स) ।
२. अस्सजता (अ, क, ता, ब, म) ।
३. × (स) ।
४. °सारीरिय (अ, क, ब, स) ।
५. गोयमा (क, म); हता गोयमा (स) ।
६ तधा (अ, स) ।
७ छद्मत्थे (ता) ।
८. °सावयस्स (क, ब, म, स) ।
९ अ० सू० ५१६-५५१ ।

९८ केवली ण भंते ! चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ?
हंता[1] जाणइ पासइ ॥

९९ जहा णं भंते ! केवली चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ, तहा णं छउमत्थे वि चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा । जहा णं अंतकरेणं[2] आलावगो[3] तहा चरिमकम्मेण वि अपरिसेसिओ नेयव्वो ॥

केवलीणं पणीय-मण-वइ-पदं

१००. केवली णं भंते ! पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा ?
हंता धारेज्जा ॥

१०१ जण्णं[4] भंते ! केवली पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा, तण्णं[5] वेमाणिया देवा जाणंति-पासंति ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति ॥

१०२. से केणट्ठेणं[6] °भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति°, ण पासंति ?
गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा य, अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ णं जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणंति ण पासंति । [7]तत्थ णं जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अमाइसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा य, परंपरोववण्णगा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववण्णगा ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते परंपरोववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! परंपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अपज्जत्तगा य, पज्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पज्जत्तगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवउत्ता य उवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति[7] ॥

---

१ गोयमा (अ, म), हंता गोयमा (स) ।
२ अंतकरेण वा (म, स) ।
३. भ० ५।९६, ९७ ।
४ जं णं (ता), जहा णं (म, स) ।
५. तं णं (क, ता, व, म) ।
६. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव ण ।
७ एवं अणंतर परंपर पज्जत्त अपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता । तत्थ णं जे ते उवउत्ता

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिणा आलाव-पदं

१०३. पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलाव वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

१०४. से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा° करेत्तए ?
गोयमा ! जण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिण वा कारण वा वागरण वा पुच्छंति, तण्ण इहगए केवली अट्ठं वा[2] •हेउ वा पसिण वा कारणं वा° वागरण वा वागरेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलाव वा, सलाव वा करेत्तए ॥

१०५. जण्ण भते ! इहगए केवली अट्ठं वा[3] •हेउ वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा° वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासंति ?
हता जाणति-पासति ॥

१०६. से केणट्ठेण[4] •भते ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवति । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउ वा पसिण वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणति°-पासति ॥

१०७. अणुत्तरोववाइया ण भते ! देवा किं उदिण्णमोहा ? उवसतमोहा ? खीण मोहा? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसतमोहा, नो खीणमोहा ॥

केवलीणं इंदियनाण-निसेध-पदं

१०८. केवली णं भते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

ते जाणति पासति से तेणट्ठेण त चेव (अ, क, ता, ब, म, वृ); वाचानान्तरेत्विद सूत्र साक्षादेवउपलभ्यते (वृ) ।

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।

२. सं० पा०—अट्ठ वा जाव वागरणं ।

३. स० पा०—अट्ठ वा जाव वागरेइ ।

४. स० पा०—केणट्ठेण जाव पासति ।

५. स० पा०—तेणट्ठेण जण्ण इहगए केवली जाव पासति ।

१०९. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ°—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ[2]। •एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ° ॥

केवलीणं जोगचंचलया-पदं

११०. केवली णं भंते ! अस्सि समयंसि[3] जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं चिट्ठति, पभू णं केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा[4] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा° ओगाहित्ताणं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१११. से केणट्ठेणं भंते[5] ! •एवं वुच्चइ°—केवली णं अस्सि समयंसि जेसु आगासपदेसेसु[6] •हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ताणं° चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा[7] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! केवलिस्स णं वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए चलाइं उवकरणाइं भवंति। चलोवकरणट्ठयाए य णं केवली अस्सिं[8] समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा[9] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं° चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव[10] •आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ताणं° चिट्ठित्तए। से तेणट्ठेणं[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं अस्सि समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगा-

---

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव केवली।
२. सं० पा०—जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं।
३. समतंसि (ता)।
४ सं० पा०—हत्थं वा जाव ओगाहित्ता।
५. सं० पा०—भंते जाव केवली।
६. सं० पा०—आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति।
७. सं० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए।
८. जंसि (अ)।
९ सं० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठति।
१०. सं० पा०—चेव जाव चिट्ठित्तए।
११. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ। केवली णं अस्सि समयंसि जाव चिट्ठित्तए।

हित्ता णं चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

चोद्दसपुव्वीणं सामत्थ-पदं

११२. पभू णं भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वट्टेत्ता उवदंसेत्तए ?
हंता पभू ॥

११३. से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव[1] उवदंसेत्तए ?
गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स णं अणंताइं दव्वाइं उक्कारियाभेएणं[2] भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमण्णागयाइं भवंति ।
से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वट्टेत्ता° उवदंसेत्तए ॥

११४ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

११५ छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं सिज्झिंसु ? बुज्झिंसु ? मुच्चिंसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव[5] अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ॥

एवंभूय-अणेवंभूय-वेदणा-पदं

११६ अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव[6] परूवेंति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति ॥

---

१. भ० ५।११२ ।
२. प्रज्ञापनासूत्रे भाषापदे 'उक्करियाभेए' इति पदं लभ्यते, तत्रापि केपुचिदादर्शेषु उक्कारियाभेए इत्यपि पाठो लभ्यते ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव उवदंसेत्तए ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।२०१-२०६ ।
६. भ० १।४२० ।

११७. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[1] सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदण वेदेति। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं[2] ते एवमाहसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदेण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूयं वेदणं वेदेति ॥

११८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया[4] •पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति° ?
गोयमा ! जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूय वेदेण वेदेंति।
जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदणं वेदेति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूयं वेदण वेदेति° ॥

११९. नेरइया ण भंते ! किं एवंभूय वेदणं वेदेति ? अणेवभूयं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया णं एवंभूय पि वेदण वेदेति, अणेवभूयं पि वेदणं वेदेति ॥

१२०. से केणट्ठेण[6] •भते ! एव वुच्चइ—नेरइया णं एवंभूयं पि वेदणं वेदेति, अणेवं-भूय पि वेदणं वेदेति° ?
गोयमा ? जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते णं नेरइया एवभूयं वेदणं वेदेति।
जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, तेणं नेरइया अणेवभयं वेदणं वेदेसि। से तेणट्ठेणं ॥

१२१. एव जाव[1] वेमाणिया ॥

कुलगरादि-पदं

१२२. संसारमडल नेयव्व[7] ॥

१२३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव[8] विहरइ ॥

---

१. भ० ५।११६।
२. मिच्छा (अ, क, ब, म, स)।
३. भ० १।४२१।
४. स० पा०—त चेव उच्चारेयव्वं।
५. स० पा०—तहेव।]
६. सं० पा०—तं चेव।
७. पू० प० २।
८. नेयव्व। जबूदीवे ण भते ! इह भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?
गोयमा ! सत्त। एवं तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टिमायरो, इत्थि-

छट्ठो उद्देसो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्णं[1] भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा[2] ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा अफासुएण अणेसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता[3]—एव खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

१२५. कहण्ण भते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता[4], नो मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहणं वा फासुएण[5] एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६. कहण्णं भते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा हीलित्ता[6] निदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमण्णित्ता 'अण्णयरेण अमणुण्णेण अपीतिकारएण'[7] असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ॥

१२७. कहण्ण भते ? जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणं वा माहण वा वदित्ता नमसित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेण मणुण्णेणं पीतिकारएण'[9] असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्म पकरेंति ॥

रयणं, वलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो; एएसि पडिसत्तू जहा समवाए नामपरिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, ब, स); एषु आदर्शेषु द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रण जातम्। वृत्तिकृता अस्य वाचनान्तरस्य उल्लेखोपि कृतोस्ति, यथा—अथ चेह स्थाने वाचनान्तरे कुलकर तीर्थकरादि वक्तव्यता दृश्यते, ततश्च 'ससारमडल' शब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह सूचितेति सभाव्यते (वृ)। पइण्णगसमवाय २१८-२४७।

१. भ० १।५१।

२ कह ण (अ, ता, म), कहि ण (क), । कह ण (व)।

३. गोयमा तिहिं ठाणेहिं त (ब, स) सर्वत्र; द्रष्टव्य—ठा० ३।१७-२०।

४. ०हेत्ता (म)।

५ अतिवतित्ता (अ, म)।

६. फासु (अ, क, ता, म, स)।

७ हीलेत्ता (क, ता, व, म)।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएण अणेसणिज्जेण ति दृश्यते (वृ)।

९. भ० २।३०।

१०. वाचनान्रे तु फासुएण इत्यादि दृश्यते (वृ)।

कयविक्कए किरिया-पदं

१२८. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! 'भंडं अणुगवेसमाणस्स'[1] किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया[2] किरिया कज्जइ ? मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारिग्गहिया किरिया कज्जइ, मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।

अह से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुई-भवंति ॥

१२९. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए[3] भंडं साइज्जेज्जा, भंडे य से अणुवणीए सिया ।

गाहावइस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[4] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ 'जाव'[5] अपच्च-क्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया[6] सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ । कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥

१३०. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स[7] °कइए भंडं साइज्जेज्जा°, भंडे से उवणीए सिया ।

कइयस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[8] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

गाहावइस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंसण किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।

गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ।

---

१. त भंडय गवेस° (व, म) ।
२. परि° (अ, स) ।
३. कतिए (क, ता, ब, म, स) ।
४. भ० ५।१२८ ।
५. भ० ५।१२८ ।
६. जाव अपच्चक्खाण मिच्छादसणवत्तिया° (अ, स), जाव मिच्छादसणवत्तिया° (क, ता, म); जाव मिच्छादसण° (ब) ।
७. सं० पा०—विक्किणमाणस्स जाव भंडे ।
८. भ० ५।१२८ ।

१३१. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं[1] •विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?
कइयस्स णं भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[2] मिच्छा-दंसणकिरिया कज्जइ ?
गाहावइस्स वा ताओ धणाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छा-दंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! कइयस्स ताओ धणाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति। मिच्छादंसणकिरिया भयणाए।
गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥

१३२. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेजा, धणे से उवणीए सिया।
गाहावइस्स ण भंते ! ताओ धणाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[3] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
कइयस्स वा ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! गाहावइस्स ताओ धणाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्च-क्खाणकिरिया कज्जइ। मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ। कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति° ॥

अगणिकाए महाकम्मादि पदं

१३३. अगणिकाए णं भंते ! अहुणोज्जलिए[4] समाणे महाकम्मतराए चेव[5], महाकिरिया-तराए चेव, महासवतराए[6] चेव, महावेदणतराए चेव भवइ। अहे ण समए-समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'[7] चरिमकालसमयसि इंगालब्भूए मुम्मुरब्भूए छारियब्भूए[8], तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

---

१. स० पा०—भड जाव धणे य से अणुवणीए सिया ? एय पि जहा भडे उवणीए तहा नेयव्व।
चउत्थो आलावगो—'धणे य से उवणीए सिया' जहा पढमो आलावगो—'भडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो।
पढम-चउत्थाण एक्को गमो, बितिय-तइयाण एक्को गमो।

२. भ० ५।१२८।

३. भ० ५।१२८।

४. अहुणुज्जलिए (ता), अहुणुज्जलिए (व)।

५. च्चेव (ता)।

६. महस्सव० (अ, ता, व)।

७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (अ,स),वोकसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (ता), वोयसिज्जमाणे २ (म)।

८. छारब्भूए (अ)।

चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेयणतराए चेव भवइ ?

हंता गोयमा ! अगणिकाए ण अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥

धणुपक्खेवे किरिया-पदं

१३४ पुरिसे ण भते ! धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ,[1] परामुसित्ता ठाणं[2] ठाइ, ठिच्चा आयतकण्णातयं[3] उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु उव्विहइ।

तए[4] ण से उसू[5] उड्ढ वेहास[6] उव्विहिए समाणे जाइ तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ अभिहणइ वत्तेति लेसेति[7] संघाएइ सघट्टेति परितावेइ किलामेइ[8], ठाणाओ ठाण संकामेइ, जीवियाओ ववरोवेइ। तए ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ[9], •उसु परामुसइ, ठाण ठाइ, आयतकण्णातय उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु° उव्विहइ, ताव च णं से पुरिसे काइयाए[10] •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारियावणियाए°, पाणाइवायकिरियाए—पंचहि किरियाहि पुट्ठे। जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा[11]। एव धणुपट्ठे[12] पचहि किरियाहि, जीवा पंचहि, ण्हारू पचहि, उसू पचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पचहि ॥

१३५ अहे[13] ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जाव[14] जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव[15] चउहि किरियाहि पुट्ठे। जेसि पि य णं जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहि किरियाहि, धणुपट्ठे[16] चउहि,

---

१. परामसइ (व, म)।
२ वेसाह ठाण (उ० १।२२)।
३. °कण्णाइय (अ, स); कण्णायय (म, उ० १।२२)।
४ ततो (क, ता, ब, स)।
५. उसु (स)।
६ वेहासे (ता)।
७. लेस्सेति (अ, व, स)।
८. किलोमेह उद्दवेह (भ० ८।२८७)।
९. स० पा०—परामुसइ जाव उव्विहइ।
१०. स० पा०—काइयाए जाव पाणाइवाय°।
११. पुट्ठे (अ, ता, ब, म, स), पट्ठो (क)। अत्र जीवा इति कर्तृपद बहुवचनान्तमस्ति तेन 'पुट्ठा' इति पद स्वीकृतम्।
१२. धणू° (अ, ता, स), धणूपिट्ठे (व)।
१३. अघे (ता)।
१४. भ० ५।१३४।
१५. भ० ५।१३४।
१६. °पुट्ठे (अ, म, स)।

जीवा चउहि, ण्हारू चउहि, उसू पंचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहि। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे[1] वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा॥

अण्णउत्थिय-पदं

१३६. अण्णउत्थिया ण भंते! एवमातिक्खंति जाव[2] परूवेंति—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए[3] मणुस्सेहिं॥

१३७. से कहमेयं भंते! एवं?
गोयमा! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमातिक्खंति जाव[4] बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। जे ते एवमाहंसु, 'मिच्छं ते एवमाहंसु'[5]। अहं पुण गोयमा! एव-माइक्खामि[6] •जाव[7] परूवेमि—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया°, एमामेव जाव चत्तारि पंच जोयणस-याइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहिं॥

नेरइयविउव्वणा-पदं

१३८. नेरइया ण भंते! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए? पुहत्तं[8] पभू विउव्वित्तए?
गोयमा! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तंपि पहू विउव्वित्तए। जहा जीवा-भिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव[9] विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं अभिहण-माणा-अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति—उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरुसं निट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं॥

आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते[10] कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४०. एएणं गमेणं नेयव्वं—कीयगडं[11], ठवियं[12], रइयं[13], कंतारभत्तं 'दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं'[14], गिलाणभत्तं, सेज्जायरपिंडं, रायपिंडं[15]॥

---

१. ओवग्गहे (अ)।
२. भ० १।४२०।
३. मणुस्स° (ता)।
४. भ० ५।१३६।
५. मिच्छा (अ, क, व, म, स)।
६. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव।
७. भ० १।४२१।
८. पहुत्तं (ता)।
९. जी० ३, नेरइय-उद्देसो २।
१०. °लोतिय° (अ, स)।
११. कीयकडं (क, व), उद्देसियं कीयकडं (ता)
१२. ठवियकं (क, ता); ठवितकडं (व)।
१३. रतियकं (क, व); रइयकं (ता)।
१४. °वत्तं वद्दलियावत्तं (व)।
१५. × (क)।

१४१. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति[1] सयमेव परिभुंजित्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स[2] •अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४२ एय पि तेह चेव जाव[3] रायपिड॥

१४३. आहाकम्म[4] 'अणवज्जे' त्ति अण्णमण्णस्स अणुप्पदावइत्ता भवइ, से णं तस्स[5] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते काल करेइ—अत्थि तस्स आराहणा° ॥

१४४. एय पि तह चेव जाव[6] रायपिड॥

१४५. आहाकम्मं ण 'अणवज्जे' त्ति वहुजणमज्भे पण्णवइत्ता भवति, से ण तस्स[7] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४६. एय पि तह चेव जाव[8] रायपिड॥

आयरिय-उवज्भायस्स सिद्धि-पदं

१४७. आयरिय- उवज्भाए ण भंते! सविसयसि गणं अगिलाए सगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहि भवग्गहणेहि सिज्भति जाव[9] सव्वदुक्खाण अतं करेति ?

गोयमा! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्भति, अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेणं सिज्भति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमति॥

अब्भक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं

१४८. जे ण भते! पर अलिएण असब्भूएण अब्भक्खाणेण[10] अब्भक्खाति[11], तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जति ?

गोयमा! जे ण पर अलिएण, असतएण[12] अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति, तस्स ण तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जति। जत्थेव ण अभिसमागच्छति तत्थेव णं पडिसंवेदेति, तओ से पच्छा वेदेति॥

१४९. सेवं भते! सेवं भते! त्ति[13]॥

---

१. त्ति वहुजणस्स मज्भे भासित्ता (अ, स)।
२. स० पा०—ठाणस्स जाव अत्थि।
३ भ० ५।१४०।
४. अहाकम्मं (अ)।
५ स० पा०—तस्स°।
६ भ० ५।१४०।
७. स० पा०—तस्स जाव अत्थि।
८. भ० ५।१४०।
९. भ० १।४४।
१०. × (अ)।
११ अब्भाइक्खइ (क, ता, व)।
१२. असतवयणेण (म, स)।
१३ भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयति वेयति[1] °चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ°, तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति; सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ॥

१५१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव[2] त तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति जाव तं तं भावं परिणमति । सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥

१५२. तिप्पएसिए ण भते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति ॥

१५३. चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति । सिय देसा एयंति, नो देसा एयंति ।
जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंधाण छदादि-पदं

१५४. परमाणुपोग्गले णं भते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा[3] ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१५५. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥

१५६. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

---

१. स० पा०—वेयति जाव तं ।
२. भ० ५।१५० ।
३. ओगाहिज्ज (क, व, म, स) ।

१५७. [1]परमाणुपोग्गले ण भंते ? अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से णं भते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से णं भते ! गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
हता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से ण भंते ! उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१५८. एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥

१५९. अणतपएसिए ण भंते ! खधे अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए झियाएज्जा, अत्थेगइए नो झियाएज्जा ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ।
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए उल्ले सिया, अत्थेगइए नो उल्ले सिया ।
से ण भते ! गंगाए महानईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से णं भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

---

१. स० पा०—एव अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण तहिं नवरं झियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण तहिं उल्ले सिया । एवं गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा तहिं विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा । से ण तत्थ परियावज्जेज्जा ।

गोयमा ! अत्थेगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो विणिहाय-मावज्जेज्जा।

से णं भंते ! उदगावत्त वा उदगबिंदु वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा।

से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए परियावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो परियावज्जेज्जा° ॥

परमाणु-खंधाणं सअड्ढसमज्झादि-पदं

१६०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सअड्ढे[1] समज्झे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ॥

१६१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे ? उदाहु[2] अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्झे नो अपएसे ॥

१६२ तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा।

गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे ॥

१६३ जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा ॥

१६४. संखेज्जपएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे ? पुच्छा।

गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपएसे।
जहा संखेज्जपएसिओ तहा असंखेज्जपएसिओ वि, अणंतपएसिओ वि ॥

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५. परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं—

१. देसेण देसं फुसइ २. देसेहिं देसे फुसइ ३. देसेणं सव्वं फुसइ ४. देसेहिं देसे फुसइ ५. देसेहिं देसे फुसइ ६. देसेहिं सव्वं फुसइ ७. सव्वेणं देसं फुसइ ८. सव्वेणं देसे फुसइ ९. सव्वेणं सव्वं फुसइ[3] ?

गोयमा ! १ नो देसेणं देसं फुसइ २. नो देसेणं देसे फुसइ ३. नो देसेणं सव्वं फुसइ ४. नो देसेहिं देसं फुसइ ५. नो देसेहिं देसे फुसइ ६ नो देसेहिं सव्वं

---

१. सअद्धे (ब)। (२) देशेन देशान् (५) देशैः देशान् (८) सर्वेण देशान्
२. उआहु (ब)। (३) देशेन सर्वम् (६) देशैः सर्वम् (९) सर्वेण सर्वम्।
३. (१) देशेन देशम् (४) देशैः देशम् (७) सर्वेण देशम्।

फुसइ ७ नो सव्वेण देसं फुसइ ८ नो सव्वेण देसे फुसइ ६ सव्वेण सव्वं फुसेइ ।।

१६६. परमाणुपोग्गले[1] दुप्पएसियं फुसमाणे सत्तम-णवमेहि फुसइ ।
परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसमाणे निपच्छिमएहि[2] तिहि फुसइ ।
जहा परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणत-पएसिओ ।।

१६७. दुप्पएसिए ण भते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे कि देसेण देस फुसइ ? पुच्छा ।
ततिय-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ दुप्पएसियं फुसमाणे पढम-ततिय-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ तिप्पएसिय फुसमाणे आदिल्लएहि य, पच्छिल्लएहि य तिहि[3] फुसइ, मज्झिमएहि तिहि विपडिसेहेयव्व ।
दुप्पएसिओ जहा तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपएसिय ।।

१६८. तिपएसिए ण भंते ! खधे परमाणुपोग्गल फुसमाणे पुच्छा ।
ततिय-छट्ठ-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ दुपएसियं फुसमाणे पढमएण, ततिएणं, चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ तिपएसिय फुसमाणे सव्वेसु वि ठाणेसु फुसइ ।
जहा तिपएसिओ तिपएसियं फुसाविओ एवं तिप्पएसिओ जाव अणतपएसिएण सजोएयव्वो ।
जहा तिपएसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो ।।

परमाणु-खंधाणं संठिइ-पदं

१६६ परमाणुपोग्गले ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं कालं । एव जाव अणतपएसिओ ।।

१७०. एगपएसोगाढे णं भते ! पोग्गले सेए[4] तम्मि वा ठाणे वा, अण्णम्मि वा ठाणे कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव जाव असखेज्जपएसोगाढे ।।

---

१. एवं पर° (क, ता) ।
२. अन्त्यैः ।
३. × (क, ता) ।
४. सेते (ता) ।

१७१. एगपएसोगाढे ण भते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेणं असंखेज्ज काल। एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७२. एगगुणकालए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल। एव जाव अणत-गुणकालए।
एव वण्ण-गध-रस-फास जाव[1] अणतगुणलुक्खे। एव सुहुमपरिणए पोग्गले, एव बादरपरिणए पोग्गले ॥

१७३ सद्दपरिणए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥

१७४. असद्दपरिणए[2] °ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेणं असखेज्ज कालं° ॥

परमाणु-खंधाणं अंतरकाल-पदं

१७५. परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१७६. दुप्पएसियस्स ण भते ! खधस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेणं अणत काल। एव जाव अणतपएसिओ ॥

१७७. एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असंखेज्जं काल। एवं जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ॥

१७८. एगपएसोगाढस्स ण भते। पोग्गलस्स निरेयस्स अतर कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग। एव जाव असखेज्जपएसोगाढे।
वण्ण-गध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाणं—एतेसि 'जं चेव'[3] सचिट्ठणा त चेव अतर पि भाणियव्व[4] ॥

१७९. सद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥

१८०. असद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

---

१. प० १।
२. स० पा०—असद्दपरिणए जहा एगगुण-कालए।
३. जच्चेव (अ, क, ता, ब, म)।
४. भ० ५।१७२।

परमाणु-खंधाणं परोप्परं अप्पाबहुयत्त-पदं

१८१. एयस्स ण भते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए, असंखेज्जगुणे, दव्व-ट्ठाणाउए असखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे।

संगहणी-गाहा

खेत्तोगाहणदव्वे, भावट्ठाणाउयं च अप्प-बहुं।
खेत्ते सव्वत्थोवे, सेसा ठाणा असखेज्जगुणा ॥१॥

जीवाणं सारंभ सपरिग्गह-पदं

१८२ नेरइया णं भते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा।

१८३. से केणट्ठेणं[2] •भते ! एव वुच्चइ—नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा° अपरिग्गहा[3] ?
गोयमा ! नेरइया ण पुढविकाय समारभति[4], •आउकायं समारंभति, तेउकायं समारभति, वाउकाय समारभति, वणस्सइकायं समारंभति° तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा°॥

१८४ असुरकुमारा ण भते ! कि सारभा ? पुच्छा।
गोयमा ! असुरकुमारा सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा॥

१८५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमारा ण पुढविकाय समारंभति जाव[6] तसकायं समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरि-क्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, सचित्ताचित्त-मीसयाइ[7] दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति। से तेणट्ठेण[8]

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. स० पा०—केणट्ठेण जाव अपरिग्गहा।
३. नो अपरि° (ता)।
४. स० पा०—समारभति जाव तसकाय।
५ स० पा०—त चेव।
६. भ० ५।१८३।
७. मिस्सियाइ (व); मीसजाइ (क)।
८. स० पा०—तहेव।

•गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा° ।।

१८६ एव जाव[1] थणियकुमारा । एगिदिया जहा[2] नेरइया ।।

१८७ बेइदिया ण भंते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?
त चेव[3] बेइदिया ण पुढविकाय समारभति जाव[4] तसकायं समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, बाहिरा[5] भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति'[6] ।।

१८८. एव जाव[7] चउरिदिया ।।

१८९. पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?
तं चेव जाव[8] कम्मा परिग्गहिया भवति, टका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवति, उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल[9]-वप्पिणा परिग्गहिया भवति, अगड-तडाग[10]-दह-नईओ वावी-पुक्खरिणीदीहिया गुंजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आरामुज्जाण[11]-काणणा वणा वणसडा वणराईओ[12] परिग्गहियाओ भवति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवति, पासाद-घर-सरण-लेण- आवणा परिग्गहिया भवति, सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्ख-जोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण ।।

१९० जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा[13] ।।

---

१. पू० प० २ ।
२ भ० ५।१८२, १८३ ।
३. ४. भ० ५।१८३ ।
५ बाहिरिया (अ, क, व, म, स) ।
६. × (अ) ।
७. भ० २।१३८ ।
८. भ० ५।१८३ ।
९. पिल्लव (ब) ।
१०. तलाग (क, ता, ब, म) ।
११. °मुज्जाणा (क, ब, स) ।
१२. वणरातीओ (अ, ता, स) ।
१३. भ० ५।१८४, १८५ ।

हेउ-पदं

१६१. पंच[1] हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं जाणइ, हेउं पासइ, हेउ बुज्झइ, हेउं अभिसमागच्छइ, हेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१६२. पंच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा जाणइ जाव[2] हेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥

१६३. पच हेऊ पण्हत्ता, त जहा—हेउ ण जाणइ जाव[3] हेउ अण्णाणमरण मरइ ॥

१६४ पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा ण जाणइ जाव[4] हेउणा अण्णाणमरण मरइ ॥

१६५. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउं जाणइ जाव[5] अहेउ केवलिमरण मरइ ॥

१६६. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा जाणइ जाव[6] अहेउणा केवलिमरण मरइ ॥

१६७. पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ न जाणइ जाव[7] अहेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१६८. पंच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा न जाणइ जाव[8] अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ ॥

१६६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[9] ॥

अट्ठमो उद्देसो

नियठिपुत्त-नारयपुत्त-पद

२००. तेण कालेणं तेण समएणं जाव[10] परिसा पडिगया ॥

२०१. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नारयपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[11] विहरति ।
तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नियंठिपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विहरति ।

---

१ स्थानाङ्गस्य पचमस्थाने (७५-८२) एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।
२. भ० ५।१६१ ।
३. भ० ५।१६१ ।
४. भ० ५।१६१ ।
५. भ० ५।१६१ ।
६ भ० ५।१६१ ।
७. भ० ५।१६१ ।
८ भ० ५।१६१ ।
९. भ० १।५१ ।
१०. भ० १।४-८ ।
११. भ० १।२८८ ।

तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नारयपुत्तं अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा।

२०२. तए णं से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइ णं ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, किं—

दव्वादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

खेत्तादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा [1]•समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?°

कालादेसेणं [2]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?°

भावादेसेण [3]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?°

तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा,

'खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि'[4]॥

२०३. तए ण से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइण अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव ते परमाणुपोग्गल्ले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, नो अणड्ढे अमज्झे अपएसे।

जइ ण अज्जो खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे।

जइ णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगसमयट्ठितीए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[5]।

---

१. स० पा०—तह चेव।

२. स० पा०—तं चेव।

३. स० पा०—तहेव।

४. एव खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्वं (ता)।

५. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स)।

जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[1]।
अह ते एव न भवति तो जं वयसि 'दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि' त णं मिच्छा ।।

२०४. तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—नो खलु एवं[2] देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो-पासामो । जइ णं देवाणुप्पिया नो गिलायति परिकहित्तए, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्तए ।।

२०५. तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
खेत्तादेसेण वि[3] •मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
कालादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।
भावादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता ।०
जे दव्वओ अपएसे से खेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे सिय-अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ।
जे खेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।
जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ ।
जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे । एव कालओ, भावओ वि ।
जे खेत्तओ सपएसे से दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।
जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओ वि ।।

२०६. एएसि ण भते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेण, खेत्तादेसेणं, कालादेसेणं, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाण य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?
नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असंखे-

---

१. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।
२. एय (अ, क, ता, व); × (स) ।
३ सं० पा० खेत्तादेसेण वि एव चेव कालदेसेण वि भावादेसेण वि एव चेव ।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

ज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसा-हिया, कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेण सपएसा विसेसाहिया ॥

२०७. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार वदइ नमसइ, वंदित्ता नम-सित्ता एयमट्ठ सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

जीवाणं-वड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पदं

२०८. भतेत्ति ! भगवं गोयमे समण[1] •भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नम-सित्ता° एव वयासी—जीवा णं भते ! कि वड्ढंति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढंति, नो हायति, अवट्ठिया ॥

२०९. नेरइया ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि ॥

२१०. जहा नेरइया एव जाव[2] वेमाणिया ॥

२११. सिद्धा ण भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायंति, अवट्ठिया वि ॥

२१२. जीवा णं भते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२१३. नेरइया ण भते ! केवतियं कालं वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

२१४. एव हायति वि[3] ॥

२१५ नेरइया ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेणं चउवीस मुहुत्ता ॥

२१६. एवं 'सत्तसु वि'[4] पुढवीसु 'वड्ढति, हायति' भाणियव्व, नवरं—अवट्ठिएसु इम नाणत्त, त जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइदिया[5], वालुयप्पभाए मासं, पकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ॥

२१७. असुरकुमारा वि वड्ढति, हायति जहा नेरइया । अवट्ठिया जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं अट्ठचत्तालीस[6] मुहुत्ता ॥

२१८. एव दसविहा वि ॥

---

१. स० पा०—समण जाव एव ।
२. पू० प० २ ।
३. वा (अ, क, ता, स) ।
४. सत्त (ता) ।
५. राइदियाइ (अ, क, व, म); राइदिया ए (स) ।
६. अडतालीस (ता) ।

२१९ एगिदिया वड्ढति वि, हायति वि अवट्ठिया वि। एएहि तिहि वि जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं[1] ॥

२२०. बेइंदिया[2] 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठिया जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं दो अतोमुहुत्ता ॥

२२१. एव जाव[3] चउरिंदिया ॥

२२२. अवसेसा सव्वे 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठियाण नाणत्त इम, त जहा—समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गब्भवक्कतियाणं चउव्वीस मुहुत्ता, समुच्छिममणुस्साण अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कतियमणुस्साण चउवोस मुहुत्ता, वाणमतर-जोतिसिय[4]-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, सणकुमारे अट्ठारस राइदियाइ चत्तालीस य मुहुत्ता, माहिंदे चउवीसं रइदियाइ वीस य मुहुत्ता, बभलोए पचचत्तालीसं राइदियाइ, लतए नउइ[5] राइदियाइ, महासुक्के सट्ठि[6] राइदियसय, सहस्सारे दो राइदियसयाइं, आणय-पाणयाण सखेज्जा मासा, आरणच्चुयाणं सखेज्जाइं वासाइं, एव गेवेज्जदेवाण[7], विजय-वेजयत-जयत-अपराजियाण असखेज्जाइ वाससहस्साइ, सव्वट्ठसिद्धे पलिओवमस्स सखेज्जइभागो।

एव भाणियव्व —'वड्ढति, हायति जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभाग, अवट्ठियाण ज भणिय'[8] ॥

२२३. सिद्धा ण भते! केवइय काल वड्ढति ?
गोयमा! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२२४ केवइय काल अवट्ठिया ?
गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

जीवाणं सोवचय-सावचयादि-पदं

२२५. जीवा णं भते! कि सोवचया ? सावचया ? सोवचय-सावचया ? निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया।
एगिदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि[9] पदेहि भाणियव्वा ॥

---

१ असखेज्जभाग (क, ब, म)।
२ वेतिंदिया (अ, स)।
३. भ० २।१३८।
४. जोतिस (अ, क, स)।
५. नउयं (अ, स)।
६ सट्ठ (ता, व)।
७ गेवेज्जग° (ता)।
८ एतद् निगमनवाक्य तेन पूर्वोक्तस्य पुनरुक्तमस्ति।
९. × (अ, क, स):

२२६. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ॥

२२७. जीवा ण भंते ! केवतियं काल निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२२८. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

२२९. केवतियं कालं सावचया ?
एवं चेव ॥

२३०. केवतियं कालं सोवचय-सावचया ?
एव चेव ॥

२३१. केवतियं कालं निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।
एगिंदिया सव्वे सोवचय-सावचया सव्वद्धं । सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचय-सावचया वि[1], जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं । अवट्ठिएहि वक्कंतिकालो भाणियव्वो ॥

२३२. सिद्धा ण भते ! केवतियं काल सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२३३. केवतिय काल निरुवचय-निरवचया ?
जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं छ मासा ॥

२३४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१. वि निरुवचय-निरवचया वि (क, ब, स) । २. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

किमिदंरायगिह-पदं

२३५. तेण कालेणं तेण समएणं जाव[1] एवं वयासी—किमिदं[2] भंते ! नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पुढवी नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आऊ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ[3] ? •किं तेऊ वाऊ वणस्सई नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा नगरं राहगिहं ति पवुच्चइ ? किं जल-थल-बिल-गुह-लेणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं अगड-तडाग दह-नईओ वावी-पुक्खरिणी-दीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आरामुज्जाण-काणणा वणा वणसंडा वणराईओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं लोही-लोहकडाह-कडुच्छुया नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं भवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सयण-खंभ-भंड°-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ?

गोयमा ! पुढवि वि नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ॥

२३६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढवी जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ । से तेणट्ठेणं तं चेव ॥

उज्जोय-अंधयार-पदं

२३७. से नूणं भंते ! दिया उज्जोए ? राइं अंधयारे ?

हंता गोयमा[4] ! •दिया उज्जोए, राइं° अंधयारे ॥

---

१. भ० १।४-१० ।

२. किमियं (क); किमितं (ब, म) ।

३. सं० पा०—पवुच्चइ जाव वणस्सई ? जहा—एयणुद्देसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्त ।

४. सं० पा०—गोयमा जाव अंधयारे ।

२३८. से केणट्टेणं ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं[1] असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ॥

२३९. नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! नेरइयाण नो उज्जोए, अंधयारे ॥

२४०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइयाण असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ॥

२४१. असुरकुमाराण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए, नो अंधयारे ॥

२४२. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेणं । जाव[2] थणियकुमाराणं[3] ॥

२४३. पुढविक्काइया जाव[4] तेइंदिया 'जहा नेरइया[5]' ॥

२४४. चउरिंदियाण भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अंधयारे वि ॥

२४५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ॥

२४६. एवं जाव[6] मणुस्साण ॥

२४७. वाणमंतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा[7] ॥

मणुस्सखेत्ते समयादि-पदं

२४८ अत्थि ण भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[8] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४९. से केणट्ठेणं[9] •भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाण तत्थगयाण नो एवं पण्णायए, तं जहा°—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इहं तेसिं माण, इहं तेसिं पमाण, इह तेसिं एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेण जाव नो एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ॥

---

१. रत्तिं (ता, ब, म) ।
२. जाव एवं वुच्चइ जाव (अ, क, ता, ब, म, स)
३. थणियाण (क, ता, ब, म, स) ।
४. पू० प० २ ।
५. नेरइया जहा (क, ता, ब, म); भ० ५।२३९, २४० ।
६. पू० प० २ ।
७. भ० ५।२४१, २४२ ।
८. ठा० २।३८७-३८९ ।
९. सं० पा०—केणट्ठेण जाव समया ।
१०. ठा० २।३८७-३८९ ।

२५०. एवं जाव[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥

२५१. अत्थि ण भते ! मणुस्साणं इहगयाणं एव पण्णायते[2], तं जहा—समया इ वा जाव[3] उस्सप्पिणी इ वा ?
हता अत्थि ॥

२५२ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! इहं तेसि माण, इहं तेसि पमाण, इह चेव तेसि एवं पण्णायते, त जहा—समया इ वा जाव[4] उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेण ॥

२५३ वाणमतर-जोइस-वेमाणियाण जहा नेरइयाण[5] ॥

पासावच्चिज्ज-पदं

२५४ तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते ठिच्चा एव वयासी—से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणता राइंदिया उपज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिस्सति वा ? विगच्छिसु[6] वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ? परित्ता राइदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जि-स्सति वा ? विगच्छिसु वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ?
हता अज्जो ! असखेज्जे लोए अणता राइदिया त चेव ॥

२५५ से केणट्ठेण जाव विगच्छिस्सति वा ?
से नूण भे अज्जो ! पासेण अरहया पुरिसादाणिएण सासए लोए वुइए—अणा-दीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए । तेसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे सखित्तसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पिउद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति । से भूए[7] उप्पण्णे विगएपरिणए, अजीवेहि लोक्कइ पलोक्कइ, जे लोक्कइ से लोए ?
हता भगव ! से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—असंखेज्जे लोए अणंता राइदिया त चेव ।

---

१. पू० प० २ ।
२ पण्णायति (अ, क, व, म); पण्णायइ ता ।
३. ठा० २।३८७-३८९ ।
४. ठा० २।३८७-३८९ ।
५. भ० ५।२४८-२४९ ।
६ विगिच्छिसु (अ, ता, म) ।
७. नूण (स) ।

तप्पभिइं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभि-जाणंति सव्वण्णू सव्वदरिसी ।।

२५६. तए ण ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीर वंदंति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं ।।

२५७. तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति जाव[1] चरिमेहिं उस्सास-निस्सा-सेहिं सिद्धा[2] °बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्थेगतिया देवलोएसु[3] उववण्णा ।।

देवलोय-पदं

२५८. कइविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी 'वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियभेदेणं'[4] ।
भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पंचविहा वेमाणिया दुविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिदं रायगिह ति य, उज्जोए अंधयार-समए य ।
पासंतिवासिपुच्छा, रातिंदिय देवलोगा य ।।१।।

२५९. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति[5] ।।

दसमो उद्देसो

२६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ[6] तहा नेयव्वो एसो वि, नवरं—चंदिमा भाणियव्वा ।।

---

१. भ० १।४३३ ।
२. सं० पा०—सिद्धा जाव सव्व° ।
३. देवा देवलोएसु (अ, क, ता, ब, म) ।
४. वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेणं (अ, ता, म) ।
५. भ० १।५१ ।
६. अस्यैव शतकस्य ।

छट्ठं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. वेदण २. आहार ३. महस्सवे य ४. सपदेश ५. तमुए[1] ६. भविए।
७. साली ८ पुढवी ९ 'कम्म १०. अण्णउत्थि'[2] दस छट्ठगम्मि सए ॥१॥

पसत्थनिज्जराए सेयत्त-पदं

१ से नूण भंते ! जे महावेदणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?
हंता गोयमा ! जे महावेदणे[3] ● से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए° ॥

२. छट्ठ-सत्तमासु ण भते ! पुढवीसु नेरइया महावेदणा ?
हंता महावेदणा ॥

३. ते ण भते ! समणेहितो निग्गथेहितो महानिज्जरतरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४. से केण खाइ अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जे महावेदणे[4] ●से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे° पसत्थ-निज्जराए ?
गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्था सिया—एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खंजणरागरत्ते । एएसि ण गोयमा ! दोण्ह वत्थाणं कयरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव; कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव,

---

१. तमुयाए (क्व०)।
२. कम्मण्णउत्थि (क, ता, व, म)।
३. सं० पा०—एव चेव।
४. स० पा०—महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खजणरागरत्ते ?

भगव ! तत्थ णं जे से[1] कद्दमरागरत्ते, से ण वत्थे[2] दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं[3], सिलिट्ठीकयाइं[4], खिलीभूताइ[5] भवति । सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणि आउडेमाणे[6] महया-महया सद्देण, महया-महया घोसेण, महया-महया परपराघाएण नो संचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइ[7], •चिक्कणीकयाइ, सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइ भवति । सपगाढ पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा,° नो महापज्जवसाणा[8] भवति ।

भगव ! तत्थ जे से[9] खजणरागरत्ते, से ण वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ[10], विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थय जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा !

से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ[11], •सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतिय तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगबिदु[12] •पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?°

हता विद्धसमागच्छइ ।

---

१. से वत्थे (क, व, म) ।
२. भंते (व, म) ।
३. × (अ) ।
४. सिढिलीकयाइ (म, स) ।
५. खिलीकयाइ (अ, स) ।
६. आकोडेमाणे (अ, क, ता, व, म, स) ।
७ स० पा०—गाढीकयाइ जाव नो ।
८. °साणाइ (अ, स) ।
९. से वत्थे (अ, क, ता, व, म, स) ।
१०. कडाइ (अ, क, ता, व, म, स) ।
११. सं० पा०—कम्माइ जाव महा° ।
१२. स० पा०—उदगबिदु जाव हता ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं[1] •अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावतियं तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति। से तेणट्ठेण जे महावेदणे से महानिज्जरे[2] •जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थ° निज्जराए ॥

करण-पद

५. कतिविहे णं भते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे कम्मकरणे ॥

६ नेरइयाण भते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ॥

७. एव पचिदियाण सव्वेसि चउव्विहे करणे पण्णत्ते ।
एगिदियाणं दुविहे—कायकरणे य, कम्मकरणे य ।
विगलिदियाण तिविहे—वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ।

८. नेरइयाण भते ! कि करणओ असाय वेदण वेदेंति ? अकरणओ असायं वेदण वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया णं करणओ असायं वेदण वेदेति, नो अकरणओ असायं वेदण वेदेति ॥

९. से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरइया ण चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं चउव्विहेण असुभेणं करणेण नेरइया करणओ अस्साय वेदणं वेदेति, नो अकरणओ। से तेणट्ठेण ॥

१०. असुरकुमारा ण कि करणओ ? अकरणओ ?
गोयमा ! करणओ, नो अकरणओ ॥

११. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं सुभेण करणेणं असुरकुमारा करणओ सातं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ ॥

१२. एवं जाव[3] थणियकुमारा ॥

---

१. सं० पा०—निग्गथाण जाव महा° ।
२. सं० पा०—महानिज्जरे जाव निज्जराए ।
३. पू० प० २ ।

१३. पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं—इच्चेएणं सुभासुभेणं[1] करणेणं पुढविक्का-
इया करणओ वेमायाए वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ ।।

१४. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए[2] ।
देवा सुभेणं सायं ।।

महावेदणा-महानिज्जरा-चउभंग-पदं

१५. जीवा णं भंते ! किं महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा महावेदणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा अप्पनिजरा ।।

१६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे । छट्ठ-सत्तमासु[3] पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा । सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे । अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ।।

१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।

संगहणी-गाहा

महावेदणे य वत्थे, कद्दम-खजणकए य अहिगरणी ।
तणहत्थे य कवल्ले, करण-महावेदणा जीवा[5] ।।१।।

---

१. असुभेणं (म) ।
२. विविधमात्रया कदाचित् साताम्, कदाचित् असातामित्यर्थः (वृ) ।
३. सत्तमीसु (क, ता, ब, म) ।
४. भ० १।५१ ।
५. अतोग्रे 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' पाठः सर्वेषु आदर्शेषु अस्ति, किन्तु संग्रहणी-गाथाया अनंतरं अस्य किं प्रयोजनं न ज्ञायते ।

बीओ उद्देसो

१८. रायगिहं नगरं जाव[1] एवं वयासी—आहारुद्देसओ जो पण्णवणाए[2] सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो ॥

१९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[3] ॥

तइओ उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. बहुकम्म २. वत्थपोग्गल-पयोगसा-वीससा य ३ सादीए ।
४ कम्मट्ठिति ५ त्थि ६. संजय ७ सम्मदिट्ठी य ८. सन्नी य ॥१॥
९ भविए १०.दसण ११ पज्जत्त १२ भासय १३ परित्ते १४.नाण १५ जोगेय ।
१६, १७. उवओगाहारग १८. सुहुम १९. चरिमबंधे य २० अप्पबहुं ॥२॥

महाकम्मादीण पोग्गलबंधादि-पदं

२० से नूण भंते ! 'महाकम्मस्स, महाकिरियस्स, महासवस्स'[4], 'महावेदणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जति; सया समिय पोग्गला बज्झति, सया समियं पोग्गला चिज्जति, सया समिय पोग्गला उवचिज्जति; सया समिय च ण तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए—नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हता गोयमा ! महाकम्मस्स त चेव ॥

२१. से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा, धोयस्स वा, ततुग्गयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति जाव[6] परिणमति से तेणट्ठेणं ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. प० २८ ।
३. भ० १।५१ ।
४. महस्सवस्स (ता, म) ।
५ महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स (अ); महासवस्स, महाकम्मस्स महाकिरियस्स (क, ता, म, स) ।
६. भ० ६।२० ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२ से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति; सया समियं पोग्गला भिज्जंति, सया समियं पोग्गला छिज्जंति, सया समियं पोग्गला विद्धंस्संति, सया समियं पोग्गला परिविद्धंस्संति; सया समियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए[1] °सुवण्णत्ताए सुगंधत्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए°, सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?
हंता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥

२३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पंकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स[2] वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वेमाणस्स[3] सव्वओ पोग्गला भिज्जंति जाव[4] परिणमंति । से तेणट्ठेणं ॥

कम्मोवचय-पदं

२४. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥

२५. जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा णं 'जीवाणं कम्मोवचए'[5] किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा[6], नो वीससा ॥

२६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे । इच्चेएणं तिविहेणं पयोगेणं जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा ।
एवं सव्वेसिं पंचिंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे ।
पुढवीकाइयाणं एगविहेणं पयोगेणं, एवं जाव[7] वणस्सइकाइयाणं ।
विगलिंदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—वइपयोगे,[8] कायपयोगे य ।

---

१. सं० पा०—पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए ।
२. रतिल्लियस्स (ब, म, स) ।
३. धोव्व° (अ, क, व, म) ।
४. भ० ६।२२ ।
५. भंते ! जीवस्स पुग्गलोवचए (ब) ।
६. पओगसा (स) ।
७. भ० १।४३७ ।
८. वय° (क, व, म, स) ।

इच्चेएण दुविहेण पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से तेणट्ठेण[1] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा°, नो वीससा। 'एव जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाण'[2] ॥

कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद

२७ वत्थस्स ण भते ! पोग्गलोवचए कि सादीए सपज्जवसिए ? सादीए अपज्जवसिए ? अणादीए सपज्जवसिए ? अणादीए अपज्जवसिए ?
गोयमा ! वत्थस्स ण पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए ॥

२८ जहा ण भते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवाण कम्मोवचए पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतियाण जीवाण कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाणं अणादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाण अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव ण जीवाण कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए ॥

२९ से केणट्ठेण ? गोयमा ! इरियावहियबधयस्स[3] कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए। से तेणट्ठेण ॥

जीवाणं सादि-अनादित्त-पदं

३० वत्थे ण भते ! कि सादीए सपज्जवसिए—चउभगो ?
गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा 'तिण्णि वि'[4] पडिसेहेयव्वा ॥

३१. जहा ण भते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवा किं सादीया सपज्जवसिया ? चउभगो—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया सपज्जवसिया—चत्तारि वि भाणियव्वा ॥

३२ से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा गतिरागतिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, सिद्धा गति पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, भवसिद्धिया लद्धि पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसार पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया। से तेणट्ठेण ॥

---

१. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो।
२ एतद् द्विरुक्तमिव आभाति।
३. रिया° (अ, ता, व, म)।
४. × (अ), तिण्णि (क, ता, व, म)।

कम्मपगडी बंध विवेयण-पदं

३३. कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. नाणावरणिज्जं २. दरिसणावरणिज्जं[1] •३. वेदणिज्जं ४. मोहणिज्ज ५. आउगं ६. नाम ७. गोयं° ८. अंतराइयं ।।

३४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
[2]•दरिसणावरणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
वेदणिज्जं जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं[3] •तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
मोहणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
आउगं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
नाम-गोयाणं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेण वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
अंतराइयं[4] •जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।।

३५. नाणावरणिज्जं[5] णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, नपुंसओ वि बंधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ।।

३६. आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? 'नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?'[6]

---

१. दसणा° (ब); सं० पा०—दरिसणावरणिज्ज जाव अंतराइयं ।
२. सं० पा०—एवं दरिसणावरणिज्जं पि ।
३. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
४. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
५. नाणावरणिज्जे (अ, स) ।
६. पुच्छा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! इत्थी सिय बधइ, सिय नो बंधइ ।[1] •पुरिसो सिय बंधइ, सिय नो बधइ । नपुसओ सिय बंधइ, सिय नो बधइ ।° नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ न बधइ ॥

३७ नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं सजए बंधइ ? अस्संजए बधइ ? सजयासजए बधइ ? नोसजए नोअसंजए नोसजयासजए बधइ ?
गोयमा ! सजए सिय बधइ, सिय नो बधइ । अस्संजए बंधइ, संजयासजए वि बधइ । नोसजए नोअस्सजए नो संजयासजए न बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

३८ नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं सम्मदिट्ठी बंधइ ? मिच्छदिट्ठी[2] बंधइ ? सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बधइ, सिय नो बधइ । मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बधइ ॥

३९. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्मं कि सण्णी बधइ ? असण्णी बधइ ? नोसण्णी नोअसण्णी बधइ ?
गोयमा ! सण्णी सिय बंधइ, सिय नो बधइ । असण्णी बंधइ । नोसण्णी नोअसण्णी न बंधइ ।
एव वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ । वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बधंति, उवरिल्ले भयणाए । आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बधइ ॥

४०. नाणावरणिज्जं णं भते ! कम्म किं भवसिद्धिए बधइ ? अभवसिद्धिए बधइ ? नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए बंधइ ?
गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए, अभवसिद्धिए बधइ । नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए न बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए । उवरिल्ले न बधइ ॥

४१ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि चक्खुदंसणी बधइ ? अचक्खुदसणी बंधइ ? ओहिदसणी बधइ ? केवलदसणी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बधइ ।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधति, केवलदसणी भयणाए ॥

---

१. स० पा०—एव तिण्णि वि भाणियव्वा । २. मिच्छा° (क) ।

४२. नाणावरणिज्ज णं भंते ! कम्मं किं पज्जत्तए बंधइ ? अपज्जत्तए बधइ ? नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए बधइ ?
गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बधइ। नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए न बधइ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बधइ॥

४३. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्मं कि भासए बधइ ? अभासए बधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज भासए बधइ, अभासए भयणाए॥

४४. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि परित्ते बधइ ? अपरित्ते बधइ ? नोपरित्ते नोअपरित्ते बधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बधइ। नोपरित्ते नोअपरित्ते न बधइ। एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ। आउय[1] परित्ते वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न बधइ॥

४५. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि आभिणिबोहियनाणी बधइ ? सुयनाणी बधइ ? ओहिनाणी बधइ ? मणपज्जवनाणी बधइ ? केवलनाणी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए। केवलनाणी न बधइ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला चत्तारि बधति, केवलनाणी भयणाए॥

४६. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि मइअण्णाणी बधइ ? सुयअण्णाणी बधइ ? विभंगनाणी बधइ ?
गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बधति, आउग भयणाए॥

४७. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि मणजोगी बधइ ? वइजोगी[2] बधइ ? कायजोगी बधइ ? अजोगी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बधइ।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला बधति, अजोगी न बधइ॥

४८. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि सागारोवउत्ते[3] बधइ ? अणागारोवउत्ते बधइ ?
गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए॥

४९. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म कि आहारए बधइ ? अणाहारए बधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एव वेदणिज्जाउगवज्जाण छण्ह। वेदणिज्ज आहारए बधइ, अणाहारए भयणाए। आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधइ॥

---

१. आउए (अ, ब, स)।
२. वय° (म, स)।
३. सागारोवयुत्ते (अ, स)।

५०. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सुहुमे बंधइ ? बादरे बंधइ? नोसुहुमे नोबादरे बंधइ ?
गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगं सुहुमे बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ ॥

५१ नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं चरिमे बंधइ ? अचरिमे बंधइ ?
गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए ॥

वेदगावेदगाणं जीवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

५२. एएसि णं भंते ! जीवाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं, नपुंसगवेदगाणं, अवेदगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? ०
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा।
एएसि सव्वेसिं पदाणं[2] अप्प-बहुगाइं उच्चारेयव्वाइं जाव[3] सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा ॥

५३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

कालादेसेणं सपदेस-अपदेस-पदं

५४. जीवे णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! नियमा सपदेसे ॥

५५. नेरइए णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे ॥

५६. एवं जाव[5] सिद्धे ॥

५७ जीवा णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! नियमा सपदेसा ॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. भ० ६।३७-५१।
३. प० ३।
४. भ० १।५१।
५. पू० प० २।

५८. नेरइया णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ३. अहवा सपदेसा य अपदेसा य ।।

५९. एवं जाव[1] थणियकुमारा ।।

६०. पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ।।

६१. एवं जाव[2] वणप्फइकाइया[3] ।।

६२. सेसा जहा[4] नेरइया तहा जाव[5] सिद्धा ।।

६३. आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा[6] छब्भंगा एवं भाणियव्वा—१. सपदेसा वा २. अपदेसा वा ३ अहवा सपदेसे य अपदेसे य ४. अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५. अहवा सपदेसा य अपदेसे य ६. अहवा सपदेसा य अपदेसा य। सिद्धेहिं तियभंगो।
भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा[7] ओहिया। नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो।
सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो। असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइयदेव-मणुएहिं छब्भंगो। नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहिं तियभंगो।
सलेसा जहा ओहिया। कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ, नवरं—जस्स अत्थि एयाओ। तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवरं—पुढविक्काइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भंगा। पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभंगो। अलेसेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो। मणुएसु छब्भंगा।
सम्मद्दिट्ठीहिं जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएसु छब्भंगा। मिच्छद्दिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो। सम्मामिच्छद्दिट्ठीहिं छब्भंगा। संजएहिं जीवादिओ तियभंगो। अस्संजएहिं[8] एगिंदियवज्जो तियभंगो। संजयासंजएहिं तियभंगो जीवादिओ। नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो।
सकसाईहिं[9] जीवादिओ तियभंगो। एगिंदिएसु अभंगकं। कोहकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। देवेहिं छब्भंगा। माणकसाई-मायाकसाईहिं जीवेगि-

---

१. पू० प० २।
२. पू० प० २।
३. वणस्सइ० (क)।
४. भ० ६।५५, ५८।
५. पू० प० २।
६. जीवपदे एकेन्द्रियपदे च सपएसा य अप्पएसा य इत्येवरूपः एक एव भंगकः, बहूनां विग्रहगत्यापन्नानां सप्रदेशानामप्रदेशानां च लाभात् (वृ)।
७. भ० ६।५४, ५७।
८. असंजएहिं (क, म)।
९. सकसादीहिं (ता)।

दियवज्जो तियभंगो। नेरइय-देवेहि छब्भंगा। लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइएसु छब्भंगा अकसाई-जीव-मणुएहि, सिद्धेहिं तियभगो।
(ओहियनाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे जीवादिओ तियभगो। विगलिंदिएहिं छब्भगा। ओहिनाणे 'मणपज्जवनाणे केवलनाणे'[1] जीवादिओ तियभंगो।)
ओहिए अण्णाणे, मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, एगिंदियवज्जो तियभंगो। विभंगनाणे जीवादिओ तियभगो।
सजोगी[2] जहा ओहिओ, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी जीवादिओ तियभगो, नवर—कायजोगी एगिंदिया, तेसु अभगय[3]। अजोगी जहा अलेस्सा।
सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहि जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो।
सवेदगा जहा सकसाई। इत्थिवेदग-पुरिसवेदग-नपुंसगवेदगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवर—नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभगय। अवेदगा जहा अकसाई।
ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभगो। आहारगसरीरे जीव-मणुएसु छब्भंगा, तेयग-कम्मगाइं[4] जहा ओहिया। असरीरेहि जीव-सिद्धेहि तियभगो।
आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए[5] जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, भासा[6]-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी। आहार-अपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीर-अपज्जत्तीए, इंदिय-अपज्जत्तीए, आणापाण-अपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, नेरइय-देव-मणुएहि छब्भगा, भासा-मणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभगो, नेरइय-देव-मणुएहि छब्भगा।

संगहणी-गाहा

सपदेसाहारग-भविय-सण्णि-लेसा-दिट्ठि-संजय-कसाए।
नाणे जोगुवओगे, वेदे य सरीर-पज्जत्ती ॥१॥

पच्चक्खाणादि-पदं

६४. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी? अपच्चक्खाणी? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? गोयमा? जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि॥

---

१. मणकेवलनाणे (अ, क, ता, म, स)।
२ सजोति (ता)।
३. अभगग (ता)।
४. कम्माइ (अ, ता, म); कम्मगाण (स)।
५. आणापाणु° (क, ता, ब, म)।
६. भास (अ, क, ता, ब)।

६५. सव्वजीवाणं एवं पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव[1] चउरिंदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा[2]] । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि । मणूसा तिण्णि वि । सेसा जहा नेरइया ॥

६६. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति ? अपच्चक्खाणं जाणंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ?
गोयमा ! जे पंचिंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा 'पच्चक्खाणं न जाणंति'[3], अपच्चक्खाणं न जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं न जाणंति ॥

६७. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति ? अपच्चक्खाणं कुव्वंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ?
जहा ओहिओ तहा कुव्वणा ॥

६८. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि । अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाणं २ जाणइ, ३. कुव्वइ तिण्णेव ४. आउनिव्वत्ती ।
सपएसुद्देसम्मि य, एमेए दंडगा चउरो ॥१॥

६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

तमुक्काय-पदं

७०. किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पवुच्चति ? किं पुढवी[5] तमुक्काए त्ति पवुच्चति ? आऊ[6] तमुक्काए त्ति पवुच्चति ?
गोयमा ! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पवुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पवुच्चति ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।
३. अपच्चक्खाणं जाणंति (ता, म) ।
४. भ० १।५१ ।
५. पुढवि (अ, क, ता, स) ।
६. आउ (अ, क, व, म, स) ।

७१ से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ, अत्थेगइए[1] देसं नो पकासेइ। से तेणट्ठेण ।।

७२ तमुक्काए[2] ण भते ! कहि समुट्ठिए ? कहि सनिट्ठिए[3] ?
गोयमा ! जबूदीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय समुद्द बायालीस जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलताओ एगपएसियाए सेढीए-- एत्थ[4] ण तमुक्काए समुट्ठिए। सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे-पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता ण उड्ढं पि य ण जाव[5] बभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थड सपत्ते--एत्थ ण तमुक्काए सनिट्ठिए[6] ।।

७३ तमुक्काए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अहे मल्लग-मूलसठिए, उप्पि कुक्कुडग[7]-पजरगसठिए पण्णत्ते ।।

७४ तमुक्काए ण भते ! केवतिय विक्खभेण, केवतिय परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा--सखेज्जवित्थडे य, असखेज्जवित्थडे य।
तत्थ ण जे से सखेज्जवित्थडे, से ण संखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से असखेज्जवित्थडे, से ण असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खंभेणं, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ।।

७५. तमुक्काए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण[8] जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए जाव[9] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ अद्धगुलग च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते। देवे ण महिड्ढीए जाव[10] महाणुभावे इणामेव-इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जबूदीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहि तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से ण देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[11] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव

---

१ × (क, ता)।
२ तमुकाए (अ, क, ता, ब, म)।
३. सण्णिट्ठिए (ता)।
४ तत्थ (अ, स)।
५ × (अ)।
६. सनिविट्ठिए (अ, स), सनिहिते (क)।
७. कुकुडग (म, स)।
८. अय ए (क, म), अय ण (ता, स)।
९. ठा० १।२४८।
१० भ० ३।४।
११. भ० ३।३८।

एकाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतिय तमुक्कायं वीईवएज्जा अत्थेगतिय तमुक्कायं नो वीईवएज्जा। एमहालए ण गोयमा ! तमुक्काए पण्णत्ते ।।

७६. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७७. अत्थि णं भते ! तमुक्काए गामा इ वा ? जाव[1] सण्णिवेसा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७८. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए ओराला वलाहया ससेयति ? सम्मुच्छति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ।।

७९. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो[2] वि पकरेति ।।

८०. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे[3] ?
हंता अत्थि ।।

८१. तं भते ! कि देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
तिण्णि वि पकरेति ।।

८२. अत्थि णं भते ! तमुक्काए बादरे पुढविकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

८३. अत्थि ण भते ! तमुक्काए चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ।।

८४. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण'[4] सा ।।

८५. तमुक्काए ण भंते ! केरिसए वण्णएण पण्णत्ते ?
गोयमा ! काले कालोभासे गभीरे[5] लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते। देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा[6], अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा[7] सीहं-सीहं तुरियं-तुरिय खिप्पामेव वीतीवएज्जा ।।

८६. तमुक्कायस्स णं भंते ? कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।४९।
२. नाओ (ता, म)।
३. विज्जयाए (अ); विज्जुए (क, ता, व, म)।
४. काउसणिया पुण (ता)।
५. गभीर (अ, क, ता, ब, स, वृ)।
६. खोभाएज्ज (क, ता, म); खभाएज्जा (स)।
७. एतत् पद वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अंधकारे इ वा, महंधकारे इ वा, लोगंधकारे इ वा, लोगतमिसे[1] इ वा, देवंधकारे इ वा, देवतमिसे[2] इ वा, देवरण्णे[3] इ वा, देववूहे[4] इ वा, देवफलिहे[5] इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा समुद्दे[6] ॥

८७. तमुक्काए णं भंते ! किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ?
गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि ॥

८८. तमुक्काए णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[7] तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं[8] अदुवा अणंतक्खुत्तो, नो चेव णं बादरपुढविकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए वा ।

कण्हराइ-पदं

८९. कइ णं भंते ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ[9] ?
गोयमा ! अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९०. कहि णं भंते ! एयाओ अट्ठ कण्हरातीओ[10] पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं, हव्विं[11] बंभलोए कप्पे 'रिट्ठे विमाणपत्थडे'[12], एत्थ णं अक्खाडग-समचउरस-संठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमे णं दो, पच्चत्थिमे णं दो, दाहिणे णं दो, उत्तरे णं दो । पुरत्थिमब्भंतरा[13] कण्हराती दाहिण-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराती पच्चत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराती उत्तर-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, उत्तरब्भंतरा[14] कण्हराती पुरत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा ।

---

१. °तिमिसे (क, ता, म) ।
२. देवतिमिसे (अ, क, ता, स) ।
३. देवारण्णे (क, ता, ब) ।
४. देवपूहे (ता) ।
५. °पलिहे (ता) ।
६. समुद्देति वा (अ, स) ।
७. भ० १।४३७ ।
८. असइं-असइं (ता) ।
९. द्रष्टव्य—ठा० ८।४३-४७ ।
१०. °रायीतो (ब) ।
११. हेट्ठिं (अ, क, ब, म); हिट्ठिं (स), स्थानाङ्ग-सूत्रे (८।४३, वृत्तिपत्र ४१०) अभयदेवसूरिणा 'हेट्ठिं ति अधस्तात्' ब्रह्मलोकस्य इति व्याख्यातम् । अत्र च (वृत्तिपत्र २७१) 'हव्विं त्ति सम' इति व्याख्यातम् ।
१२. रिट्ठविमाण° (ठा० ८।४३) ।
१३. पुरत्थिमब्भिंतरा (क) ।
१४. उत्तरमब्भतरा (ब, स) ।

दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरातीओ छलंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ कण्हरातीओ तसाओ, दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ ।

संगहणी-गाहा

पुव्वावरा छलसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ।
अब्भतर चउरसा, सव्वा वि य कण्हरातीओ ॥१॥

९१. कण्हरातीओ ण भते ! केवतियं आयामेण ? केवतिय विक्खभेण ? केवतियं परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ आयामेणं, सखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खभेणं, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ॥

९२. कण्हरातीओ ण भते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अयं णं जबुद्दीवे दीवे[1] •जाव[2] देवे ण महिड्ढीए जाव[3] महाणुभावे इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जबूदीव दीवं तिहि अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[4] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव एकाहं वा, दुयाह वा, तियाहं वा, उक्कोसेण° अद्धमास वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराति वीईवएज्जा । अत्थेगइए कण्हराति णो वीईवएज्जा, एमहालियाओ ण गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९३. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९४. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गामा इ वा ? जाव[5] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु ओराला वलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ? वासं वासति ?
हता अत्थि ॥

९६. तं भंते ! कि देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥

---

१. स० पा०—दीवे जाव अद्धमासं ।
२. भ० ६।७५ ।
३. भ० ३।४ ।
४. भ०३।३८ ।
५ भ० १।४९ :

९७. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे ?
[1]●हंता अत्थि ॥

९८. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति° ॥

९९. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु बादरे आउकाए ? बादरे अगणिकाए ? बादरे वणप्फइकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१०० अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०१. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०२. कण्हरातीओ णं भंते ! केरिसियाओ वण्णेणं पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! कालाओ[2] ●कालोभासाओ गंभीराओ लोमहरिसजणणाओ भीमाओ उत्तासणाओ परमकिण्हाओ वण्णेणं पण्णत्ताओ। देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा सीहं-सीहं तुरियं-तुरियं° खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

१०३. कण्हराती णं भंते ! कति[3] नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा, मघा इ वा, माघवई इ वा, वायफलिहा इ वा, वायपलिक्खोभा इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा ॥

१०४. कण्हरातीओ णं भंते ! किं पुढवीपरिणामाओ ? आउपरिणामाओ ? जीवपरिणामाओ ? पोग्गलपरिणामाओ ?
गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पोग्गलपरिणामाओ वि ॥

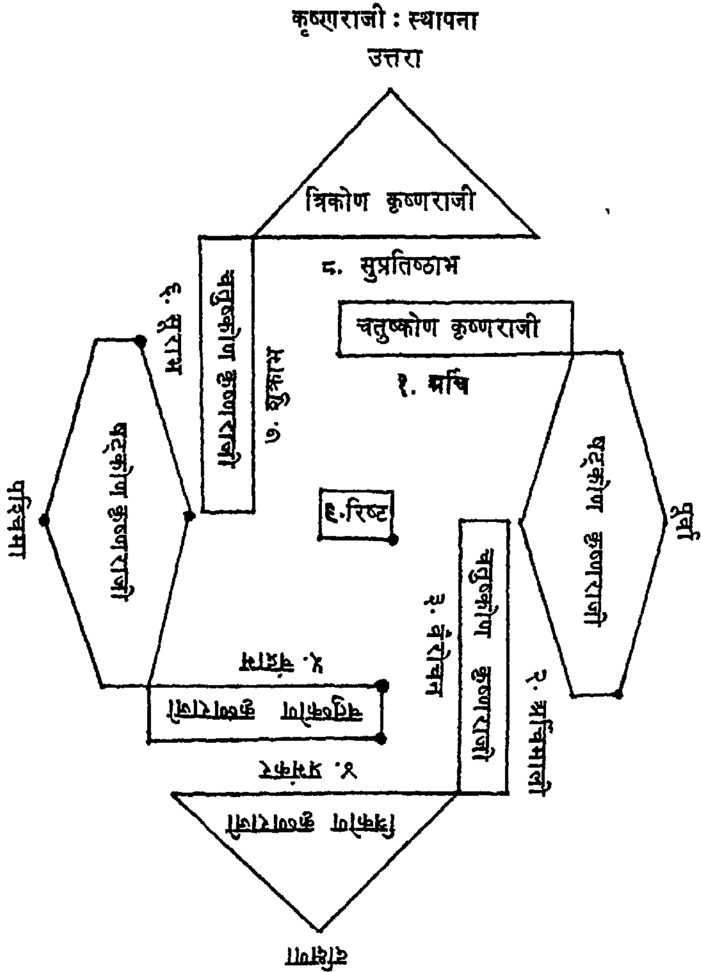
१०५. कण्हरातीसु णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[4] तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतक्खुत्तो; नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए, बादरवणप्फइकाइयत्ताए वा ॥

---

१. सं० पा०—जहा ओराला तहा ।
२. सं० पा०—कालाओ जाव खिप्पामेव ।
३. केवइया (ता) ।
४. भ० १।४३७ ।

लोगंतियदेव-पदं

१०६. एएसि णं अट्ठण्हं कण्हराईण अट्ठसु ओवासतरेसु अट्ठ लोगतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अच्ची २. अच्चिमाली ३. वइरोयणे ४ पभकरे[1] ५. चंदाभे ६. सूराभे ७. सुक्काभे[2] ८ सुपइट्ठाभे, 'मज्झे रिट्ठाभे'[3] ।।



१. वभंकरे (ता) ।

२. सुकाभे (ता) ।

३. इह चावकाशान्तरवर्तिषु अष्टासु अर्चिःप्रभृतिषु विमानेषु वाच्येषु यत् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्टं विमान नवम उक्त तद्विमानप्रस्तावाद् अवसेयम् (वृ) ।

१०७ कहि णं भंते ! अच्चि-विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उत्तर-पुरत्थिमे णं ॥

१०८. कहि ण भंते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पुरत्थिमे ण । एव परिवाडीए नेयव्वं जाव—

१०९. कहि ण भंते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! बहुमज्झदेसभाए ॥

११०. एएसु ण अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१॥

१११. कहि ण भंते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसंति ॥

११२ कहि णं भंते ! आइच्चा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे । एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव—

११३ कहि ण भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! रिट्ठम्मि विमाणे ॥

११४ सारस्सयमाइच्चाण भंते । देवाण कति देवा, कति देवसया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो[1] पण्णत्तो ।
वण्ही—वरुणाण देवाण चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
गद्दतोय—तुसियाण देवाण सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
अवसेसाण नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो ।

संगहणी-गाहा

पढम-जुगलम्मि सत्तओ, सयाणि बीयम्मि चउद्दससहस्सा ।
तइए सत्तसहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥१॥

११५. लोगंतिगविमाणा ण भंते ! किंपइट्ठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता । एव नेयव्वं विमाणाण पइट्ठाणं, बाहुल्लुच्चत्तमेव संठाण, बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा[2] जाव[3]—

---

१. × (अ, क, ता, ब, म) ।
२. नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए (अ, स)
३. जी० ३ ।

११६. लोयंतियविमाणेसु णं भते। सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए, आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणप्फइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवित्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो, नो चेव ण देवित्ताए[1] ॥

११७. 'लोगंतिय देवाण'[2] भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

११८. लोगतियविमाणेहितो ण भते ! केवतिय अबाहाए[3] लोगते पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ अबाहाए लोगते पण्णत्ते ॥

११९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं आवास-पद

१२०. कति ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[5] अहेसत्तमा[6]। रयणप्पभाईण आवासा भाणियव्वा जाव[7] अहेसत्तमाए। एव जत्तिया[8] आवासा ते भाणियव्वा जाव[9]—

१२१. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, त जहा—विजए[10], •वेजयते, जयते, अपराजिए॰ सव्वट्ठसिद्धे ॥

मारणंतियसमुग्घाय-पदं

१२२ जीवे ण भंते ! मारणतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावाससि

---

१. देवत्ताए (म, स)।
२. लोगतियविमाणेसु ण (अ, क, ता, ब, म)।
३. आबाहाए (ता)।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।२११।
६. तमतमा (अ, स)।
७. भ० १।२१२।
८. जे जत्तिया (अ, क, ब, म, स)।
९. भ० १।२१३-२१५।
१०. स० पा०—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे।

नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीर वा बधेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तति[1], ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा । एव जाव[2] अहेसत्तमा पुढवी ॥

१२३. जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए, जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव[3] थणियकुमारा ॥

१२४ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण केवइय गच्छेज्जा ? केवइय पाउणेज्जा ?
गोयमा ! लोयत गच्छेज्जा, लोयत पाउणेज्जा ॥

१२५. से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बधेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ[4], दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्त वा, सखेज्जइभागमेत्त वा, वालग्ग वा, वालग्गपुहत्त[5] वा; एव लिक्ख-जूय-जव-अगुल जाव[6] जोयणकोडि वा, जोयणकोडाकोडि वा सखेज्जेसु वा असखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगते वा एगपएसिय सेढि मोत्तूण असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा ।
जहा पुरत्थिमे ण मदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एव दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढे, अहे ।

---

१. नियत्तेति (अ, स) ।
२. भ० १।२११ ।
३. पू० प० २ ।
४ इह हव्वमा० (स) ।
५. ०पुहुत्त (म) ।
६ वृ; अ० सू० ४०० ।

जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा।

१२६. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?
जहा नेरइया[1], एवं जाव[2] अणुत्तरोववाइया ॥

१२७. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?
तं चेव जाव[3] आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा।

१२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

सत्तमो उद्देसो

धन्नाणं जोणि-ठिइ-पदं

१२९. अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं[5] लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ[6], तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !

१३०. अह भंते ! कल[7]-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव[8]-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण[9]-पलिमंथगमाईणं[10]—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं

---

१. भ० ६।१२२।
२. भ० १।२१४, २१५।
३. भ० ६।१२२।
४. भ० १।५१।
५. उल्लित्ताण (स)।
६. विद्धंसेइ (अ, क, स)।
७. कलाव (ब); कलाय (व, स); कालाव (म)
८. निप्पाव (ता, स)।
९. सतीण (अ, व, स)।
१०. तिलिमिंथग० (ता)।

मालाउत्ताणं ओलित्ताण लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाण केवतियं कालं जोणी सचिट्ठइ ?

[1]•गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पच सवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण पर बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो० !

१३१. अह भते ! अयसि-कुसुभग-कोद्दव-कंगु-वरग[2]-रालग-कोद्दूसग[3]-सण-सरिसव-मूलाबीयमाईण[4]—एएसि ण धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताण मंचाउत्ताणं मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण पिहियाण मुद्दियाणं लछियाण केवतियं कालं जोणी सचिट्ठइ ?

[5]•गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त संवच्छराइ। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो[1]० !

गणना-काल-पदं

१३२ एगमेगस्स ण भते ! मुहुत्तस्स केवतिया ऊसासद्धा वियाहिया ?

गोयमा ! असखेज्जाण समयाणं समुदय-समिति-समागमेण सा एगा 'आवलिय त्ति'[7] पवुच्चइ, सखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो—

गाहा—

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स[8] जंतुणो।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्त पाणूइ[9] से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे।
लवाण सत्तहत्तरिए[10], एस मुहुत्ते वियाहिए ॥२॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइ तेवत्तरिं च ऊसासा।
एस मुहुत्तो दिट्ठो, सव्वेहिं अणंतनाणीहि ॥३॥

---

१ सं० पा०—जहा सालीण तहा एयाणि वि नवर पच सवच्छराइ सेस त चेव।
२ वरट्ट (ठा० ७।९०)।
३. कोड्डुसग (व)।
४ मूलग० (अ, क, स)।
५ सं० पा०—एयाणि वि तहेव नवर सत्त सवच्छराइ।
६ तुलना—ठा० ३।१२५, ५।२०९, ७।९०।
७. आवलिया ति (क, ता, व)।
८. णिरवकट्ठस्स (ता)।
९. पाणूणि (अ, स)।
१० सत्तस० (क, ब)।

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू[1], तिण्णि उडू अयणे, दो[2] अयणा संवच्छरे, 'पंच संवच्छराइं'[3] जुगे, वीस जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साण वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइ पुव्वंगा सयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडियगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववगे, अववे[4],हूहूयगे[5], हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, अत्थनिउरगे, अत्थनिउरे[6],अउयंगे, अउए[7], 'नउयगे, नउए, पउयंगे, पउए'[8] चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे, सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण पर ओवमिए[9] ॥

ओवमिय-काल-पदं

१३३. से किं तं ओवमिए ?
ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य ॥

१३४. 'से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ?'[10]

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छेत्तुं भेत्तुं व[11] जं किर न सक्का।
तं परमाणु सिद्धा, वदंति आदिं पमाणाणं ॥१॥

अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्ढरेणू[12] इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालग्गे[13] इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्झे इ वा, अंगुले इ वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साणं वालग्गे; 'एवं हरिवासरम्मग-हेमवय-एरन्नवयाण, पुव्वविदेहाण मणुस्साण अट्ठ वालग्गा सा एगा

---

१. उडू (ता, व)।
२. बे (ता, ब)।
३. पंचसवच्छरिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. अपपे (व, स)।
५. हूहुय (अ, क, स)।
६. °निपूरे (क, ता, व)।
७. अतुए (अ, स); अपुए (क); अज्जुए (व)।
८. पदुए २, नउए २ (अ, ता, स); पज्जुए य० (क), पज्जुए य नज्जुए य (ब)।
९. उवमिए (अ, क, व, म, स)। तुलना—अ० सू० ४१७।
१०. से किं त पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स), से किं त पलितोवमे २ (क, ता)।
११. च (अ, क, ब, म, स, वृ)।
१२. उद्ध० (अ, क, ता, ब, म)।
१३. वालग्गा (स)।

लिक्खा"[1], अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले।

एएण अगुलपमाणेणं छ अगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी[2], चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीस अंगुलाइ कुच्छी, छन्नउति[3] अगुलाणि से एगे दडे इ वा, धणू इ वा, जूए इ वा, नालिया इ वा, अक्खे इ वा, मुसले इ वा।

एएण धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्साइ गाउय, चत्तारि गाउयाइ जोयण।

एएण जोयणप्पमाणेण जे पल्ले जोयणं आयाम-विक्खभेणं, जोयण उड्ढं उच्चत्तेण, त तिउण[4], सविसेसं परिरएणं—से णं एगाहिय-बेहिय-तेहिय[5], उक्कोस सत्तरत्तप्परूढाण समट्ठे[6] सनिचिए भरिए[7] वालग्गकोडीण।

ते ण वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा[8], नो परिविद्धसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वमागच्छेज्जा।

तओ[9]णं वाससए-वाससए गते"[10]एगमेगं वालग्गं अवहाय"[11]जावतिएणं कालेणंसे पल्ले खीणे निरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ। से त्तं पलिओवमे।

गाहा—

२. एएसि पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
तं सागरोवमस्स उ, एक्कस्स भवे परिमाण ॥

---

१. प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते। तस्य पूर्णपाठः इत्थमस्ति—
अट्ठ देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साण वालग्गा हरिवास-रम्मगवासाण मणुस्साणं से एगे वालग्गे।
अट्ठ हरिवास-रम्मगवासाणम णुस्साण वालग्गा हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण वालग्गा पुव्वविदेह-अवर विदेहाण मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाण मणुस्साण वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साण से एगे वालग्गे।
अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा (अ० सू० ३६६)।

२. वितत्थी (अ)।

३. छण्हउइ (ता)।

४ तिओण (अ)।

५ षष्ठीबहुवचनलोपाद् एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकाणाम् (वृ)।

६. ससट्ठे (अ, म)।

७. हरिए (ता)।

८. कुत्थेज्जा (अ, व, म)।

६. तए (अ, क)।

१०. × (अ, ता, म, स)।

११. अवहाय २ (ता)।

एएण सागरोवमपमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा १. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो[1] सागरोवमकोडा-कोडीओ कालो सुसम-दूसमा[2] ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा ५ एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा ६ ।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा[3] २. °एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा ४. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा° ५. चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६ ।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमट्ठ-पत्ताए[4], भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे[5] होत्था ?

गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए—आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव[6] तत्थ णं बहवे भारया मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति । तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव[7] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव[8] छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली[9], सहा, सणिचारी ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. दुण्णि (क) ।
२. दुसमा (ता, स) ।
३. सं० पा०—दूसमा जाव चत्तारि ।
४. उत्तमट्ठ० (स) ।
५. पडोगारे (ता, ब, म) ।
६. जी० ३; जं० २ ।
७. जी० ३; जं० २ ।
८. जी० ३; जं० २ ।
९. तेयतली (ब) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

पुढवी-आदिसु गेहादिपुच्छा-पद

१३७. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[1] ईसीपब्भारा ॥

१३८. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३९. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४०. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे ओराला बलाहया संसेयंति ? समुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति[3] ॥

१४१. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति[4] ॥

१४२. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१४३. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदिम[5]-°सूरिय-गहगण-नक्खत्त° तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं, एवं तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नागो पकरेति । चउत्थीए वि एवं, नवरं—देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो । एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो[6] पकरेति ।

---

१. ठा० ८।१०८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० ६।७९ ।
४. द्रष्टव्यम्—भ० ६।८१ ।
५. सं० पा०—चंदिम जाव तारारूवा ।
६. देवो एक्को (अ, क, ब, म, स) ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला वलाहया[1] ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसद्दे वि ।।

१४७. अत्थि णं भंते । वादरे पुढवीकाए ? वादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं वंभलोए वि । एवं वंभलोगस्स[3] उवरि सव्वेहिं देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य वादरे आउकाए, वादरे अगणिकाए, वादरे वणस्सइकाए । अण्णं त चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढवी य अगणि-पुढवीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ।।१।।

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयवंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयवंधे पण्णत्ते, त जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

१५२. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता[5] ? •ठितिनामनिहत्ता ? ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ?° अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ।।

---

१. पू०—भ० ६।७८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. वम्ह० (क, व) ।
४. पू० प० २ ।
५. सं० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग०
६. पू० प० २ ।

१५३. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ताउया ? जाव[1] अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा ! जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि । दडओ जाव[2] वेमाणियाणं ॥

१५४. एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा—
जीवा णं भंते ! किं १. जातिनामनिहत्ता ? २. जातिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३. जातिनामनिउत्ता ? ४. जातिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५ जातिगोयनिहत्ता ? ६. जातिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७ जातिगोयनिउत्ता ? ८ जातिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ९ जातिनामगोयनिहत्ता ? १०. जातिनामगोयनिहाउत्तया ?
जीवा णं भंते ! किं ११ जातिनामगोयनिउत्ता ?
१२ जातिनामगोयनिउत्ताउया ?
जाव[3] ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

---

१. भ० ६।१५१ । २. पू० प० २ ।

३. एतत् पद त्रयोदशभगात् द्वासप्ततितमपर्यन्ताना भगाना सग्राहकमस्ति—

जीवा णं भंते ! किं १३ गतिनामनिहत्ता ? १४. गतिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १५. गतिनामनिउत्ता ? १६ गतिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १७. गतिगोयनिहत्ता ? १८. गतिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १९. गतिगोयनिउत्ता ? २०. गतिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २१ गतिनामगोयनिहत्ता ? २२. गतिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २३. गतिनामगोयनिउत्ता ? २४. गतिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २५. ठितिनामनिहत्ता ? २६. ठितिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २७. ठितिनामनिउत्ता ? २८. ठितिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २९. ठितिगोयनिहत्ता ? ३०. ठितिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३१. ठितिगोयनिउत्ता ? ३२. ठितिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३३ ठितिनामगोयनिहत्ता ? ३४. ठितिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३५. ठितिनामगोयनिउत्ता ? ३६. ठितिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३७. ओगाहणानामनिहत्ता ? ३८. ओगाहणानामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३९. ओगाहणानामनिउत्ता ? ४०. ओगाहणानामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४१. ओगाहणागोयनिहत्ता ? ४२. ओगाहणागोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४३ ओगाहणागोयनिउत्ता? ४४. ओगाहणागोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४५. ओगाहणानामगोयनिहत्ता ? ४६. ओगाहणानामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४७. ओगाहणानामगोयनिउत्ता ? ४८. ओगाहणानामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४९. पएसनामनिहत्ता ? ५०. पएसनामनिहत्ताउया ?

गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया वि । दंडओ जाव[1] वेमाणियाणं ।।

लवणादिसमुद्द-पदं

१५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए[2] ? पत्थडोदए ? खुभियजले ? अखुभियजले ?
गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले ।।

१५६. [3]•जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुभियजले, नो अखुभियजले; तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं उस्सिओदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अखुभियजला ?
गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा, पत्थडोदगा; नो खुभियजला, अखुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ।।

१५७. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? समुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ।।

१५८. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति, समुच्छंति, वासं वासंति, तहा णं बाहिरगेसु वि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? समुच्छंति ? वासं वासंति ?

जीवा णं भंते ! किं ५१. पएसनामनिउत्ता ? ५२. पएसनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५३ पएसगोयनिहत्ता ? ५४. पएसगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५५. पएसगोयनिउत्ता ? ५६. पएसगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५७. पएसनामगोयनिहत्ता ? ५८. पएसनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५९. पएसनामगोयनिउत्ता ? ६०. पएसनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६१. अणुभागनामनिहत्ता ? ६२. अणुभागनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६३. अणुभागनामनिउत्ता ? ६४ अणुभागनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६५. अणुभागगोयनिहत्ता ? ६६ अणुभागगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६७. अणुभागगोयनिउत्ता ? ६८. अणुभागगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६९ अणुभागनामगोयनिहत्ता ? ७०. अणुभागनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७१. अणुभागनामगोयनिउत्ता ? ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. पू० प० २ ।
२. उसिओदए (क, म, स) ।
३. सं० पा०—एत्तो आढत्त जहा जीवाभिगमे जाव से ।

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१५९. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव[1] समभरघडत्ताए चिट्ठति ?

गोयमा ! बाहिरगेसु ण समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उवचयति°। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—बाहिरया णं समुद्दा[2] पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति, सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा, दुगुणा, दुगुणप्पमाणा[3] जाव[4] अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीव-समुद्दा सयभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

१६०. दीव-समुद्दा ण भंते ! केवतिया नामधेज्जेहि पण्णत्ता ।

गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गंधा, सुभा रसा, सुभा फासा, एवतिया ण दीव-समुद्दा नामधेज्जेहि पण्णत्ता । एव नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो, परिणामो, सव्वजीवाणं (उप्पाओ[5] ?) ॥

१६१. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

कम्मप्पगडिबंध-पदं

१६२. जीवे ण भंते ! नाणावरणिज्ज कम्मं बधमाणे कति कम्मप्पगडीओ बधति ?

गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबधए वा । बधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो[7] ॥

---

१. भ० ६।१५६ ।

२. दीव-समुद्दा (अ, क, ता, ब, म, स); जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ 'समुद्दा इत्येवपदमस्ति, तदेवात्र प्रासगिकम् ।

३. °माणाओ (अ, क, ता, व, म, स) ।

४. अस्य पूरकपाठ. जीवाभिगमस्य तृतीयप्रतिपत्तौ लभ्यते । स चैवमस्ति—
'पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा-पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया बहुउप्पलपउमकुमुयणलिणसुभगसोगधियपोडरीयमहापोडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुल्लकेसरोवचिया पत्तेय-पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेय-पत्तेय वणसंडपरिक्खित्ता ।

५. सव्वजीवाण ति—सर्वं जीवानां द्वीप-समुद्रेषूत्पादो नेतव्य —इति सूचित वृत्तिकृता । तदनुसृत्यात्र 'सव्वजीवाणं उप्पाओ' इतिपाठो युज्यते ।

६ भ० १।५१ ।

७. प० २४ ।

महिड्ढीयदेव-विकुव्वणा-पदं

१६३. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[2] पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६४. देवे णं भते । बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥

१६५. से णं भते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ।
एवं एएणं गमेणं जाव[3] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्ण अणेगरूव ३ अणेग-वण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्ण अणेगरूवं—चउभंगो ॥

१६६. देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव[4] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं[5] पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए[6] परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ॥

१६७. से णं भंते ! कि इहगए पोग्गले[7] °परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परिया-इत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ।
एव एएणं गमेणं जाव[8] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेग-वण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो° ।
एवं कालगपोग्गल लोहियपोग्गलत्ताए । एवं कालएण जाव सुक्किलं । एवं नीलएणं जाव सुक्किल । एवं 'लोहिएण जाव सुक्किलं'[9] । एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं । एवं[10] एयाए परिवाडीए गध-रस फासा[11] ।

---

१. भ० ३।४ ।
२. अपरियादिइत्ता (अ, ता, ब, म) ।
३. भ० ६।१६३, १६४ ।
४. भ० ३।४ ।
५. कालत (क) ।
६. णीलपोग्ग० (अ, क, ता) ।
७. सं० पा०—तं चेव नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्व ।
८. भ० ६।१६३, १६४ ।
९. लोहियपोग्गल जाव सुक्किलत्ताए (अ, स); लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलं (म) ।
१०. तं एव (अ, क, ता, व, म) ।
११. कक्खडफासपोग्गल मउय-फासपोग्गलत्ताए, एव दो दो गरुयलहुय-सीयउसिण-णिद्धलुक्ख-वण्णाई सव्वत्थ परिणामेइ । आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता(अ,व,म,स) ।

अविसुद्धलेसादि देवाणं जाणणा-पासणा-पदं

१६८. १. अविसुद्धलेसे ण भंते ! देवे असमोहएण[1] अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं, देविं, अण्णयर[2] जाणइ-पासइ ?
णो तिणट्ठे समट्ठे[3]।
एव—२. अविसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ३. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं ४. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ५. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देव ६. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ७. विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेणं अविसुद्धलेस देव ८ विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस देवं ॥

१६९. ९. विसुद्धलेसे ण भते ! देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।
एव—१०. विसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ११. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं १२. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ॥

१७०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

---

१. असंमो० (अ, ता, म, स) ।
२. अणगारं (क, व) ।
३. समट्ठे एव हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहि चउहिं जाणइ-पासइ (क, ता, वृ); स्वीकृतपाठस्य वृत्तिकृता वाचनान्तरत्वेन उल्लेख. कृतोस्ति—वाचनान्तरे तु सर्वमेवेद साक्षाद्दृश्यते (वृ) । 'अ, ब, म, स' सकेतितादर्शेषु द्वयोर्वाचनयोमिश्रणं दृश्यते । तत्र द्वादशभगानन्तरं 'एव हेट्ठिल्लएहिं' इत्यादि पाठोस्ति ।
४. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

सुह-दुह-उवदंसण-पदं

१७१. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[1] परूवेति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाणं जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि[2], लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता[3] उवदसेत्तए ॥

१७२. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[4] मिच्छ ते एवमाहसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[5] परूवेमि सव्वलोए वि य ण सव्वजीवाण नो चक्किया केइ सुह वा[6] •दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

१७३. से केणट्ठण ? गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव[7] विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते। देवे णं महिड्ढीए जाव[8] महाणुभागे एग मह सविलेवण गधसमुग्गग गहाय त अवद्दालेति, अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा। से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं[9] घाणपोग्गलेहि फुडे ?

हता फुडे।

चक्किया णं गोयमा ! केइ[10] तेसि घाणपोग्गलाण कोलट्ठिमायमवि[11], •निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ?

नो तिणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुहं वा जाव उवदसेत्तए।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे ण भते ! जीवे ? जीवे जीवे ?

गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ॥

---

१. भ० १।४२०।
२. जूय० (क, ब), ऊया० (ता)।
३. ° तेत्ता (ता)।
४. भ० १।४२१।
५. भ० १।४२१।
६. सं० पा०—त चेव जाव उवदसेत्तए।
७. भ० ६।७५।
८. भ० ३।४।
९. तिहिं (अ, स)।
१०. केयति (स)।
११. स० पा०—कोलट्ठिमायमवि जाव उवदसेत्तए

१७५. जीवे ण भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१७६ जीवे ण भते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?
गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय नोअसुरकुमारे ॥

१७७ एवं दडओ भाणियव्वो[1] जाव[2] वेमाणियाण ॥

१७८. जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?
गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति.॥

१७९. जीवति भते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१८०. एव दडओ नेयव्वो जाव[3] वेमाणियाणं ॥

१८१ भवसिद्धिए ण भते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धिए ?
गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए, सिय अनेरइए । नेरइए वि य सिय भवसिद्धीए, सिय अभवसिद्धीए ॥

१८२. एवं दडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

वेदणा-पदं

१८३. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[5] परूवेति—एव खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति ॥

१८४ से कहमेयं भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया जाव[6] मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगतसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय[8] । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं ॥

१८५ से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्ख वेदणं वेदेति, आहच्च साय । भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया एगतसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय । पुढविक्काइया जाव[9] मणुस्सा वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं । से तेणट्ठेण ॥

---

१. नेतव्वो (क, ता, ब) ।
२. पू० प० २ ।
३. पू० प० २ ।
४. पू० प० २ ।
५. भ० १।४२० ।
६. भ० १।४२१ ।
७. भ० १।४२१ ।
८. असाय वेदणं वेदेंति (अ, ता, म, स) ।
९. पू० प० २ ।

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति तं किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ?
गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ।
जहा नेरइया तहा जाव[1] वेमाणियाण दंडओ ॥

केवलिस्सनाण-पदं

१८७. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८८. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव[2] निव्वुडे दंसणे केवलिस्स । से तेणट्ठेणं ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुहं दुक्खं, जीवे जीवति तहेव भविया य ।
एगंतदुक्ख वेयण-अत्तमायाय केवली ॥१॥

१८९ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।६७ ।
३. भ० १।५१ ।

सत्तमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. आहार २. विरति ३. थावर, ४. जीवा ५. पक्खी य ६. आउ ७. अणगारे।
८. छउमत्थ ९. असंवुड, १०. अण्णउत्थि दस सत्तमंमि सए ॥ १ ॥

अणाहारग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[1] एवं वदासी—जीवे णं भंते ! कं[2] समयमणाहारए भवइ ?
गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए। एवं दंडओ—जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए[3], सेसा ततिए समए[4] ॥

सव्वप्पाहारग-पदं

२ जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति ?
गोयमा ! पढमसमयोववन्नए वा चरिमसमयभवत्थे[5] वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवति। दंडओ भाणियव्वो जाव[6] वेमाणियाणं ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. किं (अ)।
३. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
४. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
५. °समए° (स)।
६. पू० प० २।

लोगसंठाण-पदं

३ किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[1], •मज्झे संखित्ते, उप्पि विसाले ; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए°, उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठिए।
तंसि[2] च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ[3] •बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

समणोवासगस्स किरिया-पदं

४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए[4] अच्छमाणस्स[5] तस्स णं भंते ! किं रियावहिया[6] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

५. से केणट्ठेणं[7] •भंते ! एवं वुच्चइ—नो रियावहिया किरिया कज्जइ ?° संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ। से तेणट्ठेणं ॥

समणोवासगस्स अणाउट्टिहिंसा-पदं

६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवइ। से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥

७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइसमारंभे पच्चक्खाए। से य पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥

---

१. सं० पा०—विच्छिण्णे जाव उप्पि।
२. तंसि (अ); तंसि तेसिं (ता), तस्सि (म)।
३. सं० पा०—सिज्झइ जाव अंतं।
४. समणोवासए (क, स)।
५. अत्थ° (अ, ब, म, स)।
६. इरिया° (क, ता)।
७. सं० पा०—केणट्ठेण जाव संपराइया।

समणपडिलाभेण लाभ-पदं

८. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[1] पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?
गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा[2] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए ण तामेव[3] समाहिं पडिलभइ ।।

९. समणोवासए ण भते ! तहारूवं समणं वा[4] •माहण वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण° पडिलाभेमाणे किं चयति ?
गोयमा ! जीविय चयति, दुच्चय[5] चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तओ पच्छा सिज्झति जाव[6] अंतं करेति ।।

अकम्मस्स गति-पदं

१०. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
हंता अत्थि ।।

११. कहण्णं भते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए[7], निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पण्णायति ।।

१२. कहण्णं भते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरूवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे-परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं-भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियसि[8] उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाण गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ?
हंता भवइ ।
अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाण परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पि सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?

---

१. खातिम-सातिमेणं (अ, व, स) ।
२. स० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
३. तमेव (क्व०) ।
४. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
५. दुचय (स) ।
६. भ० ७।३ ।
७. वंधणोच्छेदणताए (ता) ।
८. इह मकारो प्राकृतप्रभवो (वृ) ।

हंता भवइ।

एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१३. कहण्णं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति[1] ?

गोयमा ! से जहानामए कलसिवलिया इ वा, मुग्गसिवलिया इ वा, माससिवलिया इ वा, सिबलिसिवलिया[2] इ वा, एरंडमिंजिया इ वा उण्हे दिन्ना[3] सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ। एवं खलु गोयमा ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१४. कहण्णं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति। एवं खलु गोयमा ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१५. कहण्णं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ। एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति।

एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए[4], निरंगणयाए[5], °गतिपरिणामेण, बंधणछेदणयाए, निरिंधणयाए°, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६. दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी दुक्खेण फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेण फुडे ॥

१७. दुक्खी भंते ! नेरइए दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेण फुडे ॥

१८. एवं दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ॥

१९. एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेण फुडे २. दुक्खी दुक्खं परियायइ ३. दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ४. दुक्खी दुक्खं वेदेति ५. दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२०. अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स[7] वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्ह-

---

१ पण्णत्ता (अ, क, ता, ब, म, स)।

२. सेवलिसेवलिया (ता)।

३. दित्ता (स)।

४. नीसंगयाए (अ, क, ब, म, स)।

५. सं० पा०—निरंगणयाए जाव पुव्व°।

६. पू० प० २।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्त' इति पदं गम्यम्।

माणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं[1] इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

२१. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना[2] भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ[3], जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिन्ना भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ[4]। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं उस्सुत्तमेव रीयति[5]। से तेणट्ठेणं ॥

सइंगालादिदोसदुट्ठ-पाणभोयण-पदं

२२. अह भंते ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे।

जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता महयाअप्पत्तियं कोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे।

जे णं निग्गंथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं• पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं[7] अन्नदव्वेण सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे।

एस णं गोयमा ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२३. अह भंते ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-

---

१. × (क, ता, ब)।

२. विच्छिन्ना (ब)।

३. कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ (म)।

४. कज्जइ नो इरियावहिया किरिया कज्जइ (म, स)।

५. रियति (अ, क, व, म, स)।

६. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता।

७. गुणुप्पायण° (अ, स); गुणुप्पायणा° (ता)

८. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता।

साइमं॰पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए[1] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमा॰-हारेइ, एस णं गोयमा ! वीतिंगाले पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गंथे वा[2] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण पाण खाइम साइमं॰ पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तियं[3] •कोहकिलाम करेमाणे आहारमा॰हारेइ, एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गथे वा[4] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइम॰ पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोस-विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।
एस णं गोयमा ! वीतिगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

२४. अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कं-तस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कते[5] पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असणं-पाण-खाइम॰-साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्ता[7] आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! कालातिक्कंते पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम॰-साइम पडिग्गाहेत्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता[9] आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! मग्गातिक्कते पाण-भोयणे ।
जे ण निग्गथे[10] वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्ज[11] •असण-पाण-खाइम॰साइमं पडिग्गाहेत्ता पर बत्तीसाए कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! पमाणातिक्कते पाण-भोयणे ।
अट्ठ कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे[12], दुवालस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए[13], सोलस

---

१. स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।
२. सं० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
३. स० पा०—महयाअप्पत्तिय जाव आहारेइ ।
४. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
५. क्षेत्रं—सूर्यसवन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थः । तद-तिक्रान्तं यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तम् (वृ) ।
६. सं० पा०—निग्गथे वा जाव साइमं ।
७. उवायणा॰ (अ, म) ।
८. स० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।
९. वीइक्कमावइत्ता (स) ।
१०. निग्गथो (क, ता, स) ।
११. स० पा०—एसणिज्ज जाव साइम ।
१२. साधुर्भवतीति गम्यम् ।
१३. अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअडगपमाण[1]•मेत्ते कवले° आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए[2], बत्तीस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे नो पकामरसभोईति वत्तव्व सिया। एस ण गोयमा ! खेत्तातिक्कतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२५. अह भते ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[3], एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे ववगय-चुय-चइय-चत्तदेहं, जीवविप्पजढ, अकय, अकारियं, असंकप्पिय, अणाहूय, अकीयकड, अणुद्दिट्ठ, नवकोडीपरिसुद्ध, दसदोसविप्पमुक्कं, उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्ध, वीतिंगाल, वीतधूम, सजोयणादोसविप्पमुक्क, असुरसुर[4], अचवचव, अदुय, अविलबिय, अपरिसाडि, अक्खोवजण-वणाणुलेवणभूय, सजमजायामायावत्तिय, सजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[5] •एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स° पाण-भोयणस्स अट्ठे[6] पण्णत्ते ॥

२६. सेवं भते ! सेव भते । त्ति[7] ॥

बीओ उद्देसो

सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पदं

२७. से नूणं भते ! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति ? दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खाय भवति ॥

---

१. स० पा०—°पमाणे जाव आहार° ।
२. ओमोदरिया (अ, ता, स); ओमोदरियाए (ब)।
३. °पारि° (ता) ।
४. असुरुसुर (ता) ।
५. स० पा०—सत्थपरिणामियस्स जाव पाण ।
६. अयमट्ठे (अ) ।
७. भ० १।५१ ।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वपाणेहिं जाव[1] सव्वसत्तेहिं[2] •पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति° ? सिय दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागय भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति।
एव खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भास भासइ, मोस भास भासइ। एव खलु से मुसावाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविहं तिविहेण असजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंवुडे, एगंतदंडे, एगतबाले यावि भवति।
जस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति।
एव खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ। एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि तिविह तिविहेणं सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, सवुडे, एगतपडिए यावि भवति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ[3]—•सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खाय भवति°, सिय दुपच्चक्खाय भवति॥

पच्चक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य, उत्तरगुणपच्चक्खाणे य॥

३०. मूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य, देसमूलगुणपच्चक्खाणे य॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[4],

१. भ० ७।२७।
२. सं० पा०—सव्वसत्तेहिं जाव सिय।
३. स० पा०—वुच्चइ जाव सिय।
४. स० पा०—वेरमणं जाव सव्वाओ।

•सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।।

३२. देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[1], •थूलाओ मुसावायाओ वेरमण, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं°, थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।।

३३. उत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।।

३४. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, त जहा—

गाहा—

१, २. अणागयमइक्कतं ३. कोडीसहिय ४. नियटिय चेव ।
५, ६. सागारमणागारं ७. परिमाणकड ८. निरवसेसं ।
९. संकेय[2] चेव १०. अद्धाए, पच्चक्खाणं भवे दसहा ।।१।।

३५ देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—१. दिसिव्वयं[3] २. उवभोगपरिभोगपरिमाणं ३. अणत्थदडवेरमण[4] ४. सामाइयं ५. देसावगासियं ६. पोसहोववासो ७ अतिहिसविभागो[5] । अपच्छिममारणंतियसलेहणाभूसणाराहणता[6] ।।

पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पदं

३६. जीवा ण भते! कि मूलगुणपच्चक्खाणी? उत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी?
गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ।।

३७ नेरइया ण भते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ।।

---

१. स० पा०—वेरमण जाव थूलाओ ।
२. साएत (ता, म); साकेय (स, वृ); सकेयग (ठा० १०।१०१) केतः चिन्हं सहकेतेन वर्तते सकेतम्—दीर्घता च प्राकृतत्वात् (वृ) ।
३ दिसुव्वतं (ता) ।
४. अणट्ठा° (ता) ।
५. अहासविभाग (म) ।
६. सलेखनामविगणय्य सप्त देशोत्तरगुणा इत्युक्तम्, अस्याश्चैतेषु पाठो देशोत्तरगुणधारिणाऽपीयमन्ते विधातव्येत्यस्यार्थस्य ख्यापनार्थः (वृ) ।

३८. एवं जाव[1] चउरिंदिया ।।

३९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

४०. एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ।।

४१. एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा[3] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तर-गुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।।

४२. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।।

४३. जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ।।

४४. नेरइयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ।।

४५. एवं जाव[4] चउरिंदिया ।।

४६. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुण-पच्चक्खाणी[5], अपच्चक्खाणी वि ।।

४७. [6]•मणुस्साणं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सव्वत्थोवा जीवा (अ) ।
४. पू० प० २ ।
५. ° पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स) ।
६. सं० पा०—मणुस्सा जहा जीवा ।

४८ वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४९. एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥

५०. [2]•एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अप्पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

५१. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा° ॥

५२. जीवा णं भंते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि,[3] •देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव । सेसा अपच्चक्खाणी जाव[4] वेमाणिया ॥

५३. एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दंडए जाव[5] मणुस्साणं ॥

५४ जीवा णं भंते ! किं संजया ? असंजया ? संजयासंजया ?

गोयमा ! जीवा संजया वि,[6] •असंजया वि, संजयासंजया वि ।° एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्वं जाव[7] वेमाणिया । अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्वं[8] ॥

५५. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

२. सं० पा०—एवं अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्ले दंडए, नवरं—सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।

३. सं० पा०—तिण्णि वि ।

४. पू० प० २ ।

५. भ० ७।४०-४२ ।

६. सं० पा०—तिण्णि वि ।

७. प० ३२ ।

८ भ० ७।४०-४२ ।

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि,[1] °अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी वि ॥

५६. एवं मणुस्साण वि[2] । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया । सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव[3] वेमाणिया ॥

५७. एएसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीण[4] °अपच्चक्खाणीण पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्ज-गुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा[5] ॥

सासय-असासय-पदं

५८. जीवा णं भंते ! किं सासया ? असासया ?

गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[6]—°जीवा सिय सासया°, सिय असासया ॥

६०. नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?

एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि । एवं जाव[7] वेमाणिया सिय सासया, सिय असासया ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१. सं० पा०—तिण्णि वि ।
२. वि तिण्णि वि (अ, स) ।
३. पू० प० २ ।
४. सं० पा०—पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया
५. तुलना—भ० ६।६४ ।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।
७. पू० प० २ ।
८. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-आहार-पदं

६२. वणस्सइक्काइया णं भंते ! कं[1] कालं सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवंति ?
गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं[2] च णं सरदे[3], तदाणंतरं च णं हेमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे । गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति ॥

६३. जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ?
गोयमा ! गिम्हासु णं वहवे उसिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए वक्कमंति, चयंति[4], उववज्जंति । एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया[5], °फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ॥

६४. से नूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा[6], °खंधा खंधजीवफुडा, तया तयाजीवफुडा, साला सालजीवफुडा, पवाला पवालजीवफुडा, पत्ता पत्तजीवफुडा, पुप्फा पुप्फजीवफुडा, फला फलजीवफुडा°, बीया बीयजीवफुडा ?
हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ॥

६५. जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाव[7] बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सइकाइया आहारेंति ? कम्हा परिणामेंति ?
गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति । कंदा कंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति । एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति ॥

---

१. किं (क, म) ।
२. तद° (व) ।
३ सरए (अ) ।
४. विउक्कमंति (अ, क); विउक्कमंति चयंति (स) ।
५. सं० पा०—पुप्फिया जाव चिट्ठंति ।
६. सं० पा०—कंदजीवफुडा जाव बीया ।
७. भ० ७।६४ ।

अणंतकाय-पदं

६६. अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सिरिलि[1], किट्टिया[2], छिरिया, छीरविरालिया[3], कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, खेलूडे[4] भद्दमोत्था[5], पिंडहलिद्दा[6], लोही, णीहू, थीहू, थिभगा[7], अस्सकण्णी, सीहकण्णी, सिउंढी[8], मुसंढी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता[9] ?
हंता गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ॥

अप्पकम्म-महाकम्म-पदं

६७. सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय[10] ॥

६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥

६९. सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥

७०. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥

७१. एवं असुरकुमारे वि, नवरं—तेउलेसा अब्भहिया । एव जाव[11] वेमाणिया । जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ । जोइसियस्स न भण्णइ जाव—

७२. सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए ? सुक्कलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥

७३. से केणट्ठेणं ?[12] °गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा !° जाव महाकम्मतराए ॥

---

१. सिस्सेरिलि (ता) ।
२. किट्टिया (अ, ता) ।
३. छीरि° (अ) ।
४. खल्लूडे (अ); खल्लुए (ता) ।
५. अद्दमोत्था (अ, म, स) ।
६. भिंड° (क) ।
७. विभंगा (अ); थिरुगा (म, स) ।
८. सीहुंढी (अ); सीदंडी (क); सदिट्ठी (ब); सीदवी (म); सादंठी (स) ।
९. विचित्तविहिसत्ता (वृपा) ।
१०. सिया (अ, व) ।
११. पू० प० २ ।
१२. स० पा०—सेस जहा नेरइयस्स ।

वेदणा-निज्जरा-पदं

७४. से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! कम्मं[1] वेदणा, नोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेणं गोयमा[2] ! •एवं वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७६. नेरइया ण भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेदणा, नोकम्मं निज्जरा। से तेणट्ठेण गोयमा[3] ! •एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७८. एव जाव[4] वेमाणियाण ॥

७९. से नूणं भते ! जं वेदेसु तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु तं वेदेसु ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जं वेदेसु नो तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु नो त वेदेसु ?
गोयमा ! कम्मं वेदेसु, नोकम्म निज्जरेसु। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो त वेदेसु ॥

८१. एवं[5] नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ॥

८२. से नूणं भते ! ज वेदेति त निज्जरेति ? ज निज्जरेति त वेदेति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो तं वेदेति ?
गोयमा ! कम्म वेदेति, नोकम्मं निज्जरेति। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो तं वेदेति ॥

८४. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८५. से नूण भते ! ज वेदिस्सति तं निज्जरिस्संति ? ज निज्जरिस्सति त वेदिस्सति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. कम्म (अ, क, म)।
२. स० पा०—गोयमा जाव न।
३. स० पा०—गोयमा जाव न।
४. पू० प० २।
५ नेरइया ण भते ! ज वेदेसु त निज्जरेसु एव (अ, क, ता, व, म, स)।

८६. से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति ?
गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति। से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति ॥

८७. एव नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८८. से नूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणा-समए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्ज-रासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! जं समयं वेदेति नो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति नो त समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति। अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए। से तेणट्ठेण जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ॥

९०. नेरइया णं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया णं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! नेरइया ण ज समय वेदेति नो त समयं निज्जरेति, ज समय निज्जरेति नो तं समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति। अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए। से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए ॥

९२. एव जाव वेमाणियाणं ॥

सासय-असासय-पदं

९३. नेरइया णं भंते ! कि सासया ? असासया ?
गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ॥

९४. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेण जाव सिय सासया, सिय असासया ॥

९५. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥

९६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[1] ॥

---

१. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

संसारत्थजीव-पदं

९७. रायगिहे नयरे जाव[1] एव वयासि—कतिविहा ण भते! ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा! छव्विहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया। एव जहा जीवाभिगमे जाव[2] एगे जीवे एगेण समएण एगं किरिय पकरेइ, त जहा—सम्मत्तकिरिय वा, मिच्छत्तकिरिय वा[3]॥

९८. सेव भते! सेव भते! त्ति[4]॥

पंचमो उद्देसो

जोणीसगह-पदं

९९. रायगिहे जाव एवं वयासी—खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भते! कतिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ?
गोयमा! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते, तं जहा—अडया, पोयया, संमुच्छिमा। एवं जहा जीवाभिगमे जाव[5] नो चेव ण ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहालया ण गोयमा! ते विमाणा पण्णत्ता[6]॥

१००. सेवं भते! सेव भते! त्ति[7]॥

---

१. भ० १।४-१०।

२. जी० ३।

३. अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जीवा छव्विह पुढवी,
जीवाण ठिती भवट्ठिती काये।
निल्लेवण अणगारे,
किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता॥
(अ, ता, व, म, स, वृपा)।

४. भ० १।५१।

५. जी० ३।

६. अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जोणीसगह-लेसा,
दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे।
उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-
वीहीओ॥ (वृपा)।

७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए[2], से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ?
गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारेसु वि, एव जाव[3] वेमाणिएसु ।।

१०२. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कि इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसवेदेइ ?
गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउयं पडिसवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसंवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउय पडिसवेदेइ । एव जाव वेमाणिएसु ।।

१०३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! किं इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेदण वेदेति, आहच्च सायं ।।

१०४. जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा।
गोयमा । इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतसात वेदण वेदेति, आहच्च असायं[4] । एव जाव[5] थणियकुमारेसु ।।

१०५ जीवे ण भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एव उववज्जमाणे वि, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदण वेदेति । एव जाव[6] मणुस्सेसु । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ।।

१०६. जीवा णं भते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव[7] वेमाणिया ।।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. उववज्जति (ब) ।
३. पू० प० २ ।
४. अस्सायं (अ, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. पू० प० २ ।
७. पू० प० २ ।

कक्कस-अकक्कसवेयणीय-पदं

१०७. अत्थि णं भंते ! जीवाण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ।।

१०८. कहण्ण भते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[1] मिच्छादसणसल्लेणं —एव खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ।।

१०९. अत्थि ण भते ! नेरइया ण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
एव चेव । एव जाव[2] वेमाणियाण ।।

११०. अत्थि ण भते ! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ।।

१११. कहण्णं भते ! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[3] परिग्गहवेरमणेण, कोहविवेगेण जाव[4] मिच्छादसणसल्लविवेगेण—एव खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ।।

११२. अत्थि ण भते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एव जाव वेमाणियाण, नवर—मणुस्साणं जहा जीवाणं ।।

सायासाय-वेयणीय-पदं

११३. अत्थि ण भते ! जीवाण सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ।।

११४. कहण्ण भते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाणुकपयाए, भूयाणुकपयाए, जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूण पाणाण[5] °भूयाण जीवाण° सत्ताण अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।।

११५. अत्थि ण भते ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हता अत्थि ।।

११६. कहण्णं भते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, पर-

---

१. भ० १।३८४ ।
२. पू० प० २ ।
३. भ० १।३८५ ।
४. ठा० १।११५-१२५ ।
५. स० पा०—पाणाणं जाव सत्ताण ।

पिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं[1] •भूयाणं जीवाण० सत्ताण दुक्ख-णयाए, सोयणयाए[2], •जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिट्टणयाए०, परियावणयाए—एव खलु गोयमा ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण वि, एव जाव वेमाणियाण ।।

दुस्समदुस्समा-पदं

११७ जबुद्दीवे णं भते ! दीवे[3] इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-कट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भंभब्भूए[4] कोलाहलभूए[5] । समाणुभावेण[6] य ण खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरा वाया सवट्टगा य वाहिंति । इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समता रउस्सला[7] रेणुकलुस-तमपडल-निरालोगा । समयलुक्खयाए य ण अहिय चंदा सीय मोच्छति[8] । अहिय[9] सूरिया तवइस्सति । अदुत्तरं च ण अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[10] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,[11] वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चडानिलपहय-तिक्खधारा-निवायपउर वास वासिहिति, जेण भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडब-दोणमुह-पट्टणासमगयं[12] जणवय, चउप्पयगवेलए, खहयरे य पक्खि-सघे, गामारण्ण-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धसेहिति, पव्वय-गिरि-डोगरुत्थल[13]-भट्ठिमादीए वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिति,सलिलबिल-गड्ड-दुग्गविसमनिण्णुन्नयाइ च गंगा-सिधुवज्जाइ समीकरेहिति ।।

११८. तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सति ?

गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-ब्भूया[14] तत्तसमजोतिभूया[15] धूलिबहुला रेणुबहुला पकवहुला पणगबहुला चलणि-

---

१. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
२. स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।
३. दीवे भारहे वासे (अ, क, व, म, स) ।
४. भभाभूए (अ, क, म); भभेभूए (व) ।
५. कोलाहलग० (क, व, म) ।
६. समयाणु० (स, वृ) ।
७. रयोसला (क, ता, ब, म); रओसला (स) ।
८. मोच्छिति (अ, क, ता, ब, म, स) ।
९. अहित (क, व, म) ।
१०. खट्टमेहा (म), खत्तमेहा (वृपा) ।
११. अजवणिज्जोदगा (अ, ब, स, वृपा), अप्पि-वणिज्जोदया (क, म); अवणिज्जोदगा (ता)
१२. ०समा० (ब, स) ।
१३. डोगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।
१४. कवल्लय० (क); कवल्लग० (ता) ।
१५. प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा स्थानागस्य

बहुला[१] बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा[२] यावि भविस्सति ।

११६. तीसे णं भंते ! समाए भरहे[३] वासे मणुयाणं केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा दुवण्णा[४] दुग्गंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता[५] •अप्पिया असुभा अमणुण्णा° अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा[६] अणिट्ठस्सरा •अकंतस्सरा अप्पियस्सरा असुभस्सरा अमणुण्णस्सरा° अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बंध-वेरनिरया, मज्जायातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोग-विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मसु-रोमा, काला, खर-फरुस-झामवण्णा, फुट्टसिरा, कविलपलियकेसा, बहुण्हारुसंपिणद्ध[७]-दुद्दंसणिज्जरूवा, संकुडितवलीतरंगपरिवेढियंगमंगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदंतसेढी, उब्भडघडामुहा[८] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[९]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छु-कसराभिभूया, खरतिक्खनखकंडूइय[१०]-विक्खयतणू[११], दद्दु-किडिभ-सिब्भ[१२]-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलंगा, टोलगति[१३]-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुअट्ठिगविभत्त-दुब्बला कुसंघयणं-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-कुभोइणो, असुइणो, अणेगवाहि-परिपीलियंगमंगा, खलत-विब्भलगती[१४], निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ठ-नट्ठतेया, अभिक्खण सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्झडियमलिणपंसुरउग्गुंडियंगमंगा[१५], बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, उस्सण्ण धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा, उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, 'पुत्तनत्तुपरिवाल-पणयबहुला'[१६] गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयड्ढं च पव्वयं

(८।१०) सूत्रे 'तत्त' पद पृथग् गृहीत, वृत्तावपि च तथैव व्याख्यातमस्ति । जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति (२ वक्षस्कार) वृत्तौ अत्र च 'तत्त' पदं समस्तं गृहीतमस्ति, व्याख्यातमपि च तथैव ।

१. चलनप्रमाण. कर्दमश्चलनी (वृ) ।
२ दोन्निक्कमा (अ, स) ।
३. भारहे (अ, क, स) ।
४. दुव्वण्णा (ता, ब, म) ।
५. सं० पा०—अकंता जाव अमणामा ।
६. सं० पा०—अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा
७. °ण्हारुणि° (अ, ब, स), °ण्हारुणिसंविणद्ध (ता) ।
८. °घडमुहा (अ, म), °घडोमुहा (क, ब); °घाडामुहा (ता वृपा), घडग=घडा । अत्र एकपदे सन्धिर्जात ।
९. बंग (क, ता, व, म, वृपा) ।
१०. °कदूइय (ता, व, स) ।
११. विक्कय (अ, क) ।
१२. सिंभ (ता, स) ।
१३. टोलागति (ता, व, म, वृपा) ।
१४. वभल (अ); वेभल (क, ता) ।
१५. °रयपुंडियगमंगा (अ) ।
१६. °परियार० (अ); °परियाल० (ब, स); °परिपालणवहुला (क, वृपा) ।

निस्साए बात्तवरिं[1] निग्रोदा[2] वीय वीयमेत्ता[3] बिलवासिणो भविस्संति ।।

१२०. ते ण भते ! मणुया क आहार आहारेहिति ?
गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं गगा-सिधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जल वोज्झिहिति, से वि य ण जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव ण आउबहुले भविस्सति । तए ण ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य बिलेहिंतो निद्धाहिति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइ गाहेहिति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति ।।

१२१. ते णं भते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा, उस्सण्ण[4] मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे काल किच्चा कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२२. ते ण भते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा, निस्सीला तहेव जाव[5] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२३. ते ण भते ! ढका, कका, विलका[6], मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव[7] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२४ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[8] ।।

सत्तमो उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

१२५ सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स[9], •आउत्त चिट्ठमाणस्स, आउत्त निसीयमाणस्स°, आउत्त तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कबल

---

१. वाहत्तरि (ता, ब) ।
२. नियोया (ता) ।
३. बीयामेत्ता (अ, क, व, म, स) ।
४. ओस्सण्ण (अ, स) ।
५. भ० ७।१२१ ।
६ पिलका (अ) ।
७. भ० ७।१२१ ।
८ भ० १।५१ ।
९. स० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्त ।

पादपुछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! कि इरिया-वहिया[1] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! सवुडस्स णं अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ।।

१२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया, किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवति, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ[2], •जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति, तस्स णं सपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स इरिया-वहिया किरिया कज्जइ°, उस्सुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ। से ण अहासुत्तमेव रीयइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सवुडस्स ण अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ[3] ।।

काम-भोग-पदं

१२७. रूवी भते ! कामा ? अरूवी कामा ?

गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ।।

१२८. सचित्ता भते ! कामा ? अचित्ता कामा ?

गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ।।

१२९ जीवा भते ! कामा ? अजीवा कामा ?

गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ।।

१३०. जीवाण भते ! कामा ? अजीवाण कामा ?

गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ।।

१३१ कतिविहा ण भते ! कामा पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा य, रूवा य ।।

१३२. रूवी[4] भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?

गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ।।

१३३ सचित्ता भते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?

गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।।

१३४ जीवा भते ! भोगा[5] ? •अजीवा भोगा ?°

गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।।

---

१. रिया० (व)।

२ स० पा०—तहेव जाव उस्सुत्त ।

३. तुलना—भ० ७।२०, २१ ।

४. रूविं (अ, क, ता, व, म, स) ।

५. स० पा०—भोगा पुच्छा ।

१३५. जीवाणं भंते ! भोगा ? अजीवाण भोगा ?
गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाण भोगा ।।

१३६. कतिविहा ण भते ! भोगा पण्णता ?
गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, त जहा—गधा, रसा, फासा ।।

१३७. कतिविहा ण भते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा काम-भोगा पण्णता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ।।

१३८. जीवा ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ।।

१३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
गोयमा ! सोइदिय-चक्खिदियाइ पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! •एव वुच्चइ-जीवा कामी वि°, भोगी वि ।।

१४०. नेरइया ण भते ! किं कामी ? भोगी ?
एव चेव जाव[2] थणियकुमारा ।।

१४१. पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ।।

१४२. से केणट्ठेण जाव भोगी ?
गोयमा ! फासिदिय पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव भोगी । एव जाव वणस्सइ-काइया । बेइदिया एव चेव, नवर—जिब्भिदियफासिदियाइ पडुच्च । तेइदिया वि एवं चेव, नवर—घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च ।।

१४३. चउरिदियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! चउरिदिया कामी वि, भोगी वि ।।

१४४. से केणट्ठेण जाव भोगी वि ?
गोयमा ! चक्खिदिय पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइं पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेण जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया ।।

१४५. एएसि ण भते ! जीवाणं 'कामभोगीण, नोकामीणं, नोभोगीण, भोगीण'[3] य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—गोयमा जाव भोगी ।
२. × (अ), एव जाव (क, व, म, स); पू० प० २ ।
३. कामीए भोगीए नोकामीण नोभोगीण य (क, ता) ।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा[1] ॥

दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पदं

१४६. छउमत्थे ण भंते ! मणूसे जे[2] भविए अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेण, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भते ! एयमट्ठ एवं वयह[3] ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइ विपुलाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४७. आहोहिए[4] ण भते ! मणूसे जे भविए अण्णयरेसु देवलोएसु[5] °देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेणं, वलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४८. परमाहोहिए ण भते ! मणूसे जे भविए तेणेव[6] भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव[7] अत करेत्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी[8] °नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं वीरिएण पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूण भते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ° ॥

---

१. मणत० (ता) ।
२ मणुस्से (ता) ।
३ वदहा (ता, व) ।
४. अहोहिएए (ता, व) ।
५. स० पा०—एव चेव जहा छउमत्थे जाव महा° ।
६. तेणं चेव (क, ता, व, म) ।
७. भ० १।४४ ।
८. सं० पा०—सेस जहा छउमत्थस्स ।

१४९. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं[1] •सिज्झित्तए जाव[2] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे॰, महापज्जवसाणे भवति ॥

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया जाव[3] वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए ण अंधा, मूढा, तमपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ।

१५१. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता ! अत्थि ॥

१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेण अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ॥

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता अत्थि ॥

१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देव-

---

१. सं० पा०—एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा॰ ।
२. भ० १।४४ ।
३. भ० १।४३७ ।

लोगगयाइ रूवाइं पासित्तए, एस ण गोयमा ! पभू वि पकामनिकरण वेदण वेदेति ।।

१५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ।।

अट्ठमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

१५६. छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणतं सासयं समय केवलेण सजमेणं, [2]•केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे जाव[3]—

१५७. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया[4]° ।।

हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद

१५८. से नूण भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
हता गोयमा ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ।
[5]•से नूण भते ! हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एव अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव ?
कुथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?

---

१. भ० १।५१ ।
२. स० पा०—एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु ।
३. भ० १।२०१-२०८ ।
४. तुलना—भ० १।२००-२०६; ५।११५ ।
५. स० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे जाव खुड्डिय ।

हंता गोयमा हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पकिरियतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पासवतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,
एव आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहि हत्थीओ कुथू अप्पतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महातराए चेव ।।

१५९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवाया निवायगभीरा। अह ण केइ पुरिसे जोइ व दीव व गहाय त कूडागारसालं अंतो-अतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-निच्छिड्डाइ दुवार-वयणाइ पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए त पईव पलीवेज्जा।
तए ण से पईवे त कूडागारसालं अतो-अतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं बाहि ।
अह ण से पुरिसे त पईव इड्डुरएणं पिहेज्जा, तए ण से पईवे तं इड्डुरय अतो अतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं इड्डुरगस्स बाहिं, नो चेव णं कूडागारसाल, नो चेव ण कूडागारसालाए बाहि ।
एव—गोकिलिजेण पच्छियापिडएण गडमाणियाए आढएण अद्धाढएण पत्थएणं अद्धपत्थएण कुलवेण अद्धकुलवेण चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए ।
अह ण पुरिसे त पईव दीवचपएण पिहेज्जा। तए ण से पदीवे दीवचपगस्स अंतो-अतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण दीवचपगस्स बाहिं, नो चेव ण चउसट्ठियाए बाहिं, नो चेव ण कूडागारसाल, नो चेव णं कूडागारसालाए बाहि ।
एवामेव गोयमा ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्ध बोदि निव्वत्तेइ त असंखेज्जेहि जीवपदेसेहि सचित्तीकरेइ—खुड्डिय वा महालिय वा ।° से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! °एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य° समे चेव जीवे[2] ।।

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

१. स० पा०—गोयमा जाव समे ।
२. एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ) ।

हंता गोयमा ! नेरइयाण पावे कम्मे[1] •जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से° सुहे । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ॥

दसविहसण्णा-पदं

१६१. कति ण भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओहसण्णा । एव जाव वेमाणियाण ॥

नेरइयाणं दसविहवेदणा-पदं

१६२. नेरइया दसविह वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—सीयं, उसिणं, खुह, पिवास, कंडु, परज्झ, जर, दाह, भय, सोग ॥

हत्थि-कुथूणं अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

१६३. से नूणं भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कथुस्स य[3] •समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

१६४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ[4]—•हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ।

अहाकम्मादि-पदं

१६५ अहाकम्म ण भंते ! भुजमाणे किं बंधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ?
[6]•गोयमा ! अहाकम्मं ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ°[7] जाव सासए पडिए, पडियत्त असासय ।

१६६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. स० पा०—कम्मे जाव सुहे ।
२. पू० प० २ ।
३. स० पा०—कुथुस्स य जाव कज्जइ ।
४. स० पा०—वुच्चइ जाव कज्जइ ।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ।
६. स० पा—एव जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व ।
७ भ० १।४३६-४४० ।
८. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

असंवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पदं

१६७. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूवं विउव्वित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६८. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूवं[1] •विउव्वित्तए ?•
हंता पभू ॥

१६९. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अण्णत्थगए पोग्गले[2] •परियाइत्ता• विकुव्वइ।
एवं २. एगवण्णं अणेगरूवं[3] ३ •अणेगवण्ण एगरूव ४. अणेगवण्ण अणेगरूव— चउभंगो ॥

१७०. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालग पोग्गल नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? नीलग पोग्गल वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। परियाइत्ता पभू जाव[4]—

१७१. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू निद्धपोग्गल लुक्खपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? लुक्खपोग्गल वा निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। परियाइत्ता पभू ॥

१७२. से णं भंते किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति• ॥

---

१. सं० पा०—एगरूव जाव हंता।
२. सं० पा०—पोग्गले जाव विकुव्वइ।
३. सं० पा०—चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इह वि भाणियव्व, नवरं अणगारे इहगय च इहगते चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गल निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए। हंता पभू। से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ।
४. भ० ६।१६३-१६७।

महासिलाकंटयसंगाम-पदं

१७३ नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था[1] ? गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते जइत्था[2], नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था ॥

१७४ तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइं[3] हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥

१७५ तए णं ते कोडुंवियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[4] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं[5] उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छियं सुसज्जं जाव[6] भीमं संगामियं अओज्झं[7] उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं° सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

१७६. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए[10] पिणद्धगेवेज्ज[11]-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे[12] मंगलजयसद्दकयालोए[13] जाव[14] जेणेव उदाई हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे ॥

---

१ पराजितत्था (ता)।

२ जदित्था (क, ता)।

३ उदायिं (क, ता, ब, म); उदातिं (स)।

४. भ० ३।११०।

५ सुणिउणेहिं एवं जहा ओववाइए जाव (अ, क, ता, ब, म, स)। वाचनान्तरे त्विद-साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।

६. ओ० सू० ५७।

७. अउज्झं (ब, स)।

८ सं० पा०—गय जाव सण्णाहेंति।

९ सं० पा०—करयल जाव कूणियस्स।

१०. °पट्टीए (अ, क, ब, म, स)।

११ पिणिद्ध° (ता, म, स)।

१२. °वीतियंगे (अ, स); °वीतितंगे (क, ब)।

१३ जत° (ब); °कयलोए एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, ब, म, स)।

१४. ओ० सू० ६३।

१७७. तए णं से कूणिए राया[1] हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे[2] जाव[3] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटगं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य। 'एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए'[4], एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए॥

१७८. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए[5] दिसोदिसिं पडिसेहित्था॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे ?
गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सव्वे से जाणेइ महासिलाए अहं[6] अभिहए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे॥

१८०. महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! चउरासीइं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ॥

१८१ ते णं भंते ! मणुया निस्सीला[7] •निग्गुणा निम्मेरा॰ निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया ? कहिं उववण्णा ?
गोयमा ! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववण्णा॥

रहमुसलसंगाम-पदं

१८२. नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—रहमुसले संगामे[8]। रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ?
गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था॥

---

१. णरिंदे (क, ता, व, म)।
२. ॰वच्छे एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, व, म, स)।
३. ओ॰ सू॰ ६५।
४. × (अ, व, म, स)।
५. किच्छोवगयपाणे (ना॰ १।८।१६६)।
६. ह (क, व, म)।
७. स॰ पा॰—निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाण।
८. संगामे रह २ (ता)।

१८३. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं[1] •जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

१८४ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[2] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छियं सुसज्जं जाव[3] भीमं संगामियं अओज्झं भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

१८५ तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरबालवीजियंगे, मंगलजयसद्दकयालोए जाव[4] जेणेव भूयाणंदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणंदं हत्थिरायं दुरूढे ।।

१८६ तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे जाव[5] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ°। मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[6] एगं महं आयसं किढिणपडिरूवगं[7] विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए[8],

---

१. स० पा०—सेसं जहा महासिलाकंटए नवरं भूयाणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एवं तहेव जाव चिट्ठइ।

२. ३।११०।

३ ओ० सू० ५७।

४. ओ० सू० ६३।

५. ओ सू० ६५।

६. असुरराया (अ, स)।

७. कढिण° (अ), किड्ढिण° (क, स)।

८. स० पा०—तहेव जाव दिसोदिसिं।

•एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ।।

१८७ तए णं से कूणिए राया रहमुसल सगाम सगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-द्धयपडागे किच्छपाणगए° दिसोदिसि पडिसेहित्था ।।

१८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—रहमुसले सगामे ?
गोयमा ! रहमुसले ण सगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खय, जणवहं, जणप्पमद्द, जणसवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वओ समता परिधावित्था। से तेणट्ठेण[1] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—रहमुसले सगामे ।।

१८९ रहमुसले णं भते ! सगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! छण्णउति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।।

१९० ते ण भते ! मणुया निस्सीला[2] •निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे काल किच्चा कहिं गया ? कहिं° उववन्ना ?
गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए[3] कुच्छिसि उववन्नाओ। एगे देवलोगेसु उववन्ने। एगे सुकुले पच्चायाए। अवसेसा उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।।

१९१ कम्हा ण भते ! सक्के देविदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्ज[4] दलइत्था ?
गोयमा ! सक्के देविदे देवराया पुव्वसगतिए, चमरे असुरिदे असुरकुमारराया परियायसगतिए। एव खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्ज दलइत्था ।।

वरुण-नागनत्तुय-पदं

१९२. वहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ—एवं खलु वहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु सगामेसु 'अभिमुहा चेव पहया'[6] समाणा कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ।।

१९३ से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्णं से वहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[7] •जाव[8] परूवेइ—एव

---

१ स० पा०—तेणट्ठेण जाव रह° ।
२. स० पा०—निस्सीला जाव उववन्ना ।
३. मच्छीए (म) ।
४. साहिज्ज (क); साहज्ज (ता, म) ।
५. भ० १।४२० ।
६. अभिहता चेव पहता (क, स), अभिहया (ता)
७. स० पा०—एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो ।
८. भ० १।४२० ।

खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव[1] परूवेमि—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ—अड्ढे जाव[3] अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेणं'[5] पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणि-क्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति॥

१९४ तए णं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायाभिओगेणं[6], गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव[8] उवट्ठावेह[9], हय-गय-रह-पवर[10]-°जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह°, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

१९५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[11] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव[12] चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेंति, हय-गय-रह[13]-°पवरजोहकलियं चाउरं-गिणिं सेणं° सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव[14] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

१९६ तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, [15]°उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए[16] सकोरेंटमल्ल[17]-

---

१. भ० १।४२१।
२. ओ० सू० १।
३. भ० २।९४।
४. भ० २।९४।
५ वृत्तौ उद्धृते पाठे एतन्नास्ति। भ० २।९४ सूत्रादसौ पाठः पूरितस्तत्रापि 'क' प्रतौ एतत् नास्ति।
६. रायाहियोगेणं (अ, स); रायनियोगेण (ता)
७. कोदुंबिय° (ता); कोटुंबिय° (स)।
८. युक्तमेव रथसामग्र्या इति गम्यम् (वृ)।
९ उवट्ठवेह (अ)।
१०. सं० पा०—पवर जाव सण्णाहेत्ता।
११. भ० ७।१७५।
१२ राय० सू० ६८१; वाचनान्तरे तु साक्षादेव दृश्यते (वृ)।
१३. सं० पा०—रह जाव सण्णाहेंति।
१४. भ० ७।१७५।
१५. सं० पा०—जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते।
१६. पू० भ० ७।१७६।
१७. सं० पा०—सकोरेंटमल्ल जाव धरिज्ज°।

•दामेण छत्तेणं° धरिज्जमाणेणं, अणेगगणनायग[1]- •दडनायग-राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°-दूय-सधिपालसद्धि[2] सपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घट आसरह दुरुहइ[3], दुरुहित्ता हय-गय-रह[4]-•पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि° सपरिवुडे, महयाभडचडगरविदपरिक्खित्ते[5] जेणेव रहमुसले सगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं सगाम ओयाए ॥

१९७. तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसल संगाम ओयाए समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स जे पुव्वि पहणइ से पडिहणित्तए[6], अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसल सगाम सगामेति ॥

१९८. तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'[7] सरिसभडमत्तोवगरणे रहेण पडिरहं हव्वमागए ॥

१९९. तए णं से पुरिसे वरुण नागनत्तुय एव वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

२००. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एव वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्वि अहयस्स पहणित्तए, तुम चेव णं पुव्वि पहणाहि ॥

२०१. तए ण से पुरिसे वरुणेण नागनत्तुएण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाण ठाति, ठिच्चा आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता वरुण नागनत्तुय गाढप्पहारीकरेइ ॥

२०२. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता त पुरिस एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ ॥

२०३. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खमति,

---

१. स० पा०—अणेगगणनायग जाव दूय ।
२. सधिवाल० (अ, क, ब, म); सधिवालग० (ता) ।
३. द्रुहेति (क); द्रुहति (ता, ब) ।
४. स० पा०—रह जाव सपरिवुडे ।
५. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स)
६. पडिपह० (ता) ।
७. सरिसत्तए सरिसव्वए (क) ।
८. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
९. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

पडिनिक्खमित्ता एगतमंतं[1] अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसथारग सथरइ, सथरित्ता दब्भसथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसण्णे करयल[2]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अजलि° कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु ण अरहताणं भगवंताण जाव[3] सिद्धिगतिनामधेय ठाण सपत्ताण, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव[4] सिद्धिगतिनामधेय ठाणं सपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि ण भगवत तत्थगयं इहगए, पासउ[5] मे से भगव तत्थगए[6]•इहगय ति कट्टु° वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—पुव्वि पि ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एव जाव[7] थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणि पि ण अह तस्सेव भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए•[8] जाव[9] मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विह पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। ज पि य इमं सरीर इट्ठ कत पियं जाव[10] मा णं वाइय-पित्तिय-सेभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु° एयं पि ण चरिमेहि ऊसास-नीसासेहि वोसिरिस्सामि त्ति कट्टु सण्णाहपट्ट मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरण करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए[11] कालगए ॥

वरुणनागनत्तुय-मित्त-पदं

२०४. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसल संगाम सगामेमाणे एगेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे[12] •अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे° अधारणिज्जमिति कट्टु वरुण नागनत्तुयं रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खममाण पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा वरुणे जाव[13] तुरए विसज्जेति, पडसथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे[14]

---

१ एगत (क)।
२. स० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. ओ० सू० २१।
४. ओ० सू० २१।
५. पासइ (ता)।
६. स० पा०—तत्थगए जाव वंदइ।
७. भ० ७।३२।
८. स० पा०—एव जहा खदओ जाव एवं।
९. भ० १।३८४।
१०. भ० २।५२।
११. पुव्वि (ता)।
१२. स० पा०—अत्थामे जाव अधारणिज्जमिति
१३. भ० ७।२०३।
१४. स० पा०—पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलि।

•संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए° अजलि कट्टु एवं वयासी—जाइ णं भंते ! मम पियवालवयसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ, ताइ णं 'ममं पि'[१] भवतु त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ[२], मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए ॥

२०५. तए ण त वरुण नागनत्तुय कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहि वाणमतरेहि देवेहि दिव्वे सुरभिगधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए[३], दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए या वि होत्था ॥

२०६. तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुतिं दिव्व देवाणुभाग सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[४] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा[५] •अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति ॥

२०७. वरुणे ण भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ ण अत्थेगतियाणं देवाण चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

२०८. से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, भवक्खएण, ठिइक्खएण[६] •अणंतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अतं करेहिति ॥

२०९. वरुणस्स ण भंते ! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?
गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ॥

२१०. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[७] अंतं काहिति ॥

२११. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[८] ॥

---

१. मम वि (व) ।
२. ओमुयति (अ, क, ता, व) ।
३. निवाडिते (अ, क, ता) ।
४. भ० १।४२० ।
५. स० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।
६. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंत ।
७. भ० ७।२०८ ।
८. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

कालोदाइ-पभितीणं पचत्थिकाए संदेह-पदं

२१२ तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[1]। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलापट्टओ। तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामते बहवे अण्णउत्थिया परिवसति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई[3], उदए, नामुदए[4], नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए[5], संखवालए, सुहत्थी गाहावई॥

२१३. तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ[6] एगयओ सहियाण[7] समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे[8] मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेत्ति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकायं[9]।

तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, 'आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय'[10]। एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकाय जीवकायं पण्णवेति।

तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं। एग च ण समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकायं अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेयं मण्णे एव?

२१४. तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव[11] गुणसिलए चेइए समोसढे जाव[12] परिसा पडिगया॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. सेवलो° (ता)।
४. णामुए (ता); णोमुदए (व)।
५. × (अ, ता, म)।
६. कयाई (क), कदायी (ता, व, म), कयाइ (स)।
७. × (क, ता, व, म, स)।
८. अतमेतारूवे (ता)।
९. आगासत्थिकाय (अ, क, ता, व, म, स); भ० ७।२११८ सूत्रे कालोदायिना प्रतिपादितस्य भगवत सिद्धान्तस्य भगवता स्ववचनेन स्वीकृतिः क्रियते। तत्र 'त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई! अह पचत्थिकायं पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय' एतदनुसारेण एष पाठो युक्तोस्ति, तेन एतदनुसारेणासौ स्वीकृतः।
१०. पोग्गलत्थिकाय आगासत्थिकायं (ता)।
११. भ० १।७।
१२. भ० १।८।

२१५. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे 'गोयमे गोत्तेण'[1] जाव[2] भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जतं भत्त-पाणं पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ[3] °नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंत[4] जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ° रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसिं अण्णउत्थियाण अदूरसामंतेण वीईवयति ॥

२१६. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेण वीईवयमाण पासंति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[5], अय च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेण वीईवयइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयम एयमट्ठ पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगवं गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धमत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकायं[6]। त चेव जाव[7] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेयं गोयमा ! एव ?

कालोदाइस्स समाहाणपुव्वं पव्वज्जा-पद

२१७. तए णं से भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वय देवाणुप्पिया ! अत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो। अम्हे ण देवाणुप्पिया ! सव्व अत्थिभाव अत्थि त्ति वदामो, सव्वं नत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो। त चेयसा[8] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एव वदासी[9], वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[10] भत्त-पाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे जाव[11] पज्जुवासति ॥

२१८. तेण कालेणं तेण समएण समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था। कालोदाई य तं देस हव्वमागए। कालोदाईति ! समणे भगव महावीरे कालोदाइ

---

१. गोयमगोत्ते ण (अ, ता)।
२. एवं जहा वितियसते णियंठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० २।१०६-१०९।
३. सं० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसंभत जाव रिय।
४. भ० २।११० सूत्रे '०मसंभते' इति पाठः स्वीकृतोस्ति।
५. अविउप्पकडा (अ, क, ब, म, वृपा)।
६. आगासत्थिकाय (अ, क, ब, म, स)।
७. भ० ७।२१३।
८. वेदसा (अ, ता, म, वृपा)।
९. वदति (ता,ब, म)।
१०. एवं जहा नियठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स), भ० २।११०।
११ भ० ३।१३।

एवं वयासी—से नूण भे कालोदाई ! अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति तहेव जाव[1] से कहमेय मण्णे एव ? से नूण कालोदाई ! अत्थे समत्थे ?

हता अत्थि । त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई ! अह पचत्थिकायं पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए[2] पण्णवेमि, [3]°त जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एग च णं अह जीवत्थिकाय अरूवीकाय जीवकाय पण्णवेमि ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिाए अरूवीकाए पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय ।° एगं च ण अह पोग्गलत्थिकाय रूविकाय पण्णवेमि ॥

२१९ तए ण से कालोदाई समण भगव महावीरं एव वदासी—एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायसि, अधम्मत्थिकायसि, आगासत्थिकायसि अरूविकायसि अजीवकायंसि चविकया केइ आसइत्तए वा ? सइत्तए वा ? चिट्ठइत्तए[4] वा ? निसीइत्तए वा ? तुयट्टित्तए वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एगंसि ण पोग्गलत्थिकायसि रूविकायसि अजीवकायंसि चविकया केइ आसइत्तए वा, सइत्तए वा[5], °चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा°, तुयट्टित्तए वा ॥

२२०. एयसि ण भते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायसि अजीवकायसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयंसि ण जीवत्थिकायसि अरूविकायसि जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति । एत्थ णं से कालोदाई सबुद्धे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय धम्मं निसामेत्तए । एव जहा खदए तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ जाव[6] विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२१. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

---

१. भ० ७।२१३ ।
२ अजीवताए (क), अजीवत्थिकाए (स) ।
३. स० पा०—तहेव जाव एग ।
४. चिट्ठित्तए (अ, व, ता) ।
५. सं० पा०—सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
६. भ० २।५०-६३ ।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं

२२२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे, गुणसिलए चेइए। तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ जाव[1] समोसढे, परिसा जाव[2] पडिगया ॥

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति ?
हता अत्थि ॥

२२४. कहण्णं भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल विससमिस्सं भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगधत्ताए जाव[3] दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए जाव[4] मिच्छादसणसल्ले, तस्स[5] ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे'[6] दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगधत्ताए जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एव खलु कालोदाई ! जीवाण पावा कम्मा 'पावफलविवागसजुत्ता कज्जति'[7] ।

२२५. अत्थि णं भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जति ?
हता अत्थि ॥

२२६. कहण्ण भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा[8] •कल्लाणफलविवागसजुत्ता॰ कज्जंति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल ओसहमिस्स भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव[9] सुहत्ताए – नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाण पाणाइवायवेरमणे जाव[10] परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव[11] मिच्छादसणसल्लविवेगे, तस्स

---

१. भ० १।७ ।
२. भ० १।८ ।
३. जहा महस्सवए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० ६।२० ।
४. भ० १।३८४ ।
५. तस्य प्राणातिपातादेः (वृ) ।
६. परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म) ।
७. फलविवाग जाव कज्जति (अ); फल जाव कज्जंति (क, ता) ।
८. स० पा०—कम्मा जाव कज्जति ।
९. भ० ६।२२ ।
१०. भ० १।३८५ ।
११. ठा० १।११५-१२५ ।

ण आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमइ। एवं खलु कालोदाई! जीवाण कल्लाणा कम्मा[1] •कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जंति॥

२२७. दो भंते! पुरिसा सरिसया[2] •सरित्तया सरिव्वया° सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धि अगणिकाय समारंभति। तत्थ ण एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ। एएसि णं भंते! दोण्हं पुरिसाण कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[3]? •अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव?° अप्पवेयणतराए चेव? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ?

कालोदाई! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव[4], •महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव। तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से ण पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[5], •अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव॥

२२८. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—तत्थ ण जे से पुरिसे[6] •अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव? अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव°? अप्पवेयणतराए चेव?

कालोदाई! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविक्काय समारभति, बहुतराग आउक्कायं समारभति, अप्पतराग तेउक्कायं समारभति, बहुतरागं वाउकायं समारभति, बहुतराग वणस्सइकाय समारभति, बहुतराग तसकाय समारभति।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविकाय समारभति, अप्पतरागं आउक्कायं समारभति, बहुतरागं तेउक्काय समारभति, अप्पतरागं वाउकायं समारभति, अप्पतराग वणस्सइकायं समारभति, अप्पतरागं तसकायं समारभति। से तेणट्ठेणं कालोदायी![7] •एव वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महा-

---

१. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जति।
२. सं० पा०—सरिसया जाव सरिसभंड°।
३. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
४. स० पा०—चेव जाव महावेयण°।
५. स० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
६. स० पा०—पुरिसे जाव अप्पवेयण°।
७. सं० पा०—कालोदायी जाव अप्पवेयण°।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२९. अत्थि णं भंते! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति? उज्जोवेंति? तवेंति? पभासेंति?
हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भंते! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति[1]? •उज्जोवेंति? तवेंति? ° पभासेंति?
कालोदाई! कुद्धस्स[2] अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहिं-जहिं च णं सा निपतति तहिं-तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[3], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति। एतेणं कालोदाई! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[4], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति ॥

२३१. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२३२. [6]•तए णं से कालोदाई! अणगारे जाव[7] चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[8] ॥

---

१. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
२. विभक्तिपरिणामात्क्रुद्धेन (वृ)।
३. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
४. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं।
६. सं० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख°।
७. भ० १।४३३।
८. भ० १।५१।

अट्ठमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. पोग्गल २ आसीविस ३. रुक्ख ४. किरिय ५. आजीव ६, ७. फासुकमदत्ते ।
८ पडिणीय ९. बंध १०. आराहणा य दस अट्ठमम्मि सते ॥१॥

पोग्गलपरिणति-पद

१. रायगिहे जाव[1] एवं वदासी—कतिविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—पयोगपरिणया, मीसापरिणया[2], वीससापरिणया ॥

(१) पयोगपरिणति-पद

२. पयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियपयोगपरिणया[3], ॰बेइंदियपयोगपरिणया, तेइंदियपयोगपरिणया, चउरिंदियपयोगपरिणया॰, पंचिंदियपयोगपरिणया ॥

३. एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया[4], ॰आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, तेउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, वाउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया॰, वणस्सइकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. मीससा° (अ, स); मीस° (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—एगिंदियपयोगपरिणया जाव पंचिंदिय° ।
४. सं० पा०—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया जाव वणस्सइ° ।

४. पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया य। आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव। एवं दुयओ[1] भेदो जाव वणस्सइकाइया य ॥

५. बेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। एवं तेइंदिय-चउरिंदियपयोगपरिणया वि ॥

६. पंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया, तिरिक्ख-मणुस्स-देवपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

७. नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—रयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोग-परिणया[2] वि जाव[3] अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया वि ॥

८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोग-परिणया, थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, खहचरतिरिक्ख-जोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

९. जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया, गब्भवक्कतियजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१०. थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया, परिसप्पथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

११ चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणिय-पंचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदिय-पयोगपरिणया ॥

१२. एव एएण अभिलावेण परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमा य गब्भ-वक्कतिया य। एव भुयपरिसप्पा वि। एव खहयरा वि ॥

१३. मणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

---

१. दुपओ (क, ब, स, वृपा)।
२. रयणप्पभा° (अ, स)।
३. भ० २।७७।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संमुच्छिममणुस्सपचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियमणुस्सपचिदियपयोगपरिणया ॥

१४. देवपचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासिदेवपचिदियपयोगपरिणया, एव जाव[1] वेमाणिया ॥

१५ भवणवासिदेवपचिंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारदेवपचिदियपयोगपरिणया जाव[2] थणियकुमारदेवपचिंदियपयोगपरिणया ॥

१६ एव एएण अभिलावेण अट्ठविहा वाणमतरा—पिसाया जाव[3] गधव्वा । जोतिसिया पचविहा पण्णत्ता, त जहा—चदविमाणजोतिसिया जाव[4] ताराविमाणजोतिसियदेवपचिदियपयोगपरिणया । वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—कप्पोवगवेमाणिया कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगवेमाणिया दुवालसविहा पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणिया जाव[5] अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया । कप्पातीतगवेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया, अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणिया । गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया नवविहा पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया ॥

१७ अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियपयोगपरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—विजयअणुत्तरोववातिय[7] °कप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोग° परिणया जाव[8] सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोगपरिणया[9] ॥

(२) पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

१८ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा[10]—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[11] °एगिंदियपयोग°

---

१ भ० २।११६ ।
२. पू० प० २ ।
३. ठा० ८।११६ ।
४. ठा० ५।५२ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. ठा० ६।३८ ।
७. स०पा०—विजयअणुत्तरोववतिय जाव परिणया
८. भ० ६।१२१ ।
९. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स) ।
१०. अतोग्रे 'केति अपज्जत्तग पढम भणति पच्छा पज्जत्तग' इति पाठोऽस्ति । वृत्तौ नासौ व्याख्यातोऽस्ति । असौ मतभेदसूचक. पाठो वृत्त्युत्तरकाल मूले प्रक्षिप्तोभूदितिसभाव्यते ।
११. स० पा०—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणया; एगपदे सन्धिरत्र, तेन 'पज्जत्तग' इति परिपदस्य 'पज्जत्ता' इति रूप जातम् ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[1]•एगिंदियपयोग०परिणया य ।
बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया ।
एक्केका दुविहा सुहुमा य, बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा ॥

१९. बेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगबेइंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य । एव तेइंदिया वि, एव चउरिंदिया वि ॥

२०. रयणप्पभपुढविनेरइयपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगरयणप्पभ जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१. संमुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग । एव गब्भवक्कंतिया वि । समुच्छिमचउप्पयथलचरा एव चेव । एवं गब्भवक्कतिया वि । एव जाव संमुच्छिमखहयरगब्भवक्कतिया य । एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा ॥

२२. समुच्छिममणुस्सपचिंदिय—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव ॥

२३. गब्भवक्कतियमणुस्सपचिदिय पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि ॥

२४. असुरकुमारभवणवासिदेवाण पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुरकुमार । एवं जाव[2] थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य ॥

२५. एव एतेण अभिलावेण दुयएण भेदेण पिसाया जाव[3] गधव्वा । चदा जाव[4] ताराविमाणा । सोहम्मकप्पोवगा जाव[5] च्चुतो । हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जकप्पातीत जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्ज । विजयअणुत्तरोववाइय जाव[7] अपराजिय ।

२६ सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय, अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि ॥

---

१. स० पा०—०पुढविकाइय जाव परिणया ।
२. पू० प० ३ ।
३. ठा० ८।११६ ।
४. ठा० ५।५२ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. ठा० ९।३८ ।
७ भ० ६।१२१ ।

(३) सरीरं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

२७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[1]। जे पज्जत्तासुहुम जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, नवर—जे पज्ज-त्तावादरवाउकाइयएगिदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[2]। सेस त चेव ॥

२८ जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव पज्जत्तगा वि। एव जाव अहेसत्तमा ॥

२९. जे अपज्जत्तासंमुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। एव पज्जत्तगा वि। गब्भवक्कतियअपज्जत्ता एव चेव। पज्जत्तगा ण एव चेव, नवर—सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण। एव जहा जलचरेसु चत्तारि आलावग भणिया एव चउप्पया[3]-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्प खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥

३० जे समुच्छिममणुस्सपचिदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर-प्पयोगपरिणया[4]। एव गब्भवक्कतिया वि। अपज्जत्तगा वि, पज्जत्तगा वि एव चेव, नवर—सरीरगाणि पच भाणियव्वाणि ॥

३१. जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एव पज्जत्तगा वि। एव दुयएण भेदेण जाव थणियकुमारा। एवं पिसाया जाव गधव्वा। चदा जाव ताराविमाणा। सोहम्मकप्पो जावच्चुओ। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग जाव उवरिम-उवरिमगेवेज्जग। विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय। एक्केक्के दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[5]-•कप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोग°परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ॥

(४) इंदिय पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३२ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया ते फासिदियपयोगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एव चेव। जे अपज्जत्ताबादरपुढविकाइय एवं चेव। एव पज्जत्तगा वि। एव चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सतिकाइया ॥

---

१. कम्म° (अ, व, म), कम्मग° (स), अत्रापि स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि।

२. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स)।

३. चतुप्पद (क, व)।

४. °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स)।

५. अपज्जत्ता° (अ, क, ता, व, म, स); स० पा०—°वाइय जाव परिणया।

३३. जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिदिय-फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ताबेइंदिय एवं चेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं॥

३४. जे[1] अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2] °कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग°परिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय[3] °घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोग°परिणया॥

(५) सरीरं इंदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३५. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम° एवं चेव। बादरअपज्जत्ता एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि।

एवं एतेणं अभिलावेणं जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[4] °कप्पातीतगवेमाणिय° देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय जाव फासिंदियप्पयोगपरिणया॥

(६) वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३६. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील-लोहिय[5]-हालिद्द-सुक्किलवण्णपरिणया वि; गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अंबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि; फासओ कक्खडफासपरिणया वि[6], °मउयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीलफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि°, लुक्खफासपरिणया वि; संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि, वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-संठाणपरिणया वि।

जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि॥

---

१. जाव (क, ता, ब)।
२. स० पा०—°वाइय जाव परिणया।
३. स० पा०—चक्खिदय जाव परिणया।
४. अपज्जत्ता० (अ, क, ब, स); स० पा०—°वाइय जाव देव०।
५. लोहिग (ता, ब, म)।
६. स० पा०—वि जाव लुक्ख०।

(७) सरीरं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव। एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया[1] ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि॥

(८) इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३८. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव। एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2]-•कप्पातीतगवेमाणिय॰देवपचिंदियसोतिंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि॥

(९) सरीरं इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३९. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव। एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मा-सोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाण परिणया वि। 'एते नव दडगा'[3]॥

मीसपरिणति-पदं

४० मीसापरिणया[4] णं भते! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता?
गोयमा! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पचिंदियमीसापरिणया॥

४१. एगिंदियमीसापरिणया ण भते! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता?
एवं जहा पयोगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया, एव मीसापरिणएहिं वि नव

---

१. ॰जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. स॰ पा॰—॰वाइय जाव देव॰।
३ एवं नव दडगा भणिया (अ, स)।
४. मीस॰ (अ)।

दडगा भाणियव्वा, तहेव सव्व निरवसेस, नवरं—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेस त चेव जाव[1] जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

वीससापरिणति-पदं

४२ वीससापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—वण्णपरिणया, गधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, सठाणपरिणया ।
जे वण्णपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—कालवण्णपरिणया जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणया ।
जे गधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुब्भिगधपरिणया[3], दुब्भिगधपरिणया[4] ।
जे रसपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—तित्तरसपरिणया जाव[5] महुररसपरिणया ।
जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, त जहा—कक्खडफासपरिणया जाव[6] लुक्खफासपरिणया ।
जे सठाणपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—परिमंडलसठाणपरिणया जाव[7] आयतसठाणपरिणया ।
जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि ।
एव जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेस जाव[8] जे सठाणओ आयतसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ॥

एगं दव्वं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

४३. एगे भते । दव्वे कि पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?
गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ॥

पयोगपरिणति-पद

४४. जइ पयोगपरिणए कि मणपयोगपरिणए[9] ? वइपयोगपरिणए[10] ? कायपयोग परिणए[11] ?

---

१. भ० ८।३-३९ ।
२. भ० ८।३६ ।
३. सुगधपरिणया वि(अ, स), सुरभि०(ता, ब) ।
४. दुगधपरिणया वि(अ, स), दुरभि०(ता, ब) ।
५. भ० ८।३६ ।
६. भ० ८।३६ ।
७. भ० ८।३६ ।
८. प० १ ।
९. मणप्प० (ता, म) ।
१०. वयप० (क), वयप्प० (ब, म) ।
११. कायप्प० (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! मणपयोगपरिणए वा, वइपयोगपरिणए वा, कायपयोगपरिणए वा ॥

मणपयोगपरिणति-पदं

४५ जइ मणपयोगपरिणए कि सच्चमणपयोगपरिणए ? मोसमणपयोगपरिणए ? सच्चामोसमणपयोगपरिणए ? असच्चामोसमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणए वा, मोसमणपयोगपरिणए वा, सच्चामोसमणपयोगपरिणए वा, असच्चामोसमणपयोगपरिणए वा ॥

४६. जइ सच्चमणपयोगपरिणए कि आरंभसच्चमणपयोगपरिणए ? अणारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? सारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? समारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असमारंभसच्चमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! आरंभसच्चमणपयोगपरिणए वा जाव असमारंभसच्चमणपयोगपरिणए वा ॥

४७. जइ मोसमणपयोगपरिणए किं आरंभमोसमणपयोगपरिणए ?
एवं जहा सच्चेण तहा मोसेण वि । एवं सच्चामोसमणपयोगेण वि । एवं असच्चामोसमणपयोगेण वि ॥

वइपयोगपरिणति-पद

४८. जइ वइपयोगपरिणए किं सच्चवइपयोगपरिणए ? मोसवइपयोगपरिणए ?
एवं जहा मणपयोगपरिणए तहा वइपयोगपरिणए वि जाव असमारंभवइपयोगपरिणए वा ॥

कायपयोगपरिणति-पद

४९. जइ कायपयोगपरिणए कि ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगसरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? कम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५० जइ ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? जाव[1] पंचिंदियओरालिय[2]•सरीरकायपयोग॰परिणए ?

---

१. एव जाव (अ, स) ।

२ स० पा०—पंचिंदियओरालिय जाव परिणए ।

गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव[1] पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५१. जइ एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय[2] •ओरालियसरीरकायपयोग॰परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?

गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय[3] •ओरालियसरीरकायपयोग॰परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय[4] •ओरालियसरीरकायपयोग॰परिणए वा ॥

५२. जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए[5] किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा ॥

५३ जइ सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए किं पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा। एव बादरा वि। एव जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण दुयओ भेदो—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५४ जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

५५. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?

एव चउक्कओ भेदो-जाव खहचराण ॥

५६. जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?

गोयमा ! दोसु वि ॥

५७ जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ?

---

१. बेइंदिय जाव परिणए वा (अ, क, ब, म, स); बेइंदिय जाव (ता)।
२. स० पा०—॰एगिंदिय जाव परिणए।
३. स० पा०—॰एगिंदिय जाव परिणए।
४. स० पा०—॰एगिंदिय जाव परिणए।
५. ॰सरीर जाव परिणए (अ,क, ता, ब,म, स)।

गोयमा ! पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा ॥

५८. जइ ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिदियओरालियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए ? जाव पंचिदियओरालिय जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए एवं जहा ओरालिय-सरीरकायपयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकाय-पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवरं—बादरवाउक्काइय-गब्भव-क्कंतियपंचिदियतिरिक्खजोणीय-गब्भवक्कंतियमणुस्साणं[1]—एएसिणं पज्जत्ता-पज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं ॥

५९. जइ वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिदियवेउव्वियसरीरकायपयोग-परिणए ? पंचिदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिदिय जाव परिणए वा, पंचिदिय जाव परिणए वा ॥

६०. जइ एगिदिय जाव परिणए किं वाउक्काइयएगिदिय जाव परिणए ? अवा-उक्काइयएगिदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! वाउक्काइयएगिदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइयएगिदिय जाव परिणए। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे[2] वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पा-तीतावेमाणियदेवपंचिदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्ता-सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

६१. जइ वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायपयोग-परिणए ? जाव पंचिदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एवं जहा वेउव्वियं तहा वेउव्वियमीसगं पि, नवरं—देव-नेरइयाणं अपज्जत्त-गाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं[3] जाव नो पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिदियवेउव्वियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ॥

६२. जइ आहारगसरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायपयोगपरिणए? अमणुस्साहारग जाव परिणए ?

एवं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए ॥

---

१. °मणुस्साणं य (अ, क, ता, ब)।

२. एतन्नामके प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे।

३. पज्जत्तगाणं तहेव (अ, स), अत्र द्वयोर्मिश्रणम्; तहेव (क, ता, म)।

६३. जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकाय-पयोगपरिणए ?
एव जहा आहारगं तहेव मीसग पि निरवसेस भाणियव्व ॥

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए कि एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पंचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एव जहा ओगाहणसठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1] •कप्पातीतगवेमाणिय॰देवपचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

मीसपरिणति-पद

६५. जइ मीसापरिणए कि मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए[2] ? कायमीसा-परिणए ?
गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ॥

६६. जइ मणमीसापरिणए कि सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ?
जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्व निरवसेस जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपचिदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ॥

वीससापरिणति-पदं

६७. जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए ? गधपरिणए ? रसपरिणए ? फास-परिणए ? सठाणपरिणए ?
गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, संठाणपरिणए वा ॥

६८. जइ वण्णपरिणए कि कालवण्णपरिणए जाव[3] सुक्किलवण्णपरिणए ?
गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ॥

६९. जइ गधपरिणए कि सुब्भिगंधपरिणए ? दुब्भिगधपरिणए ?
गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगधपरिणए वा ॥

७०. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा ।
गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ॥

७१. जइ फासपरिणए कि कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?
गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ॥

---

१. स० पा०—॰वाइय जाव देव॰ ।
२. वय॰ (अ, स); वति॰ (क) ।
३. नील जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७२ जइ सठाणपरिणए—पुच्छा।
गोयमा ! परिमडलसठाणपरिणए वा जाव आयतसठाणपरिणए वा ॥

दोण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद

७३. दो भते दव्वा ! किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए ५. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे वीससापरिणए ६ अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

७४. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! १ मणपयोगपरिणया वा २. वइपयोगपरिणया वा ३ कायपयोग-परिणया वा ४ अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे वइपयोगपरिणए ५. अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ६. अहवेगे वइपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ॥

७५ जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १ सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चमोसमणपयोगपरिणया वा ५. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे मोसमणपयोगपरिणए ६. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ७ अहवेगे सच्चमण-पयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ८ अहवेगे मोसमणपयोग-परिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ९. अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए १० अहवेगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ॥

७६ जइ सच्चमणपयोगपरिणया कि आरभसच्चमणपयोगपरिणया ? जाव[1] असमा-रभसच्चमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरि-णया वा, अहवेगे आरंभसच्चमणपयोगपरिणए, एगे अणारंभसच्चमणपयोग-परिणए। एव एएण गमेण दुयासजोएण[2] नेयव्व, सव्वे सजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ॥

७७. जइ मीसापरिणया कि मणमीसापरिणया ?
एव मीसापरिणया वि ॥

---

१. भ० ८।४६।

२. दुय० (व)।

७८. जइ वीससापरिणया कि वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरंससठाणपरिणए, एगे आयतसंठाण-परिणए ॥

तिण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

७९. तिण्णि भंते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए[1] ७. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ८ अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरि-णया ९. अहवा दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे पयोगपरि-णए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८०. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एव एक्कासयोगो[2], दुयासयोगो[3], तियासयोगो[4] य भाणियव्वो ॥

८१. जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया। एव दुयासंयोगो, तियासयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अहवेगे तंससंठाणपरिणए, एगे चउरससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भंते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि[5] मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ६. अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७. अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ८ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ९. अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे मीसापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ११. अहवा दो मीसापरिणया, दो

---

१. मीससा° (स)।
२. एक्क° (ब)।
३. दुय° (ब)।
४. तिय° (ब)।
५. तिण्णिओ (ता)।

वीससापरिणया १२. अहवा तिण्णि मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १३. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १५. अहवा दो पयोग-परिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८३. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
एव एएणं कमेणं पच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणता य दव्वा भाणियव्वा—दुयासजोएणं तियासजोएण जाव दससजोएणं बारससंजोएण उवजुजिऊण[1] जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेति ते सव्वे भाणियव्वा; एए पुण जहा नवमसए[2] पवेसणए भणिहामो तहा उवजुजिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अणंता एव चेव, नवर—एक्कं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणता परिमडल-सठाणपरिणया जाव अणंता आयतसठाणपरिणया ॥

८४. एएसि ण भते ! पोग्गलाण पयोगपरिणयाण, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाणं य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणतगुणा, वीससापरिणया अणतगुणा ॥

८५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

बीओ उद्देसो

आसीविस-पद

८६. कतिविहा णं भते ! आसीविसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, त जहा—जातिआसीविसा य, कम्म-आसीविसा य ॥

८७. जातिआसीविसा ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. उवजुञ्जिजत्तण (क); उववज्जिऊए (ता); उवजुत्तिऊए (व), उवजुज्जिऊणं (स)।
२. भ० ९।८६-१३२।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
४. भ० १।५१।

गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मडुक्कजाति-आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे[1] ॥

८८. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू ण विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेण विसपरिगयं[2] विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं सपत्तीए करेंसु[3] वा, करेंति वा, करिस्सति वा ॥

८९. मडुक्कजातिआसीविसस्स [4]•णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?°
गोयमा ! पभू णं मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्त बोंदि विसेण विसपरिगयं [5]•विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्सति वा ॥

९०. [6]•उरगजातिआसीविसस्स ण भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू ण उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

९१. मणुस्सजातिआसीविसस्स [7]•ण भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू ण मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्त बोंदि विसेणं विसपरिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं सपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा,° करिस्सति वा ॥

९२. जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?
गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्सकम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३. जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।
जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

१. मणुय० (ता) ।
२. विसपरिणय (ठा० ४।५१४) ।
३. इह चैकवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।
४. स० पा० पुच्छा ।
५. स० पा०—सेस त चेव जाव करिस्सति ।
६. स० पा०—एव उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं—जंबुद्दीवप्पमाणमेत्त बोंदि विसेण विसपरिगय, सेस त चेव जाव करिस्सति ।
७. स० पा०—वि एव चेव, नवरं—समयखेत्तप्पमाणमेत्त बोंदि विसेण विसपरिगय, सेस त चेव जाव करिस्सति ।

णियकम्मासीविसे ? गब्भवक्कतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव[1] पज्जत्तासखेज्जवासाउयगब्भवक्कतिय-पंचिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे ॥

९४. जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतिय-मणुस्सकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कतियमणुस्सकम्मासीविसे, एव जहा वेउव्वियसरीर जाव पज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कतिय-मणुस्सकम्मासीविसे[2], नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ॥

९५. जइ देवकम्मासीविसे कि भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ?
गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे वि ।
जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे वि ।
जइ असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे[3] कि पज्जत्ताअसुरकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे । एव जाव थणियकुमाराण ।
जइ वाणमतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमतरदेवकम्मासीविसे ? एव सव्वेसि अपज्जत्तगाण । जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं ।
जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे[4] ? कप्पा-तीयावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ।
जइ कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

---

१. प० २१ ।
२. °कम्मभूमग° (स) ।
३. असुरकुमार जाव कम्म° (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. कप्पोवग° (अ, क, ता, म, स) ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा[1] •वेमाणियदेव°कम्मासीविसे·कि पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एव जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।।

छउमत्थ-केवलि-पद

९६. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, त जहा—१ धम्मत्थिकाय २. अधम्मत्थिकाय ३. आगासत्थिकायं ४. जीव असरीरपडिबद्ध ५. परमाणुपोग्गल ६. सद्दं ७. गध ८. वात ९. अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ १०. अय सव्वदुक्खाणं अत करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ-पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकाय[2], •अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिबद्ध, परमाणुपोग्गलं, सद्द, गध, वात, अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ, अय सव्वदुक्खाण अत° करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।।

नाण-पदं

९७. कतिविहे णं भते ! नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पचविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ।।

९८. से कि त आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा । एव जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव[3] सेत्तं केवलनाणे[4] ।।

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मासीविसे ।

२. स० पा०—धम्मत्थिकाय जाव करेस्सइ ।

३. राय० सू० ७४१-७४५ ।

४. यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्यामङ्गप्ररूपणेत्यभिधाय 'जाव भवियअभविया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्त तस्यायमर्थ.—श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या श्रुतविषय दर्शयतेदमभिहितम्—'इच्चेयमि दुवालसगे गणिपिडए अणता भावा अणता

९९. अण्णाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, विभंगनाणे ॥

१००. से किं त मइअण्णाणे ?
मइअण्णाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—ओग्गहो[1], •ईहा, अवाओ°, धारणा ॥

१०१. से किं त ओग्गहे ?
ओग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । एवं जहेव आभिणिबोहियनाण तहेव, नवर—एगट्ठियवज्जं[2] जाव[3] नोइंदियधारणा । सेत्तं धारणा, सेत्त मइअण्णाणे ॥

१०२ से किं त सुयअण्णाणे ?
सुयअण्णाणे—ज इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छदबुद्धि-मइ-विगप्पियं, तं जहा—भारहं, रामायण जहा नंदीए जाव[4] चत्तारि वेदा संगोवगा । सेत्तं सुयअण्णाणे ॥

१०३ से किं तं विभगनाणे ?
विभगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—गामसंठिए, नगरसठिए, जाव[5] सण्णिवेससठिए, दीवसठिए, समुद्दसठिए, वाससठिए, वासहरसठिए, पव्वयसंठिए, रुक्खसठिए, थूभसठिए, हयसठिए, गयसठिए, नरसठिए, किन्नरसंठिए, किंपुरिससठिए, महोरगसठिए, गधव्वसठिए, उसभसंठिए, पसुसठिए, पसयसठिए, विहगसठिए, वानरसंठिए—नाणासठाणसठिए[6] पण्णत्ते ॥

जीवाण नाणि-अण्णाणित्त-पदं

१०४. जीवा ण भते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! जीवा नाणी वि, अण्णाणी वि ।
जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी[7] ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी

अभावा जाव अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा पण्णत्ते' ति, अस्य च सूत्रस्य या सग्रहगाथा—
भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणा जीवा ।
अजीव भवियाऽभविया, तत्तो सिद्धा
असिद्धा य ॥
इत्येवरूपा, तस्या. खण्डमिदमेतदन्त
श्रुतज्ञानसूत्रमिहाध्येयमिति (वृ) ।

१ स० पा०—ओग्गहो जाव धारणा ।

२. १ ओगेण्हणया २ उवधारणया ३. सवणया ४ अवलवणया ५. मेहा (नदी सू० ४३); इत्यादीनि पच-पचैकार्थिकान्यवग्रहादीनामधीतानि, मत्यज्ञाने तु न तान्यध्येयानीति भाव. (वृ) ।

३. नदी सू० ४०-४८ ।

४. नंदी सू० ६७ ।

५. भ० १।४९ ।

६. नाणासठिए (ता, व) ।

७. दुयाणाणी (क, ता, व, म, स) ।

य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा अभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी॥

१०५. नेरइया णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?
गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।
जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए॥

१०६ असुरकुमारा णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?
जहेव नेरइया तहेव, तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। एवं जाव[1] थणियकुमारा॥

१०७ पुढविक्काइया णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?
गोयमा! नो नाणी, अण्णाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एवं जाव वणस्सइकाइया॥

१०८. बेइंदियाणं पुच्छा।
गोयमा! नाणी वि अण्णाणी वि।
जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एवं तेइंदिय-चउरिंदिया वि॥

१०९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।
गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।
जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी।
जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पंच नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। वाणमंतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि नियमा॥

११०. सिद्धाणं भंते! पुच्छा।
गोयमा! नाणी, नो अण्णाणी; नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. पू० प० २।

अंतरालगति पडुच्च—

१११. 'निरयगतिया ण'[1] भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। तिण्णि नाणाइं नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

११२ तिरियगतिया ण भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा[2] ॥

११३ मणुस्सगतिया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तिण्णि नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा। देवगतिया जहा निरयगतिया ॥

११४ सिद्धगतिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा[3] सिद्धा ॥

इंदिय पडुच्च—

११५ सइंदिया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

११६. एगिंदिया ण भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा पुढविकाइया। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया णं दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा। पंचिंदिया जहा सइंदिया ॥

११७ अणिंदिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

काय पडुच्च—

११८. सकाइया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए। पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइ-अण्णाणी य सुयअण्णाणी य। तसकाइया जहा सकाइया ॥

११९ अकाइया ण भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सुहुम-बादर पडुच्च—

१२०. सुहुमा णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा पुढविक्काइया ॥

---

१. निरयगतियाए (वृ)।
२. नियम (ता)।
३. भ० ८।११०।

१२१. बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२२ नोसुहुमा-नोबादरा ण भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च—

१२३. पज्जत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१२४. पज्जत्ता ण भते ! नेरइया कि नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा। जहा नेरइया एवं थणियकुमारा। पुढविकाइया जहा एगिंदिया। एव जाव चउरिंदिया ॥

१२५. पज्जत्ता णं भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए। मणुस्सा जहा सकाइया। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१२६. अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए।

१२७ अपज्जत्ता ण भंते ! नेरइया कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया ॥

१२८. बेइंदियाणं पुच्छा।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा। एव जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण ॥

१२९. अपज्जत्तगा णं भते ! मणुस्सा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा। वाणमतरा जहा नेरइया। अपज्जत्तगाण जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा–नियमा ॥

१३० नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

भवत्थं पडुच्च—

१३१ निरयभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ॥

१३२. तिरियभवत्था णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ॥

१३३. मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ॥

१३४. देवभवत्था णं भंते !
जहा निरयभवत्था। अभवत्था जहा सिद्धा॥

भवसिद्धियाभवसिद्धियं पडुच्च—

१३५ भवसिद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया॥

१३६. अभवसिद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी; तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए॥

१३७ नोभवसिद्धिया-नोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा॥

सण्णि-असण्णि पडुच्च—

१३८. सण्णीण पुच्छा।
जहा सइंदिया। असण्णी जहा बेइंदिया। नोसण्णी-नोअसण्णी जहा सिद्धा॥

लद्धि-पदं

१३९. कतिविहा णं भंते लद्धी पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, त जहा—१. नाणलद्धी २ दसणलद्धी ३. चरित्तलद्धी ४ चरित्ताचरित्तलद्धी ५ दाणलद्धी ६ लाभलद्धी ७. भोग-लद्धी ८ उवभोगलद्धी ९. वीरियलद्धी १०. इदियलद्धी॥

१४०. नाणलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणलद्धी जाव[1] केवल-नाणलद्धी॥

१४१. अण्णाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणलद्धी, सुयअण्णाणलद्धी, विभगनाणलद्धी॥

१४२. दसणलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी॥

१४३ चरित्तलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयचरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणिय-चरित्तलद्धी, परिहारविसुद्धिचरित्तलद्धी, सुहुमसपरायचरित्तलद्धी, अहक्खाय-चरित्तलद्धी॥

---

१. भ० ८।९७।

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एव जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५ वीरियलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—बालवीरियलद्धी, पडियवीरियलद्धी, बालपडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इदियलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियलद्धी जाव[1] फासिदियलद्धी ॥

नाणलद्धिं पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद

१४७. नाणलद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, एव पच नाणाइ भयणाए ॥

१४८. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिबोहियनाणलद्धिया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइ भयणाए ॥

१५०. तस्स अलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । एवं सुयनाणलद्धिया वि । तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया[2] ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । एव ओहिनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५३. मणपज्जवनाणलद्धियाण पुच्छा ।

---

१. भ० २।७७ ।

२. लद्धीया (अ, ब, म, स); अर्थसमीक्षया एतत्पदमशुद्ध प्रतिभाति ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउ-नाणी। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी।

१५४. तस्स अलद्धीयाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए।

१५५ केवलनाणलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

१५६ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। केवलनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१५७. अण्णाणलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी। तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए॥

१५८ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। पंच नाणाइ भयणाए। जहा अण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भणिया, एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। विभगनाणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा।

दंसणं पडुच्च—

१५९ दसणलद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। पच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१६०. तस्स अलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि।
सम्मदसणलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए॥
मिच्छादंसणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण पंच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए।
सम्मामिच्छादसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया तहेव भाणियव्वा॥

चरित्तं-पडुच्च—

१६१. चरित्तलद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पच नाणाइं भयणाए॥

तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ-भयणाए।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइ चत्तारि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए। एव जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एव जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवर—अहक्खायचरित्तलद्धीयाण[1] पच नाणाइ भयणाए॥

चरित्ताचरित्तं पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी। जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य। जे तिण्णाणी ते आभिणि-बोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी॥

दाणाइं पडुच्च—

१६४ तस्स अलद्धियाणं पच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए।
दाणलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१६५ तस्स अलद्धीयाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी। एव जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया'[2] य भाणियव्वा।

बालाइवीरियं पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए। तस्स अल-द्धियाण पच नाणाइ भयणाए।

पडियवीरियलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवना-णवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाणि य भयणाए।

बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए॥

इदियं पडुच्च—

१६६. इदियलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं—भयणाए॥

१६७. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. ०लद्धीए (अ, क, ता, ब, म, स)। २. लद्धी अलद्धी (अ, क, ता, ब, म, स)।

१६८. सोइंदियलद्धिया णं जहा इंदियलद्धिया ॥

१६९ तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । चक्खिदिय-घाणिदियाण लद्धीया अलद्धीया य जहेव सोइंदियस्स ॥

१७० जिब्भिदियलद्धियाण चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७१ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । फासिदियलद्धीया अलद्धीया य जहा इदियलद्धिया अलद्धिया य ॥

उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद

१७२. सागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७३. आभिणिबोहियनाणसागारोवउत्ता ण भते ?

चत्तारि नाणाइ भयणाए । एव सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धीया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।

मइअण्णाणसागारोवउत्ताण तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एव सुयअण्णाणसागारोवउत्ता वि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइ नियमा ॥

१७४. अणागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए । एव चक्खुदसण-अचक्खुदंसणअणागारोवउत्ता वि, नवर—चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७५. ओहिदसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा तिअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी । केवलदसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ॥

जोगं पडुच्च—

१७६ सजोगी ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

जहा[1] सकाइया । एव मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ॥

---

१. भ० ८।११८ ।

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकाइया ॥

१७८. कण्हलेस्सा ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सइंदिया । एवं जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ॥

कसायं पडुच्च—

१७९. सकसाई णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं जाव लोभकसाई ॥

१८०. अकसाई ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइं भयणाए ॥

वेदं पडुच्च—

१८१. सवेदगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एव इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुसग वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ॥

आहारगं पडुच्च—

१८२. आहारगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकसाई, नवर—केवलनाण पि ॥

१८३. अणाहारगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइं, अण्णाणाइं तिण्णि—भयणाए ॥

नाणाण विसय-पदं

१८४. आभिणिबोहियनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
[2]कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ-पासइ[3] ॥

---

१. भ० ८।११५ ।

२. स० पा०—एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।

३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विवक्षाभेदोस्ति— दव्वओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइं जाणइ, न पासइ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ, न पासइ ।

१८५. सुयनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ।
[1]•खेत्तओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्त जाणइ-पासइ।
कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वकालं जाणइ-पासइ।°
भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ-पासइ॥

१८६. ओहिनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ ण ओहिनाणी[2] •जहण्णेण अणताइ रूविदव्वाइं जाणइ-पासइ। उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ।
खेत्तओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं जाणइ-पासइ। उक्कोसेण असखेज्जाइं अलोगे लोयमेत्ताइ खंडाइ जाणइ-पासइ।
कालओ ण ओहिनाणी जहण्णेणं आवलियाए असखेज्जइभाग जाणइ-पासइ। उक्कोसेणं असखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ अईयमणागय च काल जाणइ-पासइ।
भावओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अणंते भावे जाणइ-पासइ। उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणमणतभागं जाणइ-पासइ° ॥

१८७. मणपज्जवनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणतपदेसिए[3] •खधे जाणइ-पासइ। ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ-पासइ।
खेत्तओ ण उज्जुमई अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे, उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरिय जाव अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु

कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्व कालं जाणइ, न पासइ।
भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ (सू० ५४)।

१. स० पा०—एव खेत्तओ वि, कालओ वि।
२. स० पा०—ओहिनाणी रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ जहा नदीए जाव भावओ।
३. स० पा०—जहा नदीए जाव भावओ।

छप्पण्णए अंतरदीवगेसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-पासइ ।

तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं जाणइ-पासइ ।

कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स, असंखिज्जयभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ-पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।

भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ-पासइ ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ-पासइ°।।

१८८. केवलनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।

[1]°खेत्तओ णं केवलनाणी सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।

कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।

भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ° ।।

१८९. मइअण्णाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ[2] ।

°खेत्तओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं खेत्तं जाणइ-पासइ ।

कालओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं कालं जाणइ-पासइ ।°

भावओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ।।

१९०. सुयअण्णाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ[3]।

---

१. सं० पा०—एवं जाव भावओ ।

२. सं० पा०—पासइ जाव भावओ ।

३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमवलोक्यते 'दंसेति निदंसेति उवदंसेति' (वृ) ।

[1]•खेत्तओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयं खेत्त आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ।
कालओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगय काल आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ°।
भावओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ[2], •पण्णवेइ, परूवेइ° ॥

१६१. विभंगनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ णं विभगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ।
[3]•खेत्तओ णं विभगनाणी विभगनाणपरिगय खेत्त जाणइ-पासइ।
कालओ ण विभगनाणी विभगनाणपरिगय काल जाणइ-पासइ।°
भावओ ण विभगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

नाणीणं सठिइ-पद

१६२. नाणी ण भंते ! नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! नाणी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—१ सादीए वा अपज्जवसिए २ सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइ ॥

१६३. आभिणिबोहियनाणी ण भते ! आभिणिबोहिय[4] •नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! एव चेव[5] ॥

१६४. एव[6] सुयनाणी वि ॥

१६५. ओहिनाणी वि एव[7] चेव, नवरं—जहण्णेणं एक्कं समय ॥

१६६. मणपज्जवनाणी ण भते ! मणपज्जवनाणी ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं देसूण पुव्वकोडि ॥

१६७. केवलनाणी ण भते ! केवलनाणी ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

१६८. अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी णं भते ! पुच्छा।

---

१. स० पा०—एव खेत्तओ कालओ।
२. स० पा०—त चेव।
३. स० पा०—एव जाव भावओ।
४. स० पा०—एव नाणी आभिणिवोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी एएसि दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] सचिट्ठणा जहा कायठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए।
५. भ० ८।१६२।
६. भ० ८।१६२।
७. भ० ८।१६२।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. अणादीए वा अपज्जवसिए २. अणादीए वा सपज्जवसिए ३. सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणंतं काल—अणंता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१९९. विभंगनाणी णं भंते ! पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

नाणीणं अंतर-पदं

२००. आभिणिबोहियनाणिस्स णं भंते ! अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[1] अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं ॥

२०१. सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीणं एवं चेव ॥

२०२. केवलनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर ॥

२०३. मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइं ॥

२०४. विभंगनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

नाणीणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२०५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं, सुयनाणीणं, ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणत-गुणा ॥

२०६. एतेसि णं भंते ! जीवाणं मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीणं, विभगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

---

१. भ० ८।१९८।

२०७. एतेसि ण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीणं ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणं मतिअण्णाणीणं सुयअण्णाणीण विभंगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, विभगनाणी असखेज्जगुणा, केवलनाणी अणतगुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य दो वि तुल्ला अणतगुणा° ॥

नाणपज्जव-पद

२०८. केवतिया णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ॥

२०९. केवतिया णं भते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
एवं चेव ॥

२१०. एव जाव केवलनाणस्स । एव मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स ॥

२११. केवतिया ण भते ! विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ॥

नाणपज्जवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२१२. एतेसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाणपज्जवाण, मणपज्जवनाणपज्जवाणं, केवलनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहितो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणतगुणा ॥

२१३. एएसि णं भते ! मइअण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा ॥

२१४. एएसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं, मइअण्णाणपज्जवाण, सुयअण्णाणपज्जवाण, विभंगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ॥

२१५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-पदं

२१६. कतिविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ॥

२१७. से किं तं संखेज्जजीविया ?
संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

ताल[2] तमाले तक्कलि, तेयलि[3] •साले य सालकल्लाणे ।
सरले जावति केयइ, कदलि तह चम्मरुक्खे य ॥१॥
भुयरुक्ख हिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खे य होति बोधव्वे ।
पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य° ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ॥

२१८. से किं तं असंखेज्जजीविया ?
असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य ॥

२१९. से किं तं एगट्ठिया ?
एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

निबंब जंबु[4] •कोसंब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य ।
सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ॥१॥
पुत्तंजीवयरिट्ठे, बिभेलए हरडए य भल्लाए ।
उंबभरिया[5] खीरिणि, बोधव्वे धायइ पियाले ॥२॥

---

१. भ० १।५१ ।
२. ताले (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी ।
४ सं० पा०—जहा पण्णवणापदे जाव फला ।
५ प्रज्ञापनावृत्तौ 'उंबेभरिका' इति दृश्यते । भ० २२।२ सूत्रे 'उंबभरिका' इतिपदमस्ति ।

पूइयनिंबारग सेण्हा, तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग नागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोगे य।।३।।

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला एगट्ठिया। सेत्त एगट्ठिया।।

२२० से कि तं बहुबीयगा ?
बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अत्थिय तिदु कविट्ठे, अबाडग माउलिग बिल्ले य।
आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उबर वडे य।।१।।
नग्गोह नदिरुक्खे, पिप्परि सयरी पिलुक्खरुक्खे य।
काउबरी कुत्थुभरि, बोधव्वा देवदाली य।।२।।
तिलए लउए छत्तोह, सिरीसे सत्तिवण्ण दहिवण्णे।
लोद्ध धव चंदणज्जुण, नीमे कुडए कयबे य।।३।।

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया।° फला बहुबीयगा। सेत्त बहुबीयगा। सेत्त असखेज्जजीविया।।

२२१ से कि त अणतजीविया ?
अणतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आलुए, मूलए, सिगबेरे—एव जहा— सत्तमसए जाव[1] सिउढी[2], मुसुढी। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं अणतजीविया।।

जीवपएसाणं-अंतर-पद

२२२ अह भते ! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एएसि ण दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिन्नाण जे अतरा ते वि ण तेहि जीवपएसेहि फुडा ?
हता फुडा।।

२२३ पुरिसे ण भते ! अतरे हत्थेण वा पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए[3] वा कट्ठेण वा किलिचेण[4] वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा,

---

१. भ० ७।६६।
२. सीउण्हे (अ), सीउण्ही (क), सीउण्णी (ता), सीकण्हे (स)।
३ सलागए (अ); × (ता)।
४. कलिचेण (अ, ता, ब, म, स)।

अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विवाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ[1] ॥

चरिम-अचरिम-पदं

२२४. कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[2] अहेसत्तमा, ईसीपब्भारा ॥

२२५. इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा ? अचरिमा ?
चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[3]—

२२६. वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा ? अचरिमा ?
गोयमा ! चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

२२८. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया—एवं किरियापदं निरवसेस भाणियव्वं जाव[6] सव्वत्थोवाओ मिच्छादसणवत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, पारिग्गहियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ ॥

२२९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. सकमइ (म, स) ।
२. भ० २।७५ ।
३. प० १० ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-८ ।
६. प० २२ ।
७. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

आजीवियसदब्भे समणोवासय-पद

२३०. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—आजीविया णं भंते ! थेरे भगवते एव वयासी—समणोवासगस्स[2] ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भड अवहरेज्जा, से ण भते ! त भड अणुगवेसमाणे कि सभड[3] अणुगवेसइ ? परायग भड अणुगवेसइ ?
गोयमा ! सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३१ तस्स ण भते ! तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि से भंडे अभडे भवइ[4] ?
हता भवइ ॥

२३२. से केण खाइ ण अट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—नो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मादीए सतसारसावदेज्जे[5], ममत्तभावे[6] पुण से अपरिण्णाए भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सभड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३३. समणोवासगस्स ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ[7] जाय चरेज्जा, से ण भते ! कि जाय चरइ ? अजाय चरइ ?
गोयमा ! जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ॥

२३४. तस्स ण भते ! तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि सा जाया अजाया भवइ ?
हता भवइ ॥

२३५. से केण खाइ ण अट्ठेग भते एव वुच्चइ—जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—नो मे माता, नो मे पिता, नो मे भाया, नो मे भगिणी, नो मे भज्जा, नो मे पुत्ता, नो मे धूया, नो मे सुण्हा, पेज्जबधणे पुण से अव्वोच्छिन्ने[8] भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा[9] ! °एव वुच्चइ—जायं चरइ°, नो अजाय चरइ ॥

---

१ भ० १।४-८।
२ एव वक्ष्यमाणप्रकारमवादिषु, यच्च ते तान् प्रत्यवादिषुस्तद्गौतम स्वयमेव पृच्छन्नाह (वृ)।
३. सयभड (अ), स भड (ता, म), सय भड (स)।
४ हवइ (ता)।
५. °सापदेज्जे (ता), सावतेज्जे (व)।
६ ममत्ति° (क, ता, व)।
७. केवइ (ता)।
८. अवो° (अ)।
९. स० पा०—गोयमा जाव नो।

२३६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए[1] भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ॥

२३७. तीयं पडिक्कममाणे किं १. तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ३. तिविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ४. दुविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ५. दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ६. दुविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ७. एगविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ८. एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ९. एगविहं एगविहेण पडिक्कमति ?
गोयमा ! तिविहं वा[2] तिविहेण पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति, एवं[3] चेव जाव एगविहं वा एगविहेणं पडिक्कमति ।
१. तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
२. तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
५. तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा ६. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा ।
८. दुविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १०. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
११. दुविहं दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा १२. अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा १४ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १६. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १७. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १८. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १९. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
२०. दुविहं एक्कविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१. अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा २२. अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३. अहवा

---

१. वाचनान्तरे तु 'अपच्चक्खाए' इत्यस्य स्थाने 'पच्चक्खाए' त्ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' त्ति दृश्यते (वृ) ।
२. × (स) ।
३. त (अ, क, ता, स) ।

न करेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा २४. अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ वयसा २५. अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ कायसा २६. अहवा न कारवेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा २७ अहवा न कारवेइ, करेतं नाणुजाणइ वयसा २८ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा।

२९. एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, मणसा वयसा कायसा ३०. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३१. अहवा करेंत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा।

३२ एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३३. अहवा न करेइ मणसा कायसा ३४ अहवा न करेइ वयसा कायसा ३५ अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३६ अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३७ अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३८. अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३९ अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४०. अहवा करेतं नाणुजाणइ वयसा कायसा।

४१. एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४२. अहवा न करेइ वयसा ४३ अहवा न करेइ कायसा ४४. अहवा न कारवेइ मणसा ४५ अहवा न कारवेइ वयसा ४६. अहवा न कारवेइ कायसा ४७. अहवा करेतं नाणुजाणइ मणसा ४८. अहवा करेत नाणुजाणइ वयसा ४९. अहवा करेतं नाणु-जाणइ कायसा॥

२३८. पडुप्पन्न सवरेमाणे कि तिविहं तिविहेण संवरेइ ?
एव जहा पडिक्कममाणेण एगूणपन्न भंगा भणिया एवं सवरमाणेण वि एगूण-पन्न भगा भाणियव्वा॥

२३९. अणागय पच्चक्खमाणे कि तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ ?
एव एते[1] चेव भगा एगूणपन्न[2] भाणियव्वा जाव अहवा करेतं नाणुजाणइ कायसा॥

२४०. समणोवासगस्स ण भते ! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
एवं जहा पाणाइवायस्स सोयाल भगसयं भणियं, तहा मुसावायस्स वि भाणि-यव्व। एव अदिन्नादाणस्स वि[3], एव थूलगस्स वि मेहुणस्स, थूलगस्स वि परिग्गहस्स जाव अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा।
एते खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु एरिसगा आजीविओवासगा भवति॥

---

१. × (अ, म); ते (क, व, स)।
२. × (ता)।
३ वि भाणितव्व (ता)।

२४१. आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुपित्ता, विलुपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेति ॥

२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा—१ ताले २ तालपलंबे ३. उव्विहे ४. संविहे ५. अववि‌हे ६. उदए[1] ७. नामुदए ८. णम्मुदए[2] ९. अणुवालए १०. संखवालए ११. अयपुले १२ कायरए[3]—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहंतदेवतागा[4], अम्मापिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिक्कंता, [तं जहा—उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं][5] पलंडुल्हसुणकंदमूलविवज्जगा[6], अणिल्लंछिएहिं[7] अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं छेत्तेहिं[8] वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं समणुजाणेत्तए, तं जहा—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे[9], दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया[10], असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

२४३. कतिविहा णं भंते! देवलोगा पण्णत्ता?,
गोयमा! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा जोइसिया, वेमाणिया ॥

२४४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[11] ॥

---

१. उवए (अ)।
२. णमुदए (स)।
३. कातरिए (ता, ब, म)।
४. °देवयागा (क्व०)।
५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
६. पलंडूल्हसण° (स)।
७. अणे° (क, ता, स)।
८. वित्तेहिं (अ), छत्तेहिं (क, म), चित्तेहिं (स)
९. निलछण° (अ); णेल्लछण° (ता)।
१०. तलाय° (अ, स)।
११. भ° १।५१।

छट्ठो उद्देसो

समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पदं

२४५. समणोवासगस्स ण भंते ! तहारूव समणं वा माहण वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स कि कज्जइ ?
गोयमा ! एगतसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४६. समणोवासगस्स ण भंते ! तहारूवं समण वा माहण वा अफासुएण अणेसणिज्जेण असण-पाण[1]•-खाइम-साइमेण° पडिलाभेमाणस्स कि कज्जइ ?
गोयमा ! बहुतरिया[2] से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४७. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूव अस्संजय-विरय[3]-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्म फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण[4]-•खाइम-साइमेण पडिलाभेमाणस्स° कि कज्जइ ?
गोयमा ! एगतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ[5] निज्जरा कज्जइ ॥

उवनिमंतियपिंडादि-परिभोगविहि-पदं

२४८. निग्गथं च ण गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुजाहि, एग थेराण दलयाहि । से य त पडिग्गाहेज्जा[6], थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे[7] सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा त नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे[8] सिया ॥

२४९. निग्गथ च ण गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहि पिंडेहि उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुजाहि, दो थेराण दलयाहि । से य ते पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा •[9]सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा ते नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वा सिया । एव जाव दसहि पिंडेहि

---

१. स० पा०—पाण जाव पडिलाभेमाणस्स ।
२. बहुतरिता (क, ब, म) ।
३. अविरय (अ, क, ब, म) ।
४. स० पा०—पाण जाव कि ।
५. कावि (क, ब) ।
६. पडिगाहेज्जा (अ, स), पडिग्गहेज्जा (ब) ।
७ अणुप्पतातव्वे (ता) ।
८. परिट्ठवेयव्वे (अ, स) ।
९ स० पा०—सेसं त चेव जाव परिट्ठावेयव्वा ।

उवनिमंतेज्जा, नवरं—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि। सेस तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

२५०. निग्गथ च ण गाहावइ[1]•कुल पिडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ° केइ दोहि पडिग्गहेहि उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा पडिभुजाहि, एग थेराण दलयाहि। से य त पडिग्गाहेज्जा, •[2]थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया। जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव ण अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा त नो अप्पणा परिभुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पम्मज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वे सिया। एव जाव दसहि पडिग्गहेहि।
एव जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कबल-लट्ठि-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहि सथारएहि उवनिमतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, विउट्टामि[3], विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अतिय[4] आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि।
१. से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य पुव्वामेव[5] अमुहा सिया। से ण भंते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।
२. से य सपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया। से ण भते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।
३ से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से ण भते ! कि आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

---

१. सं० पा०—गाहावइ जाव केइ।
२. स० पा०—तहेव जाव त नो अप्पणा परिभुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, सेस त चेव जाव परिट्ठवेयव्वे।
३. विउट्टेमि (ता)।
४. अतिए (अ)।
५. × (अ, ता, ब, म)।

४. से य संपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा। से णं भंते! किं आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

५. से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य अमुहा सिया। से ण भंते! किं आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

६. से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य °[1]अमुहे सिया। से ण भंते! कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

७. से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भते! कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए।

८. से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य काल करेज्जा। से णं भते कि आराहए? विराहए?

गोयमा! आराहए, नो विराहए° ॥

२५२. निग्गथेण य वहिया वियारभूमिं[2] वा विहारभूमि वा निक्खतेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एव एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए॥

२५३. निग्गथेण य गामाणुगाम दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए॥

२५४. निग्गथीए य गाहावइकुल पिडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा पवत्तिणीए[3] अतिय आलोएस्सामि जाव तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि।

सा य सपट्ठिया असपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया। सा णं भते! कि आराहिया? विराहिया?

गोयमा! आराहिया, नो विराहिया।

सा य सपट्ठिया जहा निग्गथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया॥

---

१. स० पा०—एव सपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असपत्तेण।

२. विचार° (ता, म), वितार (व)°।

३. पवित्तिणीए (अ, ता, व, स)।

२५५. से केणट्ठण भंते ! एवं वुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोम वा, गयलोमं वा, सण-लोम वा, कप्पासलोम वा, तणसूय वा दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्झमाणे दड्ढे'[1] त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिण्णे[2], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्झमाणे° दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, ततुग्गयं वा मजिट्ठ[3]-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्व सिया ?
हंता भगव ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते[4], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे° रत्ते त्ति वत्तव्व सिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—आराहए, नो विराहए ॥

जोति-जलण-पदं

२५६. पदीवस्स ण भंते ! झियायमाणस्स कि पदीवे झियाइ ? लट्ठी झियाइ ? वत्ती झियाइ ? तेल्ले झियाइ ? दीवचपए झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो पदीवे झियाइ[5], •नो लट्ठी झियाइ, नो वत्ती झियाइ, नो तेल्ले झियाइ°, नो दीवचपए झियाइ, जोती झियाइ ॥

२५७. अगारस्स[6] णं भंते ! झियायमाणस्स कि अगारे झियाइ ? कुड्डा झियाइ ? कडणा झियाइ ? धारणा झियाइ ? बलहरणे झियाइ ? वसा झियाइ ? मल्ला झियाइ ? वागा झियाइ ? छित्तरा झियाइ ? छाणे झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो अगारे झियाइ, नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोती झियाइ ॥

किरिया-पदं

२५८. जीवे ण भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए, सिय अकिरिए ॥

---

१. डज्झमाणे डज्झे (ता, व)।
२. स० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे।
३. मजिट्ठा (अ, स)।
४. स० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते।
५. सं० पा०—झियाइ जाव नो।
६. आगारे (अ, म, स)।

२५९. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२६०. असुरकुमारे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
एव चेव । एव जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे ॥

२६१. जीवे ण भते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए ॥

२६२. नेरइए ण भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए ?
एवं एसो वि[1] जहा[2] पढमो दंडओ तहा[3] भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा[4] जीवे ॥

२६३ जीवा ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥

२६४. नेरइया ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
एवं एसो वि जहा पढमो दडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवरं—मणुस्सा जहा जीवा ॥

२६५. जीवा ण भते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि, अकिरिया वि ॥

२६६ नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमाणिया, नवर—मणुस्सा जहा जीवा ॥

२६७. जीवे ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए ॥

२६८. नेरइए ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिया तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, नवरं—पंचमकिरिया न भण्णइ, सेस तं चेव । एव जहा वेउव्विय तहा आहारगं पि, तेयगं पि कम्मगं पि भाणियव्व—एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव—

२६९. वेमाणिया णं भते ! कम्मगसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि ॥

२७०. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[5] ॥

---

१. × (अ, क, ता, म, स) ।
२. भ० ८।२५९ ।
३. तहा इमो वि अपरिसेसो (अ, क, ता, व, स)
४. भ० ८।२५८ ।
५. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्तं पडुच्च —

२७१. तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नयरे—वण्णओ[1], गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलावट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[3] समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया॥

२७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना [5]बलसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दंसण-संपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइंदिया जिय-परीसहा° जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति[6]॥

२७३. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो तिविहं तिविहेणं अस्संजय-'विरय-पडिहय'[7]-'[8]पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा° एगंतबाला या वि भवह॥

२७४. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय[9]-°पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा°, एगंतबाला या वि भवामो?

२७५. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे[10] णं अज्जो! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह। तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० १।७।
४. भ० १।८।
५. स० पा०—जहा बितियसए जाव जीवियास।
६. जाव विहरंति (अ, क, ता, म, स)।
७. अविरय-अपडिहय (अ, क, ब, म, स)।
८. स० पा०—जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगंतबाला।
९. स० पा०—विरय जाव एगंतबाला।
१०. तुम्हे (ब)।

२७६. तए ण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो, जए[1] णं अम्हे अदिन्न गेण्हमाणा[2], •अदिन्नं भुजमाणा° अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२७७. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भण्ण[3] अज्जो ! दिज्ज-माणे अदिन्ने, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे[4] अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा गाहावइस्स ण त, नो खलु त तुब्भ, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हह[5], •अदिन्न भुजह°, अदिन्न सातिज्जह। तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव[6] एगतबाला या वि भवह ॥

२७८. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो। अम्हे ण अज्जो ! दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्न सातिज्जामो। तए ण अम्हे दिन्न गेण्ह-माणा, दिन्न भुजमाणा, दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-•[7]पच्चक्खायपावकम्मा, अकिरिया, सवुडा° एगतपडिया या वि भवामो ॥

२७९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! तुम्हे दिन्न गेण्हह[8], •दिन्न भुजह°, दिन्न सातिज्जह, जए[9] ण तुब्भे दिन्न गेण्हमाणा जाव[10] एगतपडिया या वि भवह ?

२८०. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—अम्हण्ण अज्जो ! दिज्ज-माणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे निसिट्ठे। अम्हण्णं अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हण्ण त, नो खलु त गाहावइस्स, तए ण अम्हे दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्नं सातिज्जामो तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा[11], •दिन्नं भुजमाणा,° दिन्न सातिज्ज-माणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंत-

---

१. तए (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. स० पा०—गेण्हमाणा जाव अदिन्न।
३. तुम्हाण (म, स)।
४. निसरिज्ज° (क)।
५ स० पा०—गेण्हह जाव अदिन्न।
६. भ० ८।२७६।
७. सं० पा०—जहा सत्तमसए जाव एगतपडिया
८. स० पा०—गेण्हह जाव दिन्नं।
९. तए (अ, क, ता, ब, म, स)।
१०. भ० ८।२७८।
११. सं० पा०—गेण्हमाणा जाव दिन्नं।

पंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेण अस्सजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह॥

२८१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवामो?

२८२. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव एगतबाला या वि भवह॥

२८३. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे अदिन्न गेण्हामो जाव एगतबाला या वि भवामो?

२८४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भण्णं अज्जो! दिज्जमाणे अदिन्ने •[1]पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा°, गाहावइस्स णं त, नो खलु तं तुब्भ। तए णं तुब्भे अदिन्न गेण्हह जाव[2] एगंतबाला या वि भवह॥

हिंसं पडुच्च—

२८५ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! तिविहं तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

२८६. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवामो?

२८७. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह सघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा अभिहणमाणा[3] •वत्तेमाणा लेसेमाणा संघाएमाणा संघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह॥

२८८. तए ण ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढवि पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्दवेमो। अम्हे ण अज्जो!

---

१. स० पा०—तं चेव जाव गाहावइस्स।

२. तं चेव जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

३. स० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा।

रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पदेसं पदेसेणं वयामो, तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा, पदेसं पदेसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतपंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

२८९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवामो?

२९०. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवह॥

गम्ममाणगयं पडुच्च—

२९१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भण्णं अज्जो! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते॥

२९२. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हं गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते। अम्हण्णं अज्जो! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते। तुब्भण्णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं[1] °नगरं संपाविउकामे° असंपत्ते तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णउत्थिए एवं पडिभणंति,[2] पडिभणित्ता गइप्पवायं नाम अज्झयणं पण्णवइंसु॥

२९३. कतिविहे णं भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते?
गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तं जहा—पयोगगई, ततगई, बंधणछेयणगई, उववायगई, विहायगई[3]। एत्तो आरब्भ[4] पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं विहायगई।

२९४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[6]॥

---

१. स० पा०—रायगिहं जाव असंपत्ते।
२. पडिहणइ (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. विहागती (ता)।
४. आरद्धं (क, ता, ब, म)।
५. प० १६।
६. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

पडिणीय-पदं

२९५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—गुरू णं भंते ! पडुच्च[2] कति पडिणीया[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झाय-पडिणीए, थेरपडिणीए ॥

२९६. गति[4] ण भते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—इहलोगपडिणीए, परलोग-पडिणीए, दुहओलोगपडिणीए[5] ॥

२९७ समूहण्णं भते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए ॥

२९८. अणुकंपं पडुच्च •[6]कति पडिणीया पण्णत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ॥

२९९ सुयण्णं भंते । पडुच्च •[7]कति पडिणीया पण्णत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ॥

३००. भावण्णं भंते ! पडुच्च •[8]कति पडिणीया पण्णत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ॥

पंचववहार-पदं

३०१. कतिविहे णं भंते ! ववहारे[9] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए ।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. पडुच्चा (क, म) ।
३. पडणिया (ता, म), तुलना—ठा० ३।४८८-४९३ ।
४. अत्र णकारयोगे अनुस्वारलोपः ।
५. दुहालोग° (अ, ब, म); उभयपडि° (क); दुहलोग° (ता) ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. स० पा०—पुच्छा ।
९. तुलना—ठा० ५।१२४; व० १० ।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहार पट्ठवेज्जा ।
इच्चेएहिं पचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं आणाए, धारणाए, जीएण ।
जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहार पट्ठवेज्जा ।
से किमाहु भते ! आगमबलिया समणा निग्गथा ?
इच्चेतं पचविहं ववहार जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा'[1] तहिं-तहिं अणिस्सिओवस्सित सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गथे आणाए आराहए भवइ[2] ॥

बंध-पदं

३०२. कतिविहे णं भंते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—इरियावहियबधे[3] य, संपराइयबंधे य ॥

इरियावहियबंध-पदं

३०३. इरियावहियं[4] ण भते ! कम्म किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिणी बधइ ? मणुस्सो बधइ ? मणुस्सी बधइ ? देवो बधइ ? देवी बधइ ?
गोयमा ! नो नेरइओ बधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बधइ, नो देवो बधइ, नो देवी बंधइ । पुव्व पडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बधति, पडिवज्जमाणए पडुच्च १. मणुस्सो वा बधइ २ मणुस्सी वा बधइ ३ मणुस्सा वा बधति ४. मणुस्सीओ वा बधति ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बधति ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बधंति ८. अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधति ॥

---

१. तहा-तहा (अ, स) ।
२. हन्त ! आहुरेवेति गुरुवचन गम्यमिति, अन्ये तु 'से किमाहु भते !' इत्याद्येव व्याख्यान्ति— अथ किमाहुर्भदन्त ! आगमबलिका: श्रमणा निर्ग्रन्था: ! पञ्चविधव्यवहारस्य फलमिति शेष ; अत्रोत्तरमाह—'इच्चेय' मित्यादि(वृ) ।
३. °वधिय° (म); °वहिया° (स) ।
४. °वहिया (अ, क, स); °वहिय (ता) ।

३०४. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसगो बधइ ? इत्थीओ ? बंधंति ? पुरिसा बंधंति ? नपुसगा बधंति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो बंधइ ?

गोयमा ! नो इत्थी बंधइ, नो पुरिसो बंधइ[1] •नो नपुसगो बंधइ, नो इत्थीओ बंधंति, नो पुरिसा बधंति, नो नपुसगा बंधंति, नोइत्थी नोपुरिसो° नोनपुसगो बंधइ—पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ अवगयवेदा वा बधंति ।।

३०५. जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बधंति त भते ! किं १. इत्थीपच्छाकडो बधइ ? २. पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? ३. नपुसगपच्छाकडो बंधइ ? ४. इत्थीपच्छाकडा बधंति ? ५. पुरिसपच्छाकडा बंधंति ? ६. नपुसगपच्छाकडा बधंति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य । बंधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ ८ एव एते छव्वीस भंगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधंति ?

गोयमा ! १. इत्थीपच्छाकडो वि बंधइ २. पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ ३. नपुसगपच्छाकडो वि बंधइ ४ इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति ५. पुरिसपच्छाकडा वि बधंति ६. नपुसगपच्छाकडा वि बधंति ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बधइ, एवं एए चेव छव्वीसं भगा भाणियव्वा जाव[2] २६. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधंति ।।

३०६. त भंते ! कि १. बधी बधइ बधिस्सइ ? २. बधी बधइ न बधिस्सइ ? ३ बधी न बधइ बधिस्सइ ? ४. बंधी न बधइ न बधिस्सइ ? ५. न बधी बंधइ बंधिस्सइ ? ६. न बंधी बधइ न बधिस्सइ ? ७ न बधी न बधइ बधिस्सइ ? ८. न बधी न बधइ न बधिस्सइ ?

गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बंधइ न बधिस्सइ, एवं त चेव सव्व जाव अत्थेगतिए न बधी न बधइ न बंधिस्सइ ।

---

१. स० पा०—बधइ जाव नोनपुसगो ।

२. ८. अहवाइत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बधंति ९. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य बधइ १०. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य बधंति ११. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ १२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य बंधंति १३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य बंधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधंति

गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, एवं जाव[1] अत्थेगतिए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, नो चेव णं न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

३०७. तं भंते ! किं सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ?
गोयमा ! सादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो सादीयं अपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ॥

३०८. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? देसेणं सव्वं बंधइ ? सव्वेणं देसं बंधइ ? सव्वेणं सव्वं बंधइ ?
गोयमा ! नो देसेणं देसं बंधइ, नो देसेणं सव्वं बंधइ,नो सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ॥

संपराइयबंध-पदं

३०९. संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? जाव[2] देवी बंधइ ?
गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बंधइ, मणुस्सो वि बंधइ, मणुस्सी वि बंधइ, देवो वि बंधइ, देवी वि बंधइ ॥

३१०. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? तहेव जाव[3] नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ जाव नपुंसगा वि बंधंति, 'अहवा एते'[4] य अवगयवेदो य बंधइ, अहवा एते य अवगयवेदा य बंधंति ॥

---

१५. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १६ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १७ अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १८. अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १९. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २०. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २१. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २४ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २५. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ।

१. अत्र जाव-पदेन त्रयो भङ्गा गृहीता.।
२. भ० ८।३०३।
३. भ० ८।३०४।
४. अहवेए (अ, ब, स); अहवेते (ता, म)।

३११ 'जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ, अवगयवेदा य बंधंति'[1] तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? एवं जहेव इरियावहिय-बंधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ॥

३१२. तं भंते ! किं १. बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? २. बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? ३. बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ २. अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ३. अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ४. अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

३१३. तं भंते ! किं सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! सादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा अपज्जवसियं बंधइ, नो चेव णं सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ॥

३१४. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? एवं जहेव इरियावहियबंधगस्स जाव[2] सव्वेणं सव्वं बंधइ ॥

कम्मप्पगडीसु परीसहसमवतार-पदं

३१५ कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेदणिज्जं मोहणिज्जं आउगं नामं गोयं[3] अंतराइयं ॥

३१६. कइ णं भंते ! परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिंछापरीसहे, पिवासा-परीसहे[4] •सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइ-परीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोस-परीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे [5]पण्णापरीसहे नाणपरीसहे°दंसण-परीसहे[6] ॥

३१७ एए णं भंते ! बावीसं परीसहा कतिसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति ?
गोयमा ! चउसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति, तं जहा—नाणावरणिज्जे, वेदणिज्जे, मोहणिज्जे, अंतराइए ॥

---

१. × (ब) ।
२. भ० ८।३०८ ।
३. गोदं (ब) ।
४. सं० पा०—पिवासापरिसहे जाव दसण° ।
५. अन्नाणपरिसहे (उत्त० २।३) ।
६. नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे (स० २२।१) ।

३१८. नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[1] य ॥

३१९. वेदणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तं जहा—

पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य।
तणफास—जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जम्मि ॥१॥

३२०. दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरति ?
गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ ॥

३२१. चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तं जहा—

अरती अचेल इत्थी, निसीहिया जायणा य अक्कोसे।
सक्कार-पुरक्कारे, चरित्तमोहम्मि सत्तेते ॥१॥

३२२. अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ॥

३२३. सत्तविहबंधगस्स ण भते ! कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीस परीसहा पण्णत्ता। वीस पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समय उसिणपरीसहं वेदेइ, ज समय उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समय सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं निसीहिया-परीसहं वेदेइ, ज समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ नो त समय चरियापरीसहं वेदेइ ॥

३२४. 'एवं अट्ठविहबंधगस्स वि'[2] ॥

३२५. छव्विहबंधगस्स ण भते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दस परिसहा पण्णता। बारस पुण वेदेइ—ज समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो त समयं उसिणपरीसहं[3] वेदेइ, ज समय उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो त समय सेज्जा-परीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो त समय चरियापरीसहं वेदेइ ॥

---

१. अण्णाण° (अ)।
२. अट्ठविहबंधगस्स ण भते ! कति परिसहा प० गो० बावीसं परीसहा, त छुहापरीसहे पिवासा परीसहे सीयपरीसहे उसिणपरीसहे दस-मसगपरीसहे जाव अलाभपरीसहे, एव अट्ठ-विहबंधगस्स वि (क, ब, म); अट्ठविहबंधगस्स णं भते ! कति परीसहा प० गो० बावीस परीसहा प० एव अट्ठविधबंधगस्स (ता, स)।
३. उसुण° (ता)।

३२६. एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एवं चेव—जहेव छव्विहबंधगस्स ॥

३२७. एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेस जहा छव्विहबधगस्स ॥

३२८. अबधगस्स ण भंते ! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—ज समयं सीयपरीसह वेदेइ नो त समय उसिणपरीसहं वेदेइ, ज समय उसिणपरीसह वेदेइ नो त समय सीयपरीसह वेदेइ, ज समय चरियापरीसह वेदेइ नो त समय सेज्जापरीसह वेदेइ, जं समय सेज्जापरीसहं वेदेइ नो त समय चरियापरीसह वेदेइ ॥

सूरिय-पदं

३२९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तसि मूले य दूरे य दीसति ? अत्थमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसंति ?
हंता गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरे य[1] ॰मूले य दीसति, मज्झंतियमुहुत्तसि मूले य दूरे य दीसति॰, अत्थमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसंति ॥

३३०. जंबुद्दीवे णं भते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि, मज्झतियमुहुत्तसि य, अत्थमणमुहुत्तसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेण ?
हता गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमण[2]॰मुहुत्तसि, मज्झतियमुहुत्तसि य, अत्थमणमुहुत्तसि य सव्वत्थ समा॰ उच्चत्तेणं ॥

३३१. जइ णं भते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमहुत्तसि, मज्झतियमुहुत्तसि य, अत्थमणमुहुत्तसि[3] ॰य सव्वत्थ समा॰ उच्चत्तेण, से केण खाइ अट्ठेण भते ! एव वुच्चइ– जबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि[4] दूरे य मूले य दीसति ? जाव अत्थमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति ?
गोयमा ! लेसापडिघाएण उग्गमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति, लेसाभितावेण मज्झतियमुहुत्तसि मूले य दूरे य दीसति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तसि

---

१. स॰ पा॰—त चेव जाव अत्थमण॰ ।
२. स॰ पा॰—उग्गमण जाव उच्चत्तेण ।
३. स॰ पा॰—अत्थमणमुहुत्तसि जाव उच्चत्तेण । 'अ, ता, ता, म, स' सकेतितादर्शेषु 'अत्थमणमुहुत्तसि मूले जाव उच्चत्तेण' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पद नावश्यक प्रतिभाति ।
४. ॰मुहुत्तसि य (अ, क,ता, ब, म, स)।

दूरे य मूले य दीसति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति जाव अत्थमण[1]•मुहुत्तंसि दूरे य मूले य° दीसंति ॥

३३२. जबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं गच्छंति? पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छति? अणागय खेत्त गच्छति?
गोयमा! नो तीय खेत्तं गच्छति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छति ॥

३३३. जबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया किं तीय खेत्तं ओभासंति? पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासति? अणागय खेत्त ओभासति?
गोयमा! नो तीय खेत्त ओभासति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्त ओभासति ॥

३३४. तं भते! किं पुट्ठं ओभासति? अपुट्ठं ओभासंति?
गोयमा! पुट्ठं ओभासति, नो अपुट्ठं ओभासंति जाव[2] नियमा छद्दिसि ॥

३३५. जंबुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं उज्जोवेंति?
एव चेव जाव नियमा छद्दिसि ॥

३३६ एव तवेंति, एव भासति जाव नियमा छद्दिसि ॥

३३७. जंबुद्दीवे णं भते! दीवे सूरियाणं कि तीए खेत्ते किरिया कज्जइ? पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ?
गोयमा! नो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ॥

३३८. सा भते! किं पुट्ठा कज्जइ? अपुट्ठा कज्जइ?
गोयमा! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[3] नियमा छद्दिसि ॥

३३९. जबुद्दीवे णं भते! दीवे सूरिया केवतिय खेत्त उड्ढ तवति? केवतियं खेत्त अहे तवंति? केवतिय खेत्त तिरिय तवति?
गोयमा! एग जोयणसयं उड्ढं तवति, अट्ठारस जोयणसयाइ अहे तवंति, सीयालीस जोयणसहस्साइ दोण्णिय तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवंति ॥

जोइसियाणं उववत्ति-पदं

३४०. अतो णं भते! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-ताराख्वा ते ण भते! देवा कि उड्ढोववन्नगा?

---

१. स० पा०—अत्थमण जाव दीसति।
२. भ० १।२५९-२६६।
३ भ० १।२५९-२६६।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[1]—

३४१. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिए उववाएणं ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४२. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ?
जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

३४३. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

नवमो उद्देसो

बंध-पदं

३४५. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७. अणादियवीससाबंधे[4] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

---

१. जी० ३ ।
२. जी० ३ ।
३. भ० १।५१ ।
४. अणातीत° (ता) ।

३४९. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वद्धं । एव अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एव आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि[1] ॥

३५०. सादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ॥

३५१. से किं त बंधणपच्चइए ?
बंधणपच्चइए—जण्णं परमाणुपोग्गलदुप्पदेसिय-तिप्पदेसिय जाव दसपदेसिय-सखेज्जपदेसिय-असखेज्जपदेसिय-अणतपदेसियाण खंधाणं वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बंधणपच्चएण[2] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज काल । सेत्तं बंधणपच्चइए ॥

३५२. से किं त भायणपच्चइए ?
भायणपच्चइए—जण्णं जुण्णसुर-जुण्णगुल-जुण्णतदुलाण भायणपच्चएणं[3] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जं कालं । सेत्तं भायणपच्चइए ॥

३५३ से किं त परिणामपच्चइए ?
परिणामपच्चइए—जण्णं अब्भाणं, अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए जाव[4] अमोहाण परिणामपच्चएण[5] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्त परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीयवीससाबंधे । सेत्तं वीससाबंधे ॥

पयोगबंध-पदं

३५४. से किं तं पयोगबंधे ?
पयोगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए ।
तत्थ णं जे से अणादीए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं, तत्थ वि ण तिण्हं-तिण्हं अणादीए अपज्जवसिए, सेसाणं सादीए । तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से ण सिद्धाण । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से णं

---

१. अस्य सूत्रस्यानन्तर 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठोऽस्ति—'धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबधस्स ण भते ! केवइय कालं अतर होइ गो नत्थि अतर एव तिण्हवि सेत्त अणादीयवीससाबधे ।'
२. °पच्चइएण (अ) ।
३. °पच्चइएणं (अ, स) ।
४. भ० ३।२५३ ।
५. °पच्चइएणं (अ, स) ।

चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—आलावणबंधे, अल्लियावणबंधे, सरीरबंधे, सरीर-प्पयोगबंधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५. से किं तं आलावणबंधे ?
आलावणबंधे—जण्णं तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलाल-भाराण वा[1], वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहिं आलावण-बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण संखेज्जं कालं। सेत्तं आलावण-बंधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६. से किं तं अल्लियावणबंधे ?
अल्लियावणबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चय-बंधे, साहणणाबंधे[2] ॥

३५७. से किं तं लेसणाबंधे ?
लेसणाबंधे—जण्णं कुड्डाणं, कोट्टिमाणं[3], खंभाणं, पासायाणं, कट्ठाणं, चम्माणं, घडाणं, पडाणं, कडाणं छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसण-एहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं लेसणाबंधे ॥

३५८. से किं तं उच्चयबंधे ? उच्चयबंधे—जण्णं तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगर-रासीण वा, उच्चत्तेणं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं उच्चयबंधे ॥

३५९. से किं तं समुच्चयबंधे ?
समुच्चयबंधे—जण्णं अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजालि-याणं, सराणं, सरपंतियाणं, सरसरपंतियाणं, बिलपंतियाणं देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाणं, फरिहाणं[4], पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[5]-महापह-पहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिला[6]-समुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं समुच्चयबंधे ॥

---

१. वा वेल्लभाराण वा (अ, स)।
२. साहणबंधे (ता); सहणाण° (म, स)।
३. कुट्टिमाण (क)।
४. परिहाण (क, व, म)।
५. चउमुह (क, ता)।
६. सिलेस (अ, स); सेला (ता)।

३६०. से किं तं साहणणाबंधे ?
साहणणाबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा— देससाहणणाबंधे य, सव्वसाहणणाबंधे य ॥

३६१ से किं तं देससाहणणाबंधे ?
देससाहणणाबंधे—जण्णं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[1]-आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणमादीणं देस-साहणणाबंधे[2] समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं देससाहणणाबंधे ॥

३६२. से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ?
सव्वसाहणणाबंधे—से णं खीरोदगमाईणं। सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे । सेत्तं साहणणाबंधे। सेत्तं अल्लियावणबंधे ॥

सरीरं पडुच्च—

३६३ से किं तं सरीरबंधे ?
सरीरबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वपयोगपच्चइए[3] य, पडुप्पन्नपयोग-पच्चइए[4] य ॥

३६४ से किं तं पुव्वपयोगपच्चइए ?
पुव्वपयोगपच्चइए—जण्णं नेरइयाणं संसारत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ-तत्थ तेसु-तेसु कारणेसु समोहण्णमाणाणं[5] जीवप्पदेसाणं[6] बंधे समुप्पज्जइ। सेत्तं पुव्व-पयोगपच्चइए ॥

३६५. से किं तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए ?
पडुप्पन्नपयोगपच्चइए—जण्णं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अंतरा मंथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माणं बंधे समुप्पज्जइ। किं कारणं ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति[7]। सेत्तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए। सेत्तं सरीरबंधे ॥

---

१. कडेच्छुय (ता, ब, म), कडुच्छया (भ० ५।१८९)
२. देससाघणणाएबंधे (ता)।
३. तुव्वप्पओग ० (ता)।
४. पच्चुप्पण्ण ० (ता, ब, म)।
५. समोहण ० (स)।
६ इह जीवप्रदेशानामित्युक्तावपि शरीरबन्धाधिकारात्तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेश इति न्यायेन जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानामिति द्रष्टव्य, शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे समुद्घातेन विक्षिप्य सङ्कोचितानामुपसर्जनीकृततैजसादिशरीरप्रदेशाना जीवप्रदेशानामेवेति (वृ)।
७. शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे तेयाकम्माणं बंधे समुप्पज्जइ (वृ)।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं तं सरीरप्पयोगबधे ?
सरीरप्पयोगबंधे पचविहे पण्णत्ते, तं जहा-ओरालियसरीरप्पयोगबधे, वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे, आहारगसरीरप्पयोगबंधे, तेयासरीरप्पयोगबधे, कम्मासरीरप्पयोगबंधे ।।

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे, बेइंदियओरालियसरीरप्पयोगबधे जाव पचिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ।।

३६८. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे, एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तागब्भवक्कतियमणुस्सपचिदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे य, अप्पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्स[2]°पचिदियओरालियसरीरप्पयोग°-बधे य ।।

३६९. ओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोग च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण ओरालियसरीरप्पयोगबंधे ।।

३७०. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
एवं चेव । पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे एव चेव, एव जाव वणस्सइकाइया । एव बेइंदिया, एवं तेइदिया, एव चउरिंदिया ।।

३७१. तिरिक्खजोणियपचिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवं चेव ।।

३७२. मणुस्स पचिदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया[3] °कम्मं च जोगं च भवं च° आउय च पडुच्च मणुस्सपचिदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं मणुस्सपंचिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ।।

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कि देसबधे ? सव्वबधे ?

---

१. प० २१ ।
२. सं० पा०—°मणुस्स जाव बधे ।
३. स० पा०—पमादपच्चया जाव आउय ।

गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ।।

३७४. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कि देसबधे ? सव्वबंधे ?
एव चेव । एव पुढविक्काइया एव जाव—

३७५. मणुस्सपचिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कि देसबधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ।।

३७६. ओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयूणाइ[1] ।।

३७७. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबंधे जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइं समयूणाइ ।।

३७८. पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण खुड्डागं[2] भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ समयूणाइ । एव सव्वेसि सव्वबंधो एक्क समय, देसबधो जेसि नत्थि वेउव्वियसरीर तेसिं जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहणं तिसमयूण, उक्कोसेणं जा सा ठिती सा समयूणा कायव्वा, जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीर तेसि देसबंधो जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा जाव मणुस्साण देसबधे जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयूणाइ ।

३७९. ओरालियसरीरबधंतर ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेणं खुड्डाग भवग्गहण तिसमयूण, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइ । देसबधंतर जहण्णेण एक्कं समय, उक्को-सेण तेत्तीस सागरोवमाइ तिसमयाहियाइ ।।

३८०. एगिदियओरालियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसबधंतरं जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

३८१. पुढविक्काइयएगिदियपुच्छा ।
सव्वबधतर जहेव एगिदियस्स तहेव भाणियव्व । देसबधंतर जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण तिण्णि समया । जहा पुढविक्काइयाण एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाण, नवरं—सव्वबधतरं उक्कोसेण जा जस्स ठिती सा समया-

---

१. समयऊणाइं (क) ।

२. खुड्डाग (क) प्राय. सर्वत्र ।

हिया कायव्वा । वाउक्काइयाणं सव्ववंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं ति-समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसवंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८२. पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा ।
सव्ववंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया । देसवधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८३. जीवस्स णं भंते ! एगिंदियत्ते, नोएगिंदियत्ते, पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदिय-ओरालियसरीरप्पयोगवंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्ववंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं । देसवंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवास-मब्भहियाइं ॥

३८४. जीवस्स णं भंते ! पुढविक्काइयत्ते, नोपुढविक्काइयत्ते, पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्ववधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो । देसवंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो । जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं । वणस्सइकाइयाणं[2] दोण्णि खुड्डाइं एवं चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसवधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो ॥

३८५. एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसवंधगाणं, सव्ववंधगाणं, अवंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्ववंधगा, अवंधगा विसेसाहिया, देसवंधगा असंखेज्जगुणा ॥

---

१. एवं चेव (अ, क, ता, व, म); तिसमयूणाइं एवं चेव (स); अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम् । 'एवं चेव' त्ति करणात् 'तिसमयूणाइं' ति द्व्यम् ।
२. तरुकालो वण° (ता) ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

वेउव्वियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३८६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य पचेंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ॥

३८७. जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ? अवाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ?
एवं एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव[1]पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध[2] •अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ॥

३८८. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं 'च लद्धिं वा'[4] पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३८९. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए एवं चेव जाव लद्धिं पडुच्च वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय[5] •सरीरप्पयोग° बंधे ॥

३९० रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि[6]•नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोग°बंधे, एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

३९१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जहा वाउक्काइयाणं । मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव । असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमारा । एवं वाणमंतरा । एवं जोइसिया । एवं सोहम्मकप्पोवया[7] वेमाणिया । एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया । अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव ।

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°सिद्ध जाव पयोगबंधे ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४. वा लद्धिं (अ); वा लद्धिं वा (क, ता, ब, म, स) ।
५. स० पा०—°वेउव्विय जाव बंधे ।
६. स० पा०—°पुढवि जाव बंधे ।
७. °कप्पोवा (ता) ।

३९२. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि।
वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे वि एवं चेव। रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव। एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥

३९३. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया। देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३९४. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३९५. रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं। एवं जाव अहे सत्तमा, नवरं—देसबंधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया सा समयूणा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं, असुरकुमार-नागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवरं—जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३९६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ[2] •ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा° आवलियाए असंखेज्जइभागो। एवं देसबंधंतरं पि ॥

३९७. वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। एवं देसबंधंतरं पि ॥

३९८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं—पुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं। एवं देसबंधंतरं पि। एवं मणूसस्स वि[3] ॥

---

१. तिसमऊणाइं (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—अणंताओ जाव आवलियाए।
३. मणुयस्स (क, म); मणुस्सा (ता, ब)।

३९९. जीवस्स णं भंते ! वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं देसबंधतरं पि ॥

४००. जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, नोरयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, पुणरवि रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अहेसत्तमाए, नवरं—जा जस्स ठिती जहण्णिया सा सव्वबंधतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं । असुरकुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं—एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं, नवरं—सव्वबंधतरं जस्स जा ठिती जहण्णिया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥

४०१. जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते[1], नोआणयदेवत्ते, पुणरवि आणयदेवत्ते पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अच्चुए, नवरं—जस्स जा ठिती सा सव्वबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥

४०२. गेवेज्जाकप्पातीतापुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

४०३. जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं । देसबंधतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं ॥

४०४. एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

---

१. आणया° (अ) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च –

४०५. आहारगसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

४०६. जइ एगागारे पण्णत्ते कि मणुस्साहारगसरीरप्पयोगवधे ? अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगवधे ?
गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगवंधे, नो अमणुस्साहारगसरीप्पयोगवंधे। एवं एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे जाव[1] इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोग–वधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त[2] •सजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कतियमणुस्सा°हारगसरीरप्पयोगबधे ॥

४०७. आहारगसरीरप्पयोगवधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोग च भवं च आउयं च° लद्धि वा पडुच्च[4] आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०८. आहारगसरीरप्पयोगबंधे ण भते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ॥

४०९. आहारगसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४१०. आहारगसरीरप्पयोगबंधंतर[5] णं भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—अणताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—अवड्ढपोग्गलपरियट्ट देसूण । एवं देसबधतर पि ॥

४११. एएसि ण भते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबधगाण, सव्वबधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबधगा अणतगुणा ॥

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°पमत्त जाव आहारग° ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव लद्धि ।
४. पडुच्चा (ता, ब) ।
५. °बधतरे (अ, क, स) ।
६ सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

तेयासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१२ तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे, बेइंदिय-तेयासरीरप्पयोगबंधे जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे ॥

४१३. एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव[1] पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय[2]•कप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोग°-बंधे य ॥

४१४. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं वा[4] पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगबंधे ॥

४१५ तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे ॥

४१६ तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[5] वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

४१७. तेयासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ॥

४१८. एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ॥

कम्मासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१९. कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

---

१. प० २१ ।
२. सं० पा०—°वाइय जाव बंधे ।
३. सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४ च (ता, ब, म) ।
५. अणादिए (ता) ।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

४२०. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिण्हवणयाए, नाणंतराएण, नाणप्पदोसेणं, नाणच्चासातणयाए[1], नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोग-नामाए[2] कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

४२१. दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, •[3]दसणणिण्हवणयाए, दसणतराएण, दसणप्प-दोसेणं, दंसणच्चासातणयाए॰, दंसणविसंवादणाजोगेणं दसणावरणिज्जकम्मा-सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण[4] •दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर॰प्पयोग-बंधे ॥

४२२. सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, •[5]जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए॰ अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्प-योगनामाए कम्मस्स उदएण सायावेयणिज्जकम्मा[6]•सरीरप्पयोग॰बधे ॥

४२३. असायावेयणिज्ज[7]•कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएण॰ ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, •[8]परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खण-याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए॰ परियावणयाए असाया-वेयणिज्जकम्मा[9]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण असायावेयणिज्जकम्मा-सरीर॰प्पयोगबंधे ॥

४२४. मोहणिज्जकम्मासरीर[10]•प्पयोगबधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएण॰ ?
गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमाययाए तिव्वलोभयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर[11]-•प्पयोगनामाए कम्मस उदएणं मोहणिज्जकम्मासरीर॰प्पयोगबधे ॥

---

१. ॰सादणाए (अ); सादणताए (क, ब, म); ॰सातणाताए (ता)।
२. नाणावरणिज्ज॰ (अ, स)।
३. स॰ पा॰—एवं जहा नाणावरणिज्जं, नवरं—दंसणनामं घेतव्वं जाव दंसण॰।
४. सं॰ पा॰—उदएणं जाव पयोग॰।
५. स॰ पा॰—एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया॰।
६. सं॰ पा॰—॰कम्मा जाव बधे।
७. सं॰ पा॰—पुच्छा।
८. सं॰ पा॰—जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया॰।
९. सं॰ पा॰—॰कम्मा जाव पयोग॰।
१०. सं॰ पा॰—पुच्छा।
११. स॰ पा॰—॰सरीर जाव पयोग॰।

४२५. नेरइयाउयकम्मासरीर[1]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, 'पंचिदियवहेणं, कुणिमाहारेण'[2] नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४२६ तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?०
गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल[4]-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा[5]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२७. मणुस्साउयकम्मासरीर[6]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए[7], अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा[8]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मणुस्साउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२८. देवाउयकम्मासरीर[9]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेण[10], अकामनिज्जराए देवाउयकम्मा[11]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं देवाउयकम्मासरीर०प्पयोगबंधे ॥

४२९. सुभनामकम्मासरीर[12]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! काउज्जुययाए[13], 'भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए',[14] अविसंवादणाजोगेणं सुभनामकम्मा[15]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सुभनामकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४३०. असुभनामकम्मासरीर[16]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, 'भासअणुज्जुययाए विसंवाद-

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. कुणिमाहारेण, पचिदियवहेण (क, ब, म) ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. ०तोल (अ); ०तुल्ल (स) ।
५. सं० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. साणुक्कोसियाए (अ); साणुक्कोसणयाए (क)
८. स० पा०—पुच्छा ।
९. स० पा०—पुच्छा ।
१०. बालतवेण (व) ।
११. स० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
१२. स० पा०—पुच्छा ।
१३. कायजुययाए (अ); कायउज्जुययाए (स) ।
१४. भासुज्जुययाए भावुज्जुययाए (ता) ।
१५. सं० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
१६. सं० पा०—पुच्छा ।

णाजोगेणं[1] असुभनामकम्मा[2]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असुभनाम-कम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३१. उच्चागोयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, बलअमदेणं, रूवअमदेणं, तवअमदेणं, 'सुयअमदेणं, लाभअमदेणं',[4] इस्सरियअमदेणं[5] उच्चागोयकम्मा[6]•सरीरप्पयोग-नामाए कम्मस्स उदएणं उच्चागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३२. नीयागोयकम्मासरीर[7]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेणं, बलमदेणं[8], •रूवमदेणं, तवमदेणं, सुयमदेणं, लाभमदेणं°, इस्सरियमदेणं[9] नीयागोयकम्मा[10]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नीयागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४३३. अंतराइयकम्मासरीर[11]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियं-तराएणं, अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मा-सरीरप्पयोगबंधे ॥

पयोगबंधस्स देसबंध-सव्वबंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं जाव अंतराइयं ॥

४३५. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[12] •वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए° । एव जाव अंतराइयस्स ॥

४३६. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स[13]•अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्ज-वसियस्स नत्थि अंतरं° । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३७. एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण

---

१. वायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुयाए (ता) ।
२. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. लाभअमदेणं, सुयअमदेणं (अ) ।
५. इस्सरिय° (म) ।
६. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. सं० पा०—बलमदेण जाव इस्सरिय° ।
९. तिस्सरिय° (म) ।
१०. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
११. सं० पा०—पुच्छा ।
१२. सं० पा०—एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव ।
१३. सं० पा०—एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतर तहेव ।

य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अबंधगा देसबंधगा, अणंतगुणा° । एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स ।।

४३८. आउयस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ।।

४३९. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
आहारगसरीरस्स[2] किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
तेयासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ।
कम्मासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
[3]•गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! ° देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४०. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ।।

४४१. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । आहारगसरीरस्स एवं चेव । तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएण समं भणियं तहेव भाणियव्वं जाव[4] देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४२. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स ।
२. आहारासरीरस्स (ता, व) ।
३. सं० पा०—जहेव तेयगस्स जाव देसबंधए ।
४. भ० ८।४३९ ।

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४३. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं वेउव्वियस्स वि । तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं[1] ॥

४४४. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहा आहारगस्स सव्वबधेणं भणिय तहा देस-बंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४५. जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए वा, अबंधए वा ।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा ?
वेउव्वियसरीस्स किं बंधए ? अबंधए ?
एवं चेव । एवं आहारगस्स[2] वि ।
कम्मगसरीरस्स कि बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए कि देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४६. जस्स णं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
तेयासरीरस्स[3] °कि बंधए ? अबधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबधए ।
जइ बंधइ कि देसबधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा !° देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४७. एएसि णं भंते ! जीवाण[4] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं

---

१. भ० ८।४३६।
२. आहारगसरीरस्स (अ, स)।
३. स० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसबधए ।
४. सव्वजीवाणं (अ, स) ।

देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १. सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा २. तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा ३. वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असखेज्जगुणा ४. तस्स चेव देसबंधगा असखेज्जगुणा ५ तेया-कम्मगाणं[2] अबंधगा अणंतगुणा ६ ओरालियसरीरस्स सव्वबधगा अणंतगुणा ७. तस्स चेव अबधगा विसेसाहिया ८. तस्स चेव देसबधगा असखेज्जगुणा ९. तेया-कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया १० वेउव्वियसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ११. आहारगसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ॥

४४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

दसमो उद्देसो

सुय-सील-पद

४४९. रायगिहे नगरे जाव[4] एव वयासी—अण्णउत्थिया णं भते ! एवमाइक्खति जाव[5] एवं परूवेति—एवं खलु १ सीलं सेयं २ सुयं सेयं ३. 'सुयं सील सेयं'[6] ॥

४५० से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[8] परूवेमि—

एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—१. सीलसंपन्ने नामं एगे नो सुयसपन्ने २ सुयसपन्ने नाम एगे नो सीलसंपन्ने ३. एगे सीलसंपन्ने वि सुयसपन्ने वि ४. एगे नो सीलसपन्ने नो सुयसपन्ने ।

तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं—उवरए, अविण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ।

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. °गाए दोण्ह वि तुल्ला (अ, ता, स) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।
५. भ० १।४२० ।
६. सुय सेयं सील सेयं (क, ता, ब, स, वृ) ।
७. भ० ८।४४९ ।
८. भ० १।४२१ ।

तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए, विण्णायधम्मे। एस णं गोयमा! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं—उवरए, विण्णायधम्मे। एस णं गोयमा! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुयवं—अणुवरए, अविण्णायधम्मे। एस णं गोयमा! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते।

आराहणा-पदं

४५१. कतिविहा णं भंते! आराहणा पण्णत्ता?
गोयमा! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा॥

४५२. नाणाराहणा णं भंते! कतिविहा पण्णत्ता?
गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥

४५३. दंसणाराहणा णं भंते! कतिविहा पण्णत्ता?
[1]•गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥

४५४. चरित्ताराहणा णं भंते! कतिविहा पण्णत्ता!
गोयमा! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा॥°

४५५. जस्स णं भंते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा?
गोयमा! 'जस्स उक्कोसिया'[2] नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा॥

४५६. जस्स णं भंते! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा?
[3]•गोयमा! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा°॥

४५७. जस्स णं भंते! उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा?

---

१. सं० पा०—एव चेव तिविहा वि, एव चरित्ताराहणा वि।
२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, ब)।
३. सं० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा।

गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा[1] वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दसणाराहणा नियमा उक्कोसा ॥

४५८. उक्कोसियण्ण[2] भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति[4], अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ॥

४५९. उक्कोसियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं °[5]सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति, अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति° ॥

४६०. उक्कोसियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता [6]°कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति,° अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ॥

४६१. मज्झिमियण्ण भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ ॥

४६२. मज्झिमियण्ण भंते ! दसणाराहण आराहेत्ता [7]°कतिहिं भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अतं करेति, तच्च पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

४६३. मज्झिमियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ° ॥

---

१. उक्कोसिया (व, स)।
२. उक्कोसिया ण (अ, क, व, स); उक्कोसिय ण (ता)।
३. भ० १।४४।
४. करेति, अत्थेगतिए दोच्चे ण भवग्गहणेण सिज्झति जाव अत करेति (क, ब, म, स)।
५. स० पा०—एव चेव।
६. स० पा०—एव चेव नवरं अत्थेगतिए।
७. स० पा०—एव चेव एव मज्झिमिय चरित्ताराहण पि।

४६४. जहण्णियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।।

४६५. [1]°जहण्णियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।।

४६६. जहण्णियण्णं भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ° ।।

पोग्गलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा--वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे ।।

४६८. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणामे । एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ।।

४६९. संठाणपरिणामे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव[3] आयतसठाणपरिणामे ।।

पोग्गलपएसस्स दव्वादीहिं भंग-पदं

४७०. एगे[4] भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे कि १. दव्वं ? २. दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४. दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ? ६. उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

---

१. सं० पा०—एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि ।
२. भ० ८।३६ ।
३. भ० ८।३६ ।
४. एगे णं (अ) ।

गोयमा ! १. सिय दव्वं २ सिय दव्वदेसे ३. नो दव्वाइं ४. नो दव्वदेसा ५. नो दव्व च दव्वदेसे य ६ नो दव्वं च दव्वदेसा य ७. नो दव्वाइं च दव्वदेसे य ८. नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ।।

४७१. दो भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ? दव्वदेसे ?—पुच्छा[1] ।
गोयमा ! सिय दिव्वं, सिय दव्वदेसे, सिय दव्वाइं, सिय दव्वदेसा, सिय दव्वं च दव्वदेसे य[2] । सेसा पडिसेहेयव्वा ।।

४७२. तिण्णि भते पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, एव सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसे य, नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ।।

४७३. चत्तारि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, अट्ठ वि भगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य । जहा चत्तारि भणिया एव पच, छ, सत्त जाव असखेज्जा ।।

४७४. अणंता भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ?
एवं चेव जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसा य ।।

पएस-परिमाण-पदं

४७५. केवतिया ण भते ! लोयागासपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा लोयागासपदेसा पण्णत्ता ।।

४७६. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स केवइया जीवपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावतिया लोयागासपदेसा, एगमेगस्स ण जीवस्स एवतिया जीवपदेसा पण्णत्ता ।।

कम्माणं अविभागपलिच्छेद-पदं

४७७. कति णं भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव[3] अंतराइयं ।।

४७८ नेरइयाणं भते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ । एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं ।।

---

१. पुच्छा तहेव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. य नो दव्व च दव्वदेसा य (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. भ० ६।३३ ।

४७६. नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८०. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८१. एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणियाण अतराइयस्स[1] ।।

४८२. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणतेहि ।।

४८३. एगमेगस्स णं भते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि[2] अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणंतेहि । जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवरं—मणूसस्स जहा जीवस्स ।।

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स ण भते । जोवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?-
गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा जीवस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—मणूसस्स जहा जीवस्स । एव जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स । एव जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर—वेयणिज्जस्स, आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसि चउण्ह वि कम्माण मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं । सेसं तं चेव ।।

४८५. जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज ? जस्स दसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्ज तस्स दंसणावरणिज्ज नियम अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिज्ज तस्स वि नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ।।

४८६. जस्स ण भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्जं ?

---

१. अतरातियस्स (अ, स); अतरादियस्स (ता) २. केवइहिं (ता) ।

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियमं[1] अत्थि जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ॥

४८७. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियम अत्थि ॥

४८८. जस्स ण भंते ! नाणावरणिज्ज तस्स आउय ? [2]•जस्स आउय तस्स नाणावरणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स नाणावरणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि ।° एव नामेण वि, एव गोएण वि समं, अंतराइएण जहा दरिसणावरणिज्जेण सम तहेव नियम परोप्परं भाणियव्वाणि ॥

४८९. जस्स णं भंते ! दरिसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ?
जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणिय तहा दरिसणावरणिज्ज पि उवरिमेहि छहि कम्मेहि सम भाणियव्व जाव अतराइएण ॥

४९०. जस्स णं भते ! वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियमं अत्थि ॥

४९१. जस्स ण भंते ! वेयणिज्ज तस्स आउयं ? जस्स आउय तस्स वेयणिज्ज ?
एवं एयाणि परोप्परं नियम । जहा आउएण सम एव नामेण वि गोएण वि समं भाणियव्वं ॥

४९२. जस्स णं भंते ! वेयणिज्ज तस्स अंतराइय ? [3]•जस्स अतराइयं तस्स वेयणिज्जं ?°
गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स वेयणिज्जं नियम अत्थि ॥

४९३. जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउय तस्स मोहणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स मोहणिज्ज तस्स आउय नियम अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स[4] मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि । एवं नामं गोय अंतराइयं च भाणियव्वं ॥

---

१. नितम (व) ।
२. स० पा०—एव जहा वेयणिज्जेण सम भणिय तहा आउएण वि सम भाणियव्व ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. तस्स पुण (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४६४. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं ? [1]•जस्स नामं तस्स आउयं ?॰
गोयमा ! दो वि परोप्परं नियम। एवं गोत्तेण वि सम भाणियव्वं ॥

४६५. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अतराइय ? [2]•जस्स अतराइय तस्स आउय ?॰
गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियम अत्थि ॥

४६६. जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोय [3]•जस्स गोयं तस्स नामं ?॰
गोयमा ! दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ॥

४६७. जस्स णं भते ! नामं तस्स अंतराइय ? [4]•जस्स अतराइय तस्स नामं ?॰
गोयमा जस्स नामं तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइय तस्स नामं नियम अत्थि ॥

४६८. जस्स ण भंते ! गोय तस्स अतराइयं ? [5]•जस्स अतराइयं तस्स गोय ?॰
गोयमा ! जस्स गोय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइय तस्स गोय नियम अत्थि ॥

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४६६. जीवे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५००. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेण दंडी, घडेणं घडी, पडेण पडी, करेणं करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५०१. नेरइए णं भंते ! कि पोग्गली ! पोग्गले ?
एवं चेव। एव जाव वेमाणिए, नवर—जस्स जइ इदियाइ तस्स तइ भाणियव्वाइं ॥

५०२. सिद्धे णं भंते ! कि पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—पुच्छा।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. स० पा०—पुच्छा।
५. स० पा०—पुच्छा।

५०३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•सिद्धे नो पोग्गली•, पोग्गले ?

गोयमा ! जीवं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले ।।

५०४. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

---

१. स० पा०—वुच्चइ जाव पोग्गले ।

२. भ० १।५१ ।

नवमं सतं

पढमो उद्देसो

१ जंबुद्दीवे २. जोइस, ३०. अंतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय।
३३. कुंडग्गामे ३४. पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। माणिभद्दे[2] चेतिए—वण्णओ[3]। सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव[4] भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—कहि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे! किंसंठिए णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे?
'एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव[5] एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया'[6] ॥

२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[7] ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. माणिभद्दे (ता, म)।
३. ओ० सू०—२-१३।
४. भ० १।८-१०।
५. ज० १-६।
६. वाचनान्तरे पुनरिद दृश्यते—जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा नेयव्व जोइसविहूणं जाव—
खंडा जोयण वासा,
पव्वय कूडा तित्थ सेढीओ।
विजय द्दह सलिलाओ,
य पिंडए होंति संगहणी॥ (वृ)।
७. भ० १।५१।

बीओ उद्देसो

जोइस-पदं

३. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[2]—
एग च सयसहस्स, तेत्तीस खलु भवे सहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीण[3] ॥१॥
सोभिसु[4], सोभिति, सोभिस्सति ॥

४. लवणे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[5] ताराओ । धायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भतपुक्खरद्धे[6], मणुस्सखेत्ते—एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव[7]—एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥

५. पुक्खरोदे ण भंते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोतिसियाण[8] भाणियव्व जाव[9] सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिंति वा, सोभिस्सति वा ॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[10] ॥

---

१ भ० १।४-१० ।
२. जी० ३ ।
३. °कोडाकोडीण (ता, व, म) ।
४. सोभ सोभिसु (व, म) ।
५. जी० ३ ।
६. अब्भितर° (स) ।
७. जी० ३ ।
८. जोतिस (क, ता, ब, म) ।
९. जी० ३ ।
१०. भ० १।५१ ।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कहि णं भंते। दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[2] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं 'चुल्लहिमवंतस्स वास-हरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे ण तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ ण दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयणसयाइं आयाम-विक्खभेण, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता सपरिक्खित्ते। दोण्ह वि पमाण वण्णओ य। एवं एएणं कमेणं[3] 'एवं जहा जीवाभिगमे जाव[4] सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !'[5]
एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं-सएणं आयाम-विक्खभेणं भाणियव्वा, नवरं —दीवे-दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

९. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्प-क्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवा-सगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज[8] सवणयाए ?

---

१. भ० १।४-१० ।
२. एगरूय० (अ); एगुरुय० (ब, म); एगो-रुय० (स) ।
३. ×(क ता) ।
४. जी० ३ ।
५. वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते एवं जहा जीवा-भिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो नाणत्त अट्ठधणुसया उस्सेहो चाउसट्ठिपिट्ठकरडया अणुसज्जणा नत्थि (वृ) ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८. लभेज्जा (अ, म, स) ।

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ॥

१०. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे 'नो कडे'[1] भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'असोच्चा ण'[2] जाव नो लभेज्ज सवणयाए ॥

११. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बोहि बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ॥

१२. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहि नो बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहि बुज्झेज्जा, जस्स ण दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहि नो बुज्झेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ॥

१३. असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ॥

१४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं धम्मतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा, जस्स ण धम्मतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा

---

१. कडे नो (ता)।

२. तं चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।

केवलं मुंडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं० नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ॥

१५. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेर-वास आवसेज्जा[2] ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल बभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवल बंभचेरवास नो आवसेज्जा ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवास नो आवसेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेरवास आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बभचेरवासं नो आवसेज्जा ॥

१७. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेण संजमेणं सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं सजमेणं नो सजमेज्जा ॥

१८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेण सजमेण नो संजमेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सजमेण सजमेज्जा, जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव[3] तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं नो सजमेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ॥

१९. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण संवरेणं सवरेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं सवरेण[4] संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं सवरेणं नो संवरेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—भवित्ता जाव नो।
२. आवासेज्जा (ता, ब)।
३. जाव अत्थेगतिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

२०. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो सवरेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सवरेण सवरेज्जा, जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सवरेण नो सवरेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेणं सवरेण नो सवरेज्जा ।।

२१ असोच्चा ण भते केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२३. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ?
[1]•गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

---

१. स० पा०—एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवर—सुयनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे। एव चेव केवलं ओहिनाण भाणियव्व, नवर—ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वे। एव केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवर—मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे।

गोयमा ! जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२५. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवल ओहिनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२७. असोच्चा ण भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा° ।।

२९. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा ?

[1]•गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण नो उप्पाडेज्जा° । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३१. असोच्चा[2] णं भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—१. केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए २. केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ३. केवलं मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ४ केवल बंभचेरवास आवसेज्जा ५ केवलेण संजमेण सजमेज्जा ६. केवलेण सवरेण सवरेज्जा ७. केवल आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा[3] ८ •केवल सुयनाणं उप्पाडेज्जा ९. केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा° १० केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ११. केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा—१. अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए २ अत्थेगतिए केवल बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ३ अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए[4] •केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा ४. अत्थेगतिए केवल बभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवास नो आवसेज्जा ५. अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ६. [5]•अत्थेगतिए केवलेण सवरेण सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा° ७ अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए[6] •केवल आभिणीबोहियनाण° नो उप्पा-

---

१. सं० पा०—एव चेव, नवर—केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माण खए भाणियव्वे, सेस त चेव ।

२. एकत्रिंशद्-द्वात्रिंशत् सूत्रयो पूर्वपादित एव विषय. पुनरुक्तोस्ति । वृत्तिकृतात्र एका टिप्पणीकृतास्ति पूर्वोक्तानेवार्थान् पुनः समुदायेनाह (वृ), किन्तु समग्रविषयस्य पौनरुक्त्यदर्शनेन द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं प्रतीयते ।

३. स० पा०—उप्पाडेज्जा जाव केवलं ।

४. स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

५. स० पा०—एव सवरेण वि ।

६. स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पचधणुसतिए होज्जा ॥

४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से णं भंते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुंसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से णं भते ! कि सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा।
जइ सकसाई होज्जा से ण भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु— संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते णं भंते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६. से णं भते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइयभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ। जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च णं ओवग्गहिए[4] अणंताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइयं, ताल-

---

१. × (क, ब, म)।
२. × (क, ब, म)।
३. सकसादी (ब, ता)।
४. उवग्गहिए (क, म, स)।

मत्थाकड[1] च ण मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपवि-
ट्ठस्स[2] अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-
दसणे समुपज्जति ॥

४७ से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ॥

४८. से ण भते ! पव्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेस पुण करेज्जा ॥

४९. से णं भंते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

५०. से णं भते ! कि उड्ढ होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरिय वा होज्जा । उड्ढ होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरण पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥

५१. ते ण भते ! एगसमए ण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण दस । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल-नाण नो उप्पाडेज्जा ॥

---

१. °मत्थ° (अ, क); मत्था—अत्र एकपदे सन्धिर्जात. । वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तक—मस्तकशुची कृत्त—छिन्न यस्यासौ मस्तककृत्त., तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्त , छान्दसत्वाच्चैव निर्देश:, तालमस्तककृत्त. इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ) ।

२. पविट्ठस्स (अ, क, ता, म) ।

३. अण्णत्थ (ता) ।

४. भ० १।४४ ।

५. होज्जमाणे (व, स) ।

६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा,[1] °केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्सवा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ।।

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए° ।।

५४. एवं 'जा चेव'[2] असोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'[3] सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवरं —अभिलावो सोच्चे त्ति, सेसं तं चेव निरवसेसं जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव[4] केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।।

५५. तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, [5]°पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसपन्नयाए, अल्लीणयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गण°गवेसणं करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ । से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ-पासइ ।।

---

१. सं० पा०—वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं ।

२. जच्चेव (क, ता, म); जहेव (स) ।

३. सच्चेव (क, ता, ब, म) ।

४. भ० ९।११-३२ ।

५. सं० पा०—तहेव जाव गवेसणं ।

५६. से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव[1] सुक्कलेस्साए ॥

५७. से ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे[2] आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा ॥

५८. से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
[3]•गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥

५९. से ण भते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥

६०. से ण भंते ! कयरम्मि सघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा ॥

६१. से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

६२. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेण पचधणुसतिए होज्जा ॥

६३. से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा° ॥

६४. से णं भंते ! कि सवेदए [4]•होज्जा ? अवेदए होज्जा ?°
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-नपुसगवेदए'[5] होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

---

१. भ० १।१०२।
२. होज्जमाणे (अ, क,)।
३. स० पा०—एवं जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउयं च—एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।
४. सं० पा०—पुच्छा।
५. नपुंसगवेदए (अ, म)।

६५. से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा।
जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—संजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि—संजलणलोभे होज्जा॥

६६. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा [1]°अज्झवसाणा पण्णत्ता॥

६७. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था॥

६८. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय-भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ। जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ॥

६९. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हंता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा॥

७०. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा[2]॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल°।

२. वा तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, ब)।

७१. से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव[1] सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

७२. तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

७३. तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
'हंता सिज्झति'[2] जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

७४. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव[3] अड्ढाइज्जदीवसमुद्द-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥

७५. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव[4] तप्पक्खियउवासियाए[5] वा अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बत्तीसइमो उद्देसो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[7]। दूतिपलासए चेइए[8]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥

७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—

---

१. भ० ९।४४।
२. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. भ० ९।५०।
४. भ० ९।५१।
५. केवलिउवासियाए (अ, क, ता, स)।
६. भ० १।५१।
७. ओ० सू० १।
८. चेइए वण्णओ (ता)।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७९. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति ॥

८०. संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति ? निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८१. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उववज्जंति ? निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति ?
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥

८२. संतरं भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८३. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति । एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतरं उव्वट्टंति ॥

८४. संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति ? निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति । एवं जाव वाणमंतरा ॥

८५. संतरं भंते ! जोइसिया चयंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति । एवं वेमाणिया वि ॥

पवेसण-पदं

८६. कतिविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥

८७. नेरइयपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

---

१. सांतरं (क, ता, म) । २ रयणप्पभ° (क, ता) ।

८८. एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे कि रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥

८९ दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९०. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

---

१. द्विसयोगजा भङ्गा. २१ ।
२. द्विसयोगजा भङ्गा ४२ ।

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९१. चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव एगे रय-

१. त्रिसंयोगजा भङ्गाः ३५।

२. द्विसंयोगजा भङ्गा ६३।

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एएण गमएण जहा तिण्ह तियासंजोगो[1] तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, 'अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'[3], अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा. अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

---

१. तिय० (अ, म, स)।
२ त्रिसयोगजा भङ्गा १०५।
३. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]॥

९२. पंच भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?
—पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव

१. चतुःसंयोगजा भङ्गाः ३५।

२. द्विसयोगजा भङ्गाः ८४।

अहेसत्तमाए। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण जहा चउण्ह तियासजोगो[1] भणितो तहा पचण्ह वि तियासजोगो भाणियव्वो, नवर—तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह[2] दोण्णि, सेसं त चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एवं जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो नवर—अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[4]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे

---

१. तिय° (क)।
२. इमाहिं (अ, क, ब, म, स); इमेहिं (ता)।
३. त्रिसयोगजा भङ्गा २१०।
४. चतु सयोगजा भङ्गा १४०।

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९३. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?
—पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पच अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए। एवं एएणं कमेणं जहा पचण्ह दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा। एव एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो,

---

१. पञ्चसंयोगजा भङ्गाः २१ ।
२. द्विसयोगजा भङ्गाः १०५ ।

नवर—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेस तं चेव[1]। चउक्कसंजोगो वि तहेव[2], पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए'[4] एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९४. सत्त भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा? —पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं तं चेव[6]। तियासंजोगो[7], चउक्कसंजोगो[8], पंचसंजोगो[9], छक्कसंजोगो[10] य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ[11] संचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[12]। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा॥

९५. अट्ठ भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा? —पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो[13] जाव

---

१. त्रिसंयोगजा भङ्गा: ३५०।
२. चतुःसंयोगजा भङ्गा: ३५०।
३. पञ्चसंयोगजा भङ्गा: १०५।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
५. षट्संयोगजा भङ्गा: ७।
६. द्विसंयोगजा भङ्गा: १२६।
७. त्रिसंयोगजा भङ्गा: ५२५।
८. चतुःसंयोगजा भङ्गा: ७००।
९. पंचा० (क); पञ्चसंयोगजा भङ्गा: ३१५।
१०. छक्का० (क, ब)।
११. अहिओ (अ); अहितो (क); अधितो (ता)।
१२. षट्संयोगजा भङ्गा: ४२।
१३. द्विसंयोगजा भङ्गा: १४७, त्रिसंयोगजा भङ्गा: ७३५, चतुःसंयोगजा भङ्गा: १२२५, पञ्चसंयोगजा भङ्गा: ७३५।

छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्ह भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव जाव छक्कगसजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]।

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव सचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]॥

९६. नव भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो[3] जाव सत्तगसजोगो[4] य जहा अट्ठण्हं भणिय तहा नवण्ह पि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९७. दस भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासजोगो[6] जाव सत्तसजोगो य जहा नवण्ह, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो[7] आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[8]॥

९८. संखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे

---

१. षट्सयोगजा भङ्गा. १४७।

२. सप्तसयोगजा भङ्गा. ७।

३. द्विसयोगजा भङ्गाः १६८, त्रिसयोगजा भङ्गा· ९८०, चतु·सयोगजा भङ्गाः १९६०, पञ्चसयोगजा भङ्गाः १४७०, षट्सयोगजा भङ्गाः ३९२।

४. वङ्सगसजोगो (अ)।

५. सप्तसयोगजा भङ्गा २८।

६. द्विसंयोगजा भङ्गा. १८९, त्रिसयोगजा भङ्गा. १२६०, चतु सयोगजा भङ्गा· २९४०, पञ्चसयोगजा भङ्गा. २६४६, षट्-सयोगजा भङ्गा. ८८२।

७. अपच्छिमो (अ, क, ता, म, स)।

८. सप्तसयोगजा भङ्गा. ८४।

रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहि सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि समं चारेयव्वा, एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा जाव अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण तियासजोगो, चउक्कसजोगो जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स—अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा॥

९९ असखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासजोगो जाव सत्तगसंजोगो[1] य जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं—असंखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

१००. उक्कोसेणं भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।
गंगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव

१. सत्ता°, (अ ता, ब)।

अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥

१०१. एयस्स ण भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, एव पडिलोमग[2] जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

१०२. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥

१०३. एगे भते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे कि एगिंदिएसु होज्जा जाव पचिदिएसु होज्जा ?
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा ॥

१०४. दो भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा ।
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्जा ॥

१०५. उक्कोसा भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, अहवा एगिदिएसु वा[3] बेइदिएसु वा होज्जा । एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउक्कसजोगो[4], पचसजोगो[5] उवजुंजिऊण[6] भाणियव्वो जाव अहवा एगिदिएसु वा, बेइदिएसु वा जाव पचिंदिएसु वा होज्जा ॥

१०६. एयस्स ण भते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[7] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वथोवे पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्ख-

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. उप्पडि° (क, ता, ब) ।
३. य, (अ, ता); या (क) ।
४. चउक्का° (अ, क, ब) ।
५. पचा° (क, ब) ।
६. उववज्जिऊण (अ); उवउज्जित्तण (क), उवउज्जिऊण (ता, स) ।
७. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, वेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए ॥

१०७. मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कंतिय-मणुस्सपवेसणए य ॥

१०८ एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ?
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ॥

१०९. दो भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एव एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस ॥

११०. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एक्केक्कं उस्सारिंतेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

१११. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एव जाव असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

११२. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा ॥

११३. एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

११४. देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणिय-देवपवेसणए ॥

११५. एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा ? वाणमंतर जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६. दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा।
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा। अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणिय-पवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्ज त्ति ॥

११७ उक्कोसा भंते ! —पुच्छा।
गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु ए वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८. एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्ज-गुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥

११९. एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसण-गस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

१२०. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति ?
संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति, नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति ।
संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ॥

सतो असतो उववज्जणादि-पदं

१२१. सतो[2] भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो[3] नेरइया उववज्जंति, सतो असुर-कुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति ? सतो नेरइया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति, सतो असुर-कुमारा उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ?

---

१. सांतर (क, ता, ब, म) ।

२. अस्मिन् प्रकरणे द्वयोर्वाचनायोर्मिश्रणं दृश्यते । प्रथमा वाचना किञ्चित् संक्षिप्तास्ति, द्वितीया च किञ्चिद् विस्तृता । एतन् मिश्रणं वृत्ति-रचनात. उत्तरकालमेव जातं सम्भाव्यते, तेनैव वृत्तिकृता नास्मिन् विषये किञ्चिद् लिखितम् । आदर्शेषु च प्राप्यते । अस्माभि-र्वृत्तिमनुसृत्य एका वाचना स्वीकृता, द्वितीया च पाठान्तरे न्यस्ता, यथा—
'सतो भंते ! नेरइया उववज्जंति ? असतो नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया ।
'सतो भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? असतो नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं ।'

३. असओ (ता) ।

गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, सतो असुरकुमारा उववज्जति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो असतो वेमाणिया उववज्जति, सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?
से नूण भे[१] गगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएण सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे [२]•परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियंकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकार-सठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियंकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति ।
से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहि लोक्कइ पलोक्कइ°, जे लोक्कइ से लोए। से तेणट्ठेण गगेया! एव वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

सतो परतो वा जाणणा-पदं

१२३. सय[३] भते ! एतेव[४] जाणह, उदाहु असय, असोच्चा एतेव जाणह, उदाहु सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया, चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?
गगेया ! सय एतेव जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—[५]•सयं एतेवं जाणामि, नो असय, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयंति°, नो असतो वेमाणिया चयति ?

---

१. ते (अ)।
२. स० पा०—जहा पचमसए जाव जे।
३. सतं (क, ता)।
४. एव (अ, क); एते एवं (ता); एय एवं (व)
५. स० पा०—त चेव जाव नो।

गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ। दाहिणे णं, [1]•पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स॰। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं एतेवं जाणामि, नो असयं असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति॥

सयं असयं उववज्जणा-पदं

१२५. सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति?
गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—•सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु॰ उववज्जंति?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गंगेया[3] ! •एवं वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु॰ उववज्जंति॥

१२७. सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गंगेया ! सयं असुरकुमारा[4] •असुरकुमारेसु॰ उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[5] •असुरकुमारेसु॰ उववज्जंति॥

१२८. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति?
गंगेया ! कम्मोदएणं[6], कम्मविगतीए[7], कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं

---

१. सं॰ पा॰—एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स।
२. सं॰ पा॰—वुच्चइ जाव उववज्जंति।
३. सं॰ पा॰—गंगेया जाव उववज्जंति।
४. सं॰ पा॰—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
५. सं॰ पा॰—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
६. कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं (अ, क, वृपा)।
७. कम्मविगयत्ताए (ता)।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[१] •असुरकुमारत्ताए• उववज्जति। से तेणट्ठेण जाव उववज्जति। एव जाव थणियकुमारा॥

१२९. सयं भंते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गंगेया! सय पुढविक्काइया[२] •पुढविक्काइएसु• उववज्जति नो असयं पुढविक्काइया[३] •पुढविक्काइएसु• उववज्जति॥

१३०. से केणट्ठेणं जाव उववज्जति?
गंगेया! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; सुभासुभाणं कम्माण उदएण, सुभासुभाण कम्माण विवागेणं, सुभासुभाण कम्माण फलविवागेण सय पुढविक्काइया[४] •पुढविक्काइएसु• उववज्जति, नो असयं पुढविक्काइया[५] •पुढविक्काइएसु• उववज्जति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति॥

१३१. एव जाव मणुस्सा॥

१३२. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चइ—सय वेमाणिया[६] •वेमाणिएसु• उववज्जंति, नो असय[७] •वेमाणिया वेमाणिएसु• उववज्जति॥

गंगेयस्स संबोधि-पद

१३३ तप्पभिति च ण से गंगेये अणगारे समण भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु सव्वदरिसिं। तए ण से गंगेये अणगारे समणं भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय[८] •सपडिक्कमण धम्म उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबंध॥

१३४. तए ण से गंगेये अणगारे समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति॥

१३५ तए णं से गंगेये अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता

---

१. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति।
२. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
३. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
४. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
५. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति।
६. सं० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जंति।
७. सं० पा०—असय जाव उववज्जति।
८. सं० पा०—एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[2]। बहुसालए चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए रिव्वेद[5]-जजुव्वेद[6]-सामवेद-अथव्वणवेद-[7]°इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[8] उवलद्धपुण्णपावे जाव[9] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[10] पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा पज्जुवासइ ॥

---

१. भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।९४।
५. रिउवेद (अ, स); रिउव्वेद (क); रुव्वेद (म)
६. यजुवेद (अ); यजुव्वेद (म)।
७. स० पा०—जहा खंदओ जाव अण्णेसु।
८. अधिगत° (ता); अहिगय° (व, म)।
९. भ० २।९४।
१०. ओ० सू० १५।

१३९. तए ण से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणद माहणि एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[2] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव[3] सुहसुहेण विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूव[4] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे॰ विहरइ। त महप्फल खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहताणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[5] धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीर वदामो नमसामो[6] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगलं देवयं चेइय॰ पज्जुवासमो। एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए[7] आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

१४०. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ[8]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰ हियया करयल[9] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अंजलि॰ कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेइ ॥

१४१. तए ण से उसभदत्ते माहणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगेहिं[10], जवूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहिं[11], रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमिय, पवरलक्खणोववेय-धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१४२. तए ण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ[12]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰हियया

---

१ स० पा०—हट्ठ जाव हियए।
२ भ० १।७।
३ ओ० सू० १९।
४. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ।
५. आयरियस्स (अ, स)।
६ स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो।
७. × (क, ता, ब, म), निस्सेयसाए (भ० २।३०)।
८. स० पा०—हट्ठ जाव हियया।
९. स० पा०—करयल जाव कट्टु।
१०. ॰ संगएहिं (ता, म)।
११. परिविसट्ठेहिं (अ, स), पविसिट्ठेहिं(क, ता)।
१२ स० पा०—हट्ठ जाव हियया।

करयल[1] •परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ° एवं सामी! तहत्ताणाए विणएण वयणं पडिसुणेति[2], पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता[3] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

१४३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साम्रो गिहाम्रो पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे[5] ॥

१४४. तए णं सा देवाणदा माहणी ण्हाया[6] जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं, चिलातियाहि जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराम्रो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं[9] जाणप्पवर दुरूढा ॥

१४५. तए ण से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे समाणे नियगपरियालसपरिवुडे माहणकुडग्गामं नगर मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[10] तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाम्रो जाणप्पवराम्रो पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगवं महावीर पचविहेण अभिगमेणं अभिगच्छाति, [त जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं

---

१. स० पा०—करयल।

२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

३. उवट्ठवेत्ता जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

४. भ० ३।३३।

५. द्रूढे (ता)।

६. वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते—अतो अंतेउरसि ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता, किंच [किंते (ब)]-वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-हाररचित-उचिय-कडग-खुड्डाग-एकावली-कठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयगी, चीणसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमाल उत्तरिज्जा, सव्वोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदिता, वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा (वृ)।

७. भ० ३।३३।

८. वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहि बउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहि ईसिगिणियाहिं चारु (वास) गिणियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहि आरबीहि दमिलीहिं सिंहलीहिं पुलिंदीहि पक्कणीहिं (पुक्कलीहिं) बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहि इंगित-चिंतित-पत्थिय-वियाणियाहि कुसलाहिं विणीयाहिं (अ, ता, ब, स), इद च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ)।

९. जाव धम्मिय (अ, क, ता, ब, म, स)।

१०. चुत्तीसाए (म)।

विओसरणयाए [1] •२. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४ चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं] [2] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता ° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४६. तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता बहूहि खुज्जाहि जाव [3] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरग-वदपरिक्खित्ता समण भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, [तं जहा—१. सचित्ताण दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाण अविमोयणयाए ३. विणयोणयाए गायलट्ठीए ४. चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ५. मणस्स एगत्तीभावकरणेण] [4] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहण पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमसमाणी अभिमुहा विणएण पजलिकडा [5] पज्जुवासइ ॥

१४७. तए णं सा देवाणदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा [6] सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१४८ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कि ण भते ! एसा देवाणदा माहणी आगयपण्हया [7] •पप्पुयलोयणा सवरियवलयवाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवगं पिव समूसविय ° रोमकूवा देवाणुप्पिय अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?
गोयमादि [8] ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! देवाणदा माहणी ममं अम्मगा, अहण्ण देवाणंदाए माहणीए अत्तए । 'तण्ण एसा' [9] देवाणदा माहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण आगयपण्हया [10] •पप्पुयलोयणा, सवरियवलयवाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव° समूसवियरोमकूवा मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

---

१. स० पा०—एवं जहा बितियसए जाव तिविहाए ।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
३. भ० ९।१४४ ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
५. पंजलिउडा (अ) ।
६. पप्फुय° (अ, ता, स); पप्फुल्ल° (क) ।
७. सं० पा०—त चेव जाव रोमकूवा ।
८ गोयमादी (क, ता, व, म) ।
९. तए ण सा (अ, म) ।
१०. स० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय° ।

१४९. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए[1] •मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवदाए अणेगसयवदपरियालाए ओहवले अइवले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोंचणिग्घोस-दुदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेण अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ।।

१५०. तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय[3] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगव महावीरं तिक्खुतो[4]• आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वदासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! [5]•अवितहमेय भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !° —से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ[6], •करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भते ! लोए जराए मरणेण य ।

[7]•से जहानामाए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए वहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा ण चोरा, मा णं वाला, मा ण दसा, मा णं मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

---

१. स० पा०—इसिपरिसाए जाव ।
२. ओ० सू० ७१-७९ ।
३. अतिए (ता) ।
४. स० पा०—तिक्खुतो जाव नमंसित्ता ।
५. स० पा०—जहा खदओ जाव से ।
६. स० पा०—करेइ जाव नमसित्ता ।
७. स० पा०—एव एएणं कमेण जहा खदओ तहेव पव्वइओ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुंडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयारगोयर विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय ।।

१५१. तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्त माहण सयमेव पव्वावेइ, सय मेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया गतव्वं, एवं चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एवं तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहिं सजमेणं सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं ।

तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूवं धम्मियं उवएस सम्म सपडिवज्जइ °जाव[1] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[2] बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम[3]-•दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव[4] तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता[5] •चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

१५२ तए ण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] •करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खियं ।।

१५३. तए ण समणे भगव महावीरे देवाणद माहणि सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए[7] सीसिणित्ताए दलयइ ।।

१५४ तए ण सा अज्जचदणा अज्जा देवाणद माहणि सयमेव[8] मुडावेति, सयमेव सेहावेति । एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं सपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव[9] सजमेणं सजमति ।।

१५५ तए ण सा देवाणदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, [10]•अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. भ० २।५३-५७ ।
२. जाव (अ, क, ता, ब, स) ।
३. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
४. भ० १।४३३ ।
५. स० पा०—आराहेत्ता जाव सव्व° ।
६. स० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता ।
७. × (व, म) ।
८. सयमेव पव्वावेति सयमेव (क, व, म) ।
९. भ० २।५४ ।
१०. स० पा०—सेस त चेव जाव सव्व° ।

सेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धा बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

जमालि-पदं

१५६. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[1]। तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं[3] उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसंत-गिम्ह-पज्जंते छप्पि उऊ[4] जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१५७. तए णं खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर[5]-°चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ°, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[6] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं[7] °ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव[8] एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छंति[9], निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छंति एवं जहा ओववाइए जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति ॥

---

१. ओ० सू० १।

२. भ० २।९४।

३. णाणाविहवरतरुणी° (अ, ब, स)।

४. उड्ड (अ); उद्दू (ता, ब, स)।

५. सं० पा०—चच्चर जाव बहुजणसद्दे इ वा जाव एवं।

६. ओ० सू० १६।

७. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।

८. ओ० सू० ५२, वाचनान्तर पृ० १४७।

९. निग्गच्छइ (क, ता)।

१०. ओ० सू० ५२, ६९।

१५८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—किण्णं अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खदमहे इ वा, मुगुदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रूक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्णं एते वहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया[2], कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता,[3] •जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य वहवे राईसर–तलवर–माडंविय–कोडुविय–इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयवलिकम्मा जहा ओववाइए जाव[4] खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेण निग्गच्छति ?—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ[5]-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वदासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

१५९. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल[6]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° जमालिं खत्तियकुमार जएण विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव[7] निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[8] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव ओग्गह[9] •ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा जाव[10] निग्गच्छति ॥

१६०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइ[11]-पुरिसस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

---

१. स०पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. नाता (क, व, म)।
३. स०पा०—जहा ओववाइए जाव सत्यवाह°।
४. ओ० सू० ५२।
५ कंचुइज्ज (अ, क, ता, व)।
६ सं० पा०—करयल।
७. भ० ९।१५८।
८ ओ० सू० १९।
९ स० पा०—ओग्गहं जाव विहरइ।
१०. ओसू सू० ५२; जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय जाव (अ, क, ता, व, म)।
११. कचुति (अ, क, व, स)।

१६१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा[1] •चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति।

१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] चंदणुक्खित्तगायसरीरे[3] सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[4], दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं[5] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडकर-पहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं पाहणाओ[6] य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे[7] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[8] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ॥

१६३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि[9]•परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव[10] परिसा पडिगया॥

---

१. सं० पा०—समाणा जाव पच्चप्पिणंति।

२. जाव ओवग्गइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); मज्जनगृहप्रकरणे परिवारवर्णनस्य सूचना स्वाभाविकी नास्ति, अतः प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः। न च एतद्‌रूपेणासौ पाठः औपपातिके लभ्यते, अतएवासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः। द्रष्टव्यम्—ओ० सू० ६३।

३. चंदणोकिण्ण° (ता, म); चंदणोखिण्ण° (ब)

४. दूहइ (अ, ता, ब); दुहति (क)।

५. संकोरंट° (म, स)।

६. वाहणाओ (अ, म); पाणहाओ (क); वाणहाओ (स)।

७. अंजलितमउ° (ता)।

८. सं० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए।

९. सं० पा०—इसि जाव धम्मकहा।

१०. ओ० सू० ७१-७९।

१६४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो[2] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता॰ नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भंते ! निग्गंथं पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भते ! निग्गथं पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते[3] ! •इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! ॰—से जहेय तुब्भे वदह, ज नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

१६५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो[4] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता॰ नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेट[5]•मल्लदामेण छत्तेण॰ धरिज्जमाणेण महयाभडचड-गर[6]•पहकरवद॰परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गेहे जेणेव वाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगि-ण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मताओ[7] ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१६६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एवं वयासी—धन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि ण तुम जाया ! कयपुण्णे सि ण तुमं जाया ! कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! जण्ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ॥

---

१. स० पा०—हट्ठ जाव हियए ।
२. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
३. स० पा०—भते जाव से ।
४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
५. सं० पा०—सकोरेंट जाव धरिज्जमाणेणं ।
६. स० पा०—चडगर जाव परिक्खित्ते ।
७. अम्मयाओ (अ, स); अम्माताओ (ब) ।

१६७ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसते[1], •से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए°, अभिरुइए। तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीते जम्मण[2]-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ॥

१६८. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं अस्सुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतविलिणगत्ता[3], सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुन्ननिच्छाया[4], गयसिरीया पसिढिलभूसण[5]-पडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय[6]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई[7], सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त[8] व्व चंपगलया, निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वगेहिं[9] संनिवडिया[10] ॥

१६९. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए[11] तुरियं कंचण-भिंगारमुहविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी[12], उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए[13] हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव[14] दुल्लभे सवणयाए[15], किमंग ! पुणपासणयाए ? तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

---

१. स० पा०—निसते जाव अभिरूइए।
२. जम्मजरा (क्व०)।
३. °विलीणगत्ता (अ, ब, स)।
४. °लावण्ण° (ना० १।१।१०५)।
५. पसढिल° (अ, क, ता, म)।
६. °खुम्मिय° (ना० १।१।१०५)।
७. °गुरुई (अ, ता, ब, स)।
८. °णितत्त (ता); °णिकत्त (ब)।
९. सव्वगेहिं धसत्ति (ना० १।१।१०५)।
१०. निवडिया (अ, ता, स)।
११. ° यत्तियाए (क, ता), चेट्या इति गम्यम् (वृ)।
१२. सीयलविमलजल° (अ); सीतलविमल° (क); °सीतलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्व-वित° (ता); °निव्ववित° (ब), सीयल-विमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित° (स)
१३. जीवियउस्सासिए (वृपा, ना० १।१।१०६)।
१४. विव (क).
१५. समणयाए (अ)।

भगवओ महावीरस्स अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव[1] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए सभ्भब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदु-सन्निभे सुविणदसणोवमे[2] विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस[3] णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[4] •भगवओ महावीरस्स अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमं च ते जाया! सरीरगं पविसिट्ठरूवं[5] लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्त-जुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं[6] अभिजायमहक्खमं विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त[7]-लट्ठपंचिंदियपडुं[8] पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—इमं च णं ते जाया! सरीरगं तं चेव जाव[9] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्वं भविस्सइ। से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्विं[10] •गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

---

१. भ० ९।१६९।
२. सुविणगसदं° (क, म); सुविणगद° (स)।
३. के (ता, ना० १।१।१०७)।
४. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए।
५. पइवि° (ता, व)।
६. °समूविय (ता)।
७. उयग्ग (ता)।
८. लट्ठ° (स)।
९. भ० ९।१६९।
१०. सं० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए ॥

१७३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ[1] कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ[2], मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ[3], विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवपभाविणीओ[4], मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंग-सुंदरीओ[5]। तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं[6] •समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइहिसि॥

१७४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे ममं एयं वदह—इमाओ ते जाया! विपुलकुल-बालियाओ जाव[7] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगा कामभोगा[8] उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणु-ण्णदुरुय[9]-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास[10]-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा[11], अप्पकालिया, लहुसगा[12], 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा'[13], परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, 'सदा साहुगरहणिज्जा'[14],

---

१. °बालियाओ (स), सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोव्वण-गुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणि-एल्लियाओ (अ, क, ब, म, स); असौ पाठ 'ता' संकेतिते आदर्शे नास्ति तथा वृत्तावपि नास्ति व्याख्यात.। नायाधम्मकहाओ (१।१।१०८) असौ विद्यते। तस्य वाचनान्तरे चैष पाठो नास्ति। वाचनान्तरगतश्च पाठ प्रस्तुतभगवतीपाठसदृशोस्ति।

२. सुहोइयाओ (ब)।

३. °णियाओ (ब)।

४. प्पगब्भभप्पभा° (अ), पगब्भवयभा° (क, वृ), पगब्भवपभा° (ता); पगब्भुब्भवपभा-विणीओ (वृपा)।

५. °सुंदरीओ भारियाओ (ब, म, स)।

६. सं० पा०—कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

७. भ० ९।१७३।

८. कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्ता-सवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (अ, ब, म, स)।

९. °दुरूव (अ, क, ब, स)।

१०. मद° (ता); मत° (ब)।

११. बीभत्था (ब)।

१२. लहूसगा (अ, क, ब, म)।

१३. °दुक्खबहुजण° (क, ता, ब, म)।

१४. साधुजणगरहणिज्जा (ता)।

अणंतसंसारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण[1], दुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा। से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए? के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि ण अम्मताओ[2]! °तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७५. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य[3], सुवण्णे य, कसे य, दूसे य, विउलधण-कणग[4]-°रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवालरत्तरयण°-सतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ, त अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवस[5]°ततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि॥

१७६. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण तं अम्मताओ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव[6] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अग्गिसामण्णे[7], °चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे°, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ [8]°अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७७ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएंति विसयाणुलोमाहि बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहि सजमभयुव्वेयणकरीहि[9] पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी—एवं

---

१. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य. (वृ)।
२. स० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए।
३. या (क, ता, व, म) सर्वत्र।
४. स० पा०—कणग जाव सतसार°।
५. स० पा०—वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि।
६. भ० ९।१७५।
७. स० पा०—अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे।
८. स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए।
९. °भयुव्वेवक° (ता); भयुव्वेवणक° (व)।

खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले[1] •पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिवायति° सव्वदुक्खाण अत करेति।

अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गगा वा महानदी पडिसोयंगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहि दुत्तरो, तिक्खं कमियव्व, गरुय[2] लंबेयव्व, असिधारग वय चरियव्व।

नो[3] खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाणं अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए[4] इ वा, अज्झोयरए[5] इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा।

तुम सि च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीयं, नाल उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नाल चोरा, नाल वाला, नाल दसा, नाल मसगा, नाल वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए। त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं[6] •कालगएहि समाणेहि परिणयवए, वड्ढियकुलवंसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि ॥

१७८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ[7] ! जण्णं तुब्भे ममं एव वदह— एवं खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले त चेव जाव[8] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निग्गथे पावयणे कीवाणं कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिबद्धाण परलोगपरमुहाण विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्कर करणयाए, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि

---

१. स० पा०—जहा आवस्सए जाव सव्व°।
२. गुरुय (अ)।
३. णो य (अ, ता, ब)।
४. मीसजाए (ता); मिस्साजाए (ब)।
५. उज्झो° (अ, स)।
६. स० पा०— अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि।
७. अम्मयाओ (अ, स)।
८. भ० ९।१७७।

अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७९. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा[2] •पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा° विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमण्णित्था ॥

१८०. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भिंतरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए जाव[3] सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति[4] ॥

१८१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति[5] ॥

१८२. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं, •अट्ठसएणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं°, अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइय°रवेणं महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता करयल[7] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

---

१. स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ।

२. स० पा०—वा जाव विण्णवेत्तए ।

३. ओ० सू० ५५ ।

४. पच्चप्पिणंति (अ, क, ता, ब, म, स); नायाधम्मकहाओ (१।१।११६, ११७) सूत्रानुसारेण एतत्पदं स्वीकृतम् । 'पच्चप्पिणंति' इति पदं अत्र नावश्यकं प्रतिभाति ।

५. म० पा०—एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएणं ।

६. स० पा०—सव्विड्ढीए जाव रवेणं ।

७. स० पा०—करयल जाव जएणं ।

मत्थए अंजलि कट्टु° जएण विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो? किं पयच्छामो ? 'किणा व'[1] ते अट्ठो ?

१८३. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्म-ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिय[2], कासवगं च सद्दाविय[3] ॥

१८४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय[4] 'दोहिं सयसहस्सेहिं'[5] कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह ॥

१८५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[6]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति°, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं[7]•गिण्हंति, गिण्हित्ता दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेंति, सयसहस्सेणं° कासवगं सद्दावेंति ॥

१८६. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दा-विए समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे[8] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पा-वेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल[9]-•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ?

१८७. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१८८. तए णं से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे

---

१. किं णा वा (ब, स); किं णा व (म) ।
२. आणिउ (ता. ब) ।
३. सद्दावेउं (ता); सद्दावितु (ब) ।
४. गहेत्ता (ता) ।
५. दोहिं सयसहस्सेण (अ, क); एगसतसहस्सेणं (ता), सयसहस्सेण (व, म, स); बहुवचनान्तं पद नायाधम्मकहाओ (१।१।१२२) सूत्रस्या-धारेण स्वीकृतम् ।
६. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेत्ता ।
७. स० पा०—तहेव जाव कासवगं ।
८. स० पा०—कयबलिकम्मे जाव सरीरे ।
९. स० पा०—करयल ।

हट्ठतुट्ठे करयल[1]•परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए[2] पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ ॥

१८९. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहि वरेहि गधेहि मल्लेहि अच्चेति, अच्चेत्ता 'सुद्धे वत्थे'[3] बंधइ, बंधित्ता रयणकरडगसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिण्णमुत्ता-वलिप्पगासाइ सुयवियोगदूसहाइ[4] असूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एस ण अम्ह जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति ॥

१९०. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्क-मणं सीहासण रयावेति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया[5]-पीयएहिं कलसेहि ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचदणेण गायाइं अणुलिपंति, अणुलिपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झ चक्खुहर वण्ण-फरिसजुत्त[6] हयलालापेलवातिरेग धवलं कणगखचितंतकम्म महरिह हसलक्खणपडसाडग परिहिंति, परिहित्ता हारं पिणद्धेति[7], पिणद्धेत्ता अद्धहार पिणद्धेति[8], पिणद्धेत्ता [9]•एगावलि पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलि पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता रयणावलि पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता एव—अगयाइ केयूराइ कडगाइं तुडियाइ कडिसुत्तग दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तग[10] मुरवि कठमुरवि पालब कुडलाइ चूडामणि[11]° चित्तं रयणसकडुक्कड मउड पिणद्धेति, किं बहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेण चउव्विहेण मल्लेणं कप्परुक्खग पिव अलकिय-विभूसिय करेति[12] ॥

---

१. स० पा०—करयल जाव एव ।
२. चउप्फलाए (ना० १।१।१२५) ।
३. सुद्धवत्थेण (अ, स) ।
४. °दूसहसहाइ (क, व, म) ।
५. सीया (अ, व, म, स) ।
६. °सजुत्त (अ) ।
७. पिणिहेति (ता, व) ।
८. पिणहेति (व) ।
९. स० पा०—एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहेव जाव चित्त ।
१०. वच्छसुत्त (भ० वृ०); वेकच्छसुत्त (वृपा) ।
११. वाचनान्तरे त्वयमलकारवर्णक. साक्षाल्लिखित एव दृश्यते (वृ) ।
१२. वाचनान्तरे पुनरिदमधिक 'दद्दरमलयसुगधि-गधिएहि गायाइं भुकुडेति' त्ति दृश्यते (वृ) ।

१९१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव[1] मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं[2] पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति॥

१९२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे॥

१९३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा॥

१९४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा॥

१९५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय[6]-•हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण°-रूव-जोव्वण-विलासकलिया[7] सरदब्भ[8]-हिम-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी'[9] चिट्ठति॥

---

१. राय० सू० १७।

२. वाचनान्तरे पुनरयं वर्णकः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ)।

३. द्रुहति (क, ता, ब)।

४. भ० ३।३३।

५. भ० ३।३३।

६. सं० पा०—संगयगय जाव रूव।

७. विलासकलिया सुंदरथण (अ, ब, म, स); एषु आदर्शेषु 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे 'सुंदरथण' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते, किन्तु एष पाठः 'विलासकलिया' इति पदस्यादौ विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते। वृत्तिकृतापि उक्तपदानन्तरमसौ पाठः स्वीकृतः, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रूवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथणजहणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेया' त्ति सूचितम् (वृ), अस्माकं पाठानुसन्धानप्रयुक्ते प्रतिद्वये एष पाठो नास्ति। एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते।

८. × (अ, ब, म, स)।

९. उवधरेमाणीओ उवधरेमाणीओ (अ); उवरि धरेमाणीओ २ (स)।

१९६. तए णं तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार[1]•चारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ, चिल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ[2] गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठंति ॥

१९७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[3]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ॥

१९८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[4]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ ॥

१९९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, एगाभरणवसण[5]-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह ॥[6]

२००. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं[7] •सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं° सद्दावेंति ॥

२०१. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा[8] जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

१. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
२. सेयवरचामराओ (क) ।
३. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
४. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
५. एगाभरण° (अ) ।
६. भ० ९।१८५ ।
७. सं० पा०—सरित्तय जाव सद्दावेंति ।
८. अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठ नायाधम्मकहाओ (१।१।१४०) सूत्रानुसारेण स्वीकृत ।
९. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, ° वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदि-
सतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं ॥

२०२. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं[1] एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय[2]•बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण°-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह ॥

२०३. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा जाव[3] पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[4] एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति ॥

२०४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[5]-•णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा।
तदाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं[6],•दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धुय-विजयवेजयंती य ऊसिया° गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।
•[7]तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं, पवरं सीहासणं वरमणिरयणपाद-पीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।
तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।
तदाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य सासंता य सावेंता य रक्खंता य° आलोयं च करेमाणा जय-जय सद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

---

१. °सहस्सं पि (अ, क, ब, म, स)।
२. सं० पा०—कय जाव गहिय°।
३. भ० ९।१८५।
४. भ० ९।२०१।
५. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा।
६. सं० पा०— जहा ओववाइए जाव गगण°; अनेन च यदुपात्तं तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ)।
७ सं० पा०—एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं, एतच्च वाचनान्तरे प्रायः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ); वृत्तिकृता वाचनान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृतास्ति।

तदाणंतरं च ण वहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओव-वाइए जाव[1] महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ॥

२०५. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे[2] •कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार° विभूसिए हत्थिक्खधवरगए सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-विदपरिक्खित्ते[3] 'जमालि खत्तियकुमार'[4] पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

२०६. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा[5], उभओ पासि नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसगेल्ली ॥

२०७. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिगारे, परिग्गहियतालियटे[6], ऊस-वियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरवालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव[7] दुदहि-णिग्घोस-णादितरवेण[8] खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव वहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ॥

२०८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स सिघाडग-तिय-चउक्क[9]-•चच्चर-चउम्मुह-महापह° पहेसु वहवे अत्थत्थिया[10]•कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हियगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय° अभिनदता य अभि-त्थुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! धम्मेण, जय-जय नदा ! तवेण, जय-

---

१. ओ० सू० ५२ ।
२. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव विभूसिए ।
३. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, व, म, स) ।
४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।
५ आसवारा (वृपा) ।
६. °तालयटे (क, ता) ।
७. भ० ६।१८२ ।
८. अतोग्रे 'अ, व, म, स' इति सकेतितेपु आदर्शेपु एतावान् अधिक पाठो लभ्यते—'तदाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाण-तर च ण अट्ठसय गयाण, अट्ठसय तुरयाण, अट्ठसय रहाण, तदाणतर च ण लउड-असि-कोतहत्थाण वहूण पायत्ताणीण पुरओ सप-ट्ठिय, तदाणतर च ण वहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ सपट्ठिया ।' असौ पाठ. अत पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोषेण प्रमादेन वा अत्र प्रवेश प्राप्त । प० वेचर-दाससम्पादितभगवत्यामपि इत्थमेव अस्ति ।
९. स० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।
१०. स० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनदता

जय नंदा ! भद्दं ते[1] अभग्गेहिं[2] नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं[3], अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर ! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमूं अभिभविय[4] गामकंटकोवसग्गा णं, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनंदति य अभिथुणंति य ।।

२०९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे [5]•हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ।।

२१०. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[6] •आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमसंति, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते[7] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव[8] सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे नोवलिप्पति पंकरएणं, नोवलिप्पति जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे

---

१. भवतादिति गम्यते (वृ) ।
२. अभिग्गहेहिं (अ) ।
३. चरित्तमुत्तमेहिं (अ, क, म, स); चरित्तमुत्तेहिं (ता) ।
४. अभिभविया (अ, क, म); अभिभविता (ता); अभिसमिया (व) ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ ।
६. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
७. सं० पा०—कंते जाव किमंग ।
८. ओ० सू० १५० ।

नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएण, नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-सवधि-परिजणेण । एस ण देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेण, इच्छइ[1] देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए[2] । तं एय ण देवाणुप्पियाण अम्हे सीसभिक्ख दलयामो, पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख ।।

२११ 'तए णं समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमार एव वयासी'[3]—अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध ।।

२१२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो[4] °आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ।।

२१३ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि[5] °धार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि° विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी जमालि खत्तियकुमारं एव वयासी—'जइयव्व जाया ! घडियव्व'[6] जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएतव्व ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ।।

२१४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, [7] °उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

---

१. × (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. पव्वतेति (अ), पव्वयति (क); पव्वइतइ (ता), पव्वतिति (व); पव्वतित (म); पव्वतिते (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए' एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाओ (१।१।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्त. । सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठाना नहि कश्चिदर्थो-वगम्यते ।

३ × (अ, क, व, म) ।

४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।

५ स० पा०—वारि जाव विणिम्मुयमाणी ।

६ घडियव्व जाया जइयव्व (अ, क, ता, व, म, स) ।

७ स० पा०—एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवर पचहिं पुरिससएहिं सद्धि तहेव जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं॥

२१५. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ° जाव[1] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[2]-°दसम-दुवालसेहिं° मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

२१६. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए॥

२१७. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

२१८. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं[3] °बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए॥

२१९. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ[4], °नो परिजाणइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ।

२२०. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ

---

१. भ० २।५३.५७।

२. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव मासद्ध।

३. सं० पा०—सद्धिं जाव विहरित्तए।

४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पचहि अणगारसएहि सद्धि बहिया जणवय-विहार विहरइ ।।

२२१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[1], कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव[2] वणसडस्स । तेण कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[3] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव[4] पुढविसिलापट्टओ ।।

२२२. तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

२२३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[5] ॰गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे॰ सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

२२४. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहि 'अरसेहि य'[6], विरसेहि य अतेहि य, पतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य[7] पाण-भोयणेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगातके पाउब्भूए—उज्जले विउले[8] पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे । पित्तज्जरपरि-गतसरीरे, दाहवक्कतिए[9] या वि विहरइ ।।

२२५. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-संथारग सथरह ।।

२२६. तए ण ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-सथारग सथरति ।।

२२७. तए ण से जमाली अणगारे बलियतर वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—मम[10] ण देवाणुप्पिया ! सेज्जा-सथारए कि कडे ? कज्जइ ?

तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ ।।

---

१. ओ० सू० १ ।
२. ओ० सू० २-१३ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. स० पा०—चरमाणे जाव सुहसुहेण ।
६. अरसेहि या (क, ता, व) सर्वत्र ।
७. य सीओएहि य (अ), य सीएहि (व); य सीतेहि य (स) ।
८. वितुले (व, म); तिउले (स, वृ); विउले (वृपा) ।
९. दाहवुक्कतिए (व) ।
१०. मम (अ, स) ।

२२८. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जण्णं समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव[2] एवं परूवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए[3], •वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए°, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए[4] •जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए° जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे॥

२२९. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुग्गामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

२३०. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ[5] ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. भ० १।४२०।
३. सं० पा०—उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
४. सं० पा०—तं चेव जाव।
५. कयाति (अ, ब, स), कदायी (ता)।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं[1] अवक्कंता, नो खलु अहं तहा छउमत्थावक्कमणेणं[2] अवक्कंते, अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते ॥

२३१. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली ! केवलिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा 'थंभंसि वा'[3] थूभंसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा, जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवलि भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

२३२. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए[4] •वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, नो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२३३. जमालीति ! समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी—अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव[5] णं एतप्पगारं भासं भासित्तए, जहा णं तुमं।

सासए लोए जमाली[6] ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे।

असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ।

सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि[7], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे।

---

१. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
२. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
३. X (अ, ब, म)।
४. सं० पा०—कंखिए जाव कलुस°।
५. च्चेव (ता)।
६. X (क, ता)।
७. सं० पा०—नासि जाव निच्चे।

असासए जीवे जमाली ! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।।

२३४. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव[1] एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहिं य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स[2] अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।।

२३५. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एवं भासमाणस्स एवं पण्णवेमाणस्स एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्चं पि मम अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं [3]•मिच्छत्ताभिणिवेसेहिं य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु° देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।।

२३६. कतिविहा णं भंते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।।

२३७. कहिं णं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

---

१. भ० १।४२० ।
२. ट्ठाणस्स (ता, म, स) ।
३. सं० पा०—तं चेव जाव देव° ।

गोयमा ! उप्पि जोइसियाण, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओ-वमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ।।

२३८. कहि ण भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?
गोयमा ! उप्पि सोहम्मीसाणाणं कप्पाण, हिट्ठि सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ।।

२३९. कहि ण भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसंति ?
गोयमा ! उप्पि बभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठि लतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरो-वमट्ठिइया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ।।

२४० देवकिव्विसिया ण भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति ?
गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा[2] अवण्णकारा अकित्तिकारा बहूहि असब्भावुब्भावणाहि, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा अण्ण-यरेसु देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—ति-पलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ।।

२४१. देवकिव्विसिया ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, 'भवक्खएणं, ठिति-क्खएण'[3] अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छति ? कहि उववज्जति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति[4] •मुच्चति परिणिव्वा-यति सव्वदुक्खाण° अत करेति, अत्थेगतिया अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति ।।

२४२. जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी[5] •अतजीवी पतजीवी लूहजीवी° तुच्छजीवी उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ?
हता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ।।

२४३ जति ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

---

१. हिव्वि (ता) सर्वत्र, हव्वि (म) ।
२. °करा (अ, स); सर्वत्र, अयसकारगा (वृ) ।
३. ठितिक्खएण भवक्खएण (ता) ।
४. स० पा०—बुज्झति जाव अंत ।
५. स० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरस-सागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए[1] •अकित्तिकारए वहूहि असब्भावुब्भा-वणाहि, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे॰ वुप्पाएमाणे वहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे[2] •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए॰ उववन्ने ॥

२४४. जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[3] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? ॰कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणु-परियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति[4] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं॰ अंतं काहिति ॥

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

चोत्तीसइमो उद्देसो

एगस्स वधे अणेगवध-पदं

२४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[6] एवं वयासी—पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ[7] ? नोपुरिसे हणइ ?
गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

---

१. सं॰ पा॰—अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे ।
२. सं॰ पा॰—कप्पे जाव उववन्ने ।
३. सं॰ पा॰—आउक्खएण जाव कहिं ।
४. सं॰ पा॰—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
५. भ॰ १।५१ ।
६. भ॰ १।४-१० ।
७. छणइ (वृपा) ।

गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एवं खलु अहं एग पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवे'[1] हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४८. पुरिसे णं भते ! आस हणमाणे किं आस हणइ ? नोआसे[2] हणइ ?
गोयमा ! आस पि हणइ, नोआसे वि हणइ ॥
से केणट्ठेण ?
अट्ठो तहेव। एवं हत्थि, सीह, वग्घ जाव[3] चिल्ललग[4] ॥

इसिस्स वधे अणंतवध-पदं

२४९. पुरिसे ण भते ? इसिं हणमाणे किं इसि हणइ ? नोइसि हणइ ?
गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ ॥

२५०. से केणट्ठेण भते ? एव वुच्चइ[5]—°इसि पि हणइ, ° नोइसिं पि हणइ ?
गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एव खलु अह एग इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे 'अणते जीवे'[6] हणइ। से तेणट्ठेण [7]°गोयमा ! एवं वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ° ॥

वेर-बंध-पदं

२५१. पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिसवेरेण पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?'[8]
गोयमा ! नियम–ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

---

१. अणेगा जीवा (अ, क, ता, म, स)।
२. नोआस (व), नोआसे वि (म)।
३. प० १।
४ चित्तलग (व), अतोग्रे 'क, ता, वृ' एषु—'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति, 'अ, व, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललग इति पाठानन्तर एष पाठोस्ति—'पुरिसे ण भते ! अण्णयर तस पाण हणमाणे किं अण्णयर तस पाण हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अण्णयर पि तस पाण हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणइ। से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—अण्णयरं पि तस पाण, हणइ नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एगं अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव। एए सव्वे वि एक्कगमा'। वृत्तावपि नासौ॰ याख्यात, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत.।
५ स० पा०—वुच्चइ जाव नोइसिं।
६. अणता जीवा (अ, क, ता, व, म)।
७. स० पा०—निक्खेवो।
८. × (ता)।

पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे। एव आसं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण[1] य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे ॥

२५२. पुरिसे णं भते ! इसि हणमाणे किं इसिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेणं पुट्ठे ?
गोयमा ! नियम[2] इसिवेरेण य[3] नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥

पुढविक्काइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइय चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥

२५४. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए ण आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा। एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय ॥

२५५. आउक्काइए णं भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा [4]•जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! आउक्काइए णं पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा° ॥

२५६ आउक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं चेव आणमइ वा ?
एवं चेव। एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाइय ॥

२५७ तेउक्काइए ण भंते ! पुढविक्काइय आणमइ वा ? एव जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइय चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८. पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२५९. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ?
एव चेव। एवं जाव वणस्सइकाइय। एव आउक्काएण वि सव्वे[5] भाणियव्वा। एवं तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव—

---

१. चित्तला° (व), चिल्लला° (म)।
२. नियम ताव (क); नितमं (ब)।
३. य जाव (ता); एतद् सम्यक्नास्ति। ऋषि-पक्षे तु ऋषिवैरेण नो नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक एव (वृ)।
४. स० पा०—एवं चेव।
५. सव्वे वि (ता, स)।

२६०. वणस्सइकाइए ण भते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६१. वाउक्काइए ण भते ! रुक्खस्स मूलं 'पचालेमाणे वा'[1] पवाडेमाणे वा कति-किरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए। एव कंदं, एव जाव[2]—

२६२ बीय पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

---

१. × (क)।
२. भ० ८।२१६।
३. भ० १।५१।

दसमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. दिस २ सवुडअणगारे[1], ३ आइड्ढी[2] ४ सामहत्थि ५. देवि ६. सभा।
७-३४ उत्तरअंतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पदं

१. रायगिहे[3] जाव[4] एव वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा ति'[5] पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एव चेव। एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो[6] वि ॥

३. कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो[7] ॥

४. एयासि णं भते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—

---

१. संवुडमणगारे (अ, क, ब, म)।
२. आयड्ढी (अ, स)।
३. रायगिधे (ता)।
४. भ० १।४-१०।
५. पाईणत्ति (क, स); पादीणा ति (ता)।
६. अहा (अ, क, ब, म); अधो (ता)।
७. अहा (अ, क, ब, म); अधा (ता)।

इंदा अग्गेयी जम्मा[1], य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इंदा ण भंते ! दिसा किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४ अजीवा ५. अजीवदेसा ६ अजीवपदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, [2]•जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि°, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया[3] •तेइंदिया चउरिंदिया° पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
जे जीवपदेसा ते नियमा[4] एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा ७. अद्धासमए ॥

६. अग्गेयी ण भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा—पुच्छा ।
गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स य देसे । एव चेव तियभंगो भाणियव्वो । एव जाव अणिंदियाण तियभंगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा । अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा । एव आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाण ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवा[5] य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—खंधा जाव परमाणुपोग्गला ।

---

१ जमा (ख) ।
२. सं० पा०—त चेव जाव अजीवपदेसा ।
३. सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया ।
४. नियम (ता), × (ब) ।
५. रूविं अजीवा (ता, ब) ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए[1] ।।

७. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा ?
जहा इंदा 'तहेव निरवसेसं'[2] । नेरती[3] य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इंदा । वायव्वा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इंदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदाए । एवं तमाए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति ।।

सरीर-पदं

८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए[4] •वेउव्विए आहारए तेयए° कम्मए ।।

९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] अप्पाबहुगं ति ।।

१०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

बीओ उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

---

१. अद्धासमए । विदिसासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सव्वत्थ (अ, ब, म, स) ।
२. तहा निरवसेसा (क) ।
३. निरुती (क) ।
४. स० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।
५. प० २१ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।

गोयमा ! सवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा[1] °पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स, उड्ढ रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ आलोएमाणस्स° तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सवुडस्स ण जाव संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा [2]°वोच्छिण्णा भवति तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ° । से ण उस्सुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेण जाव सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ निज्झायमाणस्स जाव[3] तस्स ण भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सवुडस्स ण अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडस्स ण जाव इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ?
[4]°गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवति तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ।° से णं अहासुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेण जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भते ! जोणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा । एव जोणीपद निरवसेसं भाणियव्वं[5] ॥

वेदणा-पदं

१६. कतिविहा ण भंते ! वेयणा पण्णत्ता ?

---

१. स० पा०—ठिच्चा जाव तस्स ।
२. स० पा०—एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से ।
३. भ० १०।११ ।
४. स० पा०—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से ।
५. प० ९ ।

गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा। एवं वेयणापदं भाणियव्वं जाव[1]—

१७. नेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति ? सुहं वेयणं वेदेंति ? अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ?
गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति ॥

भिक्खुपडिमा-पदं

१८. मासियण्णं[2] भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स[3], निच्चं 'वोसट्ठकाए, चियत्त-देहे'[4] जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ। एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहिं जाव[5] आराहिया भवइ ॥

अकिच्चट्ठाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता[6] से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२०. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि[7], •पडिक्कमिस्सामि, निंदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्टिस्सामि, विसोहिस्सामि, अकरणयाए अब्भुट्ठिस्सामि, अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जिस्सामि[8], से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय[9]•पडिक्कंते कालं करेइ° नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२१. भिक्खू य अण्णयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, किमंग ! पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि[10] नो लभिस्सामि त्ति

---

१. प० ३५ ।
२. मासियं णं भंते (क, ता, स) ।
३. अयमाचारो भवतीति शेष. ।
४. वोसट्ठे काए चियत्ते देहे (वृ) ।
५. दसा° ७ ।
६. प्रतिषेविता भवतीति गम्यम् । वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने पडिसेविज्ज त्ति दृश्यते (वृ) ।
७. सं० पा०—आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि ।
८. पडिक्कमामि (ब) ।
९. सं० पा०—अणालोइय जाव नत्थि ।
१०. अणवण्णि° (ब) ।

कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

२२. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति[1] ॥

तइओ उद्देसो

आइड्ढीए परिड्ढीए वीइवयण-पदं

२३. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—आइड्ढीए[3] ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासंतराइ वीतिक्कते[4], तेण परं परिड्ढीए ?
हता गोयमा ! आइड्ढीए ण [5]°देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीतिक्कते, तेण पर परिड्ढीए ।° एवं असुरकुमारे वि, नवरं—असुरकुमारावासंतराइं, सेस त चेव । एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमंतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए ॥

देवाणं विणयविहि-पदं

२४. अप्पिड्ढीए ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२५. समिड्ढीए ण भंते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ॥

२६ [6]से भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू ॥

२७. से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ॥

---

१. भ० १।५१ ।
२ भ० १।४-१०।
३. आतड्ढिए (अ, स); आतिड्ढीए (क, ब, म), आयड्ढीए (ता)
४. वीईवयइ (वृपा) ।
५. स० पा०—तं चेव ।
६. से ण (ब, म, स) ।

२८. महिड्ढीए णं भंते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

२९. से भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू ।।

३०. से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।।

३१. अप्पिड्ढिए[1] णं भंते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया । एवं जाव थणियकुमारेणं । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएणं एवं चेव ।।

३२. अप्पिड्ढिए णं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३३. समिड्ढिए[2] णं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ।।

३४. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं एसो वि तंतिओ[3] दंडओ भाणियव्वो जाव—

३५. महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

३६. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव । महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव । एवं एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—

३७. महिड्ढिया[4] णं भंते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

३८. सा भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

---

१. अप्पड्ढीए (क्व०) ।
२. समड्ढीए (अ) ।
३. तिओ (अ, स,) ।
४. महड्ढिया (क्व) ।

गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३९ आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स[1] य अंतरा एत्थ णं 'कव्वडए नाम'[2] वाए समुच्छइ[3], जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो[4]—पण्णवणी णं एस भासा ? न एसा भासा मोसा ?
हंता गोयमा ! आसइस्सामो, [5]°सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—पण्णवणी णं एसा भासा°, न एसा भासा मोसा॥

४१ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6]॥

---

१. जगयस्स (अ, क, स,); जातस्स (ता)।
२. कक्कडनाम (ता); कव्वडए नाम (स)।
३ समुत्थइ (अ, ता, व, म, स)।
४. अतोग्रे गाथाद्वयं लभ्यते—
आमंतणी आणवणी,
जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य॥
अणभिग्गहिया भासा,
भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव॥
(अ, क, ता, व, म, स); अस्मिन् संग्रहगाथाद्वये 'असच्चामोसा' भाषाया द्वादशप्रकारा निरूपिताः सन्ति। प्रज्ञापनायाः भाषापदे एवमेवास्ति। अत्र प्रज्ञापनीभाषाप्रकरणे प्रासङ्गिकरूपेण अमू संग्रहगाथे लिखिते आस्ताम्। केनचित् प्रतिलिपिकर्त्रा मूले प्रक्षिप्ते। उत्तरकाले तथैव अनुगते, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्याते।
५. स० पा०—त चेव जाव न।
६. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[1]। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव[2] परिसा पडिगया॥

४३. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[3] उड्ढजाणू[4] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

४४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नाम अणगारे पगइभद्दए [5]•पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दवसपन्ने अल्लीणे विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्ढ-जाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ॥

४५. तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव[6] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव[7] पज्जुवासमाणे एव वयासी—

४६. अत्थि ण भते! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा[8] देवा-ताव-त्तीसगा देवा?

हता अत्थि॥

४७. से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो ताव—त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?

एवं खलु सामहत्थी! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायदी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[9]। तत्थ ण कायदीए नयरीए तायत्तीस[10] सहाया[11] गाहावई समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव[12] बहुजणस्स अपरि-भूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा[13] जाव[14] अहापरिग्गहिएहि तवो-कम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति॥

---

१. ओ० सू० १।

२. भ० १।७,८।

३. भ० १।६।

४. सं० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।

५. सं० पा०—जहा रोहे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ।

६. भ० १।१०।

७. भ० १।१०।

८. तायत्तीसगा (क्व०)।

९. ओ० सू० १।

१०. तावत्तीस (क, ता, व, म)।

११. साहाया (अ)।

१२. भ० २।९४।

१३. उवलद्धपुण्ण वण्णओ (अ, क, ता, ब, म, स)।

१४. भ० २।९४।

४८. तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाच्छदा अहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ।।

४९. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—

५० अत्थि ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हता अत्थि ।।

५१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एवं त चेव सव्व भाणियव्व जाव जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्ती-सगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ[1], •भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ।।

५२. अत्थि ण भते ! बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हता अत्थि ।।

---

१. स० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो[1] ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति – जहा चमरस्स जाव[3] तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

५४ जप्पभिइं च णं भंते ! ते बेभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेसं तं चेव जाव[4] निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति ॥

५५. अत्थि णं भंते ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हंता अत्थि ॥

५६. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—जं न कयाइ नासी जाव अण्णे चयंति, अण्णे उवव-ज्जंति। एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव[5] महाघोसस्स ॥

५७. अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो [6]•तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ? ०
हंता अत्थि ॥

५८. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालए[7] नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ। तत्थ णं पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव[8] विहरंति ॥

५९. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउ-णित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा[9] •सक्कस्स देविंदस्स

१. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. ओ० सू० १, एतद्वर्णनं 'नंदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेवग्राह्यम्।
३. भ० १०।४७-४८।
४. भ० १०।४९-५१।
५. भ० ३।२७४।
६. सं० पा०—पुच्छा।
७. वालाए (अ); पालाए (ब); पालासए (म)।
८. भ० १०।४७।
९. सं० पा०—किच्चा जाव उववन्ना।

देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए° उववन्ना। जप्पभिइं च णं भंते ! ते पालगा[1] तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा, सेसं जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६०. अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एवं जहा सक्कस्स, नवरं—चंपाए नयरीए जाव[2] उववण्णा जप्पभिइं च णं भंते ! ते चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया, सेसं तं चेव जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६१. अत्थि णं भंते ! सणंकुमारस्स देविंदस्स [3]°देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?°

हंता अत्थि ॥

६२. से केणट्ठेणं ?

जहा धरणस्स तहेव, एवं जाव पाणयस्स, एवं अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

देवाणं तुडिएण सद्धिं दिव्वभोग-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए जाव[5] परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव[6] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायसंसया जहा गोयमसामी जाव[7] पज्जुवासमाणा एवं वयासी—

६५. चमरस्स णं भंते असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. वालगा (अ, म), पालागा (क, व); पालासगा (स)।

२. भ० १०।५७-५९।

३. सं० पा०—पुच्छा।

४. भ० १।५१।

५. भ० १।४-८।

६. भ० ८।२७२।

७. भ० १।१०।

अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं[1] परिवारो पण्णत्तो ॥

६६. पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं अट्ठट्ठ देवीसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेण चत्तालीसं देवीसहस्सा । सेत्त तुडिए ॥

६७. पभू ण भते ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव[2] विहरित्तए ?

अज्जो ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए,सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओ ण चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसि च बहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति[3] । से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया[4] •चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सिहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरित्तए ॥

६९. पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए[5] •तावत्तीसगेहि, चउहि लोगपालेहि, पचहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहि°, अण्णेहि[6] य बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि य, देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहय[7]•नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ° भुजमाणे विहरित्तए ?

केवल परियारिड्ढीए, नो चेव णं मेहुणवत्तिय ॥

---

१. °सहस्सा (ता, स) ।

२. भ० १०।६७।

३. भवति तेसिं पणिहाए णो पभू (अ, स) ।

४. स० पा०—असुरकुमारराय जाव विहरित्तए ।

५. स० पा०—तायत्तीसाए जाव अण्णेहि ।

६. अण्णेसिं (अ, स) ।

७ स० पा०—महयाहय जाव भुजमाणे ।

७०. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं[1] देवीसहस्सं परिवारे[2] पण्णत्ते ॥

७१. पभू णं ताओ 'एगामेगा देवी'[3] अण्णं एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए ॥

७२. पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[4] सूरियाभस्स। सेसं तं चेव जाव[5] नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७३. चमरस्स णं भंते[6] ! °असुरिंदस्स असुरकुमार° रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ?
एवं चेव[7], नवरं—जमाए रायहाणीए, सेसं जहा सोमस्स। एवं वरुणस्स वि, नवरं—वरुणाए रायहाणीए। एवं वेसमणस्स वि, नवरं—वेसमणाए रायहाणीए। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं[8] ॥

७४. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा[9], निसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरस्स, नवरं—बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा[10] मोउद्देसए। सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७५. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया[11], असणी। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वरुणस्स[12] ॥

---

१. एगमेगंसि (स)।
२. परियारो (ता)।
३. एगमेगाओ देवीओ (अ) एगमेगाए देवीए (स)।
४. राय० सू० ७।
५. भ० १०।६७-६९।
६. सं० पा०—भंते जाव रण्णो।
७. भ० १०।७०-७२।
८. °वत्तिय (व)।
९. सुभा (अ, व, स)।
१०. भ० ३।१२।
११. विजया (स)।
१२. वेसमणस्स (अ, स)।

७६. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—अला[1], सक्का[2], सतेरा[3], सोदामिणी, इदा, घणविज्जुया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्स[4] परिवारो पण्णत्तो ।।

७७. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देविसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेत्त तुडिए ।।

७८ पभू णं भते ! धरणे ? सेसं तं चेव[5], नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणसि सीहासणसि, सओ परियारो[6] । सेसं तं चेव ।।

७९. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स[7] महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेस जहा[8] चमरलोगपालाणं । एवं सेसाण तिण्ह वि ।।

८०. भूयाणंदस्स भंते !—पुच्छा ।
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूया रूयंसा, सुरूया, रूयगावती, रूयकंता, रूयप्पभा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए ऐगमेगं देवीसहस्स परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ।।

८१. भूयाणंदस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, अवसेस जहा चमरलोगपालाणं । एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण ।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसि जहा धरणस्स लोगपालाण । उत्तरिल्लाणं इदाण[9] जहा भूयाणदस्स, लोगपालाण वि तेसि जहा भूयाणदस्स लोगपालाण, नवर—इदाण सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । लोगपालाणं सव्वेसिं रायहा-

१. आला (ब); इला (क्व०) ।
२. मक्का (ता, ब, म); सुक्का (स), कमा (ना० २।३।६) ।
३. सतारा (अ, स) ।
४. ०सहस्सा (अ, ता, ब, म, स) ।
५. भ० १०।६७-६९ ।
६. भ० ३।१४।
७. काललोगपालस्स (अ); लोगपालस्स काललोगपालस्स (स) ।
८. भ० १०।७०-७२।
९. × (ता, ब) ।
१०. भ० ३।१४, १५ ।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[1] चमरस्स लोग-पालाणं ।।

८२. कालस्स ण भते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेसं जहा[2] चमरलोगपालाण । परिवारो तहेव, नवरं—कालाए रायहाणीए, कालसि सीहासणसि, सेस त चेव । एव महाकालस्स वि ।।

८३. सुरूवस्स ण भते ! भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा कालस्स । एव पडिरूवस्स वि ।।

८४ पुण्णभद्दस्स ण भते ! जक्खिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा कालस्स । एव माणिभद्दस्स वि ।।

८५. भीमस्स णं भंते ! रक्खसिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती[3], कणगा, रयणप्पभा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स । एवं महाभीमस्स वि ।।

८६. किन्नरस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वडेसा, केतुमती, रतिसेणा, रइप्पिया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव । एव किंपुरिसस्स वि ।।

८७. सप्पुरिसस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, सेसं त चेव । एवं महापुरिसस्स वि ।।

८८ अतिकायस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा[4], भुयगवती,

---

१. भ० १०।७०-७३ ।
२. भ० १०।७१, ७२ ।
३ पउमवती (अ, स), पउमावती (क, म) ।
४. भुयगा (स) ।

महाकच्छा, फुडा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं त चेव । एवं महाकायस्स वि ॥

८६. गीयरइस्स णं—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस तं चेव । एवं गीयजसस्स वि । सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव ॥

६० चंदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो - पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभकरा । एव जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभंकरा । सेस त चेव जाव[4] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

६१. इंगालस्स णं भते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस[5] जहा चदस्स, नवर—इगालवडेंसए विमाणे, इगालगसि सीहासणसि, सेस त चेव । एवं वियालगस्स वि । एवं अट्ठासीतिए वि महग्गहाण[6] भाणियव्वं जाव[7] भावकेउस्स, नवरं—वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस त चेव ॥

६२. सक्कस्स णं भते ! देविदस्स देवरण्णो—पुच्छा ।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ॥

६३. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवारं विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्तं तुडिए ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ

---

१. ओसिणाभा (ता, स) ।
२. जी० ३ ।
३. आयच्चा (अ, स) .
४. भ० १०।६७-६६ ।
५ सेस त चेव (अ, स) ।
६. महागहाण (अ, क, ब, स) ।
७. ठा० २।३२५ ।
८. सेया (अ, स); सुयी (क, ता, म) ।

भुजमाणे विहरित्तए। सेस जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[1] मोउद्देसए ॥

९५. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[2] चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि, सेसं त चेव। एव जाव वेसमणस्स, नवर—विमाणाइं जहा[3] ततियसए॥

९६ ईसाणस्स ण भते!—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[4] सक्कस्स॥

९७. ईसाणस्स ण भते! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुहवी, राई, रयणी, विज्जू। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—विमाणा जहा[5] चउत्थसए, सेस त चेव जाव[6] नो चेव ण मेहुणवत्तिय॥

९८. सेव भते! सेवं भते! त्ति[7]॥

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९. कहि णं भते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता?
गोयमा! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

---

१ भ० ३।१६।
२ भ० १०।७०-७२।
३ भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६।
४. भ० १०।९२-९४।
५. भ० ४।२-४।
६ भ० १०।६७-६९।
७ भ० १।५१।

वीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[1] पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए[2], °सत्तवण्णवडेंसए, चपगवडेंसए, चूयवडेंसए° मज्झे, सोहम्मवडेंसए। से ण सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खभेण,

> एव जह सूरियाभे, तहेव माण[3] तहेव उववाओ।
> सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स।
> अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव[4] आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइ ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के णं भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढिए जाव[5] केमहासोक्खे[6]। गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससय-सहस्साण जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ। एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविदे देवराया ॥

१०१. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[8] ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरदीव-पदं

१०२. कहि ण भंते ! उत्तरिल्लाण एगूरुयमणुस्साण[9] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? एव जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेस जाव[10] सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

१०३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव[11] अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. राय० सू० १२४, १२५।
२. स० पा०—असोगवडेंसए जाव मज्झे।
३. पमाणं (अ, क, ता, म, स)।
४. राय० सू० १२६-६६६।
५. भ० ३।४।
६. केमहेसक्खे (ब, स)।
७. भ० ३।१६।
८. भ० १।५१।
९. एगुरुय° (अ, म, स)।
१०. जी० ३।
११. भ० १।५१।

एक्कारसं सतं

पढमो उद्देसो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४. कुभी ५ नाली य ६. पउम ७. कण्णी य[1]।
८. नलिण ९ सिव १०. लोग ११,१२. कालालभिय दस दो य एक्कारे[2] ॥१॥

उप्पलजीवाण उववायादि-पदं

१ तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एव वयासी—उप्पले णं भते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे। तेण पर जे अण्णे जीवा उववज्जति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा ॥

२. ते णं भते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जति ? 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जति'[4] ? देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. या (व)।
२. अतोग्रे प्रमोद्देशकद्वारसग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—
उववाओ परिमाण,
अवहारुच्चत्त बध वेदे य।
उदए उदीरणाए,
लेसा दिट्ठी य नाणे य॥
जोगुवओगे वण्ण,
रसमाई ऊसासगे य आहारे।
विरई किरिया बधे,
सन्न कसायित्थि बधे य॥
सन्निदिय अणुबधे,
सवेहाहार ठिइ समुग्घाए।
चयण मूलादीसु य,
उववाओ सव्वजीवाण॥ (वृपा)॥
३. भ० १।४-१०।
४. तिरि मणु (अ, क, ता, ब, म, स)।

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणुस्सेहितो उववज्जति देवेहितो वि उववज्जंति । एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव[1] ईसाणेति ॥

३. ते णं भंते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा[2] असखेज्जा वा उववज्जति ॥

४. ते णं भते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेण अवहीरति ?
गोयमा ! ते णं असखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा'[3] असखेज्जाहि ओसप्पिणि[4]-उस्सप्पिणीहि अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया ॥

५. तेसि णं भते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स ॥

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि बधगा ? अबधगा ?
गोयमा ! नो अबधगा, बंधए वा, बधगा वा ॥

७. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! १ बधए वा २.अबधए वा ३ बंधगा वा ४. अबधगा वा ५. अहवा बधए य अबधए य ६. अहवा बधए य अबधगा य ७ अहवा बधगा य अबधए य ८. अहवा बधगा य अबधगा य—एते अट्ठ भगा ॥

८. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि वेदगा ? अवेदगा ?
गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । एव जाव अतराइयस्स ॥

९. ते णं भते ! जीवा कि सायावेदगा ? असायावेदगा ?
गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भगा ॥

१०. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ?
गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अंतराइयस्स ॥

११. ते णं भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदीरगा ? अणुदीरगा ?
गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा । एव जाव अतराइयस्स, नवरं—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भगा ॥

१२. ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

---

१. प० ६ ।
२. वा उवव (ता) ।
३. अवहीरेमाणा २ (स) ।
४. °प्पिणीहिं (ब, म) ।

गोयमा ! कण्हलेसे वा[1] •नीललेसे वा काउलेसे वा° तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-चउक्कसजोगेणं[2] असीती भगा[3] भवति ॥

१३. ते ण भते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठिणो वा ॥

१४. ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ॥

१५. ते ण भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ॥

१६. ते ण भते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भगा ॥

१७. तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कतिगधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ॥

१८. ते ण भते ! जीवा किं 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?'[4]
गोयमा ! १ उस्सासए वा २ निस्सासए वा ३. नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५ निस्सासगा वा ६ नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भगा। एते[5] छव्वीस भगा भवंति ॥

१९. ते ण भते ! जीवा कि आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ॥

२०. ते ण भते ! जीवा किं विरया ? अविरया ? विरयाविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ॥

२१. ते ण भते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ॥

---

१. स० पा०—वा जाव तेउलेसे।
२ चउक्कसजोगेण य (अ, क, ता, म, स); चतुक्कासजोगेण य (व)।
३. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
४ उस्सासा निस्सासा नोउस्सासानिस्सासा (क, ता, म)।
५. एव (ता)।

२२. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ? अट्ठविहबंधगा ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा—अट्ठ भंगा ॥

२३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भंगा[1] ॥

२४. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीती भंगा[2] ॥

२५. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा, नपुंसगवेदगा वा ॥

२६. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदबंधगा ? पुरिसवेदबंधगा ? नपुंसगवेदबंधगा ?
गोयमा ! इत्थिवेदबंधए वा, पुरिसवेदबंधए वा, नपुंसगवेदबंधए वा—छव्वीसं भंगा[3] ॥

२७. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।

२८. ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया ? अणिंदिया ?
गोयमा ! नो अणिंदिया, सइंदिए वा, सइंदिया वा ॥

२९. से णं भंते ! उप्पलजीवेत्ति[4] कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

३०. से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥

३१. से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा !
एवं चेव । एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ॥

३२. से णं भंते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे[5], से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं 'कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

१, २. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
३. भ० ११।१८।
४. °जीवे (ब) ।
५. से वण० (अ, क, ब, म, स) ।

गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणताइं भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंत काल तरुकाल[1], एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा"[2] ॥

३३ से ण भते ! उप्पलजीवे बेइदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय कालं सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण सखेज्जाइं भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एव तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि ॥

३४. से ण भते ! उप्पलजीवे पचिदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति —पुच्छा।
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव मणुस्सेण वि समं जाव एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ॥

३५ ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ अणतपदेसियाइ दव्वाइ, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइं, कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइ, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमताइ फासमंताइ एव जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाण आहारो तहेव जाव[3] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेति, नवरं—नियमा छद्दिसि, सेस तं चेव ॥

३६ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ॥

३७ तेसि ण भते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

३८. ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहता मरति ? असमोहता मरति ?
गोयमा ! समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति ॥

३९. ते ण भते ! जीवा अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहि उववज्जति—किं

---

१. × (क, ता, म)। वि (व)।
२. एव चेव नवरमणत काल जाव कालाएसेण
३. प० २८।१।

नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए उव्वट्टाणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्व[1] ॥

४०. अह भते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए[2] उववन्नपुव्वा ?
हता गोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो ॥

४१. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाणं उववायादि पदं

४२. सालुए णं भंते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे । एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[4] अणतखुत्तो, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं धणुपुहत्त, सेसं त चेव ॥

४३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[5] ॥

---

१. प० ६ ।
२. ०विभंगत्ताए (अ) ।
३. भ० १।५१।
४. भ० ११।१-४०।
५. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

४४. पलासे णं भंते ? एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्तं[1]। देवेहिंतो[2] न उववज्जति ।।

४५. लेसासु—ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीसं भंगा[3], सेसं तं चेव ।।

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

चउत्थो उद्देसो

४७. कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव ।।

४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ।।

---

१. °पुहुत्त (अ, व)।
२. देवा एएसु (अ, व), देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति। अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठः स्वीकृतः ।
३. भ० ११।१८।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।५१।

पंचमो उद्देसो

४९. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा ॥

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

छट्ठो उद्देसो

५१. पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ॥

५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

५३. कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं ॥

५४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

५५. नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव[1] अणंतखुत्तो ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

नवमो उद्देसो

सिवरायरिसि-पदं

५७. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे[3] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[4]। तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय[5]-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे[6] सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए[7] °दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे ॥

५८. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[8]। तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[9]। तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते जाव[10] रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

---

१. भ० ११।१-४०।
२. भ० १।५१।
३. हत्थिणागपुरे (अ, म); हत्थिणपुरे (क); हत्थिणाउरे (ता)।
४. ओ० सू० १।
५. सव्वोदुय (क, म)।
६. °सन्निगासे (अ, क, ब, स)।
७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे।
८. ओ० सू० १४।
९. ओ० सू० १५।
१०. राय० सू० ६७३,६७४।

५९. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं [2]•सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाण कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि°, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण[3]-•मणि-मोत्तिय-संखसिल-प्पवाल-रत्तरयण°-संतसारसावएज्जेणं[4] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं[5] •सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं° 'एगंतसो खयं'[6] उवेहमाणे[7] विहरामि ? तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव[8] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[10] तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, [तं जहा—होत्तिया पोत्तिया[11] कोत्तिया जहा ओववाइए जाव[12] आयावणाहिं पंचग्गि-

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
२. सं० पा०—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं।
३. सं० पा०—रयण जाव संत०।
४. °सावदेज्जेणं (क, ब, म, स)।
५. सं० पा—पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं।
६. एगंतसोक्खयं (अ)।
७. उव्वेह० (स)।
८. तं चेव जाव (अ, क, ब, म. स)।
९. भ० २।६६।
१०. कडेच्छुयं (क, ता, ब, म)।
११. सोत्तिया (क, ब, वृपा)।
१२. केषुचिदादर्शेषु विस्तृतः पाठोस्ति। तदनन्तरं 'जहा ओववाइए' इति संक्षिप्तपाठस्य सूचनमप्यस्ति। एतद् द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणेन जातम्। केवलं 'व' संकेतितादर्शे एकैव विस्तृतवाचना लभ्यते। सा च इत्थमस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा [हुंचउट्ठा (अ) हुंपउट्ठा (क, ब), उट्टिआ (ता)] दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला 'उद्धकंडुयगा अहोकंडुयगा' ['X' (क, ब, म)] दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अंबुवासिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो [वेलवासिणो (स)] अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा उद्दंडा रुक्खमूलिया मंडलिया बिलवासिणो [वलिवासिणो (क); पलवासिणो (ब); वणवासिणो (म)] दिसापोक्खिया, आतावणेहिं पंचग्गितावेहिं

तावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लिय कट्ठुसोल्लियं पिव अप्पाण करेमाणा विहरंति][1]
तत्थ ण जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खियता-वसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हि-स्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवो-कम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स° विहरित्तए, त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सुवहु लोही-लोह[4]•कडाह-कडच्छुय तबिय तावसभडगं° घडावेत्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जाव[5] सुगंधवरगधगधिय गधव-ट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥

६०. तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी —खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह। तए ण ते कोडुबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेति ॥

६१ तए ण से सिवे राया अणेगगणनायग-दडनायग[6]-•राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-° सधिपाल-सद्धि सपरिवुडे सिवभद्दं कुमार सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्ठसएणं सोव-ण्णियाण कलसाण जाव[7] अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाणं सव्विड्ढीए जाव[8] दुदुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया-महया रायाभिसेगेण अभिसिचइ, अभिसि-

---

इगालसोल्लिय कदु (डु)सोल्लियं कट्ठसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा विहरति।
'ओववाइय' सूत्रस्य (९४) पूर्णपाठः एव-मस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुबउट्ठा दतुक्खलिया उम्म-ज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूल-धमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अवुभक्खिणो वाउ-भक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेय-कढिण-गाया आया-वणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लिय कदु-सोल्लिय कट्ठसोल्लिय पिव अप्पाणं करेमाणा।'

१ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ' व्याख्यागत. प्रतीयते।
२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरित्तए।
३. भ० २।६६।
४. स० पा०—लोह जाव घडावेत्ता।
५. ओ० सू० ५५।
६ स० पा०—दडनायग जाव सधिपाल।
७. भ० ६।१८२।
८. भ० ६।१८२।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचदणेण गायाइं अणुलिपति एवं जहेव जमालिस्स अलकारो तहेव जाव[1] कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयल[2]•परिग्गहियं दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि° कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं [3]•मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमगलसएहिं अणवरयं अभिणदतो य अभित्थुणंतो य एवं वयासी—जय-जय नंदा! जय-जय भद्दा! भद्दं ते, अजियं जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि। इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो° परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-[4]•खेड-कव्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजति॥

६२. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ॥

६३. तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-[6]•सयण-संबंधि°-परिजणं 'रायाणो य खत्तिए य'[7] आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए [8]•कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय° सरीरे भोयणवेलाए[9] भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि[10]-परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं [11]•आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

---

१. भ० ९।१९०।
२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. सं० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव परमाउं।
४. सं० पा०—नगर जाव विहराहि।
५. ओ० सू० १४।
६. सं० पा०—नियग जाव परिजणं।
७. रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स), रायाणो रायखत्तिए य (ता, ब)।
८. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे।
९. × (ता, ब)।
१०. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
११. सं० पा०—एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ

जिमियभुत्तुरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तं मित्त-नाइ-[1] •नियग-सयण-संबंधि-° परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[2] •तंबियं तावसं° भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव[3] तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं[4] •छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'— अयमेयारूवं° अभिग्गहं[5] अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६४. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण[6]-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं[7] रायरिसिं-अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ[8], पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए[9] जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'गंगं महानदिं'[10] ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए[11] गंगाओ महा-

---

१. सं० पा०—नाइ जाव परिजणं ।
२. सं० पा०—कडच्छुयं जाव भंडगं ।
३. भ० ११।५६ ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव अभिग्गहं ।
५. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
६. कढिण (अ) ।
७. सिवे (ब, स) ।
८. सरइ (ता, म) ।
९. दब्भकलस° (अ), दब्भसगब्भकलसा (सग) हत्थगए (ता, वृपा) ।
१०. गंगामहानदी (क, ब, म) ।
११. दब्भसगब्भकलसा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं[1] रएति[2], रएत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे," [तं जहा—

सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं ।
दंडदारुं तहप्पाणं, अहे ताइं समादहे ॥१॥][3]

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहेत्ता बलि-वइस्सदेवं[4] करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ॥

६५. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता [5]•वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता॰ दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[6] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६८. तए णं से सिवे रायरिसि [7]•तच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ॰, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[8] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

७०. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमण[9]•पारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता॰ उत्तरदिसं पोक्खेइ,

---

१. वेंति (अ, क, म, स) ।
२. रयावेइ (ता) ।
३. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश: प्रतीयते ।
४. बलिविस्सदेवं (अ, क, ता); बलिं विस्सदेवं (ब); बलिविस्सादेवं (म); बलिविइस्सदेवं (स) ।
५. सं॰ पा॰—एवं जहा पढमपारणगं नवरं ।
६. भ॰ ११।६४ ।
७. सं॰ पा॰—सेसं तं चेव नवरं ।
८. भ॰ ११।६४ ।
९. सं॰ पा॰—एवं तं चेव नवरं ।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं[2] °तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[3] °पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए° विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे[4] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ, न पासइ ॥

७२. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[6] °तंबियं तावस° भंडगं किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[7]-°चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव[8] एवं परूवेइ- अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए[9] °सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना° दीवा य समुद्दा य ॥

७३. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[10]-°चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[11] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे

---

१. भ० ११।६४।
२. स० पा०—दिसाचक्कवालेण जाव आयावेमाणस्स।
३. स० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए।
४. अण्णाणे (अ, क, ता, व, म)।
५. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
६. कडुच्छुय (अ, स); कडेच्छुय (क, व); स० पा० —कडच्छुय जाव भंडग।
७. स० पा०—तिग जाव पहेसु।
८. भ० १।४२०।
९. स० पा०—लोए जाव दीवा।
१०. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
११. भ० १।४२०।

नाणदसणे[1] •समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेयं मन्ने एवं ?

७४. तेणं कालेणं तेण समएण सामी समोसढे, परिसा[2] •निग्गया । धम्मो कहिओ परिसा° पडिगया ।।

७५. तेणं कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नामं अणगारे जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव[3] घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! [4]•ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य । से कहमेय मन्ने एव ?

७६. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसड्ढे [5]•जाव[6] समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एव खलु भंते ! अहं तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्द निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ —अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।।

७७. से कहमेय भंते ! एव ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एव वयासी—जण्णं गोयमा ! 'एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खितेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विब्भंगे नाम नाणे

---

१. स० पा०—नाणदसणे जाव तेण ।
२. सं० पा०—परिसा जाव पडिगया ।
३. भ० २।१०६-१०९ ।
४. स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना ।
५. स० पा०—जहा नियठुद्देसए जाव तेण ।
६. भ० २।११० ।

समुप्पन्ने ।'[१] 'त चेव सव्व भाणियव्वं जाव'[२] भंडनिक्खेव करेइ, करेत्ता हत्थिणा-पुरे नगरे सिघाडग-°[३]तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदं-सणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म °[४]हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णम-ण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्ण मिच्छा । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एव खलु जंबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे जाव[५] सयभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

७८ 'अत्थि ण भंते ! जबुद्दीवे दीवे दव्वाइं—सवण्णाइं पि, अवण्णाइ पि सगंधाइं पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि, अण्णमण्ण-बद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं[६] °अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'[७] ॥

७९ 'अत्थि ण भते ! लवणसमुद्दे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, सगंधाइं पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्ण-बद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइ[८] °अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'[९] ॥

---

१. अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्न-निर्दिष्ट. पाठोस्ति—'से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया नास्य सङ्गतिर्जायते । 'से बहुजणे' इत्यादिपाठः 'भंडनिक्खेव करेइ' (७२) अतः उत्तरवर्ती (७३) वर्तते । अस्य पूर्वविन्यासो नैव युक्तः स्यात् । सभाव्यते सक्षेपीकरणे क्वचिद् विपर्यासो जात. । अस्माभिरस्य पाठस्य सङ्गतिरुत्तरवर्तिना ८३ सूत्रेण संपादितास्ति ।

२. भ० ११।६३-७२ ।

३. स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४. स० पा०—तं चेव जाव तेण ।

५. भ० ६।१५६।

६. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

७. × (अ, क, ब, म) ।

८. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

९. × (ता) ।

८०. अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि [1]•अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्ण-बद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
हंता अत्थि° । एव जाव—

८१. [2]•अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइ पि, सगंधाइं पि, अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्णबद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णवद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति?
हता अत्थि° ॥

८२. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

८३. तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ जण्ण देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाण[6]•दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य । तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव[7] भडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य । तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाव[9] तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्ण मिच्छा, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव[10] असखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

८४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण

---

१. स० पा०—एव चेव ।
२. स० पा०—सयभूरमणसमुद्दे जाव हता ।
३. अतिय (अ, क, स) ।
४. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।
५. भ० १।४२० ।
६. सं० पा०—नाण जाव समुद्दा ।
७ भ० ११।७१ ।
८. स० पा०—सिंघाडग जाव समुद्दा ।
९. भ० ११।७३ ।
१०. भ० ११।७७ ।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स[1] •वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स° कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे[2] खिप्पामेव परिवडिए ।।

८५. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[5] सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं[6] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स[7] •वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स° गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[8] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य[9] •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[10]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[11] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे[12]•सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं °पंजलिकडे[13] पज्जुवासइ ।।

८६ तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए[14] धम्मं परिकहेइ जाव[15] आणाए आराहए भवइ ।।

८७. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[16] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[17]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° किढिण-संकाइयगं च

---

१ सं० पा०—कंखियस्स जाव कलुस° ।
२. अण्णाणे (क, स) ।
३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. भ० १।७।
५. ओ० सू० १६।
६. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
७. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव गहणयाए।
८. भ० २।३०।
९. सं० पा०—य जाव भविस्सइ ।
१० सं० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।
११. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं (स) ।
१२. सं० पा०—नातिदूरे जाव पंजलिकडे ।
१३. पंजलियडे (ता) ।
१४. पू०—ओ० सू० ७१।
१५. ओ० सू० ७१-७७।
१६. भ० २।५२।
१७. सं० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।

एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भंतेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जीवा णं भते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झति, एव जहेव ओववाइए तहेव ।
'संघयण सठाण, उच्चत आउय च परिवसणा ।'[2]
एवं सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3]—
अव्वाबाह सोक्ख, अणुहोति सासय सिद्धा ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

दसमो उद्देसो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ॥

९१. खेत्तलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—अहेलोयखेत्तलोए[6], तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९२. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए[7] जाव[8] अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

---

१. भ० ९।१५०,१५१।
२. एतत् सग्रहगाथार्धं औपपातिके नोपलभ्यते । इदं च कुतश्चिद् अन्यस्थानाद् उद्धृतमस्ति ।
३. ओ० सू० १९५।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. अहो ० (अ, क, म, स); अधे ० (ता) ।
७. रयणप्पभ ० (ता) ।
८. भ० २।७५।

९३. तिरियलोयखेत्तलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, त जहा—जवुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ॥

९४. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, त जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए[1] •ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लतय - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण°-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९५. अहेलोयखेत्तलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसठिए पण्णत्ते ॥

९६ तिरियलोयखेत्तलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसठिए पण्णत्ते ॥

९७ उड्ढलोयखेत्तलोए णं भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइगाकारसठिए पण्णत्ते ॥

लोयसंठाण-पद

९८. लोए ण भंते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसठिए पण्णत्ते[2], त जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्तं, [3]•उप्पि विसाले; अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए ।
तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइंगाकारसठियसि उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाण° अत करेइ ॥

अलोयसठाण-पद

९९. अलोए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसठिए[4] पण्णत्ते ॥

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय० ।
२. लोए पण्णत्ते (अ, क, ब, म, स) ।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अत ।
४. सुसिरगोलकसठिए (व) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१००. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कि १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

[1]•गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अणिंदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा° ७ अद्धासमए ।।

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं चेव । एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि ।।

१०२. लोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे[2], नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा[3] •पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे°, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव ।।

१०३. अलोए णं भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव[4] सव्वागासे अणंतभागूणे ।।

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए ।

२. भ० २।१३९, १०।५।

३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अधम्मत्थि• ।

४. भ० २।१४० ।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १ जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमं १. एगिदियदेसा २ अहवा एगिदियदेसा य बेइंदियस्स देसे ३. अहवा एगिदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । एवं मज्झिल्लविरहिओ[1] जाव[2] अहवा एगिदियदेसा य अणिदियाण य देसा । जे जीवपदेसा ते नियमं १. एगिदियपदेसा २ अहवा एगिदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा ३. अहवा एगिदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आइल्लविरहिओ[3] जाव पंचिदिएसु, अणिदिएसु तियभंगो ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य । रूवी तहेव । जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, [4]•नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे°, अद्धासमए ॥

१०५. तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?
एवं जहा[5] अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं—अद्धासमयो नत्थि । अरूवी चउव्विहा ॥

१०६. [6]•लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा° ?
जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे ॥

१०७. अलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, [7]•नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए° अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे ॥

१०८. दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए 'अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा'[8], अणंता

---

१. 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' इत्येवं रूपो यो मध्यमभङ्ग. तद्विरहितोऽसौ त्रिकभङ्ग. । मध्यमभङ्गकस्य असम्भवात् तथाहि द्वीन्द्रियस्स एकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैवभावात् (वृ) ।
२. जाव अणिंदिएसु जाव (अ, क, ता, ब, म) ।
३. 'अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स य पदेसे' इत्येवरूपाद्यभङ्गकविरहित· त्रिकभङ्गः, तथाहि नास्त्येव एकत्राकाशप्रदेशे केवल-समुद्घात विना एकस्य जीवस्य एकप्रदेश. सम्भवोऽसङ्ख्यातानामेव भावात् (वृ) ।
४. सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ।
५. भ० ११।१०४।
६. सं० पा०—लोगस्स ।
७. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतेहिं ।
८. अणंताइं जीवदव्वाइं अणंताइं अजीवदव्वाइं (क, ब, म) ।

जीवाजीवदव्वा। एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि, 'एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि (एवं लोए वि?)'[1]। दव्वओ णं अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे[2] •अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते° सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि[3], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, एव[4] •तिरियलोयखेत्तलोए, एव उड्ढलोयखेत्तलोए, एव लोए एवं° अलोए।

भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, [5]•अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा,° अणता अगरुयलहुयपज्जवा, एव[6] •तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए, एव° लोए। भावओ ण अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,[7] •नेवत्थि गधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि संठाणपज्जवा°, नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[8], एगे अजीवदव्वदेसे[9] •अगरुयलहुए अणतेहि अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासस्स° अणतभागूणे॥

लोयस्स परिमाण-पद

१०६. लोए णं भंते! केमहालए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव[10]-•समुद्दाण सव्वब्भंतराए जाव[11] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खंभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ

---

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्रलोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते। कारणमत्र न ज्ञायते। अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एव स्यात्—'एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, एव लोए वि'।

२. स० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३. सं० पा०—नासि जाव निच्चे।

४. स० पा०—एव जाव अलोए।

५. स० पा०—जहा खदए जाव अणता।

६. स० पा०—एव जाव लोए।

७. सं० पा०—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि।

८. अगरुयलहुय० (अ, क, ब, म, स, वृ); अलोके अगुरुलघुपर्यवाणा भावात् अत्र 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' एततपर्यन्त एव पाठो युज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति। वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एव व्याख्या कृता—अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणा पुद्गलानां तत्राभावात् (वृ)। यदि वृत्तिकृता शुद्ध. पाठो लब्धोभविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकताभविष्यत्।

९. सं० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे।

१०. स० पा०—सव्वदीव जाव परिक्खेवेण।

११. ठा० १।२४८।

दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धगुलगं च किंचिविसेसाहिए° परिक्खेवेण।
तेण कालेण तेणं समएण छ देवा महिड्ढीया जाव[1] महासोक्खा[2] जबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वओ समंता सपरिक्खित्ताण चिट्ठेज्जा। अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि वलिपिंडे गहाय जबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि वलिपिंडे जमगसमग वहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू ण गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते ण गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] °तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते 'एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते'[5] एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।
तेण कालेण तेण समएण वाससहस्साउए दारए पयाते। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगंतं सपाउणति। तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव ण[6] °ते देवा लोगत° सपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवति, नो चेव णं ते देवा लोगतं संपाउणंति। तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगत सपाउणंति। तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगंतं सपाउणति।
तेसि ण भते! देवाण किं गए बहुए? अगए बहुए? गोयमा! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असंक्खेज्जइभागे, अगयाओ से गए असखेज्जगुणे। लोए ण गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

अलोयस्स परिमाण-पदं

११०. अलोए ण भते! केमहालए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, °[7]एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए° परिक्खेवेणं।

---

१. भ० ३।४।
२. महेसक्खा (अ, ता, व, स); महासुक्खा (क)।
३. बहिभिमुहे (क, ता)।
४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
५. एव दाहिणाभिमुहे एव पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एव उड्ढाभिमुहे (अ, क, ता, व, म, स)।
६. स० पा०—ण जाव संपाउणति।
७. सं० पा०—जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया [1]'जाव[2] महासोक्खा जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता° संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए लोगते ठिच्चा असब्भा-वपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, [5]एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तरा-भिमुहे पयाते एगे देवे° उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाते। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं सपाउणंति। [6]तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयतं संपाउणति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति।°

तेसि णं भते! देवाणं किं गए बहुए? अगए बहुए? गोयमा! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे। अलोए णं गोयमा! एमहालए पण्णत्ते॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स णं भंते! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपदेसा अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा[7] अण्णमण्णबद्धपुट्ठा° अण्णमण्ण-

---

१. स० पा०—तहेव जाव संपरिक्खित्ताण।

२. भ० ३।४।

३. बाहियाभिमुहीओ (अ, क, ता, व, म, स); अस्य पूर्ववर्तिलोकसूत्रे 'बहियामुहे' इति पाठोस्ति। अत्र सदृशे एव प्रकरणे केनचिद् लिपिदोषादिकारणेन परिवर्तनं दृश्यते। अस्माभि. पूर्वसूत्रानुसारी पाठ स्वीकृत.।

४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।

५. स० पा०—एवं जाव उत्तर°।

६. स० पा०—तं चेव जाव तेसि।

७. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण°

घडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११२. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदिय-पदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहं वा[1] •वावाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा° करेंति ?

गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारागारचारुवेसा[2] •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि (जणसहस्साउलंसि ?) जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ?

हंता समभिलोएंति।

ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निपडियाओ ?

हंता सन्निपडियाओ[3]। अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

'सा वा'[4] नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएति ? छविच्छेदं वा करेइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे।

ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आवाहं वा वावाहं वा उप्पाएंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—[5]•लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आवाहं वा वावाहं वा उप्पायंति°, छविच्छेदं वा करेंति ॥

११३ लोगस्स णं भंते एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाणं, उक्कोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. सं० पा०—आवाहं वा जाव करेंति।
२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया।
३. सन्निवडियाओ (स)।
४. अहवा सा (अ, स)।
५. सं० पा०—तं चेव जाव छविच्छेदं।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ।।

११४ सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेणं कालेण तेणं समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[2]। दूतिपलासे चेइए—वण्णओ जाव[3] पुढविसिलापट्टओ । तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[5] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । सामी समोसढे जाव[6] परिसा पज्जुवासइ ।।

११६ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय[7]°बलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण पायविहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे[8] चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए][9] जहा उसभदत्तो जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

११७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए[11] परिसाए[12] धम्मं परिकहेइ जाव[13] आणाए आराहए भवइ ।।

---

१. भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।६४।
५. भ० २।६४।
६. ओ० सू० १६-५२।
७. सं० पा०—कय जाव पायच्छित्ते ।
८. दूतिपलासए (अ) ।
९. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
१०. भ० ६।१४५।
११. °महालयाए (स) ।
१२. पू०—ओ० सू० ७१।
१३. ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[1] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—

११९. कतिविहे ण भंते ! काले पण्णत्ते ?
सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, त जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ॥

१२०. से किं त पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले[2] य। चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ। उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२१. जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण कतिभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२२. कदा ण भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ। जदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवई, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा ण उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ॥

---

१. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता। २. रत्ति° (अ, क, व, म)।

१२३ कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ ?

सुदसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसपुण्णिमाए[1] णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१२४ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

हंता अत्थि ॥

१२५ कदा णं भते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

सुदसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु[2], एत्थ[3] ण दिवसा य राईओ य समा चेव भवति—पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ । चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता[4] दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । सेत्तं पमाणकाले ॥

१२६. से किं त अहाउनिव्वत्तिकाले ?

अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्ण जेण नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउय निव्वत्तिय । 'सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले'[5] ॥

१२७. से कि त मरणकाले ?

मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ[6] । सेत्तं मरणकाले ॥

१२८ से कि त अद्धाकाले ?

'अद्धाकाले – से ण'[7] समयट्ठयाए[8] आवलियट्ठयाए जाव[9] उस्सप्पिणीट्ठयाए । एस णं सुदसणा ! अद्धा दोहाराछेदेण[10] छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हव्वमागच्छइ, सेत्त समए समयट्ठयाए । असखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ । सखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव[11]—

एएसि ण पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
त सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

---

१. पोसस्स पुण्णिमाए (म) ।
२. °मासु ए (क, ता, स) ।
३. तत्थ (अ, स) ।
४. चउभागमुहुत्ता (अ) ।
५. सेत्त पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले (अ, म, स); सेत्त पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले । सेत्त अहाउनिव्वत्तिकाले (ता) ।
६. वियुज्यते इति शेष. (वृ) ।
७. अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स) ।
८. समयद्धयाए (अ) सर्वत्र ।
९ अ० सू० ४१५।
१०. दोहारच्छेदेण (क, व); दोहाराछेयणेण (वृ)
११. भ० ६।१३२-१३४।

१२९. एएहि ण भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयण ?
सुदंसणा ! एएहिं पलिओवम-सागरोवमेहि नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाण आउयाइ मविज्जति ॥

१३० नेरइयाण भते ! केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?
एव ठिइपद निरवसेस भाणियव्वं जाव[1] अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३१ अत्थि ण भते ! एएसि पलिओवम-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?
हता अत्थि ॥

१३२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं 'खएति वा'[2] अवचएति वा ?
एवं खलु सुदंसणा ! तेण कालेणं तेणं समएण हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[3]। सहसववणे उज्जाणे—वण्णओ[4]। तत्थ ण हत्थिणापुरे नगरे बले नाम राया होत्था—वण्णओ[5]। तस्स ण बलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव[6] पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

१३३. तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगसि वासघरसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे, बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले[7] मणिरयणपणासियधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव[8]-मघमघेत[9]-गधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए,
तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि—सालिगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय-गभीरे'[10] गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय[11]-खोमियदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे[12] सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे[13] सुगंधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए अद्धरत्तकाल-

---

१. प० ४।
२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. ओ० सू० १।
४. भ० ११।५७।
५. ओ० सू० १४।
६ ओ० सू० १५।
७. चिलग (अ)।
८. धूम (ता)।
९. °मघत (स)।
१० मज्झेण गभीरे (ता), मज्झेण य गंभीरे (वृपा); पण्णत्तगडविव्वोयणे त्ति क्वचित् दृश्यते (वृ)।
११. उयचिय (म, स), उवचिय (क्व०)।
१२. पलिच्छण्ण (ता)।
१३. तुल्ल° (म)।

मयसि[1] सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूव ओराल कल्लाण सिव धण्ण मगल्लं सस्सिरीय महासुविणं[2] पासित्ता णं पडिबुद्धा।
हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पडरतरोरुरमणिज्ज[3]-पेच्छणिज्ज थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडविय-मुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलट्ठओट्ठ[4] 'रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुजीहं'[5] मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायत-वट्ट-तडिविमलसरि-सनयणं विसालपीवरोरुं पडिपुण्णविपुलखधं मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न[6]-केसरसडोवसोभियं ऊसिय[7]-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलगूलं[8] सोम सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं[9], नहयलाओ ओवयमाणं, निययवयणमतिवयत[10] सीहं सुविणे पासित्ता ण 'पडिबुद्धा समाणी'[11] हट्ठतुट्ठ[12]•चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण॰हियया धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा[13] त सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभताए अविलबियाए रायहससरिसीए गईए जेणेव वलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहिं पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहि कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मजुलाहिं गिराहि संलवमाणी-सलवमाणी पडिवोहेइ, पडिवोहेत्ता वलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्तसि[14] भद्दासणंसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया वलं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहि जाव मिय-महुर-मजुलाहिं गिराहि सलवमाणी-संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अह देवाणुप्पिया! अज्ज तसि तारिसगंसि सयणिज्जसि सालिगणवट्टिए त चेव जाव नियगवयणमइवयत सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्ण देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

---

१. अड्ढ॰ (ता, म)।
२. महासुविणं सुविणे (क, ता, व, म, स, वृ)।
३. पंडुर॰ (अ, ब, स,)।
४. ॰उट्ठ (अ, क, व, स)।
५. वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसतपिंगलच्छ (वृ)।
६. विक्किण्ण (ता, वृपा)।
७. ऊसंसिय (ता)।
८. अप्फोडियतलनगोल (ख)।
९. × (अ, ख, ता, म)।
१०. निययवयणकमलसरमइवत (ता, म)।
११. पडिवुद्धा तए ण सा पभावती देवी अयमेया-रूव ओराल जाव सस्सिरीय महासुमिण सुविणे पासित्ता ण पडिवुद्ध समाणी (क, ख, ता, व, स)।
१२. स॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
१३. समूससित॰ (व)।
१४. रयणविचित्तंसि (ता)।

१३४ तए ण से बले राया पभावईए देवीए अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम[2]-चचुमालइयतणुए[3] ऊसवियरोमकूवे त सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएण बुद्धिविण्णाणेण तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ, करेत्ता पभावइ देवि ताहि इट्ठाहि कताहि जाव[4] मगल्लाहि मिय-महुर[5]-सस्सिरीयाहिं वग्गूहि सलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव[6] सस्सिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे'[7], अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! 'रज्जलाभो देवाणुप्पिए !'[8] एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडेसय कुलतिलग कुलकित्तिकर कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर[9] •लक्खण-वजण-गुणोववेय माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग° ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि ।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-[10]परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि[11]-•दीहाउ-कल्लाण°-मगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावति देविं ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहिं दोच्च पि तच्चं पि अणुबूहति ॥

१३५ तए ण सा पभावती देवी वलस्स रण्णो अंतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा[12] करयल[13]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणु-

---

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
२ °नीम° (ता, ब) ।
३. °तणुय (अ, क, ख, ता, म, स) ।
४. भ० ११।१३३।
५. महुररिभियगभीर (ना० १।१।२०) ।
६. भ० ११।१३३।
७. × (अ) ।
८. × (म) ।
९ स० पा०—°पचिदियसरीरं जाव ससि° ।
१० विण्णाय (अ, ता, स) ।
११. सं० पा०—तुट्ठि जाव मगल्लकारए ।
१२. हट्ठतुट्ठ (अ, ता, स) ।
१३ स० पा०—करयल जाव एव ।

प्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ[1], पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल[2] •मसभताए अविलबियाए रायहससरिसीए॰ गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयति, निसीयित्ता एव वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मगल्ले सुविणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसबद्धाहि[3] पसत्थाहि मगल्लाहि धम्मियाहि[4] कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६. तए ण से बले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त[5]-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क[6]•-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिरामं सुगधवरगधिय॰ गधवट्टिभूय करेह य कारवेह[7] य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तिय[8] पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[9] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल[10] •गधोदयसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुगधवरगधिय गधवट्टिभूय करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएत्ता तमाणत्तिय॰ पच्चप्पिणति ॥

१३८. तए ण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ[11] पच्चोरुहइ,पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ,अट्टणसाल अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव[12] ससिव्व पियदसणे नरवई[13] जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

---

१. संपडिच्छइ (ख, स)।
२. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए।
३. देवतगुरु॰ (ता)।
४. × (अ)।
५. गधोदय (ब)।
६. स० पा०—पवरकुदुरुक्क जाव गध॰।
७. करावेह (ख, स)।
८. ममेत जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९. भ० ६।१४२।
१० स० पा०—उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणति।
११. पायवीढाओ (ख, ब, म)।
१२. ओ० सू० ६३।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ (अ, क,ख, ता, ब, म, स); औपपातिकानुसारेण स्वीकृतपाठ. एव समीचीन'। आदर्शेषु परिवर्तन सक्षेपीकरणेन जातम्। पाठसक्षेपे प्राय एव भवत्येव।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं[1] सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं[2] ईहामिय-उसभ[3]-°तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं[4] अंगसुहफासयं[5] सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविहसत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ॥

१३९ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति ॥

१४० तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय[7]°बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरा सिद्धत्थगहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ॥

१४१ तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. °पच्चुत्थुयाइं (म)।
२. सण्हबहुभत्ति° (व, म)।
३. सं० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्तं।
४. °पच्चुत्थयं (ब, म, स)।
५. °फासुयं (ख, व)।
६. भ० ९।१४२।
७. सं० पा०—कय जाव सरीरा।
८. सं० पा०—करयल।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तसि तारिसगसि वासघरसि जाव[1] सीह सुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव[2] महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२. तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविण ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता ईह अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेति, करेत्ता अण्णमण्णेण सद्धि सचालेंति[3], सचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसिं तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झंति, त जहा—

गय उसह[4] सीह अभिसेय दाम ससि दिणयर झय कुभ ।
पउमसर[5] सागर विमाणभवण[6] रयणुच्चय सिहि च[7] ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो बलदेवसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति। मडलियमायरो मंडलियसि गब्भ वक्कममाणंसि एएसि णं चोद्दसण्ह महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि[9]-•दीहाउ कल्लाण•-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[10] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाण° वीइक्कंताणं तुम्ह कुलकेउं जाव[11] देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति।

१. भ० ११।१३३।
२. भ० ११।१३३।
३. सलवति (ता)।
४. वसह (क, ता, म)।
५. पदुमसर (ता)।
६. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकारं भवन विमानभवन, अथवा देवलोकाद्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु नरकात् तन्माता भवनमिति (वृ)।
७. इह च गाथायां केषुचित्पदेष्वनुस्वारस्याश्रवण गाथाऽनुलोम्याद् दृश्यम् (वृ)।
८. भ० ११।१३४।
९. स० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए।
१०. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कताण।
११. भ० ११।१३४।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। त ओराले ण देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाए[2]-•मगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे° दिट्ठे ॥

१४३. तए ण से बले राया सुविणलक्खणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल[3]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया[4]! •तहमेय देवाणुप्पिया! अवितहमेय देवाणुप्पिया! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया! इच्छियमेय देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया!° से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ[5], पडिच्छित्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेण असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावति देविं ताहि इट्ठाहिं जाव[6] मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहि संलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थसि बायालीस सुविणा, तीस महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति त चेव जाव[7] मडलियमायरो मडलियसि गब्भ वक्कममाणंसि एएसि णं चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविणं पासित्ता ण पडिबुज्झति। इमे य ण तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[8] रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, त ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[9] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावति देविं ताहि इट्ठाहि जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहि दोच्च पि तच्च पि अणुबूहइ ॥

---

१. स० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई।
२. स० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे।
३. स० पा०—करयल जाव कट्टु।
४. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव से।
५. सपडिच्छइ (क, ता, म, स)।
६. भ० ११।१३४।
७. भ० ११।१४२।
८. भ० ११।१४२।
९. भ० ११।१३४।

१४४. तए णं सा पभावतो देवो बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल[1]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ एवं वयासी—एयमेयं देवाणुप्पिया! जाव[2] तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्ति[3]•चित्ताओ भद्दासणाओ॰ अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल[4]•मसंभताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए॰ गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा॥

१४५ तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहिं नातिकसाएहिं नातिअंबिलेहिं नातिमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं[6] भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-मउएहिं[7] सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला[8] सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गब्भं 'सुहंसुहेणं परिवहति'[9]॥

१४६. तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं[10] •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंग॰ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया॥

१४७. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[11]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं जाव[12] सुरूवं दारगं पयाया। तं एयण्णं[13] देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो। पियं भे भवतु॥

१४८. तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

---

१. सं० पा०—करयल जाव एवं।
२. भ० ११।१३५।
३. सं० पा०—॰भत्ति जाव अब्भुट्ठेइ।
४. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए।
५. भ० ७।१७६।
६. तदु॰ (ख); उतु॰ (ता, म); उडु॰ (ब)।
७. विचित्त॰ (अ, ख, ता, ब, स)।
८. सपन्न॰ (अ); ॰डोहला (ता)।
९. वाचनान्तरे—सुहंसुहेणं आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ त्ति दृश्यते (वृ)।
१०. सं० पा०—गुणोववेयं जाव ससि॰।
११. सं० पा०—करयल।
१२. भ० ११।१३४।
१३. एतण्णं (अ, स); एत (ता)।
१४. सं०पा०—हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव रूवे।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चचुमालइयतणुए ऊसवियरोम °कूवे तासि अगपडिया-रियाण मउडवज्ज जहामालिय[1] ओमोय दलयइ[2], दलयित्ता सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण भिंगार पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४६ तए ण से वले राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माण-वड्ढण[3] करेह, करेत्ता हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरियं आसिय-समज्जिओ-वलित्तं जाव[4] गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसजुत्त[5] उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१५०. तए ण ते कोडुवियपुरिसा बलेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[6] तमाण-त्तिय पच्चप्पिणति ॥

१५१ तए ण से वले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव जाव[7] मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदेज्ज अमेज्ज अभडप्पवेस[8] अदडकोदंडिम अधरिम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धुयमुइग[9] अमिलायमल्लदाम[10] पमुइयपक्कीलिय सपुरजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडिय करेति ॥

१५२. तए ण से वले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सय-साहस्सिए य लभे[11] पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव यावि विहरइ ॥

१५३. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेइ, तइए दिवसे चदसूरदसावणिय[12] करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीइ-

---

१. जहाजमालित (ता) ।
२. दलति (ता) ।
३. °वड्ढ (ता) ।
४. ओ० सू० ५५ ।
५. °महिमसक्कारं वा (अ, म, स); आयाम-जावदिसक्कार वा (क), °सजुत्तं वा आया-मेजाहससक्खा (ख); पूता° (ता), पूया-महिमसक्कारं वा (व) ।
६. भ० ११।१४६ ।
७. ओ० सू० ६३ ।
८. °पावेस (ख), अहड° (ता) ।
९. अणुद्धत° (क); अणद्धुत्त° (व) ।
१०. अमिलाण° (ता) ।
११. लाभे (क, ब). लभो (ता) ।
१२. °दसणिय (क); औपपातिकाद्यागमेषु 'दस-णिय' इति पाठ प्रायेण स्वीकृतोस्ति । तत्र स्वीकृतपाठो नोपलब्धः । अर्थदृष्ट्यासौ समी-चीनोस्ति ।

वक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते 'वारसमे दिवसे'[1] विउलं असणं पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता •[2]मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणं रायाणो य° खत्तिए य आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव[3] सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स° राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागयं वहुपुरिसपरंपरप्परूढ कुलाणुरूवं कुलसरिस कुलसताणततुवद्ध-णकरं अयमेयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए वलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, त होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्ज 'महव्वले-महव्वले'[5]। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्ज करेंति महव्वले त्ति ॥

१५४. तए णं से महव्वले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए],[6] एवं जहा दढपइण्णस्स जाव[7] निव्वाय[8]-निव्वाघायसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति ॥

१५५. तए णं तस्स महव्वलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडिय वा चंद-सूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परगामणं वा पचंकामणं[9] वा पजेमामणं[10] वा पिंडवद्धणं वा पजंपावण[11] वा कण्णवेहण वा सवच्छरपडिलेहणं[12] वा चोलोयणग[13] वा उवणयणं वा, अण्णाणि य वहूणि गब्भाधाण[14]-जम्मणमादि-याइं कोउयाइं करेंति ॥

१५६. तए णं तं महव्वलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि

---

१. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, म, स); वारसा-दिवसे (ता); वारहदिवसे (व); 'रायपसेण-इय' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतः। विशेपाववोवाय द्रष्टव्य 'ओव-वाइय' सूत्रस्य १४४ सूत्रस्य प्रथम पाद-टिप्पणम्।

२. सं० पा०—जहा सिवो जाव खत्तिए।

३. भ० ११।६३।

४. सं० पा०—नाइ जाव राईण।

५. महव्वले (अ, क, ख, व, म, स)।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।

७. ओ० वाचनान्तर पृष्ठ १५१, १५२; राय० सू० ८०४।

८. निवात (अ, ता, व, म); नियात (ख)।

९. पयचंकमाण (अ); पचंकम्मावणं (ख, व); पचक्कामवण (ता); पयिचकामण (म)। पयचकमण (स)।

१०. जेमावण (क, व, म, स)।

११. पजपमाण (क, ख); पजपामण (व)।

१२. °पलेहणं (ख), °वलेहणगं (ता)।

१३. चोलायणग (अ); चोलोपणग (क, ख,); चोलगाणि (ता); चोलोयणं (व)।

१४. गव्भदाण (अ, ख); गव्भायाण (ता); गव्भादाण (व, वृ); 'गव्भाहाण' पदस्य हकारदकारयोर्लिपिसादृश्यात् 'गव्भादाण' रूपे परिवर्तनं जातमिति सभाव्यते।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव[1] अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

१५७. तए ण त महव्वलं कुमार उम्मुक्कवालभावं जाव[2] अलंभोगसमत्थ विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेसए कारेति[3]—अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[4] पडिरूवे । तेसि ण पासायवडेसगाण वहुमज्झदेस-भागे, एत्थ ण महेग भवण कारेति—अणेगखभसयसनिविट्ठ वण्णओ जहा राय-प्पसेणइज्जे पेच्छाघरमडवसि जाव[5] पडिरूवे ॥

१५८ तए णं त महव्वल कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि ण्हाय कयवलिकम्मं कयकोउय-मगल-पायच्छित्त सव्वा-लकारविभूसिय पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठगतिलग-ककण-अवि-हववहुउवणीय[6] मगलसुजपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसतिकम्म सरि-सियाण सरित्तयाण सरिव्वयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं 'विणीयाण कयकोउय-मगलपायच्छित्ताण'[7] सरिसएहि रायकुलेहिंतो आणिल्लि-याण[8] अट्ठण्ह रायवरकन्नाण एगदिवसेण पाणि गिण्हाविसु ॥

१५९ तए ण तस्स महावलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूव पीइदाण दलयति, तं जहा – अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ 'कुडलजोए कुडलजोयप्पवरे'[9] अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एव मुत्तावलीओ, एव कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एव तुडियजोए, अट्ठ खोमजुय-लाइ खोमजुयलप्पवराइ, एव वडगजुयलाइ,[10] एव पट्टजुयलाइ, एव दुगुल्ल-जुयलाइ, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एव धिईओ, कित्तीओ, वुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइ, अट्ठ भद्दाइ, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइ वत्तीसइवद्धेण नाडएण, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपघडिरूवए, अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ, अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ, एव सिवियाओ[11], एव सद-

---

१. ओ० सू० १४६-१४८, राय० सू० ८०५-८०९ ।
२. राय० सू० ८१०।
३ करेंति (अ, म, स) ।
४. राय० सू० १३७।
५. राय० सू० ३२।
६. अविधववधुओवणीत (ता)।
७. × (व) ।
८. आणिते (ति) ल्लियाण (क, ख, ता, व, म) ।
९. कुडलजुए कुडलजुय° (अ, स) ।
१०. पडलगजुवलाइ (अ) ।
११. सिविया (अ), सिताओ (ता) ।

माणीओ[1], एव गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइ, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे सगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थि-प्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एव दासीओ, एव किंकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंवणदीवे[2], एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ[3] ३, अट्ठ सोवण्णियाइं थास-गाइ३, अट्ठ सोवण्णियाइ मल्लगाइ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ[4]३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ[5]३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए[6]३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ[7]३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लके३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ३, अट्ठ हसासणाइ, अट्ठ कोचासणाइ, एव गरुलासणाइ, उन्न-यासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइ, मगरासणाइ, अट्ठ पउमासणाइ, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, [8]°अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एवं पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अजण-समुग्गे°, अट्ठ सरिसव-समुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव[9] अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियटे, अट्ठ तालियटधारीओ चेडीओ, 'अट्ठ करोडियाओ',[10] अट्ठ करो-डियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ[11], °अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मडणधाईओ अट्ठ खेल्लावणधाईओ°, अट्ठ अकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ[12], अट्ठ कीडागारीओ[13], अट्ठ दवकारीओ[14], अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ,

---

१. सदमाणी (अ), सदमाणियाओ (क, ता, ब, म)।

२. उक्कपणदीवे (क, ख, ता, ब, स)।

३. 'एव तिण्णि वि' इति पाठस्य सूचकमङ्क-मिदं सर्वत्र।

४. चवलियाओ (ख), चवलियाओ अट्ठसो-वण्णियाओ तिलियाओ (ता)।

५. कवचियाओ (अ, ख, ता, ब, म); कति-वियाओ (क)।

६ अवपडए (अ, स), अवयडए (ता)।

७. अवक्काओ (अ, क, ख, ता, म)।

८. स० पा०—जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ।

९. ओ० सू० ७०, भ० ६।१४४।

१०. × (अ, क, ख, ता, ब, म)।

११. स० पा०—खीरधाईओ जाव अट्ठ।

१२. × (ख)।

१३. कीलाकरीओ (ता)।

१४ उवकारीओ (क, ता)।

अट्ठ कोडुंविणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ[1], अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फघरणीओ, अट्ठ पाणिघरणीओ, अट्ठ वाहिरियाओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ वाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्ण वा सुबहु हिरण्णं वा सुवण्ण वा कस वा दूस वा विउलधण-कणग[2]-•रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-°सतसारसावएज्ज, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु[3], पकाम परिभाएउं[4] ॥

१६० तए ण से महव्वले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडि दलयइ, एगमेग सुवण्णकोडि दलयइ, एगमेग मउडं मउडप्पवर दलयइ, एव त चेव सव्व जाव एगमेग पेसणकारिं दलयइ, अण्ण वा सुवहु हिरण्ण वा[5] •सुवण्ण वा कस वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्ज, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकामं भोत्तु, पकाम ° परिभाएउ ॥

१६१. तए ण से महव्वले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव[6] पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए[7] धम्मघोसे नाम अणगारे जाइसपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव[8] पचहिं अणगारसएहिं सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए ण तस्स महव्वलस्स कुमारस्स त महयाजणसद्द वा जणवूह वा जाव जण-सन्निवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एव जहा[10] जमाली तहेव चिंता,

---

१. महाणसीओ (क, ता, व)।
२. स० पा०—कणग जाव सतसार।
३. परिभोत्तु (क, व, म, स)।
४. परिभाइउ (ख), परियाभाएउ (ता)।
५. स० पा०—हिरण्ण वा जाव परिभाएउ।
६ भ० ६।१५६।
७. पदोप्पए (ख), पतोप्पए (व, म)।
८. राय० सू० ६८६।
६ राय० सू० ६८७; ओ सू० ५२; भ० ६।१५७।
१०. भ० ६।१५८।

तहेव कंचुइज्ज-पुरिसं सद्दावेति, [1]•सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिणापुरे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ।।

१६५. तए णं से कंचुइ-पुरिसे महब्बलेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा जाव[2] निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा जाव[3] निग्गच्छंति ।।

१६६. तए णं से महब्बले कुमारे° तहेव[4] रहवरेणं निग्गच्छति। धम्मकहा जहा[5] केसिसामिस्स। सो वि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। तहेव वुत्तपडिवुत्तिया[6], नवरं—इमाओ य ते जाया! विउलरायकुलबालियाओ कलाकुसलसव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेसं तं चेव जाव[7] ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।।

१६७. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१६८. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो जाव[8] अभिसिंचति, करयलपरिग्गहियं[9] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया! किं देमो? किं पयच्छामो? सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव[10]—

१६९. तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[11]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. सं० पा०—कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे, सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव।

२. भ० ९।१५८।

३. भ० ९।१५८।

४. भ० ९।१६०-१६२।

५. राय० सू० ६९३।

६. वुत्तपडिवत्तया (क्व)।

७. भ० ९।१६४-१७९।

८. भ० ११।५९-६२।

९. सं० पा०—करयपलरिग्गहियं।

१०. भ० ९।१८०-२१५।

११. सं० पा०—चउत्थ जाव विचित्तेहिं।

सेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-[१]•गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिंदे कप्पे वीईवइत्ता° बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता तओ[२] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए॥

१७०. तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! 'इदाणिं पि'[३] करेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा॥

१७१. तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं[४] परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स 'सण्णीपुव्वे जातीसरणे'[५] समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति॥

१७२. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे[६] आणंदंसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते[७]! •तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते!°—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स

---

१. स० पा०—जहा अम्मडो जाव बंभलोए। औपपातिकादर्शेषु तद्वृत्तौ च नैष पाठो लभ्यते, तेन चिन्त्यमिदम्।

२. तओ चेव (अ); ताओ (ता, ब, म); ताओ चेव (स)।

३. इदाणिं वि (अ, क, ख, ता, ब)।

४. सोभणेणं (ता)।

५. सण्णीपुव्वजाती° (अ, क, ता, ब, वृ)।

६. °सड्ढ° (म)।

७. स० पा०—भंते जाव से।

जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव ॥

१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

बारसमो उद्देसो

इसिभद्दपुत्त-पदं

१७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[3]। संखवणे चेइए—वण्णओ[4]। तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

१७५. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाणं सण्णिविट्ठाणं[7] सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे[8] समुप्पज्जित्था—देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

१७६. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, सखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१७७. तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

---

१. भ० ९।१५१।
२. भ० १।५१।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० २-१३।
५. भ० २।९४।
६. भ० २।९४।
७. समुवविट्ठाए (अ), समुविट्ठाण (ख, ब, म, वृ) समुवेट्ठाणं (ता); द्रष्टव्यम्—भ० ७।२१२।
८. मिहोकहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, ख, म); अज्झत्थिए (ब)।

१७८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[1] समोसढे जाव[2] परिसा पज्जुवासइ। तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा •[3]अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे जाव[4] आलभियाए नगरीए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।
त महप्फल खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया! समण भगवं महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवयं चेइय पज्जुवासामो।
एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायति, मेलायित्ता पायविहारचारेण आलभियाए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए॰ पज्जुवासति। तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्म परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ॥

१७९ तए ण ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—एव खलु भते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एवमाइक्खइ जाव[8] परूवेइ—देवलोएसु ण अज्जो! देवाण जहण्णेण दस

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० २२-५२।
३ स० पा०—एव जहा तुगियउद्देसए जाव पज्जुवासति।
४. ओ० सू० ५२।
५. भ० २।६७।
६ धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० ७१-७७।
८. भ० १।४२०।

वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव[1] तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।

१८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?
अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—जण्णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे, अहं 'पि ण'[2] अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइं [4]●ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता● । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे णं एसमट्ठे'[5] ॥

१८१. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समण भगव महावीरं वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[6] जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासग वदति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति । तए णं ते समणोवासया पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियंति, परियादियित्ता समण भगवं महावीर वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१८२. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण[7]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइं वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

---

१. भ० ११।१७६।
२. पुण (अ, स)।
३. भ० १।४२१।
४. स० पा०—त चेव जाव तेण ।
५. सच्चमेसे अट्ठे (क, ख, ता, ब, म)।
६. नमसित्ता उट्ठाते उट्ठेति २ (ता)।
७. गुणव्वय (ख, ब, म)।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति॥

१८३. से णं भंते! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[1] °अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? ° कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[2] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति॥

१८४ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे जाव[3] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१८५ तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

पोग्गल-परिव्वायग-पदं

१८६ तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5]। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए[6]—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव[7] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[8] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरइ॥

१८७ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं[9] °अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[10] °पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स° विब्भंगे नामं नाणे[11] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणइ-पासइ॥

१८८ तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि णं मम अतिसेसे नाणदंसणे

---

१. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं।
२. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
३ भ० १।५१।
४ ओ० सू० १।
५. ओ० सू० २-१३।
६. परिव्वायए परिवसति (अ, स)।
७. भ० २।२४।
८. सं० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे।
९. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स
१०. सं० पा०—जहा सिवस्स जाव विब्भंगे।
११. अण्णाणे (ब)।
१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता 'तिदड च कुडिय च'[1] जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ[4]•ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर° वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।।

१८९. तए णं [5]•पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसुबहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।° से कहमेय मन्ने एव ?

१९०. सामी समोसढे[6], •परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ, °परिसा पडिगया । भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव[7] अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।।

१९१. अत्थि ण भते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइं पि, [8]•सगधाइ पि अगंधाइ पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइ पि अफासाइ

---

१. तिदडकुडिय (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० २।३१ ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. सं० पा०—तहेव जाव वोच्छिण्णा ।
५. सं० पा०—आलभियाए नगरीए एव एएणं अभिलावेण जहा सिवस्स त चेव जाव से ।
६. स० पा०—समोसढे जाव परिसा ।
७. भ० ११।७५-७७ ।
८. स० पा०—तहेव जाव हता ।

पि अण्णमण्णवद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? ०

हंता अत्थि ।

एव ईसाणे वि, एव जाव[1] अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?

हंता अत्थि ॥

१९२. तए ण सा महतिमहालिया परिसा जाव[2] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१९३. तए ण आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-[3]•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । त नो इणट्ठे समट्ठे । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव[4] देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठितो पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्को-सेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१९४ तए ण से पोग्गले परिव्वायए बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स सकियस्स कखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए ॥

१९५. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगव महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव[5] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केणं जाव[6] संखवणे चेइए

---

१. भ० ११।९४ ।

२. भ० ११।८२ ।

३. स० पा०—अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—तिदडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भगे आल-भिय नगरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदडकुडिय च जहा खदओ जाव पव्वइओ सेस जहा सिवस्स जाव ।

४. भ० ११।८३, १९० ।

५. भ० १।७ ।

६. ओ० सू० १९।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाण अरहताण भगवताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण समणं भगव महावीर वदामि जाव[1] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदड च कुडिय च जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भगे आलभिय नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिकडे पज्जुवासइ ॥

१९६. तए णं समणे भगवं महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[3] आणाए आराहए भवइ ॥

१९७. तए णं से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[4] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुडियं च जाव[5] धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समण भगवं महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव जहेव उसभदत्तो तहेव[6] पव्वइओ, तहेव[7] एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव[8] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१९८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणस्स कयरम्मि सघयणे सिज्झंति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० २।३१ ।
३. ओ० सू० ७१-७७ ।
४. भ० २।५२ ।
५. भ० २।३१ ।
६. भ० ९।१५०,१५१ ।
७. भ० ९।१५१ ।
८. भ० ९।१५१ ।

सघयण सठाण, उच्चत्त आउयं च परिवसणा ।
एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा° जाव[1]—
अव्वावाह सोक्ख, अणुभवति सासय सिद्धा ॥

१६६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

———

१. ओ० सू० १६५ ।

२. भ० १।५१ ।

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. सखे २. जयति ३. पुढवि ४. पोग्गल ५. अइवाय ६. राहु ७ लोगे य ।
८. नागे य ९. देव १०. आया, वारसमसए दसुद्देसा ।।१।।

संख-पोक्खली-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। कोट्ठए चेइए—वण्णओ[2]। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे सखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव[4] अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति। तस्स ण संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[5] सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए पोक्खली नाम समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

२. तेणं कालेण तेणं समएण सामी समोसढे। परिसा जाव[6] पज्जुवासइ। तए ण ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव[7] पज्जुवासंति। तए णं समणे भगव महावीरे तेसिं समणोवासगाण तीसे य महति-महालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[8] जाव[9] परिसा पडिगया ।।

३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगवं महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमसित्ता पसि-

---

१. ओ० सू० १ ।
२. ओ० सू० २-१३ ।
३. भ० २।९४ ।
४. भ० २।९४ ।
५. ओ० सू० १५ ।
६. ओ० सू० ५२ ।
७. भ० ११।१७८ ।
८. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
९. ओ० सू० ७१-७९ ।

णाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति[1], परियादियित्ता उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

४ तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं'[2] उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[3] विस्साएमाणा 'परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा'[4] पक्खियं पोसहं[5] पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ।।

५ तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति ।।

६. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेयं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं[7] साइमं अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं[8] पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि[9]-सुवण्णस्स ववगयमाला[10]-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[11] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए° पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।।

७. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-

---

१. पडियाइयति (ता) ।
२. असणपाणखाइमसाइमं (क, ख, ता, ब, म) ।
३. आसाएमाणा (स) ।
४. परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (अ, क, ख, स); परिभुंजमाणा परियाभाएमाणा (ता) ।
५. पोसहियं (त) (ख, ता, म) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. पोसहियं (ख, ता, म,) ।
९. उम्मुक्क° (ब, म) ।
१०. °मल्लग (ता) ।
११. सं० पा०—बंभचारी जाव पक्खियं ।

प्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासगं सद्दावेत्तए ॥

८. तए णं से पोक्खली समणोवासए 'ते समणोवासए'[1] एवं वयासी—अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय[2]-वीसत्था, अहण्णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

९. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ[3], उवनिमंतेत्ता एवं वयासी—संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१०. तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी—कहिण्णं[4] देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ?

११. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[5] °ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे° विहरइ ॥

१२. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं[6] देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं[7] °पाणं खाइमं° साइमं अस्साएमाणा[8] °विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं° पडिजागरमाणा विहरामो ॥

१३. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी—नो खलु

---

१. × (ख, ता, ब, म)।
२. सुनिव्वुया (अ, स)।
३. निमंतेइ (ता)।
४. कहि णं (अ, क, ख, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—बंभचारी जाव विहरइ।
६. × (क, ख, ता, ब, म)।
७. सं० पा०—असणं जाव साइमं।
८. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव पडिजागरमाणा।

कप्पइ देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणस्स[1] •विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं° पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स[2] •बंभचारिस्स ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स° विहरित्तए, 'तं छंदेणं'[3] देवाणुप्पिया! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[4] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह॥

१४. तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव[5] विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं[6] •पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ। तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा जाव विहरंति॥

१५. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे[7] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव[9] पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर[10] परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[11] •निग्गच्छइ,

---

१. सं० पा०—अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स।
२. सं० पा०—पोसहियस्स जाव विहरित्तए।
३. तत्थ णं (अ), तं णं छंदेणं (ख)।
४. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव विहरह।
५. भ० १२।६।
६. सं० पा०—असणं ४ जाव विहरह।
७. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
८. भ० २।६६।
९. भ० २।३१।
१०. × (ब)।
११. सं० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि।

निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति ॥

१६. तए ण ते समणोवासगा कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[2] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायति[3], मेलायित्ता [4]°पायविहारचारेण सावत्थीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति ॥

१७. तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ ॥

१८ तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सखं समणोवासयं एवं वयासी—तुमं ण देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एव वयासी—तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! विउलं असण[8] °पाण खाइम साइम उवक्खडावेह । तए णं अम्हे त विपुल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खियं पोसह पडिजागरमाणा° विहरिस्सामो । तए णं तुमं पोसहसालाए[9] °पोसहिए बभचारी ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खत्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसथारोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे° विहरिए, त सुट्ठु ण तुम देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलसि[10] ॥

१९. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एव वयासी— मा ण अज्जो ! तुब्भे सख समणोवासग हीलह निदह खिसह गरहह अवमण्णह । सखे ण समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरिय जागरिए ॥

---

१. भ० २।६६ ।
२. भ० २।६७ ।
३. मिलायति (अ, ख, व, स) ।
४. स० पा०—सेसं जहा पढम जाव पज्जुवासति ।
५. भ० २।६७ ।
६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. ओ० सू० ७१-७७ ।
८. स० पा०—असण जाव विहरिस्सामो ।
९. स० पा०—पोसहसालाए जाव विहरिए ।
१०. हीलेसि (अ, स) ।

२०. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहा णं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ॥

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णनाणदंसणधरा [1]•अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए° सव्वण्णू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा[2] बुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे अणगारा भगवंतो रियासमिया[3] भासासमिया[4] •एसणासमिया आयाण-भंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिया-समिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया° गुत्तबंभचारी[5]—एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति—एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया[7] •पण्णत्ता, तं जहा बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया°, सुदक्खुजागरिया ॥

२२. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधण-बद्धाओ [8]•धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्प-एसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

२३. माणवसट्टे णं भंते ! जीवे [9]•किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं

---

१. सं० पा०—जहा खंदए जाव सव्वण्णू ।
२. × (अ) ।
३. इरिया° (व म) ।
४. सं० पा०—भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी ।
५. °चारिणो (अ) ।
६. भ० २।९४ ।
७. सं० पा०—जागरिया जाव सुदक्खु° ।
८. सं० पा०—एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ।
९. सं० पा०—एवं चेव, एवं मायवसट्टे वि एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।

उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[1] अणुपरियट्टइ ॥

२४. मायवसट्टे[2] णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[3] अणुपरियट्टइ ॥

२५. लोभवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[4]° अणुपरियट्टइ ॥

२६. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति । तए णं ते समणोवासगा [5]°पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२७. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं [6]°मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! संखे समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेहिति, भूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं संखस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ॥

२८. से णं भंते ! संखे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

---

१. भ० १२।२२ ।
२. मायावसट्टे (ब, म) ।
३. भ० १२।२२ ।
४. भ० १२।२२ ।
५. सं० पा०—सेसं जहा आलभियाए जाव पडिगया ।
६. सं० पा०—सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अंतं ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

उदयणादीणं धम्मसवण-पदं

३०. तेणं कालेण तेणं समएण कोसंबी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। चंदोतरणे[2] चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे[4] नामं राया होत्था—वण्णओ[5]। तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था[6]—सुकुमालपाणिपाया जाव[7] सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव[8] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवीए नणंदा, वेसालियसावयाणं[9] अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी[10] जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

३१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[11] परिसा पज्जुवासइ॥

३२. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे[12] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भिंतर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं[13] करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव[14] पज्जुवासइ॥

३३. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावतिं देविं एवं वयासी—[15]

---

१. ओ० सू० १।
२. चंदोत्तराए (अ), चंदोवरणे (ख), चंदोवतरणे (स)।
३. ओ० सू० २-१३।
४. उदायणे (अ), उद्दायणे (स)।
५. ओ० सू० १४।
६. होत्था वण्णओ (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० १५।
८. भ० २।९४।
९. वेसालीसावयाणं (अ, क, ख, ब, म, स)।
१०. °सिज्जायरी (अ, स)।
११. ओ० सू० २२-५२।
१२. हट्ठतुट्ठ (ता)।
१३. पू०—ओ० सू० ५५।
१४. ओ० सू० ५६-६९।
१५. सं० पा०—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ।

•एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[1] सव्वण्णू सव्व-दरिसी आगासगएणं चक्केण जाव[2] सुहसुहेणं विहरमाणे चंदोतरणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहंताण भगवंताण नामगोयस्स वि सवणयाए जाव[3] एय णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-साए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ ॥

३४. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए[4] •एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-माणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जयंतीए समणोवासियाए एयमट्ठं विणएणं° पडिसुणेइ ॥

३५. तए णं सा मिगावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव[5] धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह[6] •उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मियं जाण-प्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

३७. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •धम्मिए जाणप्पवरं° दुरूढा[10] ॥

३८. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा[11] समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव[12] धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ॥

३९. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं जहा देवाणंदा

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० १६।
३. भ० ९।१३६।
४. सं० पा०—जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ।
५. भ० ९।१४१।
६. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति।
७. भ० २।६७।
८. भ० ९।१४४।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव दुरूढा।
१०. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
११. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
१२. भ० ९।१४५।

जाव[1] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया[2] चेव[3] •सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा° पज्जुवासइ ॥

४०. तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्मं परिकहेइ जाव[5] परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पदं

४१. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं[6] भंते! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

जयंती! पाणाइवाएणं[7] •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४२. कहण्णं भंते! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

जयंती! पाणाइवायवेरमणेणं मुसावायवेरमणेणं अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४३. कहण्णं भंते! जीवा संसारं आउलीकरेंति ?

जयंती! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती! जीवा संसारं आउलीकरेंति ॥

४४. कहण्णं भंते! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ?

जयंती! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ॥

४५. कहण्णं भंते! जीवा संसारं दीहीकरेंति ?

---

१. भ० ९।१४६।
२. ठितिया (अ, क, ख, स)।
३. सं० पा०—चेव जाव पज्जुवासइ।
४. भ० ९।१४९।
५. ओ० सू० ७१-७९।
६. कहं णं (क, ता, व); कह ण (ख, म); कहिण्णं (स)।
७. सं० पा०—पाणातिवाएणं जाव मिच्छादं-सणसल्लेणं एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमा-गच्छंति एवं जहा पढमसए जाव वीति-वयंति।

जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं दीहीकरेति ।।

४६. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेति ?
जयंती पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेति ।।

४७. कहण्णं भंते ! जीवा संसार अणुपरियट्टति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसार अणुपरियट्टंति ।।

४८. कहण्णं भंते ! जीवा संसार वीतिवयंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एव खलु जयंती ! जीवा संसारं° वीतिवयंति ।।

४९. भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाण किं सभावओ ? परिणामओ ?
जयती ! सभावओ, नो परिणामओ ।।

५०. सव्वेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ?
हंता जयती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ।।

५१. जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५२. से केणं खाइणं[1] अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
जयंति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणंताहि ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव ण अवहिया सिया। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ।।

५३. सुत्तत्तं भंते ! साहू ? जागरियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्त साहू ।।

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं[2] °जीवाण सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्त° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-

१. खाइएणं (ता); खातेणं (स)।
२. सं० पा०—अत्थेगतियाण जाव साहू।

रति, एएसि णं जीवाण सुत्तत्तं साहू। एए ण जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए[1] •जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभय वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति एएसि ण जीवाणं सुत्तत साहू।

जयती! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया[2] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण जागरियत्त साहू। एए णं जीवा 'जागरा समाणा'[3] बहूणं पाणाण[4] •भूयाण जीवाणं° सत्ताण अदुक्खणयाए[5] •असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए वट्टंति। एए[6] ण जीवा जागरा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभयं वा बहूहि धम्मियाहि सजोयणाहिं सजोए-त्तारो भवति। एए ण जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाण जागर-इत्तारो भवति। एएसि णं जीवाण जागरियत्तं साहू। से तेणट्ठेण जयती! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण जीवाणं सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाणं जागरियत्तं साहू॥

५५. बलियत्त भते! साहू? दुब्बलियत्त साहू?
जयती! अत्थेगतियाण जीवाण बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाण जीवाण दुब्बलि-यत्त साहू॥

५६ से केणट्ठेण भते! एवं वुच्चइ[7]—•अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्त साहू, अत्थेग-तियाणं जीवाण दुब्बलियत्त° साहू?
जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव[8] अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-रति, एएसि ण जीवाण दुब्बलियत्त साहू। एए णं जीवा [9]•दुब्बलिया समाणा नो बहूण पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताण दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति। एए ण जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति। एएसि णं जीवाणं दुब्ब-लियत्त साहू।

---

१. सं०पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए।
२. स० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं।
३. जागरमाणा (अ, क, ख)।
४. सं० पा०—पाणाण जाव सत्ताण।
५. स० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावण-याए।
६. ते (अ)।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव साहू।
८. भ० १२।५४।
९. सं० पा०—एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलिय-वत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरंति, एएसि ण जीवाणं बलियत्तं साहू । एए णं जीवा बलिया समाणा बहूण पाणाण भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति । एए ण जीवा बलिया समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजो-यणाहि° संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाण बलियत्तं साहू । से तेणट्ठेण जयंती ! एवं वुच्चइ—•[1]अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाण जीवाणं दुब्बलियत्तं° साहू ॥

५७. दक्खत्तं भंते ! साहू ? आलसियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आल-सियत्तं साहू ॥

५८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—•[2]अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थे-गतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विह-रंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू । एए ण जीवा आलसा[3] समाणा नो बहूणं [4]•पाणाणं भूयाण जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा आलसा समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभय वा नो बहूहिं अहम्मियाहि संजोयणाहि संजोएत्तारो भवंति । एएसि ण जीवाण आलसियत्त साहू ।
जयंति ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाण दक्खत्त साहू । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा दक्खा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहि संजोय-णाहिं° संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहि आयरिय-वेयावच्चेहि[5] उवज्झायवेयावच्चेहि थेरवेयावच्चेहि तवस्सिवेयावच्चेहिं गिलाण-वेयावच्चेहि सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहि गणवेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहि साहम्मियवेयावच्चेहि अत्ताणं संजोएत्तारो भवति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्त साहू । से तेणट्ठेण [6]•जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ॥

---

१. स० पा०—तं चेव जाव साहू ।
२. सं० पा०—त चेव जाव साहू ।
३. अलसा (अ, ब) ।
४. स० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव सजोएत्तारो ।
५. °वेदावच्चेहिं (अ, व) ।
६. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।

५९. सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? [1]किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
जयंती ! सोइंदियवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

६०. [2]चक्खिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६१. घाणिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६२. रसिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६३. फासिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव° अणुपरियट्टइ ॥

६४. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइया जाव[3] सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

६५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

तइओ उद्देसो

पुढवी-पदं

६६. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा, दोच्चा जाव सत्तमा ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ।

२. सं० पा०—एवं चक्खिंदियवसट्टे वि एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।

३. भ० ९।१५२-१५५ ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।४-१० ।

६७. पढमा णं भंते ! पुढवी किंगोत्ता पण्णत्ता ?
गोयमा ! घम्मा नामेण, रयणप्पभा गोत्तेणं, एव जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] अप्पाबहुग ति ।।
६८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ।।

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९ रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—दो भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहण्णित्ता कि भवइ ?
गोयमा ! दुप्पएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ।।
७०. तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ?
गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति ।।
७१. चत्तारि भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति,[4] •साहणित्ता किं भवइ ?०
गोयमा ! चउपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा दो दुपएसिया खंधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति ।।
७२. पंच भते ! परमाणुपोग्गला [5]•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ ?०
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपए-

---

१. जी० ३।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।४-१०।
४. स० पा०—साहण्णति जाव पुच्छा।
५. सं० पा०—पुच्छा।

सिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। पचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवति ॥

७३ छब्भते ! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा छप्पएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवति ॥

७४ सत्त भते ! परमाणुपोग्गला [2]•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवति। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपए-सिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपए-

१. स० पा०—पुच्छा। २. स० पा०—पुच्छा।

सिया खंधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवति॥

७५. अट्ठ भंते! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा! अट्ठपएसिए खंधे भवइ[2]। •से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो चउप्पए-सिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७६. नव भंते! परमाणुपोग्गला [3]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा[4]! •नवपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा[5] वि कज्जइ०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—भवइ जाव दुहा।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सं० पा०—गोयमा जाव नवहा।
५. नवविहा (ता, स)।

भवइ, [1]•अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ,° अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा तिण्णि तिपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवति॥

७७. दस भते! परमाणुपोग्गला[2] •एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ?

---

१. स० पा०—एव एक्केक्क सचारेंतेहिं जाव २ स० पा—°पोग्गला जाव दुहा। अहवा।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ अट्ठपएसिए खधे भवइ, [1]•अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ ; अहवा एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ° ; अहवा दो पंचपएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पच

---

1. सं० पा०—एवं एक्केक्क सचारेंतेण जाव अहवा।

परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवति ॥

७८. संखेज्जा ण भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा दो संखेज्जपएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ; एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवंति; एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवति; अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खधे भवइ; एव जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए

खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवति जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ तिण्णि सखेज्ज-पएसिया खधा भवति, अहवा चत्तारि सखेज्जपएसिया खधा भवति, एवं एएणं कमेणं पत्रगसजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ। एएणं कमेण एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खधा भवंति, अहवा दस संखेज्जपएसिया खधा भवंति। सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति॥

७९. असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति[1], साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! असखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, सखेज्जहा वि, असखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ सखेज्ज-पएसिए खधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा दो असखेज्ज-पएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपए-सिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असखेज्जपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एव जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा तिण्णि असखेज्जपएसिया खधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ; एव चउक्कगसजोगो जाव दसगसजोगो। एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं—असखेज्जगं एग अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस

---
१. साहणति (अ, क, ख, म, स)।

असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति ॥

८०. अणंता णं भंते! परमाणुपोग्गला[1] °एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता° किं भवइ?

गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि 'संखेज्जहा वि असंखेज्जहा वि'[2] अणंतहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो। एते सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताण वि भाणियव्वं, नवरं—एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा

---

१. सं० पा०—परमाणुपोग्गला जाव किं।

२ संखेज्जाअसंखेज्ज (अ, क, ब, स), संखेज्जा- असंखेज्जा (ख, म) संखेज्जाऽसंखेज्जा (ता)।

एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति ।।

पोग्गलपरियट्ट-पदं

८१. एएसि णं भते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेदाणुवाएण अणताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?

हंता गोयमा ! एएसि ण परमाणुपोग्गलाण साहणणा [1]•भेदाणुवाएण अणताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवतीति॰ मक्खाया ।।

८२. कइविहे ण भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे[2] ।।

८३. नेरइयाण भते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव[3] आणापाणुपोग्गलपरियट्टे। एवं जाव[4] वेमाणियाणं ।।

८४. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?

अणंता ।

केवइया पुरेक्खडा[5] ?

कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थी । जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा ।।

८५. एगमेगस्स ण भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा [6]•अतीता ?

अणता ।

केवइया पुरेक्खडा ?

कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा ।॰ एव जाव वेमाणियस्स ।।

---

१. सं० पा०—साहणणा जाव मक्खाया ।

२. आणपाणु० (ख) ।

३. भ० १२।८२ ।

४. पू० प० २ ।

५. पुरेक्कडा (अ); पुरक्खडा (क, ता) ।

६. सं० पा०—एव चेव जाव एवं ।

८६. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता। एव जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा। एव जाव[1] वेमाणियस्स। एव जाव[2] आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति ॥

८७. नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणता।
केवइया पुरेक्खडा ?
अणंता। एव जाव वेमाणियाणं। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि। एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं। एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसति-दंडगा ॥

८८. एगमेगस्स ण भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
नत्थि एक्को वि।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्को वि ॥

८९ एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
एवं चेव। एव जाव थणियकुमारत्ते[3] ॥

९० एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
अणंता।
केवतिया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा। एव जाव मणुस्सत्ते। वाण-मतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

९१. एगमेगस्स ण भते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा° ?
एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते। एवं जाव थणियकुमारस्स। एव पुढविक्काइयस्स वि। एवं जाव वेमाणियस्स। सव्वेसि[4] एक्को गमो[5] ॥

---

१. पू० प० २।
२. भ० १२।८२।
३. °कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते (अ, स)।
४. सव्वेसिं उ (ता)।
५. गमओ (क, ता, व, म, स)।

६२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
एकुत्तरिया[1] जाव अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
नत्थि एक्कोवि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि[2] । एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं[3] तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।
तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि । वइ-पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं—एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

६४. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
'नत्थि एक्कोवि'[4] ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
अणंता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते । एवं जाव वेमाणियाणं[5] वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा —जत्थ[6] अत्थि तत्थ[7] अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ[8] नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

६६. वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?

---

१. एगुत्तरिया (अ); एक्कुत्तरिया (क, ता) ।
२. तेक्कोवि (ब, म) ।
३. ०सरीरं अत्थि (अ, स) ।
४. नत्थेक्कोवि (क, ख, म) ।
५. वेमाणियस्स (क, ता, ब) ।
६. जस्स (क, ता, ब, म) ।
७. तस्स (क, ता, ब, म) ।
८. जस्स (क, ख, ता, ब, म) ।

अणंता ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ?
गोयमा ! जण्ण जीवेण ओरालियसरीरे वट्टमाणेण ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं परियादियाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ।
एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवरं—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइ, सेसं तं चेव सव्वं, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवर—आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए गहियाइ, सेस त चेव ॥

९८. ओरालियपोग्गलपरियट्टे ण भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?
गोयमा ! अणताहिं 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं'[1] एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ । एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि । एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ॥

९९. एयस्स ण भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे ॥

१००. एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाण जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? वहुया या ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, ओरालिय-

---

१. ओसप्पिणि-उस्स° (अ, ख, व, म); उस्सपिणीहिं ओस° (क); उस्सप्पिणि-ओस° (स) ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव[1] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

वण्णादि अवण्णादि च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे—एस णं कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ॥

१०३. अह भंते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, 'दुगंधे, पंचरसे'[3], चउफासे पण्णत्ते ॥

१०४. अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे[4], परपरिवाए, उक्कोसे[5], अवक्कोसे[6], उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, [7]°दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते° ॥

१०५. अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए[8], गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए[9], जिम्हे[10], किव्विसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सातिजोगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे [11]°दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०६. अह भंते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।४-१०।
३. पंचरसे दुगंधे (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
४. अत्तुक्कासे (क, ख); अत्तुक्करिसे (ता)।
५. उक्कासे (ख, वृपा)।
६. अवक्कासे (ख, वृपा)।
७. सं० पा०—जहा कोहे तहेव।
८. वलये (अ, क, ख, व, म, स)।
९. कुरूए (म)।
१०. झिमे (अ, व, स); जिम्मे (क); झिम्मे (ख); पिम्हे (ता)।
११. स० पा०—जहेव कोहे।

णासा[1], नदिरागे[2]—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[3]●गोयमा ! पंचवण्णे दुगधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०७ अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे[4], ●अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादसणसल्ले—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[5]●गोयमा ! पचवण्णे दुगंधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०८. अह भते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव[6] परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[7] मिच्छा-दंसणसल्लविवेगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ॥

१०९ अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया[8], पारिणामिया—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[9]●गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता° ॥

११०. अह भते ! ओग्गहे, ईहा, अवाए[10], धारणा—एस ण कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[11]●गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा°, अफासा पण्णत्ता ॥

१११. अह भते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस ण कति-वण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[12]●गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११२. सत्तमे णं भते ! ओवासतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[13]●गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ॥

११३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[14]●गोयमा । पचवण्णे, दुगधे, पचरसे° अट्ठफासे पण्णत्ते ।
एव जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे ओवा-सतरे अवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइं अट्ठफासाइं । एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्व । जबुद्दीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी,

---

१. इद च क्वचिन्न दृश्यते (वृ) ।
२. नदीरागे (क, व, म) ।
३. सं० पा०—जहेव कोहे ।
४. स० पा०—कलहे जाव मिच्छा° ।
५. सं० पा०—जहेव कोहे तहेव चउफासे ।
६. भ० १।३८५ ।
७. ठा० १।११५-१२५ ।
८. कम्मिया (अ, क, ख, ता, म) ।
९. स० पा०—त चेव जाव अफासा ।
१०. अपोहे (क), अपाए (व, म) ।
११. सं० पा०—एव चेव जाव अफासा ।
१२. सं० पा०—त चेव जाव अफासे ।
१३. स० पा०—एव चेव जाव अफासे ।
१४. सं० पा०—जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा—एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥

११४. नेरइयाणं भंते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च[1] पंचवण्णा, 'दुगंधा, पंचरसा'[2], अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा, दुगंधा, पंचरसा, चउफासा पण्णत्ता । जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता । एवं जाव थणियकुमारा ॥

११५. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं । जीवं पडुच्च तहेव । एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ॥

११६. मणुस्साणं—पुच्छा ।
ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।
धम्मत्थिकाए जाव[3] पोग्गलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवरं—पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते ।
नाणावरणिज्जे जाव[4] अंतराइए—एयाणि चउफासाणि ॥

११७. कण्हलेसा णं भंते ! कतिवण्णा [5]•जाव कतिफासा पण्णत्ता ?°
दव्वलेसं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । भावलेसं पडुच्च अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता । एवं जाव[6] सुक्कलेस्सा ।
सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव[7] विभंगनाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगंधाणि, अरसाणि, अफासाणि ।
ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्ठफासाणि । कम्मगसरीरे[8] चउफासे । मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे ।
सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ॥

११८. सव्वदव्वा णं भंते ! कतिवण्णा [9]•जाव कतिफासा पण्णत्ता ?°

---

१. पडुच्चा (ता, ब, म) ।
२. पंचरसा दुगंधा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. भ० २।१२४ ।
४. भ० ६।३३ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. भ० १।१०२ ।
७. भ० २।१३७ ।
८. कम्मसरीरे (ब, म) ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा पचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा, एगगधा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि। तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा। एव अणागयद्धा वि, सव्वद्धा वि॥

११९. जीवे णं भते ! गब्भं वक्कममाणे कतिवण्णं, कतिगधं, कतिरसं, कतिफासं परिणामं[1] परिणमइ ?
गोयमा ! पंचवण्णं, दुगधं, पंचरसं, अट्ठफास परिणामं[2] परिणमइ॥

कम्मओ विभत्ति-पदं

१२०. कम्मओ णं भते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?
हता गोयमा ! कम्मओ णं [3]°जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव° परिणमइ॥

१२१ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4]॥

छट्ठो उद्देसो

चंद-सूर-गहण पदं

१२२. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—बहुजण ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[6] एवं परूवेइ—एवं खलु राहू चंद गेण्हति, एव खलु राहू चद गेण्हति॥

१२३. से कहमेय भंते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छ ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] एवं परूवेमि—एव खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव[8] महेसक्खे[9] वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी।

---

१. × (ता)।
२. × (ता)।
३. सं० पा०—तं चेव जाव परिणमइ।
४. म० १।५१।
५. म० १।४-१०।
६. म० १।४२०।
७. म० १।४२१।
८. म० ३।४।
९. महेसक्के (व); महासोक्खे (म)।

राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए[1] जडिलए खतए[2] खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे[3] कण्हसप्पे।

राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा, पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेण आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू। एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एवं दाहिणेणं उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं उत्तरपुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं चेव जाव तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिण-पुरत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं खलु राहू चंदं गेण्हति। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं[4] आवरेत्ता णं पासेण वीतीवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेत्ता णं पच्चोसक्कइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खिं सपडि-दिसिं आवरेत्ता णं चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे॥

१२४. कतिविहे णं भंते! राहू पण्णत्ते?

गोयमा! दुविहे राहू पण्णत्ते, तं जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसतिभागं

---

१. सघाडए (ब)।
२. खत्तए (अ); खतए (ख); खभए (स)।
३. अच्छभे (ब)।
४. चंदस्स लेसं (क, ब, म)।

चदलेस्सं ग्रावरेमाणे-ग्रावरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए वितियं भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग[1]। चरिमसमये चदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[2] भवइ। तमेव[3] सुक्कपक्खस्स[4] उवदसेमाणे-उवदसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढम भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भाग। चरिमसमये चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[5] भवइ। तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण 'छण्ह मासाण'[6] उक्कोसेण बायालीसाए मासाण चदस्स[7], अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स[8] ॥

ससि-ग्राइच्च-पद

१२५. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—चंदे ससी, चदे ससी ?
गोयमा ! चदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा, कताग्रो देवीग्रो, कताइं ग्रासण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य ण चदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कते सुभए पियदसणे सुरूवे) से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चदे॰ ससी ॥

१२६. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सूरे ग्रादिच्चे, सूरे आदिच्चे ?
गोयमा ! सूरादिया ण समया इ वा आवलिया इ वा जाव[10] ग्रोसप्पिणी इ वा उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेणं[11] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सूरे ग्रादिच्चे, सूरे॰ आदिच्चे ॥

चंद-सूराणं कामभोग-पदं

१२७. चदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो कति ग्रग्गमहिसीग्रो पण्णत्ताग्रो ?
जहा दसमसए जाव[12] नो चेव ण मेहुणवत्तिय। सूरस्स वि तहेव ॥

१२८. चदिम-सूरिया णं भंते ! जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरवत्तविवाहकज्जे[13] ग्रत्थगवेसणयाए सोलसवास-

---

१. 'आवरेत्ता णं चिट्ठइ' त्ति वाक्यशेषः (वृ)।
२. रत्ते य विरत्ते य (क)।
३. तामेव (क, ख, ता, ब, म)।
४. प्रतिपदादिर्विति गम्यते (वृ)।
५. रत्ते य विरत्ते य (अ, ख, ता); रत्ते य विरत्ते वा (क, ब, म, स)।
६. छम्मासाण (ता)।
७. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
८. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
९. स॰ पा॰—तेणट्ठेण जाव ससी।
१०. ठा॰ २।३८७-३८६।
११. स॰ पा॰—तेणट्ठेण जाव आदिच्चे।
१२. भ॰ १०।६०।
१३. अचिरवत्तावाहुज्जे (ता)।

विप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालकार-विभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्धं[1] अट्ठारसवंजणाकुलं भोयण भुत्ते समाणे तसि तारिसगंसि वासघरंसि [2]•अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियधयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए।

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गभीरे गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुम-चुण्ण°-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिगारागारचारुवेसाए[3] •सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणु-कूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे[4] •रसे रूवे गंधे° पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?

ओरालं समणाउसो !

तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहितो वाणमतराणं देवाणं एत्तो अणत-गुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमतराणं देवाणं कामभोगेहितो असुरिंदव-ज्जियाण भवणवासीण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिं-दवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहितो असुरकुमाराण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराणं देवाण कामभोगेहितो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त[5]-•तारारूवाणं जोतिसियाण° कामभोगेहितो चंदिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चदिम-सूरिया णं गोयमा ! जोतिसिदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

---

१. थालिपागसिद्धं (ब)।

२. सं० पा०—वण्णओ महब्बले कुमारे जाव सयणो°।

३. स० पा०—सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए।

४. सं० पा०—फरिसे जाव पचविहे।

५. पा० सं०—नक्खत्त जाव काम°।

१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता[1] •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पदं

१३०. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—केमहालए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते—पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखेज्जाओ [3]•जोयणकोडाकोडीओ°, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं ॥

१३१. एयंसि[4] णं भंते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अया-सयस्स एगं महं अया-वयं करेज्जा. से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अया-सहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा । अत्थि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे[5] भवइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे,

---

१. सं० पा०—नमंसित्ता जाव विहरइ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. सं० पा०—एवं चेव ।
४. एयंसि (ता) ।
५. अणक्कंतपुव्वे (क, स) ।

जे णं तासि अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहि वा अणोक्कंतपुव्वे, नो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगसि लोगस्स य सासय भाव, संसारस्स य अणादिभाव, जीवस्स य णिच्चभाव, कम्मबहुत्त, जम्मण-मरणबाहुल्ल च पडुच्च अत्थि[1] केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेण [2]•गोयमा ! एव वुच्चइ—एयसि ण एमहालगसि लोगसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा°, न मए वा वि ॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव[3] अणुत्तरविमाणेत्ति जाव[4] अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥

१३४. अयण्ण[5] भते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणतखुत्तो ॥

१३५. सव्वजीवा वि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-सहस्सेसु[6]•एगमेगसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१३६. अयण्णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि° ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए ॥

१३७. अयण्णं भते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि निरयावासंसि° ? सेस त चेव[7] ॥

१३८. अयण्ण भते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावाससि° ? सेस जहा रयणप्पभाए ॥

---

१. 'नत्थि' इति पद लभ्यते, किन्तु प्रस्तुतवाक्यारम्भे 'नो चेव ण' इति पाठोस्ति, तेनैतत न सङ्गच्छते। वृत्तौ सम्यक्पाठोस्ति। स एवास्माभि· स्वीकृत:।
२. सं० पा०—त चेव जाव न।
३. भ० १।२११-२५५।
४. भ० ५।२२२।
५. अय णं (अ, क, ता, म); अय ण (ख, व)।
६. स० पा०—तं चेव जाव अणंतखुत्तो।
७. भ० १२।१३४।

१३९ अयण्णं भंते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुर-कुमारावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा[1] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो। सव्वजीवा वि णं भते ! एवं चेव। एवं जाव थणियकुमारेसु। नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया॥

१४० अयण्ण भंते ! जीवे असखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा[2] ! ° असइं, अदुवा ° अणंतखुत्तो। एवं सव्वजीवा वि। एवं जाव वणस्सइकाइएसु॥

१४१ अयण्ण भते ! जीवे असखेज्जेसु बेइदियावाससयसहस्सेसु[3] एगमेगसि बेइदिया-वाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइदियत्ताए उववन्न-पुव्वे ?

हंता गोयमा[4] ! °असइ, अदुवा° अणंतखुत्तो। सव्वजीवा वि णं एवं चेव। एव जाव मणुस्सेसु, नवरं—तेइदिएसु[5] जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिदियत्ताए, पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पचिंदियतिरिक्खजोणि-यत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेइदियाणं, वाणमंतर-जोइसिय-सोह-म्मीसाणेसु[6] य जहा असुरकुमाराण॥

१४२. अयण्ण भते ! जीवे सणकुमारे कप्पे बारससु[7] विमाणावाससयसहस्सेसु एगमे-गसि वेमाणियावाससि पुढविकाइयत्ताए [8]°जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए-आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा ! असइ, अदुवा अणतखुत्तो।° एवं सव्वजीवा वि। एवं जाव आणयपाणएसु, एव आरणच्चुएसु वि॥

१४३ अयण्णं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एव चेव॥

१४४. अयण्ण भते ! जीवे पचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणसि पुढविकाइयत्ताए ?

तहेव जाव असइ, अदुवा अणतखुत्तो, नो चेव ण देवत्ताए वा देवीत्ताए वा। एवं सव्वजीवा वि॥

---

१. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
२. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
३. बेंदिया° (अ, क, ख, व, म, स)।
४. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
५. तेंदिएसु (ख, स)।
६. सोहम्मीसाणे (अ, क, ख, ता, ब, म)।
७. बारसेसु (ख), बारस (ता)।
८. स० पा०—सेस जहा असुरकुमाराणं जाव अणतखुत्तो नो चेव ण देवित्ताए।

१४५. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए[1], भाइत्ताए, भगिणित्ताए भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ।।

१४६. सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,[2] •पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१४७. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[3] ! •असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१४८. सव्वजीवा वि णं भंते ! [4]•इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१४९. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए,[5] •तलवरत्ताए, माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,° सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[6] ! •असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१५०. [7]•सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो° ।।

१५१. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए[8], भाइल्लत्ताए[9] भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[10] ! •असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१५२. [11]•सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

---

१. × (ख, म); पतित्ताए (ब, स)।
२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा हंता गो जाव अणतखुत्तो।
३. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
४. सं० पा०—एवं चेव।
५. सं० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए।
६. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
७. स० पा०—सव्वजीवाण एव चेव।
८. भियगत्ताए (ख)।
९. भाइलत्ताए (ता); भाइल्लगत्ताए (क्व०)।
१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।
११. स० पा०—एवं सव्वजीवा वि अणतखुत्तो।

भाइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

अट्ठमो उद्देसो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४ तेणं कालेण तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[3] महेसक्खे अणंतर चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा ॥
१५५. से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा ॥
१५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ?
हंता सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥
१५७. देवे णं भते ! महिड्ढीए[5] °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ॥
१५८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[6] °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवर—इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेज्जा ॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९ अह भंते ! गोनंगूलवसभे[7], कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भ० १।३३९ ।
४. भ० १।४४ ।
५. सं० पा०—एवं चेव जाव बिसरीरेसु ।
६. स० पा०—महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु ।
७. गोलंगूल° (क, ब); गोणंगल° (ख, ता) ।

निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं[1] सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१६०. अह भंते ! सीहे वग्घे, [2]°वगे, दीविए अच्छे, तरच्छे°, परस्सरे—एए ण निस्सीला [3]°निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोस सागरोवमट्ठितीयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ॥

१६१. अह भंते ! ढके कंके विलए[4] मद्दुए सिखी—एए ण निस्सीला [5]°निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ॥

१६२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

पंचविह-देव-पदं

१६३. कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा[7], भावदेवा ॥

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ?

गोयमा ! जे भविए[8] पंचिदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए[9]। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ॥

---

१. उक्कोसेण (क) ।
२. सं० पा०—जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ।
३. सं० पा०—एव चेव जाव वत्तव्व ।
४. पिलए (अ, ख, ता, स) ।
५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव वत्तव्व ।
६. भ० १।५१ ।
७. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स); 'देवाहिदेव' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
८. इह जातौ एकवचनमतो बहुवचनार्थे व्याख्येयम् (वृ) ।
९. ते यस्माद्भाविदेवभावा इति गम्यम् (वृ) ।

१६५ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नरदेवा-नरदेवा ?
गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी[1] उप्पण्णसमत्तचक्करयणप्पहाणा 'नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसरायवरसहस्साणुयातमग्गा'[2] सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिदा। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—नरदेवा-नरदेवा ॥

१६६ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—धम्मदेवा-धम्मदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो[4] रियासमिया[5] जाव[6] गुत्तबंभयारी। से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—धम्मदेवा-धम्मदेवा ॥

१६७ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—देवातिदेवा[8]-देवातिदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो[9] उप्पण्णनाण-दंसणधरा[10] •अरहा जिणा केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणया सव्वण्णू° सव्वदरिसी। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—देवातिदेवा-देवातिदेवा ॥

१६८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—भावदेवा-भावदेवा ?
गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा[12] देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति। से तेणट्ठेण[13] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—भावदेवा-भावदेवा ॥

पंचविह-देवाणं उववाय-पदं

१६९. भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो वि उववज्जंति। भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव[14] अणुत्तरोववाइय त्ति, नवरं—असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति[15] ॥

---

१. ते यस्मात् इति वाक्यशेषः (वृ)।
२. चिन्हाङ्कित पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नरदेवा।
४. ते यस्मात् इति वाक्यशेषः (वृ)।
५. इरिया° (क)।
६. भ० २।५५।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव धम्म°।
८. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स)।
९. भगवता (ख, ब, म); ते यस्मात् (वृ)।
१०. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्व°।
११. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव देवाति°।
१२. ते यस्मात् (वृ)।
१३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भाव°
१४. प० ६।
१५. उववज्जंति नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति (क, ख, ता, ब, म)।

१७०. नरदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहितो—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

१७१. जइ नेरइएहिंतो उववज्जति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति जाव ग्रहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति, नो सक्करप्पभापुढविनेरइएहितो जाव नो ग्रहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ॥

१७२ जइ देवेहितो उववज्जति कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति, वाणमतरदेवेहितो, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीए भेदेण जाव[1] सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१७३. धम्मदेवा णं भते ! कम्रोहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति—पुच्छा।
एवं वक्कतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवरं—तम-ग्रहेसत्तम-तेउ-वाउ-ग्रसखेज्जवासाउयग्रकम्मभूमग-ग्रतरदीवगवज्जेसु ॥

१७४. देवातिदेवा णं भते ! कम्रोहितो उववज्जति – कि नेरइएहितो उववज्जति—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो, देवेहितो वि उववज्जति ॥

१७५. जइ नेरइएहितो ? एव तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाग्रो खोडेयव्वाग्रो ॥

१७६. जइ देवेहितो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ॥

१७७. भावदेवा णं भंते ! कम्रोहितो उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ॥

पंचविह-देवाणं ठिइ-पद

१७८. भवियदव्वदेवाणं भते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं ग्रतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिण्णि पलिग्रोवमाइं ॥

१७९. नरदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं सत्त वाससयाइ, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइ ॥

१८०. धम्मदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं ग्रतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

---

१. प० ६।

१८१. देवातिदेवाणं[1]—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरि वासाइं, उक्कोसेण चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ॥
१८२ भावदेवाणं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

पंचविह-देवाण विउव्वणा-पदं

१८३. भवियदव्वदेवा णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए ?
गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए। एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा[2] जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति। एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ॥
१८४. देवातिदेवाणं[3]—पुच्छा।
गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्वंति[4] वा, विउव्विस्संति वा।
भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥

पंचविह-देवाण उव्वट्टण-पदं

१८५ भवियदव्वदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति —किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति।
'जइ देवेसु उववज्जंति° ?'[5] सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥
१८६ नेरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, नो देवेसु उववज्जंति।
जइ नेरइएसु उववज्जंति° ? सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ॥
१८७. धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति ॥

---

१. देवाधि° (अ, क, व, म, स)।
२. पच्छा अप्पणो (अ, म, स)।
३. देवाधि° (अ, क, ख, ब, म, स)।
४. विउव्विंति (व, म, स)।
५ × (व, म)।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जंति, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति। सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]•वेमाणियदेवेसु° उववज्जति, अत्थेगतिया सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

१८९. देवातिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! सिज्झति जाव[2] सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

१९०. भावदेवा णं भंते ! अणतर उव्वट्टित्ता—पुच्छा।
जहा[3] वक्कंतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पद

१९१. भवियदव्वदेवे णं भते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिर[4] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एव जच्चेव[5] ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवरं—धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

पंचविह-देवाणं अंतर-पद

१९२. भवियदव्वदेवस्स णं भते ! केवतिय काल अतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो ॥

१९३. नरदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेग सागरोवमं, उक्कोसेणं अणतं काल—अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूण ॥

१९४. धम्मदेवस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्त, उक्कोसेणं अणंत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणं ॥

१९५. देवातिदेवाण—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

१९६. भावदेवस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ॥

---

१. सं० पा०—°अणुत्तरोववाइय जाव उव°
२. भ० १।४४।
३. प० ६।
४ केवचिर (अ, क, ख, म)।
५. जहेव (व, स)।

पचविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१९७. एएसि ण भते ! भवियदव्वदेवाण, नरदेवाण[1], •धम्मदेवाणं, देवातिदेवाणं°, भावदेवाण य कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसे-साहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा सखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असखेज्जगुणा, भावदेवा असखेज्जगुणा ।।

१९८. एएसि णं भते ! भावदेवाण भवणवासीण, वाणमंतराण, जोइसियाणं, वेमा-णियाण[3]—सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाण, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा सखेज्जगुणा,[5] •सहस्सारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असखेज्जगुणा, लतए कप्पे देवा असं-खेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, माहिंदे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असखेज्जगुणा, वाणमतरा देवा असखेज्जगुणा°, जोतिसिया भावदेवा असखेज्जगुणा ।।

१९९. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[6] ।।

दसमो उद्देसो

अट्ठविह-आय-पदं

२०० कतिविहा ण भते ! आया[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तं जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, नाणाया, दसणाया, चरित्ताया, वीरियाया ।।

२०१. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स कसायाया ? जस्स कसायाया तस्स दवियाया ?

---

१. सं० पा०—नरदेवाण जाव भावदेवाणं ।
२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
३. × (क, म); देवाणं (ब) ।
४. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
५ स० पा०—एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया ।
६. भ० १।५१ ।
७. आता (अ, ख, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ।।

२०२. जस्स ण भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [1]•जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ।।

२०३. जस्स ण भंते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एव सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।
गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियम अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दसणाया नियम अत्थि । जस्स वि दसणाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियम अत्थि । [2]•जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ।।

२०४. जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।
गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियम अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एव उवओगायाए वि सम कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्पर दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ[3] । एव जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं सम भाणियव्वा[4] । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियम अत्थि, जस्स पुण दसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियम अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियम अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ।।

---

१. स० पा०—एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।
२. सं० पा०—एव वीरियायाए वि सम ।
३. भणितव्वाओ (ख, ता) ।
४. नेयव्वा (ब) ।

अट्ठविह-आयाणं अप्पाबहुत्त-पद

२०५. एयासि ण भते ! दवियायाण, कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणतगुणाओ, कसायायाओ अणतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उव-ओगदविय-दसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥

नाणदंसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पदं

२०६. आया भते ! नाणे ? 'अण्णे नाणे'[2] ?
गोयमा आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, नाणे पुण नियम आया ॥

२०७ आया भते ! नेरइयाण नाणे ? अण्णे नेरइयाण नाणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण सिय नाणे, सिय अण्णाणे। नाणे पुण से नियम आया। एव जाव थणियकुमाराण ॥

२०८. आया भते ! पुढविकाइयाण अण्णाणे ? अण्णे पुढविकाइयाण अण्णाणे ?
गोयमा ! आया पुढविकाइयाण नियम अण्णाणे, अण्णाणे वि नियमं आया। एव जाव वणस्सइकाइयाण। वेइंदिय-तेइंदियाण जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाण ॥

२०९ आया भते ! दसणे ? अण्णे दसणे ?
गोयमा ! आया नियम दसणे, दसणे वि नियम आया ॥

२१० आया भते ! नेरइयाण दसणे ? अण्णे नेरइयाण दसणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण नियमं दसणे, दसणे वि से नियम आया। एव जाव वेमाणियाण निरतर दंडओ ॥

सियवाद-पदं

२११. आया भते ! रयणप्पभा पुढवी ? अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?
गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२१२ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे[3] अवत्तव्वं—रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेणं [4]•गोयमा !

---

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।
२. अण्णाणे (म, स)।
३. आतिट्ठा (ता, व, म)।
४. सं० पा०—तं चेव जाव नोआयाति।

एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१३. आया भते ! सक्करप्पभा पुढवी ?
जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१४. आया भते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया[1], °सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१५. से केणट्ठेणं भते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव आयाति य नोआयाति य । एवं जाव अच्चुए कप्पे ॥

२१६. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?
एवं जहा रयणप्पभा तहेव । एवं अणुत्तरविमाणा वि । एवं ईसिपब्भारा वि ॥

२१७. आया भते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?
एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ॥

२१८. आया भंते ! दुपएसिए खधे ? अण्णे दुपएसिए खंधे ?
गोयमा ! दुपएसिए खधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं त चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खधे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२०. आया भंते ! तिपएसिए खंधे ? अण्णे तिपएसिए खधे ?

---

१. सं० पा०—नोआया जाव नोआयाति ।

गोयमा ! तिपसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४ सिय आया य नोआया य ५ सिय आया य नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य नोआया य ७ सिय आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ८. सिय आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ[1] य नोआयाओ य ९. सिय आयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १०. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. सिय नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ सिय नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १३ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२१. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—तिपएसिए खधे सिय आया—एव चेव उच्चारेयव्व जाव सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ? गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खधे आया य नोआया य ५ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खधे आया य नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खधे आयाओ य नोआया य ७ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य ९. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे आयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य[2] १० देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १३ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खधे आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तिपएसिए खधे सिय आया त चेव जाव नोआयाति य ॥

---

१. आयाइ (ता); प्राय. एकवचनम्।

२. य एए तिण्णि भगा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

२२२. आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे ? अण्णे [1]•चउप्पएसिए खंधे ?०
गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. सिय नोआया य अवत्तव्वं[2] १६. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं —आयाति य नोआयाति य ॥

२२३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १२-१५. असब्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १६. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं—निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ॥

२२४. आया भंते ! पंचपएसिए खंधे ? अण्णे पंचपएसिए खंधे ?
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं —आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. नोआया य अवत्तव्वेण य[3] १६. [4]•सिय आया य नोआया

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
३. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
४. स० पा०—तियगसंजोगे एक्को न पडइ;

य अवत्तव्वं १७. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं १९. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं २०. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं २१. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वाइं २२. सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं °॥

२२५. से केणट्ठेणं भंते ! [1]°एवं वुच्चइ—पंचपएसिए खंधे सिय आया जाव सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं ?°

गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे—एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियगसंजोगे[2] एक्को न पडइ।

छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए॥

२२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ॥

एकसंयोगजा: त्रयो भङ्गाः, द्विसंयोगजाः द्वादश भङ्गा, त्रिकसंयोगजा सप्त भङ्गाः. सर्वे मीलिता द्वाविंशतिर्भङ्गाः पञ्चप्रदेशिकस्कन्धे भवन्ति। त्रिकसंयोगे अष्टमो भङ्गः 'सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं' इतिरूपः पंचप्रदेशिकस्कन्धत्वात् न सम्भवति। अतः उक्तं 'तियगसंजोगे एक्को न पडइ'।

1. स० पा०—तं चेव पडिउच्चारेयव्वं।
2. तियगसजोगे (स); तिगसजोगे (व, म)।
3. भ० १।५१।

तेरसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पुढवी २. देव ३. मणंतर, ४. पुढवी ५. आहारमेव ६. उववाए।
७. भासा ८,९. कम्मणगारे, केयाघडिया[1] १०. समुग्घाए ॥ १ ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ॥

३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु १. एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ? २. केवतिया काउलेस्सा उववज्जंति ? ३. केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? ४. केवतिया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ? ५. केवतिया सण्णी उववज्जंति ? ६ केवतिया असण्णी उववज्जंति ? ७. केवतिया भवसिद्धिया[3] उववज्जंति ? ८. केवतिया अभवसिद्धिया उववज्जंति ? ९. केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ? १०. केवतिया सुयनाणी उववज्जंति ? ११. केवतिया ओहिनाणी उववज्जंति ? १२. केवतिया मइअण्णाणी उववज्जंति ? १३. केवतिया सुयअण्णाणी उवव-ज्जंति ? १४. केवतिया विब्भंगनाणी उववज्जंति ? १५. केवतिया चक्खुदंसणी

---

१. केयाहडिया (अ, क, ख, ब, म)।
२. भ० १।४-१०।
३. भवसिद्धीया (अ, ब, म, स)।

उववज्जंति ? १६. केवतिया अचक्खुदसणी उववज्जंति ? १७. केवतिया ओहिदंसणी उववज्जति ? १८ केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जति ? १६. केवतिया भयसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २०. केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २१ केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २२. केवतिया इत्थिवेदगा उववज्जति ? २३. केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जति ? २४ केवतिया नपुंसगवेदगा उववज्जति ? २५-२८ केवतिया कोहकसाई उववज्जति जाव केवतिया लोभकसाई उववज्जति ? २६-३३. केवतिया सोइंदियोवउत्ता उववज्जति जाव केवतिया फासिंदियोवउत्ता उववज्जति ? ३४. केवतिया नोइंदियोवउत्ता उववज्जति ? ३५. केवतिया मणजोगी उववज्जति ? ३६. केवतिया वइजोगी उववज्जति ? ३७. केवतिया कायजोगी उववज्जति ? ३८. केवतिया सागारोवउत्ता उववज्जति ? ३६ केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा नेरइया उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जति । एवं सुक्कपक्खिया वि, 'एव सण्णी, एव असण्णी'[1], एव भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी । चक्खुदसणी न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदसणी उववज्जति एवं ओहिदसणी वि । आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि । इत्थीवेयगा न उववज्जति, पुरिसवेयगा न उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा नपुसगवेयगा[2] उववज्जति । एव कोहकसाई जाव लोभकसाई । सोइंदियोवउत्ता न उववज्जति, एव जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा नोइंदिओवउत्ता उववज्जति । मणजोगी न उववज्जति, एव वइजोगी वि । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा कायजोगी उववज्जति । एव सागारोवउत्ता वि, एव अणागारोवउत्ता[3] वि ॥

---

१. एव सण्णी वि असण्णी वि (अ), एव सण्णी असण्णी (क, ता); एवं सण्णी एव असण्णी वि (म) ।

२. नपुंसगवेदा (क, ब, म); नपुंसगा (ख, ता) ।

३. अणगारोवउत्ता (अ, क, ख, ता, म) ।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पदं

४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु[1] एगसमएणं केवतिया नेरइया उव्वट्टंति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति। जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति। एवं जाव सण्णी। असण्णी न उव्वट्टति। जह-ण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति। एवं जाव सुयअण्णाणी। विभंगनाणी न उव्वट्टंति, चक्खुदसणी न उव्वट्टति। जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्टंति। एवं जाव लोभकसाई। सोइंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति। जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति। मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि। जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति। एवं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं

५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? केवतिया काउलेस्सा जाव केव-तिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता ? केव-तिया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतराहारा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरा-हारा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया चरिमा पण्णत्ता ? केवतिया अचरिमा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता। असण्णी सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता। संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता। एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता। इत्थि-वेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेदगा पण्णत्ता। एवं कोह-

---

१. निरएसु (ता)।

कसाई वि, माणकसाई जहा असण्णी, एवं जाव लोभकसाई। संखेज्जा सोइंदियो-वउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता। नोइंदियोवउत्ता जहा असण्णी। संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता। एवं जाव अणागारोवउत्ता। अणंतरोववण्णगा सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहा असण्णी। संखेज्जा परंपरोववण्णगा पण्णत्ता। एवं जहा अणंतरोववण्णगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा। परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववण्णगा॥

६. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति?

गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असं-खेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति। एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[1] तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता[2], नवरं—संखेज्ज-वित्थडेसु असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टा-वेयव्वा, सेसं तं चेव॥

७. सक्करप्पभाए णं भंते! पुढवीए केवतिया निरयावास[3]॰सयसहस्सा पण्णत्ता॰? गोयमा! पणुवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा? असंखेज्जवित्थडा?
एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं—असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेसं तं चेव॥

८. वालुयप्पभाए णं—पुच्छा।
गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, नाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा[4] पढमसए॥

९. पंकप्पभाए णं—पुच्छा।
गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं —ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव॥

१०. धूमप्पभाए णं—पुच्छा।

---

१. गमा (ता)।
२. पण्णत्ता नाणत्तं लेसासु लेसाओ जहा पढमसए (अ, क, त, ब, म, स); रत्न-प्रभायां एकैव कापोतीलेश्या भवति, तेन नासौ पाठः सगच्छते।
३. स॰ पा॰—पुच्छा।
४. भ॰ १।२४४।

गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए ॥

११. तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास[1]•सयसहस्सा पण्णत्ता◦ ?
गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । सेसं जहा पंकप्पभाए ॥

१२ अहेसत्तमाए ण भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरा[2] •महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए◦, अपइट्ठाणे ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ॥

१३. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु[3] महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ?
एवं जहा पंकप्पभाए, नवरं—तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्तएसु[4] तहेव अत्थि । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा ।

१४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी वि नेरइया उवव-ज्जंति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ॥

१५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ?
एवं चेव ॥

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? मिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ?
गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि ॥

१७. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव[5] संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया—पुच्छा ।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. सं० पा०—अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ।
३. महतिमहा जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. पण्णत्ताएसु (अ, ता, म, स); पण्णत्तेसु (क, ब) ।
५. भ० १३।१२ ।

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति । एवं उव्वट्टंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा ।।

१८ से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?

हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ।।

१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ?

गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु-संकिलिस्समाणेसु कण्हलेसं परिणमइ, परिणमित्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जंति । से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ।।

२०. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?

हंता गोयमा ! जाव उववज्जंति ।।

२१ से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?

गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति ।।

२२. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?

एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ।।

२३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

बीओ उद्देसो

२४ कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया ।।

२५ भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।५१ ।

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा—एव भेओ[1] जहा बितियसए देवुद्देसए जाव[2] अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ॥

२६. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ॥

२७. चोयट्ठीए[4] ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जति जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव[5] वागरण, नवर—दोहिं वेदेहिं उववज्जति, नपुसगवेयगा न उववज्जति, सेसं तं चेव । उव्वट्टतगा वि तहेव, नवरं—असण्णी उव्वट्टंति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेस त चेव । पण्णत्तएसु[6] तहेव, नवर—सखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एव पुरिसवेदगा वि, नपुसगवेदगा नत्थि । कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा पण्णत्ता । एव माणकसाई मायकसाई । सखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेस तं चेव । तिसु वि गमएसु[7] चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा जाव[8] असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥

२८. केवतिया णं भते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एव जाव थणियकुमारा, नवरं—जत्थ जत्तिया भवणा[9] ॥

२९. केवतिया णं भते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा, नो असखेज्जवित्थडा ॥

३०. संखेज्जेसु णं भते ! वाणमतरावाससयसहस्सेसु एगसमएण केवतिया वाणमतरा उववज्जति ?
एवं जहा असुरकुमाराणं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[10] तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिण्णि गमगा ॥

---

१. × (ता, ब) ।
२. भ० २।११७; प० २ ।
३. चोसट्ठि (स) ।
४. चोसट्ठीए (स) ।
५. भ० १३।३ ।
६ पण्णत्ताएसु (अ, क, व, म, स) ।
७. गमएसु सखेज्जेसु (अ, स) ।
८. भ० १३।५ ।
९. भ० १।२१३ ।
१०. गमा (क, ख, ता, ब, म) ।

३१. केवतिया ण भते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा० ?
एव जहा वाणमतराण तहा जोइसियाण वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—एगा तेउलेस्सा । उववज्जतेसु पण्णत्तेसु य असण्णी नत्थि, सेस त चेव ॥

३२ सोहम्मे ण भते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ॥

३३. सोहम्मे ण भते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएण केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जति ? केवतिया तेउलेस्सा उववज्जति ?
एव जहा जोइसियाण तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—तिसु वि सखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदसणी य चयावेयव्वा, सेसं तं चेव । असखेज्जवित्थडेसु एव चेव तिण्णि गमगा, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा । ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा चयति, सेस तं चेव । एव जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा । सणकुमारे एव चेव, नवर—इत्थीवेयगा उववज्जतेसु[2] पण्णत्तेसु य न भण्णति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव । एव जाव सहस्सारे, नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव ॥

३४ आणय-पाणएसु ण भते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता ।
तेण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि । एवं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे, असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु चयतेसु य एव चेव सखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असखेज्जा, नवर—नोइदियोवउत्ता अणतरोववण्णगा अणतरोवगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असखेज्जा भाणियव्वा । 'आरण-अच्चुएसु'[3] एव चेव जहा आणय-पाणएसु, नाणत्त विमाणेसु । एव गेवेज्जगा वि ॥

---

१. जोतिसियावाससहस्सा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. न उववज्जति (स) ।
३. आरणच्चुएसु (अ, क, ख, ब, म, स) ।

३५. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ।
'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा'[1] ! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य ।।

३६. पंचसु णं भते ! अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जति—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु सखेज्जवित्थडेसु, नवर—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जति, न चयति, न वि पण्णत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव सखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेस त चेव । असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णति, नवरं—अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

३७. चोयट्ठीए णं भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमा-रावासेसु किं सम्मदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ? मिच्छदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ?
एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया[2] तहा भाणियव्वा । एव अस-खेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति, सेसं तं चेव ।।

३८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति ?
हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए[3] तहेव भाणियव्व । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं, जहा नीललेस्साए एव जाव पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवरं—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु-विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सा परिणमति, परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ।।

३९. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[4] ।।

---

१. × (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. भ० १३।१४ ।
३. भ० १३।१८-२२ ।
४. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४०. नेरइया ण भंते ! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एव परियारणापद[1] निरवसेस भाणियव्व ॥

४१ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नरय-नेरइयाणं अप्पमहंत-पद

४२. कति[3] ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

४३. अहेसत्तमाए ण भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया[4] °महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए,° अपइट्ठाणे । ते णं नरगा छट्ठीए[5] तमाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा[6] चेव, महाविच्छिण्णतरा[7] चेव, महोगासतरा[8] चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो[9] तहा महप्पवेसणतरा[10] चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा[11] चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,

---

१. प० ३४ ।

२ भ० १।५१ ।

३ इह च द्वारगाथे क्वचिद् दृश्येते, तद्यथा—

१. नेरइय २. फास ३ पणिहि,
४. निरयंते चेव ५. लोयमज्झे य ।
६. दिसिविदिसाण य पवहा,
७. पवत्तणं अत्थिकाएहिं ॥१॥
८. अत्थी पएसफुसणा,
९ ओगाहणया य जीवमोगाढा ।
१०. अत्थि पएसनिसीयण,
११. वहुसमे लोयसंठाणे ॥२॥ (वृ) ।

४. स० पा०—महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे ।

५. छठाए (अ, क, ख, ता, म) ।

६. महतरा (क, ब, म) ।

७. महाविच्छिण्णतरा (अ, स) ।

८. महावासतरा (अ, क); महोवासतरा (ख, ता), महावासतरा (म, स) ।

९. 'नो' शब्द. उत्तरपदद्वयेपि सम्बन्धनीयः (वृ) ।

१०. महापवेसणतरा (म, स) ।

११. अणोयणतरा (अ, ख, ता, म, स, वृपा) ।

महासवतरा[1] चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा[2] चेव, अप्पजुतियतरा[3] चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए एगे पचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते। ते ण नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहितो नो तहा महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहितो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव; नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'[4] चेव, अप्पजुइयतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए नरगा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव; अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव, नो तहा महड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एव जहा छट्ठीए भणिया एव सत्त वि पुढवीओ परोप्पर भण्णति जाव रयणप्पभति जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव॥

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४४. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भते! केरिसयं पुढविफास पच्चणुब्भवमाणा विहरति?

गोयमा! अणिट्ठ जाव[5] अमणाम। एव जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया। एव आउफासं, एव जाव वणस्सइफास॥

---

१. महस्सवतरा (क, ता, म)।
२. अप्पिड्ढतरा (ता, ब)।
३. अप्पज्जुत्तितरा (अ, ता, ब)।
४. तहप्पिड्ढियतरा (अ, क, ख, स); तहिप्पिड्ढयतरा (ता)।
५. भ० १।३५७।

नरयाणं बाहल्ल-खुड्डत्त-पदं

४५. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ?
[1]•हंता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ।
दोच्चा णं भंते ! पुढवी तच्चं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं—पुच्छा ।
हंता गोयमा ! दोच्चा णं पुढवी जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु । एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तमं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु° ॥

निरयपरिसामंत-पदं

४६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु[2] जे पुढविक्काइया [3]•जाव वणस्सइकाइया तेणं जीवा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु तं चेव जाव महावेदणतरा चेव । एवं° जाव अहेसत्तमा ॥

लोगमज्झ-पदं

४७. कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहेत्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

४८. कहि णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहेत्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

४९. कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं[4] बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

५०. कहि णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए

---

१. सं० पा०—एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए ।
२. निरयापरिसमंतेसु (ता) ।
३. सं० पा०—एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव ।
४. हत्थि (क); हव्वि (ख, ता); हिट्ठि (ब); हट्ठि (म) ।

पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[1], एत्थ णं तिरियलोगमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, त जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. [2]•दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९ उड्ढा १० अहो ॥

५१ एयासि ण भंते ! दसण्हं दिसाण कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—
इंदा अग्गेयी जमा, य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा° ॥१॥

५२. इंदा णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपदेसादीया, कतिपदेसुत्तरा, कतिपदेसिया, किंपज्जवसिया, किंसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! इंदा ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, दुपएसादीया, दुपएसुत्तरा, लोगं पडुच्च[3] असंखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणंतपएसिया, लोग पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, लोग पडुच्च मुरवसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसठिया पण्णत्ता ॥

५३. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! अग्गेयी ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, एगपएसादीया, एगपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च असंखेज्जपएसिया अलोग, पडुच्च अणंतपए-सिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, छिण्णमुत्तावलिसंठिया पण्णत्ता । जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी । एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि[4], जहा अग्गेई तहा चत्तारि विदिसाओ ॥

५४. विमला णं भंते ! दिसा किमादीया, [5]•किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता° ?
गोयमा ! विमला ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसादीया, दुपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च [6]•असंखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया°, रुयगसंठिया पण्णत्ता । एवं तमा वि ॥

---

१. खुड्डाग° (ता, ब) ।
२. सं० पा०—एव जहा दसमसए जाव नाम-धेज्जे त्ति ।
३. पडुच्चा (ता) सर्वत्र ।
४. चत्तारि वि (क, ख, ता, ब, म) ।
५. स० पा०—पुच्छा जहा अग्गेयीए ।
६. सं० पा०—सेस जहा अग्गेयीए नवर रुयग-संठिया ।

लोय-पदं

५५. किमियं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! पंचत्थिकाया, एस णं एवतिए लोएत्ति पवुच्चइ, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए[1] •आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए°, पोग्गलत्थिकाए ॥

५६. धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण-गमण-भासुम्मेस[2]-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावण्णे तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति । गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए ॥

५७. अधम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! अधम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण-निसीयण-तुयट्टण[3], मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावण्णे तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अधम्मत्थिकाए पवत्तंति । ठाणलक्खणे णं अधम्मत्थिकाए ॥

५८. आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं 'अजीवाण य'[4] किं पवत्तति ?
गोयमा ! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण 'य अजीवदव्वाण य'[5] भायणभूए—

एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे सयं पि माएज्जा ।
कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥१॥

अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ॥

५९. जीवत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं [6]•अणंताणं ओहिनाणपज्जवाणं, अणंताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणंताणं केवलनाणपज्जवाणं, अणंताणं मइअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं विभंगनाणपज्जवाणं, अणंताणं चक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाणं, अणंताणं केवलदंसणपज्जवाणं° उवयोगं गच्छति । उवयोगलक्खणे[7] णं जीवे ॥

६०. पोग्गलत्थिकाए णं [8]•भंते ! जीवाणं किं पवत्तति° ?

---

१. अहम्म° (अ, क, म, स); सं० पा०—अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए ।
२. भासुमोस (अ, स), भासुमेस (ख) ।
३. प्रथमाबहुवचनलोपदर्शनात् (वृ) ।
४. × (ख, व, म) ।
५. × (ख) ।
६. सं० पा०—एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवयोगं ।
७. उवओग° (क, ता); उवजोग° (व) ।
८. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएण जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय-'आहारा-तेया कम्मा'[1]-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय - जिब्भिदिय - फासिदिय-मणजोग-वइजोग-काय-जोग-आणापाणूण च गहणं पवत्तति । गहणलक्खणे ण पोग्गलत्थिकाए ॥

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१. एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहण्णपदे[2] चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं ॥

६२. एगे भंते ! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

६३. एगे भंते ! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसपदे सत्तहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? छहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं । एवं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं वि, अद्धासमएहिं वि ॥

६४. एगे भंते ! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकाय[3]•पदेसेहिं पुट्ठे ?°
जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकाय[4]•पदेसेहिं पुट्ठे ?° सत्तहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । सेसं जहा[5] धम्मत्थिकायस्स ॥

६५. एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? एवं जहेव[6] जीवत्थिकायस्स ॥

६६. दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ?
गोयमा ! जहण्णपदे छहिं, उक्कोसपदे बारसहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? बारसहिं । सेसं जहा[7] धम्मत्थिकायस्स ॥

---

१. आहारए तेयकम्मए (ख) ।
२. गोयमा ! जहण्णपदे (स) सर्वत्र ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. भ० १३।६१ ।
६. भ० १३।६४ ।
७. भ० १३।६१ ।

६७ तिण्णि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे अट्ठहि, उक्कोसपदे सत्तरसहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? सत्तरसहि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एव एएण गमेण भाणियव्वा[1] जाव दस, नवर—जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपदे पच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे दसहि, उक्कोसपदे बावीसाए। पच पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वारसहि उक्कोसपदे सत्तावीसाए। छ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे चोद्दसहि, उक्कोसपदे वत्तीसाए। सत्त पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे सोलसहिं, उक्कोसपदे सत्ततीसाए। अट्ठ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे अट्ठारसहि, उक्कोसपदे बायालीसाए। नव पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए। दस पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बावीसाए, उक्कोसपदे बावन्नाए। आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसग भाणियव्व ॥

६८. सखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव सखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव सखेज्जएणं पचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? एव चेव। केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहि ? तेणेव सखेज्जएण पंचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहिं। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि? अणतेहिं। केवतिएहिं अद्धासमएहिं ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे[2], °जइ पुट्ठे नियम° अणतेहि ॥

६९ असखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव असखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव असखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण। सेस जहा सखेज्जाण जाव नियम अणतेहि ॥

७०. अणता भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? एव जहा असंखेज्जा तहा अणता वि निरवसेस ॥

७१. एगे भते ! अद्धासमए केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सत्तहिं। केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे? एव चेव, एव आगासत्थिकाएहि वि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणतेहि, एव जाव अद्धासमएहि ॥

७२ धम्मत्थिकाए ण भते ! केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? 'नत्थि एक्केण'[3] वि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? असंखेज्जेहि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? असखेज्जेहि। केवतिएहि जीवत्थिकाय-

---

१. भाणियव्व (म, स)।

२ स० पा०—पुट्ठे जाव अणतेहिं।

३. नत्थिक्केण (अ, ख, ता); नत्थि इक्केण (क)।

पदेसेहिं ? अणतेहिं। 'केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं ? अणंतेहिं। केवतिएहिं अद्धासमएहिं ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहिं'[1] ॥

७३. अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
असखेज्जेहिं। केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं ? नत्थि एक्केण वि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एव एएणं गमएण सव्वे[2] वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा; परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असखेज्जेहिं भाणियव्व, पच्छिल्लएसु तिसु[3] अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि ॥

धम्मत्थिकायादीणं ओगाढ-पदं

७४. जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि। केवतिया अधम्मत्थिकायपदेशा ओगाढा ? एक्को। केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ओगाढा? अणता। केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणंता। केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता ॥

७५. जत्थ ण भंते ! एगे अधम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
एक्को। केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? 'नत्थि एक्को'[4] वि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७६. जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को। एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि। केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता। एवं जाव अद्धासमया ॥

७७. जत्थ णं भते ! एगे जीवत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
एक्को, एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि, एवं आगासत्थिकायपदेसा वि। केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७८. जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?

---

१. एवं पोग्गलत्थि अद्धासमएहिं य (ख, ता)।
२. सव्वेसिण (क); सव्वेण (ता, ब, म)।
३. × (ता)।
४. नत्थेक्को (ता); नत्थेक्के (व, स)।

एवं जहा जीवत्थिकायपदेसे तहेव निरवसेस ।।

७९. जत्थ ण भते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को सिय दोण्णि, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

८०. जत्थ णं भते ! तिण्णि पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्म-त्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि, एव अधम्मत्थिकायस्स वि, एव आगा-सत्थिकायस्स वि । सेस जहेव दोण्ह, एव एक्केक्को वड्ढियव्वो पदेसो आइल्ल-एहिं तिहि अत्थिकाएहि, सेसेहि जहेव दोण्ह जाव दसण्ह सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस । सखेज्जाण सिय एक्को, सिय दोण्णि जाव सिय दस, सिय सखेज्जा । असखेज्जाण सिय एक्को जाव सिय सखेज्जा, सिय असंखेज्जा । जहा असखेज्जा एव अणता वि ।।

८१. जत्थ णं भते! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकाय-पदेसा? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८२ जत्थ ण भते! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८३ जत्थ ण भते ! अधम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
असखेज्जा। केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एव सव्वे—सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वो, परट्ठाणे आदिल्लगा तिण्णि असखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिण्णि अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्को वि ।।

८४. जत्थ ण भते ! एगे पुढविक्काइए ओगाढे तत्थ ण केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असंखेज्जा । केवतिया तेउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा। केवतिया वाउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता ।

८५ जत्थ ण भते! एगे आउक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा? असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । एव जहेव

पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता ॥

८६. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुणत्थ[2] जीवा ओगाढा ॥

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं धम्मत्थि[3]•काय-अधम्मत्थिकाय°-आगासत्थिकायंसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा[4] •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा अणंता पुणत्थ जीवा° ओगाढा ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा [5]•णिवाया णिवायगंभीरा । अह णं केई पुरिसे पदीवसहस्सं गहाय कूडागारसालाए अंतो-अंतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं° दुवारवयणाइं पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं[6] पलीवेज्जा । से नूणं गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्णसंबद्धाओ अण्णमण्णपुट्ठाओ अण्णमण्णसंबद्धपुट्ठाओ[7] अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
'हंता चिट्ठंति'[8] ।
चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?
भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणंता पुणत्थ[9] जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अणंता पुणत्थ जीवा ओगाढा ॥

लोय-पदं

८८. कहि णं भंते ! लोए बहुसमे, कहि णं भंते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[10], एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ॥

---

१. एतेसि (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. पुण तत्थ (अ, ख, म, स); पुणेत्थ (क) ।
३. सं० पा०—धम्मत्थि जाव आगासत्थिकायंसि ।
४. सं० पा०—वा जाव ओगाढा ।
५. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं ।
६. दीव° (अ) ।
७. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. × (ब, म) ।
९. पुण तत्थ (अ, ख, व, म, स) ।
१०. खुड्डाग° (व) ।

८९. कहि ण भते ! विग्गहविग्गहिए[1] लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! विग्गहकडए, एत्थ ण विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ।।

९०. किसठिए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठियसठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[2], मज्झे [3]•सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइंगाकारसठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाण° अंत करेति ।।

९१. एयस्स ण भते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए ।।

९२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ।।

पंचमो उद्देसो

आहार-पद

९३ नेरइया ण भते ! कि सचित्ताहारा ? अचित्ताहारा ? मीसाहारा ?
गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा। एव असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो[6] ।।

९४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ।।

---

१. विग्गहिए (अ)।
२. वित्थिण्णे (अ, व, म)।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अत।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।
६. प० २८।१।
७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

६५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति। एवं असुरकुमारा वि। एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव[2] संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति॥

चमरचंच-आवास-पदं

६६. कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[3] चमरचंचे[4] नामं आवासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे—एवं जहा बितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा[5]। तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमे णं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ 'पणतीसं च सयसहस्साइं'[6] पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दं तिरियं वीइवइत्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते—चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं। से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव[7] चत्तारि पासायपंतीओ।

---

१. भ० १।४-१०।
२. भ० ९।८०-८५।
३. असुररण्णो (अ, ता, म, स)।
४. चमरचचा (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. भ० २।११८-१२१; नेयव्वा, नवरं—इमं नाणत्तं जाव तिगिच्छकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स, अण्णेसिं च बहूणं सेसं तं चेव जाव तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं (अ, क, ख, ता, व, म स); अस्मिन् द्वितीयशतकस्य सभाख्योद्देशकस्य समर्पणमस्ति। एतत्समर्पणानुसारेण द्वितीयशतकस्य, 'जंबुद्दीवप्पमाणा' एतावत्पर्यन्तं पाठोत्र समायोजनार्हः, किन्तु 'नवरं इमं नाणत्तं' अस्याभिप्रायो नावगम्यते। 'नेयव्वा' अतः परवर्तिपाठो नावश्यकः प्रतिभाति, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः।
६. तं चेव जाव (अ, क, ख, ता, व)।
७. भ० २।१२१।

९७ चमरे णं भते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९८ से केण खाइ अट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—चमरचचे आवासे, चमरचचे आवासे ? गोयमा ! से जहानामए—इह मणुस्सलोगसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणिय-लेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारावारियलेणाइ[1] वा, तत्थ ण बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयति सयति [2]•चिट्ठति निसीयति तुयट्टति हसंति रमति ललति कीलति कित्तति मोहेति पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताणं सुभाण कडाण कम्माणं कल्लाणाण° कल्लाणफलवित्तिविसेस पच्चणुभवमाणा विहरति, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेति । एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचे आवासे केवल किड्डा-रतिपत्तिय, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेति । से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—चमरचचे आवासे, चमर-चचे° आवासे ॥

९९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

१००. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुण-सिलाओ[5] •चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार° विहरइ ॥

उद्दायणकहा-पदं

१०१. तेण कालेण तेणं समएण चपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[6] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[7] । तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[8] •गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण° विहरमाणे जेणेव चपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

१०२. तेण कालेण तेण समएण सिंधूसोवीरेसु[10] जणवएसु वीतीभए[11] नामं नगरे होत्था —वण्णओ[12] । तस्स ण वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए,

---

१. वारधारिय° (अ, क, म), धारवारिय° (ख, व), धारिवारिय° (स) ।
२. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण° ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव आवासे ।
४. भ० १।५१ ।
५. स० पा०—गुणसिलाओ जाव विहरइ ।
६. ओ० सू० १ ।
७. ओ० सू० २-१३ ।
८. सं० पा०—चरमाणे जाव विहरमाणे ।
९. स० पा०—उवागच्छित्ता जाव विहरइ ।
१०. सिंधु° (स) ।
११. वीभवे (ता), 'विदर्भे' ति केचित् (वृ) ।
१२. ओ० सू० १ ।

एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे—वण्णओ[1]। तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे[2] नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[3]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पउमावती नाम देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[4]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था—वण्णओ जाव[5] विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी[6] नाम कुमारे होत्था—सुकुमाल[7]•पाणिपाए अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजायसव्वंग-सुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे पडिरूवे। से णं अभीयी कुमारे जुवराया वि होत्था—उद्दायणस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्ख-माणे°-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे[8] केसी नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे। से णं उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं[9], महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर[10]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं[11] •सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजी-वाजीवे जाव[12] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१०३. तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव[13] पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ॥

१०४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[14] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे°

---

१. भ० ११।५७।
२. ओदायणे (अ); उदायणे (स) सर्वत्र।
३. ओ० सू० १४।
४. ओ० सू० १५।
५. ओ० सू० १५।
६. अभीति (अ, स,)।
७. सं० पा०—जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्ख-माणे।
८. भायणेज्जे (अ, ख, म)।
९. नगरसयाणं (अ, ब, म, वृपा)।
१०. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
११. सं० पा०—पोरेवच्चं जाव कारेमाणे।
१२. भ० ३।९४।
१३. भ० १२।६।
१४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समुप्पज्जित्था—धन्ना णं ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-सबाहसण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना णं ते राईसर-तलवर[1]-●माडविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ०-सत्थवाहप्पभितयो[2] जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमसंति जाव[3] पज्जुवासंति। जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[4] ●दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं० विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा[5] ●अप्पाणं भावेमाणे० विहरेज्जा, तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा नमंसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा॥

१०५ तए णं समणे भगवं महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं[6] ●चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं० समुप्पन्नं वियाणित्ता चंपाओ नगरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु[7]●गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं० विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[8] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१०६. तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु जाव[9] परिसा पज्जुवासइ॥

१०७ तए णं से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीयीभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं जहा कूणिओ ओववाइए जाव[10] पज्जुवासइ। पउमावती-पामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव[11] पज्जुवासंति। धम्मकहा॥

१०८ तए णं से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव[12] नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते! तहमेयं भंते[13]! ●अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छिय-

---

१. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह०।
२. ०प्पभिइओ (अ, स)।
३. भ० २।३०।
४. सं० पा०—गामाणुगामं जाव विहरमाणे।
५. सं० पा०—तवसा जाव विहरेज्जा।
६. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं।
७. सं० पा०—गामाणु जाव विहरमाणे।
८. भ० १।७।
९. ओ० सू० ५२।
१०. ओ० सू० ५५-६९।
११. ओ० सू० ७०।
१२. भ० १।१०।
१३. सं० पा०—भंते जाव से।

मेयं भंते ! ०—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाण अंतिए मुंडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं० पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।।

१०९. तए णं से उद्दायणे राया समणेण भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थि दुरुहइ[2], दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

११०. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे० समुप्पज्जित्था—एवं खलु अभीयीकुमारे मम एगे पुत्ते इट्ठे कंते[4] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए०, किमंग पुण पासणयाए ? तं जदि णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[5] •अगाराओ अणगारियं० पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य[6] •बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य० जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[7] •अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए, सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थि ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं

१. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।
२. दुरुहइ (ता) ।
३. अब्भत्थिए (अ, ता, स); स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. स० पा०—कंते जाव किमंग ।
५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।
६. स० पा०—रट्ठे य जाव जणवए ।
७. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।
८. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।

सब्भितरवाहिरियं[1] °आसिय-समज्जिओवलित्तं जाव[2] सुगंधवरगंधगंधिय गंध-वट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तिय° पच्चप्पिणंति ॥

१११. तए णं से उद्दायणे राया दोच्चं पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! केसिस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव[3] परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीयीभयपामोक्खाणं तिण्णि तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर[4]-°तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर सेणावच्चं° कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

११२ तए णं से केसी कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

११३. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ ॥

११४. तए णं से केसी राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ—एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भितरवाहिरियं तहेव जाव[6] निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेंति ॥

११५. तए णं से केसी राया अणेगगणनायग[7]-°दंडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपाल-सद्धिं°-संपरिवुडे उद्दायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा जमालिस्स जाव[8] महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण सामी! किं देमो? किं पयच्छामो? किणा वा ते अट्ठो?

११६. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायं एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिय, कासवगं च सद्दावियं—एवं जहा[9] जमालिस्स, नवरं—पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा ॥

११७. तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता उद्दायणं रायं सेया-पीतएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेसं जहा जमालिस्स

---

१. सं० पा०—°वाहिरियं जाव पच्चप्पिणंति।
२. ओ० सू० ५५।
३. भ० ११।६१।
४. सं० पा०—राईसर जाव कारेमाणे।
५. ओ० सू० १४।
६. भ० ६।१८०, १८१।
७. सं० पा०—अणेगगणनायग जाव संपरिवुडे।
८. भ० ६।१८२।
९. भ० ६।१८४-१८६।

जाव[1] चउव्विहेणं अलंकारेण अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव[2] अम्मधाती, नवरं पउमावती हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा सेसं तं चेव जाव[3] छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ॥

११८. [4]•तए णं सा पउमावती देवी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइं असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायणं रायं एवं वयासी—जइयव्वं सामी! घडियव्वं सामी! परक्कमियव्वं सामी! अस्सिं च णं अट्ठे॰ नो पमादेयव्वं त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता[5] •जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं॰ पडिगया ॥

११९. तए णं से उद्दायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव[6] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं॰ पव्वइए—इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं रायं

---

१. भ० ९।१९०-१९२।
२. भ० ९।१९३, १९४।
३. भ० ९।१९५-२०१।
४. सं० पा०—तं चेव पउमावती पडिच्छइ जाव घडियव्वं सामी! जाव नो।
५. सं० पा०—नमंसित्ता जाव पडिगया।
६. भ० ९।१५०,१५१।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइए।

उवसपज्जित्ताण विहरइ। तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए ण से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ, उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था ॥

१२१. इमीसे[2] रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठि[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। तए ण से अभीयीकुमारे बहूइ वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठीए आयावाअसुरकुमारावाससयसहस्सेसु[4] अण्णयरसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो। तत्थ ण अत्थेगतियाण आयावगाण असुरकुमाराणं देवाणं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण अभीयिस्स वि देवस्स एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ॥

१२२ से ण भते ! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[5] सव्वदुक्खाण अतं काहिति ॥

१२३ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

सत्तमो उद्देसो

भासा-पदं

१२४. रायगिहे जाव[7] एव वयासी—आया भंते ! भासा ? अण्णा भासा ?
गोयमा ! नो आया भासा, अण्णा भासा।
रूविं भते ! भासा ? अरूविं भासा ?

---

१. भ० २।६४।
२. तेणं कालेण तेण समएण इमीसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अयं पाठ. अप्रासङ्गिकोस्ति। शाश्वतपदार्थाना निरूपणे कालनिर्देशो नावश्यकोस्ति। केनापि कारणेन प्रवाहपाती लेख. सजात इति प्रतीयते, तेनात्र पाठान्तरत्वेनास्माभि स्वीकृत.।
३. चोसट्ठि (स)।
४. °सहस्सेसु असुरकुमारावासेसु (ता)।
५. भ० २।७३।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा।

सचित्ता[1] भंते ! भासा ? अचित्ता[2] भासा ?

गोयमा ! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा।

जीवा भंते ! भासा ? अजीवा भासा ?

गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा।

जीवाणं भंते ! भासा ? अजीवाणं भासा ?

गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा।

पुव्वि भंते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिक्कंता भासा ?

गोयमा ! नो पुव्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कता भासा।

पुव्वि भंते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ?

गोयमा ! नो पुव्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो भासासमयवीतिक्कता भासा भिज्जति ॥

१२५. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चा, मोसा, सच्चामोसा असच्चामोसा ॥

मण-पदं

१२६. आया भंते ! मणे ? अण्णे मणे ?

गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे।

[3]•रूविं भंते ! मणे ? अरूवि मणे ?

गोयमा ! रूविं मणे, नो अरूवि मणे।

सचित्ते भंते ! मणे ? अचित्ते मणे ?

गोयमा ! नो सचित्ते मणे, अचित्ते मणे।

जीवे भंते ! मणे ? अजीवे मणे ?

गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ॥

जीवाणं भंते ! मणे ? अजीवाणं मणे ?

गोयमा ! जीवाणं मणे°, नो अजीवाणं मणे।

पुव्वि भंते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? [4]•मणसमयवीतिक्कंते मणे ?

---

१. सच्चित्ता (क, ता, म)।

२. अच्चित्ता (क, ता, म)।

३. सं० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव नो।

४. सं० पा०—एवं जहेव भासा।

गोयमा ! नो पुव्वि मणे, मणिज्जमाणे मणे, नो मणसमयवीतिक्कते मणे ° ।
पुव्वि भते ! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति ?[1]°
गोयमा ! नो पुव्वि मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, नो मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति° ।।

१२७. कतिविहे ण भते ! मणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चे[2], •मोसे, सच्चामोसे°, असच्चामोसे ।।

काय-पद

१२८ आया भते ! काये ? अण्णे काये ?
गोयमा ! आया वि काये, अण्णे वि काये ।
रूवि भते ! काये ? अरूवि काये[3] ?
गोयमा ! रूवि पि काये, अरूवि पि काये ।
[4]•सचित्ते भते ! काये ? अचित्ते काये ?
गोयमा ! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये ।
जीवे भते ! काये ? अजीवे काये ?
गोयमा ! जीवे वि काये, अजीवे वि काये ।
जीवाण भते ! काये ? अजीवाण काये ?
गोयमा ! जीवाण वि काये, अजीवाण वि काये ° ।
पुव्वि भते ! काये[5] ? [6]•कायिज्जमाणे काये ? कायसमयवीतिक्कते काये° ?
गोयमा ! पुव्वि पि काये, कायिज्जमाणे वि काये, कायसमयवीतिक्कते वि काये ।
पुव्वि भते ! काये भिज्जति ? [6]•कायिज्जमाणे काये भिज्जति ? कायसमयवीतिक्कते काये भिज्जति ?°
गोयमा ! पुव्वि पि काये भिज्जति[7], •कायिज्जमाणे वि काये भिज्जति, कायसमयवीतिक्कते वि° काये भिज्जति ।।

१२९. कतिविहे ण भते ! काये पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे काये पण्णत्ते, तं जहा—ओरालिए[8], ओरालियमीसए, वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारगमीसए, कम्मए ।।

---

१. स० पा०—एव जहेव भासा ।
२. स० पा०—सच्चे जाव असच्चामोसे ।
३. काये पुच्छा (स) ।
४. स० पा०—एव एक्केक्के पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये । जीवे वि काए, अजीवे वि काए, जीवाण वि काए, अजीवाण वि काये ।
५. स० पा०—पुच्छा ।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. स० पा०—भिज्जति जाव काये ।
८. ओराले (स) ।

मरण-पदं

१३०. कतिविहे ण भते ! मरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीचियमरणे[1], ओहिमरणे[2], आतियतियमरणे[3], बालमरणे, पडियमरणे ।।

१३१. आवीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, त जहा - दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ।।

१३२. दव्वावीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्ख-जोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ।।

१३३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे-नेरइयदव्वावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइं पट्ठवियाइ 'निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ'[4] अभिसम-ण्णागयाइ भवति ताइं दव्वाइ आवीचिमणुसमय[5] निरतर मरंति त्ति कट्टु । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देवदव्वा-वीचियमरणे ।।

१३४. खेत्तावीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्ता-वीचियमरणे ।।

१३५. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे-नेरइयखेत्तावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइ दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एव जाव भावावीचियमरणे ।।

१३६ ओहिमरणे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे,[6] °कालोहि-मरणे, भवोहिमरणे°, भावोहिमरणे ।।

---

१. आवीयिय° (ब) ।
२. अवहि° (ब, म) ।
३. आदितिय° (अ, स); आदियतिय; (क, ख, ब) ।
४. × (ब) ।
५. आवीचियम° (क, स) ।
६. स० पा०—खेत्तोहिमरणे जाव भवो° ।

१३७. दव्वोहिमरणे ण भते कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहि-मरणे ॥

१३८ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वोहिमरणे-नेरइयदव्वोहिमरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[1] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपय मरंति, 'ते ण'[2] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वोहिमरणे[3] वि । एव एएण गमेण खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ॥

१३९. आतियतियमरणे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वातियतियमरणे, खेत्तातियतियमरणे जाव भावातियतियमरणे ॥

१४०. दव्वातियतियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वातियतियमरणे जाव देवदव्वा-तियतियमरणे ॥

१४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वातियतियमरणे-नेरइयदव्वातियतिय-मरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[4] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, 'ते ण'[5] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले नो पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वातियतियमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वातिय-तियमरणे । एव खेत्तातियतियमरणे वि, एवं जाव भावातियतियमरणे वि ॥

१४२. बालमरणेण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. वलयमरणे [6]°२ वसट्टमरणे ३ अतोसल्लमरणे ४ तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७ जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९ विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे ११ वेहाणसे° १२ गद्धपट्ठे ॥

१४३. पंडियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य ॥

१४४. पाओवगमणे[7] णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

---

१. ज ण (अ, क, ख, ता, ब); जण्णं (म) ।
२. जं ण (अ, ता, ब, स); जे ण (ख), 'त' इति गम्यम् (वृ) ।
३. देवोहिमरणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
४. ज णं (अ, क, ता, स); जण्णं (म) ।
५. जे ण (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६. स० पा०—जहा खंदए जाव गद्धपट्ठे ।
७. °गमणमरणेणं (ता); पाओवगमरणेणं(ब) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमं अप-डिकम्मे ॥

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
[1]•गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य।° नियम सपडिकम्मे ॥

१४६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

अट्ठमो उद्देसो

कम्मपगडि-पदं

१४७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। एव बंधट्ठिइ-उद्देसो[3] भाणियव्वो निरवसेसो जहा[4] पण्णवणाए[5] ॥

१४८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९. रायगिहे जाव[7] एव वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

---

१. स० पा०—एव त चेव नवर नियमं सपडिकम्मे।
२. भ० १।५१।
३. उद्देसओ (क, ता, ब, म)।
४. प० २४।
५. इह च वाचनान्तरे संग्रहणीगाथास्ति, सा चेयं—
पयडीण भेयठिई, बधोवि य इदियाणुवाएण।
केरिसय जहन्नठिइ, बधइ उक्कोसियं वावि ॥
(वृ)।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

१५०. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू केयाघडियाकिच्चहत्थगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव पभू णं गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए । एस णं गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते वुइए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्वि-स्सति वा ॥

१५१. से जहानामए केइ पुरिसे हिरण्णपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
सेसं तं चेव एवं सुवण्णपेलं, एवं रयणपेलं, वइरपेलं, वत्थपेलं, आभरणपेलं, एवं वियलकडं, सुंबकडं, चम्मकडं, कंबलकडं, एवं अयभारं, तंबभारं, तउय-भारं, सीसगभारं, हिरण्णभारं, सुवण्णभारं, वइरभारं ॥

१५२. से जहानामए वग्गुली सिया, दो वि पाए उल्लंबिया-उल्लंबिया उड्ढपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
एवं जण्णोवइयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव विउव्विस्सति वा ॥

१५३ से जहानामए जलोया सिया, उदगंसि कायं उव्विहिया-उव्विहिया गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं जहा वग्गुलीए ॥

१५४ से जहानामए बीयंबीयगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ॥

१५५ से जहानामए पक्खिविरालए सिया, रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ॥

---

१ केय घडियाहत्थ (?) किच्चगयाइं (क, ग, ता, ब, म, स) ।
२ स० पा० ... जहा ... ।
३. भ० ३।८ ।
४ [illegible] (ता), [illegible] (ख०) ।
५ [illegible] (म, ब, म) ।
६. [illegible] (ग, ग, ब, स); [illegible] (?) ।
७ [illegible] (अ); [illegible] (म, ब); [illegible] (ता); [illegible] (ग), [illegible] (म) ।
८ [illegible] (?, ग, ?), [illegible] (?, [illegible] (म) ।
९ [illegible] (ग, ग ब); [illegible] (? [illegible] (म) ।
१०. भ० ३।१६२, १६३ ।
११. [illegible] (ग, ?) ।

१५६. से जहानामए जीवंजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ।।

१५७. से जहानामए हंसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हंसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ।।

१५८. से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइ डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ।।

१५९. से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेण, सेसं जहा[1] केयाघडियाए । एवं छत्त, एवं चम्म[2] ।।

१६०. से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एव चेव । एवं वइरं, वेरुलियं जाव[3] रिट्ठ । एव उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थग, कुमुदहत्थग, [4]°नलिणहत्थग, सुभगहत्थग, सुगंधियहत्थगं, पोंडरीयहत्थग, महापोंडरीयहत्थगं, सयपत्तहत्थग°, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तग गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ।।

१६१. से जहानामए केइ पुरिसे भिस अवद्दालिय-अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ।।

१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगसि काय उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेसं जहा[5] वग्गुलीए ।।

१६३. से जहानामए वणसडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव[6] महामेहनिकुरबभूए[7], पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वणसडकिच्चगएणं अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ? सेस त चेव ।।

१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजला जाव[8] सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा पोक्खरणीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?

हंता उप्पएज्जा ।।

१६५. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवतियाइ पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइ विउव्वित्तए ? सेसं त चेव जाव विउव्विस्सति वा ।।

---

१. भ० १३।१४९,१५० ।
२. चमरं (म) ।
३. भ० ३।४ ।
४. सं० पा०—एव जाव से ।
५. भ० १३।१५२ ।
६. ओ० सू० ४ ।
७ °निउयम्बभूए (ख); °निकुरंबभूए (ता, ब) ।
८. ओ० सू० ६, भ० वृत्ति ।

१६६. से भंते! किं मायी विउव्वति? अमायी विउव्वति?
गोयमा! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति। मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय[1]•पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°, अत्थि तस्स आराहणा॥

१६७. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

१६८. कति णं भंते! छाउमत्थियसमुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पण्णवणाए जाव[3] आहारगसमुग्घाएत्ति॥

१६९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[4] विहरइ॥

---

१. सं० पा०—[illegible] पडिक्कंते [illegible]। ३. प० ३६।
२. भ० १।५१। ४. भ० १।५१।

चोद्दसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. चर २. उम्माद ३ सरीरे, ४. पोग्गल ५. अगणी तहा ६. किमाहारे।
७,८. ससिट्ठमंतरे[1] खलु, ९. अणगारे १०. केवली चेव ॥ १ ॥

लेस्साणुसारि-उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अणगारे ण भंते ! भावियप्पा चरम देवावासं वीतिक्कंते, परमं देवावासमसपत्ते, एत्थ ण अंतरा कालं करेज्जा, तस्स ण भंते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ[3] तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव[4] पडिपडति[5], से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

२. अणगारे ण भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिक्कते, परमं असुर-[6]°कुमारावासमसंपत्ते, एत्थ णं अतरा काल करेज्जा, तस्स ण भते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा असुरकुमारावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडि-पडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताण विहरइ ।°
एवं जाव थणियकुमारावास, जोइसियावासं, एव वेमाणियावासं जाव विहरइ ॥

---

१. ससट्ठ° (अ, क, ख, व, म, स) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. पलियस्सओ (ख); परियस्सतो (व, म) ।
४. °मेवा (क, व) ।
५. परिपडइ (ता) ।
६. सं० पा०—एवं चेव ।

नेरइयादीणं गतिविसय-पदं

३. नेरइयाणं भंते ! कहं सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए—केइपुरिसे तरुणे बलवं जुगवं[1] •जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-निचित-गत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे° निउणसिप्पोवगए आउंटियं[2] बाहं पसारेज्जा, पसारियं वा बाहं आउंटेज्जा[3], विक्खिण्णं वा मुट्ठिं साहरेज्जा, साहरियं वा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसियं[4] वा अच्छिं निम्मिसेज्जा, निम्मिसियं वा अच्छिं उम्मिसेज्जा, 'भवे एयारूवे'[5] ? नो इणट्ठे समट्ठे। नेरइया णं एगसमइएण[6] वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जंति। नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—एगिंदियाणं चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे। सेसं तं चेव ॥

नेरइयादीणं अणंतरोववन्नगादि-पदं

४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरोववन्नगा ? परंपरोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि, अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि ॥

५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[7]—•नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि°, अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे णं नेरइया अपढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया परंपरोववन्नगा, जे णं नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा। से तेणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥

६. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ॥

---

१. स० पा०—जुगवं जाव निउणे°।
२. आउट्टिय (अ, ख, स), आउदिय (क); आदिउट्टिय (ता)।
३. आउट्टेज्जा (ता)।
४. अणिमिसियं (अ, क, ता, ब, म, स); उण्णिसियं (ख)।
५. भवे एयारूवे सिया (अ), भवेयारूवे (क, ख, ता, ब, म)।
६. °समएण (अ)।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव अणंतर।

७. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।।

८. अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया कि नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । सेसं तं चेव ।।

९. नेरइया णं भंते ! कि अणंतरनिग्गया ? परंपरनिग्गया ? अणंतर-परंपर-अनिग्गया ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरनिग्गया वि, 'परंपरनिग्गया वि'[1], अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ।।

१०. से केणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे ण नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अनिग्गया । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि । एवं जाव वेमाणिया ।।

११. अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ।।

१२. परंपरनिग्गया ण भंते ! नेरइया कि नेरइयाउय पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति ।।

१३. अणंतर-परंपर-अनिग्गया णं भंते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । निरवसेसं जाव वेमाणिया ।।

१४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा[2] ? परंपरखेदोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-खेदाणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरखेदोववन्नगा वि, परंपरखेदोववन्नगा वि, अणंतर-

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. ०खेत्तोववन्नगा (क, ब); खेतोववन्नगा (ता) ।

परंपर-खेदाणुववन्नगा वि। एवं एएणं अभिलावेण ते[1] चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा ॥

१५. सेव भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

उम्माद-पदं

१६. कतिविहे णं भंते! उम्मादे पण्णत्ते?
गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे[3] य, मोहणिज्जस्स य[4] कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव ॥

१७. नेरइयाणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते?
गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं ॥

१८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स 'य कम्मस्स'[5] उदएणं?
गोयमा! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा। से तेणट्ठेणं[6] •गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स° उदएणं[7] ॥

१९. असुरकुमाराणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते?
[8]•गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स कम्मस्स य उदएणं ॥

२०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं?

---

१. तं (व)।
२. भ० १।५१।
३. जक्खादेसे (ता), जक्खायेसे (व), जक्खावेसे (क्व°)।
४. व (ता); वा (स)।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव उदएणं।
७. उम्मादे (अ)।
८. सं० पा०—एवं जहेव नेरइयाणं नवरं देवे।

गोयमा ! ° देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा [1]•कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणिज्जा° । से तेणट्ठेणं जाव उदएणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं जाव मणुस्साणं—एएसिं जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥

वुट्ठिकायकरण-पदं

२१. अत्थि णं भंते ! पज्जण्णे[2] कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति[3] ?
हंता अत्थि ॥

२२. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेइ। तए णं ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते मज्झिमपरिसगा[4] देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति । तए णं ते [5]•आभिओगिया देवा° सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति । तए णं ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति। एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति ॥

२३. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
हंता अत्थि ॥

२४. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो—एएसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमण-महिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति । एवं नागकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

तमुक्कायकरण-पदं

२५. जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्कायं काउकामे भवति से कह-मियाणिं पकरेति ?

---

१. सं० पा०—सेसं तं चेव ।
२. पज्जुण्णे (क, ता, म) ।
३. इह स्थाने शक्रोपि तं प्रकरोतीति दृश्यम् (वृ)।
४. °परिसोववण्णगा (अ, ख, व) ।
५. सं० पा०—ते जाव सद्दाविया ।

गोयमा! ताहे चेव ण से ईसाणे देविंदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा [1]•मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति। तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति°। तए ण ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काइए देवे सद्दावेति। तए णं ते तमुक्काइया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्कायं पकरेति। एव खलु गोयमा! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय पकरेति॥

२६ अत्थि ण भते! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेति?
हता अत्थि॥

२७. किंपत्तिय ण भते! असुरकुमारा देवा तमुक्काय पकरेति?
गोयमा! किड्डा-रतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउ वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एव खलु गोयमा! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति। एवं जाव[2] वेमाणिया॥

२८ सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

तइओ उद्देसो

विणयविहि-पदं

२९ [4]देवे ण भते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेण[5] वीइवएज्जा?
गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

३० से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा?
गोयमा! दुविहा देवा पण्णत्ता, त जहा—मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य,

---

१. स० पा०—एव जहेव सक्कस्स जाव तए।
२. भ० १४।२३।
३. भ० १।५१।
४ उद्देशकस्य प्रारम्भे क्वचिदिय द्वारगाथा दृश्यते—
महक्काए सक्कारे,
सत्थेण वीईवयति देवा उ।
वास चेव य ठाणा,
नेरइयाण तु परिणामे॥
५. मज्झेण मज्झेणं (अ, क, ख, ता, ब)।

अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए[1] देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वंदइ, नो नमंसइ, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेइ, नो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं[2] पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा। तत्थ णं जे से अमायीसम्मद्दिट्ठी-उववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वंदइ नमंसइ[3] •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं॰ पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ[4]—•अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए॰ नो वीइवएज्जा॥

३१. असुरकुमारे णं भंते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झं-मज्झेणं वीइवएज्जा? एवं चेव। एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव[5] वेमाणिए॥

३२. अत्थि णं भंते! नेरइयाणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अंजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स[6] पच्चुग्गच्छणया[7]? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छंतस्स पडिसंसाहणया?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

३३. अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा?
हंता अत्थि। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं—एएसिं[8] जहा नेरइयाणं॥

३४. अत्थि णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा?
हंता अत्थि। नो चेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा॥

३५. [9]•अत्थि णं भंते! मणुस्साणं सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अंजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एंतस्स पच्चुग्गच्छणया? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छं-तस्स पडिसंसाहणया?
हंता अत्थि।॰ वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं॥

---

१. ॰मिच्छद्दिट्ठी॰ (अ, क, ख, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. सं॰ पा॰—नमंसइ जाव पज्जुवासइ।
४. सं॰ पा॰—वुच्चइ जाव नो।
५. भ॰ १४।२३।
६. इंतस्स (अ)।
७. पच्चप्पत्थणया (अ)।
८. एसिं (क, ख, ता, ब, म)।
९. सं॰ पा॰—मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं।

३६. अप्पिड्ढिए[1] ण भंते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३७ समिड्ढिए[2] ण भंते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा ।।

३८. से ण भते ! कि सत्थेण अक्कमित्ता पभू ? अणक्कमित्ता पभू ?
गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ।।

३९. से ण भते ! कि पुव्वि सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा सत्थेण अक्कमेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि सत्थेण अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा सत्थेण अक्कमिज्जा । एव एएण अभिलावेण जहा दसमसए आइड्ढी-उद्देसए[3] तहेव निरवसेस चत्तारि दडगा भाणियव्वा जाव[4] महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ।।

४०. रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसयं पोग्गलपरिणाम पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं[5] •अकत अप्पियं असुभं अमणुण्ण° अमणाम । एव जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया ।।

४१ [6]•रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसयं वेदनापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ।° एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए जाव[7]—

४२ अहेसत्तमापुढविनेरइया ण भते ! केरिसय परिग्गहसण्णापरिणाम पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणाम ।।

४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ।।

---

१. अप्पिड्ढीए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. समिड्ढीए (अ, क, ब, म); समड्ढीए (ता, स) ।
३. आतिड्ढीयउद्देसए (ता, ब, म) ।
४. भ० १०।२८-३८ ।
५. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणामं ।
६. सं० पा०—एव वेदणापरिणामं ।
७. जी० ३ ।
८. भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४. [1]एस ण भंते ! पोग्गले तीतमणंत सासय समयं लुक्खी ? समय अलुक्खी ? समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्वि च णं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूव परिणाम परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ?

हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतमणतं सासय समयं तं चेव जाव एगरूवे सिया ॥

४५. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्न सासय समयं लुक्खी ? एव चेव ॥

४६. [2]•एस णं भंते ! पोग्गले अणागयमणत सासय समय लुक्खी ? एव चेव° ॥

४७. एस णं भंते ! खंधे तीतमणतं सासयं समयं लुक्खी ? एव चेव खधे वि जहा पोग्गले ॥

४८. एस णं भंते ! जीवे तीतमणतं सासयं समय दुक्खी ? समय अदुक्खी ? समय दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेणं अणेगभावं अणेगभूय परिणाम परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निजिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?

हता गोयमा ! एस णं जीवे तीतमणतं सासय समयं जाव एगभूए सिया। एव पडुप्पन्न सासयं समयं, एव अणागयमणंतं सासय समय ॥

४९. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं सासए ? असासए ?

गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ॥

५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं[3] •गधपज्जवेहि रसपज्जवेहिं° फासपज्जवेहिं असासए। से तेणट्ठेणं[4] •गोयमा ! एव वुच्चइ°–सिय सासए, सिय असासए ॥

५१. परमाणुपोग्गले णं भते ! कि चरिमे ? अचरिमे ?

गोयमा ! दव्वादेसेण नो चरिमे, अचरिमे। खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे। कालादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे। भावादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे ॥

---

१. इह पुनरुद्देशकार्थसंग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते, सा चेय—
१. पोग्गल २. खंधे ३. जीवे,
४. परमाणू ५. सासए य चरमे य।
६. दुविहे खलु परिणामे,
अज्जीवाण च जीवाण ॥

२. सं० पा०—एव अणागयमणतं पि।

३. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव फास°।

४. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय।

५२ कतिविहे णं भते ! परिणामे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, त जहा—जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य। एव परिणामपय[1] निरवसेस भाणियव्व ॥

५३. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

अगणिकायस्स अतिक्कमण-पदं

५४. [3]नेरइए ण भते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण[4] वीइवएज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा।

से ण तत्थ झियाएज्जा ?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ। तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ॥

५६. असुरकुमारे ण भते ! अगणिकायस्स [5]°मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?°

गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५७ से केणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से ण—एव जहेव नेरइए जाव कमइ। तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए

---

१. प० १३।

२. भ० १।५१।

३. इह च क्वचिदुद्देशकार्थसग्रहगाथा दृश्यते, सा चेय—
नेरइय अगणिमज्झे,
दस ठाणा तिरिय पोग्गले देवे।
पव्वयभित्ती उल्लघणा,
य पल्लघणा चेव ॥

४. मज्झेणं मज्झेण (अ, क, ख, ता, ब)।

५. स० पा०—पुच्छा।

असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ। से तेणट्ठेण। एवं जाव थणियकुमारा। एगिंदिया जहा नेरइया॥

५८. बेइंदिया ण भंते! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?

जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, नवरं—

जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा?

हंता झियाएज्जा। सेसं तं चेव। एवं जाव चउरिंदिए॥

५९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! अगणिकायस्स [1]°मज्झमज्झेण वीइवएज्जा° ?

गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

६०. से केणट्ठेणं?

गोयमा! पचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। अविग्गहगतिसमावन्नगा पचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढिप्पत्ता य, अणिड्ढिप्पत्ता य। तत्थ ण जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ झियाएज्जा?

हंता झियाएज्जा। से तेणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा। एवं मणुस्से वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे॥

पच्चणुब्भव-पदं

६१. नेरइया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लावण्णे[2], अणिट्ठे जसे कित्ती, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म[3]-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे॥

---

१. सं० पा०—पुच्छा।

२. लायण्णे (ता)।

३. कम्मए (ता)।

६२. असुरकुमारा दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव थणियकुमारा ॥

६३. पुढविक्काइया छट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव वणस्सइकाइया ॥

६४. वेइंदिया[1] सत्तट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा रसा, सेस जहा एगिंदियाण ॥

६५ तेइंदिया अट्ठट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा गधा, सेसं जहा वेइंदियाणं ॥

६६ चउरिंदिया नवट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेस जहा तेइंदियाण ॥

६७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव मणुस्सा वि, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

देवस्स उल्लघण-पल्लंघण-पदं

६८ देवे णं भते! महिड्ढीए जाव[2] महेसक्खे[3] वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वय वा तिरियभित्तिं वा उल्लंघेत्तए वा पल्लघेत्तए वा?
[4]नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९. देवे ण भते! महिड्ढीए जाव महेसक्खे वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय[5]॰पव्वय वा तिरियभित्तिं वा उल्लघेत्तए वा॰ पल्लंघेत्तए वा?
हता पभू ॥

७० सेव भते! सेवं भते! त्ति[6] ॥

---

१. वेंदिया (व)।
२. भ० १।३३६।
३. महेसक्के (व)।
४. णो नो (अ, स)।
५. सं० पा०—तिरिय जाव पल्लघेत्तए।
६. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं किमाहारादि-पदं

७१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासि—नेरइया णं भंते! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणिया[2], किंठितीया पण्णत्ता?
गोयमा! नेरइया णं पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गल-ट्ठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणामेव[3] विप्परिया-समेंति। एवं जाव वेमाणिया॥

७२. नेरइया णं भंते! किं वीचीदव्वाइं[4] आहारेंति? अवीचीदव्वाइं आहारेंति?
गोयमा! नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि आहारेंति॥

७३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइया वीची[5] •दव्वाइं पि आहारेंति, अवीची-दव्वाइं पि° आहारेंति?
गोयमा! जे णं नेरइया एगपएसूणाइं पि दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया वीचीदव्वाइं आहारेंति, जे णं नेरइया पडिपुण्णाइं दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया अवीचीदव्वाइं आहारेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ[6]—•नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि° आहारेंति। एवं जाव वेमाणिया[7]॥

देविंदाणं भोग-पदं

७४. जाहे णं भंते! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे[8] भवइ से कहमियाणिं पकरेति?
गोयमा! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वइ—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं जाव[9] अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं। तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स[10] उवरिं[11] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[12] मणीणं फासो। तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ[13] णं महं एगं पासायवडेंसगं विउव्वइ—

---

१. भ० १।४-१०।
२. किंजोणीया (अ, ब, म)।
३. कम्मणामेव (ब)।
४. वीचि° (अ, क, ख, ब, म, स)।
५. सं० पा०—तं चेव जाव आहारेंति।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव आहारेंति।
७. °णिया आहारेंति (स)।
८. भोजिउकामे (ख); भुंजउकामे (स)।
९. भ० ६।७५।
१०. नेमिरूवस्स (ख, ता, ब)।
११ अवरिं (ख, ता, म); अवरि (ब)।
१२. राय० सू० २४-३१।
१३. तत्थ (अ, क, ता, ब, म, स)।

पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसियमिव वण्णओ जाव[1] पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेंसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव[2] पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा[3] वेमाणियाणं। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं 'एगे देवसयणिज्जे'[4] विउव्वइ, सयणिज्जवण्णओ जाव[5] पडिरूवे। तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं[6]—नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य सद्धिं महयाहयनट्ट[7]-•गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइय-रवेणं° दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ॥

७५. जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति?

जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं। एवं सणंकुमारे वि, नवरं—पासायवडेंसओ छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तिण्णि जोयणसयाइं विक्खंभेणं, मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ, सपरिवारं भाणियव्वं[8]। तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[9] चउहि य बावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहि य बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहयनट्ट जाव[10] विहरइ। एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ, नवरं—जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो[11]। पासायउच्चत्तं—जं सएसु-सएसु कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो जाव[12] अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं। 'तत्थ णं'[13] अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेसं तं चेव॥

७६. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[14]॥

---

१. राय० सू० १३७।
२. राय० सू० ३४।
३. राय० सू० ३६।
४. विभक्तिव्यत्ययेन 'एगं देवसयणिज्जं'।
५. राय० सू० २४५।
६. अणिएहिं त (अ)।
७. सं० पा०—महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइं।
८. राय० सू० ३७-४४।
९. प० २।
१०. भ० १४।७४।
११. प० २।
१२. भ० ११।६४।
१३. एत्थ णं गो (अ)।
१४. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७. रायगिहे जाव[1] परिसा पडिगया। गोयमादी! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी - चिरं संसिट्ठोसि मे गोयमा! चिरसंथुओसि मे गोयमा! चिरपरिचिओसि मे गोयमा! चिरजुसिओसि[2] मे गोयमा! चिराणुगओसि मे गोयमा! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो॥

७८. जहा णं भंते! वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति?

हंता गोयमा! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति॥

७९. से केणट्ठेणं[3] •भंते! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति?

गोयमा! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ[4]—•वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भंते! तुल्लए पण्णत्ते?

गोयमा! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए॥

८१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए?

गोयमा! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि, एवं तुल्ल-

---

१. भ० १।४-८।

२. चिरज्झुसिओसि (ता, म)।

३. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति।

४. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासंति।

अणंतपएसिए वि। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए?
गोयमा! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले, एवं जाव दसपएसोगाढे। तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे[1] °पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, तुल्लसखेज्जपएसोगाढे पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले°, एवं तुल्लअसखेज्जपएसोगाढे वि। से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा! एवं वुच्चइ°—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—कालतुल्लए-कालतुल्लए?
गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एकसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ नो तुल्ले, एव जाव दससमयट्ठितीए, तुल्लसखेज्जसमयट्ठितीए एवं चेव, एव तुल्लअसखेज्जसमयट्ठितीए वि। से तेणट्ठेण[3] °गोयमा! एव वुच्चइ°—कालतुल्लए-कालतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—भवतुल्लए-भवतुल्लए?
गोयमा! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एव चेव, एव मणुस्से, एव देवे वि। से तेणट्ठेणं[4] °गोयमा! एव वुच्चइ°—भवतुल्लए-भवतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए?
गोयमा! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स[5] पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालावइरित्तस्स[6] पोग्गलस्स भावओ नो तुल्ले, एव जाव दसगुणकालए, एव तुल्लसखेज्जगुणकालए पोग्गले, एव तुल्लअसखेज्जगुणकालए वि, एव तुल्लअणतगुणकालए वि। जहा कालए, एव नीलए, लोहियए, हालिद्दए, सुक्किलए। एव सुब्भिगधे, एव दुब्भिगधे। एव तित्ते जाव[7] महुरे। एव कक्खडे जाव[8] लुक्खे। ओदइए भावे ओदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, ओदइए भावे ओदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एव ओवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए। सन्निवाइए भावे सन्निवाइयस्स

---

१. स० पा०—तुल्लसखेज्ज।
२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव खेत्ततुल्लए।
३. स पा०—तेणट्ठेण जाव कालतुल्लए।
४. स० पा०—तेणट्ठेण जाव भवतुल्लए।
५. °कालस्स (अ, क, व, स)।
६. °काल° (अ, ख, स), स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि।
७. भ० ८।३६।
८. भ० ८।३६;

भावस्स भावओ तुल्ले, सन्निवाइए भावे सन्निवाइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए।
से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए ?
गोयमा ! परिमंडले सठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स सठाणओ तुल्ले परिमडले सठाणे परिमडलसठाणवइरित्तस्स सठाणस्स सठाणओ नो तुल्ले, एव वट्टे, तसे, चउरसे, आयए। समचउरंससठाणे समचउरसस्स मठाणस्स सठाणओ तुल्ले समचउरसे सठाणे समचउरंससठाणवइरित्तस्स सठाणस्स संठाणओ नो तुल्लं, 'एव परिमंडले वि'[1], एव[2] °साई खुज्जे वामणे° हुडे। से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एव वुच्चइ °—सठाणतुल्लए-संठाणतुल्लए ॥

भत्तपच्चक्खायस्स आहार-पदं

८२. भत्तपच्चक्खायए ण भते ! अणगारे मुच्छिए[4] °गिद्धे गढिए °अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए[5] अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ?
हता गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे [6]°मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति° ॥

८३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—भत्तपच्चक्खायए ण [7]°अणगारे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाए कालं करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ?°
गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए ण अणगारे मुच्छिए[8] °गिद्धे गढिए° अज्झोववन्ने आहारे[9] भवइ, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए[10] °अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने° आहारे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव आहारमाहारेति ॥

लवसत्तम देव-पदं

८४. अत्थि णं भंते ! लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
हता अत्थि ॥

---

१. X (अ, ख); एव जाव परिमडले वि (क, ता, व, म)।
२. सं० पा०—एव जाव हुडे।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव संठाणतुल्लए।
४. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
५. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
६. सं० पा०—त चेव।
७. स० पा०—त चेव।
८. स० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
९. अत्रकपदे सन्धिस्तेन 'आहारए' इति स्थाने 'आहारे' इति प्रयोगो दृश्यते।
१०. स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारे।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव[1] निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा पक्काण[2], परियाताणं, हरियाणं, हरियकंडाण तिक्खेण नवपज्जणएण[3] असिअएण पडिसाहरिया-पडिसाहरिया पडिसखिविया-पडिसखिविया जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु सत्त लवे[4] लुएज्जा, जदि[5] ण गोयमा ! तेसिं देवाण एवतिय काल आउए पहुप्पते[6] तो ण ते देवा तेण चेव भवग्गहणेणं सिज्झता[7] •बुज्झता मुच्चता परिनिव्वायंता सव्वदुक्खाण° अंत करेता। से तेणट्ठेण[8] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ॥

अणुत्तरोववाइयदेव-पदं

८६. अत्थि ण भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
हंता अत्थि ॥

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाण देवाणं अणुत्तरा सद्दा[9], •अणुत्तरा रूवा, अणुत्तरा गधा, अणुत्तरा रसा, अणुत्तरा°फासा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ॥

८८. अणुत्तरोववाइया ण भंते ! देवा केवतिएण कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ?
गोयमा ! जावतिय छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेण अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. भ० १४।३।
२ पिक्काण (म, स)।
३. नवपज्जणएण (क, ता, स), नवपज्जवएण (म)।
४. लए (अ, क ख, ता, व), लवए (म, स)।
५. जति (अ, ख, म, स)।
६ वहुप्पते (अ, क); बहुप्पते (ख, व, म, स), पहुप्पते (ता)।
७ सिज्झेज्जा (ता); स० पा०—सिज्झता जाव अंते।
८. स० पा०—तेणट्ठेण जाव लवसत्तमा।
९ स० पा०—सद्दा जाव फासा।
१०. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

अबाहाए अंतर-पदं

९०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य[1] पुढवीए केवतिए[2] अबाहाए[3] अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९१. सक्करप्पभाए णं भते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य ॥

९२. अहेसत्तमाए णं भते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए अनरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

९३. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए [4]•अबाहाए अतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९४. जोतिसस्स ण भते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाणं केवतिए [5]•अबाहाए अतरे पण्णत्ते ?०
गोयमा ! असखेज्जाइं जोयण[6]•सहस्साइं अबाहाए° अंतरे पण्णत्ते ॥

९५. सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणकुमार-माहिदाण य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९६. सणंकुमार-माहिदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९७. बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९८. लंतयस्स ण भते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एव चेव । एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एव सहस्सारस्स आणय-'पाणयाण य कप्पाण'[7], एवं आणय-पाणयाण[8] आरणच्चुयाण य कप्पाण, एव आरच्चुयाण गेवेज्जविमाणाण य, एवं गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य ॥

---

१. × (अ, क, व, म) ।
२. केवतियं (अ, क, ख, ता, व, म, स) प्राय. ।
३. आवाहाए (अ, क, ता, स) सर्वत्र, अवाहे (ख); आवाहए (व, म) ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. स० पा०—जोयरा जाव अतरे ।
७. पाणयकप्पाण (क, स) ।
८. पाणयाण कप्पाण (अ, क, म) ।

९९. अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिपब्भाराए[1] य पुढवीए केवतिए [2]•अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! दुवालस जोयणे अबाहाए अतरे पण्णत्ते ॥

१०० ईसिपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए [3]•अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! देसूण जोयण अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

रुक्खाणं पुणब्भव-पद

१०१ एस ण भते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे काल किच्चा कहि गमिहिति[4] ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिती[5]। से ण तत्थ[6] अच्चिय-वदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय-पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ॥

१०२ से ण भते ! तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता कहि गमिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

१०३. एस ण भते ! साललट्ठिया[8] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे काल किच्चा[9] •कहि गमिहिति ?° कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विभगिरिपायमूले[10] महेसरिए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति। से[11] ण तत्थ अच्चिय-वदिय[12]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे° लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ॥

१०४ से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्टित्ता [13]•कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण° अत काहिति ॥

---

१. ईसि° (अ, क, ख, ता, ब, म)।
२ स० पा०—पुच्छा।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. गच्छिहिति (अ, क, ख, स)
५. पच्चाहिति (ता, ब, म)।
६ तत्था (क, ता, ब)।
७ भ० २।७३।
८. सालिलट्ठिल्लिया (ख); साललट्ठिल्लिया (ता)
९. स० पा०—किच्चा जाव कहिं।
१० विंज्झ° (क, ख, ता, ब)।
११ सा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१२ स० पा०—वदिय जाव लाउल्लोइय°।
१३ स० पा०—सेस जहा सालरुक्खस्स जाव अंत।

१०५. एस णं भंते ! उंबरलट्ठिया[1] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[2] •कहिं गमिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[3]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि° भविस्सइ ॥
१०६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता[4]•कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

अम्मड-अंतेवासि-पदं

१०७ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि [5]•जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानदीए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ नगराओ पुरिमतालं नयरं संपट्ठिया विहाराए ॥
१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुंजमाणे झीणे ॥
१०९. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुंजमाणे झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णा-वायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चं पि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि तं नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं

---

१. उंबरि° (अ, स) ।
२. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
३. सं० पा०—वंदिय जाव भविस्सइ ।
४. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव अंतं ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा ।

महानइं ओगाहित्ता वालुयासंथारए संथरित्ता संलेहणा-झूसियाणं भत्तपाण-पडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडेंति, एडेत्ता गंगं महानइं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता वालुयासंथारए संथरंति, संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरुहंति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—
नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[1] सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।
नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[2] संपाविउकामस्स।
नमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स।
पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं मुसावायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं अदिण्णादाणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं मेहुणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए।
जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंड-करंडग-समाणं मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय[1] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति।
तए णं ते परिव्वाया बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते।

---

१. ओ० सू० २१।
२. ओ० सू० २१।

१. विभक्तिरहितं पदम्।

तेसि णं भंते ! देवाण केवतियं काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! दससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

अत्थि ण भंते ! तेसि देवाण इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?

हंता अत्थि।

ते ण भते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?

हता अत्थि ॥०

अम्मड-चरिया-पदं

११०. बहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए [1]•आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ।

से कहमेय भते ?

एवं खलु गोयमा ! ज ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एव परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि एव भासामि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

१११. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ?

गोयमा ! अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसंपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पण्णा।

तए ण से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणल-द्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउ कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव।

११२ पहू ण भते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! अम्मडे ण परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवा-जीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-सवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बध-मोक्खकुसले असहेज्ज[1] देवासुरनाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, इणमो निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणि-च्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्ठे, अयं पर-मट्ठे, सेसे अणट्ठे, चउद्दसअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह अणुपालेमाणे, समणे निग्गथे फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण पीढफलगसेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहि-एहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ० जाव[2] दढप्पइण्णो अतं काहिति ।।

अव्वाबाहदेव-सत्ति-पद

११३. अत्थि ण भते ! अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
हता अत्थि ।।

११४ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
गोयमा ! पभू ण एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगसि अच्छि-पत्तसि दिव्व देविड्ढि, दिव्वं देवज्जुति, दिव्वं देवाणुभाग, दिव्व बत्तीसतिविहं नट्टविहि उवदंसेत्तए, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा बाबाह[3] वा उप्पाएइ, छविच्छेय वा करेइ, एसुहुमं[4] च ण उवदसेज्जा । से तेणट्ठेण[5] ०गोयमा! एव वुच्चइ०—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ।।

सक्कस्स सत्ति-पदं

११५ पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया पुरिसस्स सीसं सपाणिणा[6] असिणा छिंदित्ता कमडलुसि[7] पक्खिवित्तए ?
हंता पभू ।।

११६. से कहमिदाणि पकरेति ?
गोयमा ! छिंदिया-छिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, भिंदिया-भिंदिया च णं

---

१. विभक्तिरहित पदम् ।
२. ओ० सू० १२१-१५४ ।
३. पवाह (क, वृ); वावाह (वृपा) ।
४. एस्सुमुहं (ता, व, म) ।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ।
६. सापाणिणा (ख, ता, व) ।
७. कमडलुमि (अ, क, म); कमडलुपि (ख, व, स) ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया-चुण्णिया च ण पक्खिवेज्जा, तम्रो पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुम च णं पक्खिवेज्जा ॥

जंभगदेव-पद

११७. अत्थि ण भंते ! जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
हंता अत्थि ॥

११८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ?
गोयमा ! जभगा णं देवा निच्च पमुदित-पक्कीलिया कदप्परतिमोहणसीला। जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से णं पुरिसे महत अयसं पाउणेज्जा। जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से ण महंत जस पाउणेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—जंभगा देवा, जंभगा देवा ॥

११९. कतिविहा ण भते ! जभगा देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—अन्नजभगा, पाणजभगा, वत्थजंभगा, लेणजभगा, सयणजभगा, पुप्फजंभगा, फलजभगा, 'पुप्फ-फल-जभगा'[1], विज्जा-जभगा अवियत्तिजभगा[2] ॥

१२०. जंभगा ण भते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति ?
गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त-विचित्त-जमगपव्वएसु, कचणपव्वएसु य, एत्थ ण जंभगा देवा वसहिं उवेंति ॥

१२१. जंभगाण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ॥

१२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पदं

१२३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूविं[4] सकम्मलेस्सं जाणइ-पासइ ?

---

१. मतजभगा (वृपा)।
२. अहिवइजभगा (वृपा)
३. भ० १।५१।
४. सरूव (अ)।

हंता गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो[1] •कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, त पुण जीवं सरूवि सकम्मलेस्सं जाणइ °-पासइ ॥

१२४. अत्थि ण भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति[2] उज्जोएंति तवेंति पभासेंति ?

हंता अत्थि ॥

१२५. कयरे ण भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति ?

गोयमा ! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ[3] पभावेंति[4], एए ण गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति ॥

अत्ताणत्त-पोग्गल-पदं

१२६ नेरइयाण भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?

गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ॥

१२७ असुरकुमाराण भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?

गोयमा ! अत्ता पोग्गला, नो अणत्ता पोग्गला । एवं जाव[5] थणियकुमाराणं ॥

१२८. पुढविकाइयाण [6]•भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?°

गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एवं जाव[7] मणुस्साणं । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराणं ॥

इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पदं

१२९. नेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला ? अणिट्ठा पोग्गला ?

गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुण्णा वि भाणियव्वा । एए[8] पंच दंडगा ॥

देवाणं भासासहस्स-पदं

१३०. देवे ण भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ?

हंता पभू ॥

१३१. सा ण भंते ! किं एगा भासा ? भासासहस्सं ?

गोयमा ! एगा णं सा भासा, नो खलु तं भासासहस्सं ॥

---

१. स० पा०—अप्पणो जाव पासइ ।
२. तोभासति (क, म) ।
३. अभिनिस्सडाओ (क); अभिन्निस्सदाओ (ता)
४. पयावेंति (ता), पभावेंति एव (म, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. पू० प० २ ।
८. एव (अ, क, ब, म, स) ।
९. भ० १।३३९ ।

सूरिय-पदं

१३२. तेण कालेण तेणं समएण भगव गोयमे अचिरुग्गयं बालसूरिय जासुमणाकुसुम-पुजप्पकास लोहितग पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव[1] समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ[2], •उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे पज्जुवासमाणे° एवं वयासी—किमिदं भंते! सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स अट्ठे?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे॥

१३३ किमिद भते! सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स पभा?

[3]•गोयमा। सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा॥

१३४. किमिद भते सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स छाया?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया॥

१३५. किमिदं भते। सूरिए? किमिद भते! सूरियस्स लेस्सा?

गोयमा! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा° ॥

समणाणं तेयलेस्सा-पद

१३६. जे इमे भंते! अज्जत्ताए समणा निग्गथा विहरति, ते[4] णं कस्स तेयलेस्स वीईवयति?

गोयमा! मासपरियाए समणे निग्गथे वाणमतराण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ। दुमासपरियाए समणे निग्गथे असुरिदवज्जियाणं भवणवासीण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ।

एवं एएण[5] अभिलावेण—तिमासपरियाए समणे निग्गथे असुरकुमाराण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जोतिसियाण देवाण तेयलेस्स वीईवयई।

पंचमासपरियाए समणे निग्गंथे चदिम-सूरियाणं जोतिसिदाण जोतिसराईण तेयलेस्सं वीईवयइ।

छम्मासपरियाए[6] समणे निग्गथे सोहम्मीसाणाणं देवाण तेयलेस्स वीईवयइ।

---

१. भ० १।१०।

२. सं० पा०—उवागच्छइ जाव नमसित्ता जाव एव।

३. स० पा०—एवं चेव एवं छाया एव लेस्सा।

४. एते (क, ता, व, म, स), तए (ख)।

५. तेतेण (व)।

६. छमास° (स)।

सत्तमासपरियाए समणे निग्गथे सणकुमार-माहिंदाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।
अट्ठमासपरियाए समणे निग्गथे बभलोग-लंतगाण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ।
नवमासपरियाए समणे निग्गथे महासुक्क-सहस्साराण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ।
दसमासपरियाए समणे निग्गंथे आणय-पाणय-आरणच्चुयाणं देवाणं तेयलेस्स वीईवयइ।
एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गथे गेवेज्जगाण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ।
बारसमासपरियाए समणे निग्गथे अणुत्तरोववाइयाण देवाणं तेयलेस्स वीईवयइ।
तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाण॰ अत करेति॥

१३७. सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

केवलि-पदं

१३८. केवली ण भते! छउमत्थ[3] जाणइ-पासइ?
हता जाणइ-पासइ॥

१३९. जहा ण भते! केवली छउमत्थं जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ-पासइ?
हता जाणइ-पासइ॥

१४०. केवली ण भते! आहोहिय[4] जाणइ-पासइ? एवं चेव। एवं परमाहोहियं[5], एवं केवलिं, एव सिद्धं जाव—

१४१ जहा ण भते! केवली सिद्धं जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि सिद्ध जाणइ-पासइ?
हता जाणइ-पासइ॥

---

१. स० पा०—सिज्झति जाव अत।

२ भ० १।५१।

३. छदुमत्थ (ता); छतुमत्थ (ब)।

४. आधोधिय (अ, स), आवोधीयं (क); आहोधिय (ख); अधोविय (ता); आधोविय (व), आधोहिय (म)।

५. परमावधिय (अ), परमावोहियं (क); परमोविय (ख); परमहोहियं (ता); परमाधोविय (व); परमाधोहियं (म, स)।

१४२. केवली ण भंते ! भासेज्ज वा ? वागरेज्जा वा ?
हता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ॥

१४३. जहा ण भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा, तहा ण सिद्धे वि भासेज्ज वा वागोज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
गोयमा ! केवली ण सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे[1] •अकम्मे अबले अवीरिए° अपुरिसक्कारपरक्कमे। से तेण-ट्ठेण[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जहा ण केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा° वागरेज्ज वा ॥

१४५. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा ? निम्मिसेज्ज वा ?
हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ॥

१४६. जहा ण भंते ! केवली उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि उम्मि-सेज्ज वा निम्मसेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एवं चेव[3]। एव आउंटेज्ज[4] वा पसारेज्ज वा, एव ठाण वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ॥

१४७. केवली णं भते ! इम रयणप्पभ पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥

१४८. जहा ण भते ! केवली इम रयणप्पभं पुढवि रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढवि रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥

१४९. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ? एव चेव। एव जाव अहेसत्तम ॥

१५०. केवली णं भते ! सोहम्मं कप्प सोहम्मकप्पे त्ति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ। एव चेव। एवं ईसाण, एव जाव अच्चुय ॥

१५१. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणं गेवेज्जविमाणे त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एव अणुत्तरविमाणे वि ॥

१५२. केवली णं भते ईसिंपब्भारं पुढविं ईसिंपब्भारपुढवीति जाणइ-पासइ ? एव चेव ॥

---

१. स० पा०—अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार°।
२. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज।
३. भ० १४।१४४।
४. आउट्टेज्ज (अ, स); आउट्टावेज्ज (क म); आउंट्टावेज्ज (ख, ता); आउंटावेज्ज (ब)।

१५३. केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गले त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं दुपएसियं खंधं, एवं जाव—

१५४. जहा णं भंते ! केवली अणंतपएसियं खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि अणंतपएसियं[1] °खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ°-पासइ ? हंता जाणइ-पासइ ॥

१५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

[1] पा०—अणंतपएसियं जाव पासइ ।

[2] १।५१ ।



पन्नरसमं सतं

नमो सुयदेवयाए भगवईए[1]

गोसालग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे[3] दिसीभाए, तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए हालाहला[5] नामं कुंभकारी आजीविओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव[6] बहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो! आजीवियसमये अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएण गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

३ तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा[7] अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे, कलंदे[8], कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते[9]॥

४. तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविहं[10] पुव्वगय मग्गदसमं 'सएहिं-सएहिं'[11] मतिदसणेहिं निज्जूहंति[12], निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइसु॥

---

१. एतद् वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति।
२. ओ० सू० १।
३. ०पुरच्छिमे (स)।
४. ओ० सू० २-१३।
५. हालाहाला (ता, स)।
६. भ० २।९४।
७. दिक्चरा भगवच्छिष्याः पार्श्वस्थीभूता इति टीकाकार: 'पासावच्चिज्ज' त्ति चूर्णिकार: (वृ)।
८. कणदे (क, ता, म)।
९. गोतमपुत्ते (क, ब, म)।
१०. निमित्तमिति शेष (वृ)।
११. सतेहिं २ (अ, क, ब, म, स)।
१२. निजूहति (ता, स); निज्जु ति (ब, म)।

५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा ॥

६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे[1] विहरइ ॥

७. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-[2]॰तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[3], ॰एवं भासइ, एवं पण्णवेइ॰, एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[4], ॰अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं॰ पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं मन्ने एवं?

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पडिगया ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं[6] ॰सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से॰ छट्ठंछट्ठेणं [7]॰अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए।

---

१. पभासेमाणे (ग, ता)।
२. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
३. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।
४. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे।
५. भ० १।७,८।
६. सं० पा०—गोत्तेणं जाव छट्ठंछट्ठेणं।
७. सं० पा०—एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

११. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥

१२. तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव[1] जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं मन्ने एवं ?

१३. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे[2] •जाव[3] समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सावत्थीओ नगरीओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ![4] •छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणियं[5] परिकहियं ॥

१४. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। तण्णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—

---

१. भ० १५।६।

२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ जाव पज्जुवासमाणे।

३. भ० १।१०।

४. सं० पा०—छट्ठं तं चेव जाव जिणसद्दं।

५. °परियाणिण (अ,व,स); °पारियाणं (ता)।

एव खलु एयस्स गोसालस्स मंखलीपुत्तस्स मखली नाम मखे पिता होत्था । तस्स ण मखलिस्स मंखस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] पडिरूवा । तए णं सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था ।।

१५. तेण कालेण तेणं समएणं सरवणे नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे जाव[2] नदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ णं सरवणे सण्णिवेसे गोवहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[3] वहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेद जाव[4] वंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था ।।

१६ तए णं से मखली मंखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धि चित्त-फलगहत्थगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि भडनि-क्खेव करेइ, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणे अण्णतथ वसहि अलभमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि वासावास उवागए ।।

१७. तए ण सा भद्दा भारिया नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीतिक्कताण सुकुमालपाणिपायं जाव[5] पडिरूवग दारग पयाया ।।

१८. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कते[6] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते॰ 'वारसमे दिवसे'[7] अयमेयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्नं नामधेज्ज करेंति—जम्हा ण अम्हं इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए त होउ ण अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्ज गोसाले-गोसाले त्ति । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्ज करेति गोसाले त्ति ।।

१९ तए ण से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[8]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्क[9] चित्तफलग करेइ, करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मखत्तणेणं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

---

१ ओ० सू० १५ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. भ० २।९४ ।
४. भ० २।२४ ।
५. भ० ११।१३४ ।
६. स० पा०—वीतिक्कते जाव वारसमे ।
७. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, व); वारसहे दिवसे (म); वारसाहे दिवसे (स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
८. विण्णाय (अ, स) ।
९. पडिएक्कं (क, ता, व) ।

भगवओ विहार-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं[2] समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए जाव[3] एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ॥

२१. तए णं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं[5] वासावासं उवागए[6]। दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि[7] वासावासं उवागए ॥

पढम-मासखमण-पदं

२२. तए णं अहं गोयमा ! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

२३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[8] दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय[9]-°मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे° अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा !

२४. तए णं अहं गोयमा ! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्ख-मामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं[10] बाहिरियं मज्झंमज्झेणं[11] निग्गच्छामि, निग्ग-च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

---

१. आगारवासमज्झे वसित्ता (अ, ख, ब, म, स), अगारवासमज्झे वसित्ता (क), अगार-वासे वसित्ता (ता); अगारवास—गृहवास-मध्युष्य इति वृत्तिगतव्याख्यानुसारेण प्रस्तुत-पाठः स्वीकृतः ।

२. देवत्तिगएहिं (क, ख, ता म); देवत्तेगतेहिं (ब, स) ।

३. आयारचूला १५।२६-२९ ।

४. पव्वइत्तए (ता, स) ।

५. अंतरावासं (क, म, वृपा) ।

६. उवगए (ता) ।

७. एगदेसम्मि (ब) ।

८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

९. सं० पा०—नीय जाव अण्णत्थ ।

१०. नालदा (अ) ।

११. मज्झेणं २ (क, ख, ता, ब, म) ।

उच्च-नीय[1]-•मज्झिमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

२५. तए ण से विजए गाहावई मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[2]-•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता मम विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

२६ तए ण तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

२७. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[4] •एव भासइ एवं पण्णवेइ° एव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स ॥

२८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुम निवडियं, मम च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं

---

१. स० पा०—नीय जाव अडमाणे।

२. स० पा०—हट्ठतुट्ठ।

३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

४. स० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! मम धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ।।

२९. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ।।

दोच्च-मासखमण-पदं

३०. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला[1], तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासखमणं[2] उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ।।

३१. तए णं अहं गोयमा ! दोच्च[3]-मासखमणपारणगंसि[4] तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे[5] •तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ।।

३२. तए णं से आणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, [6]•पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ।।

३३. तए णं तस्स आणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ।।

३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. तंतवाय° (ता) सर्वत्र ।
२. मासखवणं (ता) ।
३. दोच्चं (अ, क, ब, म, स) ।
४. मासक्खमणंसि (ता, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—नगरे जाव अडमाणे ।
६. सं० पा०—एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं ।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! आणदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पच दिव्वाइं पाउब्भूयाइ, त जहा वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणदस्स गाहावइस्स, आणदस्स गाहावइस्स ॥

३५ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव आणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहार वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, मम च ण आणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भं धम्मतेवासी ॥

३६ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

तच्च-मासखमण-पदं

३७. तए ण अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद बाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता॰ तच्च मासखमण उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥

३८. तए ण अह गोयमा ! तच्च[1]-मासखमणपारणगंसि ततुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता [2]॰नालद बाहिरिय मज्झमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे सुणदस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

३९ तए ण से सुणदे गाहावई [3]॰मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए

---

१. तच्च (क, ख, व) ।

२. स॰ पा॰—तहेव जाव अडमाणे ।

३ स॰ पा॰ —एव जहेव विजयगाहावई नवर सव्वकामगुणिएण भोयणेणं पडिलाभेइ सेस त चेव जाव चउत्थ ।

णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता ममं विउलेण सव्वकामगुणिएण भोयणेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४०. तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! सुणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणदस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइं, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणदस्स गाहावइस्स ॥

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणदस्स गाहावइस्स गिहसि वसुहार वुट्ठ, दसद्धवण्ण कुसुम निवडिय, मम च ण सुणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ धम्मतेवासी ॥

४३ तए णं अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

चउत्थ-मासखमण-पद

४४. तए णं अह गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता॰ चउत्थं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

४५. तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते, एत्थ णं कोल्लाए नामं सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ[1]। तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय जाव[3] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ॥

४६ तए णं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं माहणे आयामेत्था ॥

४७ तए णं अहं गोयमा! चउत्थ-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे उच्च-नीय[4]-॰मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

४८ तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं[5]॰पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४९ तए णं तस्स बहुलस्स माहणस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

५०. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. भ० १५।१५।
२ भ० २।९४।
३ भ० २।२४।
४. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।
५. सं० पा०—तहेव जाव ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं जहा विजयस्स जाव बहुले माहणे २।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स ण गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पच दिव्वाइं पाउब्भूयाइ, त जहा— वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स° ॥

५१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भितरबाहिरियाए मम सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, मम कत्थवि[1] सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव ततुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ[2] य कुंडियाओ य वाहणाओ[3] य चित्तफलगं च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं भडं[4] कारेइ, कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालदं बाहिरियं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ॥

५२. तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, [5]°कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म°जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ॥

गोसालस्स सिस्सरूवेण अंगीकरण-पदं

५३. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था— जारिसिया ण मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती[7] जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती[8] °जसे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे लद्धे पत्ते

---

१. कत्थति (अ, क, ख, ब, म), कत्थइ (ता) ।
२. × (ता); भंडियाओ (वृपा) ।
३. पाहणाओ (क, ख, ता, ब, म) ।
४. मुंड (अ, ता) ।
५. स० पा०—त चेव जाव जीवियफले ।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जुत्ती (क, ब, म) ।
८. स० पा०—जती जाव परक्कमे ।

अभिसमण्णागए, तं निस्सदिद्धं[1] ण एत्थ[2] मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोल्लाए सण्णिवेसे सब्भितरबाहिरिए[3] ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेइ, मम सव्वओ[4] •समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणे 'कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स'[5] बहिया पणियभूमीए मए सद्धि अभिसमण्णागए ॥

५४. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] •करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुब्भ अतेवासी ॥

५५ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेमि ॥

५६ तए ण अहं गोयमा ! गोसालेण मंखलिपुत्तेण सद्धि पणियभूमीए छव्वासाइं लाभ अलाभ सुह दुक्खं सक्कारमसक्कार पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं[7] विहरित्था ॥

तिलथंभय-पद

५७ तए ण अह गोयमा ! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगर संपट्ठिए विहाराए । तस्स ण सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ ण महं एगे तिलथभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

५८ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते त तिलथभग पासइ, पासित्ता ममं वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस णं भते ! तिलथभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला ! एस णं तिलथभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ । एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसंगलियाए[8] सत्त तिला पच्चायाइस्सति ॥

५९ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव आइक्खमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए[9]

---

१. निस्सदिद्ध (ख, म), निस्सदिद्धे (स) ।
२ एत्थ (अ, ता, व, म) ।
३ सब्भंतर° (अ, ख) ।
४. सं० पा० —सव्वओ जाव करेमाणे ।
५. कोल्लागसण्णिवेसस्स (अ, स) ।
६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता ।
७. कुर्वन्निति वाक्यशेष. (वृ) ।
८ °मुग° (ता) ।
९. पणिहाय (ता) ।

'अयं णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं तिलथंभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते एडेइ। तक्खणमेत्तं च णं गोयमा ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति[1], खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलपफुसियं[2] रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता॥

वेसियायण-बालतवस्सि-पदं

६०. तए णं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि। तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयट्ठयाए च णं पडियाओ-पडियाओ 'तत्थेव-तत्थेव'[3] भुज्जो-भुज्जो पच्चोरुभेइ॥

६१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासित्ता मम अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी—किं भवं मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ?

६२. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

६३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किं भवं मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'[4]

६४. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरइ॥

---

१. °तणाए (अ, ख), °तणाएति (स)।
२. °पप्फुसियं (अ, ब)।
३. तत्थेवा २ (क, ता, ब, म)।
४. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
५. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

६५. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[1] एत्थ ण अंतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि, जाए सा मम सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा[2] तेयलेस्सा पडिहया ।।

६६ तए ण से वेसियायणे वालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं[3] तेयलेस्स पडिहय जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाह वा वावाह वा छविच्छेदं वा अकीरमाण पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता मम एवं वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव !

६७. तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम एवं वयासी—कि ण भते ! एस[4] जूयासिज्जायरए तुब्भे एव वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव ?

६८. तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—तुम णं गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सि पाससि, पासित्ता मम अतियाओ सणिय-सणियं पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए ण से वेसियायणे वालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए सचिट्ठइ । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—कि भवं मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'[5] तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तुम दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगसि तेयलेस्स निस्सिरइ । तए ण अहं गोसाला ! तव अणुकपणट्ठयाए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[6] एत्थ णं अतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि[7], •जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स वालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया । तए ण से वेसियायणे वालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण तेयलेस्सं° पडिहय जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आवाह वा वाबाह वा छविच्छेद वा अकीरमाण

१. तेयपडि° (क, म), सा तेय° (ख, व, स), साउसिणतेय° (ता), अत्र अनेके पाठभेदा दृश्यन्ते । शीतलतेजोलेश्यासन्दर्भे 'उसिण' पदमावश्यकमस्ति । ६८ सूत्रे अस्यैव प्रसङ्गस्य पुनरुक्तौ 'ता' प्रतौ 'उसिणतेय' इति पाठो दृश्यते । तेनापि 'उसिण' पदस्य पुष्टिर्जायते ।

२. उसुणा (क, ख, ता, व), साउसिणा (स) ।

३ त उसिण (अ, ता), सीओसिण (स) ।

४. एसे (ख, ता, व) ।

५ जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, व, स) ।

६. सायतेय° (अ, ख, व), तेय° (क, म), सीओसिणतेय° (स) ।

७. स० पा०—निसिरामि जाव पडिहय ।

पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी—से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं !

६९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?

७०. तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ॥

७१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते मम एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेति ॥

तिलथंभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं

७२. तए णं अहं गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गामं नगरं संपट्ठिए[3] विहाराए। जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते। तदा मम एवमाइक्खह जाव परूवेह—गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। [4]•एते य सत्त तिल-पुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला° पच्चायाइस्सति, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ—एस णं से तिलथंभए नो निप्फन्ने, अनिप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥

७३. तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुमं णं गोसाला ! तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए 'अयण्णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चो-सक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता[5] •तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता•एगंतमंते एडेसि। तक्ख-णमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए

---

१. स० पा०—भीए जाव संजायभए।
२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
३. संपत्थिए (अ, क, ख, व, म); पत्थिए (ता)।
४ स० पा—तं चेव जाव पच्चायाइस्सति।
५. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव एगंतमंते।

खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव [1]•पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदग णातिमट्टिय पविरलपफुसिय रयरेणुविणासण दिव्व सलिलोदग वास वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते वद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। तं एस ण गोसाला ! से तिलथभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभयस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एव खलु गोसाला ! वणस्सइकाइया पउट्टपरिहार परिहरति ॥

७४ तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते मम एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[2] अरोएमाणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथंभयाओ त तिलसगलिय खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलसि सत्त तिले पप्फोडेइ ॥

७५. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहार परिहरति—'एस ण गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स पउट्टे[4], एस ण गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णत्ते ॥

गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पद

७६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिडियाए एगेण य वियडासएण छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेसे जाए ॥

गोसालस्स पुव्वकहा-उवसहार-पदं

७७. तए ण तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अतियं पाउब्भवित्था, त जहा—साणे[6], [7]•कलंदे, कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमायुपुत्ते। तए ण त छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगय मग्गदसम सएहिं-सएहि मतिदसणेहिं निज्जूहति, निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्त उवट्ठाइसु।

---

१ स० पा०—त चेव जाव तस्स।
२ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. × (ता)।
५. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
६. साले (ब)।
७ स० पा०—त चेव सव्व जाव अजिणे।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोय-मेत्तेणं सव्वेसिं पाणाण, सव्वेसिं भूयाण, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताण इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभ सुह दुक्ख, जीवियं मरण तहा ।

तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी °, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोयमा ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले ण मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी[2], •अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्ण सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं° पगासेमाणे विहरइ ॥

७८. तए ण सा महतिमहालया महच्चपरिसा [3]•समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्ण देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ त मिच्छा । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मखली नाम मखे पिता होत्था । तए ण तस्स मखस्स एव चेव त सव्व भाणियव्व जाव[5] अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त नो खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ ॥

८०. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता सावत्थि नगरिं मज्झमज्झेण[7] जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारा-

---

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।
२. स० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।
३. स० पा०—जहा सिवे जाव पडिगया ।
४. स० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।
५. भ० १५।१४-७६ ।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
७ लेखसक्षेपकरणेन 'निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता' इति पाठो न दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१५।२४ ।

वणे[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि[2] आजीवियसंघसंपरिवुडे[3] महया अमरिसं वहमाणे एवं चावि विहरइ ॥

गोसालस्स आणंदथेरसमक्खं अक्कोसपदंसण-पद

८१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए जाव[4] विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८२. तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयम-सामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव[5] उच्च-नीय-मज्झिमाइं[6] °कुलाइं घरसमुदा-णस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ ॥

८३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारा-वणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि ॥

८४ तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ॥

८५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! इत्तो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया[7] वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए नाणाविहविउलपणियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं[8] गहाय एगं महं अगामियं[9] अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा ॥

८६. तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे[10] ॥

८७ तए णं ते वणिया झीणोदगा[11] समाणा तण्हाए परब्भमाणा[12] अण्णमण्णं सद्दावेंति,

---

१. कुंभकारावदणे (ता) ।
२. कुंभकारावदणंसि (ता) ।
३. °संघपरिवुडे (ता, ब, म) ।
४. भ० १।२८८ ।
५. भ० २।१०७-१०९ ।
६. स० पा०—मज्झिमाइं जाव अडमाणे ।
७. उच्चावगा (म, ता, ब, स) ।
८. पत्थायणं (ता) ।
९. आगामियं (अ, म, स), अकामियं (क, ख, ता) ।
१०. खीणे (अ, क, म, स) ।
११. खीणोदगा (म, स) ।
१२. परिभवमाणा (अ, स), परिब्भममाणा (ता); परब्भवमाणा (म) ।

सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए[1] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए° अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे णं अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति—किण्हं किण्होभासं जाव[2] महामेहनिकुरंबभूयं[3] पासादीयं[4] •दरिसणिज्जं अभिरूवं° पडिरूवं।

तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगं वम्मीयं[5] आसादेंति। तस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ[6] अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ[7] •दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ॥

८८. तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए[8] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगस्स° सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे। इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए। इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ[9], •अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं[10] भिंदित्तए, अवियाइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो॥

८९. तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवण्णाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति, पिबित्ता वाहणाइं पज्जेंति, पज्जेत्ता भायणाइं भरेंति, भरेत्ता दोच्चं पि अण्णमण्णं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स

---

१. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए।
२. ओ० सू० ४।
३. °निकुरुंबभूयं (क, ख, ता, ब, म)।
४. सं० पा०—पासादीयं जाव पडिरूवं।
५. वम्मियं (अ, क)।
६. वप्पू (अ, क): वप्पूओ (ख, म)।
७. सं० पा०—पासादियाओ जाव पडिरूवाओ।
८. सं० पा०—अगामियाए जाव सव्वओ।
९. सं० पा०—अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ।
१०. वप्पिं (अ, स); वप्पुं (क, ब, म)।

पढमाए वप्पूए[1] भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९० तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं[2] महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए[3], दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९१ तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं[4] भिंदित्तए, अवियाइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ॥

९२ तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे[5] °अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए°, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे, एसा चउत्थी वप्पू[6] मा भिज्जउ, चउत्थी णं वप्पू सउवसग्गा यावि होत्था ॥

९३. तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स[7] °पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स° हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स

---

१ वप्पाए (अ, म, स) ।
२. तवणिज्जं (अ, क, ब, म, स) ।
३. आसादिए (म, स) ।
४. वप्प (अ, म, स) ।
५. सं० पा०—उदगरयणे जाव तच्चाए ।
६. वप्पा (ता) ।
७. सं० पा०—सुहकामगस्स जाव हिय ।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, 'नो पत्तियंति'[1] नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा[2] अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थ पि वप्पु भिंदंति। ते णं तत्थ उग्गविस चंडविस घोरविसं महाविसं 'अतिकायं महाकायं'[3] मसिमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगास रत्तच्छं जमलजुयल-[4] चंचलचलतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं 'समुहं तुरिय चवल'[5] धमंत दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति ॥

९४. तए ण से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सणियं-सणियं उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं द्रुहति[7], द्रुहित्ता आदिच्चं निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति ॥

९५. तए ण ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेण सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि[8] होत्था। तत्थ ण जे से वणिए तेसिं वणियाण हियकामए[9] •सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए° हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियग नगर साहिए ॥

९६. एवामेव आणंदा! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वति, गुव्वति[10], थुव्वंति[11]—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे। तं जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेण तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च ण आणंदा! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए जाव[12] निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंड[13]•मत्तोवगरणमायाए नियगं नगर° साहिए। त गच्छ[14] ण तुम आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. अतिकायमहाकाय (क, ख, ता, म)।
४. °जुवल (अ, ख, ब, स)।
५. समुहिं तुरियचवलं (अ, क, ख, ता, ब); समुदियतुरियचवल (वृ)।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७. द्रुहेति (क, ता, म); दुरुहति (स)।
८. वि (क, ता, ब)।
९. स० पा० हियकामए जाव हिय।
१०. × (अ, क, ख, ता); गुवति (ब, म)।
११. तुवति (क, ख), × (ब, म), 'थुवंति' त्ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभमती' ति दृश्यते (वृ)।
१२. भ० १५।९२।
१३. स० पा०—सभंड जाव साहिए।
१४. गच्छाहि (ब, म)।

आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पदं

९७. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेण मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव[1] सजाय-भए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय[2]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए[3] •कुंभकारावणस्स अदूरसामंते °वीइवयामि, तए णं गोसाले मखलिपुत्ते ममं हालाहलाए[4] •कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं° पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि ।

तए णं अहं गोसालेणं मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि ।

तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] नियगं नगरं साहिए । तं गच्छ णं तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स[6] •समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं° परिकहेहि ॥

९८. तं पभू णं भंते ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए ? विसए णं भंते ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स[7] •तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए ? समत्थे णं भंते ! गोसाले[8] •मखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए ?

पभू णं आणंदा ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं[9] •तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए । विसए णं आणंदा ! गोसालस्स[10] •मखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए । समत्थे णं आणंदा ! गोसाले[11]

---

१. भ० १५।६६ ।
२. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे ।
३. सं० पा०—कुंभकारीए जाव वीइवयामि ।
४. सं० पा०—हालाहलाए जाव पासित्ता ।
५. भ० १५।८५-९५ ।
६. सं० पा०—धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि ।
७. सं० पा०—मखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए ।
८. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।
९. सं० पा०—तवेणं जाव करेत्तए ।
१०. सं० पा०—गोसालस्स जाव करेत्तए ।
११. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।

•मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणिय[1] पुण करेज्जा। जावतिए णं आणदा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'[2], एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो। जावइए णं आणदा! अणगाराण भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवताणं, खतिखमा पुण थेरा भगवंतो। जावतिए णं आणंदा! थेराण भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहंताणं भगवंताण, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो। तं पभू णं आणदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं[3] •एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेत्तए, विसए णं आणदा[4]! •गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए, समत्थे ण आणदा[5]! •गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा॥

आणंदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं

९९. तं गच्छ णं तुमं आणंदा! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि—मा णं अज्जो! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मखलिपुत्ते समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने॥

१००. तए णं से आणदे थेरे समणेण भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निग्गंथे आमंतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्वं जाव[6] 'गोयमाईणं समणाण निग्गंथाणं'[7] एयमट्ठं परिकहेहि, त मा णं

१. परियावणिय (अ, स)।
२. तवतेए (स) सर्वत्र।
३. स० पा०—तेएणं जाव करेत्तए।
४. सं० पा०—आणदा जाव करेत्तए।
५. सं० पा०—आणंदा जाव करेत्तए।
६. भ० १५।८२-९९।
७. नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, व, म, स); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गपर्यालोचनया नैष संगच्छते। 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्रष्टव्यं १५।९६। यदि एतदन्तः पाठोत्र विवक्षितः स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणेभ्य. तदर्थज्ञापनस्य निर्देशन—एतत् सर्व तस्मिन् पाठे नैव प्राप्तं भवेत्। कथ च आनन्दः भगवतः निर्देशमश्रावयित्वा गौतमादिभ्य. 'त माणं अज्जो' इत्यादि निर्देश कुर्यात्? एतत् न स्वाभाविकम्। तेन प्रतीयते अत्र पाठसक्षेपीकरणे

अज्जो ! तुब्भं केई गोसाल मंखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ[1], •धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहि निग्गथेहि° मिच्छ विप्पडिवन्ने ॥

गोसालस्स भगवंत पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवण-पदं

१०१. जाव च ण आणंदे थेरे गोयमाईण समणाण निग्गथाण एयमट्ठं परिकहेइ, ताव च ण से गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसघसंपरिवुडे महया अमरिस वहमाणे सिग्घ तुरिय[2] सावत्थि नगरिं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एवं वदासी—सुट्ठु णं आउसो कासवा ! मम एवं वयासी, साहू ण आउसो कासवा ! ममं एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते ममं धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते ममं धम्मतेवासी ।

जे ण से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मतेवासी से ण सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु[3] देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नाम कुडियायणीए[4] अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि ।

जे वि आइ आउसो कासवा ! अम्ह समयंसि केइ सिज्झिसु वा सिज्झति वा सिज्झिस्सति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइ, सत्त दिव्वे, सत्त सजूहे, सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पच कम्मणि[5] सयसहस्साइ सट्ठिं च सहस्साइ छच्च सए तिण्णि य कम्मसे अणुपुव्वेण खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति[6] सव्वदुक्खाणमंत करेसु वा करेंति वा करिस्सति वा ।

से जहा वा गगा महानदी जओ पवूढा, जहि वा पज्जुवत्थिया[7], एस णं अद्धा पचजोयणसयाइ आयामेण, अद्धजोयण विक्खभेण, पच धणुसयाइ उव्वेहेणं ।

लिपिकरणे वा कश्चिद् विपर्ययो जातः । प्रसङ्गानुसारेण 'जाव' पदस्यानन्तर 'गोयमाईण समणाण निग्गथाणं एयमट्ठ परिकहेहि' इति पाठ. उपयुज्यते ।

१. स० पा०—पडिचोएउ जाव मिच्छ ।

२. तुरिय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स); दष्टव्यम्—भ० १५।६७ ।

३. अण्णतरेसु चेव (ता) ।

४. कडियायणिए (क, म); कुडियणिए (ता) ।

५ कम्मुणि (अ, ख, ता); कम्माणि (क); कर्मणामित्यर्थः (वृ) ।

६. परिनिव्वाइति (अ, ख, स) ।

७. पज्जवत्थिया (अ, क, स); पज्जुपत्थिया (ता) ।

एएणं गगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा। सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा। सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मदुगंगा[1]। सत्त मदुगंगाओ सा एगा लोहियगगा। सत्त लोहियगगाओ सा एगा आवतीगगा[2]। सत्त आवतीगंगाओ सा एगा परमावती। एवामेव सपुव्वावरेणं एग गगासयसहस्स सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्न[3] गगासया भवतीति मक्खाया।

तासि दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमबोदिकलेवरे चेव, बायरबोदिकलेवरे चेव। तत्थ ण जे से सुहुमबोदिकलेवरे से ठप्पे। तत्थ ण जे से बायरबोंदिकलेवरे तओ ण वाससए गए, वाससए गए एगमेग गंगाबालुयं अवहाय जावतिएण कालेण से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे। एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे।

१. अणताओ सजूहाओ जीवे चय चइत्ता उवरिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जति। से ण तत्थ[4] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चयं चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

२. से ण तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[5] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चयं° चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

३. से णं तओहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

४. से ण तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइं जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

५. से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता पचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

६. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

---

१. महुगगा(ब); मद्धुगगा(म); मच्चुगगा(क्व०)।
२. अवतीगगा (क, ख, ब, म)।
३. गुणपण्णं (अ. स); अगुणपण्णा (ता)।
४. तत्था (ता)।
५. स० पा०—आउक्खएण जाव चइत्ता।

७. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता—बंभलोगे नाम से कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए जाव[1] पडिरूवा—से णं तत्थ देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता सत्तमे सण्णि-गब्भे जीवे पच्चायाति।

से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कताणं सुकुमालगभद्दलए मिउ-कुंडलकुंचिय[2]-केसए मट्ठगंडतल-कण्णपीढए देवकुमार-सप्पभए दारए पयाति। से णं अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तं जहा—१ एणेज्जस्स २ मल्लरामस्स ३. मंडियस्स[3] ४. रोहस्स ५. भारद्दाइस्स ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स।

तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिंसि चेइयंसि उदाइस्स कुंडियायणस्स सरीरं विप्पजहामि, विप्पज-हित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयर-णंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नगरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहा-वणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से पंचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकाल-गंसि[4] चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं

---

१. प० २।

२. कुंतल० (ता)।

३. मंडिसस्स (क, ता, व)।

४. कालगयंसि (स)।

अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइ पचम पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

तत्थ ण जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोडियायणसि[1] चेइयसि भारद्दाइस्स[2] सरीर विप्पजहामि, विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइ छट्ठ पउट्टपरिहार परिहरामि ।

तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अल थिर धुव धारणिज्ज सीयसह उण्हसहं खुहासह विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसह थिरसघयण ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइं इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा ! एगेण तेत्तीसेण वाससएण सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवतीति मक्खाया, त सुट्ठु ण आउसो कासवा ! मम एवं वयासी —साहू णं आउसो कासवा ! मम एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी ।।

भगवया गोसालगवयणस्स पडियार-पद

१०२. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला ! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहि परब्भमाणे[3]-परब्भमाणे कत्थ य गड्ड वा दरि वा दुग्गं वा णिण्ण[4] वा पव्वय वा विसम वा अणस्सादेमाणे[5] एगेण मह उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण[6] वा तणसूएण वा अत्ताण आवरेत्ताण चिट्ठेज्जा, से ण अणावरिए आवरियमिति अप्पाण मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाण मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुम पि गोसाला ! अणण्णे सते अण्णमिति अप्पाण उपलभसि, त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ।।

गोसालस्स पुणरक्कोस-पदं

१०३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे समण भगवं महावीर उच्चावयाहि

---

१. कडियायणसि (स) ।
२. भारद्दाइयस्स (अ, ता, स) ।
३. परिब्भमाणे (ता); पारब्भमाणे (म); परज्झमाणे (स) ।
४. णिण (क, ता); णिल्ल (म) ।
५. अणासा० (ता) ।
६. ०पोम्हेण (क, ख); ०पोमेण (ता) ।

आओसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहिं उद्धसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहिं 'निब्भछणाहिं निब्भछेति'[1], उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी– नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो सुहमत्थि[2] ॥

गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासीकरण-पदं

१०४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए[3] सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे° विणीए धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी––जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं[5] धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वदति नमंसति[6] •सक्कारेति सम्माणेति° कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ[7] चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? तं मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

१०५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेति ॥

१०६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ[8], •उच्चावयाहिं उद्धसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहिं निब्भछणाहिं निब्भछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी––नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि ॥

गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाण-

---

१. णिब्भच्छणाहिं णिब्भच्छेइ (ता)।
२. सुहनत्थि (अ, स)।
३. पदीण° (क, म); पडीण° (ता, ब)।
४. सं० पा०––पगइभद्दए जाव विणीए।
५. यारियं (अ, ता, ब, म)।
६. सं० पा०––नमंसति जाव कल्लाणं।
७. भगवया (क, ख, ता, ब)।
८. सं० पा०––आओसइ जाव सुहमत्थि।

वए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[1] विणीए धम्मायरियाणुरागेणं [2]•एयमट्ठ असद्दहमाणे उठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मखलिपुत्त एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतियं एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण निसामेति, से वि ताव वदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मगलं देवय चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने? त मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला!° सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा॥

१०८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्तेण अणगारेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्तं अणगारं तवेण तेएणं परितावेइ॥

१०९. तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेण तेएण परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए॥

गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद

११०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगार तवेण तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समण भगवं महावीरं उच्चावयाहि आओसणाहिं आओसइ, [3]•उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि निब्भछणाहि निब्भंछेति, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि॥

१११. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा [4]•अतियं एगमवि आरियं धम्मिय सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवय चेइयं° पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला! तुम मए चेव पव्वाविए[5],

---

१. भ० १५।१०४।

२. सं० पा०—जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव।

३. सं० पा०—सव्व तं चेव जाव सुहमत्थि।

४. सं० पा०—तं चेव जाव पज्जुवासति।

५. सं० पा०—पव्वाविए जाव मए।

•मए चेव मुंडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए°, मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? त मा एवं गोसाला[1] ! •नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया° नो अण्णा ॥

११२. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि तेयं निसिरति—से जहानामए वाउक्कलिया[2] इ वा वायमडलिया इ वा सेलसि[3] वा कुड्डसि वा थभसि वा थूभसि वा आवारिज्जमाणी[4] वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से ण तत्थ नो कमति नो पक्कमति अचियंचि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता उड्ढं वेहास उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे[5] तमेव गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अतो-अतो अणुप्पविट्ठे ॥

११३. तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीर एव वयासी—तुम ण आउसो कासवा ! मम तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥

११४. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—नो खलु अह गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह[6] •मासाण पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव° काल करेस्सामि, अहण्णं अण्णाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि। तुम ण गोसाला ! अप्पणा चेव सएणं तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए[7] छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥

सावत्थीए जणपवाद-पदं

११५. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एव खलु

---

१. स० पा०—गोसाला जाव नो ।
२. वाओ° (ता); वातु° (म) ।
३. तृतीयार्थे सप्तमी (वृ) ।
४. आवरि° (अ, क, ख, व, म, स) ।
५. पडिणियत्तेमाणे (स) ।
६. स० पा०—छण्ह जाव कालं ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति—
एगे वदंति तुम पुव्वि काल करेस्ससि, एगे वदंति तुम पुव्वि काल करेस्ससि।
तत्थ ण के पुण सम्मावादी[1] ? के मिच्छावादी ?
तत्थ ण जे से अहप्पहाणे जणे से वदति—समणे भगव महावीरे सम्मावादी,
गोसाले मखलिपुत्ते मिच्छावादी ।।

गोसालेण समणाण पसिणवागरण-पदं

११६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एव वयासी—अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए[2] अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाए[3], एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए[4] •नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए° विणट्ठतेए जाए, त छंदेण अज्जो ! तुब्भे गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेण पडोयारेह, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह ।।

११७. तए ण ते समणा निग्गथा समणेणं भगवया महावीरेणं एव वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीर वंदति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेंति, अट्ठेहि य हेऊहि य[5] •कारणेहि य निप्पट्ठपसिण°वागरण[6] करेंति[7] ।।

११८. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते समणेहिं निग्गथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे[8], •धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य° निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे नो सचाएति समणाण निग्गंथाण सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाह वा उप्पाएत्तए, छविच्छेद वा करेत्तए ।।

---

१. सम्मावाती (अ, क, ख, ब, स)।
२. °ज्झामिए (ता, म)।
३. जाव (अ, म, स)।
४. सं० पा०—गयतेए जाव विणट्ठतेए।
५. स० पा०—हेऊहि य जाव वागरण।
६. °वाकरण (अ)।
७. वाकरेति (अ); वा वागरेति (ता)।
८. सं० पा०—पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठ°
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

गोसालस्स संघभेद-पदं

११९ तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य[1] °पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं° कीरमाणं, आसुरुत्तं[2] °रुट्ठं कुवियं चंडिक्कियं° मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अत्थेगतिया आजीविया थेरा गोसालं चेव मखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥

गोसालस्स पडिगमण-पदं

१२० तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे[3], रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे, अवडुं[4] कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हा हा अहो! हओहमस्सि त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे[5] विहरइ ॥

गोसालेणं नाणासिद्धंत-परूवण-पदं

१२१. अज्जोति! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—जावतिए णं अज्जो! गोसालेणं मखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१. अंगाणं २. वंगाणं ३. मगहाणं ४. मलयाणं ५. मालवगाणं[6] ६. अच्छाणं ७. वच्छाणं ८. कोच्छाणं

---

१. स० पा०—हेऊहि य जाव कीरमाणं।
२. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
३. आसाहेमाणे (ख)।
४. अवटठुं (अ, स); अवडुयं (ता)।
५. परिसिंचमाणे २ (ता)।
६. मालवगाण (ख); मालवताणं (ता)।

९. पाढाणं १०. लाढाणं ११. वज्जीणं १२. मोलीणं[1] १३. कासीणं १४. कोस-लाणं १५ अवाहाणं १६. सुभुत्तराण[2] घाताए वहाए उच्छादणयाए भासी-करणयाए।

जं पि य अज्जो! गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारोए कुंभकारावणंसि अवकूणगहत्थगए, मज्जपाण पियमाणे, अभिक्खण गायमाणे, अभिक्खणं नच्च-माणे, अभिक्खण[3] •हालाहलाए कुभकारीए° अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेइ, तं जहा— १. चरिमे पाणे २ चरिमे गेये ३. चरिमे नट्टे ४ चरिमे अंजलिकम्मे ५. चरिमे पोक्खलसवट्टए महामेहे ६ चरिमे सेयणए गधहत्थो ७. चरिमे महासिला-कटए सगामे ८. अह च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए[4] चउवीसाए तित्थगराणं[5] चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्स जाव[6] अतं करेस्स।

ज पि य अज्जो! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-[7] उदएण गायाइ परिसिचमाणे विहरइ, तस्स वि णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति॥

१२२. से कि त पाणए?
पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४. सिलापब्भट्ठए। सेत्तं पाणए॥

१२३. से कि तं अपाणए?
अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंबलि-पाणए[8] ४. सुद्धपाणए॥

१२४. से कि तं थालपाणए?
थालपाणए—जे णं दाथालगं वा दावारग वा दाकुभगं वा दाकलसं वा सीतलगं उल्लगं[9] हत्थेहि परामुसइ, न य पाणियं पियइ। सेत्त थालपाणए॥

१२५. से किं तं तयापाणए?
तयापाणए—जे ण अबं वा अंबाडग वा जहा पओगपदे जाव[10] बोर[11] वा तेबरुय[12]

---

१. मालीण (अ, ख, ता, व, म)।
२. सुभुत्तराण (अ, क, म); सुंभत्तराण (ख): संभुत्तराण (ता, ब); सुभत्तराण (स)।
३. स० पा०—अभिक्खणं जाव अजलिकम्मं।
४. ओसप्पिणीए (स)।
५. तित्थकराण (अ, क, ब, म, स); तित्थंक-राणं (ख)।
६. भ० १।४४।
७. आदंचणि (अ, क, ख, व, म)।
८. संबलि° (अ, ख), सेवलि° (व); संब-एलि° (म)।
९. ओलग्ग (ख)।
१०. प० १६।
११. पोरु (अ), पोर (क, ता, म); चोरं (ब)।
१२. तबरुय (अ, म); तबुरुय (ता); तेवुरुयं (ब); तिंदुरुयं (स)।

वा तरुणगं आमगं[1] आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ। सेत्तं तयापाणए॥

१२६ से किं तं सिंवलिपाणए?
सिंवलिपाणए—जे णं कलसंगलियं[2] वा मुग्गसंगलियं वा माससंगलियं वा सिंवलि-संगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियति। सेत्तं सिंवलिपाणए॥

१२७. से किं तं सुद्धपाणए?
सुद्धपाणए—जे णं छम्मासे सुद्धखाइमं खाइ, दो मासे पुढविसंथारोवगए, दो मासे कट्ठसंथारोवगए, दो मासे दब्भसंथारोवगए, तस्स णं बहुपडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा अंतियं पाउब्भवंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति, जे णं ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साइज्जति तस्स णं संसि[4] सरीरगंसि अगणिकाए संभवति, से णं सएणं तेएणं सरीरगं झामेति, झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति। सेत्तं सुद्धपाणए॥

अयंपुल-आजीविओवासय-पदं

१२८. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले नामं आजीविओवासए परिवसइ—अड्ढे, जहा हालाहला जाव[5] आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—किंसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता?

१२९. तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदंसणधरे[8] •जिणे अरहा केवली• सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि

---

१. आमलगं (ता)।
२. °सिंगलियं (क, ता)।
३. भ० १।३३६।
४. तंसि (ब, म, स)।
५. भ० १५।१।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव
९. भ० २।६६।

उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ[1], •वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गधोदएणं ण्हाणेह[2], ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण गायाइं अणुलिपह, अणुलिपित्ता महरिहं हसलक्खणं पडसाडगं नियसेह, नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसिय करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहेह[3], दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[4]-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा[5]-उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[6], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव[7] सव्वदुक्खप्पहीणे—इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरण करेह ॥

१४०. तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी[9], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरिते[10] अहण्ण गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा

---

१. सं० पा०—नमंसइ जाव पडिगए ।

२. 'ण्हावेह' इति रूपं समीचीन प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेइ, ण्हाणेइ' इति रूपद्वयमपि लभ्यते ।

३. द्रुहेह (अ, क, ख, ता) ।

४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

५. घोसेमाणा (अ, ख, ब) ;

६. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।

७. भ० १।४३३ ।

८. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।

१०. विहरइ (क, ता, स) ।

वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्त-रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्प-लावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ—एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय[2]-सवह-साविए पकरेति, पकरेत्ता एवं वयासी—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव पगासे-माणे विहरिए। अहण्णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए[3] •समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तर-त्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए° छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणित्ता वामे पाए सुंबेणं बंधेह[4], बंधेत्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह[5], उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंख-लिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिण-प्पलावी जाव विहरइ। महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह—एवं वदित्ता कालगए॥

गोसालस्स नीहरण-पदं

१४२ तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति, पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, आलिहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पदे सुंबेणं बंधंति, बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभंति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[7]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउ-म्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा णीयं-णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा-

१. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं।
२. उच्चाविय (अ, म)।
३. सं० पा०—समणघायए जाव छउमत्थे।
४. बंधहा (अ, ब), बंधह (ख, म, स); बंधेहा (ता)।
५. उट्ठुभह (अ, ख, ब, स); उहुभंस्स(ता); उच्छुभह (वृपा)
६. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
७. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

उग्घोसेमाणा एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुबं मुयंति, मुइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइं'[2] अवगुणंति[3], अवंगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे[5] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[9] महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[11] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया ॥

१४६. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले[13] •विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए[15] यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं

---

१. भ० १५।१४१।
२. दाराइं (ता)।
३. अवगुवति (ता)।
४. भ० १५।१३९।
५. मेढिय° (क); मिंढिय° (ब)।
६. ओ० सू० १।
७. साल° (अ, क, ब, म, स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. ओ० सू० ४।
१०. भ० ३।९४।
११. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
१२. भ० १।७, ८।
१३. सं० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे।
१४. × (वृ); दुग्गे (वृपा)।
१५. दाहवक्कंतीए (अ, ख, ता, म, स)।

पि पकरेइ, चाउवण्ण[1] च ण वागरेति—एव खलु समणे भगव महावीरे गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे[2] समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव काल करेस्सति ॥

सीहस्स माणसियदुक्ख-पद

१४७. तेण कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सीहे नामं अणगारे—पगइभद्दए जाव[3] विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[4] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरति ॥

१४८ तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] °चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव[6] छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स परुण्णे ॥

भगवया सीहस्स आसासण-पदं

१४९. अज्जोति ! समणे भगव महावीरे समणे निग्गथे आमतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए [7]°जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति ।

तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्सति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव

---

१. चाउव्वण्ण (ब) ।
२. आदिट्ठे (क, ता) ।
३. भ० १।२८८ ।
४. सं० पा०—बाहाओ जाव विहरइ ।
५. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
६. भ० १५।१४६ ।
७. सं० पा०—तं चेव सव्वं भाणियव्व जाव परुण्णे ।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो अणु-पविसइ अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। त गच्छह ण अज्जो! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दाह[1]॥

१५० तए णं ते समणा निग्गथा समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण भगवं महावीर वदंति नमसंति, वदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहं अणगार एव वयासी—सीहा! धम्मायरिया सद्दावेति॥

१५१. तए णं से सीहे अणगारे समणेहि निग्गंथेहि सद्धि मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्ख-मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं जाव[2] पज्जुवासति॥

१५२. सीहादि! समणे भगवं महावीरे सीहं अणगार एव वयासी—से नूण ते सीहा! झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे[3] •अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालु-याकच्छग अतो-अतो अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। से नूणं ते सीहा! अट्ठे समट्ठे?

हता अत्थि।

तं नो खलु अह सीहा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्ह मासाण[4] •पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव° कालं करेस्स अहण्णं अद्ध सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुम सीहा! मेंढियगाम नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थ ण रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'[5] उवक्खडिया, तेहि नो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्ठो॥

---

१. सद्दह (अ, क, ता)।
२. भ० १।१०।
३. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव परुण्णे।
४. स० पा०—मासाण जाव कालं।
५. कवोतासरीरा (क, ब); कतोयासरीरगा (ता)।

सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पदं

१५३ तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं[2] मुहपोत्तियं[3] पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता [4]•भायणवत्थाइं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जिता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता° जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठ-गाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरियं[5]•मचवलमसंभंतं जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावति-णीए गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

१५४. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणु-गच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमाग-मणप्पयोयणं ?

१५५. तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु तुमे देवाणु-प्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाह-राहि, तेण अट्ठो ॥

१५६ तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी—केस णं सीहा ! से नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि ?

१५७. [6]•तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु रेवई ! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. भ० २।१०७ सूत्रे आदर्शेषु 'अतुरियमचव-लमसंभंतं' इति पाठोस्ति । अत्र च आदर्शेषु 'अतुरियमचवलमसंभंतं' इति पाठोस्ति । उभयमपि रूपं नास्ति अशुद्धमिति यथा प्राप्तमुपात्तम् ।

३. ०पत्तिय (स) ।

४. सं० पा०—जहा गोयमसामी जाव जेणेव ।

५. सं० पा०—अतुरिय जाव जेणेव ।

६. सं० पा०—एवं जहा खंदए जाव जओ ।

जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए॰, जओ ण अहं जाणामि ॥

१५८. तए ण सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म[1] हट्ठतुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तगं[2] मोएति, मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि[3] तं सव्वं सम्म निस्सिरति ॥

१५९. तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेण दव्वसुद्धेण[4] •दायगसुद्धेण पडिगाहग-सुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेणं॰ दाणेण सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, [5]•संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइ पंच दिव्वाइं पाउब्भू-याइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

१६०. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ— धन्ना णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयत्था ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयपुण्णा ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! रेवतीए गाहा-वतिणीए, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहाव-तिणीए, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया ण लोया, सुलद्धे माणु-स्सए॰ जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए ॥

१६१. तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि-निक्खमित्ता मेढियगाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव[6] भत्तपाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिसि त सव्व सम्म निस्सिरति ॥

भगवओ आरोग्ग-पदं

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए[7] •अगिद्धे अगढिए॰ अणज्झोववन्ने

---

१. निसम्मा (क, ता, ब) ।
२. पत्तं (क, ख, ता, ब, म) ।
३. पडिग्गहंसि (ता) ।
४. सं॰ पा॰—दव्वसुद्धेणं जाव दाणेण ।
५. स॰ पा॰—जहा विजयस्स जाव जम्म-जीवियफले ।
६. भ॰ २।११० ।
७. स॰ पा॰—अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने ।

बिलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण तमाहार सरीरकोट्ठगसि पक्खिवति ॥

१६३. तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके खिप्पामेव उवसते, हट्ठे जाए, अरोगे[1], बलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे—हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे ॥

सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं

१६४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी पाईणजाणवए[2] सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[3] विणीए, से ण भते ! तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहिं गए ? कहि उववन्ने ?

एव खलु गोयमा ! मम अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तदा गोसालेणं मखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे उड्ढ चदिम-सूरिय जाव[4] बभ-लतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता।

से ण भते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएण ठिइक्खएण[5] •अणतरं चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ? गोयमा !° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[6] सव्वदुक्खाणं अत करेहिति ॥

सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं

१६५. एव खलु देवाणुप्पियाणं अतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से ण भते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएण परितावए समाणे कालमासे काल किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एवं खलु गोयमा ! ममं अतेवासी सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परितावए समाणे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य

---

१. आरोए (अ, म), आरोते (व)।
२. पतीण° (अ, स); पदीण° (क, व); पडीण° (ख, ता)।
३. भ० १।२८८।
४. भ० ११।१६९।
५. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे।
६. भ० २।७३।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[1] आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाण बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं [2]•ठिती पण्णत्ता।

से णं भंते ! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति॥

गोसालस्स भवब्भमण-पदं

१६६ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एवं खलु गोयमा ! ममं अतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव[3] छउमत्थे चेव कालमासे काल किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[4] अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाण देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता॥

१६७. से णं भंते ! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति° ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाण बहुपडिपुण्णाण[6] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं° वीइक्कंताणं जाव[7] सुरूवे दारए पयाहिति॥

१६८ जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणि च णं सयदुवारे नगरे सब्भितर-बाहिरिए भारग्गसो य कुभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति॥

१६९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[8] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे° संपत्ते 'बारसमे दिवसे'[9] अयमेयारूव गोण्णं गुणनिप्फन्नं

---

१. भ० १५।१६४।

२. स० पा०—सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं।

३. भ० १५।१४१।

४. भ० १५।१६५।

५. सं० पा०—ठिइक्खएण जाव कहिं।

६. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कंताणं।

७. भ० ११।१४६।

८. स० पा०—वीइक्कते जाव संपत्ते।

९. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

नामधेज्जं काहिंति—जम्हा ण अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भितरबाहिरिए[1] •भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य° रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्ज महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति ॥

१७० तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति—महया हिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ जाव[2] विहरिस्सइ ॥

१७१ तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ॥

तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर-तलवर[4]-•माडविय-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[5] अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति, तंजहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्ह महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे। तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो 'दोच्चे वि'[6] नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति ॥

१७२ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल[7]-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेय संखतल-विमल-सन्निगासं चउद्दंत हत्थिरयण दूरूढे[8] समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर[9]-•तलवर-माडविय-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति—जम्हा ण देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे-विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति[10] विमलवाहणे त्ति ॥

---

१. सं० पा०—सब्भितरबाहिरिए जाव रयण-वासे।
२. ओ० सू० १४।
३. भ० १।३३९।
४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
५. °प्पभितीओ (स)।
६. दोच्च पि (स)।
७. सखदल (क, ख, ता, वृ)।
८. दुरूढे (स)।
९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
१०. ठा० ९।६२ सूत्रानुसारेण एतत् पदं स्वीकृतम्।

१७३. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णया कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति—अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भछेहिति[1], अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए निरु भेहिति[2], अप्पेगतियाण छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पगतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं पडिग्गहं कवलं पायपुंछणं आच्छिंदिहिति विच्छिंदिहिति भिंदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति ॥

१७४. तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं° वदिहिंति—एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने—अप्पेगतिए आओसति[4] जाव निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया! एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जण्णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेहिति[5], पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिति[6], उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[7] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेहिति[8], वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति[9]—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आओसति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा जाव जणवयस्स वा सेयं, जण्णं देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमतु णं देवाणुप्पिया! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए ॥

१७५. तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर[10]•-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-

---

१. निब्भत्थेहिति (अ, क); निब्भच्छेहिति (ख, ता)।
२. रु भेहिति (अ, ता, ब, म)।
३. सं० पा०—राईसर जाव वदिहिंति।
४. आउस्सइ (ब, स)।
५. पडिसुणेति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. उवागच्छति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं।
८. वद्धावेति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९. वदति (अ, क, ख, ता); वदासी (ब, म, स)।
१०. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।

इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ०-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्ते[1] समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति मिच्छा-विणएण एयमट्ठं पडिसुणेहिति ।।

१७६. तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नाम उज्जाणे भविस्सइ—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे वण्णओ[2] ।।

१७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[3] सुमंगले नामं अणगारे जाइसपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव[4] संखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[5] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए० आयावेमाणे विहरिस्सति ।।

१७८. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति ।।

१७९. तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं[6] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहं आयावणभूमीए० आयावेमाणं पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते[7] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए० मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं नोल्लावेहिति ।।

१८०. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहेति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[8] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए० आयावेमाणे विहरिस्सति ।।

१८१. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ।।

१८२. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति—नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नाम मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[9] छउमत्थे चेव कालगए, तं जइ ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं[10] सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहिया-

१. विण्णविए (ता)।
२ भ० ११।५७।
३. पओपए (ता)।
४ भ० ११।१६२; राय० सू० ६८६।
५ सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे।
६. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणं।
७. आसुरत्ते (अ); सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि०।
८ सं० पा०—पगिज्झिय जाव आसावेमाणे।
९. भ० १५।१४१।
१०. होइत्तए (अ, च); होइऊण (ख), होइऊणं (म, स)।

सियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं[1] •खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, जइ ते तदा समणेण भगवया महावीरेणं पभुणा वि[2] •होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, त नो खलु ते अहं तहा सम्मं सहिस्सं[3] •खमिस्सं तितिक्खिस्सं° अहियासिस्सं, अहं ते नवरं— सहयं सरहं ससारहियं तवेण तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि ॥

१८३. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८४. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णिहिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं[5] •एगाहच्चं कूडाहच्चं° भासरासिं करेहिति ॥

१८५. सुमंगले णं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव[6] भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! सुमंगले अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम[7]-•दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[8] छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम जाव[9] गेविज्जविमाणावाससयं वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ[10] •आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा !° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[11] सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ॥

---

१. सं० पा०—सहियं जाव अहियासियं ।
२. सं० पा०—वि जाव अहियासियं ।
३. सं० पा०—सहिस्सं जाव अहियासिस्सं ।
४. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
५. सं० पा०—तेएणं जाव भासरासिं ।
६. भ० १५।१८४।
७. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
८. अण जाव (अ, क, ख, ता, ब, स) ।
९. भ० १५।१६५ ।
१०. सं० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।
११. भ० २।७३ ।

१८६ विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेण सहये जाव[1] भासरासीकए समाणे कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! विमलवाहणे ण राया सुमगलेण अणगारेण सहये जाव भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण ततो अणतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्च पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि[2] नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओणतर उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति। तत्थ ण वि सत्थवज्झे[3] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणंतरं[4] उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह[5] •वक्कतीए कालमासे काल किच्चा° दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल[6] •ट्ठिइयंसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणंतर° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[7] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[8] •ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति। तत्थ वि ण सत्थवज्झे[9] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्चं पि पचमाए[10] •धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि उरएसु उववज्जिहिति[11]। •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि[12] •नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[13]• दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि चउत्थीए पक[14]•-

---

१. भ० १५।१८४।
२. °ट्ठिईयसि (ता, म)।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
४. जाव (अ क, ख, ता, व, म, स)।
५. स० पा०—दाह जाव दोच्च।
६. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता।
७. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
८. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता।
९. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१०. स० पा०—पचमाए जाव उव्वट्टित्ता।
११. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा।
१२. स० पा०—उक्कोसकालट्ठिइयसि जाव उव्वट्टित्ता।
१३. स० पा०—तहेव जाव किच्चा।
१४. स० पा०—पक जाव उव्वट्टित्ता।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओहितो अणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति[1] । •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[2]•ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे[3]• दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि तच्चाए वालुय[4]-प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से ण तओणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि पक्खीसु उववज्जिहिति[5] । •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए[6] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ[7]•वज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि दोच्चाए सक्करप्पभाए[8] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से ण तओणतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति[9] । •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति[10] ।
•से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे[11] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से ण ततो अणतरं[13] उव्वट्टित्ता जाइं इमाइ खहयरविहाणाइ भवति, तं जहा—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीण, समुग्गपक्खीण, विययपक्खीणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।
सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा जाइ इमाइ

---

१. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
२. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४. स० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता ।
५. स० पा० —उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
६. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
७. स० पा०—सत्थ जाव किच्चा ।
८. स० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
९. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१०. स० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता ।
११ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१२. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—गोहाणं, नउलाणं, जहा पण्णवणापए जाव[1] जाहगाण चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो[2] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइ भवंति, तं जहा—अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह[3]•स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइ भवति, तं जहा—एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सणहप्पदाणं[4], तेसु अणेगसयसहस्स[5]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइं जलयरविहाणाइ भवति, त जहा—मच्छाणं, कच्छभाणं जाव[6] सुसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, त जहा—अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पण्णवणापदे जाव[8] गोमयकीडाण, तेसु अणेगसय[9]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवति, तं जहा—उवचियाणं जाव[10] हत्थिसोंडाणं, तेसु अणेग[11]•सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति॥

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइ भवंति, त जहा—पुलाकिमियाणं जाव[12] समुद्दलिक्खाणं, तेसु

---

१. प० १।
२. स० पा०—सेस जहा खहचराणं जाव किच्चा।
३. स० पा०—अणेगसयसह जाव किच्चा।
४. सणहप्फदाण (अ, ता, स)।
५. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
६. प० १।
७. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८. प० १।
९. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
१०. प० १।
११. स० पा०—अणेग जाव किच्चा।
१२. प० १।

अणेगसय[१]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा° जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, त जहा—रुक्खाणं, गुच्छाणं जाव[२] कुहणाण, तेसु अणेगसय[३]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[४] •दाहवक्कंतीए[५] कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पाईणवायाण जाव[६] सुद्धवायाण तेसु अणेगसयसहस्स[७]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—इंगालाण जाव[८] सूरकंतमणिनिस्सियाण, तेसु अणेगसयसहस्स[९]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा-ओसाण[१०] जाव[११] खातोदगाण, तेसु अणेग-सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चाया-इस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१२] •दाहवक्कंतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुढवीण, सक्कराणं जाव[१३] सूरकंताणं, तेसु अणेगसय[१४]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाहिति—उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविक्काइएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१५] •दाहवक्कंतीए कालमासे काल° किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[१६]•दाहवक्कंतीए

---

१. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
२. प० १।
३. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ।
४. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
५. 'दाहवक्कतीए' इति पाठः क्वचिद् युज्यते, किन्तु सर्वत्र प्रवाहपाती दृश्यते।
६. प० १।
७. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८. प० १।
९. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
१०. उस्साण (क, ख, ब)।
११. प० १।
१२. स० पा०—सत्थवज्झे जाव च्चिा।
१३. प० १।
१४. स० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिति।
१५. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१६. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।

कालमासे कालं॰ किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[1] •दाहवक्कंतीए कालमासे काल॰ किच्चा इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएण[2] सुक्केण, पडिरूवएणं विणएण, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति। सा ण तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कंता जाव[3] अणुमया, भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा ण सीयं, मा णं उण्हं जाव[4] परिसहोवसग्गा फुसंतु। तए णं सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघर निज्जमाणी अतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणतर[5] उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं [6]•लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति।॰ तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहिंतो अणंतरं एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं[7] जाव[8] दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु। से ण 'तओहिंतो अणंतरं'[9] उव्वट्टित्ता माणुस्स विग्गहं लभिहिति[10] •लभित्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिति[11], •लभित्ता

---

१. सं॰ पा॰—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
२. पडिरूविएण (अ, क, ख, ता, व, म) सर्वत्र।
३. भ॰ २।५२।
४. भ॰ २।५२।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. स॰ पा॰—त चेव जाव तत्थ।
७. अग्गिकुमार (ता)।
८. पू॰ प॰ २।
९. तओ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
१०. स॰ पा॰—लभिहिति जाव विराहियसामण्णे।
११. स॰ पा॰—लभिहिति जाव अविराहियसामण्णे।

केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति। तत्थ वि य णं॰ अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति[1]।

से णं तओहिंतो अणंतर चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उवव-ज्जिहिति।

से णं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से णं तओहितो[2] •अणंतरं चय चइत्ता माणुस्सं विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवल बोहि बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइ-हिति। तत्थ वि य ण॰ अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणंतर चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइ इमाइ कुलाइ भवति—अड्ढाइं जाव[3] अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए[4] पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[5] केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति॥

१८७. तए णं से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्धं आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं वदिहिइ—एव खलु अहं अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[6] छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलग च ण अहं अज्जो अणादीयं अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिए, त मा णं अज्जो! 'तुब्भं केयि'[7] भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एव चेव अणादीयं अणवदग्गं[8] •दीहमद्धं चाउरंत॰संसारकतार अणुपरियट्टिहिति, जहा णं अहं॥

---

१. अतो अग्रे 'म, स' सङ्केतितादर्शयो. निम्न-वर्ती पाठो विद्यते—
'से ण तओहिंतो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति, केवल बोहिं बुज्झिहिति, तत्थ वि य ण अविरहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु सप्तभवा दृश्यन्ते—षट्सु दाक्षिणात्येषु कल्पेषु सर्वार्थसिद्धेषु च तेन ईशानकल्पस्य पाठः न सगच्छते।

२. स॰ पा॰—तओहिंतो जाव अविराहियसा-मण्णे।

३. ओ॰ सू॰ १४१।

४. पुमत्ताए (ब)।

५. ओ॰ सू॰ १४२-१५३।

६. भ॰ १५।१४१।

७. तुम केवि (ता)।

८. स॰ पा॰—अणवदग्गं जाव ससार॰।

१८८. तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा दढप्पइण्णं केवलिं वंदिहिंति नमंसिहिंति, वंदित्ता नमंसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिंति[1] पडिक्कमिहिंति निंदिहिंति जाव[2] अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिहिंति ॥

१८९. तए णं से दढप्पइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं जाणेत्ता भत्तं पच्चक्खाहिति, एवं जहा ओववाइए जाव[3] सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ॥

१९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

---

१. आलोइएहिंति (स)।
२. भ० ८।२५१।
३. ओ० सू० १५४।
४. भ० १।५१।

सोलसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. अहिगरणि २. जरा ३. कम्मे, ४. जावतियं ५. गंगदत्त ६. सुमिणे य ।
७.उवओग ८.लोग ९.बलि[1] १०.ओहि, ११.दीव १२.उदही १३ दिसा १४.थणिते[2] ।१।

वाउयाय-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! अधिकरणिसि वाउयाए वक्कमति ?
हंता अत्थि ।।

२. से भंते ! कि पुट्ठे उद्दाइ ? अपुट्ठे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ ।।

३. से भते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
[4]°गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।।

४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहि निक्खमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।। °

---

१. बलि (क, ब); पलि (ता) ।
२. थणिया (ता, स) ।
३. भ० १।४-१० ।
४. सं० पा०—एवं जहा खदए जाव से तेणट्ठेणं नो असरीरी निक्खमइ; स्पृष्टः स्वकायशस्त्रादिना सशरीरश्च कडेवरान्निष्क्रामति कार्म्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वशरीरीति (वृ); पूरितः पाठः अस्य वृत्तिव्याख्यानस्य संवादी वर्तते । आदर्शानां संक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असौ वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोस्ति ।

अगणिकाय-पदं

५. इंगालकारियाए णं भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं। अण्णे वि तत्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ।।

कतिकिरिय-पदं

६. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[1] पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अए निव्वत्तिए, अयकोट्ठे निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

७. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिव्वमाणे वा निक्खिव्वमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ[2] °अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिवइ वा° निक्खिवइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अयो निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, चम्मेट्ठे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी निव्वत्तिया, अधिकरणिखोडी निव्वत्तिया, उदगदोणी निव्वत्तिया, अधिकरणसाला निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

अधिकरणी-अधिकरण-पदं

८. जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ।।

९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?

---

१. भ० १।३६५ । २. सं० पा०—अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ ।

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि°, अधिकरण पि ॥

१०. नेरइए णं भंते ! कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि। एव जहेव जीवे तहेव नेरइए वि। एवं निरंतरं जाव[2] वेमाणिए ॥

११. जीवे ण भंते ! कि साहिकरणी ? निरहिकरणी[3] ?
गोयमा ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी ॥

१२. से केणट्ठेण—पुच्छा।
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव नो निरहिकरणी। एवं जाव वेमाणिए ॥

१३. जीवे णं भते ! कि आयाहिकरणी ? पराहिकरणी ? तदुभयाहिकरणी ?
गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराहिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि ॥

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव तदुभयाहिकरणी वि ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव तदुभयाहिकरणी वि। एवं जाव वेमाणिए ॥

१५. जीवाणं भंते ! अधिकरणे कि आयप्पयोगनिव्वत्तिए ? परप्पयोगनिव्वत्तिए ? तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ?
गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोग-निव्वत्तिए वि ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१७. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए[4], •वेउव्विए, आहारए, तेयए°, कम्मए ॥

१८. कति णं भते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइदिए[5], •चक्खिदिए, घाणिदिए, रसिदिए°, फासिदिए ॥

१९. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव अधिकरण।
२. पू० प० २।
३. निराधिकरणी (अ, ख, ता, ब, स)।
४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए।
५. स० पा०—सोइदिए जाव फासिदिए।

२०. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव अधिकरणं पि ॥

२२. पुढविकाइएण णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरण ?
एवं चेव । एवं जाव मणुस्से । एवं वेउव्वियसरीरं पि, नवरं—'जस्स अत्थि'[1] ॥

२३. जीवे णं भंते ! आहारगसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२४. से केणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि ?
गोयमा ! पमायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि । एवं मणुस्से वि । तेयासरीरं जहा ओरालियं, नवरं—सव्वजीवाणं भाणियव्वं । एवं कम्मगसरीरं पि ॥

२५. जीवे णं भंते ! सोइंदियं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइंदियं पि भाणियव्वं, नवरं—जस्स अत्थि सोइंदियं । एवं[2] चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाण वि, नवरं—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि ॥

२६. जीवे णं भंते ! मणजोगं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव सोइंदियं तहेव निरवसेसं । वइजोगो एवं चेव, नवरं—एगिंदियवज्जाणं । एवं कायजोगो वि, नवरं—सव्वजीवाणं जाव वेमाणिए ।

२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

जीवाणं जरा-सोग-पदं

२८. रायगिहे जाव[4] एवं वयासी—जीवाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! जीवाणं जरा वि, सोगे वि ॥

---

१. जस्सत्थि (अ) ।
२. एवं सोइंदिय (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।

२९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•जीवाणं जरा वि॰, सोगे वि ?
गोयमा ! जे णं जीवा सारीरं वेदणं वेदेति तेसि णं जीवाणं जरा, जे णं जीवा माणसं वेदण वेदेति तेसि णं जीवाणं सोगे। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं जरा वि॰, सोगे वि। एवं नेरइयाण वि। एवं जाव[3] थणियकुमाराणं ॥

३०. पुढविकाइयाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे ॥

३१. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा॰, नो सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइया णं सारीरं वेद ण वेदेति, नो माणसं वेदणं वेदेति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा॰, नो सोगे। एवं जाव चउरिंदियाणं। सेसाणं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] पज्जुवासति ॥

सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति, 'एत्थ णं'[8] समणं भगव महावीर जंबुद्दीवे दीवे। एवं जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्के वि, नवरं—आभिओगे ण सद्दावेति, 'हरी पायत्ताणियाहिवई[9],' सुघोसा[10] घंटा, पालओ विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले[11] रतिकरपव्वए, सेसं तं चेव जाव[12] नामगं सावेत्ता पज्जुवासति। धम्मकहा जाव[13] परिसा पडिगया ॥

३४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! ओग्गहे पण्णत्ते ?

---

१. सं॰ पा॰—वुच्चइ जाव सोगे।
२. सं॰ पा॰—तेणट्ठेणं जाव सोगे।
३. पू॰ प॰ २।
४. सं॰ पा॰—केणट्ठेण जाव जरा।
५. सं॰ पा॰—तेणट्ठेणं जाव नो।
६. भ॰ १।५१।
७. भ॰ ३।१०९।
८. यत्थ (क, ख, ब); यत्था (ता)।
९. पायत्ताणियाहिवई हरी (ख); हरी य पाय॰ (ब)।
१०. सुघोस णं (ता)।
११. दाहिणिल्ले (ता)।
१२. भ॰ ३।२७।
१३. ओ॰ सू॰ ७१-७९।

सक्का ! पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारियओग्गहे, साहम्मिओग्गहे[1]।
जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएसि णं ओग्गहं अणुजाणामीति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव[2] दिव्वं जाणविमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सक्क-संबंधि-वागरण-पदं

३५. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जण्णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे[3] एवं वदइ, सच्चे णं एसमट्ठे[4] ?
हंता सच्चे ॥

३६. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी ? मिच्छावादी ?
गोयमा ! सम्मावादी, नो मिच्छावादी ॥

३७. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासति ? मोसं भासं भासति ? सच्चामोसं भासं भासति ? असच्चामोसं भासं भासति ?
गोयमा ! सच्चं पि भासं भासति जाव असच्चामोसं पि भासं भासति ॥

३८. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासति ? अणवज्जं भासं भासति ?
गोयमा ! सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं भासति ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि[5] •भासं भासति°, अणवज्जं पि भासं भासति ?
गोयमा ! जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जूहित्ता[6] णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासति, जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं निज्जूहित्ता णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासति । से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं° भासति ॥

४०. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धीए ? अभवसिद्धीए ? सम्मदिट्ठीए ? मिच्छदिट्ठीए ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

---

१. साहम्मियओग्गहे (अ, स) ।
२. तामेव (ता, म) ।
३. तुब्भे ण (अ, म) ।
४. एतमट्ठे (ता) ।
५. सं० पा०—सावज्जं पि जाव अणवज्जं ।
६. अणिजूहित्ता (अ) ।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भासति ।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए। सम्मदिट्ठीए, नो मिच्छदिट्ठीए। परित्तससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभवोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे। एव जहा मोउद्देसए सणंकुमारे जाव[1] नो अचरिमे॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाणं भते ! कि चेयकडा[2] कम्मा कज्जंति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाण चेयकडा[3] कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति॥

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ[4]—•जीवाण चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा° कज्जति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयंके से वहाए होति, सकप्पे से वहाए होति, मरणते से वहाए होति तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जति, नो अचेयकडा° कम्मा कज्जति। एवं नेरइयाण वि। एवजाव[6] वेमाणियाण॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति जाव[7] विहरइ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव[8] एवं वयासी—कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तजहा—नाणावरणिज्जं जाव[9] अंतराइयं, एव जाव[10] वेमाणियाणं॥

---

१. भ० ३।७३।
२. चेत° (ब)।
३. चेदे° (ता)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जति।
५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जति।
६. पू० प० २।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९. भ० ६।३३।
१०. पू० प० २।

४५. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ—एवं जहा पण्णवणाए वेदावेउद्देसओ[1] सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। वेदाबंधो[2] वि तहेव, बंधावेदो[3] वि तहेव, बंधाबंधो[4] वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ति[5] ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं

४७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं एगजंबुए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ[8]। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[9] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे॰ एगजंबुए समोसढे जाव[10] परिसा पडिगया ॥

४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[11] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए॰ आयावेमाणस्स तस्स णं पुरत्थिमेणं अवड्ढं दिवसं नो कप्पति हत्थं वा पादं वा बाहं वा ऊरुं वा आउंटावेत्तए[12] वा पसारेत्तए वा, पच्चत्थिमेणं से अवड्ढं दिवसं कप्पति हत्थं वा[13] •पादं वा बाहं वा॰ ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा। तस्स णं अंसियाओ लंबंति। तं च वेज्जे अदक्खु। ईसिं पाडेति, पाडेत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा। से नूणं भंते ! जे छिंदति तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं धम्मंतराएणं[14] ?

---

१. प० २७।
२. प० २६।
३. प० २५।
४. प० २४।
५. इह सग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते—
वेयावेओ पढमो, वेयावंधो य बीयओ होइ।
बंधावेओ तइओ, चउत्थओ बंधबंधो उ ॥
(वृ)।
६. ओ० सू० १।
७. एगजंबूए (स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. सं० पा०—चरमाणे जाव एगजंबुए।
१०. भ० १।७७।
११. सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स।
१२. आउट्टा॰ (क, ता); आउट्टा॰ (स)।
१३. सं० पा०—हत्थं वा जाव ऊरुं।
१४. ॰राइएणं (स)।

हंता गोयमा ! जे छिदति[1] •तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं° धम्मंतराएणं ॥

५०. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१. रायगिहे जाव[3] एव वयासी—
जावतियं णं भते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण[4] वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे।
जावतियं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहि वा वाससहस्सेण[5] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे।
जावतियं ण भते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहि वा वाससयसहस्सेण वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे।
जावतियं णं भते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहि वा वासकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे।
जावतियं णं भंते ! दसमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहि वा वासकोडाकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जावतिय अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण वा नो खवयति, जावतियं चउत्थभत्तिए—एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ?

---

१. स० पा०—छिंदति जाव धम्मतराएण।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।४।१०।
४. वाससएहि (अ, क, ता, म, स)।
५. वाससहस्सेहिं (क, ता, ब)।

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलि-तरंग-संपिणद्धगत्ते[1] पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे झुसिए[2] पिवासिए दुब्बले किलंते एगं मह कोसंब-गंडियं सुक्क[3] जडिल[4] गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्ध अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेइ, नो महंताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, [5]•सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइ भवति। संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे अहिकरणिं आउडेमाणे महया[6]-•महया सद्देणं, महया-महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ, तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइ, चिक्कणीकयाइ, सिलट्ठीकयाइ खिलीभूताइ भवति। सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवति।

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलव जाव[7] मेहावी निउणसिप्पोवगए एग महं सामलि-गंडियं उल्ल अजडिलं अगंठिल्ल अचिक्कण अवाइद्ध सपत्तियं तिक्खेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए ण से पुरिसे नो महंताइं-महताइ सद्दाइं करेति, महंताइ-महंताइ दलाइ अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइ[8] खिप्पामेव परिविद्धत्थाइ भवति जावतिय तावतिय[9] •पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवति।

से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयसि पक्खिवेज्जा—[10]•से नूणं गोयमा ! से सुक्के तणहत्थगए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हता मसमसाविज्जति।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाण अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति। जावतिय तावतिय पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति।

---

१. सविण° (ख, ता)।

२. झुभित (क, ख, म); जुज्झिते (व); झूरितः इति टीकाकार. (वृ)।

३. सुक्ख (अ, ख, ता, व)।

४. जटिल (अ)।

५. सं० पा०—एव जहा छट्ठुसए जाव नो।

६. स० पा० महया जाव नो।

७. भ० १४।३।

८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

९. स० पा०—तावतिय जाव महापज्जवसाणा।

१०. सं० पा०—एव जहा छट्ठुसए तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लसि उदगबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिंदू तत्तंसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ?

हंता विद्धंसमागच्छइ ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए[1] समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। एगजंबुए चेइए—वण्णओ[4]। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पज्जुवासति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी—एवं जहेव बितियउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ जाव[6] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] °समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[9] पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

---

१. अन्नइलायए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० २२-५२ ।
६. भ० १६।३३ ।
७. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ।
८. भ० १।३३९ ।
९. अपरियादिइत्ता (क, ख, ब) ।

देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे एवं एएणं अभिलावेण गमित्तए वा, भासित्तए वा, विआगरित्तए वा, उम्मिसावेत्तए वा, निमिसावेत्तए वा, आउंटावेत्तए वा, ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेइत्तए वा, विउव्वित्तए वा, परियारेत्तए वा जाव हंता पभू—इमाइ अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता सभतियवदणएण[1] वदति, वंदित्ता तमेव दिव्वं जाणविमाण द्रुहति[2], द्रुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ।।

गंगदत्तदेवस्स संदब्भे परिणममाण-परिणय-पदं

५५ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—अण्णदा ण भते ! सक्के देविदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति सक्कारेति जाव[3] पज्जुवासति, किण्ण भते ! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता संभतियवदणएणं वदइ नमंसइ जाव[4] पडिगए ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए य ।

तए ण से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया ।

तए णं से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए देवे त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया । त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं एव पडिहणइ[5], पडिहणित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता अयमेयारूवे[6] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्स वहिया एगजबुए चेइए अहापडिरूवं[7] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, त सेय खलु मे समणं भगव महावीर वंदित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता इम एयारूव वागरण पुच्छित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहेत्ता

---

१. °वदएण (अ, ख, व, म) ।
२. दुरुहइ (स) ।
३. भ० २।३० ।
४. भ० १६।५४ ।
५. पडिभणइ (ता) ।
६. स० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
७. स० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
८. भ० २।३० ।

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं [1]•तिहि परिसाहि, सत्तहिं अणिएहि, सत्तहिं अणि-याहिवईहि, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहि महासामाणविमाण-वासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे° जाव[2] दुदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे[3] नगरे, जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतिय तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए ण से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ॥

५६. जाव च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देसं हव्वमागए। तए णं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! महासुक्के कप्पे महासामाणे[4] विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठि-उववन्नए देवे ममं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया। तए णं अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भंते! एवं?

५७. गंगदत्तादि[5]! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं गंगदत्ता! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—परिणममाणा पोग्गला[6] •परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया°, नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे ॥

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चा-सन्ने जाव[7] पज्जुवासति[8] ॥

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९. तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य[9] •महतिमहालियाए परिसाए° धम्मं परिकहेइ जाव[10] आराहए भवति ॥

---

१. सं० पा०—परियारो जहा सूरियाभस्स जाव
२. राय० सू० ५८।
३. उल्लुया° (ख, ब, म)।
४. महासमाणे (अ, क, ता, ब)।
५. °दी (ता, ब, म)।
६. सं० पा०—पोग्गला जाव नो।
७. भ० १।१०।
८. पज्जुवाहति (म)।
९. सं० पा०—तीसे य जाव धम्मं।
१०. ओ० सू० ७१-७७।

६०. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अहण्णं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए ? अभव-सिद्धिए ? [1]सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ? गंगदत्ताइ ! समणे भगव महावीरे गगदत्तं देव एवं वयासी—गगदत्ता ! तुमण्ण भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए। सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्त-ससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे ॥

गंगदत्तदेवेण नट्ट-उवदंसण-पदं

६१. तए ण से गगदत्ते देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्त-माणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह।
जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाण निग्गथाण दिव्व देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्व बत्तीसतिबद्ध नट्टविहिं उवदसित्तए ॥

६२. तए ण समणे भगव महावीरे गगदत्तेण देवेण एव वुत्ते समाणे गगदत्तस्स देवस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए सचिट्ठति ॥

६३. तए ण से गगदत्ते देवे समण भगव महावीर दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे ण भते ! सव्व जाणह सव्व पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं काल जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह।
जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्तं अभिसमण्णागयं ति, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाणं निग्गथाण दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्वं बत्तीसतिबद्ध नट्टविहि उवदसित्तए त्ति कट्टु ° जाव बत्तीसतिबद्ध नट्टविहिं उवदसेति, उवदसेत्ता जाव[2] तामेव दिसं पडिगए ॥

---

१. सं० पा०—एव जहा सूरियाभो।
२. राय० सू० ६५-१२०।

६४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[1] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती[2] •दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं° अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठंतो जाव[3] सरीरं अणुप्पविट्ठे । अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए[4] •महज्जुइए महब्बले महायसे° महेसक्खे ।।

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पद

६५. गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे[5] ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? किं वा गोत्तेणं ?
कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ?
किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ?

६६. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6] । सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[7] । तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ।।

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव[9] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं[10], •आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं, आगासफालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं, धम्मज्झएणं पुरओ° पकड्ढिज्जमाणेणं-पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

---

१. सं० पा०—महावीरं जाव एवं ।
२. सं० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे ।
३. राय० सू० १२३ ।
४. सं० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे ।
५. सं० पा०—लद्धे जाव गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
६. ओ० सू० १ ।
७. भ० ११।५७ ।
८. भ० २।९४ ।
९. भ० १।७ ।
१०. सं० पा०—चक्केणं जाव पकड्ढिज्ज° ।

गामं[1] •दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे° जेणेव सहसववणे उज्जाणे जाव[2] विहरति। परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासति ॥

६८. तए ण से गगदत्ते गाहावती इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए[4] कयवलिकम्मे जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साम्रो गिहाम्रो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं[6] हत्थिणापुरं[6] नगरं मज्झमज्झेणं[7] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसववणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ जाव[8] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

६९. तए ण मुणिसुव्वए अरहा गगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[9] परिसा पडिगया ॥

७०. तए ण से गगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते! निग्गथ पावयण जाव[10] से जहेयं तुब्भे वदह, ज नवर देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्त कुडुवे ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे[11] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि! अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिवध ॥

७१. तए ण से गगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएण अरहया एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियाओ सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउलं असण-पाण[12]-•खाइम-साइम° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग[13]-•सयण-सबधि-परियणं° आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव[14] जेट्ठपुत्त कुडुबे ठावेति। त मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-सबधि-परियण° जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहणि सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-

---

१. स० पा०—गामाणुगाम जाव जेणेव।
२. भ० १।७।
३. ओ० सू० ५२।
४. जाव (ख, स)।
५. भ० २।६७।
६. हत्थिणपुर (अ, म); हत्थिणाउर (ता, व); हत्थिणागपुर (स)।
७. मज्झेण २ (अ, ख, ता, व, म)।
८. ओ० सू० ६९।
९. ओ० सू० ७१-७९।
१०. भ० २।५२।
११. स० पा०—मुडे जाव पव्वयामि।
१२. स० पा०—पाण जाव उवक्खडावेति।
१३. स० पा०—नियग जाव आमतेति।
१४. भ० ३।१०२।
१५. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते।

नियग[1]-•सयण-संबंधि°-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[2] दुदुहि-निग्घोसनादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति । एव जहा उद्दायणे जाव[3] सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ जाव[4] मासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव[5] गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ने ॥

७२. तए णं से गगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गच्छति, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भासा-मणपज्जत्तीए][7] एवं खलु गोयमा ! गगदत्तेण देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी[8] •सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ॥

७३. गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स केवतिय काल ठिति पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

७४. गंगदत्ते ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[10] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

७५. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति[11] ॥

छट्ठो उद्देसो

सुविण-पदं

७६. कतिविहे ण भंते ? सुविणदसणे[12] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सुविणदंसणे पण्णत्ते, तं जहा—अहातच्चे, पताणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदंसणे[13] ॥

---

१. स० पा०—नियग जाव परिजणेण ।
२. भ० ६।१८२ ।
३. भ० १३।११७ ।
४. भ० ११।११८; ६।१५०, १५१ ।
५. भ० ३।१७ ।
६. भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. स० पा०—आउक्खएणं जाव महाविदेहे ।
१०. भ० २।७३ ।
११. भ० १।५१ ।
१२. सुमिए° (अ) ।
१३. अवत्त° (अ, क, ख, ब) ।

७७. सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासति ? जागरे सुविणं पासति ? सुत्तजागरे सुविणं पासति ?
गोयमा ! नो सुत्ते सुविण पासति, नो जागरे सुविण पासति, सुत्तजागरे सुविणं पासति ॥

७८. जीवा णं भंते ! कि सुत्ता ? जागरा ? सुत्तजागरा ?
गोयमा ? जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि ॥

७९. नेरइयाण भते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा । एवं जाव[1] चउरिंदिया ॥

८० पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

८१. सवुडे ण भंते ! सुविणं पासति ? असंवुडे सुविण पासति ? सवुडासंवुडे सुविणं पासति ?
गोयमा ! सवुडे वि सुविणं पासति, असंवुडे वि सुविणं पासति, संवुडासवुडे वि सुविण पासति । सवुडे सुविणं पासति अहातच्चं पासति । असवुडे सुविणं पासति तहा वा त होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा । संवुडासवुडे सुविणं पासति [2]°तहा वा तं होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा° ॥

८२. जीवा णं भते ! कि सवुडा ? असंवुडा ? संवुडासंवुडा ?
गोयमा ! जीवा सवुडा वि, असंवुडा वि, संवुडासंवुडा वि । एव जहेव सुत्ताणं दडओ तहेव भाणियव्वो ॥

८३. कति णं भंते ! सुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वायालीस सुविणा पण्णत्ता ॥

८४. कति णं भते ! महासुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ॥

८५. कति णं भंते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ॥

८६. तित्थगरमायरो णं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे[3] पासित्ता णं पडिबुज्झंति ?
गोयमा ! तित्थगरमायरो तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—गय-उसभ जाव[4] सिहिं च ॥

---

१. पू० प० २ ।
२. सं० पा०—एवं चेव ।
३. महासुविणे सुविणे (अ, क, ख, ता, ब) ।
४. भ० ११।१४२ ।

८७. चक्कवट्टिमायरो ण भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ?
गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि गब्भं[1] वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं[2] •इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा— गय-उसभ° जाव सिहिं च ॥

८८. वासुदेवमायरो णं—पुच्छा ।
गोयमा ! वासुदेवमायरो[3] •वासुदेवंसि गब्भं° वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ॥

८९. बलदेवमायरो—पुच्छा ।
गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ॥

९०. मंडलियमायरो णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं 'पासित्ता णं'[4] पडिबुज्झंति ॥

भगवओ महासुविण-दंसण-पदं

९१. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—
१. एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
२. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं[5] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
३. एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[6] पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
५. एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
७. एगं च णं 'महं सागरं'[7] उम्मीवीयीसहस्सकलियं भुयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

---

१. जाव (अ, ख, म); जाव गब्भं (क, ता, ब, स) ।
२. सं० पा०—एवं जहा तित्थगरमायरो जाव ।
३. सं० पा०—वासुदेवमायरो जाव वक्कम° ।
४. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. पूसकोइलं (अ, क, ख, ता, ब) ।
६. चित्तपक्खगं (क, ता) ।
७. महासागरं (अ) ।

९ एग च ण मह हरिवेरुलियवण्णाभेण नियगेण अतेण माणुसुत्तर पव्वयं सव्वग्रो समता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१० एगं च णं मह मदरे पव्वए मदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

१. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह घोररूवदित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणेणं भगवया महावीरेण मोहणिज्जे । मूलाग्रो उग्घाइए ।

२. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सुक्किल[1]•पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति ।

३ जण्णं समणे भगव महावीरे एग मह चित्तविचित्त[2]•पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगव महावीरे विचित्त ससमयपर-समइय दुवालसग गणिपिडग आघवेति पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति उवदसेति, त जहा—आयार, सूयगड जाव[3] दिट्ठिवाय[4] ।

४. जण्ण समणे भगव महावीरे एगं मह दामदुगं सव्वरयणामय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, त जहा—अगार-धम्म वा, अणगारधम्मं वा ।

५ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सेयं गोवग्ग[5]•सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणस्स भगवग्रो महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसघे, त जहा—समणा, समणीग्रो, सावया, सावियाग्रो ।

६ जण्ण समणे भगव महावीरे एगं मह पउमसर[6] •सव्वग्रो समंता कुसुमिय सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, त जहा—भवणवासी, वाणमतरे, जोतिसिए, वेमाणिए ।

७. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सागर[7] •उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहि तिण्ण सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्ण समणेणं भगवया महावीरेणं अणा-दीए अणवदग्गे[8] •दीहमद्धे चाउरते° ससारकतारे तिण्णे[9] ।

८. जण्णं समणे भगवं महावीरे एग मह दिणयर[10] •तेयसा जलतं सुविणे पासित्ता

---

१. स० पा०—सुक्किल जाव पडिवुद्धे ।
२. स० पा०—चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे ।
३ भ० २०।७५ ।
४. दिट्टिवात (अ, ब); दिट्ठिवाद (ता) ।
५. स० पा०—गोवग्ग जाव पडिबुद्धे ।
६. सं० पा०—पउमसर जाव पडिबुद्धे ।
७. स० पा०—सागर जाव पडिबुद्धे ।
८. अणवतग्गे (ब); स० पा०—अणवदग्गे जाव ससार° ।
९. नित्थिण्णे (अ) ।
१०. स० पा०—दिणयर जाव पडिबुद्धे ।

ण° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणते अणुत्तरे[1] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह हरिवेरुलिय[2]•वण्णाभेण नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमति—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगव महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगव महावीरे मदरे पव्वए मंदरचूलियाए[3] •उवरि सीहासण-वरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली[4] धम्मं आघवेति[5] •पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति° उवदसेति ॥

सुविण-फल-पदं

९२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं हयपतिं वा गयपतिं वा[6] •नरपतिं वा किन्नरपति वा किंपुरिसपति वा महोरगपति वा गंधव्वपति वा° वसभपति वा पासमाणे पासति, दुहमाणे दुहति, दूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव[7] सव्वदुक्खाणं अतं करेति ॥

९३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं दामिणि[8] पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, सवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव[9] बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

९४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं मह रज्जु पाईणपडिणायतं दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति[10] अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ॥

९५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा[11] •नीलसुत्तगं वा लोहिय-सुत्तगं वा हालिद्दसुत्तगं वा° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

---

१. स० पा०—अणुत्तरे जाव केवल° ।
२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।
३. सं० पा०—मदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे ।
४. केवलीण (क); केवलिपण्णत्तं (ठा० १०।१०३)
५. स० पा०—आघवेति जाव उवदसेति ।
६ स० पा०—गयपतिं वा जाव वसभपतिं ।
७ भ० १।४४ ।
८. दाम (ख) ।
९. तक्खणामेव अप्पाण (ख); तक्खणा चेव (ता)
१०. छिंदणमिति (ता) ।
११. सं० पा०—किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल° ।

उग्गोवेति, उग्गोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्ग-हणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ।।

९६ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं अयरासि वा तंबरासि वा तउयरासिं वा सीसगरासिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९७ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं हिरण्णरासि वा सुवण्णरासिं वा रयण-रासिं वा वइररासि वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे[1] दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९८ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह तणरासि वा [2]°कट्ठरासि वा पत्तरासि वा तयरासिं वा तुसरासिं वा भुसरासि वा गोमयरासिं वा° अवकररासि वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ।।

९९ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह सरथभ वा वीरणथभवा वसीमूलथभं वा वल्लीमूलथभ वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाण अत करेति ।।

१००. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एग मह खीरकुभ वा दधिकुभं वा घयकुभं वा मधुकुभ वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०१ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सुरावियडकुभ वा सोवीरवियडकुभं वा तेल्लकुभ वा वसाकुभ वा पासमाणे पासति, भिदमाणे भिदति, भिन्नमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाणं अत करेति ।।

१०२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह पउमसरं कुसुमिय पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सागर उम्मीवीयीसहस्सकलियं[3] पासमाणे

---

१. दुरूहमाणे (अ, ख, स) ।

२. स० पा०—जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं ।

३. उम्मीवीयी जाव कलियं (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ।।

१०४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह भवण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं विमाण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, दुहमाणे दुहति, दूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

गंध-पोग्गल-पदं

१०६. अह भते ! कोट्ठपुडाण वा जाव[1] केयइपुडाण वा अणुवायसि उब्भिज्जमाणाण वा[2] •निब्भिज्जमाणाण, वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा° ठाणाओ वा ठाणं सकामिज्जमाणाण कि कोट्ठे वाति जाव केयई[3] वाति ?
गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयई वाति, घाणसहगया पोग्गला वाति[4] ।।

१०७. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[5] ।।

सत्तमो उद्देसो

१०८. कतिविहे ण भंते ! उवओगे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एव जहा उवओगपदं[6] पण्णवणाए तहेव निरवसेस नेयव्व[7], पासणयापदं[8] च नेयव्व[9] ।।

१०९. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ।।

---

१. राय० सू० ३० ।
२. स० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ, रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्जमाणाण' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि भिन्नान्यपि च लभ्यन्ते ।
३. केयती (अ, क, म, स) ।
४. वाति (अ, क, ब, म, स) ।
५. भ० १।५१ ।
६. प० २९ ।
७. भाणियव्व (स) ।
८. पासणापद (अ, क, ख, ता, ब, म), प० ३० ।
९. निरवसेस नेयव्व (स) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

लोगस्स चरिमंते जीवाजीवादिमग्गणा-पदं

११०. केमहालए[1] णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, जहा बारसमसए तहेव जाव[2] असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं ॥

१११. लोयस्स णं भंते ! पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे—एवं जहा दसमसए अग्गेयी दिसा तहेव[3], नवरं—देसेसु अणिंदियाणं आइल्लविरहिओ। जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि। सेसं तं चेव निरवसेसं[4] ॥

११२. लोगस्स णं भंते ! दाहिणिल्ले चरिमंते किं जीवा ? एवं चेव। एवं पच्चत्थिमिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि ॥

११३. लोगस्स णं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि। जे जीवदेसा ते नियमं[5] एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियस्स[6] य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं। जे जीवप्पदेसा ते नियमं एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियस्स पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं। अजीवा जहा[7] दसमसए तमाए तहेव निरवसेसं ॥

११४. लोगस्स णं भंते ! हेट्ठिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि, जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं। पदेसा आइल्ल-

---

१. किमहालए (अ, क, ख, ता, म, स)।
२. भ० १२।१३०, २।४५।
३. भ० १०।६।
४. सव्व (अ, क, ता, व, म)।
५. नितमं (व)।
६. वेदियस्स (म, स)।
७. भ० १०।७।

विरहिया सव्वेसि जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते तहेव। अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमंते तहेव ॥

११५. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कि जीवा पुच्छा। गोयमा! नो जीवा, एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमंता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा[1] दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेसं। हेट्ठिल्ले चरिमते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमते तहेव, नवरं—देसे पंचिंदिएसु तियभगो त्ति सेस त चेव। एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एव सक्करप्पभाए वि। उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले। एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स। गेवेज्जविमाणाण एवं चेव, नवर—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमतेसु देसेसु पंचिंदियाण वि मज्झिल्लविरहिओ चेव, सेस तहेव। एवं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि ॥

परमाणुपोग्गलस्स गति-पदं

११६. परमाणुपोग्गले णं भंते! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमतं एगसमएणं गच्छति? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएण गच्छति? दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं[2] •चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति? उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणिल्लं[3] •चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति? उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ल चरिमतं एगसमएण[4] गच्छति? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्लं चरिमत एगसमएणं गच्छति? हता गोयमा! परमाणुपोग्गले णं लोगस्स पुरत्थिमिल्लं तं चेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएण गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७. पुरिसे ण भते! वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरु वा आउटावेमाणे[5] वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए?
गोयमा! जावं च ण से पुरिसे वास वासति, वास नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरु वा आउटावेति वा पसारेति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए[6] •अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए°—पंचहि किरियाहि पुट्ठे ॥

---

१. भ० १०।७।
२. स० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति।
३. सं० पा०—दाहिणिल्लं जाव गच्छति।
४. एव जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. आउंटारेमाणे (ता) सर्वत्रापि।
६. सं० पा०—काइयाए जाव पचहि।

अलोए गतिनिसेध-पदं

११८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[1] महेसक्खे लोगते ठिच्चा पभू अलोगसि हत्थं वा पायं वा वाहं वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू अलोगसि हत्थं वा[2] •पायं वा वाहं वा ऊरु वा आउंटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला । पोग्गलामेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ । अलोए ण नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू आलोगंसि हत्थं वा पायं वा वाहं वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ॥

१२० सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

बलिस्स सभा-पद

१२१. कहिण्ण[5] भते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण तिरियमसंखेज्जे जहेव चमरस्स जाव[6] बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते । सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए—एव पमाण जहेव तिगिच्छिकूडस्स पासायवडेंसगस्स वि त चेव पमाण, सीहासण सपरिवार बलिस्स परियारेण, अट्ठो तहेव[7], नवरं—

---

१. भ० १।३३६ ।
२. स० पा०—हत्थ वा जाव पसारेत्तए ।
३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तए ।
४. भ० १।५१ ।
५. कहि ण (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
६. भ० २।११८ ।
७. यथा तिगिच्छकूटस्य नामान्वर्थाभिधायकं वा[...] तथाऽस्यापि वाच्य, केवल तिगिच्छकूटान्व[...] प्रश्नस्योत्तरे यस्मात्तिगिच्छिप्रभाण्युत्पलादी[...] तत्र सन्ति तेन तिगिच्छकूट इत्युच्यत इत्यु[...] इह तु रुचकेन्द्रप्रभाणि तानि सन्तीति वा[...] रुचकेन्द्रस्तु रत्नविशेष इति, तत्पुनर[...]

रुयगिदप्पभाइं-रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइं। सेसं तं चेव जाव बलिचंचाए रायहाणीए अण्णेसि च जाव रुयगिदस्स ण उप्पायपव्वयस्स उत्तरे ण छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो बलिचचा नामं रायहाणी पण्णत्ता। एग जोयणसयसहस्स पमाण, तहेव जाव बलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेस, नवरं—सातिरेग सागरोवम ठिती पण्णत्ता। सेसं त चेव जाव[1] बली वइरोयणिदे, बली वइरोयणिदे॥

१२२. सेवं भते! सेवं भते! जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा[3] णं भंते! ओही पण्णत्ता?
गोयमा! दुविहा ओही पण्णत्ता। ओहीपद निरवसेसं भाणियव्वं[4]॥

१२४. सेव भंते! सेवं भते! जाव[5] विहरइ॥

इक्कारसमो उद्देसो

दीवकुमारादि-पदं

१२५. दीवकुमारा ण भते! सव्वे समाहारा? सव्वे समुस्सासनिस्सासा?
नो इणट्ठे समट्ठे। एव जहा पढमसए बितियउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव[6] समाउया, समुस्सासनिस्सासा[7]॥

सूत्रमेवमध्येय—'से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए? गोयमा! रुयगिदे ण बहूणि उप्पलाणि पउमाइं कुमुयाइं जाव रुयगिदवण्णाइं रुयगिदलेसाइं रुयगिदप्पभाइ, से तेणट्ठेणं रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ)।

१. भ० २।११८-१२१।

२ १।५१।

३. कतिविहे (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

४. प० ३३।

५. भ० १।५१।

६. भ० १।७४, ७५।

७. °निस्सासा। एव नागा वि (अ, ता, ब, म, स)।

१२६. दीवकुमाराणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[1], •नीललेस्सा, काउलेस्सा°, तेउलेस्सा ॥

१२७. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

१२८ एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पिड्ढिया वा ? महिड्ढिया वा ?
गोयमा ! कण्हलेस्साहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा ॥

१२९. सेवं भंते ! सेव भंते ! जाव[3] विहरइ ॥

१२-१४ उद्देसा

१३०. उदहिकुमारा ण भंते ! सव्वे समाहारा ? एवं चेव ॥

१३१. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१३२. एवं दिसाकुमारा वि ॥

१३३. एवं थणियकुमारा वि ॥

१३४. सेवं भंते ! सेव भंते ! जाव[4] विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।५१ ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. कुंजर २.संजय ३.सेलेसि, ४.किरिय ५.ईसाण ६,७. पुढवि ८,९. दग १०,११. वाऊ।
१२. एगिंदिय १३. नाग १४. सुवण्ण, १५. विज्जु १६,१७. वातग्गि[1] सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—उदायी णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥

२. उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि[3] निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥

३. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

४. भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

---

१. वायुग्गि (अ, म, स) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. °ट्ठितीयसि (अ, ख, ब, म) ।
४. भ० २।७३ ।

किरिया-पदं

५. पुरिसे णं भंते ! तलमारुहइ[1], आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे तलमारुहइ, आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव[2] पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहितो तले निव्वत्तिए, तलफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा ॥

६. अहे णं भंते ! से तलफले अप्पणो गरुयत्ताए[3] °भारियत्ताए गरुयसंभारियत्ताए अहे वीससाए° पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जाव[4] जीवियाओ ववरोवेति, तए[5] णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से[6] तलफले अप्पणो गरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेति ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहिं पुट्ठा। जेसिं पि ण जीवाण सरीरेहिंतो तलफले निव्वत्तिए ते[7] ण जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहि पुट्ठा। जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

७. पुरिसे ण भते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठे। जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव[8] बीए निव्वत्तिए, ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा ॥

८. अहे णं भते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए[9] णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

---

१. तलमारुभइ (अ, ख, ता, ब, म); ताल° (क)।
२. भ० १६।११७।
३ स० पा०—गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे।
४. × (अ); भ० ५।१३४।
५. ततो (ब)।
६. से पुरिसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'पुरिसे' इति पद अशुद्धमस्ति। एतत् च लिपिदोषादागतम्। वृत्तौ तत्तालफलमिति लभ्यते। भ० ५।१३५ सूत्रे 'जावं च ण से उसू' इति पाठोस्ति। तत्सादृश्यादत्रापि 'जावं च ण से तलफले' इति पाठः सङ्गतोस्ति।
७ ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'अपि' पद प्रवाहपाति आगतम्। वृत्तौ फल-निर्वर्त्तकास्तु पचक्रिया एव इति व्याख्यायां 'तु' पदेन पूर्वप्रकरणाद् भेदः सूचित.। अस्मिन्नर्थे 'अपि' पदस्य प्रयोगः सङ्गतो न स्यात्।
८. भ० ७।६४।
९. ततो (क, ता, म)।

गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । 'जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे[1] निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहि पुट्ठा'[2] । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए ते णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

९. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स कंदे पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स कंदं पचालेइ वा पवाडेइ वा ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

१०. अहे णं भंते ! से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहि पुट्ठे । जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए, खंधे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्ठा । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहिंतो कदे निव्वत्तिए ते[3] ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहिं पुट्ठा । जहा कदे, एव जाव बीय ॥

११. कति णं भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव[4] कम्मए ॥

१२. कति ण भते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव[5] फासिदिए ॥

१३. कतिविहे णं भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

१४. जीवे णं भते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए । एवं पुढविकाइए वि । एवं जाव मणुस्से ॥

---

१. मूले (ख, ता, ब) ।
२. ×(अ) ।
३. ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. भ० १०।८ ।
५. भ० २।७७ ।

१५ जीवा णं भंते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणा कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं पुढविकाइया वि । एव जाव मणुस्सा । एव वेउव्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं—जस्स अत्थि वेउव्वियं । एव जाव कम्मगसरीर । एवं सोइदिय जाव फासिंदियं । एवं मणजोगं, वइजोगं, कायजोगं, जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं । एए एगत्त-पुहत्तेण छव्वीस दडगा ॥

भाव-पदं

१६. कतिविहे ण भते ! भावे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए[1], ओवसमिए[2] •खइए, खओवसमिए, पारिणामिए°, सन्निवाइए ॥

१७. से कि त ओदइए ?
ओदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उदए य, उदयनिप्फन्ने[3] य । एवं एएणं अभिलावेण जहा अणुओगदारे छन्नामं[4] तहेव निरवसेस भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं सन्निवाइए भावे ॥

१८. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

धम्माधम्म-ठित-पदं

१९. से नूण भते ! संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते ? अस्संजत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते ? संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
हता गोयमा ! सजत-विरत[7]-•पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते, अस्सं-जत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते, संजतासंजते° धम्माधम्मे ठिते ॥

---

१. उदतिए (अ, क, व, म) ।
२. स० पा०—ओवसमिए जाव सन्निवाइए ।
३. निप्पन्ने (अ, म); निप्पन्ने (स) ।
४. छणाम (अ, व, म) ।
५. अ० २७३-२९७ ।
६. भ० १।५१ ।
७. सं० पा०—विरत जाव धम्माधम्मे ।

२०. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मंसि वा, अधम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा[2], •सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा° तुयट्टित्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१. से केण खाइं अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
गोयमा ! संजत-विरत[3]-•पडिहत-पच्चक्खाता°पावकम्मे धम्मे ठिते, धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । अस्संजत[4]-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात°-पावकम्मे अधम्मे ठिते, अधम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते, धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेणं जाव धम्माधम्मे ठिते ॥

२२. जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिता ? अधम्मे ठिता ? धम्माधम्मे ठिता ?
गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिता, अधम्मे वि ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता ॥

२३. नेराइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, नो धम्माधम्मे ठिता । एवं जाव चउरिंदियाणं ॥

२४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे अणिक्खित्ते से णं एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२६. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे निक्खित्ते से णं नो एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२७. जीवा णं भंते ! किं बाला ? पंडिया ? बालपंडिया ?
गोयमा ! बाला वि, पंडिया वि, बालपंडिया वि ॥

२८. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपंडिया । एवं जाव चउरिंदिया ॥

---

१. एतेसिं (अ, क, ब, म, स); अत्र षष्ठीबहुवचनान्त पदं शुद्धं न प्रतिभाति ।
२. सं० पा०—आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
३. सं० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।
४. सं० पा०—अस्संजत जाव पावकम्मे ।

२९. पंचिंदियतिक्खजोणियाणं—पुच्छा।
गोयमा! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, नो पंडिया, बालपंडिया वि। मणुस्सा जहा जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया॥

जीवस्स जीवायाए एगत्त-पदं

३०. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु पाणातिवाए, मुसावाए जाव[1] मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[2] मिच्छादसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। उप्पत्तियाए[3] °वेणइयाए कम्मयाए° पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। ओग्गहे, ईहा-अवाए धारणाए वट्टमाणस्स[4] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। उट्ठाणे[5] °कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे वट्टमाणस्स[6] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नेरइयत्ते तिरिक्ख-मणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स[7] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स[8] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छदिट्ठीए सम्मामिच्छदिट्ठीए, एव चक्खुदसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे विभंगनाणे, आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए, एवं ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, एवं मणजोगे वइजोगे कायजोगे सागारोवओगे, अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया॥

३१. से कहमेयं भंते! एवं?
गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया॥

रूवि-अरूवि-पदं

३२. देवे णं भते! महिड्ढिए जाव[1] महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं[10] विउव्वित्ता ण चिट्ठित्तए?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

---

१. भ० १।३८४।
२. भ० १।३८५।
३. सं० पा०—उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए।
४. स० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
५. स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।
६. ७, ८. स० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
९. भ० १।३३९।
१०. रूपातीतममूर्त्तमात्मानमिति गम्यते (वृ)।

३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं[1] •महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता° नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि[2], 'मए एयं'[3] नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एय अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदस्स[4], समोहस्स, सलेसस्स, ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे[6] ॥

३५. •से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि[7], •अहमेयं पासामि, अहमेय बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं°—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा[8] •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव° लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. सं० पा०—णं जाव नो।
२. अभिसमागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म, वृ)।
३. मएतं (ता) सर्वत्र।
४. सवेदणस्स (ता, स)।
५. सं० पा०—गोयमा जाव चिट्ठित्तए।
६. सं० पा०—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए।
७. सं० पा०—जाणामि जाव जण्णं।
८. सं० पा०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए।
१०. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

एयणा-पदं

३७. सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सया समियं एयति वेयति[1] •चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं तं भावं परिणमति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थेगेण परप्पयोगेण ।।

३८. कतिविहा णं भंते ! एयणा[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, 'भवेयणा, भावेयणा'[3] ।।

३९. दव्वेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयदव्वेयणा, तिरिक्खजोणियदव्वेयणा, मणुस्सदव्वेयणा, देवदव्वेयणा ।।

४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वेयणा-नेरइयदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा नेरइयदव्वेयणं एइंसु[4] वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिरिक्खजोणियदव्वेयणा-तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ?
[5]•गोयमा ! जण्णं तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टमाणा तिरिक्खजोणियदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सदव्वेयणा-मणुस्सदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टमाणा मणुस्सदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव मणुस्सदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवदव्वेयणा-देवदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं देवा देवदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ देवा देवदव्वे वट्टमाणा देवदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेणं जाव° देवदव्वेयणा ।।

---

१. स० पा०—वेयति जाव तं ।
२. एतणा (ता, व) ।
३. भावेयणा, भवेयणा (म) ।
४. एयंसु (अ, व, म) ।
५. स० पा०—एवं चेव, नवरं—तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं, सेसं तं चेव, एवं जाव देवदव्वेयणा ।

४१. खेत्तेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा ॥

४२. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तेयणा-नेरइयखेत्तेयणा ?
एवं चेव, नवरं—नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एवं जाव देवखेत्तेयणा। एवं कालेयणा वि, एवं भवेयणा वि, एवं भावेयणा वि, एव जाव देवभावेयणा ॥

चलणा-पदं

४३. कतिविहा णं भते ! चलणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, तं जहा—सरीरचलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा ॥

४४. सरीरचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मग-सरीरचलणा ॥

४५. इंदियचलणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियचलणा जाव फासिंदियचलणा ॥

४६. जोगचलणा ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगचलणा, वइजोगचलणा, कायजोग-चलणा ॥

४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियसरीरचलणा-ओरालियसरीर-चलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—वेउव्वियसरीरचलणा-वेउव्वियसरीरचलणा ?
एवं चेव, नवर वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा। एवं जाव कम्मगसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सोइंदियचलणा—सोइंदियचलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा सोइदिये वट्टमाणा सोइदियपायोग्गाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणा सोइंदियचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव सोइंदियचलणा। एवं जाव फासिंदियचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणजोगचलणा-मणजोगचलणा ?
गोयमा! जण्णं जीवा मणाजोगे वट्टमाणा मणजोगपाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोगचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा। एवं वइजोगचलणा वि। एवं कायजोगचलणा वि ॥

संवेगादि-पदं

४८. अह भंते ! संवेगे, निव्वेए, गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया, आलोयणया, निंदणया, गरहणया, खमावणया[1], 'विउसमणया'[2], सुयसहायता'[3] भावे अप्पडिवद्धया, विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, कसायपच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उवहिपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खमा, विरागया, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, मणसमन्नाहरणया[4], वइसमन्नाहरणया, कायसमन्नाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, नाणसंपन्नया, दंसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया—एए णं[5] किंपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

गोयमा ! संवेगे, निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया एए णं सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे जाव[7] एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हंता अत्थि ॥

५१. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ '[8]जाव[9] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

५२. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

---

१. खमासणया (अ); खमायणया (क, ख, ता, ब, म, वृ) ।
२. एतत् च क्वचिद् न दृश्यते (वृ) ।
३. सुयसहायता विओसरणता (ता); सुहसाहयया विउसमणया (ब) ।
४. मणसमाधा (हा) रणया (उत्त० २९।१) ।
५. णं भंते पदा (अ, क) ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८. सं० पा०—एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो ।
९. भ० १।२५९-२६६ ।

५३. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ।।

५४. सा भते ! कि आणुपुव्वि कडा कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ। जा य कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा°, नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्वं सिया। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जीवाण एगिंदियाण य निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंच-दिसिं। सेसाणं नियमं छद्दिसिं ।।

५५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ।।

५६. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
जहा पाणाइवाएण दंडओ एवं मुसावाएण वि। एवं अदिन्नादाणेण वि, मेहुणेण[1] वि, परिग्गहेण वि। एवं एते पंच दंडगा ।।

५७. जं समयं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव[2] वत्तव्वं सिया जाव वेमाणियाणं। एवं जाव परिग्गहेण। एवं एते वि पच दडगा ।।

५८. ज देसं ण भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? एव चेव जाव परिग्गहेणं। एते वि पंच दडगा ।।

५९. जं पएसं णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव दंडओ। एवं जाव परिग्गहेणं। एवं एते वीसं दंडगा ।।

दुक्ख-वेदणा-पदं

६०. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे ? परकडे दुक्खे ? तदुभयकडे दुक्खे ?
गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

६१. जीवा णं भते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेति ? परकड दुक्खं वेदेति ? तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ?
गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेति, नो परकडं दुक्खं वेदेति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति। एवं जाव वेमाणियाणं ।।

६२. जीवाणं भंते ! कि अत्तकडा वेयणा ? परकडा वेयणा ? [3]°तदुभयकडा वेयणा° ?

---

१. मेघुणेण (व)।
२. १७।५१-५४।
३. सं० पा०—पुच्छा।

गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, नो परकडा वेयणा, नो तदुभयकडा वेयणा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६३. जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं वेयणं वेदेंति ? परकडं वेयणं वेदेंति ? तदुभयकडं वेयणं वेदेंति ?
गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेयणं वेदेंति, नो परकडं वेयणं वेदेंति, नो तदुभयकडं वेयणं वेदेंति । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

पंचमो उद्देसो

ईसाण-पदं

६५. कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाणं जहा ठाणपदे जाव[2] मज्झे ईसाणवडेंसए । से णं ईसाणवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं—एवं जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3] आयरक्ख त्ति । ठिती सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव जाव[4] ईसाणे देविंदे देवराया, ईसाणे देविंदे देवराया ॥

६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविक्काइयादीणं देस-सव्व-मारणंतियसमुग्घाय-पदं

६७. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्विं

---

१. भ० १।५१ ।
२. प० २ ।
३. भ० १०।९९ ।
४. भ० १०।१०० ।
५. भ० १।५१ ।

उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? पुव्विं संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६८. से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुढविक्काइयाणं तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए । मारणंतियसमुग्घाएण समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति, सव्वेण वा समोहण्णति, देसेण वा समोहण्णमाणे पुव्विं संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेणं समोहण्णमाणे पुव्विं उववज्जेत्ता पच्छा संपाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६९. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एवं चेव ईसाणे वि । एवं जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एवं चेव ॥

७०. पुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एवं जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइओ उववाइओ एवं सक्करप्पभाए वि पुढविक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एव जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ॥

७१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

७२. पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कि पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? सेस तं चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एवं सोहम्मपुढविक्काइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एवं जहा सोहम्मपुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिपब्भारापुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ॥

७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. पुढवीए जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । ३. भ० १।५१ ।
२. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

७४. आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुढविक्काइओ तहा आउक्काइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए तहेव उववाए-यव्वो। एवं जहा रयणप्पभआउक्काइओ उववाइओ तहा जाव अहेसत्तम-आउक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए ॥

७५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

नवमो उद्देसो

७६. आउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेसं तं चेव, एव जाव अहेसत्तमाए। जहा सोहम्मआउक्काइओ एवं जाव ईसिपब्भाराआउक्काइओ जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥

७७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

दसमो उद्देसो

७८. वाउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउ-क्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? जहा पुढविक्काइओ तहा वाउक्का-इओ वि, नवरं—वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणा-समुग्घाए जाव[3] वेउव्वियसमुग्घाए। मारणतियसमुग्घाए णं समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णइ, सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो ॥

७९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३. भ० २।७४।
४. भ० १।५१।

इक्कारसमो उद्देसो

८०. वाउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेस त चेव। एव जहा सोहम्मे वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिपब्भारावाउक्काइओ अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ॥

८१. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[१] ॥

बारसमो उद्देसो

एगिंदिय-पदं

८२ एगिंदिया णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिंदियाणं इह भाणियव्वा जाव[२] समाउया, समोववन्नगा ॥

८३. एगिंदियाण भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[३] •नीललेस्सा काउलेस्सा° तेउलेस्सा ॥

८४. एएसि णं भते ! एगिंदियाण कण्हलेस्साणं[४] •नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

८५. एएसि णं भते ! एगिंदियाण कण्हलेसाण इड्ढी० ? जहेव[५] दीवकुमाराणं ॥

८६. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[६] ॥

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।७६-८१ ।
३. स० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
४. सं० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ।
५. भ० १६।१२८ ।
६. भ० १।५१ ।

१३-१७ उद्देसा

नागकुमारादि-पदं

८७. नागकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसे तहेव निरवसेसं भाणियव्व जाव[1] इड्ढी ॥

८८ सेवं भते ! सेवं भते ! जाव[2] विहरइ ॥

८९ सुवण्णकुमारा णं भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥

९०. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

९१. विज्जुकुमारा णं भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥

९२. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति[4] ॥

९३. वायुकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९४. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

९५. अग्गिकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥

९६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

---

१. भ० १६।१२५-१२८ ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।५१ ।
६. भ० १।५१ ।

अट्ठारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पढमे[1] २. विसाह ३. मायंदिए य ४. पाणाइवाय ५. असुरे य।
६. गुल ७. केवलि ८. अणगारे, ९. भविए तह १०. सोमिलट्ठारसे[2] ॥१॥

पढम-अपढम-पद

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[3] एव वयासी—जीवे णं भते! जीव-भावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। एव नेरइए जाव वेमाणिए॥

२. सिद्धे ण भते ! सिद्धभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे॥

३. जीवा णं भंते ! जीवभावेणं कि पढमा ? अपढमा ?
गोयमा ! नो पढमा, अपढमा। एवं जाव वेमाणिया॥

४. सिद्धा णं—पुच्छा।
गोयमा ! पढमा, नो अपढमा॥

५. आहारए णं भते ! जीवे आहारभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे। एव जाव वेमाणिए। पोहत्तिए एवं चेव॥

६. अणाहारए णं भते ! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे॥

७. नेरइए णं भंते ! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा। एवं नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे। सिद्धे पढमे, नो अपढमे॥

---

१. पढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२. उद्देशकद्वारसग्रहणी चेयं गाथा क्वचिद्दृश्यते—
जीवाहारग भवसन्निलेसादिट्ठी य सजयकसाए।
णाणे जोगुवओगे, तेए य सरीरपज्जत्ती॥ (वृ);
'अ' प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते।

३. भ० १।४-१०।

८ अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा वि, अपढमा वि । नेरइया जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा । सिद्धा पढमा, नो अपढमा—एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा ।।

९. भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! जीवे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! सिद्धे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि ।।

१० सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णीभावेणं किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण वि । असण्णी एवं चेव एगत्त-पुहत्तेणं, नवरं जाव वाणमंतरा । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुहत्तेण वि ।

११ सलेसे णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुहत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, नवरं—जस्स जा लेसा अत्थि । अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा नोसण्णी-नो असण्णी ।।

१२. सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीवे सम्मदिट्ठिभावेणं किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि । एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारगा । सम्मामिच्छदिट्ठी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, नवरं—जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ।।

१३. संजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । असंजए जहा आहारए । संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । नोसंजए नो अस्संजए नोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमे, नो अपढमे ।।

१४ सकसायी, कोहकसायी जाव लोभकसायी—एए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए । अकसायी जीवे सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, नो अपढमा ।।

१५. नाणी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जव-नाणी एगत्त-पुहत्तेणं एवं चेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा । अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी य एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए ।।

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं— जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा ॥

१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेणं जहा अणाहारए॥

१८. सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवर– जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्त-पुहत्तेण तिसु वि पदेसु जहा अकसायी॥

१९. ससरीरी जहा आहारए, एव जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं— आहारगसरीरी[1] एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो य एगत्त-पुहत्तेणं 'पढमो, नो अपढमो'[2] ॥

२०. पंचहि पज्जत्तीहि पचहि अपज्जत्तीहि एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवरं— जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। इमा लक्खणगाहा—

जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे णं भंते! जीवभावेणं कि चरिमे? अचरिमे?
गोयमा! नो चरिमे, अचरिमे॥

२३. नेरइए णं भंते! नेरइयभावेणं—पुच्छा।
गोयमा! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे॥

२३. जीवा णं—पुच्छा।
गोयमा! नो चरिमा, अचरिमा। नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि। एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा॥

२४. आहारए सव्वत्थ एगत्तेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे; पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि 'नो चरिमो, अचरिमो'[3]। सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारओ॥

२५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेण चरिमे, नो अचरिमे। सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ॥

---

१. आहारासरीरी (क, ख, ता)।
२. पढमा नो अपढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, ब, म)।

२६ सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगत्त-पुहत्तेण ।।

२७. सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, नवरं—जस्स जा अत्थि । अलेस्सो जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

२८. सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ । मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ । सम्मामिच्छदिट्ठी एगिंदिय-विगलिंदियवज्ज सिय चरिमे, सिय अचरिमे । पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि ।।

२९ संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ । अस्संजओ वि तहेव । संजयासंजए वि तहेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजओ जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३०. सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ । अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो चरिमे, अचरिमे । मणुस्सपदे सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

३१. नाणी जहा सम्मद्दिट्ठी सव्वत्थ । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा आहारओ ।।

३२. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि । अजोगी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

३३. सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ।।

३४. सवेदओ जाव नपुंसगवेदओ जहा आहारओ । अवेदओ जहा अकसायी ।।

३५. ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवरं—जस्स जं अत्थि । असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३६. पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं दंडगा भाणियव्वा । इमा लक्खणगाहा—

जो जं पाविहिति पुणो, भावं सो तेण अचरिमो होइ ।
अच्चंतविओगो जस्स, जेण भावेण सो चरिमो ।।१।।

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

---

१. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पदं

३८. तेण कालेणं तेणं समएणं विसाहा नाम नगरी होत्था—वण्णओ[1]। बहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ[2]। सामी समोसढे जाव[3] पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेण समएण सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एवं जहा सोलसमसए बितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेणं आगओ, नवरं—एत्थं आभियोगा वि अत्थि जाव[4] बत्तीसतिविह नट्टविहिं उवदसेत्ता जाव पडिगए॥

३९. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[5] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठंतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव[6] अभिसमन्नागए?

४०. गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[7]। सहसंबवणे[8] उज्जाणे—वण्णओ[9]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नाम सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य [11]•मंतेसु य रहस्सेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाण आहारे आलंबणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए° चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं[12] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव[13] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएण मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव[14] परिसा पज्जुवासइ॥

४२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एव जहा एक्कारसमसए सुदसणे तहेव निग्गओ जाव[15] पज्जुवासति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० २२-५२।
४. भ० १६।३३; ३।२७।
५. सं० पा०—महावीरं जाव एव।
६. भ० ३।२८-३०।
७. ओ० सू० १।
८. सहस्संबवणे (स)।
९. भ० ११।५७।
१०. भ० २।९४।
११. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए।
१२. स० पा०—आहेवच्चं जाव कारेमाणे।
१३. भ० २।९४।
१४. भ० १६।६७,६८।
१५. भ० ११।११६।

४३. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स [1]•तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४४ तए ण से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स[3] •अरहओ अतियं धम्मं सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय[4] •अरह वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता° एव वयासी—एवमेयं भते ! जाव[5]—से जहेयं तुब्भे वदह ज, नवर—देवाणुप्पिया ! नेगमट्ठसहस्स आपुच्छामि, जेट्ठपुत्त च कुडुबे ठावेमि, तए णं अह देवाणुप्पियाणं अतियं पव्वयामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया[6] ! मा पडिबधं ॥

४५. तए ण से कत्तिए सेट्ठी जाव[7] पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए णं अह देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे जाव[8] पव्वयामि, त तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! कि करेह, कि ववसह, किं[9] भे हियइच्छिए, किं[10] भे सामत्थे ?

४६. तए ण त नेगमट्ठसहस्स पि[11] कत्तिय सेट्ठि एव वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा जाव पव्वयह[12], अम्ह देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलबे वा, आहारे वा, पडिबधे वा ? अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिएहि सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय[13] पव्वयामो[14] ॥

४७. तए ण से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्स एव वयासी—जदि णं देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धि मुणिसुव्वयस्स[15] •अरहओ अतियं मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु गिहेसु, विपुलं असणं[16] •पाण खाइमं साइमं° उवक्खडावेह,

---

१. स० पा०—धम्मकहा ।
२. ओ० सू० ७१-७९ ।
३. स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव निसम्म ।
४. स० पा०—मुणिसुव्वय जाव एवं ।
५. भ० २।५२ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७. भ० १६।७१ ।
८. भ० १८।४६ ।
९. के (क, ख, ता, व, म) ।
१०. के (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
११ तं (ख) ।
१२. पव्वाति (अ), पव्वादि (क, ख, ता, ब), पव्वादि (म); पव्वाहिति (स) । नायाधम्मकहाओ (५।९०) सूत्रानुसारेण एतत् क्रियापद स्वीकृतम् ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१४. पव्वामो (अ, ख, ता, ब, म) ।
१५. सं० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव पव्वयह ।
१६. स० पा०—असणं जाव उवक्खडावेह ।

मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालं-कारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ°जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-संबंधि°-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[4] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेण अकालपरिहीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ॥

४८. तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं[5] •पाणं खाइमं साइमं° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ°, तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहंति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि° परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवंति ॥

४९. तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो जाव[11] सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[12]-•नियग-सयण-संबंधि°-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[13] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जहा गंगदत्तो जाव[14] आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जाव[15] आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वावियं जाव[16] धम्ममाइक्खियं ॥

---

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
४. भ० ९।१८२ ।
५. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेति ।
६. सं० पा०—नाइ जाव तस्सेव ।
७. सं० पा०—नाइ जाव पुरओ ।
८. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
९. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१०. भ० ९।१८२ ;
११. भ० १६।७१ ।
१२. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
१३. भ० ९।१८२ ।
१४. भ० १६।७१; ९।२१४ ।
१५. भ० ९।२१४ ।
१६. भ० २।५२ ।

५०. तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धि सयमेव पव्वावेति जाव[1] धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एवं चिट्ठियव्वं जाव[2] संजमियव्व ।।

५१. तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मिय उवदेसं सम्म पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति जाव[3] सजमेति ।।

५२. तए ण से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि अणगारे जाए—ईरियासमिए जाव[4] गुत्तबभयारी ।।

५३. तए ण से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतियं सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहि चउत्थ छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झोसेइ, झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय[6]-•पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे° काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि[7] •देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए° सक्के देविदत्ताए उववन्ने ।।

५४. तए ण से सक्के देविदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेस जहा गगदत्तस्स जाव[8] सव्वदुक्खाणं अत काहिति, नवरं – ठिती दो सागरोवमाइ, सेस तं चेव ।।

५५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[9] ।।

तइओ उद्देसो

मागंदियपुत्त-पदं

५६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे होत्था—वण्णओ । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[10] परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ

---

१. भ० २।५३ ।
२. भ० २।५३ ।
३. भ० २।५४ ।
४. भ० २।५५ ।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाण ।
६. सं० पा०—आलोइय जाव कालं ।
७. स० पा०—देवसयणिज्जंसि जाव सक्के ।
८. भ० १६।७२-७५ ।
९. भ० १।५१ ।
१०. भ० १।२-५ ।

महावीरस्स[1] अंतेवासी मागंदियपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए—जहा मंडियपुत्ते जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

५७. से नूणं भंते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५८. से नूणं भंते ! काउलेस्से[4] आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५९. से नूणं भंते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए [5]•काउलेसेहिंतो वणस्सइकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता !° जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं[6] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता जेणेव समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६१. तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोएंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ! एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६२. से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. महावीरस्स जाव (स) ।
२. भ० ३।१३४; १।२८८, २८९ ।
३. भ० १।४४ ।
४. काउलेसे (अ, स) ।
५. स० पा०—एवं चेव जाव ।
६. स० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणे निग्गथे आमतित्ता एव वयासी—जण्ण अज्जो ! मागदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । सच्चे ण एसमट्ठे । अह् पि ण अज्जो ! एवमाइक्खामि एवं भासेमि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहिंतो पुढविकाइएहिंतो जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! नीललेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव काउलेस्से वि । जहा पुढविकाइए एव आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि । सच्चे ण एसमट्ठे ॥

६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति समणा निग्गथा समण भगव महावीर वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जेणेव मागदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मागदियपुत्त अणगार वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति ॥

६४. तए ण से मागदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

६५ अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो सव्व कम्म वेदेमाणस्स सव्व कम्म निज्जरेमाणस्स सव्व मार मरमाणस्स सव्व सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिम कम्म वेदेमाणस्स चरिम कम्म निज्जरेमाणस्स चरिम मार मरमाणस्स चरिमं सरीर विप्पजहमाणस्स, मारणतिय कम्म वेदेमाणस्स मारणतिय कम्म निज्जरेमाणस्स मारणतिय मारं मरमाणस्स मारणतिय सरीर विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ?

हता मागदियपुत्ता ! अणगारस्स ण भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स जाव जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ॥

निज्जरापोग्गल-जाणणादि-पदं

६६. छउमत्थे णं भते ! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाण किंचि आणत्त वा नाणत्तं वा [1]•ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्तं वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. स० पा०—एव जहा इदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया, जाव तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते जाणति-पासति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो ।

६७. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?
मागंदियपुत्ता ! देवे वि य णं अत्थेगइए जे णं तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेण मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ, सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं ते ओगाहित्ता चिट्ठंति ॥

६८. नेरइया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणंति न पासंति, न आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! नेरइया णं ते निज्जरापोग्गले न जाणंति न पासंति, आहारेंति। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥

६९. मणुस्सा णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणंति न पासंति, न आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति। अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति ॥

७०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति ? अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति, आहारेंति। से तेणट्ठेण मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति। अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति। वाणमंतर-जोइसिया जहा नेरइया ॥

७१. वेमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवरं—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे ते मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववन्नगा य परंपरोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते अणंतरोववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते परंपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणंति

न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति, आहारेंति। से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति। अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति° ॥

बंध-पदं

७२. कतिविहे णं भंते! बंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वबंधे य, भावबंधे य ॥

७३. दव्वबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता दुविहे! पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

७४. वीससाबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससा-बंधे य ॥

७५. पयोगबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिढिलबंधणबंधे य, धणियबंधण-बंधे य ॥

७६. भावबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७७. नेरइयाणं भंते! कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तर-पगडिबंधे य। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

७८. नाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडि-बंधे य ॥

७९. नेरइयाणं भंते! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तर-पगडिबंधे य। एवं जाव वेमाणियाणं। जहा नाणावरणिज्जेणं दंडओ भणियो एवं जाव अंतराइएणं भाणियव्वो ॥

कम्म-नाणत्त-पदं

८०. जीवाणं भंते! पावे कम्मे जे य कडे[1], °जे य कज्जइ[2]°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स केइ नाणत्ते?
हंता अत्थि ॥

---

१. स० पा०—कडे जाव जे।
२. जे त कडमाणे (ता)।

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे[1], •जे य कज्जइ॰, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स नाणत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! से जहानामए—केइ पुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णायतं उसु करेति, करेत्ता उड्ढं वेहास उव्विहइ, से नूणं मागंदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहास उव्वीढस्स समाणस्स एयति वि नाणत्तं[2], •वेयति वि नाणत्त, चलति वि नाणत्तं, फंदइ वि नाणत्तं, घट्टइ वि नाणत्तं, खुब्भइ वि नाणत्तं, उदीरइ वि नाणत्तं॰ तं तं भावं परिणमति वि नाणत्त ?
हंता भगव ! एयति वि नाणत्त जाव तं त भाव परिणमति वि नाणत्त ।
से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एव वुच्चइ - एयति वि नाणत्त जाव तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ॥

८२. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे॰ ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाण ॥

८३. नेरइया णं भते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हति, तेसि ण भते ! पोग्गलाण सेयकालंसि कतिभाग आहारेति ? कतिभागं निज्जरेंति ?
मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेति, अणंतभागं निज्जरेति ॥

८४. चक्किया ण भंते ! केइ तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव[3] तुयट्टित्तए वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । अणाहारणमेय वुइय समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥

८५. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

जीवाणं परिभोगापरिभोग-पदं

८६. तेणं कालेणं तेणं समएण रायगिहे जाव[5] भगवं गोयमे एवं वयासी—अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव[6] मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव[7]

---

१. सं॰ पा॰—कडे जाव जे ।
२. स॰ पा॰—नाणत्तं जाव तं ।
३. भ॰ ७।२१६ ।
४. भ॰ १।५१ ।
५ भ॰ १।४-१० ।
६. भ॰ १।३८४ ।
७. भ॰ १।३८५ ।

मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिवद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य वादरवोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए[1] नो हव्वमागच्छति ॥

८७. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य वादरवोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति । पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसण-सल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छति ॥

कसाय-पदं

८८. कति ण भंते ! कसाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कसायपद निरवसेस भाणियव्व जाव[2] निज्जरिस्सति लोभेण ॥

जुम्म-पदं

८९. कति ण भते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे, तेयोगे[3], दावरजुम्मे[4], कलिओगे[5] ॥

९०. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—जाव कलिओगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्त कडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेयोगे । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त कलिओगे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ जाव कलिओगे ॥

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२. प० १४ ।
३. तेयोए (अ), तेजोए (क); तेयोते (ख, व); तेयोदे (ता), तेजोगे (म), तियोगे (स) ।
४. वादरजुम्मे (अ, क); वादरजुण्णे (ता) ।
५. कलिओए (ख); कलिओदे (ता) ।

९१. नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा ? तेयोगा ? दावरजुम्मा ? कलिओगा ?
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। एव जाव थणियकुमारा ।।

९२. वणस्सइकाइया ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ।।

९३. बेदिया[1] णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा। एवं जाव चउरिंदिया। सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया। सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ।।

९४. इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलिओगाओ। एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारित्थीओ। एव तिरिक्खजोणित्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ।।

अंधगवण्हिजीवाणं वर-पर-पदं

९५. जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ?
हंता गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ।।

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

पंचमो उद्देसो

वेउव्वियावेउव्विय-असुरकुमारादि-पदं

९७. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ ण एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे देवे से ण नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

1. बेइंदिया (ब)।
2. भ० १।५१।

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्वियसरीरा य, अवेउव्वियसरीरा य। तत्थ ण जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिरूवे ।।

९८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव नो पडिरूवे ?

गोयमा ! से जहानामए—इह मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए। एएसि ण गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकिय-विभूसिए ?

भगवं ! तत्थ ण जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। से तेणट्ठेण जाव नो पडिरूवे ।।

९९. दो भंते ! नागकुमारा देवा एगंसि नागकुमारावासंसि° ? एवं चेव जाव थणिय-कुमारा। वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव ।।

नेरइयादीणं महाकम्मादि-पदं

१००. दो भंते ! नेरइया एगंसि नेरइयावासंसि नेरइयत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव[1], °महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव[2], °अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणताए चेव, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा[3] य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से अमायि-सम्मदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव ।।

१०१. दो भंते ! असुरकुमारा° ? एवं चेव। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया ।।

नेरइयादीणं आउय-पदं

१०२. नेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?

---

१. सं० पा०—चेव जाव महावेयण° ।
२. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण° ।
३. मादिमिच्छ° (व) ।

गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठति। एवं मणुस्सेसु वि, नवरं—मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठति ॥

१०३. असुरकुमारे णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, [1]•से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?०

गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठति। एवं जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठति, जत्थ ठिओ त पडिसंवेदेति जाव वेमाणिए, नवरं—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जति, पुढविकाइयाउयं पडिसंवेदेति, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठति। एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएतव्वो, परट्ठाणे तहेव ॥

असुरकुमारादीणं विउव्वणा-पदं

१०४. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुय विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ। एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, वक विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, जं जहा इच्छति नो त तहा विउव्वइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति वक विउव्वइ जाव नो त तहा विउव्वइ। तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥

१०५. दो भंते ! नागकुमारा० ? एवं चेव। एवं जाव थणियकुमारा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

१०६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति[2] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेच्छइय-ववहार-नय-पदं

१०७. फाणियगुले णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. सं० पा०—पुच्छा।   २. भ० १।५१।

गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए[1] य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स गोड्डे[2] फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे दुगधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०८ भमरे ण भते ! कतिवण्णे [3]•कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते° ?
गोयमा ! एत्थ ण दो नया भवति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०९. सुयपिच्छे ण भंते ! कतिवण्णे कतिगधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?
एव चेव, नवर वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे [4]•जाव अट्ठफासे पण्णत्ते° । एवं एएण अभिलावेण लोहिया मजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा[5], सुक्किलए संखे, सुब्भिगधे कोट्ठे, दुब्भिगधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कडुया सुठी, कसाए[6] कविट्ठे, अवा अंबिलिया, महुरे खडे, कक्खडे वइरे, मउए नवणीए, गरुए[7] अए, लहुए उलुयपत्ते[8], सीए हिमे, उसिणे[9] अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले ॥

११०. छारिया णं भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! एत्थ दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥

परमाणु-खंधाण वण्णादि-पदं

१११. परमाणुपोग्गले ण भते ! कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥

११२ दुपएसिए ण भते ! खंधे कतिवण्णे [10]•जाव कतिफासे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११३ [11]•तिपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. निच्छइय° (अ, क, व, स) ।
२ गोड्डु (अ); गोडे (स) ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. स० पा०—सेस त चेव ।
५ हलिद्दा (अ, क, ता, व, म) ।
६. कसाए तुयरए (अ, क, ख, ता, व म) ।
७. गुरुए (अ, व) ।
८. लउयपत्ते (ता) ।
९. उसुणे (अ, क, ख, ता, व) ।
१०. स० पा०—पुच्छा ।
११. सं० पा०—एव तिपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे । एव रसेसु वि, सेस जहा दुपएसियस्स । एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउ-फासे पण्णत्ते ।।

११४. चउपएसिए ण भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।।

११५. पचपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पंचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।° जहा पंचपएसिओ एवं जाव असखेज्जपएसिओ ।।

११६. सुहुमपरिणए ण भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
जहा पचपएसिए तहेव निरवसेस ।।

११७. बादरपरिणए णं भते ! अणतपएसिए खंधे कतिवण्णे [1]°जाव कतिफासे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते ।।

११८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

सत्तमो उद्देसो

केवलि-भासा-पदं

११९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ[3], एव खलु केवली जक्खाए-सेणं आइट्ठे[4] समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा, से कहमेयं भते ! एवं ?

जाव सिय चउवण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं त चेव । एव पंचपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु वि, गधफासा तहेव ।

१. स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।५१ ।
३. आतिस्सति (स) ।
४. आदिट्ठे (ता); आतिढे (स) ।

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव[1] जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—नो खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ, नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा। केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—सच्चं वा, असच्चामोसं वा ॥

उवहि-पदं

१२०. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, वाहिरभंड-मत्तोवगरणोवही ॥

१२१. नेरइया णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य। सेसाणं तिविहे उवही एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य ॥

१२२. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सच्चित्ते, अचित्ते, मीसए[2]। एवं नेरइयाण वि। एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

परिग्गह-पदं

१२३. कतिविहे णं भंते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे वाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे ॥

१२४. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे परिग्गहे पण्णत्ते ? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेण वि दो दंडगा भाणियव्वा ॥

पणिहाण-पदं

१२५. कतिविहे णं भंते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ॥

१२६. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव। एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

१२७. पुढविकाइयाणं—पुच्छा।

---

१. भ० १।४२१।
२. मीसे (ब)।

गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाण ॥

१२८. बेइंदियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णते तं जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एव जाव चउरिंदियाण । सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ॥

१२९. कतिविहे ण भंते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ॥

१३०. कतिविहे णं भते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥

१३१. मणुस्साण भंते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

१३२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

१३३. तए ण समणे भगवं महावीरे[2] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कालोदाइ-पभितीणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

१३४. तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे नामं नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई,[3]•सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, सखवालए, सुहत्थी गाहावई ॥

१३५. तए णं तेसि अण्णउत्थियाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, पोग्गलत्थिकाय । एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकाय पण्णवेति ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं । एगं च णं

---

१. भ० १।५१ ।
२. सं० पा०—महावीरे जाव वहिया ।
३. सं० पा०—एव जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से ।

समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकाय अजीवकायं पण्णवेति ।° से कहमेयं मन्ने एव ?

१३६. तत्थ ण रायगिहे नगरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसति—अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए, अभिगयजीवाजीवे जाव[1] विहरइ ॥

१३७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[2] °गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव° समोसढे परिसा जाव[3] पज्जुवासति ॥

१३८. तए ण मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ[4] °चित्तमाणदिए णदिए पीईमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए ण्हाए जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेण रायगिह नगर मज्झमज्झेणं[6] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसि अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेण वीईवयइ ॥

१३९. तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासय अदूरसामंतेण वीईवयमाणं पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[7], इम च ण मद्दुए समणोवासए अम्ह अदूरसामतेण वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह मद्दुयं समणोवासय एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतियं एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मद्दुय समणोवासय एवं वदासी—एव खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेइ, [8]°तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकाय । त चेव जाव[9] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेइ ।° से कहमेय मद्दुया ! एवं ?

मद्दुय-समणोवासएण समाहाण-पदं

१४०. तए ण से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—जति कज्जं कज्जति जाणामो-पासामो, अहे कज्जं न कज्जति न जाणामो न पासामो ॥

१४१ तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुय समणोवासयं एवं वयासी—केस ण तुम मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठ न जाणसि न पाससि ?

---

१. भ० २।९४ ।
२. स० पा०—चरमाणे जाव समोसढे ।
३. ओ० सू० ५२-५२ ।
४. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
५. भ० २।९७ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७. अविउप्पकडा (क, व, म, स); अविदुप्पडा (ता) ।
८. स० पा०—जहा सत्तमे सए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से ।
९. भ० ७।२१३ ।

१४२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—
अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाण पोग्गलाणं रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
अत्थि ण आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि।
तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइ रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ त सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[1], पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेण जाव[2] पज्जुवासति॥

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३. मद्दुयादी ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासग एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया ! तुम ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया ! अट्ठ वा हेउ वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुत अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पण्णवेति[3] •परूवेति

१. पडिहणति (अ, ख, म, स)।
२. भ० २।९७।
३. स० पा०—पण्णवेति जाव उवदसेति।

दंसेति निदसेति° उवदसेति, से णं अरहंताणं आसादणाए[1] वट्टति, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, केवलीणं आसादणाए वट्टति, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुम मद्दुया[2] ! •ते अण्णउत्थिए° एव वयासी ।।

१४४. तए ण मद्दुए समणोवासए समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीरं वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[3] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ।।

१४५. तए णं समणे भगव महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[4] परिसा पडिगया ।।

१४६. तए णं मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स[5] •अतिए धम्म सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियति, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता[6] •नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ।।

१४७. भंतेति ! भगव गोयमे समणे भगव महावीर वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—पभू ण भते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय[7] •मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एव जहेव सखे तहेव अरुणाभे जाव[8] अंतं काहिति ।।

विकुव्वणाए एगजीव-संबध-पदं

१४८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धि संगाम संगामित्तए ?

हंता पभू ।

ताओ णं भते ! बोदीओ किं एगजीवफुडाओ ? अणेगजीवफुडाओ ?

गोयमा ? एगजीवफुडाओ, नो अणेगजीवफुडाओ ।

'ते ण भंते ! तासि'[10] बोदीण अंतरा कि एगजीवफुडा ? अणेगजीवफुडा ?

गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा ।।

---

१. आसायणाए (ख); आसातणाए (ता) ।

२. स० पा०—मद्दुया जाव एव ।

३. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

४. ओ० सू० ७१-७९ ।

५. सं० पा०—महावीरस्स जाव निसम्म ।

६. स० पा०—वदित्ता जाव पडिगए ।

७. सं० पा०—अतिय जाव पव्वइत्तए ।

८. भ० १२।२७,२८ ।

९. भ० १।३३९ ।

१०. ते ण भते ! तेसिं (अ, क, ख, ता, व); तेसि ण भते (म, स) ।

१४९. पुरिसे णं भंते ! अंतरे हत्थेण वा [1]•पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा आमुसमाणे वा संमुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमति ॥

देवासुर-संगाम-पद

१५०. अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे,देवासुराणं संगामे ?
हंता अत्थि ॥

१५१. देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति[2] तण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? नो इणट्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ॥

देवस्स दीवसमुद्द-अणुपरियट्टण-पदं

१५२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हंता पभू ॥

१५३. देवे णं भंते ! महिड्ढिए [3]•जाव महेसक्खे पभू धायइसंडं दीवं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?°
हंता पभू । एवं जाव[4] रुयगवरं दीवं[5] •अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?°
हंता पभू । तेण परं वीईवएज्जा, नो चेव णं अणुपरियट्टेज्जा ॥

देवाणं कम्मक्खवण-काल-पदं

१५४. अत्थि ण भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयति ?
हंता अत्थि ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो ।
२. परामसति (ख, ता, व) ।
३. सं० पा०—एवं धायइसंड दीव जाव हंता ।
४. जी० ३ ।
५. सं० पा०—दीवं जाव हंता ।

१५५. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५६. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५७. कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति । असुरिंद-वज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति । असुर-कुमारा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति । गह-नक्खत्त-तारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससएहिं[1] खवयंति । चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोतिसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति ।
सोहम्मीसाणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं खवयंति । सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ।
हिट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति । मज्झिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । उवरिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ।
एए णं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ॥

१५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

अट्ठमो उद्देसो

ईरियं पडुच्च गोयमस्स संवाद-पदं

१५९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स[1] अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए[2] वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो[3] •पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टपोते वा कुलिंगच्छाए वा परियावज्जेज्जा°, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ० ?

[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं रियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तं रीयती। से तेणट्ठेणं° ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[5] विहरइ ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे[6] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

अण्णउत्थियाणं आरोव-पदं

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसति। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया ॥

१६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

---

१. पातस्स (ता)।

२. ०छाते (ख, ब, म, स)।

३. सं० पा०—भावियप्पणो जाव तस्स।

४. सं० पा०—जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो।

५. भ० १।५१।

६. स० पा०—महावीरे बहिया जाव विहरइ।

७. भ० ८।२७१।

नामं अणगारे जाव[1] उड्ढं जाणू[2] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

१६५. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो! तिविहं तिविहेणं अस्संजय[3]-•विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगतदंडा°, एगत-बाला यावि भवह[4] ?

१६६ तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेणं अस्सजय जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१६७. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह जाव[5] उद्दवेह[6], तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा[7] तिविहं तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६८. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो! रीय रीयमाणा काय च जोय च रीयं च पडुच्च दिस्सा[8]-दिस्सा पदिस्सा[9]-पदिस्सा वयामो, तए णं अम्हे दिस्सा-दिस्सा वयमाणा पदिस्सा-पदिस्सा वयमाणा नो पाणे पेच्चेमो जाव नो उद्दवेमो, तए ण अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेण जाव एगतपंडिया यावि भवामो। तुब्भे ण अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६९. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—केणं कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१७०. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो! रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए ण तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवह ॥

१७१. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव पडिभणइ[10], पडिभणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे जाव[11] पज्जुवासति ॥

---

१. भ० १।९।
२. स० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।
३. स० पा०—अस्सजय जाव एगत°।
४. तुलना—भ० ८।२८५-२९०।
५. भ० ८।२८७।
६. उवद्दवेह (ख)।
७. उवद्दवेमाणा (ख)।
८. दिस्स (अ, ता, व, म)।
९. पदिस्स (अ, ख, ता, व, म)।
१०. पडिहणइ (अ, क, ख, व, म, स)।
११. भ० १।१०।

१७२. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्ण-उत्थिए एव वदासी। अत्थि णं गोयमा ! ममं वहवे अंतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा ण तुमं। तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु ण तुमं गोयमा ! ते अण्ण-उत्थिए एवं वयासी ॥

१७३. तए णं भगवं गोयमे समणेण भगवया महावीरेणं एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

परमाणुपोग्गलादीणं जाणणा-पासणा-पदं

१७४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से[1] परमाणुपोग्गलं कि जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७५. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से दुपएसियं खंधं कि जाणति-पासति ? [2]•उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति।°
एवं जाव असंखेज्जपएसियं ॥

१७६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से अणंतपएसियं खंधं किं [3]•जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?°
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति-पासति, अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थे-गतिए न जाणति पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७७. आहोहिए[4] णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं कि जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ॥

१७८. परमाहोहिए ण भते ! मणुस्से परमाणुपोग्गल जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति तं समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति ? ज समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं ज समयं

---

१. मणूसे (अ, क, ता, व, म)
२. स० पा०—एव चेव।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. अहोहिए (ख, स)।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।

जाणति नो त समयं पासति, जं समयं पासति° नो त समयं जाणति। एवं जाव अणंतपदेसिय ॥

१८०. केवली ण भते ! मणुस्से परमाणुपोग्गल [१]•ज समय जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति त समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८१. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गल ज समयं जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दसणे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो त समयं पासति, ज समय पासति नो त समयं जाणति। एवं° जाव अणतपएसियं ॥

१८२. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

भवियदव्व-पद

१८३. रायगिहे जाव एव वयासी—अत्थि णं भंते ! भवियदव्वनेरइया-भवियदव्व-नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

१८४. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया ?
गोयमा ! जे भविए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। एव जाव थणियकुमाराण ॥

१८५. अत्थि णं भते ! भवियदव्वपुढविकाइया-भवियदव्वपुढविकाइया ?
हता अत्थि ॥

१८६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं एवं चेव। तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा

---

१. स० पा०—जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव।

तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु उववज्जित्तए। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पचिं-दियतिरिक्खजोणिए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए। एवं मणु-स्सा वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया ण जहा नेरइया ॥

१८७ भवियदव्वनेरइयस्स ण भंते! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥

१८८ भवियदव्वअसुरकुमारस्स ण भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। एवं जाव थणियकुमारस्स ॥

१८९. भवियदव्वपुढविकाइयस्स ण—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ। एवं आउक्काइयस्स वि। तेउ-वाउकाइयस्स वि जहा नेरइयस्स। वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स। बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरो-वमाइ। एव मणुस्सस्स वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुर-कुमारस्स ॥

१९०. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

दसमो उद्देसो

भावियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पदं

१९१. रायगिहे जाव एव वयासि—अणगारे णं भंते! भावियप्पा असिधार वा खुरधार वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ॥
से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९२. [1]●अणगारे णं भंते! भावियप्पा अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा।
से णं भंते! तत्थ झियाएज्जा ?

---

१. स० पा०—एव जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेणं।

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९३. अणगारे ण भंते ! भावियप्पा पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९४. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

परमाणुपोग्गलादीणं वाउकाय-फास-पदं

१९६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं फुडे ॥

१९७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा दुप्पएसिएणं खंधेण फुडे ? एव चेव । एवं जाव असखेज्जपएसिए ॥

१९८ अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपएसिए खधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए अणतपएसिएणं खधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे ॥

१९९. वत्थी भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा वत्थिणा फुडे ?
गोयमा ! वत्थी वाउयाएण फुडे, नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥

दव्वाणं वण्णादि-पदं

२०० अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ 'काल-नील'[1]-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं, दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुयं-सीय-उसिण-

---

१. काला नीला (अ, क, ख, ता, म) ।

निद्ध-लुक्खाइं, अण्णमण्णबद्धाइं, अण्णमण्णपुट्ठाइं, 'अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं'[1], अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

२०१. अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइं ? एवं चेव । एवं जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए ॥

२०२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[2] विहरइ ॥

२०३. तए णं समणे भगवं महावीरे[3] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता॰ बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ । दूतिपलासए चेइए—वण्णओ । तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद[5] जाव[6] सुपरिनिट्ठिए, पचण्हं खंडियसयाणं, 'सयस्स य'[7], कुडुंबस्स आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे॰ विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[9] परिसा पज्जुवासति ॥

२०५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[10] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे[11] इहमागए[12] •इहसपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे॰ दूतिपलासए चेइए अहापडिरूवं[13] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे॰ विहरइ । तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं[14] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं॰ वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. सं० पा०—महावीरे जाव बहिया ।
४. भ० २।९४ ।
५. रुव्वेद (अ, म); रिउव्वेद (क, स) ।
६. भ० २।२४ ।
७. सायस्स (अ, क, ख, ता, म) ।
८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ ।
९. भ० १८।१३७ ।
१०. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
१२. सं० पा०—इहमागए जाव दूतिपलासए ।
१३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
१४. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरणाइं ।

वागरणाइं नो वागरेहिती तो ण एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामी ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण एगेण खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समणं भगव महावीर एव वयासी—

२०६ जत्ता[2] ते भते ? जवणिज्जं (ते भते ?) ? अव्वाबाहं (ते भंते ?) ? फासुयविहारं (ते भंते ?) ?
सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे ॥

२०७ कि ते भते ! जत्ता ?
सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्त जत्ता ॥

२०८ किं ते भते ! जवणिज्ज ?
सोमिला ! जवणिज्जे[3] दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इंदियजवणिज्जे य, नोइंदियजवणिज्जे य ॥

२०९ से किं त इदियजवणिज्जे ?
इंदियजवणिज्जे—ज मे सोइदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इदियजवणिज्जे ॥

२१०. से किं त नोइदियजवणिज्जे ?
नोइदियजवणिज्जे—ज मे कोह-माण-माया[4]-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेंति, सेत्तं नोइदियजवणिज्जे, सेत्त जवणिज्जे ॥

२११ किं ते भते ! अव्वाबाहं ?
सोमिला ! ज मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया[5] विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति, सेत्त अव्वाबाहं ॥

२१२ कि ते भते ! फासुयविहार ?
सोमिला ! जण्ण आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेत्त फासुयविहार ॥

---

१. भ० २।६७ ।
२. तुलना—नायाधम्मकहाओ १।५।७१-७६ ।
३ जमणिज्जे (अ, ख, ता, म) ।
४. माय (क, ख, ता) ।
५. सन्निवाइय (अ, ख) ।

२१३. सरिसवा[1] ते भंते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! सरिसवा (मे ?) भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
से नूणं भे सोमिला ! वंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य।
तत्थ णं जेते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया'[2], ते ण समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ ण जेते धन्नसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाण निग्गथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य। तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते समणाण निग्गथाण अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जाइया य, अजाइया य। तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ ण जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ[3]—•सरिसवा मे भक्खेया वि° अभक्खेया वि ॥

२१५. मासा ते भंते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि ॥

२१६. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि° अभक्खेया वि ?
से नूणं भे[5] सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वमासा य, कालमासा य।
तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा—सावणे, भद्दवए, आसोए[6], कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाण अभक्खेया।
तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थमासा य, धण्णमासा य।

---

१. सरिसवया (ना० १।५।७३)।
२. सहजायए सहवड्ढियए सहपसुकीलियए (अ, क, ख, ता, व, म)।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव अभक्खेया।
४. स० पा०—केणट्ठेण जाव अभक्खेया।
५. भते (अ, ता, ब, म); × (ख)।
६. अस्सोए (अ, क, ता, ब, म)

तत्थ ण जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुवण्णमासा य, रुप्पमासा य। ते ण समणाणं निग्गंथाण अभक्खेया।

तत्थ ण जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा— सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य। एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ॥

२१७. कुलत्था ते भते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१८. से केणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! बभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, त जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य।

तत्थ ण जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—'कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया'[1] इ वा। ते ण समणाण निग्गथाण अभक्खेया।

तत्थ ण जेते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवा। से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

२१९. एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भव ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भव ?

सोमिला ! एगे वि अह जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ॥

२२०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[2]—•एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव°-भविए वि अहं ?

सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदसणट्ठयाए दुविहे अह, पएसट्ठयाए अक्खए वि अह, अव्वए वि अह, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अह। से तेणट्ठेणं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अह ॥

२२१. एत्थ ण से सोमिले माहणे सबुद्धे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जहा खदओ जाव[3] से जहेय तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ[4] '•मुडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयति, नो खलु अहं तहा संचाएमि[5], अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालस-विह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि° जाव दुवालसविह सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगव महावीर वंदति[7] •नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस° पडिगए ॥

---

१. कुलकण्णया इ वा कुलमाउया इ वा कुल-वहुया (अ, क, ता, ब, स)।

२. स० पा०—वुच्चइ जाव भविए।

३. भ० २।५०-५२।

४. पू०—राय० सू० ६९५।

५. स० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्तो।

६. पू०—राय० सू० ६९५।

७. स० पा० —वदति जाव पडिगए।

२२२. तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहा-परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । जहेव संखे तहेव निरवसेसं जाव[2] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

२२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

---

१. भ० २।९४ ।

२. भ० १२।२७,२८ ।

३. भ० १।५१ ।

एगूणवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेस्सा य २. गब्भ ३. पुढवी, ४. महासवा ५. चरम ६. दीव ७ भवणा य।
८. निव्वत्ति ९. करण १०. वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—एव जहा पण्णवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो[1] निरवसेसो ॥
२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३. कति ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? एवं जहा पण्णवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो[2] ॥
४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१. प० १७१४। २. प० १७१६।

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. [1]रायगिहे जाव एव वयासी—सिय भंते ! जाव[2] चत्तारि पंच पुढविक्काइया एगयओ साधारणसरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । पुढविक्काइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधति ।।

६. तेसि णं भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ।।

७. ते ण भते ! जीवा कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी[3] ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ।।

८. ते णं भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मतिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ।।

९. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ।।

१०. ते णं भंते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ।।

११. ते णं भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ ण अणंतपदेसियाइ दव्वाइं—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[4] सव्वप्पणयाए[5] आहारमाहारेति ।।

१२. ते णं भंते ! जीवा जमाहारेति त चिज्जति, जं नो आहारेति तं नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?
हता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेति तं चिज्जति, जं नो आहारेति जाव पलिसप्पति वा ।।

---

१. इह चेयं द्वारगाथा क्वचिद् दृश्यते—
सिय लेसदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो ।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्टी (वृ) ।

२. यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ) ।
३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. प० २८।१ ।
५. सव्वपयाए (ब) ।

१३. तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणोति वा वईति वा अम्हे ण आहारमाहारेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुण ते ॥

१४ तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा[1] •पण्णाति वा मणोति वा° वईति वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते ॥

१५. ते ण भंते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए, अदिण्णादाणे जाव[2] मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्ले वि उवक्खाइ-ज्जति। जेसि पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जति तेसिं पि णं जीवाणं नो विण्णाए नाणत्ते ॥

१६. ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जति० ? एव जहा वक्कतीए पुढविक्काइयाण उववाओ तहा भाणियव्वो[3] ॥

१७. तेसि ण भंते ! जीवाणं केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ ॥

१८. तेसि ण भंते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

१९. ते ण भंते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहया मरति ? असमोहया मरति ?
गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरति ॥

२०. ते णं भंते ! जीवा अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति ? एव उव्वट्टणा जहा वक्कतीए[4] ॥

आउक्काइयादि-पदं

२१. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति० ?
एव जो पुढविक्काइयाण गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टति, नवरं—ठिती सत्त वाससहस्साइ उक्कोसेण, सेस तं चेव ॥

२२. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया० ? एवं चेव, नवरं—उववाओ

---

१. स० पा०—सण्णाति या जाव वईति।
२. भ० १।३८४।
३. प० ६।
४. प० ६।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेसं तं चेव। वाउकाइयाण एव चेव, नाणत्त नवर – चत्तारि समुग्घाया ॥

२३. सिय भते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया—पुच्छा।
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीर वा बंधंति। सेसं जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टति, नवरं—आहारो नियमं छद्दिसि, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त, सेस तं चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पद

२४. एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाण बादराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरे-हितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २. सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४. सुहुम-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५. सुहुम-पुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ६. बादर-वाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ७. बादर-तेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८. बादर-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ९. बादरपुढवि-काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १०,११. पत्तेय-सरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एएसि ण पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १२. सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा १३. तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५. सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एवं सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एव सुहुमआउक्का-इयस्स वि २४-२६ एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एव बादरवाउका-इयस्स वि ३०-३२. एवं बादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एवं बादरआउकाइ-यस्स वि ३६-३८ एवं बादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसि तिविहेणं गमेण भाणि-यव्वं, ३९ बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा

१. प० ४,६।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

४० तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४२. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४३ तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ।।

थावरजीवाण सव्वसुहुम-सव्वबादर-पदं

२५ एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ।।

२६ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२७. एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२८. एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२९ एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वबादरे ? कयरे काये सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वबादरे, वणस्सइकाए सव्वबादरतराए ।।

३०. एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! पुढविक्काए सव्वबादरे, पुढविक्काए सव्वबादरतराए ।।

३१. एयस्स ण भंते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वबादरे, आउक्काए सव्वबादरतराए ।।

३२ एयस्स ण भते ! तेउकाइयस्स वाउकाइस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वबादरे, तेउक्काए सव्वबादरतराए ।।

पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पदं

३३. केमहालए णं भते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अणंताण सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ-

सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीर। से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाण जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असखेज्जाण बादरतेउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असंखेज्जाण बादरआउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे। एमहालए णं गोयमा ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव जुगवं जुवाणी अप्पायंका [2]•थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएण वट्टावर-एणं एगं महं पुढविकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसखिविय-पडिसखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया संघट्टिया अत्थेगतिया नो सघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए ण भते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं [3]•जुगवं जुवाणे अप्पातके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-विचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

---

१. सुहुमवाउकाइयाणं ति क्वचित्पाठः (वृ)।

२. स० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भण्णति, सेसं त चेव जाव निउण°।

३. स० पा०—बलव जाव निउण°।

निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्ण जरा-जज्जरिय-देहं[1] •आउरं झूसियं पिवासियं° दुब्बल किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेण जमलपाणिणा मुद्धाणसि अभिहए समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?

अणिट्ठ समणाउसो !

तस्स ण गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढविकाइए अक्कते समाणे एत्तो अणिट्ठतरिय चेव अकंततरिय[2] •अप्पियतरियं असुहतरियं अमणुण्णतरिय° अमणामतरिय चेव वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

आउकाइयादीणं वेदणा-पदं

३६ आउयाए ण भते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! जहा पुढविकाइए एव चेव । एव तेउयाए वि । एवं वाउयाए वि । एवं वणस्सइकाए वि जाव[3] विहरइ ।।

३७. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

चउत्थो उद्देसो

महासवादि-पदं

३८. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
हता सिया ।।

४०. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४१. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४२. सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. स० पा०—देहं जाव दुब्बल ।
२. स० पा०—अकततरिय जाव अमणामतरियं ।
३. भ० १९।३५ ।

४३. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो[1] इणट्ठे समट्ठे ।।

४५. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४६ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४७. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४८. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४९. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५० सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५१. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५२. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५३. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ।।

५४. सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा । एवं जाव थणियकुमारा ।।

५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—

५६. सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।।

५७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

---

१. सदृशप्रकरणेपि पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति पद लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च एतत् पद न दृश्यते ।

पंचमो उद्देसो

चरम-परम-पदं

५८. अत्थि णं भंते ! चरमा[1] वि नेरइया ? परमा वि नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

५९. से नूणं भंते ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरइया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव; परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्सवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! चरमेहितो नेरइएहितो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ?
गोयमा ! ठिति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६१. अत्थि णं भंते ! चरमा वि असुरकुमारा ? परमा वि असुरकुमारा ? एवं चेव, नवरं—विवरीयं भाणियव्वं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा[2] । सेसं तं चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव । पुढविकाइया जाव मणुस्सा एते जहा नेरइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

वेदणा-पदं

६२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—निदा य, अनिदा य ॥

६३. नेरइया णं भंते ! किं निदायं वेदणं वेदेंति ? अनिदायं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! निदायं पि वेदणं वेदेंति, अनिदायं पि वेदणं वेदेंति । जहा पण्णवणाए जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. चरिमा (अ, ख, ब, म) ।
२. बहुकम्मा (अ, ब) ।
३. प० ३५ ।

छट्ठो उद्देसो

दीवसमुद्द-पदं

६५. कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवतिया ण भते ! दीवसमुद्दा ? किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इह वि जोइसमडिउद्देसगवज्जो[1] भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ जाव[2] अणतखुत्तो ॥

६६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

सत्तमो उद्देसो

असुरकुमारादीणं भवणादि-पदं

६७. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

६८. ते णं भंते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव[4] पडिरूवा । तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति, विउक्कमंति, चयति, उववज्जति । सासया ण ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं जाव[5] फासपज्जवेहि असासया । एवं जाव थणियकुमारावासा ॥

६९. केवतिया ण भंते ! वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७०. ते ण भते ! किंमया पण्णत्ता ? सेस तं चेव ॥

७१. केवतिया ण भते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७२. ते णं भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेस त चेव ॥

---

१. जोइसियमडि० (क, स) ।
२. जी० ३ ।
३. चोवट्ठि (क, ता); चउसट्ठि (स) ।
४. भ० २।११८ ।
५. भ० २।४७ ।

७३. सोहम्मे ण भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७४. ते णं भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं—जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ॥

७५ सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

जीवादि-निव्वत्ति-पदं

७६ कतिविहा णं भते ! जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—एगिदियजीवनिव्वत्ती जा पंचिदियजीवनिव्वत्ती ॥

७७. एगिदियजीवनिव्वत्ती ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइयएगिदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती ॥

७८. पुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य, बादरपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य। एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगवंधो तेयगसरीरस्स जाव[1]—

७९ सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय[2]-•कप्पातीतवेमाणिय॰देवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य ॥

८०. कतिविहा ण भंते ! कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती ॥

८१. नेरइयाणं भते ! कतिविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. भ० ८।४१३।   २ स० पा०—॰अणुत्तरोववातिय जाव देव॰।

गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाण ।।

८२. कतिविहा णं भंते ! सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ।।

८३. नेरइयाणं भते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाण, नवरं—नायव्वं जस्स जइ सरीराणि ।।

८४. कतिविहा णं भते ! सव्विंदियनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियनिव्वत्ती जाव फासिंदियनिव्वत्ती । एव[1] नेरइयाण जाव थणियकुमाराणं ।।

८५. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा फासिंदियनिव्वत्ती पण्णत्ता । एवं जस्स 'जति इंदियाणि'[2] जाव वेमाणियाणं ।।

८६. कतिविहा णं भंते ! भासानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सच्चभासानिव्वत्ती, मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासा निव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती । एवं एगिंदियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ।।

८७. कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पण्णत्ता त जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणनिव्वत्ती । एवं एगिंदियविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ।।

८८. कतिविहा ण भंते ! कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसायनिव्वत्ती जाव लोभकसायनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ।।

८९. कतिविहा णं भंते ! वण्णनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा वण्णनिव्वत्ती तं जहा—कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किला-वण्णनिव्वत्ती । एव निरवसेस जाव वेमाणियाणं । एव गधनिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं । रसनिव्वत्ती पचविहा जाव वेमाणियाणं । फासनिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं ।।

९०. कतिविहा ण भंते ! संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंससंठाणनिव्वत्ती जाव हुंडसंठाणनिव्वत्ती ।।

---

१. एवं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । २. जतिंदियाणि (ता) ।

९१. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा हुंडसंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ।।

९२. असुरकुमाराणं —पुच्छा ।
गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता । एव जाव थणियकुमाराणं ।।

९३ पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा मसूरचदसंठाणनिव्वत्ती[1] पण्णत्ता । एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणियाणं ।।

९४. कतिविहा ण भंते ! सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—आहारसण्णानिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णानिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं ।।

९५ कतिविहा णं भते ! लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेस्साओ ।।

९६. कतिविहा ण भते ! दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहा दिट्ठी ।।

९७ कतिविहा णं भते ! नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिवोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाण, जस्स जति नाणा ।।

९८. कतिविहा णं भते ! अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणनिव्वत्ती, सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभंगनाणनिव्वत्ती । एवं जस्स जति अण्णाणा जाव वेमाणियाण ।।

९९. कतिविहा णं भते ! जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहो जोगो ।।

१०० कतिविहा णं भते ! उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. मसूरचंदा° (क); मसूराचंदा° (ता, व) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सागारोवओगनिव्वत्ती, अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं[1] ।।

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

नवमो उद्देसो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे ।।

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं ।।

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ।।

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुंसगवेदकरणे । एए सव्वे नेरइयादी दंडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ।।

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

---

१. अतोग्रे 'अ, क, ब, स' प्रतिपु सङ्ग्रहणीगाथे दृश्येते—
जीवाण निव्वत्ती,
कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती ।
सव्विंदियनिव्वत्ती,
भासा य मणे कसाया य ।।१।।
वण्ण रस गंध फासे,
संठाणविही य होइ बोद्धव्वा ।
लेसा दिट्ठी णाणे,
उवओगे चेव जोगे य ।।२।।

गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियपाणाइवायकरणे जाव पचिंदियपाणाइवायकरणे । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

१०७. कतिविहे णं भते ! पोग्गलकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलकरणे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णकरणे, गधकरणे, रस-करणे, फासकरणे, सठाणकरणे ॥

१०८. वण्णकरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालावण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे । एव भेदो—गधकरणे दुविहे, रसकरणे पचविहे, फासकरणे अट्ठविहे ॥

१०९. संठाणकरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसठाणकरणे जाव[1] आयतसंठाण-करणे ॥

११० सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

१११. वाणमतरा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्दे-सम्रो जाव[2] अप्पिड्ढिय त्ति ॥

११२. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

---

१. भ० ८।३६ । २. भ० १६।१२५-१२८ ।

वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. बेइंदिय २. मागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५. परमाणू।
६. अंतर ७. बंधे ८. भूमी, ९. चारण १०. सोवक्कमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहरणसरीरं बधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेंति वा सरीर वा बंधति ?
नो इणट्ठे समट्ठे। बेंदिया ण पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीर बधति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा बंधंति ॥

२. तेसि णं भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउ-लेस्सा। एव जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाण जाव[1] उव्वट्टति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छद्दिसि।

३. तेसि णं भते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते। ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस सवच्छराइं, सेस त चेव। एवं तेइदिया वि, एव चउरिंदिया वि, नाणत्तं इदिएसु ठितीए य, सेसं त चेव, ठिती जहा[2] पण्णवणाए ॥

४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पचिंदिया एगयओ साहरणसरीर बंधति ? एवं जहा बेंदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

---

१. भ० १९।२२। २. प० ४।

५. तेसि ण भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो। अत्थेगतियाण नो एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो, आहारेति पुण ते।

६. तेसि ण भंते ! जीवाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो। अत्थेगतियाण नो एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो, पडिसवेदेति पुण ते।

७. ते ण भते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जति—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जति अत्थेगतिया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, नो मुसावाए जाव नो मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति। जेसि पि ण जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसि पि ण जीवाण अत्थेगतियाण विण्णाए नाणत्ते। अत्थेगतियाणं नो विण्णाए नाणत्ते। उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ। छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छति जाव सव्वट्ठसिद्ध ति, सेस जहा वेदियाणं॥

८. एएसि ण भते ! बेइदियाण जाव पचिदियाण य कयरे कयरेहितो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, वेइंदिया विसेसाहिया॥

९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ॥

बीओ उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१०. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे य, अलोयागासे य॥

११. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा° ?—एवं जहा वितियसए

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। २. भ०१।५१।

अत्थिउद्देसे तहेव इह वि भाणियव्वं, नवरं—अभिलावो जाव[1] धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता णं चिट्ठति । एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवतिय ओगाढे ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं ओगाढे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा बितियसए जाव[2]—

१३. ईसिपब्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्स किं सखेज्जइभागं ओगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो संखेज्जे भागे ओगाढा, नो असंखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं तं चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयण-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती[3] इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अधम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा)जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण[4]•खेलसिंघाणजल्ल॰पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स णं [5]•भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?॰
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

---

१. भ० २।१३६-१४५ ।
२. भ० २।१४७-१५३ ।
३. ॰खेलजल्लसिंघाण॰ (ख, म, स) ।
४. स० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया॰ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

काए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अवरे इ वा, अंबरसे इ वा, छिड्डे इ वा, झुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, 'अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा"[1], आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अतलिक्खे[2] इ वा, सामे इ वा, ओवासंतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१७. जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—जीवे इ वा, जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, 'वेया इ वा'[3], चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रंगणे[4] इ वा, हिंडुए[5] इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जतू इ वा, जोणी[6] इ वा, सयभू इ वा, ससरीरी इ वा, नायए इ वा, अतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स[7] अभिवयणा ॥

१८. पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते ! [8]°केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता° ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असंखेज्जपएसिए इ वा, अणतपएसिए इ वा खधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

पाणाइवायादीणं आयाए परिणति-पदं

२०. अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया[9] °वेणइया कम्मया° पारिणामिया,

---

१. अद्दे इ वा, वियद्दे (स, वृ); अट्टे इ वा, वियट्टे (वृपा)।
२. अंतरिक्खे (ख, स)।
३. ×(अ, क, ख)।
४. रंगणा (अ, क, ख, ता, म)।
५. हिंडुए (क्व°)।
६. जोणियं (ख)।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
८. स० पा०—पुच्छा।
९. स० पा०—उप्पत्तिया जाव पारिणामिया।

ओग्गहे[1] •ईहा अवाए° धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वइजोगे कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ॥

गब्भं वक्कममाणस्स वण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंध'[2] [3]•कतिरसं कतिफासं परिणाम परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंध, पंचरसं, अट्ठफासं परिणाम परिणमइ ॥

२२. कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ ण जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?

हंता गोयमा ! कम्मओ ण जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ॥

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवचय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं बितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा[5] पण्णवणाए ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

---

१. स० पा०—ओग्गहे जाव धारणा ।
२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।
३. स० पा०—एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ ।
४. भ० १।५१ ।
५. प० १५।२ ।
६. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं वण्णादिभंग-पदं

२६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते[1]। जइ एगवण्णे ? सिय कालए, सिय नीलए, सिय लोहियए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किलए। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ एगरसे ? सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले, सिय महुरे। जइ दुफासे ? १. सिय सीए य निद्धे य, २. सिय सीए य लुक्खे य, ३. सिय उसिणे य निद्धे य, ४. सिय उसिणे य लुक्खे य ॥

२७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? [2]°गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे°, सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सिय सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य लोहितए य, ३. सिय कालए य हालिद्दए य, ४. सिय कालए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य, ६. सिय नीलए य हालिद्दए य, ७. सिय नीलए य सुक्किलए य, ८. सिय लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय लोहियए य सुक्किलए य, १०. सिय हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दुयासजोगे दस भंगा। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ३. सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, ४. सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे। जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए नव भंगा फासेसु ॥

२८. तिपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे° ? जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव[3] चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सुक्किलए।

जइ दुवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, १. सिय कालए य लोहियए य, २. सिय कालए य लोहियगा य, ३. सिय कालगा य लोहियए य, एवं हालिद्दएण वि समं ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि भंगा ३, एवं

---

१. पं तं (अ, म)।

२. सं० पा०—एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय।

३. भ० १८।११३।

हालिद्दएण वि समं भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं भंगा ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय हालिद्दए य सुक्किलए य भंगा ३, एवं सव्वे ते दस दुयासंजोगा भगा तीस भवंति।

जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, ३. सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य, ५. सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ७. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ८. सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ९. सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १०. सिय लोहियए स हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दस तियासंजोगा।

जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगधे। जइ दुगधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगधे य भंगा ३। रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ७. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ८. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा॥

२९. चउप्पएसिए णं भते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए य जाव सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, ४. सिय कालगा य नीलगा य, सिय कालए य लोहियए य एत्थ वि चत्तारि भंगा, सिय कालए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ४, सिए नीलए य हालिद्दए य ४, सिय नीलए य सुक्किलए य ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय लोहियए य सुक्किलए य ४,

---

१. भ० १८।११४।

सिय हालिद्दए य सुक्किलए य ४, एवं एए दस दुयसजोगा भंगा पुण चत्तालीसं। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, एए भगा ४, एवं कालानीलाहालिद्दएहिं भंगा ४, कालनीलसुक्किल ४, काललोहियहालिद्द ४, काललोहियसुक्किल ४, कालहालिद्दसुक्किल ४, नीललोहिसहालिद्दगाणं भंगा ४, नीललोहियसुक्किल ४, नीलहालिद्दसुक्किल ४, लोहियहालिद्दसुक्किलगाण भगा ४, एवं एए दसतियासजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, 'सव्वे एते'[1] चत्तालीसं भंगा।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ३. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए हालिद्दए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवमेते चउक्कगसजोगे पच भगा। एए सव्वे नउइ भगा।

जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगधे य रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १ सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं भगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए तिफासे सोलस भंगा।

जइ चउफासे ? १ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ६ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ७. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ८. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीसं भगा॥

३०. पचपएसिए णं भंते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[2] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहेव चउप्पएसिए। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए

---

१. सव्वेते (अ, क, ख, ब, म, स)। १. भ० १८।११५।

य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, ६ सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य, ७. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, एत्थ वि सत्त भंगा, एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भगा, कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७, कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७, कालग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७, नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भगा, नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि सत्त भगा, एवमेते तियासंजोएणं सत्तरि भगा।

जइ उचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियय य हालिद्दए २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, एए पंच भंगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य एत्थ वि पच भंगा, एवं कालग-नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पच भगा, कालग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलएसु वि पच भगा, नीलग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीसं भगा।

जइ पंचवण्णे ? कालए ण नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, सव्व-मेते एक्कग[1]-दुयग-तियग-चउक्क-पंचगसंजोएण ईयाल भंगसयं भवति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३१. छप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? एव जहा पंचपए सिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहा पचपएसियस्स।

जइ तिवण्णे ! सिय कालए य नीलए य लोहियए य, एव जहेव पंचपएसियस्स सत्त भगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य, एए अट्ठ भगा, एवमेते दस तियासंजोगा, एक्केक्कए सजोगे अट्ठ भगा, एवं सव्वे वि तियगसजोगे असीति भगा।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा त हालिद्दए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, ६. सिय कालए य नीलगा य लोहिए य हालिद्दगा य, ७. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, ८. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय

---

[1] एक्केक्का (अ, म); एक्केक्क (क, ता, ब)।

कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, १०. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, ११. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, एए एक्कारस भगा, एवमेते 'पंच चउक्कसंजोगा'[1] कायव्वा, एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सव्वे एते चउक्कसजोएणं पणपण्णं भगा।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ५ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एव एए छब्भंगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसंजोगेसु छासीय भगसयं भवति। गंधा जहा पचपएसियस्स। रसा जहा एयस्सेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३२. सत्तपएसिए णं भते! खधे कतिवण्णे० ? जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एव एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स। जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते चउक्कगसंजोगेण पन्नरस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते पच चउक्का-संजोगा नेयव्वा, एक्केक्के संजोए पन्नरस भंगा, सव्वमेते पंचसत्तरि भंगा भवति।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, ५. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, ७. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ८. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ९ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १०. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ११. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, १२. सिय कालगा य नीलगे य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १३. सिय कालगा य नीलए

---

१. पंचचउक्का० (क, ख, ब), पचगचउक्का (ता)।

य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १५. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए सोलस भंगा, एवं सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेणं दो सोला[1] भंगसया भवंति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३३. अट्ठपएसिए णं भंते! खंधे—पुच्छा।

गोयमा! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए।

जइ चउवण्णे? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव, १५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य, एए सोलस भंगा, एवमेते पंच चउक्क-संजोगा, एवमेते असीति भंगा।

जइ पंचवण्णे? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव १५. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलगे य, एसो पन्नरसमो भंगो, १६. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य १७. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, १८. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १९. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, २०. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, २१. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २२. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २३. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य, २४. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए पंचसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवति, एवमेव सपुव्वावरेण एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहिं दो एक्कतीसं भंगसया भवंति। गंधा जहा सत्तपएसियस्स। रसा जहा एयस्स चेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

---

१. सोलस (स)।

३४. नवपएसिए ण भंते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स । जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, एव परिवाडीए एक्कतीस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, एए एकत्तीसं भगा, एव एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोएहि दो छत्तीसा भगसया भवंति । गधा जहा अट्ठपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउपएसियस्स ॥

३५ दसपएसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स । पचवण्णे वि तहेव, नवरं—बत्तीसतिमो भगो भण्णति, एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसजोएसु दोण्णि सत्ततीसा भगसया भवंति । गधा जहा नवपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपएसिओ एव सखेज्जपएसिओ वि । एव असंखेज्जपएसिओ वि । सुहुम-परिणओ अणंतपएसिओ वि एव चेव ॥

३६ बायरपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे० ? एवं जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय अट्ठफासे पण्णत्ते । वण्ण-गध-रसा जहा दसपएसियस्स ।
जइ चउफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ५ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, ६. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ७. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ८ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ९ सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १०. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ११. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १२. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, १३. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १४ सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, १५. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १६. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, एए सोलस भगा ।
जइ पचफासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लक्खे,

---

१. भ० १८।११७ ।

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एव एए कक्खडेण सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि सोलस भंगा, एवं बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, एव सव्वे एते पचफासे अट्ठावीस भगसय भवति ।

जइ छप्फासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एवं जाव १६. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भगा, १. सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे एते छप्फासे तिण्णि चउरासीया भगसया भवति ।

जइ सत्तफासे ? १. सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे एते सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सोए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण एगत्तेण, लहुएण पुहत्तेण, एते वि सोलस भगा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, एवमेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेण सम। सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव मउएण वि सम चउसट्ठि भगा भाणियव्वा[1]। सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण वि समं चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव लहुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं सीतेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव उसिणेण वि सम चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एवं निद्धेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एव लुक्खेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एव सत्तफासे पच वारसुत्तरा भगसया भवति।

जइ अट्ठफासे ? देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भगा। देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एते गरुएण एगत्तएण, लहुएण पुहत्तएण सोलस भगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एते वि सोलस भगा कायव्वा। सव्वेवेते चउसट्ठि भंगा कक्खड-मउएहि

१. नेयव्वा (अ, क, ता, व, म)।

एगत्तएहिं। ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तएणं, एते चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहि चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवंति। एवं एते बादरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु बारस छन्नउया भंगसया भवंति॥

परमाणु-पदं

३७. कतिविहे णं भंते! परमाणू पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, तं जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू॥

३८. दव्वपरमाणू णं भते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे॥

३९. खेत्तपरमाणू णं भते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अणद्धे, अमज्झे, अपदेसे, अविभाइमे॥

४०. कालपरमाणू [1]°णं भते! कतिविहे पण्णत्ते?°
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे॥

४१ भावपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—वण्णमते, गंधमंते, रसमंते, फासमते॥

४२. सेवं भते! सेवं भते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविआदीणं आहार-पद

४३. पुढविक्काइए णं भते! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कि पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा? पुव्वि आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा?
गोयमा! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एवं जहा सत्तरसमसए

---

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. भ० १।५१।

छट्ठुद्देसे जाव[1] से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुव्विं वा जाव उववज्जेज्जा, नवर—तेहि सपाउणणा, इमेहिं आहारो भण्णति, सेस तं चेव ।।

४४. पुढविक्काइए ण भते ! इमोसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४५ पुढविक्काइए ण भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए, एवं एतेणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४६ पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिंदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा० ? सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव निक्खेवओ ।।

४७. पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-महिंदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एव सणकुमार-माहिंदाण बभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उवावाएयव्वो । एव बभलोगस्स लंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव लतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं सहस्सारस्स आणय-पाणय-कप्पाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव आणय-पाणयाण आरणच्चु-याण य कप्पाण अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं आरणच्चुयाणं गेवेज्ज-विमाणाण य अतरा जाव अहेसत्तमाए । एव गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमा-णाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भा-राए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ।।

४८. आउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस जहा पुढविक्काइयस्स जाव से तेणट्ठेण । एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहए जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो । एव एएण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ।।

---

१. भ० १७।६७,६८ ।

४९. आउयाए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव। एव एएहि चेव अंतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। एव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥

५०. वाउक्काइए ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव[1] उववज्जेज्जा ॥

५१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२. कतिविहे णं भंते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबधे, परंपरबंधे ॥

५३. नेरइयाणं भते ! कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एवं चेव। एव जाव वेमाणियाण ॥

५४. नाणावरणिज्जस्स णं भते ! कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥

५५. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव। एवं जाव वेमाणियाण। एवं जाव अंतराइयस्स ॥

---

१. भ० १७।७८-८०।

२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यव्वायु-विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टम. (वृ)।

५६. नाणावरणिज्जोदयस्स ण भते ! कम्मस कतिविहे वधे पण्णत्त ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव । एव नेरइयाण वि । एव जाव वेमाणियाणं । एवं जाव अतराइओदयस्स ॥

५७. इत्थीवेदस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव ॥

५८. असुरकुमाराण भते ! इत्थीवेदस्स कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स इत्थिवेदो अत्थि । एव पुरिसवेदस्स वि । एव नपुसगवेदस्स वि जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स जो अत्थि वेदो ॥

५९ दसणमोहणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव । निरतर जाव वेमाणियाणं । एव चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं । एव एएण कमेण ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिवोहियनाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स विभगनाणस्स, एव आभिणिवोहियनाणविसयस्स भते ! कतिविहे वधे पण्णत्ते जाव केवलनाणविसयस्स, मइअण्णाणविसयस्स सुयअण्णाणविसयस्स विभगनाणविसयस्स—एएसि सव्वेसि पदाण तिविहे वधे पण्णत्ते । सव्वेवेते चउव्वीस दडगा भाणियव्वा, नवर—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि । जाव—

६०. वेमाणियाण भते ! विभगनाणविसयस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगवधे, अणतरवधे, परपरवधे ॥

६१. सेव भते ! सेवं भते ! जाव[1] विहरइ[2] ॥

———

१. भ० १।५१ ।
२. इह सग्रहगाथे—
जीवप्पओगवधे, अणतरपरपरे च वोद्धव्वे ।
पगडी उदए वेए, दसणमोहे चरित्ते य ॥१॥
ओरालियवेउव्विय-आहारगतेयकम्मए चेव ।
सण्णा लेस्सा दिट्ठी, नाणानाणेसु तव्विसए ।२। (वृ) ।

अट्ठमो उद्देसो

समयखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२. कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ।।

६३. कति ण भते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पच हेमवयाइं, पच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइ, पच रम्मगवासाइं, पच 'देवकुराओ, पच उत्तरकुराओ'[1] ।।

६४. एयासु ण भते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६५. एएसु ण भते ! पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
हता अत्थि । एएसु ण पचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु णं भते ! पचसु महाविदेहेसु अरहता भगवतो पंचमहव्वइय[2] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एएसु णं पचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पचमहव्वइय[3] सपडिक्कमण धम्म पण्णवयति, अवसेसा णं अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्मं पण्णवयंति । एएसु णं पचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवतो चाउज्जामं धम्म पण्णवयति ।।

तित्थगर-पदं

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा—उसभ-अजिय-सभव-अभिनंदण-

---

१. देवकुरूओ पच उत्तरकुरूओ (अ, क, ख, ब, म) ।
२. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता, स) ।
३. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता) ।

सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जस-वासुपुज्ज-विमल-अणत-धम्म-सति-कुथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वद्धमाणा ।।

६८ एएसि ण भंते ! चउवीसाए तित्थगराण कति जिणतरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेवीसं जिणतरा पण्णत्ता ।।

जिणतरेसु कालियसुय-पदं

६९ एएसि णं भते ! तेवीसाए जिणतरेसु कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एएसु ण तेवीसाए जिणतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु अट्ठसु-अट्ठसु जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स अव्वोच्छेदे पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते, सव्वत्थ वि ण वोच्छिण्णे दिट्ठिवाए ।।

पुव्वगय-पदं

७०. जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण केवतिय काल पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जवुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगं वाससहस्स पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ।।

७१. जहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एगं वाससहस्स पुव्वगए अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थगराण केवतिय काल पुव्वगए अणुसज्जित्था ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं सखेज्ज काल, अत्थेगतियाण असखेज्ज काल ।।

तित्थ-पदं

७२. जंबुद्दीवे ण भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवतिय काल तित्थे अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगवीस वास-सहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति ।।

७३ जहा ण भंते ! जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे वासे ओसप्पिणीए देवाणु-प्पियाणं एक्कवीसं वाससहस्साइ तित्थे अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साण[1] चरिमतित्थगरस्स केवतिय काल तित्थे अणुसज्जिस्सति ?

---

१. भविष्यता महापद्मादीना जिनानाम् (वृ) ।

गोयमा ! जावतिए ण उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइ सखेज्जाइ आगमेस्साण चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७४. तित्थ भते ! तित्थ ? तित्थगरे तित्थ ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम तित्थकरे, तित्थ पुण चाउवण्णे[1] समणसघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥

७५ पवयणं भते ! पवयणं ? पावयणी पवयणं ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम पावयणी, पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे, त जहा—आयारो[2] °सूयगडो ठाण समवाओ विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवाग-सुय ° दिट्ठिवाओ ॥

उग्गादीणं निग्गथधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया[3], कोरव्वा—एए णं अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ?
हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,[4] °राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं° अतं करेति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ॥

७७. कतिविहा ण भते ! देवलोया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा, जोतिसिया, वेमाणिया ॥

७८. सेव भते ! सेवं भत्ते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा णं भते ! चारणा पण्णत्ता ?

---

१. चाउवण्णाइण्णे (व, स, वृ); चाउवण्णे (वृपा)।
२. सं० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ।
३. नाता (अ, क, ब)।
४. स० पा०—तं चेव जाव अत।

गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता, तं जहा—विज्जाचारणा य, जंघा-चारणा य ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—विज्जाचारणे[1]-विज्जाचारणे ?
गोयमा ! तस्स ण छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण विज्जाए उत्तरगुणलद्धि खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ । से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—विज्जाचारणे-विज्जाचारणे ॥

८१. विज्जाचारणस्स णं भंते ! कह सीहा गती, कह सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण जंबुद्दीवे दीवे जाव[3] किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण । देवे ण महिड्ढीए जाव[4] महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु[5] केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ॥

८२. विज्जाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवतिय गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएण उप्पाएण नंदीसरवरे दीवे समोसरण करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति । विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८३. विज्जाचारणस्स ण भंते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण नंदणवणे समोसरण करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएणं उप्पाएण पंडगवणे समोसरण करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति । विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते । से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते[6] काल करेति नत्थि तस्स आराहणा । से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८४. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जंघाचारणे-जंघाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाणं भावेमा-

---

१. विज्जाचारणा (अ, क, ख, म, स) ।
२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव विज्जाचारणे ।
३. भ० ६।७५ ।
४. भ० १।३३६ ।
५. तुलना—भ० ६।१७३ ।
६. अणालोतिय° (स) ।

णस्स जंघाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जति। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—जघाचारणे-जंघाचारणे ॥

८५. जघाचारणस्स णं भंते ! कह सीहा गती, कह सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे[2] •जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहिं° तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, जघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते[3] ॥

८६. जघाचारणस्स ण भते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेण उप्पाएण रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएण उप्पाएणं नदीसर-वरदीवे समोसरण करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइ वदति, जघाचारणस्स ण गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८७. जघाचारणस्स ण भते ! उड्ढ केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण पडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइं वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएण उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइं वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइ वंदति, जघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढ एवतिए गति-विसए पण्णत्ते। से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८८ सेव भते ! सेव भते ! जाव[4] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भते किं सोवक्कमाउया ? निरुवक्कमाउया ?
गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि ॥

---

१. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव जघाचारणे।
२. सं० पा०—एव जहेव विज्जाचारणस्स नवरं तिसत्तखुत्तो।
३. पण्णत्ते, सेस त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० १।५१।

९०. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया । एवं जाव थणिय-कुमारा । पुढविक्काइया जहा जीवा । एव जाव मणुस्सा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

उववज्जण-उव्वट्टण-पदं

९१. नेरइया ण भते ! कि आतोवक्कमेणं[1] उववज्जति ? परोवक्कमेण उवव-ज्जति ? निरुवक्कमेण उववज्जति ?
गोयमा ! आतोवक्कमेण वि उववज्जंति, परोवक्कमेण वि उववज्जंति, निरुव-क्कमेण वि उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ॥

९२ नेरइया ण भते ! कि आतोवक्कमेण उव्वट्टंति ? परोवक्कमेण उव्वट्टति ? निरुवक्कमेण उव्वट्टति ?
गोयमा ! नो आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति, नो परोवक्कमेणं उव्वट्टति, निरुवक्क-मेणं उव्वट्टति । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टति । सेसा जहा नेरइया, नवर—जोइसिय-वेमाणिया चयति ॥

९३. नेरइया ण भते ! कि आइड्ढीए उववज्जति ? परिड्ढीए[2] उववज्जति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जति, नो परिड्ढीए उववज्जति । एवं जाव वेमाणिया ॥

९४. नेरइया णं भते ! कि आइड्ढीए उव्वट्टंति ? परिड्ढीए उव्वट्टति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टति, नो परिड्ढीए उव्वट्टति । एव जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिया वेमाणिया य चयंतीति अभिलावो ॥

९५. नेरइया णं भते ! किं आयकम्मुणा उववज्जति ? परकम्मुणा उववज्जति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति, नो परकम्मुणा उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एव उव्वट्टणादडओ वि ॥

९६ नेरइया ण भते ! कि आयप्पओगेणं उववज्जति ? परप्पओगेण उववज्जति ?
गोयमा ! आयप्पओगेण उववज्जति, नो परप्पओगेण उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्टणादडओ वि ॥

कतिसंचियादि-पदं

९७ नेरइयाण भंते ! किं कतिसचिया ? अकतिसचिया ? अवत्तव्वगसंचिया ?

---

१. आत्मना—स्वयमेवायुष उपक्रम आत्मोपक्रम-स्तेन मृत्वेति शेष (वृ) ।
२. परिड्ढीए (क) ।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

९८ से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया कतिसंचिया, जे णं नेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अकतिसंचिया, जे णं नेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अवत्तव्वगसंचिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि। एवं जाव थणियकुमारा ॥

९९. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसंचिया, नो अवत्तव्वगसंचिया ॥

१०० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव नो अवत्तव्वगसंचिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति। से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसंचिया। एवं जाव वणस्सइकाइया[1]। बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१०१. सिद्धाणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिद्धा कतिसंचिया, नो अकतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०२. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कतिसंचिया, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिया। से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०३. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कतिसंचियाणं अकतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कतिसंचिया संखेज्जगुणा, अकतिसंचिया असंखेज्जगुणा। एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं। एगिंदियाणं नत्थि अप्पाबहुगं ॥

१०४ एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया संखेज्जगुणा ॥

---

१. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि प्रवेशनकं विजातीयेभ्य आगतानां यस्तत्रोत्पादस्तद्विवक्षितं, असङ्ख्याता एव विजातीयेभ्य उद्वृत्तास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे उक्तम् (वृ)।

२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

छक्कसमज्जियादि-पदं

१०५. नेरइयाणं भंते ! किं छक्कसमज्जिया ? नोछक्कसमज्जिया ? छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ? छक्केहि समज्जिया ? छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ?
गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहि समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ॥

१०६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्क-समज्जिया। जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया। जे णं नेरइया एगेणं छक्कएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया। जे णं नेरइया णेगेहिं छक्केहिं पवेसणएहिं[1] पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि सम-ज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा ॥

१०७. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! पुढविक्काइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ॥

१०८ से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया णेगेहिं छक्कएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहिं समज्जिया। जे णं पुढविक्काइया णेगेहिं छक्कएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसण-एणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया। से तेण-ट्ठेणं जाव समज्जिया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेंदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा नेरइया ॥

१०९. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जियाणं, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य

१. पवेसणएण (अ, क, ब, स), पवेसणग (ख, म)।

समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा, छक्केहि समज्जिया असखेज्ज-गुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एव जाव थणिय-कुमारा ।।

११०. एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहिं समज्जियाण, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाण जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।।

१११. एएसि ण भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाण जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं सम-ज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसम-ज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा ।।

बारससमज्जियादि-पद

११२. नेरइया णं भंते ! कि बारससमज्जिया ?, नोबारससमज्जिया ? बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया ? बारसएहि समज्जिया ? बारसएहि य नोबारस-एण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया बारससमज्जिया वि जाव बारसएहि य नोबारसएण य सम-ज्जिया वि ।।

११३. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया बारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया बारस-समज्जिया। जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोबारससमज्जिया। जे ण नेरइया बारसएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएणं पविसति ते ण नेरइया बारसएण य नोबारसएण य

---

१. स० पा० —कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. स० पा० – कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

समज्जिया। जे ण नेरइया नेगेहिं बारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं नेरइया बारसएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा॥

११४. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! पुढविक्काइया नोबारससमज्जिया, नो नोबारससमज्जिया, नो बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया, बारसेहि य नोबारसेण य समज्जिया वि॥

११५. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे ण पुढविक्काइया नेगेहिं बारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया बारसएहि समज्जिया। जे णं पुढविक्काइया नेगेहि बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएण पविसति ते ण पुढविक्काइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एव जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया॥

११६. एएसि ण भंते! नेरइयाण बारससमज्जियाणं[1]—सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाण, नवर—बारसाभिलावो, सेसं त चेव॥

चुलसीतिसमज्जियादि-पद

११७. नेरइया ण भंते! किं चुलसीतिसमज्जिया? नोचुलसीतिसमज्जिया? चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया? चुलसीतीहिं समज्जिया? चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया?
गोयमा! नेरइया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि॥

११८. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे ण नेरइया चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया चुलसीतिसमज्जिया। जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतिपवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया चुलसीतीए णं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहिं पवेसणएहिं पविसंति

---

१ पू०—भ० २०।१०६।

ते णं नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा[1] •दोहि वा तीहि वा•, उक्कोसेणं तेसीतीएण पवेसणएणं[2] पविसति ते णं नेरइया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहि दोहि, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ। एव जाव वणस्सइ-काइया। बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया॥

११९. सिद्धाणं—पुच्छा।
गोयमा! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया॥

१२०. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया?
गोयमा! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं पवेसणएण पविसंति ते ण सिद्धा चुलसीति समज्जिया। जे ण सिद्धा जहण्णेणं एक्केणं वा दोहिं वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया। जे ण सिद्धा चुलसीतीएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्को-सेणं तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। तेणट्ठेण जाव समज्जिया॥

१२१. एएसि ण भंते! नेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं नोचुलसीतिसमज्जियाणं[3]। —सव्वेसि अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ॥

१२२. एएसि णं भंते! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाणं, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा•? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा॥

१२३. सेव भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[5] विहरइ॥

---

१. सं० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेणं।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. पू०—भ० २०।१०६।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।

एगवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

पढमो उद्देसो

१. सालि २ कल ३ अयसि ४. वसे, ५. इक्खू ६. दब्भे य ७. अब्भ ८. तुलसी य ।
अट्ठेए दस वग्गा, असीतिं[1] पुण होंति उद्देसा ॥१॥

सालिआदिजीवाणं उववायादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—एएसि णं भंते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ? जहा[2] वक्कंतीए तहेव उववाओ, नवरं—देववज्जं ॥

२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । अवहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे ॥

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं ॥

४. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ? जहा[4] उप्पलुद्देसे । एवं वेदे वि, उदए वि, उदीरणा[5] वि ॥

५. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा छव्वीसं भंगा, दिट्ठी जाव इंदिया जहा[6] उप्पलुद्देसे ॥

---

१. असीति (क, ब, स) ।
२. प० ६ ।
३. भ० ११।४ ।
४. भ० ११।६-११ ।
५. उदीरणाए (अ, क, ख, ता, म, स) ।
६. भ० ११।१३-२८ ।

६. ते णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं[1] होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

७. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतिय कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? एव जहा उप्पलुद्देसे। एएण अभिलावेणं जाव[2] मणुस्स-जीवे, आहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, समुग्घाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा[4] उप्पलुद्देसे ॥

८. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असति अदुवा अणंतखुत्तो ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१०. अह भंते ! साली-वीही[5]-गोधूम-जव-०-जवजवाणं—एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते ण भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कदाहि-गारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असति अदुवा अणतखुत्तो ॥

११ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२. एवं खंधे वि उद्देसओ नेयव्वो। एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो। साले वि उद्देसो भाणियव्वो। पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो। पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा। एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं—देवा उववज्जंति जहा[6] उप्पलुद्देसे। चत्तारि लेस्साओ, असीति भगा। ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण अगुलपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१४. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो। एवं बीए वि उद्देसओ। एए दस उद्देसगा ॥

---

१. केवचिरं (अ, क, ख, व)।
२. भ० ११।३०-३४।
३. भ० ११।३५।
४. भ० ११।३७-३९।
५. सं० पा०—वीही जाव जवजवाण।
६. भ० ११।२।

बीओ वग्गो

१५ अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण[1]-पलिमथगाण[2]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते णं भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीण निरवसेसं तहेव ॥

तइयो वग्गो

१६. अह भते ! अयसि-कुसुभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलग-बीयाण एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालोणं निरवसेस तहेव भाणियव्वा ॥

चउत्थो वग्गो

१७. अह भते ! वस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवस[3]-दडा[4]-कुडा[5]-विमा-कंडा-वेलुया-कल्लाणाण[6]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीण, नवर—देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । सव्वत्थ वि छव्वीसं भगा, सेस त चेव ॥

---

१. सढिए (अ), सव्विए (क), सद्दिए (ख); सडिण (ता, स); सतिए (व), सदिण (म)

२. पलिमिथगाणं (अ, ता); पसिलिवगाण (क), पलिमित्थगाणं (ख, ब, म)।

३. यारुरवस (अ); यारुवंस (व); वगरवंस (म)।

४. उडा (ता); दडगा (व)।

५. कु डा (अ, ता, स)।

६. कल्लाणीण (अ, क, ता, ब, म)।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुंठ[1]-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग[2]-नलाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति । चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ॥

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय[3]-भंतिय[4]-कोंतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल[5] अज्जुण आसाढग-रोहियस-सुय[6]-वखीर[7]-भुस[8]-एरंड-कुरुकुंद[9]-करकर सुंठ- विभंगु महुरतण[10]-थुरग[11]-सिप्पिय-सुंकलितणाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

सत्तमो वग्गो

२०. अह भंते ! अब्भरुह[12]-वोयाण[13]-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग[14]-मज्जार-पाइ[15]-विल्लि[16]-पालक्क-दगपिप्पलिय- दव्वि-सोत्थिक-सायमंडुक्कि[17]-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

---

१. मुंडे (अ); सुठे (क, ख, ता) ।
२. सतवोरग (ख) ।
३. सेढिय (स) ।
४. भतिय (अ); भात्तिय (क); भति (ता); भंतेय (ब) ।
५. पदेइल (अ); वोदइल (ता) ।
६. मुत (क, ख, ब, स) ।
७. पक्खीर (ता) ।
८. भूस (अ, क, ता, ब) ।
९. कुडकुरुकुद (ता) ।
१०. बहुरयण (क, ब); महुरयण (ख) ।
११. छुरग (ता) ।
१२. अज्झरुह (क, ख, ता, ब) ।
१३. वेताण (अ); वायाण (ख) ।
१४. वोरग (अ), चोरग (स) ।
१५. याइ (ख, म) ।
१६. विलि (ता); चिल्लि (ब) ।
१७. सायमंडुक्कि (ख, ता, म) ।

अट्ठमो वग्गो

२१ अह भंते ! कुलसी-कण्ह-दराल-फणेज्जा-अज्जा-भूयणा[1]-चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इंदीवर-सयपुप्फाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वसाणं । एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवंति ॥

---

१. चूयणा (स) ।

बावीसमं सतं

पढमो वग्गो

१,२. तालेगट्ठिय ३. बहुबीयगा य ४. गुच्छा य ५. गुम्म ६. वल्ली य।
छद्दस वग्गा एए, सट्ठि पुण होंति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि[1]-साल-सरला-'सारकल्लाण-जावति-केयइ'[2]-कदलि-कंदलि-चम्मरुक्ख-भुयरुक्ख[3]-हिंगुरुक्ख-लवंगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते! जीवा कम्रोहितो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं, नवरं—इमं नाणत्तं—मूले कंदे खंधे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति। तिण्णि लेसाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं। उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति। चत्तारि लेसाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं। ओगाहणा मूले कंदे धणुहपुहत्तं, खंधे तयाए साले य गाउयपुहत्तं, पवाले पत्ते धणुहपुहत्तं, पुप्फे हत्थपुहत्तं, फले बीए य अंगुलपुहत्तं। सव्वेसि जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। सेसं जहा सालीणं। एवं एए दस उद्देसगा ॥

---

१. तेवलि (अ, म)।

२. सारकल्लाणं जाव केवइ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र सर्वेष्वादर्शेषु 'सारकल्लाण जाव केवइ' इति पाठो लभ्यते। भ० ८।२१७ तथा प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे यथा पाठोस्ति तदाधारेण ज्ञायते लिपिभ्रमोऽसौ जातः। वस्तुतः 'सारकल्लाए जावति केयइ' इति पाठः समीचीनोस्ति। अत्र जाव शब्दस्य किमपि प्रयोजनं नावगम्यते।

३. गुबरुक्ख (अ); गुयरुक्ख (क, ख); गुदरुख (ता)। × (ब); गुत्तरुक्ख (म) गुतरुक्ख (स)।

बीओ वग्गो

२. अह भंते ! निबव जंबु-कोसंब-साल[1]-अकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास-करज-पुत्तजीवग-अरिट्ठ-बिहेलग[2]-हरितग-भल्लाय-उबभरिय[3]-खीरणि-धायइ-पियाल-पूइयणिवारग-सेण्हय[4]-पासिय[5]-सीसव-असण[6]-पुण्णाग-नागरुक्ख-सीवण्णि[7]-असोगाणं—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एव मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गो ॥

तइओ वग्गो

३. अह भते ! अत्थिय-तिदुय-बोर-कविट्ठ—अबाडग-माउलिग[8]-बिल्ल[9]-आमलग-फणस-दाडिम[10]-आसोत्थ[11]-उबर-वड-नग्गोह-नदिरुक्ख-पिप्पलि-सतरि[12]-पिलक्खुरुक्ख-काउबरिय-कुत्थुभरिय[13]-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सत्तिवण्ण[14]-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चदण-अज्जुण-नीम[15]-कुडग-कलबाण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति, ते ण भते ! जीवा कओहितो उववज्जति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव बीय ॥

---

१. ताल (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. वेहेलग (ता) ।
३. उवरिभरीय (अ) ।
४. सेण्हण (ता), सिण्हण (ब), सण्हय (स) ।
५. पोसिय (अ), पसिय (म) ।
६. अयसि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वासु प्रतिषु 'अयसि' इति पाठो लिखितोस्ति, किन्तु प्रज्ञापनाया. (प० १) अनुसारेण 'असण' इति पद गृहीतम् ।
७. सीवण्ण (अ, क, ख, ता, म, स) ।
८. मातुलुग (अ, क, ख, ब, म) ।
९. बेल्ल (ब) ।
१०. दालिम (ख, ता, स) ।
११. असोलु (अ, म); असोट्ठ (क, ख, ब); असोह (ता) ।
१२. सतरा (अ); सतर (क, ख, स); सेतर (ब)
१३. कोच्छुंभरिय (ख); कुच्छुंभरिय (स) ।
१४. सत्तवण्ण (स) ।
१५. नीव (ख) ।

चउत्थो वग्गो

४ अह भंते ! वाइगणि-अल्लइ-पोडइ, एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेण नेयव्वं जाव[1] गज-पाडला-दासि[2]-अंकोल्लाण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्क-मंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयव्वा जाव बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गो ॥

पंचमो वग्गो

५. अह भंते ! सेरियक[3]-नवमालिय-कोरेंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा[4], जहा पण्णवणाए पढमपदे गाहाणुसारेणं जाव[5] नवणीतिय[6]-कुंद-महाजाईणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं ॥

छट्ठो वग्गो

६. अह भंते ! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एलावालुंकी, एवं पदाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव[7] दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि[8]-अक्कबोंदीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, नवरं—फलउद्देसे ओगाहणाए जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। ठिती सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव। एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठिं उद्देसगा भवंति ॥

---

१. प० १, गुच्छवग्गो।
२. पालुलावासि (अ); पाडलावासि (ख, स); पायलायसि (ब); पातुलावासि (म)।
३. सिरियका (क); सरियक (ता); सरियक (ब)।
४. मणोजा (अ, म)।
५. प० १, गुम्मवग्गो।
६. नवणीय (ख, ब, म); नलणीय (स)।
७. प० १, वल्लिवग्गो।
८. मोक्कलि (ख, ब, स)।

तेवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

१. आलुय २. लोही ३ अवए, ४ पाढा तह ५. मासवण्णि-वल्ली य ।
पंचेते दसवग्गा, पन्नास होंति उद्देसा ॥१॥

१ रायगिहे जाव एव वयासी—अह भंते ! आलुय-मूलग-सिंगबेर-हलिद्दा[1]-रुरु-कंडरिय- जारु- छीरबिरालि- किट्ठि- कुंदु[2]- कण्हाकडभु[3]- मधु-पुयलइ[4]- महुसिंगि-निरुहा[5]-सप्पसुगंधा[6]-छिण्णरुह-बीयरुहाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्गसरिसा, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । अवहारो—गोयमा ! ते णं अणंता समये-समये अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहि ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहि एवतिकालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया[7] सिया । ठिती जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

बीओ वग्गो

२ अह भंते ! लोही-णीहू[8]-थीहू[9]-थिभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सिउंढी-मुसुंढीण[10]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. हालिद्दा (अ, म), हलिद्द (ख, ता, स), हालिद्द (ब) ।
२. कुंथु (अ, क, ब); कुंथु (ता) ।
३. कण्हकडउ (अ, स), कण्हकडलु (ब) ।
४. धुपलइ (अ) ।
५. नोरुहा (ख) ।
६. सुपासगंधा (अ) ।
७. अवहरिया (स) ।
८. णेहू (ब) ।
९. वीहू (अ, ब); वीहू (स) ।
१०. मुसंढीण (ता) ।

तइओ वग्गो

४. अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुदुरुक्क-उव्वेहलिया[1]-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुराण[2]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो वग्गो

६. अह भंते ! पाढा-मियवालुंकि-मधुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोढरि-दंति-चंडीण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, नवरं - ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तं चेव ॥

७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो वग्गो

८. अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुय-काओलि-खीरकाकोलि-भंगि-णहि- किमिरासि- भद्दमुत्थ- णंगलइ-पयुय[3] -किण्हा[4] -'पउल-हढ'[5] -हरेणुया-लोहीण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं आलुयवग्गसरिसा। एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियव्वा। सव्वत्थ देवा न उववज्जंति। तिण्णि लेसाओ ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. उव्वेहलिया तिव्वेहलिया (ता)।

२. कुरवाणं (ता)।

३. पहुय (क); पेसुय (ख); पेयुय (ब, म)।

४. किण्णा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

५. पउयलघाढे (अ, क); पउयलपाढे (ख, म, स); पउयलवाढे (ब)।

चउवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. उववाय २. परीमाणं, ३,४. संघयणुच्चत्तमेव ५ संठाण ।
६ लेस्सा ७ दिट्ठी ८. नाणे, अण्णाणे ९. जोग १०. उवओगे ॥१॥
११ सण्णा १२ कसाय १३. इंदिय, १४ समुग्घाया १५ वेदणा य १६ वेदे य ।
१७. आउं १८. अज्झवसाणा, १९. अणुबंधो २०- कायसंवेहो ॥२॥
जीवपदे[1] जीवपदे, जीवाण दंडगम्मि उद्देसो ।
चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीस होंति उद्देसा ॥३॥

नेरइयादीसु उववायादि-गमग-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति—किं नेरइएहितो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति ॥

२. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति, नो बेंदिय, नो तेइंदिय, नो चउरिंदिय, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ॥

३. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ॥

---

१. इयं च गाथा पूर्वोक्तद्वारगाथाद्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति (वृ) ।

४. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति ? थलचरेहिंतो उववज्जंति ? खहचरेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जति, थलचरेहिंतो वि उववज्जति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति ॥

५. जइ जलचर-थलचर-खहचरेहिंतो उववज्जति —किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥

६ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ॥

७ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[1] किंसंघयणी[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसघयणी[3] पण्णत्ता ॥

१०. तेसि ण भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्स ॥

११. तेसि णं भते ! जीवाण सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुडसठिया[4] पण्णत्ता ॥

१२. तेंसि ण भते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ॥

१३. ते ण भते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥

१४. ते ण भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥

---

१. सरीरा (ता) ।
२. सघयणा (ख, ता, स) ।
३. छेवट्ठ° (ता) ।
४. हुडसठिया (स) ।

१५. ते णं भते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि ॥

१६. ते ण भते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

१७. तेसि ण भते ! जीवाण कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ॥

१८ तेसि णं भते ! जीवाणं कति कसाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, माया-कसाए, लोभकसाए ॥

१९. तेसि णं भते ! जीवाण कति इदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचेदिया पण्णत्ता, त जहा—सोइदिए जाव फासिदिए ॥

२० तेसि ण भंते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥

२१ ते ण भते ! जीवा कि सायावेयगा ? असायावेयगा ?
गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि ॥

२२ ते ण भते ! जीवा कि इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा ॥

२३ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥

२४ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

२५ ते ण भते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि ॥

२६. से ण भते ! पज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥

२७. से णं भते ! पज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतिय कालं सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडि-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

२८ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिती-एसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[1] अणुबंधो त्ति ॥

३०. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णि[2]°पंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं° गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

३१. पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं तं चेव जाव[3] अणुबंधो ॥

३३. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ता[4]°असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिमब्भहियं,[5] एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

३४. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।८-२६ ।
२. सं० पा०—पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागतिं ।
३. भ० २४।८-२६ ।
४. सं० पा०—पज्जत्ता जाव करेज्जा ।
५. पुव्वकोडिअब्भहियं (अ, क, ख, ब, म, स) ।

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेस तं चेव, नवरं[1]—इमाइं तिण्णि नाणत्ताइं—आउं, अज्झवसाणा, अणुबंधो य। जहण्णेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

३७ ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

३८ से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयण-प्पभाए जाव[2] गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं'[3] गतिरागतिं करेज्जा ४॥

३९ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥

४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं जाव[4]—

४१. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ता[5]•असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख॰जोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा,[6] •एवतियं कालं गतिरागतिं॰ करेज्जा ५॥

४२. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नवरिं (व)।
२. भ० २४।२७।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।८-२६, ३५-३७।
५. स० पा०—॰पज्जत्ता जाव जोणिए।
६. स० पा०—सेवेज्जा जाव करेज्जा।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइ जाव[1]—

४४. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[2] गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा! भवादेसेण दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागं अतोमुहुत्तमब्भहिय, एवतियं कालं[3] °सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति° करेज्जा६॥

४५. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[4] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु[5] उववज्जेज्जा ॥

४६. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगतव्व, नवरं—इमाइ दोण्णि नाणत्ताइ—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबधो वि। अवसेसं त चेव[6] ॥

४७. से णं भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[7] रयणप्पभाए जाव[8] गतिरागतिं करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवतियं[9] °काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति° करेज्जा ७॥

४८. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[10] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१. भ० २४।८-२६, ३५-३७।

२. भ० २४ २७।

३. स० पा०—काल जाव करेज्जा।

४. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

५. असखेज्जइ जाव (अ क, ख, ता, व, म, स)

६. भ० २४।८-२६।

७. °असण्णि जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

८. भ० २४।२७।

९ सं० पा०—एवतियं जाव करेज्जा।

१०. केवति जाव (अ, क ख, ता, व, म, स)।

४९ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेस तं चेव, जहा सत्तम-गमए जाव[1]—

५० से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[2] जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[3] गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भ-हिया, एवतिय[4] °कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं° करेज्जा ८॥

५१. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[5] ण भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से ण भते ! केव-तियकालट्ठितीएसु[7] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलि-ओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५२. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सेसं जहा सत्तमगमए जाव[8]—

५३ से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[9] उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[10] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइ-भाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, 'एवतिय काल'[11] गतिरागति करेज्जा ९। एव एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, सव्वेते नव गमगा भवति ॥

५४ जइ सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति —कि सखेज्जवासाउयसण्णि-पचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[12] उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदिय-तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ?

---

१ भ० २४।४६ ।
२. °ट्ठितीय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. भ० २४।२७ ।
४. स० पा०—एवतिय जाव करेज्जा ।
५. °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६. रयण जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८ भ० २४।४६ ।
९ °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१० भ० २४।२७ ।
११ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१२ °तिरिक्ख जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय[1]•सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो° उववज्जंति ॥

५५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[2] उववज्जति—किं जल-चरेहिंतो उववज्जति—पुच्छा !
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, जहा असण्णी जाव[3] पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जति ॥

५६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा–रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥

५७. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? जहेव[4] असण्णी ॥

५९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा—वइरोसभनारायसघयणी, उसभनारायसंघयणी जाव[5] छेवट्टसंघयणी[6]। सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ॥

६०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंसा, निग्गोहा जाव[7] हुंडा ॥

६१. तेसि णं भंते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। सेसं जहा असण्णीणं जाव[8] अणुबंधो, नवरं—पंच समुग्घाया आदिल्लगा। वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव—

---

१. सं० पा०—असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति।
२. °पंचिंदिय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।८।
५. ठा० ६।३०।
६. सेवट्ट° (अ, ख, ब, म); छेवट्ठ° (ता)।
७. भ० १४।८१।
८. भ० २४।१६-२६।

६२. से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[1] रयणप्पभाए जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

६३. पज्जत्तसखेज्ज[2]•वासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! ° जे भविए जहण्णकाल[3]•ट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए°, से णं भते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६४. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा २॥

६५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव[5] कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

६६ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव गमओ, नवरं —इमाइं अट्ठ नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण धणुपुहत्तं २. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ ३. नो

---

१. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
२. स० पा०—पज्जत्तसखेज्ज जाव जे।
३. स० पा०—जहण्णकाल जाव से।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।५७-६२।
६. °पुढवि जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ४. नो नाणी, दो अण्णाणा नियमं ५. समुग्धाया आदिल्ला तिण्णि ६. आउं ७. अज्झवसाणा ८. अणुवधो य जहेव असण्णीण। अवसेसं जहा पढमगमए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा ४।।

६८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

६९. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमयो निरवसेसो भाणियव्वो जाव[2] कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५।।

७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्को-सेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७१ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[3] कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवम अतोमुहुत्त-मब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६।।

७२. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए[4] ण भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो[5] चेव पढमगमओ नेयव्वो,[6] नवरं–ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि, सेस तं चेव। काला-देसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ७।।

---

१. भ० २४।५८-६२।
२. भ० २४।६७।
३. भ० २४।६७।
४. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. एएसिं (अ, क, ख, ता व, स)।
६. भ० २४।५८-६२।

७४. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७५. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८ ॥

७६. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[2] णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु[3] •रयणप्पभापुढविनेरइएसु॰ उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९। एवं एते नव गमका। उक्खेव-निक्खेवओ नवसु वि जहेव[5] असण्णीण ॥

७८. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७९. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव[6] भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। एवं रयणप्पभपुढविगमसरिसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवि त्ति, नवरं—नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेणं

---

१. भ० २४।७३।
२. ॰पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. सं० पा०—उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए।
४. भ० २४।७३।
५. असंज्ञि-प्रकरणं ४ सूत्रात् ५३ पर्यन्त विद्यते।
६. भ० २४।५८-६२।

चेव कमेण चउगुणा कायव्वा। वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीस सागरोवमाइं चउगुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठि, तमाए अट्ठासीइं। संघयणाइं—वालुयप्पभाए पंचविहसघयणी, तं जहा—वइरोसहनारायसंघयणी जाव[1] खीलियासंघयणी[2], पंकप्पभाए चउव्विहसघयणी, धूमप्पभाए तिविहसघयणी, तमाए दुविहसंघयणी, त जहा—वइरोसभनारायसघयणी य, उसभनारायसघयणी य, सेस त चेव ॥

८०. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[3] ण भते! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेण बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८१. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? एवं जहेव रयणप्पभाए नव गमका, लद्धी वि सच्चेव, नवर—वइरोसभनारायसंघयणो। इत्थिवेदगा न उववज्जति, सेस त चेव जाव[4] अणुबधो त्ति। सवेहो भवादेसेणं जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

८२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेण कालादेसो वि तहेव जाव[5] चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा २ ॥

८३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[6] अणुबधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ३ ॥

८४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढविजहण्णकालट्ठितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[7] भवादेसो त्ति, नवर—पढमं संघयणं, नो इत्थिवेदगा। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गह-

---

१. ठा० ६।३०।
२. कीलिया° (अ)।
३. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।६३,६४।
६. भ० २४।६५।
७. भ० २४।६६,६७।

णाइं। कालादेसेण जहण्णेणं बावीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४॥

८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] कालादेसो त्ति ५॥

८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[2] अणुवधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

८७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

८८. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[3] भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती अणुवधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेस त चेव। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

८९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी सवेहो वि तहेव[4] सत्तमगमगसरिसो ८॥

९०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, 'एस चेव'[5] लद्धी जाव[6] अणुबधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९॥

९१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति?

गोयमा! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति॥

९२. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो

---

१. भ० २४।८४।
२. भ० २४।८४।
३. भ० २४।८१।
४. भ० २४।८७,८८।
५. एवं सच्चेव (अ)।
६. भ० २४।८७,८८।

उववज्जंति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[1] उववज्जंति ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो असखेज्जवासा-उयसण्णिमणुस्सेहिंतो[2] उववज्जंति ॥

९३. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[3] उववज्जति—कि पज्जत्तसखेज्जवासा-उयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्त-संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥

९४. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जि-त्तए, से ण भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्त-माए ॥

९५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

९६ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा उवव-ज्जंति । सघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अगुलपुहत्तं, उक्कोसेण पंचधणु-सयाइ । एवं सेस जहा सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणियाण जाव[4] भवादेसो त्ति, नवर—चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा । ठिती अणुबधो य जहण्णेणं मासपुहत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १॥

९७. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्व-कोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एव-तियं काल गतिरागति करेज्जा २॥

---

१. असखेज्ज जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२. असखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. सखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. भ० २४।५९-६२ ।

९८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण सागरोवम मासपुहत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ३॥

९९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवर—इमाइ पच नाणत्ताइ—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अगुलपुहत्त, उक्कोसेण वि अंगुलपुहत्त २ तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ३ पच समुग्घाया आदिल्ला ४, ५ ठिती अणुबधो य जहण्णेण मासपुहत्त, उक्कोसेण वि मासपुहत्त, सेस त चेव जाव[1] भवादेसोत्ति। कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४॥

१०० सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा[2], नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५॥

१०१ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवरं—कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम मासपुहत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१०२ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो[3], नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेण पचधणुसयाइ, उक्कोसेण वि पचधणुसयाइ। ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ७॥

१०३ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया[4], नवर—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ८॥

१०४ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवर—

१. भ० २४।६५,६६।
२ भ० २४।९९।
३. भ० २४।९५,९६।
४. भ० २४।१०२।

कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

१०५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु[1] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु[2] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१०६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं वासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी, नाणत्तं -नेरइयट्ठिति[4] कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा १-३॥

१०७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं वि रयणिपुहत्तं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि । सेसं जहा[5] ओहियाणं । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

१०८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ । तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं वि पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । सेसं जहा[6] पढमगमए, नवरं—नेरइयठिइं कायसंवेहं च जाणेज्जा ७-९ । एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायति जहेव तिरिक्खजोणियाणं । कालादेसो वि तहेव, नवरं—मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा[7] ॥

१०९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नेरइएसु जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. केवति जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. भ० २४।९६ ।
४. ०ट्ठिती (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
५. भ० २४।१०५,१०६ ।
६. भ० २४।१०५,१०६ ।
७. भाणियव्वा (क, म) ।

गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवम-ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११०. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव सक्क-रप्पभापुढविगमओ नेयव्वो, नवर—पढमं सघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[1] अणुबधो त्ति । भवादेसेण दोभवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरो-वमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-गति करेज्जा १॥

१११ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—नेरइयट्ठितिं सवेह च जाणेज्जा २॥

११२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—सवेह च जाणेज्जा ३॥

११३ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणि-पुहत्त । ठिती जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण वि वासपुहत्त । एव अणुबधो वि । संवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

११४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण पचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पचधणु-सयाइ । ठिती जहण्णंण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि । नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयट्ठितिं संवेह च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइ दोण्णि जाव नवमगमए । कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एव-तिय काल सेवेज्जा एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

११५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

११६ रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. भ० २४।१०६ । २. भ० १।५१ ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। एवं जहेव नेरइयउद्देसए जाव[1]—

११७. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

११८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं रयणप्पभागमगसरिसा नव वि गमा भाणियव्वा[2], नवरं—जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु। अवसेसं तं चेव १-९।।

११९. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[3] उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[4] उववज्जंति ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।।

१२०. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१२१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। वइरोसभनारायसंघयणी। ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं छ गाउयाइं। समचउरंससंठिया[5] पण्णत्ता। चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ। नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अण्णाणी, नियमं दुअण्णाणी—मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जोगो तिविहो वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। पंच इंदिया। तिण्णि समुग्घाया आदिल्ला[6]। समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। वेदणा दुविहा वि—सायावेदगा, असायावेदगा। वेदो दुविहो वि—इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा

---

१. भ० २४।२-६।
२. भ० २४।८-५३।
३. ०सण्णि जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
४. ०वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
५. समचउरंससंठाणसंठिया (स)।
६ आदिल्लगा (अ, क, ब, म, स)।

वि, नो नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबधो जहेव ठिती । कायसवेहो भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण छप्पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१२२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो--एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा २ ॥

१२३ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा—एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती से जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एवं अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा, सेस त चेव ३ ॥

१२४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

१२५. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस त चेव जाव भवादेसो त्ति, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेणं सातिरेग धणुसहस्स। ठिती जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४ ॥

१२६ सो चेव[1] जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिइ सवेह च जाणेज्जा ५ ॥

१२७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, सेस त चेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१२८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमगो भाणियव्वो,[2] नवर—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओव-माइ। एव अणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं दसहिं वाससहस्सेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण छ पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

---

१. चेव अप्पणा (अ, क, ख, ता, ब, म)। २. भ० २४।१२०,१२१।

१२९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुर-कुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ८ ॥

१३०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिपलिओवमाइं, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण छप्पलि-ओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥

१३१. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि जलचरेहितो उववज्जति ? एव जाव[1]—

१३२. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥

१३३. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव एतेसि रयणप्पभ-पुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,[2] नवर जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु, इम नाणत्त—चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था। सेसं त चेव। संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो १-९ ॥

१३४. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णि-मणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ॥

१३५ जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो[3] उववज्जति, 'असखेज्जवासाउय-सण्णिमणुस्सेहितो वि'[4] उववज्जति ॥

१३६ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एव असंखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदिल्ला तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवर—सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेणं सातिरे-गाइ पंचधणुसयाइ, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं, सेस त चेव। तइयगमे ओगा-

---

१. भ० २४।४,५।
२. भ० २४।५८-७७।
३. ०वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
४. ०वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

हणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं १-३ ॥

१३७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं। सेसं तं चेव ४-६ ॥

१३८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला[1] तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। अवसेसं तं चेव ७-९ ॥

१३९ जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति?

गोयमा! पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥

१४०. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४१. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव एतेसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं नव गमगा तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो। सेसं तं चेव १-९ ॥

१४२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१४३ रायगिहे जाव एवं वयासी—नागकुमाराणं भंते! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जति?

गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जति ॥

---

१. पच्छिल्लगा (क, ख, ता, स)। २. भ० २४।९६-१०४।

१४४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो० ? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया तहा एतेसिं पि जाव[1] असण्णित्ति १-९ ।।

१४५. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं संखेज्जवासाउय०? असंखेज्जवासाउय०?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।।

१४६. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१४७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव[2] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ।।

१४८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २।।

१४९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । सेसं तं चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३।।

१५०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठितियस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ।।

१५१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव ७-९ ।।

१५२. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय०?

गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ।।

१५३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।११६-११८ ।

२. भ० २४।१२१ ।

३. भ० २४।१२३ ।

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि नवसु वि गमएसु, नवर—नागकुमारट्ठिति सवेहं च जाणेज्जा। सेसं त चेव १-९॥

१५४. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो, नो असण्णिमणुस्सेहितो, जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव[1]—

१५५ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइं दो पलिओवमाइ। एवं जहेव[2] असखेज्जवासाउयाण तिरिक्खजोणियाण नागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि, नवरं—पढमवितिएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं पचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइ। तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेस तं चेव १-३॥

१५६ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६॥

१५७ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठितियस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठितिं सवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव ७-९॥

१५८. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्ज० ? अपज्जत्तसखेज्ज० ?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्ज, नो अपज्जत्तसखेज्ज॥

१५९ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण देसूणदोपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु, नवर—नागकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा १-९॥

१६०. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति॥

---

१. भ० २४।१३५। २. भ० २४।१४७-१४९।

४-११ उद्देसा

१६१. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा भाणियव्वा ॥

१६२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

दुवालसमो उद्देसो

१६३. पुढविक्काइया णं भंते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो[1] उववज्जंति ॥

१६४. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो एव जहा वक्कतीए उववाओ जाव[2]—

१६५. जइ बायरपुढविक्काइयएगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि पज्जत्ता-बादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढवि० ?
गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढवि, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जति ॥

१६६. पुढविक्काइए ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणुसमय अविरहिया असंखेज्जा उववज्जति । छेवट्टसघयणी[3] । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अगुलस्स असंखेज्जइभाग । मसूराचदासठिया । चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिदिए पण्णत्ते । तिण्णि समुग्घाया । वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण

---

१. देवेहितो वि (अ) ।
२. प० ६ ।
३. सेवट्ट० (अ, म); सेवट्ठ० (क, ख); छेवट्ठ० (ता) ।

अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि[1], अपसत्था वि। अणुबधो जहा ठिती ॥

१६८. से ण भते ! पुढविक्काइए पुणरवि पुढविकाइएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं असखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

१६९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, एव चेव वत्तव्वया निरवसेसा २ ॥

१७० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। सेस त चेव जाव अणुबधो त्ति, नवर—जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जेज्जा। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण 'छावत्तर वाससयसहस्स'[2], एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३ ॥

१७१ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो[3] नवर—लेस्साओ तिण्णि। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबधो जहा ठिती। सेस त चेव ४ ॥

१७२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वा[4] ५ ॥

१७३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा जाव भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीइं वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६ ॥

१७४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एव तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो[5], नवर—अप्पणा से ठिई जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७ ॥

---

१. X (ता)।
२. छावत्तरिं वाससहस्सुत्तर सयसहस्स (स)।
३. भ० २४।१६६,१६७।
४. भ० २४।१७१।
५. भ० २४।१७०।

१७५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त। एवं जहा सत्तमगमगो जाव[1] भवादेसो। कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८॥

१७६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा[2] जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीस वाससहस्साइं, उक्कोसेण छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९॥

१७७. जइ आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—किं सुहुमआउ० ? बादरआउ० ? एव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाणं॥

१७८ आउक्काइए ण भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एव पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर— थिवुगाबिंदुसंठिए। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ। एव अणुबंधो वि। एव तिसु वि गमएसु। ठिती संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाइ भवग्गहणाइं। ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससयसहस्सं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। छट्ठे गमए कालादेसेण जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। सत्तमे गमए कालादेसेण जहण्णेण सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्सं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीस वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। नवमे गमए भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं,

---

१. भ० २४।१७४। २. भ० २४।१७४।

कालादेसेणं जहण्णेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एवं नवसु वि गमएसु आउक्काइयठिई जाणियव्वा १-९॥

१७९. जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जति० ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया, नवर—नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ। तेउक्काइया णं सुईकलावसठिया। ठिई जाणियव्वा। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइं बारसहि राइदिएहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एवं सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८०. जइ वाउक्काइएहिंतो०? वाउक्काइयाण वि एव चेव नव गमगा जहेव तेउक्काइयाण, नवरं—पडागासठिया पण्णत्ता। सवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं एग वाससयसहस्स। एव सवेहो उवजुजिऊण[1] भाणियव्वो १-९॥

१८१. जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जति० ? वणस्सइकाइयाण आउकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर - नाणासठिया। सरीरोगाहणा पढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्सं, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं। सवेहो ठिती य जाणियव्वा। तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्स, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८२. जइ बेदिएहितो उववज्जति—किं पज्जत्ताबेदिएहितो उववज्जति ? अपज्जत्ताबेदिएहितो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्ताबेदिएहितो वि उववज्जति॥

१८३. बेदिए ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१८४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। छेवट्टसंघयणी। ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। हुंडसठिया। तिण्णि लेसाओ। सम्मदिट्ठी

---

१. उववज्जिऊण (अ, ता, म), उवजुज्जित्तण (क); उवउज्जित्तए (व)।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियम। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, त जहा—जिब्भिदिए य फासिदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेस जहा पुढविक्काइयाण, नवर—ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव बेदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवरं—इमाइ सत्त नाणत्ताइ—१. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं २. नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३. दो अण्णाणा नियमं ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अतोमुहुत्त ६. अज्झवसाणा अपसत्था ७. अणुबधो जहा ठिती। सवेहो तहेव-आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवर—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेण बारस सवच्छराइ, उक्कोसेण वि बारस सवच्छराइ। एव अणुबधो वि। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुजिऊण भाणियव्व जाव नवमे गमए जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ बारसहि सवच्छरेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइं अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइंदिएहितो उववज्जंति० ? एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं,

---

१. भ० २४।१८४-१८६।

उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं[1]। तिण्णि इंदियाइं। ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण एगूणपन्न राइंदियाइं। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं छण्णउयराइंदियसयमब्भहियाइं,[2] एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा। मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवरं—ठिती जहण्णेण एगूणपन्न राइंदियाइं; उक्कोसेण वि एगूणपन्नं राइंदियाइं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१९०. जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जंति० ? एव चेव चउरिंदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवर—एतेसु चेव ठाणेसु नाणत्ता जाणियव्वा। सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइं ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि इंदियाइं। सेस तहेव जाव नवमगमए—कालादेसेण जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

१९१ जइ पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय॥

१९२. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव[3] किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति॥

१९३. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१९४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,[4] नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। पंच इंदिया। ठिती अणुबंधो य जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ,

---

१. कोसा (ता)।
२. छण्णउइ० (स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।१८४।

एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। नवसु वि गमएसु कायसंवेहो—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्व, नवर—मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव[1] बेइंदियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चेव पढमगमएसु, नवरं—ठिती अणुबधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं त चेव जाव नवमगमएसु—जहण्णेण पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १-९॥

१९५. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय।

१९६. जइ संखेज्जवासाउय० कि जलयरेहितो० ? सेसं जहा असण्णीणं जाव[2]—

१९७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एवं जहा[3] रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्सं। सेसं तहेव जाव कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एवं संवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीण तहेव निरवसेसो[4]। लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, मज्झिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, नवर— इमाइं नव नाणत्ताइं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जतिभाग, उक्कोसेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। तिण्णि लेसाओ। मिच्छादिट्ठी। दो अण्णाणा। कायजोगी। तिण्णि समुग्घाया। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव। पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं—ठिती अणुबधो य— जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस त चेव १-९॥

१९८. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, असण्णिमणुस्सेहितो वि उववज्जति॥

१९९. असण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणि-

---

१. भ० २४।१८७।
२. भ० २४।१९२,१९३।
३. भ० २४।५८-६२।
४. निरवसेसं (ख, ता, ब)।

यस्स जहण्णकालट्ठितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेस १-३। सेसा छ न भण्णति ।।

२००. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि संखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ।।

२०१ जइ सखेज्जवासाउय० किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तासखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउय, अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ।।

२०२. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०३ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी, नवर—ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण पचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी। एव अणुबधो। सवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपंचिदियस्स। मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपचिदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु। सेस त चेव निरवसेसं। पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवर— ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइ। ठिती अणुबधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव[1] १-९।।

२०४. जइ देवेहितो उववज्जति—कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमंतरदेवेहितो, जोइसियदेवेहितो, वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति जाव वेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति ।।

२०५. जइ भवणवासिदेवेहितो उववज्जति—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ।।

२०६. असुरकुमारेण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. तहेव नवर पच्छिल्लएसु गमएसु संखेज्जा उववज्जति नो असखेज्जा उववज्जंति (अ, (ख, ता, ब, म)।

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०७. ते णं भंते ! जीवा [1]•एगसमएणं केवतिया उववज्जति • ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति ।।

२०८. तेसि णं भते ! जीवाण सरीरगा किसघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्ह संघयणाण असंघयणी जाव[2] परिणमति ।।

२०९. तेसि णं भते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?
गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा[3] पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसयसहस्सं ।।

२१०. तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरससंठिया पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासठिया[4] पण्णत्ता । लेस्साओ चत्तारि । दिट्ठी तिविहा वि । तिण्णि नाणा नियम, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । पच समुग्घाया । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेग सागरोवमं । अज्झवसाणा असखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबधो जहा ठिती । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा । एवं नव वि गमा नेयव्वा, नवर—मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराणं ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसवेह च जाणेज्जा । सव्वत्थ दो भवग्गहणाइ जाव नवमगमए कालादेसेण जहण्णेण सातिरेग सागरोवम बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, उक्कोसेण वि सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १-९ ।।

---

१ स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।२४५, २२४ ।
३. × (क, ख, ता, म, स) ।
४. नाणासठाणसठिया (स) ।

२११. णागकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव[1] भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइ। एवं नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणियकुमाराण॥

२१२. जइ वाणमंतरेहिंतो उववज्जति—किं पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो ?
गोयमा ! पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो॥

२१३. वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? एतेसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमं। सेसं तहेव १-९॥

२१४. जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जति—किं चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतो उववज्जति जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो[3]० ?
गोयमा ! चंदविमाण जाव ताराविमाण॥

२१५. जोइसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? लद्धी जहा असुरकुमाराणं, नवरं—एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता। तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेण जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण पलिओवमं वाससयसहस्सेण बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९॥

२१६. जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति—किं कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो॥

२१७. जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति—किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ईसाणकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो सणंकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो॥

---

१. भ० २४।२०६-२१०।
२. भ० २४।२०६-२१०।
३. तारविमाण० (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२१८. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा ॥

२१९. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव १-९ ॥

२२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

तेरसमो उद्देसो

२२१. आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव पुढविक्काइय-उद्देसए जाव[2]—

२२२. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो[3], नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव ॥

२२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० १।५१।
२. भ० २४।१६३-१६५।
३. भ० २४।१६७-२१९।

चोद्दसमो उद्देसो

२२४. तेउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं[1] पुढविक्काइयउद्देसग-सरिसो[2] उद्देसो भाणियव्वो, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। देवेहिंतो न उववज्जंति। सेसं तं चेव ॥

२२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

पण्णरसमो उद्देसो

२२६. वाउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव तेउक्काइय-उद्देसओ तहेव, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

सोलसमो उद्देसो

२२८. वणस्सइकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो, नवरं—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जति ताहे पढम-बितिय-चउत्थ-पंचमेसु गमएसु परिमाणं अणुसमयं अविरहियं अणंता उवव-ज्जंति। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सेसा पंच गमा अट्ठभवग्ग-हणिया तहेव, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

२२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. एवं जहेव (अ, म)।

२. उद्देसासरिसो (ता, व, स)।

३. भ० १।५१।

सत्तरसमो उद्देसो

२३०. बेंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जाव[1]—

२३१. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेंदिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं—एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव अट्ठ भवा। एवं जाव चउरिंदिएणं समं चउसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठ भवा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा। देवेसु न[2] उववज्जंति। ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

२३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठारसमो उद्देसो

२३३. तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देसो, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। तेउक्काइएसु समं ततियगमे उक्को-सेणं अट्ठुत्तराइं बेराइंदियसयाइं, बेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं अडयालीसं संवच्छराइं छन्नउयराइंदियसतमब्भहियाइं, तेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं बाणउयाइं तिण्णि राइंदियसयाइं। एवं सव्वत्थ जाणेज्जा जाव सण्णिमणुस्से त्ति ॥

२३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

एगूणवीसइमो उद्देसो

२३५. चउरिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहेव चउरिंदियाणं वि, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

२३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१६३-१६५।

२. न चेव (अ, क, म)।

वीसइमो उद्देसो

२३७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहितो वि, देवेहितो वि उववज्जंति ॥

२३८. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति—किं रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ॥

२३९. रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? एवं जहा[1] असुरकुमाराणं वत्तव्वया, नवरं—संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति। ओगाहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्चंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ॥

२४१. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता। एगा काउलेस्सा पण्णत्ता। समुग्घाया चत्तारि। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

---

१. भ० २४।२०७,२०८।

२४२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु। अवसेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए सण्णिपचिंदिएहिं समं। नेरइयाणं 'मज्झिमएसु तिसु गमएसु'[1] पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्तं भवति। सेसं तं चेव। सव्वत्थ ठिति संवेहं च जाणेज्जा २-९॥

२४३. सक्करप्पभापुढविनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए॰? एव जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवरं—सरीरोगाहणा जहा[2] ओगाहणसंठाणे[3]। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती अणुबंधा पुव्वभणिया। एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा १-९। एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा संवेहो य जाणियव्वा॥

२४४. अहेसत्तमपुढवीनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए॰? एवं चेव नव गमगा, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा जाणियव्वा। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छब्भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं—ठितीविसेसो कालादेसो य बितियगमएसु जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। तइयगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। चउत्थगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। पंचमगमए जहण्णेण बावीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। छट्ठगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ।

---

१. मज्झिमएसु गमएसु (अ); मज्झिमएसु य तिसु गमएसु (क, ब); मज्झिमगमएसु (ख, ता); मज्झमएसु य तिसु वि गमएसु (स)।

२. प० २१।

३. ओगाहणासंठाणे (अ, म)।

उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइ दोहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं दोहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ। नवमगमए जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

२४५ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो॰? एव उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव[1]—

२४६. पुढविकाइए णं भते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा॥

२४७ ते ण भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति? एवं परिमाणादीया अणुबधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं—नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति। भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। सेस त चेव। कालादेसेण उभओ ठितीए करेज्जा १-९॥

२४८. जइ आउक्काइएहिंतो उववज्जति॰? एवं आउक्काइयाण वि। एव जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा, नवर—सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। नवसु वि गमएसु भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेण उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणाण लद्धी तहेव सव्वत्थ ठितिं सवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२४९ जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति?
गोयमा! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय, भेओ जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स जाव[2]—

२५०. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

---

१. भ० २४।१६४,१६५। २. भ० २४।१९२।

२५१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। बितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं--कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १,२॥

२५२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

२५३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव[1] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव ३॥

२५४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा॥

२५५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा एयस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव[2] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ४॥

२५६. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥

२५७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा ६॥

२५८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

---

१. भ० २४।३२,३३।   २. भ० २४।१९४।

२५९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा[1] सत्तमगमे, नवर—कालदेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ८।।

२६०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग। एवं जहा रयणप्पभाए उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं जाव[2] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाण जहा[3] एयस्सेव ततियगमे। सेस तं चेव ९ ।।

२६१. जइ सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—कि संखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय ।।

२६२. जइ सखेज्जवासाउय जाव किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तसंखेज्जवा-साउय० ? दोसु वि ।।

२६३ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए पचिंदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२६४ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहा[4] एयस्स चेव सण्णिस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स। सेस त चेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ।।

२६५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—काला-देसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ।।

२६६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवर—परिमाण जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उवव-ज्जति। ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्स।

---

१. भ० २४।२५८।
२. भ० २४।५२,५३।
३. भ०२४।२५३।
४. भ० २४।५८-६२।

सेसं तं चेव जाव—अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ३ ॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जातो जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से जहा[1] एयस्स चेव सण्णिपचिंदियस्स पुढविक्काएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। संवेहो जहेव[2] एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ४-६ ॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवर—ठिती अणुबंधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइं ७ ॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर कालादेसेण—जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८ ॥

२७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओमट्ठितीएसु। अवसेस त चेव, नवरं—परिमाण ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ९ ॥

२७१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—कि सण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो वि, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जति ॥

२७२. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव[3] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३ ॥

---

१. भ० २४।१९७।
२. भ० २४।२५५-२५७।
३. भ० २४।१९९।

२७३ जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ।।

२७४ जइ सखेज्जवासाउय० किं पज्जत्त० ? अपज्जत्त० ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, अपज्जत्तसखेज्जवासाउय ।।

२७५. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२७६ ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? लद्धी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव[1]—भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइ १ ।।

२७७. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ।।

२७८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितिएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, सच्चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलपुहत्तं, उक्कोसेण पच धणुसयाइ । ठिती जहण्णेण मासपुहत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ,—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ३ ।।

२७९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, जहा[2] सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवरं—परिमाण उक्कोसेण संखेज्जा उववज्जंति । सेसं तं चेव ४-६ ।।

२८०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण पंच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच धणुसयाइं । ठिती अणुबधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उवकोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव

---

१. भ० २४।२०३ । २. भ० २४।२६७ ।

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८॥

२८२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेण दो भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

२८३. जइ देवेहितो उववज्जंति—किं भवणवासिदेवेहितो उववज्जंति? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो० ?
गोयमा! भवणवासिदेवेहितो जाव वेमाणियदेवेहितो वि॥

२८४. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो० ?
गोयमा! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो॥

२८५. असुरकुमारे णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा[1] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइं, उक्कोसेण जहण्णेण दोण्णि भवग्गहणाइं। ठितिं संवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा १-९॥

२८६. नागकुमारे णं भंते! जे भविए ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणियकुमारे॥

२८७. जइ वाणमंतरेहितो० किं पिसाय ०? तहेव जाव—

२८८. वाणमंतरे णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एवं चेव, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२८९. जइ जोतिसिय ०? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए। भवग्गहणाइं नवसु वि गमएसु

---

१. भ० २४।२०७-२१०।

अट्ठ जाव कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिग्रोवम अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि पलिग्रोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि चउहि य वाससयसहस्सेहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नवसु वि गमएसु, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-९।।

२९१. जइ वेमाणियदेवेहितो ० कि कप्पोवावेमाणिय ०? कप्पातीतावेमाणिय ०? गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय ।।

२९२ जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति, नो ग्राणय जाव नो ग्रच्चुयकप्पोवावेमाणिय ।।

२९३ सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीग्राउएसु। सेस जहेव[1] पुढविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवर—नवसु वि गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। ठिति कालादेसं च जाणेज्जा १-९। एवं ईसाणदेवे वि। एव एएण कमेण ग्रवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा, नवरं—ग्रोगाहणा जहा[2] ग्रोगाहणसठाणे, लेस्सा सणंकुमार-माहिद-बंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाण एगा सुक्कलेस्सा। वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुसगवेदगा। ग्राउ-ग्रणुवधा जहा[3] ठितिपदे। सेसं जहेव ईसाणगाण कायसवेह च जाणेज्जा।।

२९४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

एगवीसतिमो उद्देसो

२९५. मणुस्सा णं भंते ! कग्रोहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति जाव देवेहितो उववज्जंति ?

गोयमा ! णेरइएहितो वि उववज्जंति 'जाव देवेहितो वि उववज्जति'[4]। एवं उववाग्रो जहा पचिदियतिरिक्खजोणिउद्देसए जाव[5] तमापुढविनेरइएहितो वि उववज्जति, नो ग्रहेसत्तमपुढविनेरइएहितो उववज्जंति ।।

---

१. भ० २४।२१८।
२. प० २१।
३. प० ४।
४. X (ग्र, क, ख, ता, व, म)।
५. भ० २४।२३८।

२९६. रयणप्पभपुढविनेरइए ण भंते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु । अवसेसा वत्तव्वया जहा[1] पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जति । जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इह मासपुहत्तेहिं सवेह करेज्जा । सेस तं चेव १-६।
जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'[2], नवरं—जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडी आउएसु । ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबध-सवेह-नाणत्त च जाणेज्जा जहेव[3] तिरिक्खजोणियउद्देसए । एव जाव तमापुढविनेरइए ॥

२९७. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति जाव पचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो भेदो जहा पचिदियतिरिक्खजोणिय-उद्देसए, नवर—तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा । सेसं त चेव । जाव[4]—

२९८. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उवव-ज्जेज्जा ॥

२९९. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव पचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा[5] नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा उववज्जंति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झव-साणा पसत्था वि अप्पसत्था वि बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवति । सेसं त चेव निरवसेसं १-९॥

३००. जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एव जाव चउरिंदियाण वि । असण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपचिदियतिरि-जोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पचिदियतिरिक्ख-

---

१. भ० २४।२४०-२४२ ।
२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, व); वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स) ।
३. भ० २४।२४३ ।
४. भ० २४।२४५ ।
५. भ० २४।२४७ ।

जोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा[1], नवरं—एयाणि चेव परिमाण-अज्झवसाण-नाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि। सेसं तहेव निरवसेसं १-९॥

३०१. जइ देवेहिंतो उववज्जति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति?
गोयमा! भवणवासिदेवेहिंतो वि जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति॥

३०२. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमार जाव थणियकुमार०?
गोयमा! असुरकुमार जाव थणियकुमार॥

३०३. असुरकुमारे णं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा, नवरं—जहा तहिं जहण्णगं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु तहा इह मास-पुहत्तट्ठितीएसु। परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जति। सेसं तं चेव १-९। एवं जाव[2] ईसाणदेवो त्ति। एयाणि चेव नाणत्ताणि। सणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव[3] पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिउद्देसए, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं संखेज्जा उववज्जति। उववाओ जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। सेसं तं चेव। संवेहं वासपुहत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा। सणंकुमारे ठिती चउगुणिया 'अट्ठावीससागरोवमा भवंति'[4] माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पन्नं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं। एसा उक्कोसा ठिती भणिया। जहण्णट्ठिति पि चउगुणेज्जा॥

३०४. आणयदेवे णं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीठितीएसु उववज्जेज्जा॥

३०५. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति? एवं जहेव सहस्सार-देवाणं वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं

---

१. भ० २४।२४८-२८२।
२. भ० २४।२८५-२९३।
३. भ० २४।२९३।
४. अट्ठावीस सागरोवमा भवंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सत्तावन्न सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नव वि गमा, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा १-९। एवं जाव अच्चुयदेवो, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठि सागरोवमाइ, आरणगस्स तेवट्ठि सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठि सागरोवमाइ ॥

३०६. जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—कि गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?
गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७. जइ गेवेज्जा०—कि हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?
गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीट्ठितीएसु। अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा[1]—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण दो रयणीओ। सठाण[2]—एगे भवधारणिज्जे सरीरे। से समचउरंससठिए पण्णत्ते। पंच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव ण वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहि समोहणिसु वा, समोहणति वा, समोहणिस्संति वा। ठिती अणुबधो जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइ, उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ। सेस तं चेव। कालादेसेण जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेणउति सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा। एव सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९॥

३०९. जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जति—कि विजयअणुत्तरोववाइय० ? वेजयंतअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?
गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी।

---

१. ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)। २. सठाणं गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी। नाणी, नो अण्णाणी, नियमं तिण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। ठिती जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं। सेस तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति अणुवध सवेध च जाणेज्जा। सेस एवं चेव १-९॥

३११ सव्वट्ठसिद्धगदेवे ण भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए०? सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—ठिती अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ। एव अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १॥

३१२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा २॥

३१३ सो चेव उक्को कालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ३। एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णति॥

३१४. सेव भते! सेव भते! त्ति॥

बावीसइमो उद्देसो

३१५ वाणमंतरा णं भते! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति? तिरिक्ख०? एवं जहेव[1] नागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव निरवसेस॥

३१६. जइ सण्णिपचिंदिय[2]तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय०? असखेज्जवासाउय०?

१. भ० २४।१४३, १४४।

२. स० पा०—सण्णिपचिंदिय जाव असखेज्जवासाउय।

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति० ।।

३१७. सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ।।

३१८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव[2] नागकुमाराणं बितियगमे वत्तव्वया २ ।।

३१९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ। सवेहो जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव[3] नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा[4] नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा। सखेज्जवासाउय तहेव,[5] नवरं—ठिती अणुबंधो सवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९ ।।

३२०. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति० ? असखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं—तइयगमए ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। ओगाहणा जहण्णेणं गाउय, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं। सेस तहेव। सवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियाणं। सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव[7] नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमतरे ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९ ।।

३२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

---

१. भ० २४।१४७।
२. भ० २४।१४८।
३. भ० २४।१५०।
४. भ० २४।१५१।
५. भ० २४।१५२,१५३।
६. भ० २४।१५४-१५७।
७. भ० २४।१५८,१५९।

तेवीसइमो उद्देसो

३२२. जोइसिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति - किं नेरइएहिंतो० ? भेदो जाव[1] सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख ॥

३२३ जइ सण्णि० किं संखेज्ज० ? असंखेज्ज० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय ॥

३२४. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, अवसेसं जहा[2] असुरकुमारुद्देसए, नवरं—ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३२५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा २ ॥

३२६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं दोहिं वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं ३ ॥

३२७ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३२८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारसधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। जहण्णकालट्ठितियस्स एस चेव एक्को गमो[3] ४ ॥

---

१. भ० २४।१-३ ।
२ भ० २४।१२१ ।
३. पञ्चमषष्ठगमयोरत्रैवान्तर्भावात् (वृ) ।

३२९. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा[1], नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ७-९। एते सत्त गमगा॥

३३०. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव निरवसेसं[3] १-९॥

३३१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? भेदो तहेव जाव[4]—

३३२. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवरं—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। मज्झिमगमए जहण्णेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं तहेव निरवसेसं जाव[5] संवेहो त्ति॥

३३३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव निरवसेसं १-९॥

३३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५. सोहम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? भेदो जहा[7] जोइसियउद्देसए॥

३३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भाणियव्वा (अ, क)।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३. निरवसेसं भाणियव्वं (स)।
४. भ० २४।१३४,१३५।
५. भ० २४।३२४-३२९।
६. भ० २४।१३९-१४२।
७. भ० २४।३२२,३२३।

गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमट्ठितीएसु उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३३७. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? अवसेस जहा[1] जोइसिएसु उववज्जमाणस्स, नवरं—सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेणं पलिओवम, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबधो वि । सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३३८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा २ ॥

३३९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। सेसं तहेव। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

३४० सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्त, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलिओवम। सेसं तहेव। कालादेसेण जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि दो पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४-६ ॥

३४१ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—ठिति कालादेसं च जाणेज्जा ७-९ ॥

३४२. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदिय० ? सखेज्जवासाउयस्स जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नव वि गमा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितिओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा दो अण्णाणा नियम। 'सेस त चेव'[3] १-९ ॥

३४३. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति० ? भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, जाव[4]—

---

१. भ० २४।३२४।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३ तहेव (ता)।
४. भ० २४।३३१।

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। ततियगमे जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ। चउत्थगमए जहण्णेण गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं। पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं ।।

३४५. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो० ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव[1] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ।।

३४६. ईसाणदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेग पलिओवम कायव्व। चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेस तहेव ।।

३४७. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स असखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउय तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउय। सेसं तहेव ।।

३४८. सखेज्जवासाउयाण तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठिति सवेहं च जाणेज्जा ।।

३४९. सणकुमारदेवा ण भंते ! कओहितो उववज्जंति० ? उववाओ जहा[3] सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं, जाव—

३५०. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा[4] सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवर – सणकुमारट्ठिति सवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेसं तं चेव ।।

३५१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति० ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाण तहेव नव वि गमा भाणियव्वा[5], नवरं—सणंकुमारट्ठिति सवेहं च जाणेज्जा ।।

---

१. भ० २४।१३९-१४१।
२. भ० २४।३३६-३४१।
३. भ० २४।७८,१०५।
४. भ० २४।३४२।
५. भ० २४।१०५-१०८।

३५२. माहिंदगदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा[1], नवर—माहिंदगदेवाण ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एव वभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवरं—वंभलोगट्ठिति सवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव सहस्सारो, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा। लतगादीण जहण्णकालट्ठितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साओ कायव्वाओ। संघयणाइं वंभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि। तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि। सेस तं चेव॥

३५३ आणयदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं, नवर—तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा, जाव—

३५४ पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए ०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाण, नवरं—तिण्णि सघयणाणि, सेसं तहेव जाव अणुबधो। भवादेसेण जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइ दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति सवेहं च जाणेज्जा। सेस त चेव। एव जाव अच्चुयदेवा, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा। चउसु वि संघयणा तिण्णि आणयादीसु॥

३५५ गेवेज्जगदेवा णं भते ! कओहितो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—दो संघयणा। ठिति सवेह च जाणेज्जा॥

३५६ विजय-वेजयंत-जयत-अपराजितदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुवधो त्ति, नवरं—पढम संघयण। सेसं तहेव। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। मणूसलद्धी[2] नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—पढमसघयण॥

३५७. सव्वट्ठगसिद्धगदेवा ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति ०? उववाओ जहेव विजयादीण, जाव—

---

१. भ० २४।३४९-३५१।

२. मणूसे लद्धी (स)।

३५८. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवम-ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं, नवर—भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ दोहिं वासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १।।

३५९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। संवेहं च जाणेज्जा २।।

३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोस्सेण वि पंच धणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३। एते तिण्णि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं।।

३६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरइ।।

---

१. भ० १।५१।

पंचवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेसा य २. दव्व ३. सठाण ४. जुम्म ५. पज्जव ६. नियठ ७. समणा य।
८. ओहे ९,१०. भवियाभविए, ११. सम्मा १२. मिच्छे य उद्देसा ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कति ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा जहा पढमसए बितिए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो। अप्पाबहुगं च जाव[2] चउव्विहाण देवाण चउव्विहाण देवीण मीसग अप्पाबहुगति ॥

जोगस्स अप्पाबहुग-पदं

२. कतिविहा ण भते ! ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—१. सुहुमा अप्पज्जत्तगा २ सुहुमा पज्जत्तगा ३. बादरा अप्पज्जत्तगा ४. बादरा पज्जत्तगा ५ बेइदिया अप्पज्जत्तगा ६. बेइंदिया पज्जत्तगा [3]°७ तेइदिया अप्पज्जत्तगा ८. तेइदिया पज्जत्तगा ९. चउरिंदिया अप्पज्जत्तगा १०. चउरिंदिया पज्जत्तगा° ११. असण्णिपंचिंदिया अप्पज्जत्तगा १२. असण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा १३ सण्णिपचिंदिया अप्पज्जत्तगा १४. सण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा ॥

३ एतेसि णं भते ! चोद्दसविहाण ससारसमावण्णगाण जीवाणं जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[4] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. भ० १।४-१०।
२. भ० १।२०२; प० १७।२।
३. स० पा०—एव तेइंदिया एव चउरिंदिया।
४. सं० पा० कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

गोयमा ! १. सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २ बादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३. बेदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४. एवं तेइंदियस्स ५. एवं चउरिंदियस्स ६ असण्णिस्स पंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ७ सण्णिस्स पंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ८. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ९ बादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १० सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ११ बादरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १२. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १३. बादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १४. बेदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १५. एवं तेंदियस्स, एवं जाव १८ सण्णिपंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १९. बेदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २०. एवं तेंदियस्स वि, एवं जाव २३. सण्णिपंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २४. बेदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २५ एवं तेइंदियस्स वि, एवं जाव २८ सण्णिपंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ।।

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४. दो भंते ! नेरइया पढमसमयोववन्नगा किं समजोगी ? विसमजोगी[1] ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ।।

५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ[2] वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा, संखेज्जइभागमब्भहिए वा, संखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जगुणमब्भहिए वा । से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी°, सिय विसमजोगी । एवं जाव वेमाणियाणं ।।

जोग-पदं

६. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—१ सच्चमणजोए २. मोसमण-

---

१. किं विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता) ।
२. आहारओ (अ,ख); आहाराओ (क,व,म) ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सिय ।

जोए[1] ३ सच्चामोसमणजोए ४. असच्चामोसमणजोए ५. सच्चवइजोए ६. मोसवइजोए ७ सच्चामोसवइजोए ८ असच्चामोसवइजोए ९. ओरालियसरीरकायजोए १०. ओरालियमीसासरीरकायजोए ११. वेउव्वियसरीरकायजोए १२ वेउव्वियमीसासरीरकायजोए १३. आहारगसरीरकायजोए १४ आहारगमीसासरीरकायजोए १५ कम्मासरीरकायजोए ॥

७ एयस्स[2] णं भंते ! पण्णरसविहस्स जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवे कम्मासरीरस्स[4] जहण्णए जोए २ ओरालियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३. वेउव्वियमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ४ ओरालियसरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ५. वेउव्वियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ६. कम्मासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ७ आहारगमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८. तस्स चेव उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ९,१० ओरालियमीसगस्स, वेउव्वियमीसगस्स य—एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हवि तुल्ले असखेज्जगुणे ११. असच्चामोसमणजोगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १२. आहारासरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १३-१९ तिविहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स—एएसि ण सत्तण्ह वि तुल्ले जहण्णए जोए असखेज्जगुणे २०. आहारासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २१-३०. ओरालियसरीरस्स, वेउव्वियसरीरस्स, चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स—एएसि ण दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

दव्व-पदं

९. कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदव्वा य, अजीवदव्वा य ॥

१०. अजीवदव्वा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. असच्चमणजोए । (अ, क, व, म) ।
२. तस्स (क) ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. कम्मग° (क, ख, व, म); कम्मसरीरगस्स (ता) ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य ॥

११ [1]•अरूविअजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१२. रूविजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउविहा पण्णत्ता, तं जहा—खधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोग्गले ॥

१३. ते ण भते ! कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१४. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ?
गोयमा ! अणता परमाणुपोग्गला, अणता दुपदेसिया खंधा जाव अणता दसपदेसिया खधा, अणता सखेज्जपदेसिया खधा, अणता असखेज्जपदेसिया खधा, अणंता अणतपदेसिया खंधा।° से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ते ण नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

१५. जीवदव्वा णं भंते ! कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ? नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ--जीवदव्वा णं नो संखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता ?
गोयमा ! असखेज्जा नेरइया जाव असखेज्जा वाउक्काइया, अणंता वणस्सइ-काइया, असंखेज्जा बेंदिया, एवं जाव वेमाणिया, अणता सिद्धा। से तेणट्ठेणं जाव अणंता ॥

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७ जीवदव्वाणं भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीव-दव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

१८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[2]—•जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

१. स० पा०—एव एएण अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से।
२. स० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छति।

हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए॰ हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वा णं अजीवदव्वे परियादियति परियादिइत्ता ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयग कम्मग, सोइंदिय जाव फासिंदिय, मणजोग वइजोग कायजोग, आणापाणुत्तं[1] च निव्वत्तयति। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ —जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए॰ हव्वमागच्छति ॥

१९. नेरइयाण भंते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए[3] हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥

२० से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइया अजीवदव्वे परियादियति, परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-कम्मग, सोइंदिय जाव फासिंदिय, (मणजोग वइजोग कायजोग ?)[4] आणापाणुत्त च निव्वत्तयति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति। एव जाव वेमाणिया, नवर—सरीरइंदियजोगा भाणियव्वा जस्स जे अत्थि।

अवगाह-पदं

२१. से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणताइ दव्वाइ आगासे भइयव्वाइ ?
हता गोयमा ! असखेज्जे लोए[5] •अणताइं दव्वाइ आगासे॰ भइयव्वाइ ॥

पोग्गलाण चयादि-पदं

२२. लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसिं पोग्गला चिज्जति ?
गोयमा ! निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसि, सिय पचदिसिं ॥

२३. लोगस्स णं भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोग्गला छिज्जति ? एवं चेव। एवं उवचिज्जति, एव अवचिज्जति ॥

---

१. आणापाणत्त (अ)।
२. स॰ पा॰—तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छति।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु पूर्वसूत्रानुसारेण असौ युज्यते।
५. सं॰ पा॰—लोए जाव भइयव्वाइं।

पोग्गलगहण-पदं

२४. जीवे णं भंते ! जाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइ गेण्हइ ?
गोयमा ! ठियाइ पि गेण्हइ, अट्ठियाइं पि गेण्हइ ॥

२५ ताइ भंते ! कि दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ। ताइ दव्वओ अणतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइ—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[1] निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि ॥

२६. जीवे ण भते ! जाइं दव्वाइ वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ? एव चेव, नवरं—नियम छद्दिसि। एवं आहारगसरीरत्ताए वि ॥

२७. जीवे ण भते ! जाइं दव्वाइ तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—पुच्छा।
गोयमा ! ठियाइ गेण्हइ, नो अट्ठियाइ गेण्हइ। सेसं जहा ओरालियसरीरस्स। कम्मगसरीरे एव चेव। एव जाव भावओ वि गेण्हइ ॥

२८. जाइ दव्वाइं दव्वओ गेण्हइ ताइ कि एगपदेसियाइं गेण्हइ ? दुपदेसियाइ गेण्हइ ? एव जहा भासापदे जाव[2] आणुपुव्वि गेण्हइ, नो अणाणुपुव्वि गेण्हइ ॥

२९. ताइ भते ! कतिदिसि गेण्हइ ?
गोयमा ! निव्वाघाएण जहा ओरालियस्स ॥

३०. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ सोइंदियत्ताए गेण्हइ ०? जहा वेउव्वियसरीर। एवं जाव जिब्भिदियत्ताए। फासिदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं। मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीर, नवरं—नियम छद्दिसि। एवं वइजोगत्ताए वि। कायजोगत्ताए[3] जहा ओरालियसरीरस्स ॥

३१. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ ०? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पंचदिसि ॥

३२. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥[4]

---

१. प० २८।१।

२. प० ११।

३. कायजोगत्ताए वि (क, स)।

४. त्ति केइ चउवीसदंडएण एताणि पदाणि भण्णति जस्स ज अत्थि (अ, क, ख, ता, व, म, स); असौ पाठ. वाचनान्तराभिधायकोस्ति। उद्देशकपूर्तौ लिखितस्यास्य मूले प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते।

तइओ उद्देसो

संठाण-पदं

३३. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले, वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयते, अणित्थंथे ॥

३४. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३५. वट्टा णं भंते ! संठाणा ०? एवं चेव । एवं जाव अणित्थंथा । एवं पएसट्ठयाए वि । 'एवं दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए वि'[1] ॥

३६ एएसि णं भंते ! परिमंडल-वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-अणित्थंथाणं संठाणाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] ●अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमंडलसंठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, चउरंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, आयता संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । दव्वट्ठपएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्ठयाए, सो चेव दव्वट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणित्थंथेहिंतो संठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥

रयणप्पभादिसंदब्भे संठाण-पदं

३७. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले जाव आयते ॥

३८. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३९. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?

---

१. X (अ, क, ता, व, म, स) । २ सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

४१. वट्टा णं भंते ! संठाणा कि संखेज्जा ०? एव चेव । एव जाव आयता ।।

४२. सक्करप्पभाए णं भते ! पुढवीए परिमडला सठाणा ०? एव चेव । एवं जाव आयता । एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

४३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिमडला सठाणा ०? एवं जाव अच्चुए ।।

४४. गेवेज्जविमाणे णं भते ! परिमडला सठाणा० ? एवं चेव । एवं अणुत्तरविमाणेसु वि । एवं ईसिपब्भाराए वि ।।

४५. जत्थ णं भंते ! एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

४६. वट्टा णं भंते ! सठाणा कि सखेज्जा० ? एवं चेव । एव जाव आयता ।।

४७. जत्थ णं भंते ! एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा० ? एवं चेव । वट्टा सठाणा एवं चेव । एवं जाव आयता । एव एक्केक्केणं संठाणेण पंच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेण'[1] ।।

४८. जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमंडले सठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमडला संठाणा कि सखेज्जा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।

४९. वट्टा ण भंते ! सठाणा कि संखेज्जा० ? एवं चेव । एव जाव आयता ।।

५०. जत्थ णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा कि संखेज्जा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता । वट्टा सठाणा एव चेव । एव जाव आयता । एवं पुणरवि एक्केक्केणं सठाणेण पच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेणं । एव जाव अहेसत्तमाए । एव कप्पेसु वि जाव ईसीपब्भाराए पुढवीए ।।

पएसावगाहतो सठाणनिरूवण-पदं

५१. वट्टे णं भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! वट्टे संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणवट्टे य, पतरवट्टे य ।
तत्थ णं जे से पतरवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पचपदेसिए पचपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे ।

---

१. × (अ, क, व, म, स) ।

तत्थ ण जे से घणवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तपदेसिए सत्तपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण वत्तीसपदेसिए वत्तीसपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

५२ तसे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तसे ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा---घणतसे य, पतरतसे य।
तत्थ णं जे से पतरतसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण तिपदेसिए तिपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते।
तत्थ ण जे से घणतसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पणतीसपदेसिए पणतीसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[1]। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं चउप्पदेसिए चउप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] ॥

५३. चउरसे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए---पुच्छा।
गोयमा ! चउरसे संठाणे दुविहे पण्णत्ते,[3] °त जहा---घणचउरसे य, पतरचउरसे य।
तत्थ ण जे से पतरचउरसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य°। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं नवपदेसिए नवपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण चउपदेसिए चउपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[4]।
तत्थ णं जे से घणचउरसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तावीसइपदेसिए सत्तावीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[5]। तत्थ ण जे से

---

१. त चेव (अ, ख, ता, व, म, स)।
२. त चेव (अ, ख, व, म, स), एव चेव (ता)।
३. स० पा०—भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ।
४ त चेव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं अट्ठपदेसिए अट्ठपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणंत-पदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[1] ॥

५४. आयते ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! आयते णं सठाणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सेढिआयते, पतरायते, घणायते ।
तत्थ ण जे से सेढिआयते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[3] ।
तत्थ ण जे से पतरायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पण्णरसपदेसिए पण्णरसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[4] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[5] ।
तत्थ ण जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[6] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[7] ॥

५५. परिमडले ण भंते ! संठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमंडले ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणपरिमडले य, पतरपरिमंडले य ।
तत्थ णं जे से पतरपरिमडले से जहण्णेण वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[8] ।
तत्थ णं जे से घणपरिमडले से जहण्णेण चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६. परिमंडले ण भते ! संठाणे दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे[9] ? कलिओए ?

१. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. तहेव (अ, क, ख, ता ब, म, स) ।
४,५. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६,७. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।
९. बादरजुम्मे (अ, क, ख, ता म) सर्वत्र ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए[1] ।।

५७ वट्टे ण भते ! संठाणे दव्वट्ठयाए० ? एवं चेव । एवं जाव आयते ।।

५८. परिमडला ण भते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव आयता ।।

५९. परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे । एवं जाव आयते ।।

६०. परिमडला ण भंते ! सठाणा पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि । एवं जाव आयता ।।

६१. परिमडले ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ।।

६२ वट्टे ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ।।

६३. तंसे णं भंते ! सठाणे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ।।

६४. चउरसे ण भते ! संठाणे० ? जहा वट्टे तहा चउरसे वि ।।

६५ आयते णं भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ।।

६६. परिमडला ण भते ! संठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ।।

६७. वट्टा ण भते ! सठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

---

१. कलिओदे (ता) ।

६८. तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि । चउरंसा जहा वट्टा ।।

६९. आयता णं भंते ! सठाणा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

७०. परिमडले ण भंते ! संठाणे कि कडजुम्मसमयठितीए[1] ? तेयोगसमयठितीए ? दावरजुम्मसमयठितीए ? कलियोगसमयठितीए ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयठितीए जाव सिय कलियोगसमयठितीए । एव जाव आयते ।।

७१. परिमंडला णं भते ! संठाणा कि कडजुम्मसमयठितीया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयठितीया जाव सिय कलियोगसमयठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयठितीया वि जाव कलियोगसमयठितीया वि । एवं जाव आयता ।।

७२. परिमंडले णं भते ! सठाणे कालवण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मे । एव एएण अभिलावेणं जहेव ठितीए । एवं नीलवण्णपज्जवेहि[2] । एवं पचहि वण्णेहि, दोहि गंधेहि, पचहि रसेहि, अट्ठहि फासेहि जाव लुक्खफासपज्जवेहि ।।

सेढि-पद

७३. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए कि सखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?
गोयमा ! नो सखेज्जाओ, नो असखेज्जाओ, अणताओ ।।

७४. पाईणपडीणायताओ[3] ण भते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए कि सखेज्जाओ० ? एव चेव । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । एव उड्ढमहायताओ वि ।।

७५. लोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ ? असखेज्जाओ ? अणताओ ?
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ।।

७६ पाईणपडीणायताओ ण भंते ! लोगागाससेढीओ दव्वट्ठयाए कि संखेज्जाओ० ? एवं चेव । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

---

१. ०ट्ठितिए (अ, ब, म) ।
२. नीलावण्ण ०(क, ख, ब) ।
३. पादीण० (ख); पातीणपडिणताओ (ता) ।

७७. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?'[1]
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

७८. सेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव[2] उड्ढमहायताओ वि । सव्वाओ अणंताओ ।।

७९. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणंताओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि । दाहिणुत्तरायताओ वि एवं चेव । उड्ढमहायताओ[3] नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ।।

८०. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ।।

८१ पाईणपडीणायताओ णं भंते ! अलोगागाससेढीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि ।।

८२. उड्ढमहायताओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ।।

८३ सेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ ? सादीयाओ अपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ सपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ?
गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव उड्ढमहायताओ ।।

८४ लोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव उड्ढमहायताओ ।।

८५. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एवं चेव, नवरं—नो सादीयाओ

---

१. पुच्छा (क, ता, ब, म) ।
२. एवं जाव (क, ब) ।
३. ०ताओ वि (अ, स) ।

सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ। सेसं तं चेव। उड्ढमहायताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो॥

८६. सेढीओ णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ। लोगागाससेढीओ एव चेव। एवं अलोगागाससेढीओ वि॥

८७. सेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ०? एवं चेव। एव जाव उड्ढमहायताओ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा॥
गोयमा! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि॥

८९. उड्ढमहायताओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ। एव पाईणपडीणायताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। उड्ढमहायताओ वि एव चेव, नवर—नो कलियोगाओ। सेसं तं चेव॥

९१. कति णं भंते! सेढीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पदं

९२. परमाणुपोग्गलाणं[1] भंते! कि अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
गोयमा! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति॥

९३. दुपएसियाण भते! खधाण अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
एवं चेव। एव जाव अणंतपदेसियाण खंधाणं॥

९४. नेरइयाणं भते! कि अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति? एवं चेव। एव जाव वेमाणियाण॥

निरयावास-पदं

९५. इमीसे णं भते! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता?

---

१. ०पुग्गलाणं (अ)।

गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

९६. कतिविहे ण भते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, त जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७ से कि त आयारो ? आयारे ण समणाण निग्गथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जति, एव अगपरूवणा भाणियव्वा जहा नदीए जाव[4]—

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि ण भते ! नेरइयाणं जाव देवाण सिद्धाण य पचगतिसमासेण कयरे कयरेहितो [5]•अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?०
गोयमा ! अप्पावहुय जहा[6] वहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पावहुग[7] च ॥

९९. एएसि ण भते ! सइदियाणं, एगिदियाण जाव अणिदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एय पि जहा वहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पय भाणियव्वं, सकाइयअप्पावहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि ण भंते ! जीवाण पोग्गलाण[10] •अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपदेसाणं० सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा वहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एएसि णं भते ! जीवाण, आउयस्स कम्मस्स बधगाण अवधगाणं ? जहा वहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अवंधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१ भ० १।२१२-२१५ ।
२ एगा अणु० (अ) ।
३. भ० २०।७५ ।
४. नदी सू० ८१-१२७ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. प० ३ ।
७. °समासप्पा० (ता, ब, म) ।
८. सकायअप्पा० (व) ।
९. प० ३ ।
१० सं० पा०—पोग्गलाण जाव सव्वपज्जवाण । अस्य पूर्ति प्रज्ञापनायाः तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिद दृश्यं—'समयाण दव्वाण पएसाण' ति ।
११. प० ३ ।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

१०३. कति णं भंते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव[1] कलियोगे ।।

१०४. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एवं जहा अट्ठारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव[2] से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ ।।

१०५. नेरइयाण भंते ! कति जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

१०६. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे ? अट्ठो तहेव । एवं जाव वाउकाइयाणं ।।

१०७. वणस्सइकाइयाण भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ।।

१०८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं त चेव । बेदियाणं जहा नेरइयाणं । एवं जाव वेमाणियाणं । सिद्धाणं जहा वणस्सइकाइयाणं ।।

१०९. कतिविहा ण भंते ! सव्वदव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ।।

११०. धम्मत्थिकाए णं भंते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एव अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि ।।

१११. जीवत्थिकाए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ।।

११२. पोग्गलत्थिकाए ण भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ।।

११३. धम्मत्थिकाए ण भंते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एव जाव अद्धासमए ।।

---

१. भ० २५।५४ । २. भ० १८।९० ।

११४ एएसि णं भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ठ-याए ०? एएसि ण अप्पावहुगं जहा[1] बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेस ॥

११५ धम्मत्थिकाए ण भते ! कि ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ॥

११६. जइ ओगाढे किं सखेज्जपदेसोगाढे ? असंखेज्जपदेसोगाढे ? अणंतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो संखेज्जपदेसोगाढे, असखेज्जपदेसोगाढे, नो अणंतपदेसोगाढे ॥

११७. जइ असखेज्जपदेसोगाढे किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि । जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धासमए एव चेव ॥

११८ इमा ण भते ! रयणप्पभा पुढवी कि ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्म-त्थिकाए । एव जाव अहेसत्तमा । सोहम्मे एव चेव । एव जाव ईसिपब्भारा पुढवी ॥

११९. जीवे णं भते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं नेरइए वि । एवं जाव सिद्धे ॥

१२०. जीवा ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१२१ नेरइया ण भते ! दव्वट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव सिद्धा ॥

१२२. जीवे ण भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलि-योगे । सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव जाव वेमाणिए ॥

१२३. सिद्धे णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१२४ जीवा णं भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय

---

१. प० ३ ।

कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव नेरइया वि। एवं जाव वेमाणिया॥

१२५. सिद्धा ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा॥

१२६. जीवे ण भते! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे। एव जाव सिद्धे॥

१२७. जीवा ण भते! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि॥

१२८. नेरइयाण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि। एवं 'एगिदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि'[1]। सिद्धा एगिदिया य जहा जीवा॥

१२९. जीवे ण भते! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए, नो कलियोगसमयट्ठितीए॥

१३०. नेरइए ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। एव जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे॥

१३१. जीवा ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोगसमयट्ठितीया, नो दावरजम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया॥

१३२. नेरइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया वि; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। एव जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा॥

१३३. जीवे ण भते! कालावण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे। सरीरपदेसे

---

१. एगिदियेवज्जा जाव (क, ता, ब)।

पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति ॥

१३४. जीवा ण भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा। सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं जाव वेमाणिया। एव नीलावण्णपज्जवेहि दडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेण। एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं[1] ॥

१३५. जीवे ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं कि कडजुम्मे - पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए ॥

१३६. जीवा ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि— पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिया। एव सुयनाणपज्जवेहिं[2] वि। ओहिनाणपज्जवेहि वि एव चेव, नवर—विगलिंदियाण नत्थि ओहिनाण। मणपज्जवनाण पि एवं चेव, नवर—जीवाण मणुस्साण य, सेसाण नत्थि ॥

१३७. जीवे णं भते ! केवलनाणपज्जवेहिं कि कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। एव मणुस्से वि। एव सिद्धे वि ॥

१३८. जीवा ण भते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। एव मणुस्सा वि। एव सिद्धा वि ॥

१३९. जीवे ण भते ! मइअण्णाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे० ? जहा आभिणिवोहियनाणपज्जवेहिं तहेव दो दडगा। एवं सुयअण्णाणपज्जवेहि वि। एव विभगनाणपज्जवेहि वि। चक्खुदसण-अचक्खुदसण-ओहिदंसणपज्जवेहिं वि एव चेव, नवरं—जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं। केवलदसणपज्जवेहिं जहा केवलनाणपज्जवेहिं ॥

सरीर-पदं

१४०. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए जाव कम्मए। एत्थ सरीरगपद निरवसेसं भाणियव्वं जहा[3] पण्णवणाए ॥

१. लुक्खाफास० (ता)।
२. ०पज्जवेहि (ता, स)।
३. प० १२।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा णं भंते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ॥

१४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'संसारसमावण्णगा य, असंसार-समावण्णगा'[1] य। तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा। सिद्धा णं दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसिद्धा य, परंपरसिद्धा य। तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते णं निरेया। तत्थ णं जे ते अणंतरसिद्धा ते णं सेया ॥

१४३. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया। तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य। तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं निरेया, तत्थ णं जे ते असेलेसीपडिवण्णगा ते णं सेया ॥

१४४. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि। से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि,° निरेया वि ॥

१४५. नेरइया णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ॥

१४६. से केणट्ठेणं जाव सव्वेया वि ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य, अविग्गहगतिसमावण्णगा य। तत्थ णं जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते णं सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया। से तेणट्ठेणं जाव सव्वेया वि। एवं जाव वेमाणिया ॥

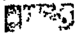
पोग्गल-पदं

१४७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता। एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा ॥

१४८. एगपदेसोगाढा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? एवं चेव। एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढा ॥

---

१. असंसारसमावण्णगा य संसार° (ता)।   २. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव निरेया।



१४९ एगसमयट्ठितीया ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव असखेज्जसमयट्ठितीया ॥

१५० एगगुणकालगा ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव अणंत-गुणकालगा। एव अवसेसा वि वण्णगधरसफासा नेयव्वा जाव अणतगुण-लुक्ख त्ति ॥

१५१ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया[1] ?

गोयमा ! दुपदेसिएहितो खधेहितो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५२ एएसि णं भते ! दुपदेसियाण तिपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया ?

गोयमा ! तिपदेसिएहितो खधेहितो दुपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया। एव एएण गमएण जाव दसपदेसिएहिंतो खधेहितो नवपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५३. एएसि ण भते ! दसपदेसियाण—पुच्छा।

गोयमा ! दसपदेसिएहिंतो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५४. एएसि णं भते ! सखेज्जपदेसियाण—पुच्छा।

गोयमा ! सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५५. एएसि णं भते ! असखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा।

गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ॥

१५६ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया ?

गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया। एव एएणं गमएणं जाव नवपदेसिएहितो खधेहिंतो दसपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया। एवं सव्वत्थ[2] पुच्छियव्वं। दसपदेसिएहितो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया। सखेज्जपदेसिएहिंतो खधेहिंतो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१५७. एएसि ण भते ! असंखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा।

गोयमा ! अणंतपदेसिएहिंतो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए वहुया ॥

---

१. अप्पा वा वहुया वा (स)। २. सव्वत्थ वि (म)।

१५८. एएसि णं भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] विसेसाहिया[2] ?
गोयमा ! दुपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहिंतो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एव एएण गमएणं तिपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहितो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया। सखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया। पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ॥

१५९. एएसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[3] ?
गोयमा ! एगपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। एव जाव नवपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया। संखेज्जपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया ॥

१६०. एएसि ण भते ! एगसमयट्ठितीयाण दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि ॥

१६१ एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाण दुगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
एएसि ण जहा परमाणुपोग्गलादीण तहेव वत्तव्वया निरवसेसा[4]। एवं सव्वेसि वण्ण-गध-रसाणं ॥

१६२. एएसि ण भंते ! एगगुणकक्खडाण दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो विसेसाहिया[5] ?
गोयमा ! एगगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एव जाव नवगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। सखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। असखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। एवं पदेसट्ठयाए वि[6]। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। जहा कक्खडा एव मउय-गरुय-लहुया वि। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा।

---

१. कयरेहिंतो जाव (ता, स)।
२. विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स)।
४. निरवसेस (अ, ता)।
५. जाव विसेसाहिया (ता)।
६. × (अ)।

१६३ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं, अणंतपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिथा खधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, 'ते चेव'[2] पदेसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६४ एएसि णं भते ! एगपदेसोगाढाण, सखेज्जपदेसोगाढाण, असंखेज्जपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए— सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६५ एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं, सखेज्जसमयट्ठितीयाण, असंखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण० ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्वं अप्पावहुग ॥

१६६. एएसि णं भते ! एगगुणकालगाण, सखेज्जगुणकालगाण, असंखेज्जगुणकालगाणं, अणतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एएसिं जहा परमाणुपोग्गलाण अप्पावहुग तहा एएसिं पि अप्पावहुगं। एव सेसाण वि वण्ण-गध-रसाणं ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। ३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. तेच्चेव (ता)।

१६७. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं, संखेज्जगुणकक्खडाणं, असंखेज्जगुणकक्खडाणं, अणंतगुणकक्खडाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा। पदेसट्ठयाए एवं चेव, नवरं—संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। सेसं तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए। संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा। एवं मउय-गरुय-लहुयाण वि अप्पाबहुयं। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाणं जहा वण्णाणं तहेव॥

१६८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे ? तेयोए ? दावरजुम्मे ? कलियोगे ?

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे। एवं जाव अणंतपदेसिए खंधे॥

१६९. परमाणुपोग्गला णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा।

गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा॥

१७०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे॥

१७१. दुपदेसिय—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७२. तिपदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७३. चउप्पदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। पंचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। छप्पदेसिए जहा दुप्पदेसिए। सत्तपदेसिए जहा

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

तिपदेसिए। अट्ठपदेसिए जहा चउप्पदेसिए। नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। दसपदेसिए जहा दुप्पदेसिए ॥

१७४. सखेज्जपदेसिए ण भते! पोग्गले—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव असखेज्जपदेसिए वि, अणतपदेसिए वि ॥

१७५ परमाणुपोग्गला णं भते! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१७६ दुप्पदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, नो तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७७ तिपदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७८ चउप्पदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। पंचपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। छप्पदेसिया जहा दुप्पदेसिया। सत्तपदेसिया जहा तिपदेसिया। अट्ठपदेसिया जहा चउपदेसिया। नवपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥

१७९ सखेज्जपदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं असखेज्जपदेसिया वि, अणतपदेसिया वि ॥

१८० परमाणुपोग्गले ण भते! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८१. दुपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८२. तिपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८३. चउप्पदेसिए ण—पुच्छा।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणतपदेसिए ।।

१८४. परमाणुपोग्गला णं भंते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ।।

१८५. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा. नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

१८६. तिप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

१८७. चउप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं जाव अणतपदेसिया ।।

१८८. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव अणतपदेसिए ।।

१८९. परमाणुपोग्गला णं भते ! कि कडजुम्म—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठिनीया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ।।

१९०. परमाणुपोग्गले णं भते ! कालावण्णपज्जवेहिं कि कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एव वण्णेसु वि सव्वेसु । गधेसु वि एव चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ।।

१९१. अणंतपदेसिए ण भंते ! खधे कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ।।

१९२. अणतपदेसिया ण भंते ! खधा कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ।।

१९३. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सड्ढे ? अणड्ढे ?
गोयमा नो सड्ढे, अणड्ढे ॥

१९४ दुपदेसिए णं—पुच्छा।
गोयमा ! सड्ढे, नो अणड्ढे। तिपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। चउपदेसिए जहा दुपदेसिए। पचपदेसिए जहा तिपदेसिए। छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए। सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए। अट्ठपदेसिए जहा दुपदेसिए। नवपदेसिए जहा तिपदेसिए। दसपदेसिए जहा दुपदेसिए ॥

१९५. सखेज्जपदेसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय सड्ढे, सिय अणड्ढे। एवं असखेज्जपदेसिए वि। एव अणंतपदेसिए वि ॥

१९६. परमाणुपोग्गला ण भते ! कि सड्ढा[1] ? अणड्ढा ?
गोयमा ! सड्ढा वा, अणड्ढा वा। एव जाव अणतपदेसिया ॥

१९७ परमाणुपोग्गले ण भते ! कि सेए ? निरेए ?
गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए। एव जाव अणंतपदेसिए ॥

१९८. परमाणुपोग्गला ण भते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! सेया वि, निरेया वि। एव जाव अणतपदेसिया ॥

१९९. परमाणुपोग्गले ण भते ! सेए कालओ केवच्चिर[2] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२००. परमाणुपोग्गले ण भते ! निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं काल। एव जाव अणतपदेसिए ॥

२०१. परमाणुपोग्गला ण भते ! सेया कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२०२ परमाणुपोग्गला ण भते ! निरेया कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध। एवं जाव अणतपदेसिया ॥

२०३. परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! सेयस्स केवतिय काल अतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल। परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं ॥

२०४. निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभाग। परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं ॥

---

१. साढा (ख, ता)। २. केवचिर (अ, क, ख, म)।

२०५. दुपदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स सेयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं ॥

२०६. निरेयस्स केवतिय कालं अंतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइभागं। परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं। एवं जाव अणंतपदेसियस्स ॥

२०७. परमाणुपोग्गलाणं भते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतर होइ ?
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

२०८. निरेयाणं केवतियं काल अंतरं होइ ?
गोयमा ! नत्थि अतरं। एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाण ॥

२०९. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असंखेज्जगुणा। एव जाव असखेज्जपदेसियाणं खंधाणं ॥

२१०. एएसि णं भंते ! अणंतपदेसियाणं खंधाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा ॥

२११ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असखेज्जपदेसियाणं, अणतपदेसियाण य खधाण सेयाण निरेयाण य दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ३ परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणत-गुणा ४. सखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ५. असखेज्ज-पदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्ज-गुणा[4] ८. असंखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए एव चेव, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा। सखेज्जपदेसिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। सेस तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए— १. सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए २. ते चेव पदेसट्ठयाए

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाय विसेसाहिया।
४. असंखेज्जगुणा (ख, ता)।

अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ५. परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा ६ संखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १० परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ११ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ असंखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्ज-गुणा ॥

२१२. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि देसेए ? सव्वेए ? निरेए ?
गोयमा ! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेए ॥

२१३ दुपदेसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिए निरेए । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

२१४. परमाणुपोग्गला ण भते ! किं देसेया ? सव्वेया ? निरेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि ॥

२१५ दुपदेसिया णं भते ! खंधा—पुच्छा ।
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

२१६ परमाणुपोग्गले ण भते ! सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥

२१७ निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं असखेज्ज काल ॥

२१८. दुपदेसिए ण भते ! खधे देसेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभाग ॥

२१९. सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२२० निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असंखेज्ज काल । एवं जाव अणत-पदेसिए ॥

२२१ परमाणुपोग्गला णं भते ! सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२२२. निरेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्ध ॥

२२३ दुप्पदेसिया णं भते ! खंधा देसेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्धं ॥

२२४. सव्वेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्ध ॥

२२५. निरेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्धं । एवं जाव अणंतपदेसिया ।।

२२६ परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सव्वेयस्स केवतिय काल अंतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण असंखेज्जं कालं ।
परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एव चेव ।।

२२७. निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइ-भागं । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण असखेज्जं काल ।।

२२८. दुपदेसियस्स ण भंते ! खंधस्स देसेयस्स केवतियं काल अतरं होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं असखेज्ज कालं । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं कालं ।।

२२९. सव्वेयस्स केवतिय काल अतर होइ ? एव चेव जहा देसेयस्स ।।

२३०. निरेयस्स केवतिय काल अतरं होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ-भागं । परट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण अणतं कालं । एवं जाव अणतपदेसियस्स ।।

२३१. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सव्वेयाण केवतियं कालं अंतर होइ ? 'नत्थि अंतर'[1] ।।

२३२. निरेयाणं केवतिय कालं अतरं होइ ? नत्थि अंतरं ।।

२३३. दुपदेसियाणं भंते ! खधाण देसेयाणं केवतियं काल अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ।।

२३४. सव्वेयाण केवतिय काल अतर होइ ? नत्थि अतर ।।

२३५. निरेयाण केवतियं काल अंतर होइ ? नत्थि अतर । एव जाव अणतपदेसि-याण ।।

२३६. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सव्वेयाण निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असखेज्जगुणा ।।

२३७. एएसि ण भंते ! दुपदेसियाण खधाण देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खधा सव्वेया, देसेया असखेज्जगुणा, निरेया असखेज्जगुणा । एव जाव असखेज्जपदेसियाण खधाण ।।

२३८. एएसि ण भंते ! अणंतपदेसियाण खधाणं देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य

---

१. नत्थतर (अ, क, ख, ता, म) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया, निरेया अणंतगुणा, देसेया अणंतगुणा ॥

२३९. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपदेसियाणं असंखेज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाण य खंधाणं देसेयाणं, सव्वेयाणं, निरेयाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३ अणंतपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४ असंखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ५ संखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७. संखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८ असंखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ११ असंखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया। एवं पदेसट्ठयाए वि, नवरं—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा। संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। सेसं तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए —१ सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ३ अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४ ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ५. अणंतपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ६ ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ७. असंखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ८. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९ संखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा[3] ११ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२ संखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३ ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४ असंखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १५. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १७. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। ३. संखेज्जगुणा (ता)।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

१८. ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा १९. असंखेज्जपदेसिया निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा २०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ।।

मज्झपदेसा-पदं

२४०. कति णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ।।

२४१. कति ण भंते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ।।

२४२. कति णं भते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ।।

२४३. कति ण भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ।।

२४४. एए णं भते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा कतिसु आगासपदेसेसु ओगाहंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कंसि वा दोहिं वा तीहिं वा चउहिं वा पंचहिं वा छहिं वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु ।।

२४५. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

पंचमो उद्देसो

पज्जव-पदं

२४६. कतिविहा ण भते ! पज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य, अजीवपज्जवा य । पज्जवपदं[1] निरवसेसं भाणियव्वं जहा[2] पण्णवणाए ।।

काल-पदं

२४७ आवलिया णं भते ! कि सखेज्जा समया ? असखेज्जा समया ? अणंता समया ?
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, नो अणता समया ।।

२४८. आणापाणू णं भंते ! कि सखेज्जा० ? एवं चेव ।।

---

१. जीवपय (अ) । २. प० ५ ।

गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ आवलियाओ, सिय अणंताओ आवलियाओ। एव जाव उस्सप्पिणीओ ॥

२६०. पोग्गलपरियट्टा णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ ॥

२६१ थोवे णं भते ! कि संखेज्जाओ आणापाणूओ ? असंखेज्जाओ० ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा। एव एतेण गमएण जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥

२६२ सागरोवमे ण भते ! कि सखेज्जा पलिओवमा ?—पुच्छा।
गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, नो अणंता पलिओवमा। एव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६३. पोग्गलपरियट्टे ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा। एव जाव सव्वद्धा ॥

२६४. सागरोवमा ण भंते ! कि सखेज्जा पलिओवमा—पुच्छा।
गोयमा ! सिय सखेज्जा पलिओवमा, सिय असखेज्जा पलिओवमा, सिय अणता पलिओवमा। एव जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६५. पोग्गलपरियट्टा ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा ॥

२६६. ओसप्पिणी ण भते ! कि सखेज्जा सागरोवमा० ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि ॥

२६७. पोग्गलपरियट्टे ण भते ! कि सखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। एवं जाव सव्वद्धा ॥

२६८. पोग्गलपरियट्टा ण भते ! कि सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥

२६९. तीतद्धा णं भते ! कि सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अणता पोग्गलपरियट्टा। एव अणागयद्धा वि। एव सव्वद्धा वि ॥

२७०. अणागयद्धा ण भते ! कि संखेज्जाओ तीतद्धाओ ? असखेज्जाओ० ? अणताओ० ?

गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ। अणागयद्धा ण तीतद्धाओ समयाहिया, तीतद्धा ण अणागयद्धाओ समयूणा ।।

२७१ सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ तीतद्धाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ। सव्वद्धा ण तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा ण सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ।।

२७२. सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ अणागयद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणंताओ अणागयद्धाओ। सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा। अणागयद्धा ण सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ।।

निगोद-पदं

२७३ कतिविहा ण भते ! निओदा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा निओदा पण्णत्ता, त जहा—निओयगा य, निओयगजीवा य ।।

२७४. निओदा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमनिगोदा[2] य, बायरनिओदा[3] य। एव निओदा भाणियव्वा जहा[4] जीवाभिगमे तहेव निरवसेस ।।

नाम-पदं

२७५ कतिविहे ण भते ! नामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे नामे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए जाव[5] सण्णिवाइए ।।

२७६. से कि तं ओदइए नामे ?
ओदइए नामे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उदए य, उदयनिप्फण्णे य—एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इह वि, नवरं—इमं नामनाणत्त,[6] सेस तहेव जाव[7] सण्णिवाइए ।।

२७७ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. नियोया (अ, ता)।
२. सुहुमा नि० (ता)।
३ बातरनि० (क), बादरा नि० (ता)।
४. जी० ५।२।
५. भ. १७।१६।
६. नाणत्त (अ, ख, ता, ब, म, स)।
७. भ० १७।१७।

छट्ठो उद्देसो

१. पण्णवण २. वेद ३. रागे, ४. कप्प ५. चरित्त ६. पडिसेवणा ७. नाणे।
८. तित्थे ९. लिंग १०. सरीरे, ११. खेत्ते १२. काल १३. गइ १४. सजम
१५. निकासे ॥१॥
१६,१७. जोगुवओग १८. कसाए, १९. लेसा २०. परिणाम २१ 'बध
२२ वेदे य'[1]।
२३. कम्मोदीरण २४. उवसंपजहण्ण, २५. सण्णा य २६. आहारे ॥२॥
२७. भव २८. आगरिसे ,२९,३०. कालतरे य ३१. समुग्घाय ३२ खेत्त
३३ फुसणा य।
३४. भावे ३५ परिमाणे[2] खलु[3], ३६, अप्पाबहुय नियठाण ॥३॥

पण्णवण-पदं

२७८ रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! नियंठा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच नियंठा पण्णत्ता, त जहा—पुलाए, बउसे, कुसीले, नियठे, सिणाए॥

२७९. पुलाए णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपुलाए, दसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नाम पचमे ॥

२८०. बउसे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे नामं पचमे ॥

२८१. कुसीले ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य ॥

२८२. पडिसेवणाकुसीले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपडिसेवणाकुसीले, दसणपडिसेवणाकुसीले, चरित्तपडिसेवणाकुसीले, लिगपडिसेवणाकुसीले, अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले नाम पचमे ॥

२८३. कसायकुसीले णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणकसायकुसीले, दंसणकसायकुसीले, चरित्तकसायकुसीले, लिगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले नामं पंचमे ॥

---

१. बधणे वेदे (ता, ब)।
२. परिणामे (अ, स)।
३. या (ता)।

२८४ नियठे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयनियठे, अपढमसमयनियठे, चरिमसमयनियठे[1], अचरिमसमयनियठे, अहासुहुमनियठे नाम पचमे ॥

२८५ सिणाए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छवी, असवले, अकम्मसे, ससुद्धनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली[2], अपरिस्सावी[3] ॥

वेद-पदं

२८६ पुलाए ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८७ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुसग-वेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा ॥

२८८. वउसे ण भते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८९ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ?
गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

२९० कसायकुसीले ण भते ! किं सवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ॥

२९१. जइ अवेदए कि उवसतवेदए ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥

२९२ जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वि जहा बउसो ॥

---

१. चरम° (स) ।

२. उत्तराध्ययनेषु त्वर्हन् जिन केवलीत्यय पञ्चमो भेद उक्त । अपरिश्रावीति तु नाधीतमेव, इह चावस्थाभेदेन भेदो न केनचिद् वृत्तिकृतेहान्यत्र च ग्रन्थे व्याख्यात-स्तत्र चैवं सभावयाम —शब्दनयापेक्षयैतेषा भेदो भावनीय शक्रपुरन्दरावदिति (वृ), स्थानाङ्गवृत्तौ भाष्योल्लेखपूर्वकमेतच्चर्चित-मस्ति—निष्क्रियत्वात् सकलयोगनिरोधे अपरिश्रावीति पञ्चम, क्वचित्पुनरर्हन् जिन इति पञ्चम । अत्र भाष्यगाथा— अच्छवि अस्सवले या, अकम्म संसुद्ध अरह-जिणा ।

३. अपरिसाती (ता) ।

२९३. नियंठे णं भंते ! कि सवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! नो सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ।।
२९४. जइ अवेदए होज्जा कि उवसंतवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ।।
२९५. सिणाए णं भंते ! कि सवेदए होज्जा ०? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं —नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ।।

राग-पदं

२९६. पुलाए णं भते ! किं सरागे होज्जा ? वीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीतरागे होज्जा। एव जाव कसायकुसीले ।।
२९७. नियंठे णं भंते ! कि सरागे होज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीतरागे होज्जा ।।
२९८. जइ वीतरागे होज्जा कि उवसंतकसायवीतरागे होज्जा ? खीणकसायवीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायवीतरागे होज्जा, खीणकसायवीत-रागे होज्जा ।।

कप्प-पदं

२९९. पुलाए णं भंते ! कि ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ।।
३००. पुलाए ण भते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ।।
३०१ बउसे ण—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।।
३०२. कसायकुसीले ण—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा ।।
३०३. नियंठे ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा। एवं सिणाए वि ।।

चरित्त-पदं

३०४. पुलाए णं भते ! कि सामाइयसंजमे होज्जा ? छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा ? परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा ? सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा ? अहक्खायसंजमे होज्जा ?

गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होज्जा, छेओवट्ठावणियसजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसजमे होज्जा, नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, नो अहक्खाय-सजमे होज्जा । एव बउसे वि । एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३०५. कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा जाव सुहुमसपरागसजमे वा होज्जा, नो अहक्खायसजमे होज्जा ।।

३०६ नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सामाइयसजमे होज्जा जाव नो सुहुमसपरागसंजमे होज्जा, अहक्खायसजमे होज्जा । एव सिणाए वि ।।

पडिसेवणा-पदं

३०७. पुलाए ण भते ! कि पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा ।।

३०८ जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा । 'मूलगुणे पडिसेवमाणे'[1] पचण्ह आसवाण अण्णयर पडिसेवेज्जा, 'उत्तरगुणे पडिसेवमाणे'[2] दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अण्णयर पडिसेवेज्जा ।।

३०९ बउसे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा ।।

३१०. जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा । उत्तरगुणे पडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अण्णयर पडिसेवेज्जा । पडिसेवणा-कुसीले जहा पुलाए ।।

३११ कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा । एवं नियठे[3] वि । एवं सिणाए वि ।।

नाण-पदं

३१२. पुलाए ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिवोहियनाण-

---

१. मूलगुणपडि० (क, म) ;
२. उत्तरगुणपडि० (अ, ख, व, म) ।
३. निग्गथे (स) ।

सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। एवं वउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३१३. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। एवं नियठे वि ॥

३१४. सिणाए ण—पुच्छा।
गोयमा! एगम्मि केवलनाणे होज्जा ॥

३१५. पुलाए ण भंते! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण नव पुव्वाइं अहिज्जेज्जा ॥

३१६. वउसे—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३१७ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं नियठे वि ॥

३१८. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा ॥

तित्थ-पद

३१९. पुलाए ण भंते! किं तित्थे होज्जा? अतित्थे होज्जा?
गोयमा! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा। एवं वउसे वि। एव पडिसेवणा-कुसीले वि ॥

३२०. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा ॥

३२१. जइ अतित्थे होज्जा किं तित्थकरे होज्जा? पत्तेयबुद्धे होज्जा?
गोयमा! तित्थकरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा। एवं नियंठे वि। एव सिणाए वि ॥

लिंग-पदं

३२२. पुलाए णं भंते! किं सलिंगे होज्जा? अण्णलिंगे होज्जा? गिहिलिंगे होज्जा?

गोयमा ! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा, अण्णलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा। भावलिंग पडुच्च नियम सलिगे होज्जा। एवं जाव सिणाए ।।

सरीर-पदं

३२३. पुलाए ण भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया[1]-कम्मएसु होज्जा ।।

३२४ वउसे ण भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा। एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३२५ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होज्जा। तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पंचसु होमाणे पचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मएसु होज्जा। नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ ।।

खेत्त-पदं

३२६. पुलाए णं भंते ! कि कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा ।।

३२७ वउसे णं—पुच्छा।
गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा। साहरणं पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा। एव जाव सिणाए ।।

काल-पदं

३२८. पुलाए ण भते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ।।

३२९ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा कि सुसमसुसमाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले[2] होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ?

---

१. तेय (अ)।   २. °दुसमाकाले (अ, ता, म)।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ॥

३३०. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमसुसमाकाले होज्जा ?

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। सतिभावं पडुच्च नो दुस्सम-दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा ॥

३३१. जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले[1] होज्जा किं सुसमसुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा ? दुस्समसुसमापलि-भागे होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ॥

३३२ वउसे णं—पुच्छा।

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओस-प्पिणि—नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३३३ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा—पुच्छा।

गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमा-काले होज्जा। सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। साहरण पडुच्च अण्ण-यरे समाकाले होज्जा ॥

३३४. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा - पुच्छा।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए। संति-

---

१. उस्स° (अ, क, ख, ता, म)।

भाव पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा। एवं संतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। साहरणं पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा॥

३३५ जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा—पुच्छा।
गोयमा! जम्मण-संतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे पलिभागे होज्जा। जहा बउसे। एवं पडिसेवणाकुसीले वि। एव कसायकुसीले वि। नियठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवर—एतेसि अब्भहिय साहरण भाणियव्वं। सेस त चेव॥

गति-पद

३३६. पुलाए ण भते! कालगए समाणे क[1] गतिं गच्छति?
गोयमा! देवगतिं गच्छति॥

३३७. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा? जोइसिएसु उववज्जेज्जा? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! नो भवणवासीसु, नो वाणमतरेसु, नो जोइसिएसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा। वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा। बउसे ण एव चेव, नवर—उक्कोसेण अच्चुए कप्पे। पडिसेवणाकुसीले जहा बउसे। कसायकुसीले जहा पुलाए, नवर-उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा। नियठे णं एव चेव जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहण्णमणुक्कोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा॥

३३८ सिणाए ण भंते! कालगए समाणे क गतिं गच्छइ?
गोयमा! सिद्धिगतिं गच्छइ॥

३३९ पुलाए ण भते! देवेसु उववज्जमाणे कि इदत्ताए उववज्जेज्जा? सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा? तावत्तीसाए[2] उववज्जेज्जा? लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा? अहमिदत्ताए[3] उववज्जेज्जा?
गोयमा! अविराहणं पडुच्च इदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसाए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहण पडुच्च अण्णयरेसु[4] उववज्जेज्जा। एव बउसे वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि॥

३४० कसायकुसीले—पुच्छा।

---

१. किं (अ, स)।
२ तावत्तीसगत्ताए (ता)।
३. अहमिदत्ताए वा (स)।
४. भवनपत्यादीनामन्यतरेषु देवेषु (वृ)।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिंदत्ताए वा उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ।।

३४१. नियंठे—पुच्छा ।
गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ।।

३४२. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइं ।।

३४३. बउसस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइ। एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि ।।

३४४ कसायकुसीलस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ ।।

३४५. नियंठस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

संजमट्ठाण-पदं

३४६. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा सजमट्ठाणा पण्णत्ता। एव जाव कसायकुसीलस्स ।।

३४७. नियंठस्स ण भते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। एवं सिणायस्स वि ।।

३४८. एतेसि ण भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियठ-सिणायाणं सजमट्ठाणाण कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। पुलागस्स णं संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। बउसस्स सजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा। कसायकुसीलस्स सजमट्ठाणा असखेज्जगुणा ।।

निगास-पदं

३४९. पुलागस्स णं भते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव सिणायस्स ।।

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३५०. पुलाए णं भंते ! पुलागस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए।
जइ हीणे अणंतभागहीणे वा, असखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा, अणतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा, असंखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असखेज्जगुणमब्भहिए वा, अणंतगुणमब्भहिए वा[1] ॥

३५१ पुलाए ण भते ! बउसस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहि किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणतगुणहीणे। एव पडिसेवणाकुसीलस्स वि। कसायकुसीलेणं समं छट्ठाणवडिए जहेव सट्ठाणे। नियठस्स जहा बउसस्स। एव सिणायस्स वि ॥

३५२ बउसे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए ॥

३५३ बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे छट्ठाणवडिए ॥

३५४ बउसे ण भते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे० ? छट्ठाणवडिए। एवं कसायकुसीलस्स वि ॥

३५५ बउसे ण भते ! नियठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणत गुणहीणे। एवं सिणायस्स वि। पडिसेवणाकुसीलस्स एव चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा। कसायकुसीलस्स एस चेव बउसवत्तव्वया, नवरं—पुलाएण वि सम छट्ठाणवडिए ॥

३५६ नियठे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।

---

१. वृत्तौ असद्भावस्थापनया षट्स्थानपतितमेतद् उदाहृतमस्ति—

हीन			अधिक		
१. अनन्तभागहीन	१००००	९९००	१. अनन्तभागअधिक	९९००	१००००
२. असख्यातभागहीन	१००००	९८००	२ असख्यातभागअधिक	९८००	१००००
३. सख्यातभागहीन	१००००	९०००	३. सख्यातभागअधिक	९०००	१००००
४. सख्यातगुणहीन	१००००	१०००	४. सख्यातगुणअधिक	१०००	१००००
५. असख्यातगुणहीन	१००००	२००	५. असख्यातगुणअधिक	२००	१००००
६. अनन्तगुणहीन	१००००	१००	६ अनन्तगुणअधिक	१००	१००००

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३५७. नियठे णं भंते ! नियंठस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं– पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३५८. [1]•नियंठस्स ण भंते ! सिणायस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥°

३५९. सिणाए ण भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं [2]•चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३६०. सिणाए णं भते ! नियंठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए° ॥

३६१. सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३६२. एएसि णं भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं जहण्णुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा २. पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ३. बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ४. बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ५. पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ६. कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ७. नियंठस्स सिणायस्स य एतेसि णं अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

३६३ पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ॥

३६४. जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

---

१. सं० पा०—एवं सिणायस्स वि।
२. स० पा०—एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३६५ सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा ! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा। जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा—सेसं जहा पुलागस्स ॥

उवओग-पदं

३६६ पुलाए ण भंते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥

कसाय-पदं

३६७. पुलाए ण भंते। सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३६८. जइ सकसायी होज्जा, से ण भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। एवं वउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३६९ कसायकुसीले णं - पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३७०. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे सजलणलोभे होज्जा ॥

३७१ नियठे ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ॥

३७२ जइ अकसायी होज्जा किं उवसंतकसायी होज्जा ? खीणकसायी होज्जा ?
गोयमा ! उवसतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा ॥

लेस्सा-पदं

३७३ पुलाए ण भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्सो होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७४. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए। एव वउसस्स वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३७५. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७६. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥

३७७. नियंठे णं भते !—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७८. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एक्काए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

३७९. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा ॥

३८०. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

३८१. पुलाए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[1] होज्जा ? अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एव जाव कसायकुसीले ॥

३८२. नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

३८३. पुलाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥

३८४ केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा !
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥

३८५. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सत्त समया। एवं जाव कसायकुसीले ॥

३८६ नियठे णं भंते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

३८७. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं अतोमुहुत्त ॥

३८८. सिणाए ण भते ! केवतिय कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! 'जहण्णेण वि'[2] अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

---

१. हीयमाण° (म, स)।
२. जहण्णेण्णं (अ. क. ख. ब, म, स)।

३८६. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

३६०. पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति ॥

३६१. वउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा । सत्त वंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वंधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वंधति । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३६२ कसायकुसीले पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा, छव्विहवधए वा । सत्त वधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति, छ वधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छक्कम्मप्पगडीओ वंधति ॥

३६३. नियंठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥

३६४. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहवधए वा, अवधए वा । एग वधमाणे एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥

वेदण-पदं

३६५. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेइ ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ । एव जाव कसायकुसीले ॥

३६६. नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

३६७. सिणाए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! वेयणिज्ज-आउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

उदीरणा-पदं

३६८. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

३६६ वउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-वज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति। पडिसेवणाकुसीले एव चेव ।।

४००. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा, पच-विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति ।।

४०१. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ।।

४०२. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ।।

उवसंपज्जहण-पदं

४०३. पुलाए णं भते ! पुलायत्तं जहमाणे कि जहति ? कि उवसंपज्जति ?
गोयमा ! पुलायत्तं जहति। कसायकुसील[1] वा अस्संजमं वा उवसंपज्जति ।।

४०४. बउसे णं भंते ! बउसत्तं जहमाणे कि जहति ? कि उवसंपज्जति ?
गोयमा ! बउसत्तं जहति। पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा सजमासंजम वा उवसपज्जति ।।

४०५. पडिसेवणाकुसीले णं[2]—पुच्छा।
गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति। बउस वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासजमं वा उवसपज्जति ।।

४०६. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहति। पुलायं वा बउसं वा पडिसेवणाकुसील वा नियंठं वा अस्सजमं वा संजमासंजमं वा उवसपज्जति ।।

---

१. इह भावप्रत्ययलोपात् कषायकुशीलत्वमित्यादि दृश्यम् (वृ)।
२. ण भते ! पडि (अ, क, ख, व, म, स)।

४०७. णियठे—पुच्छा ।
गोयमा ! नियंठत्त जहति । कसायकुसील वा सिणाय वा अस्संजम वा उवसपज्जति ॥

४०८. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिणायत्तं जहति । सिद्धिगति उवसंपज्जति ॥

सण्णा-पदं

४०९. पुलाए णं भंते ! कि सण्णोवउत्ते होज्जा ? नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! नोसण्णोवउत्ते होज्जा ॥

४१०. बउसे णं भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सण्णोवउत्ते वा होज्जा, नो सण्णोवउत्ते वा होज्जा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि । एव कसायकुसीले वि । नियंठे सिणाए य जहा पुलाए ॥

आहार-पदं

४११ पुलाए ण भंते ! कि आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ?
गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा । एवं जाव नियठे ॥

४१२. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा ॥

भव-पदं

४१३. पुलाए ण भते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१४. बउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेणं अट्ठ । एवं पडिसेवणाकुसीले वि । एवं कसायकुसीले वि । नियठे जहा पुलाए ॥

४१५. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एक्क ॥

आगरिस-पदं

४१६. पुलागस्स णं भते ! एगभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१७. बउसस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं सतग्गसो । एवं पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले[1] वि ॥

---

१. एवं कसाय° (ब) ।

४१८. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

४१९. सिणायस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! एक्को[1] ॥

४२० पुलागस्स णं भते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त ॥

४२१. बउसस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सहस्सग्गसो[2] । एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

४२२. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं पंच ॥

४२३. सिणायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

काल-पदं

४२४. पुलाए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ॥

४२५. बउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । एवं पडिसेवणा-कुसीले वि, कसायकुसीले वि ॥

४२६. नियठे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥

४२७. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

४२८. पुलाया ण भते ! कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥

४२९. बउसा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वद्ध । एवं जाव कसालकुसीला । नियठा जहा पुलागा । सिणाया जहा बउसा ॥

अंतर-पदं

४३०. पुलागस्स णं भते ! केवतिय कालं अतरं होइ ?

---

१. एक्को वि नत्थि (म, स) ।   २. सहस्ससो (अ, क, ख, ता, म) ।

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणत काल—अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूणं। एव जाव नियठस्स।

४३१. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! 'नत्थि अतरं'[1] ।।

४३२ पुलायाण भते ! केवतिय काल अंतर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सखेज्जाइ वासाइ ।।

४३३. वउसाणं भते !—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर। एव जाव कसायकुसीलाण ।।

४३४. नियठाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सिणायाणं जहा वउसाण ।।

समुग्घाय-पदं

४३५. पुलागस्स ण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसाय-समुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ।।

४३६ वउसस्स ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! पच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव तेया-समुग्घाए। एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

४३७. कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव आहार-समुग्घाए[2] ।।

४३८. नियठस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ।।

४३९. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते ।।

खेत्त-पदं

४४० पुलाए ण भते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा ?
गोयमा ! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो सखेज्जेसु

---

१. नत्थतर (अ, क, ख, ता, व, म)। २. आहारगसमुग्घाए (ब, म)।

भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

४४१. सिणाए णं—पुच्छा।

गोयमा! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा ॥

फुसणा-पदं

४४२. पुलाए ण भंते! लोगस्स कि संखेज्जइभागं फुसइ? असखेज्जइभागं फुसइ? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाए ॥

भाव-पदं

४४३. पुलाए णं भंते! कतरम्मि भावे होज्जा?

गोयमा! खओवसमिए भावे होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले ॥

४४४. नियंठे—पुच्छा।

गोयमा! ओवसमिए वा[1] खइए वा भावे होज्जा ॥

४४५. सिणाए—पुच्छा।

गोयमा! खइए भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

४४६. पुलाया णं भते! एगसमएणं केवतिया होज्जा?

गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्त ॥

४४७. वउसा णं भंते! एगसमएणं—पुच्छा।

गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिसयपुहत्तं। एवं पडिसेवणा-कुसीले वि ॥

४४८. कसायकुसीलाण—पुच्छा।

गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सहस्सपुहत्त। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसहस्सपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसहस्सपुहत्त ॥

४४९. नियंठाणं—पुच्छा।

---

१. भावे वा (ता)।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण बावट्ठ सतं—अट्ठसयं खवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाण[1] । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त ॥

४५०. सिणायाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसत । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्त ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

४५१. एएसि ण भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाण कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नियठा, पुलागा सखेज्जगुणा, सिणाया सखेज्जगुणा, बउसा सखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला सखेज्जगुणा, कसायकुसीला सखेज्जगुणा ॥

४५२. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

पण्णवण-पद

४५३. कति ण भते ! संजया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच संजया पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयसंजए, छेदोवट्ठावणियसजए[4], परिहारविसुद्धियसजए[5], सुहुमसपरायसंजए, अहक्खायसंजए ॥

४५४ सामाइयसजए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ॥

४५५ छेदोवट्ठावणियसजए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सातियारे य, निरतियारे य ॥

४५६. परिहारविसुद्धियसजए—पुच्छा ।

---

१. उवसमगाण (स) ।
२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. °ट्ठाणिय° (ता) ।
५. °विसुद्धिसंजए (ख) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विसमाणए य, निव्विट्ठकाइए य ॥

४५७. सुहुमसंपरायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए[1] य ॥

४५८. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थे य, केवली य ॥

संगहणी-गाहा

सामाइयम्मि उ कए, चाउज्जाम अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेण फासयतो, सामाइयसंजओ स खलु ॥१॥
छेत्तूण उ परियागं, पोराण जो ठवेइ अप्पाण ।
धम्मम्मि पंचजामे, छेदोवट्ठावणो स खलु ॥२॥
परिहरइ जो विसुद्ध, तु पंचयामं अणुत्तर धम्म ।
तिविहेण फासयतो, परिहारियसंजओ स खलु ॥३॥
लोभाणू[2] वेदेंतो[3], जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
सो सुहुमसंपराओ, अहखाया[4] ऊणओ किंचि ॥४॥
उवसते खीणम्मि व, जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि ।
छउमत्थो व जिणो वा, अहखाओ संजओ स खलु ॥५॥

वेद-पदं

४५९. सामाइयसंजए ण भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा । जइ सवेदए—एवं जहा[5] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । एव छेदोवट्ठावणियसंजए वि । परिहारविसुद्धियसंजओ जहा[6] पुलाओ । सुहुमसंपरायसंजओ अहक्खायसंजओ य जहा[7] नियंठो ॥

राग-पदं

४६०. सामाइयसंजए ण भंते ! किं सरागे होज्जा ? वीयरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा । एव जाव सुहुमसंपरायसंजए । अहक्खायसंजए । जहा[8] नियंठे ॥

---

१. विसुद्धमाणए (ता) ।
२. लोभमणु (अ, क); लोभाणु (ख, ता, म, स); लोभाणु (ब) ।
३. वेदयंतो (अ); वेयंतो (ता) ।
४. अहक्खाया (अ, क, ख, ब, म, स) ।
५. भ० २५।२९१, २९२ ।
६. भ० २५।२८६,२८७ ।
७. भ० २५।२९३,२९४ ।
८. भ० २५।२९७,२९८ ।

कप्प-पदं

४६१. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा ॥

४६२. छेदोवट्ठावणियसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अट्ठियकप्पे होज्जा। एवं परिहारविसुद्धियसंजए वि। सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

४६३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, जहा[1] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं। छेदोवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा[2] बउसो। सेसा जहा[3] नियंठे ॥

नियंठ-पदं

४६४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पुलाए होज्जा ? बउसे जाव सिणाए होज्जा ?
गोयमा ! पुलाए वा होज्जा, बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६५. परिहारविसुद्धियसंजए णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो पुलाए, नो बउसे, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा; कसायकुसीले होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। एवं सुहुमसंपराए वि ॥

४६६. अहक्खायसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! नो पुलाए होज्जा जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियंठे वा होज्जा, सिणाए वा होज्जा ॥

पडिसेवणा-पदं

४६७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा। जइ पडिसेवए होज्जा—किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, सेसं जहा[4] पुलागस्स। जहा सामाइयसंजए एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६८. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा। एवं जाव अहक्खायसंजए ॥

---

१. भ० २५।३०२।
२. भ० २५।३०१।
३. भ० २५।३०३।
४. भ० २५।३०८।

नाण-पदं

४६९. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा। एवं जहा[1] कसायकुसीलस्स तहेव चत्तारि नाणाइं भयणाए। एवं जाव सुहुमसंपराए। अहक्खायसंजयस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा[2] नाणुद्देसए ॥

४७०. सामाइयसंजए णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, जहा[3] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७१. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थुं, उक्कोसेणं असंपुण्णाइं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए ॥

४७२. अहक्खायसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा, सुयवतिरित्ते वा होज्जा ॥

तित्थ-पदं

४७३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?
गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा, जहा[4] कसायकुसीले। छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा[5] पुलाए। सेसा जहा सामाइयसजए ॥

लिंग-पदं

४७४. सामाइयसजए ण भंते ! कि सलिगे होज्जा ? अण्णलिगे होज्जा ? गिहिलिंगे होज्जा ? जहा[6] पुलाए। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७५. परिहारविसुद्धियसजए णं भते ! कि—पुच्छा।
गोयमा ! दव्वलिग पि भावलिंग पि पडुच्च सलिगे होज्जा, नो अण्णलिगे होज्जा, नो गिहिलिंगे होज्जा। सेसा जहा सामाइयसजए ॥

सरीर-पद

४७६. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा जहा[7] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। सेसा जहा[8] पुलाए ॥

---

१. भ० २५।३१३।
२. भ० ८।१०५।
३. भ० २५।३१७।
४. भ० २५।३२१।
५. भ० २५।३१९।
६. भ० २५।३२२।
७. भ० २५।३२५।
८. भ० २५।३२३।

खेत्त-पदं

४७७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च जहा[1] बउसे। एवं छेदोवट्ठावणिए वि।
परिहारविसुद्धिए य जहा[2] पुलाए। सेसा जहा सामाइयसंजए॥

काल-पदं

४७८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले जहा[3] बउसे। एवं छेदोवट्ठावणिए वि, नवरं—जम्मण-संतिभावं पडुच्च चउसु वि पलिभागेसु नत्थि, साहरणं पडुच्च अण्णयरे पडिभागे होज्जा, सेसं तं चेव॥

४७९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा।
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा। जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा—जहा[4] पुलाओ। उस्सप्पिणिकाले वि जहा[5] पुलाओ। सुहुमसंपराइओ जहा[6] नियंठो। एवं अहक्खाओ वि॥

गति-पदं

४८०. सामाइयसंजए णं भंते ! कालगए समाणे कं[7] गतिं गच्छति ?
गोयमा ! देवगतिं गच्छति॥

४८१. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासीसु उववज्जेज्जा—जहा[8] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[9] पुलाए। सुहुमसंपराए जहा[10] नियंठे॥

४८२. अहक्खाए—पुच्छा।
गोयमा ! एवं अहक्खायसंजए वि जाव अजहण्णमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा; अत्थेगतिए सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति॥

४८३. सामाइयसंजए णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जति—पुच्छा।

---

१. भ० २५।३२७।
२. भ० २५।३२६।
३. भ० २५।३३२-३३५।
४. भ० २५।३२९।
५. भ० २५।३३०।
६. भ० २५।३३५।
७. किं (अ, स)।
८. भ० २५।३३७।
९. भ० २५।३३६,३३७।
१०. भ० २५।३३७।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा[1] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[2] पुलाए। सेसा जहा[3] नियठे ॥

४८४. सामाइयसजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४८५. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा[4] नियंठस्स ॥

संजमट्ठाण-पदं

४८६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता। एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स ॥

४८७. सुहुमसंपरायसंजयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! असखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ॥

४८८. अहक्खायसंजयस्स —पुच्छा।
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे पण्णत्ते ॥

४८९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराग-अहक्खायसंजयाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहितो[5] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे अहक्खायसंजमस्स एगे अजहण्णमणुक्कोसए सजमट्ठाणे, सुहुमसंपरागसजयस्स अतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा असखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणिय-सजयस्स य[6] एएसि णं संजमट्ठाणा दोण्ह वि तुल्ला असखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

४९० सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव अहक्खायमंजयस्स ॥

४९१. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहि किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए ॥

---

१. भ० २५।३४०।
२. भ० २५।३३९।
३. भ० २५।३४१।
४. भ० २५।३४५।
५. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
६. × (अ, क, ख, स)।

४६२ सामाइयसंजए णं भंते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहि—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए । एवं परिहारविसुद्धियस्स वि ॥

४६३. सामाइयसजए ण भंते ! सुहुमसंपरागसजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहि —पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे । एवं अहक्खाय-सजयस्स वि । एव छेदोवट्ठावणिए वि हेट्ठिल्लेसु तिसु वि सम छट्ठाणवडिए, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे । जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि ॥

४६४ सुहुमसपरागसजए ण भते ! सामाइयसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए । एव छेओवट्ठा-वणिय परिहारविसुद्धिएसु वि सम । सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भ-हिए । जइ हीणे अणतगुणहीणे, अह अब्भहिए अणतगुणमब्भहिए ॥

४६५. सुहुमसपरायसजयस्स अहक्खायसजयस्स परट्ठाण —पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणतगुणहीणे । अहक्खाए हेट्ठिल्लाणं चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए । सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

४६६. एएसि ण भते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसजयाण जहण्णुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सामाइयसंजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, सामाइयसजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणतगुणा, सुहुमसपरायसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, अहक्खायसजयस्स अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ॥

जोग-पदं

४६७ सामाइयसजए ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी जहा[2] पुलाए । एव जाव सुहुमसपरायसंजए । अहक्खाए जहा[3] सिणाए ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. भ० २५।३६५ ।
२. भ० २५।३६३,३६४ ।

उवओग-पदं

४६८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागरोवउत्ते जहा[1] पुलाए। एवं जाव अहक्खाए, नवरं—सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा ॥

कसाय-पदं

४६९. सामाइयसंजए ण भते ! कि सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा जहा[2] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[3] पुलाए ॥

५००. सुहुमसपरागसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

५०१. जइ सकसायी होज्जा, से ण भंते ! कतिसु कसायेसु होज्जा ?
गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा। अहक्खायसजए जहा[4] नियंठे ॥

लेस्सा-पदं

५०२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्से होज्जा जहा[5] कसायकुसीले। एव छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[6] पुलाए। सुहुमसपराए जहा[7] नियंठे। अहक्खाए जहा[8] सिणाए, नवरं—जइ सलेस्से होज्जा, एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

५०३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[9] ? अवट्ठियपरिणामे ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे जहा[10] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५०४. सुहुमसंपराए—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा। अहक्खाए जहा[11] नियठे ॥

५०५. सामाइयसजए णं भते ! केवइय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय जहा[12] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

---

१. भ० २५।३६६।
२. भ० २५।३७०।
३. भ० २५।३६७,३६८।
४. भ० २५।३७१,३७२।
५. भ० २५।३७५,३७६।
६. भ० २५।३७३,३७४।
७. भ० २५।३७७,३७८।
८. भ० २५।३७९,३८०।
९. हीय० (स)।
१०. भ० २५।३८१।
११. भ० २५।३८२;
१२. भ० २५।३८३।

५०६. सुहुमसपरागसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

५०७. केवतिय काल हायमाणपरिणामे होज्जा ? एवं चेव ॥

५०८. अहक्खायसजए ण भते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

५०९ केवतिय काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

५१० सामाइयसजए ण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ बधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा, एव जहा[1] बउसे । एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५११ सुहुमसपरागसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बधति । अहक्खायसंजए जहा[2] सिणाए ॥

वेदण-पद

५१२. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति । एवं जाव सुहुमसपराए ॥

५१३. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवेदए वा, चउव्विहवेदए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणिज्ज-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

उदीरणा-पदं

५१४. सामाइयसजए ण भते ! कति[3] कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा जहा[4] बउसो । एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५१५. सुहुमसपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा । छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पच उदीरमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ॥

५१६. अहक्खायसजए—पुच्छा ।

---

१. भ० २५।३९१ ।
२. भ० २५।३९४ ।
३. केवइ (ता) ।
४. भ० २५।३९९ ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ। सेसं जहा[1] नियठस्स ॥

उवसंपज्जहण-पदं

५१७. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! सामाइयसंजयत्तं जहति। छेदोवट्ठावणियसंजयं[2] वा, सुहुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१८. छेओवट्ठावणिए—पुच्छा।
गोयमा ! छेओवट्ठावणियसंजयत्तं जहति। सामाइयसंजयं वा, परिहारविसुद्धियसंजयं वा, सुहुमसंपरागसंजयं वा असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा।
गोयमा ! परिहारविसुद्धियसंजयत्तं जहति। छेदोवट्ठावणियसंजयं वा असंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५२०. सुहुमसंपराए—पुच्छा।
गोयमा ! सुहुमसंपरायसंजयत्तं जहति। सामाइयसंजयं वा, छेओवट्ठावणियसंजयं वा, अहक्खायसंजयं वा, असंजमं वा उवसंपज्जइ ॥

५२१. अहक्खायसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! अहक्खायसंजयत्तं जहति। सुहुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, सिद्धिगतिं वा उवसंपज्जइ ॥

सण्णा-पदं

५२२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नो सण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा[3] बउसो। एवं जाव परिहारविसुद्धिए। सुहुमसंपराए अहक्खाए य जहा[4] पुलाए ॥

आहार-पदं

५२३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ? जहा[5] पुलाए। एवं जाव सुहुमसंपराए। अहक्खायसंजए जहा[6] सिणाए ॥

---

१. भ० २५।४०१।
२. उपसंपत्तिप्रसङ्गे सर्वत्रापि भावप्रत्ययलोपो दृश्यते।
३. भ०।४१०।
४. भ० २५।४०९।
५. भ० २५।४११।
६. भ० २५।४१२।

भव-पदं

५२४. सामाइयसंजए ण भंते ! कति भवग्गहणाइ होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण अट्ठ । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

५२५ परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण तिण्णि । एव जाव अहक्खाए ॥

आगरिस-पद

५२६. सामाइयसजयस्स ण भते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा[1] बउसस्स ॥

५२७. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को[2], उक्कोसेणं वीसपुहत्त ॥

५२८ परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण तिण्णि ॥

५२९. सुहुमसपरायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण चत्तारि ॥

५३०. अहक्खायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

५३१. सामाइयसजयस्स ण भते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहा[3] बउसे ॥

५३२. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण उवरिं नवण्ह सयाण अंतो सहस्सस्स । परिहारविसुद्धियस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सत्त । सुहुमसपरागस्स जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेण नव । अहक्खायस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण पंच ॥

काल-पद

५३३. सामाइयसजए ण भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणएहि नवहिं वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । एव छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणएहि एकूणतीसाए वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । सुहुमसंपराए जहा[4] नियठे । अहक्खाए जहा सामाइयसंजए ॥

५३४. सामाइयसजया ण भते ! कालओ केवच्चिर होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

---

१. भ० २५।४१७ ।
२. एक्क (अ, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४२१ ।
४. भ० २५।४२६ ।

५३५. छेदोवट्ठावणियसजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अड्ढाइज्जाइ वाससयाइं, उक्कोसेण पण्णासं सागरोवम-कोडिसयसहस्साइं ॥

५३६. परिहारविसुद्धीयसंजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण देसूणाइ दो वाससयाइं, उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्व-कोडीओ ॥

५३७. सुहुमसंपरागसजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अहक्खायसंजया जहा सामाइयसंजया ॥

अंतर-पदं

५३८. सामाइयसजयस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा[1] पुलागस्स । एवं जाव अहक्खायसजयस्स ॥

५३९. सामाइयसजयाण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! 'नत्थि अंतरं'[2] ॥

५४०. छेदोवट्ठावणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं तेवट्ठि वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडा-कोडीओ ॥

५४१. परिहारविसुद्धियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं चउरासीइं वाससहस्साइ, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवम-कोडाकोडीओ । सुहुमसपरायाणं जहा[3] नियंठाणं । अहक्खायाणं जहा सामाइय-सजयाण ॥

समुग्घाय-पदं

५४२. सामाइयसंजयस्स णं भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता जहा[4] कसायकुसीलस्स । एव छेदोवट्ठावणियस्स वि । परिहारविसुद्धियस्स जहा[5] पुलागस्स । सुहुमसपरागस्स जहा[6] नियठस्स । अहक्खायस्स जहा[7] सिणायस्स ॥

खेत्त-पदं

५४३. सामाइयसंजए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे—पुच्छा ।

---

१. भ० २५।४३० ।
२. नत्थतर (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४३४ ।
४. भ० २५।४३७ ।
५. भ० २५।४३५ ।
६. भ० २५।४३८ ।
७. भ० २५।४३९ ।

गोयमा ! नो संखेज्जइभागे जहा[1] पुलाए । एव जाव सुहुमसंपराए । अहक्खाय-सजए जहा[2] सिणाए ॥

फुसणा-पदं

५४४. सामाइयसजए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभाग फुसइ० ? जहेव होज्जा तहेव फुसइ ॥

भाव-पदं

५४५. सामाइयसजए ण भते ! कयरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा । एव जाव सुहुमसपराए ॥

५४६. अहक्खायसजए – पुच्छा ।
गोयमा ! उवसमिए वा खइए[3] वा भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

५४७ सामाइयसजया ण भते ! एगसमएण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए य पडुच्च जहा[4] कसायकुसीला तहेव निरवसेसं ॥

५४८ छेदोवट्ठावणिया—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडि-सयपुहत्त । परिहारविसुद्धिया जहा[5] पुलागा । सुहुमसपराया जहा[6] नियठा ॥

५४९. अहक्खायसजया ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं बावट्ठ सयं—अट्ठुत्तरसय[7] खवगाण, चउप्पण्ण उवसामगाणं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्को-सेण वि कोडिपुहत्त ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

५५०. एएसि णं भते ! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसजयाण कयरे कयरेहिंतो[8] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ० विसेसाहिया वा ?

---

१. भ० २५।४४० ।
२. भ० २५।४४१ ।
३. खलिए (अ,क,ख,व,म,स); खविए (ता) ।
४. भ० २५।४४८ ।
५. भ० २५।४४६ ।
६. भ० २५।४४९ ।
७. अट्ठसयं (क, ता, व) ।
८. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसजया सखेज्जगुणा, अहक्खायसजया सखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसजया सखेज्जगुणा, सामाइय-सजया सखेज्जगुणा ॥

संगहणी-गाहा

पडिसेवण दोसालोयणा य, आलोयणारिहे चेव ।
तत्तो सामायारी, पायच्छित्ते तवे चेव ॥ १ ॥

पडिसेवणा-पदं

५५१. कइविहा णं भते ! पडिसेवणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा—
दप्पप्पमादणाभोगे, आउरे आवतीति य ।
सकिण्णे[1] सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ॥ १ ॥

आलोयणा-पदं

५५२. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, त जहा—
आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठ बादर व सुहुमं वा ।
छन्न सद्दाउलयं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥ १ ॥

५५३. दसहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोस आलोइत्तए, तं जहा— जातिसपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसपण्णे, नाणसंपण्णे, दसणसपण्णे, चरित्तसपण्णे, खते, दते, अमायी, अपच्छाणुतावी ॥

५५४. अट्ठहि ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा— आयारवं, आहारव[2], ववहारव, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, निज्जवए, अवायदसी ॥

सामायारी-पदं

५५५. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा—
इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छदणा य निमंतणा ।
उवसंपया य काले, सामायारी भवे दसहा ॥ १ ॥

पायच्छित्त-पदं

५५६. दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ॥

---

१. सकिते (अ, क, ख, ता, ब, म, वृपा); २. आधारव (अ, क, ब); अवधारव (म) । निशीथपाठे तु 'तितिण' इत्यभिधीयते (वृ) ।

तव-पदं

५५७. दुविहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—बाहिरए य, अब्भिंतरए य ॥

५५८. से किं तं बाहिरए तवे ? बाहिरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणसण, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, पडिसंलीणता ॥

५५९. से किं तं अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ॥

५६०. से किं तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते, अट्ठमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोद्दसमे भत्ते, अद्धमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते। सेत्तं इत्तरिए ॥

५६१. से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे[1] य, भत्तपच्चक्खाणे य ॥

५६२. से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियमं अपडिकम्मे। सेत्तं पाओवगमणे ॥

५६३. से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियमं सपडिकम्मे। सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे। सेत्तं आवकहिए। सेत्तं अणसणे ॥

५६४. से किं तं ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोमोदरिया य, भावोमोदरिया य ॥

५६५. से किं तं दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्तपाणदव्वोमोदरिया य ॥

५६६. से किं तं उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए,[2] चियत्तोवगरणसातिज्जणया। सेत्तं उवगरणदव्वोमोदरिया ॥

५६७. से किं तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अट्ठकुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस [3]कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणमेत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं

---

१. पादोव° (ख)।
२. पादे (अ, क, व)।
३. सं० पा०—जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो।

आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे° नो पकामरसभोजीति वत्तव्व सिया। सेत्तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया। सेत्तं दव्वोमोदरिया ।।

५६८. से कि तं भावोमोदरिया ? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अप्पकोहे[1], °अप्पमाणे, अप्पमाए,° अप्पलोभे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे, अप्पतुमतुमे। सेत्त भावोमोदरिया। सेत्तं ओमोदरिया ।।

५६९. से कि तं भिक्खायरिया ? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वाभिग्गहचरए,[2] °खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए, उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, उक्खित्तणिक्खित्तचरए, णिक्खित्तउक्खित्तचरए, वट्टिज्जमाणचरए, साहरिज्जमाणचरए, उवणीयचरए, अवणीयचरए, उवणीयअवणीयचरए, अवणीयउवणीयचरए, संसट्ठचरए, असंसट्ठचरए, तज्जायससट्ठचरए, अण्णयचरए, मोणचरए°, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए। सेत्त भिक्खायरिया ।।

५७०. से कि त रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—निव्विगितिए, पणीयरसविवज्जए, [3]°आयंबिलए, आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अताहारे, पताहारे°, लूहाहारे। सेत्तं रसपरिच्चाए ।।

५७१. से कि तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणादीए, उक्कुडुयासणिए, [4]°पडिमट्ठाई, वीरासणिए, नेसज्जिए, आयावए, अवाउडए, अपडुयए, अणिट्ठुहए°, सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के। सेत्तं कायकिलेसे ।।

५७२. से कि त पडिसलीणया ? पडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इंदियपडिसलीणया, कसायपडिसलीणया, जोगपडिसंलीणया, विवित्तसयणासणसेवणया ।।

५७३. से कि तं इदियपडिसंलीणया ? इदियपडिसलीणया पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियविसयप्पयारणिरोहो वा, सोइदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। चक्खिदियविसयप्पयारणिरोहो वा एवं जाव फासिंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, फासिदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। सेत्तं इंदियपडिसंलीणया ।।

५७४. से कि त कसायपडिसंलीणया ? कसायपडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरण। एव

---

१. स०पा०—अप्पकोहे जाव अप्पलोभे।
२. स०पा०—जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए।
३. स० पा०—जहा ओववाइए जाव लूहाहारे।
४. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव सव्वगाय°।

जाव लोभोदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं। सेत्त कसायपडिसलीणया ॥

५७५. से कि त जोगपडिसलीणया ? 'जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा— मणजोगपडिसंलीणया, वइजोगपडिसलीणया, कायजोगपडिसलीणया ॥

५७६. से कि त मणजोगपडिसलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण। सेत्त मणजोगपडिसलीणया ॥

५७७. से कि तं वइजोगपडिसलीणया ? वइजोगपडिसलीणया अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण। सेत्त वइजोगपडिसलीणया'[1] ॥

५७८ से कि त कायजोगपडिसलीणया ? कायजोगपडिसलीणया जण्ण सुसमाहिय-पसत-साहरियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए अल्लीण-पल्लीणे चिट्ठति। सेत्त कायपडिसलीणया। सेत्त जोगपडिसलीणया ॥

५७९ से कि त विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया जण्णं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा [2]°देवकुलेसु वा सभासु वा पवासु वा इत्थी-पसु-पडगविवज्जियासु वा वसहीसु फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग°-सेज्जा-सथारग उवसपज्जित्ताणं विहरइ। सेत्त विवित्तसयणासणसेवणया। सेत्त पडिसंलीणया। सेत्त बाहिरए तवे ॥

५८० से कि त अब्भितरए तवे ? अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा— पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्च, सज्झाओ, झाण, विउसग्गो ॥

५८१. से कि त पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे जाव[3] पारचियारिहे। सेत्त पायच्छित्ते ॥

५८२. से किं त विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए,मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

---

१. 'जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता' इति पाठे सूचिता योगप्रतिसलीनतायास्त्रय: प्रकारा प्रस्तुतप्रकरणे निर्दिष्टा न सन्ति तथा 'से किं त कायपडिसलीणया' इति पाठेनापि 'से किं त मणपडिसलीणया, से किं त वइपडिसलीणया' इति सूत्रयोरपि सकेतो लभ्यते। प्रतीयते लिपिकरणे सक्षेपो जात:। तस्य पूर्तिरौपपातिक (सू० ३७)—वर्ति-पाठानुसारेण कृता। प्रस्तुतपाठस्य सक्षेप. एवमस्ति—जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभाव-करण। अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण।

२. स० पा०—जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा।

३. भ० २५।५५६।

५८३. से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिवोहिय-नाणविणए,[1] •सुयनाणविणए ओहिनाणविणए, मणपज्जवनाणविणए°, केवलनाणविणए। सेत्त नाणविणए॥

५८४. से किं त दसणविणए ? दसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुस्सूसणाविणए य, अणच्चासादणाविणए य॥

५८५. से कि त सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा [2]•किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अजलिपग्गहे इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स° पडिससाहणया। सेत्त सुस्सूसणाविणए॥

५८६. से कि त अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयालीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—अरहंताण अणच्चासादणया[3], अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासादणया, आयरियाण अणच्चासादणया, उवज्झायाण अणच्चासादणया, थेराण अणच्चासादणया, कुलस्स अणच्चासादणया, गणस्स अणच्चासादणया, संघस्स अणच्चासादणया, किरियाए अणच्चासादणया, सभोगस्स अणच्चासादणया, आभिणिवोहियनाणस्स अणच्चासादणया, जाव केवलनाणस्स अणच्चासादणया, एएसि चेव भत्ति-बहुमाणेण, एएसि चेव वण्णसजलणया। सेत्त अणच्चासादणयाविणए। सेत्तं दसणविणए॥

५८७. से कि त चरित्तविणए ? चरित्तविणए पचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइय-चरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए। सेत्त चरित्तविणए॥

५८८. से किं त मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थमणविणए य, अप्पसत्थमणविणए य॥

५८९. से कि त पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए[4] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे[5], अणण्हवकरे, अच्छविकरे, अभूयाभिसकणे[6]। सेत्तं पसत्थमणविणए॥

---

१. स० पा०—आभिणिवोहियनाणविणए जाव केवल°।

२. स० पा०—जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिससाहणया।

३. अणच्चासायणया (अ, ख); अणच्चासात-णया (क, ता)।

४. पसत्थमणविणए—जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकक्कसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्दवणकरे अभूओवघाइए तहप्पगार मणो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

५. निरुवक्कोसे (अ, क)।

६. °संकमणे (क, ता)।

५९०. से किं तं अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए[1] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे[2], अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसकणे। सेत्तं अप्पसत्थमणविणए। सेत्तं मणविणए ॥

५९१ से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थवइविणए य, अप्पसत्थवइविणए य ॥

५९२. से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए[3] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसकणे। सेत्तं पसत्थवइविणए ॥

५९३ से किं तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसकणे। सेत्तं अप्पसत्थवइविणए। सेत्तं वइविणए ॥

५९४ से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थकायविणए य, अप्पसत्थकायविणए य ॥

५९५. से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं निसीयणं, आउत्तं तुयट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। सेत्तं पसत्थकायविणए ॥

५९६ से किं तं अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। सेत्तं अप्पसत्थकायविणए। सेत्तं कायविणए ॥

५९७ से किं तं लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भासवत्तियं[4], परच्छंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं[5], कयपडिकइया[6], अत्तगवेसणया, देसकालण्णया[7], सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। सेत्तं लोगोवयारविणए। सेत्तं विणए ॥

५९८. से किं तं वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे। सेत्तं वेयावच्चे ॥

---

१ अपसत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

२. सउवक्कोसे (क, ख)।

३ पूर्ववत् अत्रापि औपपातिकस्य पाठभेदो दृश्य।

४ °वत्तिय (ता)।

५ ज्ञानादिनिमित्त भक्तादिदानमिति गम्यम् (वृ)।

६. कइपडिकइयाए (ता)।

७. देसकालण्णुया (ओ० सू० ४०)।

५९९. से किं तं सज्झाए ? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा । से त्त सज्झाए ॥

६००. से किं तं झाणे ? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ॥

६०१. अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा अमणुण्णसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग-सतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुण्णसपयोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, आयंकसंपयोगसपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिझुसियकामभोगसंपयोगसंपउत्ते[1] तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ ॥

६०२. अट्टस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया ॥

६०३ रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी, मोसाणुबधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी ॥

६०४. रोद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओस्सन्नदोसे, वहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे ॥

६०५ धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवाय-विजए, विवागविजए, संठाणविजए ॥

६०६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुयी, निसग्ग-रुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी ॥

६०७ धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता, त जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, धम्मकहा ॥

६०८. धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा ॥

६०९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवितक्के[2] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समोछिण्णकिरिए[3] अप्पडिवायी ॥

६१०. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ॥

६११. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, त जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउसग्गे ॥

---

१. परिज्जुसिय° (ख); परिज्झुसिय° (ता)।
२. °वियक्के (ख)।
३. समोच्छिण्ण° (ख, ता, म); समुच्छिण्ण° (क्व०)।

६१२ सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा —'अणंतवत्तिया-णुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा'[1]। सेत्तं झाणे ॥

६१३ से किं तं विउसग्गे? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वविउसग्गे य, भावविउसग्गे य ॥

६१४ से किं तं दव्वविउसग्गे? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिविउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे। सेत्तं दव्वविउसग्गे ॥

६१५ से किं तं भावविउसग्गे? भावविउसग्गे तिविहे पण्णत्ते तं जहा—कसायविउसग्गे, संसारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥

६१६. से किं तं कसायविउसग्गे? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे। सेत्तं कसायविउसग्गे ॥

६१७ से किं तं संसारविउसग्गे? संसारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारविउसग्गे जाव देवसंसारविउसग्गे। सेत्तं संसारविउसग्गे ॥

६१८ से किं तं कम्मविउसग्गे? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अंतराइयकम्मविउसग्गे। सेत्तं कम्मविउसग्गे। सेत्तं भावविउसग्गे। सेत्तं अब्भिंतरए तवे ॥

६१९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

नेरइयादीण-पुणब्भव-पदं

६२० रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते! कहं उववज्जंति?
गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, एवामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विप्पजहित्ता पुरिमं भवं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥

---

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

छवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४. दिट्ठि ५. अण्णाण ६. नाण ७. सण्णाओ ।
८. वेय ९. कसाए १०. उवओग ११. जोग एक्कारस वि ठाणा ॥१॥

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

२. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए एवं चउभंगो ॥

३. कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ । एवं जाव पम्हलेस्से । सव्वत्थ पढम-बितियभंगा । सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो ॥

४. अलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

५. कण्हपक्खिए णं भंते ! जीवे पावं कम्मं—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया[2] भंगा ॥

---

१. भ० १।४-१० ।   २. बीया (ता) ।

६ सुक्कपक्खिए णं भंते ! जीवे—पुच्छा।
गोयमा ! चउभंगो भाणियव्वो ॥

७ सम्मद्दिट्ठीणं चत्तारि भगा, मिच्छादिट्ठीण पढम-वितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं एव चेव ॥

८ नाणीणं चत्तारि भगा, आभिणिबोहियनाणीणं जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि भंगा, केवलनाणीण चरिमो भगो जहा अलेस्साणं ॥

९ अण्णाणीणं पढम-वितिया, एव मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण, विभगनाणीण वि ॥

१० आहारसण्णोवउत्ताण जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण पढम-वितिया, नोसण्णोव-उत्ताण चत्तारि ॥

११ सवेदगाण पढम-वितिया। एव इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा वि। अवेदगाण चत्तारि ॥

१२ सकसाईणं चत्तारि, कोहकसाईण पढम-वितिया भगा, एव माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि। लोभकसायिस्स चत्तारि भगा ॥

१३ अकसायी ण भंते ! जीवे पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वंधी न वंधइ न वधिस्सइ ॥

१४. सजोगिस्स चउभगो, एवं मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि। अजोगिस्स चरिमो ॥

१५ सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा ॥

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च बंधाबंध-पदं

१६ नेरइए ण भंते ! पाव कम्म किं वधी वंधइ वधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी, पढम-वितिया ॥

१७. सलेस्से ण भंते ! नेरइए पाव कम्म० ? एव चेव। एव कण्हलेस्से वि, नील-लेस्से वि, काउलेस्से वि। एव कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छा-दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु सव्वेसु पदेसु पढम-वितिया भगा भाणियव्वा। एव असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अब्भहिया, नपुसगवेदगा न भण्णति, सेस त चेव, सव्वत्थ पढम-वितिया भगा। एव जाव थणियकुमारस्स।

एवं पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वि सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा, नवरं—जस्स जा लेस्सा। दिट्ठी, नाण, अण्णाणं, वेदो, जोगो य अत्थि तं तस्स भाणियव्वं, सेस तहेव। मणूसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा। वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स। जोइसियस्स वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं—लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेसं तहेव भाणियव्वं ॥

जीवादीणं नाणावरणादिकम्मं पडुच्च बंधाबंध-पदं

१८. जीवे णं भंते! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवर—जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-बितिया भगा, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिया। एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसो ॥

१९. जीवे ण भंते! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। सलेस्से वि एव चेव ततियविहूणा भगा। कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-बितिया भंगा। सुक्कलेस्से ततियविहूणा भगा। अलेस्से चरिमो भंगो। कण्हपक्खिए पढम-बितिया। सुक्कपक्खिया ततियविहूणा। एवं सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-बितिया। नाणिस्स ततियविहूणा। आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-बितिया। केवलनाणी ततियविहूणा। एवं नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी। सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा। अजोगिम्मि य चरिमो। सेसेसु पढम-बितिया ॥

२०. नेरइए ण भते! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बधइ० ? एवं नेरइया जाव वेमाणिय त्ति। जस्स जं अत्थि सव्वत्थ वि पढम-बितिया, नवर—मणुस्से जहा जीवे ॥

२१. जीवे णं भंते! मोहणिज्ज कम्मं किं बंधी बधइ० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्ज पि निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥

२२. जीवे णं भंते! आउयं कम्म किं बधी बंधइ—पुच्छा।
गोयमा अत्थेगतिए बंधी चउभंगो। सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा। अलेस्से चरिमो भगो ॥

२३. कण्हपक्खिए ण—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ बधिस्सइ। सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा ॥

२४. सम्मामिच्छादिट्ठी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भंगा ॥

२५ मणपज्जवनाणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । केवलनाणे चरिमो भंगो । एवं एएणं कमेणं नोसण्णोवउत्ते बितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भंगा जाव अणागारोवउत्ते ॥

२६ नेरइए णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी - पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भंगा, एवं सव्वत्थ वि नेरइयाणं चत्तारि भंगा, नवरं— कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भंगा; सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था । असुरकुमारे एवं चेव, नवरं—कण्हलेस्से वि चत्तारि भंगा भाणियव्वा, सेसं जहा नेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं सव्वत्थ वि चत्तारि भंगा, नवरं— कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा ॥

२७ तेउलेस्से— पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भंगा । एवं आउ-क्काइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेसं । तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा, नवरं— सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भंगो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा, सम्मामिच्छत्ते ततियचउत्थो भंगो । सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे— एएसु पंचसु वि पदेसु बितियविहूणा भंगा, सेसेसु चत्तारि भंगा । मणुस्साणं जहा जीवाणं, नवरं—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहि-नाणे—एएसु बितियविहूणा भंगा, सेसं तं चेव । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । नामं गोयं अंतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं ॥

२८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

विसेसितनेरइयादीणं बंधाबंध-पदं

२९. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया भंगा ॥

३०. सलेस्से ण भते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! पढम-बितिया भगा । एव खलु सव्वत्थ पढम-बितिया भगा, नवर—सम्मामिच्छत्त मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ । एव जाव थणियकुमाराण । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण वइजोगो न भण्णइ । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पि सम्मामिच्छत्त, ओहिनाण, विभंगनाणं, मणजोगो, वइजोगो—एयाणि पंच न भण्णति । मणुस्साण अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभग-नाण-नोसण्णोवउत्त-अवेदग-अकसाय-मणजोग-वइजोग-अजोगि—एयाणि एक्कारस पदाणि न भण्णति । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा नेरइयाण तहेव ते तिण्णि न भण्णति । सव्वेसि जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया भगा । एगिंदियाणं सव्वत्थ पढम-वितिया भगा । जहा पावे एवं नाणा-वरणिज्जेण वि दडओ, एव आउयवज्जेसु जाव अतराइए दंडओ ।।

३१. अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए आउय कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बधइ बधिस्सइ ।।

३२. सलेस्से ण भते ! अणतरोववन्नए नेरइए आउय कम्म कि बधी० ? एवं चेव ततिओ भगो । एव जाव अणागारोवउत्ते । सव्वत्थ वि ततिओ भंगो । एव मणुस्सवज्ज जाव वेमाणियाण । मणुस्साणं सव्वत्थ ततिय-चउत्था भगा, नवर—कण्हपक्खिएसु ततिओ भगो । सव्वेसि नाणत्ताइ ताइ चेव ।।

३३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

३-१० उद्देसा

३४. परंपरोववन्नए णं भते ! नेरइए पावं कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया । एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परपरो-ववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदंडगसगहिओ । अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीण जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता ।।

३५. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ।।

३६. अणतरोगाढए णं भते ! नेरइए पावं कम्मं कि बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए एव जहेव अणंतरोववन्नएहि नवदंडगसगहिओ[1] उद्देसो

---

१. ०सहिओ (ता, ब) ।

भणिओ तहेव अणतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥

३७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

३८ परपरोगाढए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी ? जहेव परंपरोववन्नएहि उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

३९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४०. अणतराहारए णं भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा । एवं जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२ परपराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४४. अणतरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वधी--पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेस ॥

४५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४६ परपरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४८. चरिमे ण भंते ! नेरइए पाव कम्मं कि वंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव चरिमेहि निरवसेस ॥

४९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

एक्कारसमो उद्देसो

५०. अचरिमे ण भते ! नेरइए पावं कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगइए एव जहेव पढमोद्देसए, पढम-वितिया भंगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पचिदियतिरिक्खजोणियाण ॥

५१. अचरिमे ण भंते ! मणुस्से पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी बंधइ न वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वंधइ वधिस्सइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

५२. सलेस्से णं भंते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी ०? एवं चेव तिण्णि भंगा चरमविहूणा भाणियव्वा एवं जहेव पढमुद्देसे, नवरं—जेसु तत्थ वीससु[1] चत्तारि भंगा तेसु इह आदिल्ला तिण्णि भंगा भाणियव्वा चरिमभंगवज्जा। अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य—एए तिण्णि वि न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा नेरइए ॥

५३. अचरिमे णं भंते ! नेरइए नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! एवं जहेव पावं, नवरं—मणुस्सेसु सकसाईसु[2] लोभकसाईसु य पढम-बितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरमविहूणा, सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं। दरिसणावरणिज्जं पि एवं चेव निरवसेसं। वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि ॥

५४. अचरिमे णं भंते ! नेरइए मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥

५५. अचरिमे णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! पढम-बितिया भंगा। एवं सव्वपदेसु वि। नेरइयाणं पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए ततिओ भंगो। सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेसु ततिओ भंगो। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। सेसपदेसु[3] सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य ततिओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जंति। सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्जं तहेव निरवसेसं ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. वीसेसु (अ)।
२. कसायीसु (क, म, स)।
३. सेसेसु पदेसु (स)।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाण पावकम्म-करणाकरण-पद

१. जीवे ण भते ! पाव कम्म कि करिंसु करेति करेस्सति ? करिंसु करेति न-करेस्सति ? करिसु न करेति करेस्सति ? करिसु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए करिंसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु करेति न करेस्सति, अत्थेगतिए करिंसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति न करेस्सति ।।

२. सलेस्से णं भते ! जीवे पाव कम्म ०? एवं एएण अभिलावेण जच्चेव बधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदडगसगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ।।

अट्ठावीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जण-समायरण-पदं

१. जीवा णं भंते ! पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २. अहवा तिरिक्ख-जोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ४. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ६. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ७ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ॥

२. सलेस्सा ण भते ! जीवा पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
एवं चेव । एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एवं जाव अणागारोवउत्ता ॥

३. नेरइया णं भते ! पावं कम्मं कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं चेव अट्ठ भगा भाणियव्वा । एव सव्वत्थ अट्ठभंगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ । एव जाव अतराइएण । एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दडगा भवति ॥

४. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

५. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव एत्थ[1] वि अट्ठ भंगा। एव अणतरोववन्नगाण नेरइयाईण जस्स ज अत्थि लेसादीय अणागारोवओग-पज्जवसाण त सव्व एयाए भयणाए भाणियव्व जाव वेमाणियाण, नवर— अणतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बधिसए तहा इह पि। एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ। एव जाव अतराइएण निरवसेसं। एसो वि नवदडगसगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति॥

३-११ उद्देसा

७ एव एएण कमेण जहेव बधिसए उद्देसगाण परिवाडी तहेव इह पि अट्ठसु भगेसु नेयव्वा, नवर—जाणियव्व जं जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व जाव अचरिमुद्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा॥

८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ॥

---

१. सव्वत्थ (ता)।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-पट्ठवण-निट्ठवण-पदं

१. जीवा ण भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ?
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविसु जाव अत्थेगतिया विसमायं पट्ठविसु विसमायं निट्ठविसु ।।

२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु, त चेव ?
गोयमा ! जीवा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्म समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविसु । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समायं पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु । तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु । तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्मं विसमायं पट्ठविसु विसमायं निट्ठविसु । से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव ।।

३. सलेस्सा ण भंते ! जीवा पावं कम्म० ? एवं चेव, एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता । एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ।।

४. नेरइया ण भते ! पावं कम्मं कि समाय पट्ठविसु समायं निट्ठविसु—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु, एव जहेव जीवाण तहेव भाणियव्व जाव अणागारोवउत्ता । एवं जाव वेमाणियाणं जस्स ज अत्थि तं एएण चेव

कमेणं भाणियव्वं। जहा पावेण दडओ। एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा। एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो॥

५. सेवं भंते! सेव भंते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

६. अणंतरोववन्नगा ण भते! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु समाय निट्ठविंसु, अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु॥

७ से केणट्ठेणं भते! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविंसु, त चेव?
गोयमा! अणतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्म समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समायं पट्ठविसु विसमाय निट्ठविंसु। से तेणट्ठेण त चेव॥

८. सलेस्सा ण भते! अणतरोववन्नगा नेरइया पाव०? एवं चेव, एवं जाव अणागारोवउत्ता। एव असुरकुमारा वि। एवं जाव वेमाणिया[1], नवर जं जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व। एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ। एवं निरवसेस जाव अतराइएण॥

९. सेव भंते! सेव भते! त्ति जाव विहरइ॥

३-११ उद्देसा

१०. एव एएण गमएणं जच्चेव वधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति। अणंतरउद्देसगाण चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया, सेसाण सत्तण्हं एक्का॥

---

१. वेमाणियाण (ता)।

तीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

समोसरण-पदं

१. कइ णं भंते ! समोसरणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ।।

२. जीवा णं भंते ! किं किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ? वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ।।

३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । एवं जाव सुक्कलेस्सा ।।

४ अलेस्सा णं भंते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइयवादी ।।

५. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।

६. सम्मामिच्छादिट्ठी णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा॥

७ नेरइया णं भंते ! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

८. सलेस्सा णं भंते ! नेरइया किं किरियावादी ? एवं चेव। एवं जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाणं वि जाव अणागारोवउत्ता, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णति। जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा॥

९. पुढविकाइया णं भंते ! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव चउरिंदियाणं। सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। सम्मत्त-नाणेहिं वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

१०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति ? तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति ? मणुस्साउयं पकरेंति ? देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति॥

११. जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव वेमाणिय देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति॥

१२. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि॥

१३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं, एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहिं वि समोसरणेहिं भाणियव्वा॥

१४ कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति। अकिरियवादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चत्तारि वि आउयाइं पकरेति। एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि ॥

१५. तेउलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेंति। जइ देवाउयं पकरेति तहेव[1] ॥

१६. तेउलेस्सा ण भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेंति, देवाउय पि पकरेति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा ॥

१७. अलेस्सा णं भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउयं पकरेति ॥

१८. कण्हपक्खिया ण भते ! जीवा अकिरियावादी कि नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, एव चउव्विह पि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा ॥

१९ सम्मदिट्ठी ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ॥

२०. सम्मामिच्छादिट्ठी णं भते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउय० ? जहा अलेस्सा। एव वेणइयवादी वि। नाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी ॥

२१. मणपज्जवनाणी ण भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, देवाउयं पकरेति ॥

२२. जइ देवाउयं पकरेति किं भवणवासि—पुच्छा।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेति, नो वाणमंतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेति। केवलनाणी जहा अलेस्सा। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि

---

१. भ० ३०।११।

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी। सवेदगा जाव नपुंसग-वेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी[1] जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा॥

२३ किरियावादी णं भंते! नेरइया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति॥

२४ अकिरियावादी णं भंते! नेरइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

२५ सलेस्सा णं भंते! नेरइया किरियावादी किं नेरइयाउयं०? एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति, नवरं—सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिं वि समोसरणेहिं न किंचि वि पकरेंति जहेव जीवपदे। एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया॥

२६ अकिरियावादी णं भंते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि॥

२७. सलेस्सा णं भंते! एवं जं जं पदं अत्थि पुढविकाइयाणं तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं पकरेंति, नवरं—तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति। एवं आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि। तेउकाइआ वाउकाइआ सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं, नवरं—सम्मत्त-नाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति॥

२८. किरियावादी णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! जहा मणपज्जवनाणी। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विहं पि पकरेंति। जहा ओहिया[2] तहा सलेस्सा वि॥

---

१. सजोती (ख)। २ ओघिता (ता)।

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेति। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी चउव्विहं पि पकरेति। जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेंति। एवं पम्हलेस्सा वि। एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेति। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउय पकरेति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कं पि पकरेति जहेव नेरइया। नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मद्दिट्ठी। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा। जहा पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एव मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवर - मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मद्दिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एग पि आउय पकरेति। जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३१. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

३२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा किरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी कि भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा। एव जाव सुक्कलेस्सा॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा सम्मदिट्ठी। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा सम्मदिट्ठी। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एवं नेरइया वि भाणियव्वा, नवरं—नायव्वं[1] जं अत्थि। एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं—नायव्वं जं अत्थि। मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

३६. अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

३७. सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावादी०? एवं चेव। एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं—जं जं[2] अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तं[3] भाणियव्वं। एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं॥

३८. किरियावादी णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं,

---

१. नेयव्वं (अ, क)।
२. जस्स (अ, स)।
३. तस्स (अ, म)।

नो देवाउयं पकरेंति। एवं अकिरियावादी वि अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

३९. सलेस्सा णं भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउय पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति। एवं जाव वेमाणिया। एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउय पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं—ज जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं ॥

४०. किरियावादी णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

४१. अकिरियावादी णं—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

४२. सलेस्सा ण भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणियाण, नवर—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्व। इमं से लक्खणं—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

४४. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किरियावादी० ? एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेस भाणियव्व, तहेव तियदंडगसंगहिओ ॥

४५. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४-११ उद्देसा

४६ एव एएण कमेण जच्चेव बधिसए उद्देसगाण परिवाडी सच्चेव इह पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवर—अणतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परपरा चत्तारि वि एक्कगमएण। एव चरिमा वि, अचरिमा वि एव चेव, नवरं—अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णति, सेस तहेव ॥

४७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति। एए एक्कारस वि उद्देसगा ॥

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डुजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति ण भंते ! खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे[1], कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकडजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागतेयोगे। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त खुड्डागकलियोगे से तेणट्ठेणं जाव कलियोगे ॥

३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति। एवं नेरइयाणं उववाओ जहा[2] वक्कंतीए तहा भाणियव्वो ॥

४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा कह उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं,

---

१. वातर° (क); बादर° (ता); वायर° (म)।
२. प० ६।

एवं जहा पंचविसतिमे सए अट्ठमुद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव[1] आयप्पओगेण उववज्जति नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

६. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा ओहियनेरइयाण वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव अहेसत्तमाए । एवं उववाओ जहा[2] वक्कतीए ।

> असण्णी खलु पढम, दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी ।
> [3]०सीहा जति चउत्थि, उरगा पुण पचमि पुढवि ॥१॥
> छट्ठि च इत्थियाओ, मच्छा मणुमा य सत्तमि पुढवि ।
> एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीणं ॥२॥०

सेस तहेव ॥

७ खुड्डागतेयोगनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति—कि नेरइएहिंतो ०? उववाओ जहा वक्कतीए ॥

८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति । सेस जहा कडजुम्मस्स । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

९ खुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति ? एव जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए ॥

१० खुड्डागकलिओगनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस तं चेव । एव जाव अहेसत्तमाए ॥

११. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

१२. कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति०? एव चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जति, नवर—उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाण, सेस त चेव ॥

---

१. भ० २५।६२०-६२६ ।
२. प० ६ ।
३. स० पा०—गाहा एनं उववाएयव्वा ।

१३ धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति ? एव चेव निरवसेस। एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवरं—उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए ॥

१४. कण्हलेस्सखुड्डागतेओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं—तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेसं त चेव। एवं जाव अहेसत्तमाए वि ॥

१५. कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं— दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा, सेसं तं चेव। एव धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए ॥

१६. कण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवर— एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव। एव धूम्मप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि ॥

१७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१८. नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव कण्हलेस्साखुड्डागकडजुम्मा, नवरं—उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेस तं चेव। वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एव चेव। एवं पकप्पभाए वि, एव धूमप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाण जाणियव्वं। परिमाण जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेस तहेव ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

२०. काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति ०? एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाओ जो रयणप्पभाए, सेस त चेव ॥

२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ०?

एव चेव। एवं सक्करप्पभाए वि, एवं वालुयप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं जाणियव्व जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

२३. भवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कश्रो उववज्जति—किं नेरइए-हिंतो ०? एव जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! ०? एव चेव निरव-सेस। एव जाव अहेसत्तमाए। एव भवसिद्धीयखुड्डागतेयोगनेरइया वि। एव जाव कलियोगत्ति, नवर—परिमाण जाणियव्व, परिमाण पुव्वभणिय जहा पढमुद्देसए ॥

२५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छट्ठो उद्देसो

२६. कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव—

२७. अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? तहेव ॥

२८. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

७-२८ उद्देसा

२९ नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नील-लेस्सउद्देसए ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३१. काउलेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए ।।

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३३. जहा भवसिद्धीएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहिं वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति ।।

३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

३५. एवं सम्मदिट्ठीहिं वि लेस्सासजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—सम्मदिट्ठी पढमबितिएसु दोसु वि उद्देसगेसु अहेसत्तसपुढवीए न उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ।।

३६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

३७. मिच्छादिट्ठीहिं वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं ।।

३८. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

३९. एवं कण्हपक्खिएहिं वि लेस्सासजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहिं ।।

४० सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

४१. सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-काउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? तहेव जाव नो परप्पयोगेण उववज्जंति ।।

४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ।।

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववट्टण-पदं

१. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? उव्वट्टणा जहा[1] वक्कंतीए ।।

२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति ।।

३. ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एवं तहेव । एवं सो चेव गमओ जाव[2] आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति ।।

४. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एवं रयणप्पभाए वि । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं खुड्डागतेयोग-खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव ।।

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

६. कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—उव्वट्टंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव ।।

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

---

१. प० ६ । २. भ० २५।६२०-६२६ ।

तेत्तीसइमं सतं

पढमं एगिंदियं सतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

२. पुढविक्कइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्काइया य ॥

३. सुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तासुहुमपढविक्काइया य, अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य ॥

४. वादरपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ? एव चेव । एव आउक्काइया वि चउक्कएण भेदेणं भाणियव्वा, एवं जाव वणस्सइकाइया ॥

५ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अतराइयं ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

७. अपज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं चेव ॥

८. पज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं

चेव । एव एएणं कमेण जाव वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ति[1] ॥

९. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! सत्तविहवधगा वि, अट्ठविहवधगा वि । सत्त वधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति ॥

१०. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एवं चेव, एव सव्वे जाव—

११. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एव चेव ॥

१२ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव अतराइय[2] सोइदियवज्झ, चक्खिदियवज्झ, घाणिदियवज्झं, जिब्भिदियवज्झं, इत्थिवेदवज्झ, पुरिसवेदवज्झ । एव चउक्कएण भेदेण जाव—

१३ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! एव चेव चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

१४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

१५. कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

१६. अणतरोववन्नगा ण भते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्काइया य । एव दुपएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया ॥

१७. अणतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव अतराइयं ॥

१८. अणतरोववन्नगवादरपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. X (अ, क, ख, ता)। २. °वज्जं (अ, ख, ता, ब, म)।

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयाणं[1] ति ॥

१९. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति । एवं जाव अणतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइय त्ति ॥

२०. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं, तहेव जाव पुरिसवेदवज्झं । एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयत्ति ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

२२. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्नगा एगिदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥

२३. परपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेति ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

३१. चरिमा वि जहा परपरोववन्नगा तहेव ॥

३२. एवं अचरिमा वि । एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. °गाणं (अ, ख, ब, म, स) ।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

३४ कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

३५. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३६. कण्हलेस्सा ण भंते ! सुहुमपुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ? एवं एएण अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए[1] ॥

३७ कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेति ॥

३८ सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३९ कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

---

१. °उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (स) ।

४०. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडोओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाण उद्देसओ तहेव जाव वेदेति ।।

४१. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

३-११ उद्देसा

४२. कतिविहा णं भते ! परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया, एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

४३. परपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ परंपरोववन्नगउद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिएगिदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिमकण्हलेस्सा एगिदिया ।।

३,४ सताइं

४४. जहा कण्हलेस्सेहि भणिय एव नीललेस्सेहि वि सय भाणियव्व ।।

४५. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

४६. एवं काउलेस्सेहि वि सय भाणियव्व, नवर--काउलेस्से ति अभिलावो भाणियव्वो ।।

पंचमं सतं

भवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

४७. कतिविहा णं भंते ! भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

४८. भवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धीयसयं पि भाणियव्वं । उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमो[1] त्ति ।

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

छट्ठं सतं

५०. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

५१. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

५२ कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । एवं बादरा वि । एएण अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो ॥

५३ कण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेति ॥

५४. कतिविहा ण भंते ! अणतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया ॥

५५ अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया, एवं दुयओ भेदो ॥

५६ अणतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइयाणं भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ अणतरोववन्नउद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति ॥

---

१. अचरिम (ख, ता, ब) ।

७,८ सताइं

५७. जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं भाणियव्वं ॥

५८. एवं काउलेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं ॥

९-१२ सताइं

अभवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

५९. कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया। एवं जहेव भवसिद्धीयसतं भणियं, नवरं—नव उद्देसगा चरिमअचरिमउद्देसगवज्जं, सेस तहेव ॥

६०. एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धीयएगिंदियसतं पि ॥

६१. नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिंदिएहि वि सतं ॥

६२. काउलेस्सअभवसिद्धीयसतं। एवं चत्तारि वि अभवसिद्धीयसताणि, नव-नव उद्देसगा भवंति। एवं एयाणि बारस एगिंदियसताणि भवंति ॥

चोतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियसतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं विग्गहगइ-पदं

१ कइविहा ण भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइ-काइया। एवमेते चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया ॥

२ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइ-समएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उव-वज्जेज्जा ॥

३ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उव-वज्जेज्जा ॥
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता सेढी, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा[1], दुहओखहा[2], चक्कवाला, अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओ-वंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा ॥

४ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-

---

१. °खुहा (अ)। २. °खुहा (अ)।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव[1] से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—एगसमइएणं वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा° विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु। एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहि अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि, बादरेहि अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो। एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो ॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव। एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। वाउक्काइएसु सुहुमबादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो। एवं वणस्सइकाइएसु वि ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि। एव अपज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि। एवं पज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि। एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो। सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो।

७. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण। एवं पुढविक्काइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो ॥

८. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते !

---

१. भ० ३४।२,३।

२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव विग्गहेणं।

कतिसमइएण० ? सेसं तं चेव। एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए वि उववा-एयव्वो। वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएण भेदेणं उववाएयव्वो। एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयो वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो। जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एव सव्वत्थ वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समय-खेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्या वि। वाउक्काइया वणस्सकाइया य जहा पुढविक्काइया तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वा जाव—

९. पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइए ण भते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमते पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कतिसमइएण० ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण ॥

१०. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कइसमइएण० ? सेस तहेव निरवसेस। एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, जे य समयखेत्त समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, एव एएणं चेव कमेण पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरि-मंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं। एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमते समोहयाण उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाओ। एव चेव उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ॥

११ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव रयण-प्पभाए जाव से तेणट्ठेण। एव एएणं कमेणं जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भंते! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइ-यत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कतिसमइएणं—पुच्छा।
गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

१३. से केणट्ठेणं ?
एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उवव-ज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा।

से तेणट्ठेणं। एवं पज्जत्तएसु वि बादरतेउक्काइएसु। सेसं जहा रयणप्पभाए। जे वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउक्काइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति, ते वि एवं चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा। बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेस। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए[1] भाणियव्वा॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा?
गोयमा! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा॥

१५. से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा?
गोयमा! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण अहेलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरंसि अणुसेढि[2] उववज्जित्तए, से ण तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि[3] उववज्जित्तए, से णं चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि, एव जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए॥

१६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोग[4]°खेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,° समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा?
गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा॥

१७. से केणट्ठेणं?
एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा।

---

१. अहेसत्तमाए वि (स)।
२. अणुसेढीए (अ, क, ख, ब, म, स)।
३. विसेढीए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. स० पा—अहेलोग जाव समोहणित्ता।

से तेणट्ठेण । एव पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्का-इय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएण भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाए-यव्वो । एव जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयस्स गमओ भणिओ एवं पज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ।।

१८. [अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइए ण भते ?] अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए०? एव बादरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्व । एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्व । सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्स वि एव चेव ।।

१९ अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा ।।

२०. से केणट्ठेण ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं जाव—

२१. अपज्जत्तावादरतेउकाइए णं भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ०? सेस त चेव ।।

२२ अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कइसम-इएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेजा ।।

२३. से केणट्ठेणं ?

अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविक्काइएसु उववाओ तहेव चउक्कएण भेदेणं उववाएयव्वो । एव पज्जत्ताबादरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ।।

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएण ०? एवं उड्ढ-लोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जंताण सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बादरवणस्सइ-काइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ ।।

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से ण चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा। एव अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमतेउक्काइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु वादरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवणस्सइकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेण भाणियव्वो। सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एव चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो। एवं एएण गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ॥

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ ०? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जि त्तए, से णं तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसि दुसमइओ तिसमइयो चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो ॥

२९ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेण ?
एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे ॥

३१. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते?० एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयओ[1] दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो ॥

३२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ, एवं दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो, नवरं—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेसं तहेव। एवं दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तं चेव। उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव, नवरं—एगसमइओ विग्गहो नत्थि।

---

१. समोहताओ (अ, क, व) समोहतो (स)।

उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे, उत्तरिल्ले समोहयाण पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥

एगिंदियाणं ठाण-पदं

३३. कहि णं भते ! बादरपुढविक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा[1] ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोग-परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो !

एगिंदियाणं कम्म-पदं

३४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एव चउक्कएणं भेदेण जहेव एगिंदियसएसु जाव[2] बादरवणस्सइ-काइयाण पज्जत्तगाण ॥

३५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बधति ?
गोयमा ! सत्तविहबधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि, जहा एगिदियसएसु जाव[3] पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया ॥

३६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जहा एगि-दियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं। एव जाव[4] बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्त-गाण ॥

एगिंदियाणं उववत्ति-पदं

३७. एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—कि नेरइएहितो उववज्जति० ? जहा[5] वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ ॥

एगिंदियाणं समुग्घाय-पद

३८. एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्विय-समुग्घाए ॥

---

१. प० २
२. भ० ३३।६-८।
३. भ० ३३।९-११।
४. भ० ३३।१२,१३।
५. प० ६।

एगिंदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३९. एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? तुल्ल-ट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्ल-विसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा— अत्थेगइया समाउया समोव-वन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोव-वन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया तुल्ल-विसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

बीओ उद्देसो

विसेसित-एगिंदियाणं ठाणादि-पदं

४२. कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढवि-क्काइया, दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बादरवणस्सइकाइया य ॥

४३. कहि णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव[1]

---
१. प० २।

दीवेसु समुद्देसु, एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं वादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे । अणंतोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो ! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइं सव्वेसि जहा ठाणपदे । तेसिं पज्जत्तगाण वादराणं उववाय-समुग्घाय-सट्ठाणाणि जहा तेसि चेव अपज्जत्तगाण बादराण । सुहुमाण सव्वेसिं जहा पुढविकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

४४. अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ । एव जहा एगिदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधति, तहेव वेदेंति जाव[1] अणंतरोववन्नगा वादरवणस्सइकाइया ।।

४५. अणंतरोववन्नगएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?. जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव ।।

४६. अणतरोववन्नगएगिदियाण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दोन्नि[2] समुग्घाया पण्णत्ता त जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य ।।

४७ अणंतरोववन्नगएगिदिया णं भंते ! कि तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्म पकरेंति—पुच्छा तहेव ।।
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्म पकरेंति ।

४८. से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अणतरोववन्नगा एगिदिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति । से तेणट्ठेण जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ।।

४९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

---

१. भ० ३३।१७-२० ।

२. दो (ब, म) ।

तइयो उद्देसो

५०. कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्का-इया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५१. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव[2] लोगचरिमंतो त्ति ॥

५२. कहि णं भंते ! परंपरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाणं[3] ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु । एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

५४. एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति, नवरं—अणंतरा अणंतरसरिसा, परंपरा परंपरसरिसा, चरिमा य अचरिमा य एवं चेव । एवं एते एक्कारस उद्देसगा ॥

---

१. जाव (अ, ता, ब); पुढवीए जाव (स) ।
२. भ० ३४।२-३२ ।
३. °बातर° (क, ब) ।

बिइयं सतं

१-११ उद्देसा

५५. कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५६ कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० ? एवं एएणं अभिलावेण जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंते त्ति। सव्वत्थ कण्हलेस्सु चेव उववाएयव्वो ॥

५७. कहि णं भंते ! कण्हलेस्सअपज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइय त्ति ॥

५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५९. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

३-५ सताइं

६०. एवं नीललेस्सेहि वि सतं। काउलेस्सेहि वि सतं एवं चेव। भवसिद्धिय-एगिंदिएहिं[1] सतं ॥

---

१. ०एहिं वि (म, स)।

छट्ठं सतं

६१ कइविहा ण भते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव[1] ओहिउद्देसओ ॥

६२ कइविहा ण भंते ! अणंतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव अणतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥

६३ कइविहा ण भंते ! परपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

६४ परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ॥

६५. कहि ण भते ! परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्तावादरपुढविकाइयाण ठाणा पण्णत्ता ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एव एएण अभिलावेण कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त छट्ठ सत ॥

७-१२ सताइं

६६ नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदिएसु सत । एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि सत । जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं—चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेस त चेव । एव एयाइं बारस एगिंदियसेढीसताइं ॥

६७. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. एव जहेव (स) ।

पणतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-एगिंदियाण उववायादि-पदं

१. कइ णं भंते ! महाजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—१ कडजुम्मकडजुम्मे, २ कडजुम्मतेओगे, ३ कडजुम्मदावरजुम्मे[1], ४ कडजुम्मकलियोगे, ५ तेओगकडजुम्मे, ६ तेओगतेओगे, ७ तेओगदावरजुम्मे, ८ तेओगकलिओगे, ९ दावरजुम्मकडजुम्मे, १० दावरजुम्मतेओगे, ११ दावरजुम्मदावरजुम्मे, १२ दावरजुम्मकलियोगे, १३ कलिओगकडजुम्मे १४ कलियोगतेओगे, १५ कलियोगदावरजुम्मे, १६. कलियोगकलिओगे ॥

२. से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे[2] चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकडजुम्मे १। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मतेयोए २। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे·ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्त कडजुम्मदावरजुम्मे ३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकलियोगे ४। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेत्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए,

---

१. °वादरजुम्मे (अ, ख, ता, म); °वातरजुम्मे (क)। २. अवहारमाणा (अ); अवहारमाणे (म)।

जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगतेओगे ६। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दोपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहार-समया तेयोगा, सेत्त तेओगदावरजुम्मे ७। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगकलियोगे ८। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्ज-वसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकड-जुम्मे ९। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्त दावरजुम्मतेयोए १०। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मदावरजुम्मे ११। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मकलियोए १२। जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलिओगकडजुम्मे १३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलियोगतेयोए १४। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोग-दावरजुम्मे १५। जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगकलिओगे १६। से तेणट्ठेण जाव कलिओगकलिओगे ॥

३ कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो० ?
जहा[1] उप्पलुद्देसए तहा उववाओ ॥

४ ते ण भंते! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जंति ?
गोयमा! सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति ॥

५. ते ण भंते! जीवा समए समए—पुच्छा।
गोयमा! ते ण अणता समए समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया[2] सिया। उच्चत्तं जहा[3] उप्पलुद्देसए ॥

६. ते ण भंते! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ?
गोयमा! बंधगा, नो अबंधगा। एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं। आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा ॥

---

१. भ० ११।२।
२. अवहरिया (स)।
३. भ० ११।५।

७. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स—पुच्छा।
गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा। एवं सव्वेसिं॥

८. ते णं भंते ! जीवा किं सातावेदगा ? असातावेदगा[1] ?
गोयमा ! सातावेदगा वा असातावेदगा वा। एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी[2]। सव्वेसि कम्माण उदई, नो अणुदई। छण्ह कम्माण उदीरगा, नो अणुदीरगा। वेदणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा॥

९. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा—पुच्छा।
गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा। नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अण्णाणी—नियम[3] दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य। नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा॥

१०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[4] कतिवण्णा ? जहा[5] उप्पलुद्देसए सव्वत्थ—पुच्छा।
गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा वा। आहारगा वा अणाहारगा वा। नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया। सकिरिया, नो अकिरिया। सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा। आहारसण्णोवउत्ता वा जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वा। कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा। इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुसगवेदबधगा वा। नो सण्णी, असण्णी। सइंदिया, नो अणिंदिया॥

११. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिरं[6] होंति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण अणंतं कालं—अणंता ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, वणस्सइकाइयकालो। संवेहो न भण्णइ, आहारो जहा[7] उप्पलुद्देसए नवरं—निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं, सेसं तहेव। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण बावीसं वाससहस्साइं। समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि। मारणंतियसमुग्घातेण समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहा[8] उप्पलुद्देसए॥

१२. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो॥

---

१. पुच्छा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
२. भ० ११।६-११।
३. नियमा (अ, ब)।
४. सरीरा (ख, स)।
५. भ० ११।१७-२८।
६. केवचिरं (अ, क, ख, ब, म)।
७. भ० ११।३५।
८. भ० ११।३६।

१३. कडजुम्मतेओयएगिंदिया ण भते ! कम्रो उववज्जंति० ? उववाम्रो तहेव[1] ।।

१४ ते ण भते ! जीवा एगसमए—पुच्छा ।
गोयमा ! एकूणवीसा वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस जहा कडजुम्मकडजुम्माण जाव अणतखुत्तो ।।

१५ कडजुम्मदावरजुम्मएगिंदिया ण भते! कओहिंतो उववज्जति०?उववाओ तहेव ।।

१६ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
गोयमा ! अट्ठारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ।।

१७ कडजुम्मकलियोगएगिंदिया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ तहेव परिमाणं सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

१८ तेयोगकडजुम्मएगिंदिया णं भते ! कओहिंतो उववज्जति० उववाओ तहेव, परिमाणं बारस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

१९ तेयोयतेयोयएगिंदिया णं भते ! कओहितो उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पन्नरस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो । एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ, नवर—परिमाणे नाणत्त—तेयोयदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवज्जति । तेयोगकलियोगेसु तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जति । दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । कलियोगकडजुम्मे चत्तारि वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगतेयोगेसु सत्त वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जति । कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ।।

२०. कलियोगकलियोगएगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पच वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

२१ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. भ० ३५।३ ।

बीओ उद्देसो

२२. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
गोयमा ! तहेव, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ[1] भाणियव्वो, तहेव सव्वं, नवर—इमाणि दस नाणत्ताणि—१. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। २ आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा। ३. आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा। ४. नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा। ५. सत्तविहबंधगा, नो अट्ठविहबंधगा।।

२३. ते ण भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! ६. एक्कं समयं। ७. एवं ठिती वि। ८. समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि। ९. समोहया न पुच्छिज्जंति। १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेस तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो।।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।।

३-११ उद्देसा

२५. अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु[2] तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अणतखुत्तो।।

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।।

२७ चरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवर—देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जति, सेसं तहेव।।

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।।

२९. अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा अपढमसमयउद्देसो[3] तहेव निरवसेसो भाणितव्वो।।

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।।

---

१. बितिओ वि (अ, क, ख, ब, म)।
२. जुम्मेहिंसु (ता)।
३. पढम० (अ, क, ख, ता, ब)।

३१. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥

३२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३३ पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो ॥

३४ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३५. पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेस ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३७ पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा 'बीओ उद्देसओ'[1] तहेव निरवसेस ॥

३८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३९. चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ[2] तहेव निरवसेस ॥

४०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४१ चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ॥

४२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

४३ एवं एए एक्कारस उद्देसगा। पढमो ततिओ पंचमो[3] य सरिसगमा, सेसा अट्ठ सरिसगमा, नवरं—चउत्थे[4] अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति। तेउलेस्सा नत्थि ॥

बितियं एगिंदियमहाजुम्मसतं

४४ कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
गोयमा ! उववाओ तहेव, एवं जहा ओहिउद्देसए, नवरं इमं नाणत्तं ॥

४५. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा ॥

---

१. पढमउ° (अ, क, ख)।
२. चउत्थुद्देसओ (ता)।
३. पचमगो (अ, क, ब, म); पंचमओ (ख, ता)।
४. चउत्थे छट्ठे (अ, ब)।

४६. ते णं भंते ! कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं ठिती वि । सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो । एव सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ?
जहा पढमसमयउद्देसओ, नवर—

४९. ते ण भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेस तहेव[1] ॥

५०. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

५१. एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवर—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स ॥

५२. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एवं नीललेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं, एक्कारस उद्देसगा तहेव ॥

५४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५५. एवं काउलेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं ॥

५६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

५७. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? जहा ओहियसतं तहेव, नवरं—एक्कारससु वि उद्देसएसु ॥

५८. अह भते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तहेव ॥

५९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

६०. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?
एवं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं बितियसतकण्हलेस्ससरिस भाणियव्वं ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. त चेव (स) ।

६२. एवं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियएहि वि सतं ।।

६३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

६४ एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत । एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि। चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६५. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

६६ जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सताइ भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासजुत्ताणि भाणियव्वाणि । सव्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे । एव एयाइ वारस एगिंदियमहाजुम्मसताइ भवंति ।।

६७. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

छत्तीसइमं सतं

पढमं बेंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा[1] वक्कतीए। परिमाण सोलस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जति। अवहारो[2] जहा[3] उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण बारस जोयणाइ। एवं जहा एगिदियमहाजुम्माण पढमुद्देसए तहेव, नवरं—तिण्णि लेस्साओ, देवा न उववज्जति। सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अण्णाणी वा। नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा ॥

२. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्ज कालं। ठिती जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइ। आहारो नियम छद्दिसि। तिण्णि समुग्घाया, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु ॥

३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

४. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा एगिदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए। दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि।

---

१. प० ६।
२. आहारो (अ, क, ता, ब)।
३. भ० ११।४।

एक्कारसमं इम नाणत्तं—नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेस जहा वेदियाणं चेव पढमुद्देसए ।।

५ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

६ एव एए वि जहा एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवरं—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णति। जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा।

२-१२ वेंदियमहाजुम्मसताइं

७. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मवेंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत, नवर—लेस्सा, सचिट्ठणा[1] जहा एगिंदियकण्हलेस्साण ।।

८ एव नीललेस्सेहि वि सत ।।

९. एव काउलेस्सेहि वि ।।

१०. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मवेंदिया ण भते० ? एवं भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएण नेयव्वा, नवर—सव्वे पाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे। सेस तहेव ओहियसताणि चत्तारि ।।

११. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

१२. जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एव अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवर—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहिं नत्थि, सेस त चेव। एव एयाणि बारस वेंदियमहाजुम्मसताणि भवति ।।

१३ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

---

१ सचिट्ठणा ठिती (अ, ब, स)

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेंदियाणं उववायादि-पद

१. कडजुम्मकडजुम्मतेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं तेंदिएसु वि बारस सता कायव्वा बेंदियसतसरिसा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एकूणवण्णं राइंदियाइ, सेस तहेव ॥

२. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१. चउरिदिएहि वि एवं चेव बारस सता कायव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ। ठिति जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सेसं जहा बेंदियाण ॥

२. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपचिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा बेंदियाण तहेव असण्णिसु वि बारस सता कातव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसहस्सं। सचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त। ठिती जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेस जहा बेंदियाण ॥

२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

चत्तालीसतिमं सत

पढमं सण्णिपंचिदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचिदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भंते ! कओ उववज्जति०? उववाओ चउसु वि गईसु। संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति। परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचिदियाणं। वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्ह पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा। मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा। सायावेदगा वा असायावेदगा वा। मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई। नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सम्मदिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा। नाणी वा अण्णाणी वा। मणजोगी वइजोगी कायजोगी। उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं। विरया य अविरया य विरयाविरया य। सकिरिया, नो अकिरिया॥

२. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा? अट्ठविहबंधगा? छव्विहबंधगा? एगविहबंधगा वा?
गोयमा! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा॥

३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता? नोसण्णोवउत्ता?
गोयमा! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा। सव्वत्थ पुच्छा भाणि-यव्वा – कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा। इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा। इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेद-बंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा। सण्णी, नो असण्णी। सइंदिया,

नो अणिदिया। संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेग। आहारो तहेव जाव नियम छद्दिसिं। ठिती जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ। छ समुग्घाया आदिल्लगा। मारणतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति। उव्वट्टणा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति।

४. अह भंते! 'सव्वेपाणा'[1] जाव अणंतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणतखुत्तो, नवरं—परिमाण जहा वेइंदियाण, सेस तहेव॥

५. सेवं भंते! सेव भते! त्ति॥

२-११ उद्देसा

६ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया ण भते! कओ उववज्जति०? उववाओ, परिमाण आहारो जहा एएसि चेव पढमोद्देसए। ओगाहणा बधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेंदियाण पढमसमइयाण, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सेस जहा बेंदियाण पढमसमइयाण जाव अणतखुत्तो, नवरं—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेसं तहेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्व।

७. सेवं भते! सेव भते! त्ति॥

८. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो॥

९. सेवं भते! सेवं भंते! त्ति॥

बितियं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

१०. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिंदिया णं भते! कओ उववज्जंति०? तहेव पढमुद्देसओ सण्णीणं, नवर—बंध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-बधग-सण्ण[2]-कसाय-वेदबधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं। कण्हलेस्साण वेदो तिविहो, अवेदगा नत्थि। सचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठिती वि, नवरं—ठितीए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

---

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, ब, स)। २. सण्णि (ता); सण्णा (म, स)।

भण्णंति । सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा सण्णिपंचिंदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तं चेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५. एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए । पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७ एवं नीललेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठिती वि । एवं तिसु उद्देसएसु[1], सेसं तं चेव ॥

१८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१९. एवं काउलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठितीवि । एवं तिसु वि उद्देसएसु, सेसं तं चेव ॥

२० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२१ एवं तेउलेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं । एवं ठितीवि, नवरं—नोसण्णोवउत्ता वा । एवं तिसु वि उद्देसएसु[2], सेसं तं चेव ॥

२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२३. जहा तेउलेस्ससतं तहा पम्हलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । एवं ठितीवि नवरं—अंतोमुहुत्तं न भण्णति, सेसं तं चेव । एवं एएसु पंचसु सतेसु जहा कण्हलेस्ससते गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो ॥

---

१. प्रथम-तृतीय-पञ्चमेषु (वृ) ।

२. गमएसु (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२५. सुक्कलेस्ससतं जहा ओहियसतं, नवरं—संचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससते, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥

२६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२७. भवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा पढम सण्णिसत्तं तहा नेयव्वं भवसिद्धीयाभिलावेण, नवरं—

२८. सव्वे पाणा[1]०?
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं त चेव ।

२९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३० कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं एएण अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससत ॥

३१. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

३२. एव नीललेस्सभवसिद्धीए वि सत ॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३४. एव जहा ओहियाणि सण्णिपचिदियाणं सत्त सताणि भणियाणि, एवं भवसिद्धीएहि वि सत्त सताणि कायव्वाणि, नवरं—सत्तसु वि सतेसु सव्वे पाणा जाव नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस तं चेव ॥

३५. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कओ उववज्जति०? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो । परिमाण अवहारो उच्चत्त बधो वेदो वेदण उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससते, नवरं—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउद्देसए । समुग्घाया आदिल्लगा पच । उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस जहा कण्हलेस्ससते जाव अणतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ।

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० ४०।४ ।

३८ पढमसमयअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिंदिया ण भंत ! कओ उवव-ज्जति० ? जहा सण्णीण पढमसमयउद्देसए तहेव, नवरं—सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाण च सव्वत्थ नत्थि, सेस तहेव ॥

३६ सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४० एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पचमा एक्कगमा, सेसा अट्ठ वि एक्कगमा ॥

४१ सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिंदिया ण भते ! कओ उव-वज्जति०? जहा एएसि चेव ओहियसत तहा कण्हलेस्ससय पि, नवरं—

४३. ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हता कण्हलेस्सा । ठिती, सचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेस त चेव ॥

४४ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

४५. एव छहि वि लेस्साहि छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससतं, नवरं—सचिट्ठणा ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवर—सुक्कलेस्साए उक्कोसेण इक्कतीसं सागरोवमाइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ । ठिती एव चेव, नवर—अतो-मुहुत्त नत्थि जहण्णग तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि । विरई विरया-विरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४७ एव एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइं भवति ।

४८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४६. एव एयाणि एक्कवीस सण्णिमहाजुम्मसताणि । सव्वाणि वि एकासीतिमहा-जुम्मसताइ ॥

एगचत्तालीसतिमं सतं

पढमो उद्देसो

रासीजुम्म-नेरइयादीणं उववायादि-पदं

१. कति णं भंते ! रासीजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कड-जुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकडजुम्मे । एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं एगपज्जव-सिए, सेत्तं रासीजुम्मकलियोगे । से तेणट्ठेण जाव कलियोगे ॥

३. रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा[1] वक्कंतीए ॥

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा किं संतरं[2] उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ?
गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति । संतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जे समए अंतरं कट्टु उववज्जंति । निरंतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति ॥

६. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ? जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. प० ६ ।   २. सांतरं (ब, म) ।

७. जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा त समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

८. जं समय कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ? जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

९. ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, एवं जहा उववायसते जाव[1] नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

१०. ते णं भते ! जीवा किं आयजसेण उववज्जंति ? आयअजसेणं उववज्जति ?
गोयमा ! नो आयजसेण उववज्जति, आयअजसेणं उववज्जंति ॥

११ जइ आयअजसेण उववज्जति—किं आयजसं उवजीवंति ? आयअजस उवजीवंति ?
गोयमा ! नो आयजसं उवजीवति, आयअजसं उवजीवंति ॥

१२. जइ आयअजसं उवजीवति—कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥

१३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

१४ जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१५ रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहेव नेरतिया तहेव निरवसेस । एव जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया, नवरं—वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस एवं चेव । मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेण उववज्जति ॥

१६ जइ आयअजसेण उववज्जंति—किं आयजसं उवजीवति ? आयअजसं उवजीवति ?
गोयमा ! आयजस पि उवजीवति, आयअजसं पि उवजीवंति ॥

१७. जइ आयजस उवजीवंति कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ॥

१८. जइ अलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा नो सकिरिया, अकिरिया ॥

१९ जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

---

१. भ० ३१।५।

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२१. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ॥

२२. जइ आयअजसं उवजीवंति कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥

२३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवरं—परिमाणं तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । संतरं तहेव ॥

२७. ते णं भंते ! जीवा जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२८. जं समयं तेयोया तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेयोया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि समं, सेस तं चेव जाव वेमाणिया नवरं—उववाओ सव्वेसि जहा[1] वक्कंतीए ॥

२९. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

---

१. प० ६ ।

तइओ उद्देसो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ, नवरं—परिमाण दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, सवेहो ॥

३१. ते णं भते ! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? जं समय कड-जुम्मा तं समय दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं कलियोगेण वि समं, सेस जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३२. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

३३ रासीजुम्मकलिओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा उवव-ज्जंति, संवेहो ॥

३४. ते णं भते ! जीवा जं समयं कलियोगा त समय कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समय कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३५ सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देसा

३६. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा धूमप्पभाए, सेस जहा पढमुद्देसए । असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंत-राणं । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाण आयअजसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकि-रिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति एवं न भाणियव्वं, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥

३७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३८ कण्हलेस्सतेयोएहि वि एवं चेव उद्देसओ ॥

३९. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

४०. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ ॥

४१. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ। परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वा[1]। एवं एए वि कण्हलेस्सा-सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५०. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव। एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९–५६ उद्देसा

५४. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५६. कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा।

५७. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

---

१. भाणियव्व (ख, ता)।

५८. एव काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥
६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा। एवं एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीस उद्देसगा भवंति ॥
६२. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५७-८४ उद्देसा

६३. अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमो उद्देसगो, नवरं—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेसं तहेव ॥
६४. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥
६५. एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥
६६. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एव चेव चत्तारि उद्देसगा ॥
६७. एव नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा।
६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा। एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा ॥
७२. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

८५-११२ उद्देसा

७३. सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववजंति० ? एवं जहा पढमो उद्देसओ। एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा ॥
७४. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
७५. कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा। एव सम्मदिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीस उद्देसगा कायव्वा ॥
७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

११३-१४० उद्देसा

७७. मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेण अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा।

७८. सेवं भंते । सेवं भंते ! त्ति ।।

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ।।

८०. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

१६९-१९६ उद्देसा

८१. सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति। एव एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसय जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव—

८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंत करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८३. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ।।

८४. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेय भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेय भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! सच्चे ण एसमट्ठे, जे णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु अपुव्ववयणा[1] खलु अरहंता भगवंतो, समणं भगवं महावीरं वंदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

।। इति भगवई समत्ता ।।

ग्रंथाग्र

कुलगाथा १९३१९ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

---

१. अपूतिवयणा (अ, क, ता, ब, म)।

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं (१३८), उद्देसगाणं एगूणविसतिसताणी पंचविसइअहियाणी (१९२५)।

संगहणी-गाहा

चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदसीहिं।
भावाभावमणंता, पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ॥ १ ॥
तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो।
हेतुसतविपुलवेगो, संघसमुद्दो गुणविसालो ॥ २ ॥

पोत्थयलेहगकया नमोक्कारा

णमो गोयमाईणं गणहराणं, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥

कुम्मसुसंठियचलणा, अमलियकोरेंटबेटसंकासा।
सुयदेवया भगवई, मम मतितिमिरं पणासेउ ॥१॥

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति, नवरं—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति। नवमाओ सताओ आरद्धं जावइयं-जावइयं ठवेति तावतियं-तावतियं[1] उद्दिसिज्जति, उक्कोसेणं सतं पि एगदिवसेणं, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सतं, जहण्णेणं तिहिं दिवसेहिं सतं। एवं जाव वीसतिमं सतं, नवरं—गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति, जदि ठियो एगेण चेव आयबिलेणं अणुण्णवति[2]। अह ण ठितो आयबिलेणं छट्ठेणं अणुण्णवति। एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइं सताइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जति। चउवीसतिमं सतं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। पंचवीसतिमं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं, सेढिसयाइं बारस एगेणं, एगिंदियमहाजुम्मसयाइं बारस एगेणं, एवं बेंदियाणं बारस, तेंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं बारस एगेणं, असण्णि-

---

१. °तियं एगदिवसेण (ख, स)।

२. अणुणच्चति (ता, स); अणुणज्जति (अ, ब)

पंचिदियाणं बारस, सण्णिपंचिदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति, रासीजुम्मसतं एगदिवसेण उद्दिसिज्जति ।।

गाहातिगं

केषुचिदादर्शेषु पुस्तकलेखककृता अन्यापि गाथात्रयी लभ्यते—

विग्रसियअरविंदकरा, नासियतिमिरा सुयाहिया देवी ।
मज्झं पि देउ मेहं, बुहविबुहणमसिया णिच्चं ।।१।।
सुयदेवयाए पणमिमो, जीए पसाएण सिक्खियं नाणं ।
अण्णं पवयणदेविं, संतिकरिं तं नमंसामि ।।२।।
सुयदेवया य जक्खो, कुंभधरो बंभसंतिवेरोट्टा ।
विज्जा य अंतहुंडी, देउ अविग्घं लिहंतस्स ।।३।।

परिशिष्ट :



परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिय जाव पव्वइत्तए	१८।१४७	६।१६७
अवकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्म	१५।१२६	१५।१२०
अकततरिय जाव अमणामतरियं	१६।३५	१।२२४
अकता जाव अमणामा	७।११६	१।३५७
अकिट्ठे जाव विहरामि	३।१२६	३।१२६
अगामियाए जाव अडवीए	१५।८७	१५।८६
अगामियाए जाव सव्वओ	१५।८८	१५।८६
अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे	६।१७६	६।१७६
अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।४४२	१।११
अच्चासाइए जाव तं	३।१२६	३।१२६
अच्छे जाव पडिरूवे	२।११८	वृत्ति
अजीवदव्वदेसे जाव अणतभागूणे	११।१०८	११।१०८
अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स	११।१०८	२।१४
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ	३।१३१	२।३१
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	२।६७; ३।३३, ३६, ११२, ११५, ११६, ५।८५; ६।१५८, २२८; ११।५६, ७२, ८५, १८८; १२।६; १३।१०३; १०६, ११६; १५।५३, ७५;१२८, १२६, १४१, १४८	२।३१
अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न	१३।१०४	२।३१
अट्ठं जाव जाणाओ	१।४२४	१।४२३
अट्ठं वा जाव वागरण	५।१०४	५।१०४
अट्ठं वा जाव वागरेइ	५।१०५	५।१०४

वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से		
पुरिसे काइयाए जाव पचहिं	१।३६७	१।३६५
एक्केण वा जाव उक्कोसेण	२०।११८	२०।११८
एगरूवं जाव हंता	७।१६८	७।१६७
एगवण्णाइ आणमंति वा पाणमंति वा ऊससति		
वा नीससति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पचदिसि	२।४,५	प० २८।१
°एगिंदिय जाव परिणए	८।५१	८।५१
एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपयोगपरिणया जाव पचिंदिय०	८।२	२।१३९
एतेण अभिलावेणं चत्तारि भगा	३।१५६	३।१५४
एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से	६।१५६-१५९	वृति; जी. ३
एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवरं अणुदिण्ण		
उवसामेइ सेसापडिसेहेयव्वा तिण्णि । ज त भते !		
अणुदिण्ण उवसामेइ तं किं उट्ठाणेण जाव		
पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा । से नूणं भते ! अप्पणा		
चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि मच्चेव		
परिवाडी, नवरं उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण		
वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ।		
से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प०		
एत्थ वि, सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअण-		
तरपच्छाकड कम्म निज्जरेइ एव जाव		
परक्कमेइ वा	१।१५१-१६२	१।१४७-१५०
एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे	३।४	३।४
एयति जाव अते	३।१४८	३।१४४
एयति जाव त	३।१४३	३।१४३
एयति जाव नो	३।१४६-१४८	३।१४३
एयति जाव परिणमइ	३।१४५	३।१४३
एयाणि वि तहेव नवर सत्त		
संवच्छराइं सेस त चेव	६।१३१	६।१२९
एव अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण तहिं नवरं		
झियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसंवट्टगस्स		
महामेहस्स मज्झंमज्झेणं तहिं उल्ले सिया ।		

एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो	१८।१४९	८।२२३
एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय	२०।२७	१८।११२
एव जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल०	९।६६-६८	९।४४-४६
एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वा । एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्व, नवर —ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे । एव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वो	९।२३-२८	९।२१,२२
एवं जहा इंदादिसा तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव अद्धासमए	११।१००	१०।५
एव जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थ य जे ते उवउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो	१८।६६-७१	प० ४
एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव	९।२१४,२१५	९।१५०,१५१
एव जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव	१४।११०-११२	ओ० सू० ११८-१२०
एव जहा ओववाइए कूणिओ जाव निगच्छइ	९।२०९	ओ० सू० ६९
एव जहा ओववाइए जाव आराहगा	१४।१०७-१०९	ओ० सू० ११५-११७
एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्व जाव आलोय	९।२०४	ओ० सू० ६४
एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्व०	९।१३३-१३५	१।४३१-४३३
एव जहा कोट्ठवट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ	१२।५९	१२।२२
एव जहा खदए जाव जओ	१५।१५७	२।३८
एव जहा खदए जाव से तेणट्ठेण जाव नो असरीरी	१६।३,४	२।११,१२
एवं जहा खदओ जाव एय	७।२०३	२।६८
एवं जहा छट्ठसए जाव नो	१६।५२	६।४
एवं जहा छट्ठसए तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा	१६।५२	६।४
एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया	१२।१९८	जी० ३; भ० वृत्ति
एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए	१३।४५	जी० ३; भ० वृत्ति

एव जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि	१३।१६६	३।१९२
एवं जहा तइयसए पंचमुद्देसए जाव नो	१३।१५०	३।१९६
एव जहा तामली जाव सक्कारेइ	११।६३	३।३३
एवं जहा तित्थगरमायरो जाव	१६।८७	१६।८६
एव जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासति	११।१७८	२।१८७, ओ० सू० ५२
एव जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव	८।४३६	८।४१७
एव जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव	८।४३५	८।४१६
एव जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा	१२।२०२	१२।२०१
एवं जहा दसमसए जाव नामधेज्जेत्ति	१३।५०,५१	१०।३,४
एव जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ	१२।३३	९।१३९
एवं जहा णाणावरणिज्जं नवरं दंसणनाम घेतव्वं जाव दसण०	८।४२१	८।४२०
एव जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए	२५।३५९,३६०	२५।३५६,३५७
एव जहा नेरइयउद्देसए जाव	१३।४६	जी० ३, भ० वृत्ति
एव जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेणं	१८।१९२-१९५	५।१५७
एव जहा पढमं पारणगं नवरं	११।६६	११।६४
एव जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ	१२।२२	१।४५
एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु	७।१५६,१५७	१।२००,२०९
एव जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो	१७।५१-५४	१।२७७-२८०
एव जहा पढमसए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं	७।१६५	१।४३६
एव जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ	२०।२१,२२	१२।११९,१२०
एवं जहा वितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओग	१३।५९	२।१३७
एव जहा बितियसए जाव तिविहाए	९।१४६	२।९७
एव जहा वितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे	१५।९-१२	२।१०६,१०७
एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए	१८।४०	राय०सू०६७५
एव जहा रायपसेणइज्जो चित्तो	१८।२२१	राय०सू०६४५
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण	९।१८२	राय०सू०२७९
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डियं	७।१५७,१५८	राय०सू०७७२

एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणिया तहा आउएण वि सम भाणियव्वं	८।४८८	८।४८६
एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से	१८।१३४,१३५	७।२१२,२१३
एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया०	८।४२२	७।११४
एव जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से	१०।१४	७।२१
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स	६।१२४	५।६७
एव जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियवत्तव्वया भाणियव्वा, वलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्व जाव सजोएत्तारो	१२।५६	१२।५४
एव जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं	६।१६०	राय०सू०२७५
एवं जहा सूरियाभो	१६।६०-६३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाण नवरं देवे	१४।१६,२०	१४।१७,१८
एव जहेव भासा	१३।१२६	१३।१२४
एव जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेण पडिलाभेइ सेसं त चेव जाव चउत्थ	१५।३६-४४	१५।२५-३०
एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं	१५।३२-३७	१५।२५-३०
एवं जहेव विज्जाचारस्स नवरं तिसत्तखुत्तो	२०।८५	२०।८१
एवं जहेव सक्कस्स जाव तए	१४।२५	१४।२२
एव जाव अलोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव उत्तर०	११।११०	११।११०
एवं जाव भावओ	८।१८८	८।१८८
एवं जाव भावओ	८।१६१	८।१६१
एव जाव मणपज्जवनाण	६।३१	६।३१
एवं जाव लोए	११।१०८	११।१०८
एवं जाव से	१३।१५६	ओ०सू०१५०
एव जाव हुंडे	१४।८१	ठा०६।३१
एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्त, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	६।५८-६३	६।३६-४१

एव तं चेव नवरं	११।७०	११।६४
एव त चेव नवर नियम सपडिक्कमे	१३।१४५	१३।१४४
एव तवे संजमे	१।४२,४३	१।४१
एव तिण्णि वि भाणियव्वा	६।३६	६।३६
एव तिपएसिय वि, नवर सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स। एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे। एव रसेसु वि, सेस त चेव। एवं पचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव।	१८।११३-११५	१८।११२
एव तेइंदिया एव चउरिंदिया	२५।२	२५।२
एव दसणाराहणं पि एव चरित्ताराहण पि	८।४६५,४६६	८।४६४
एव दरिसणावरणिज्ज पि	६।३४	६।३४
एवं धायइसड दीवं जाव हंता	१८।१५३	१८।१५२
एव नाणी आभिणिवोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी एएसिं दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] संचिट्ठणा जहा कायट्ठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पावहुगाणि तिण्णि जहा वहुवत्तव्वयाए	८।१९३-२०७	प०१८,जी०१०,प०३;भ०वृत्ति।
एव नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेण। उसिओदयं वा गच्छइ, पयोदय वा गच्छइ	३।१७५-१७७	३।१७४
एव पडिउच्चारेतव्व	१।३४	१।३३
एव परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेदं	२।७६	१।४२०
एवं वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२१०	३।२०६
एव वितिओ वि आलावगो नवर वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२४१	३।२४०
एवं वीरियायाए वि समं	१२।२०३	१२।२०३
एव वेदणापरिणामं	१४।४१	१४।४०
एवं सपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहा असपत्तेण	८।२५१	८।२५१
एव सवरेण वि	९।३१	९।३१

एवं संसार आउलीकरेति एवं परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एव ह्रस्सीकरेति एव अणु-परियट्टेति एवं वीईवयति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि	१।३८६-३६१	१।३८४,३८५
एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्व	३।७२	३।७२
एव सव्वजीवा वि अणतखुत्तो	१२।१५२	१२।१५१
एवं सिणायस्स वि	२५।३५८	२५।३५७
एवतियं जाव करेज्जा	२४।४७,५०	२४।२७
एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो	७।१६३	७।१६२
एवमाइक्खइ जाव एवं	१५।७,२७	१।४२०
एवमाइक्खति जाव एवं	१।४४४	१।४२०
एवमाइक्खति जाव परूवेति	१।४४२	१।४२०
एवमाइक्खामि जाव एवामेव	५।१३७	५।१३६
एवमाइक्खामि जाव परूवेमि	१।४२१	१।४२०
एसणिज्जं जाव साइम	७।२४	७।२२
ओग्गहं जाव विहरइ	६।१५६	२।३०
ओग्गहे जाव धारणा	२०।२०	१२।११०
ओग्गहो जाव धारणा	८।१००	८।६८
ओभासंति जाव पभासेति	७।२२६	७।२२८
ओभासेइ जाव छद्दिसिं	१।२५८-२६६	वृत्ति; प०११
ओराल जाव अतीव	२।४३	२।४२
ओरालिए जाव कम्मए	१०।८;१६।१७	८।३६६
ओवसमिए जाव सन्निवाइए	१७।१६	१४।८१
ओसप्पिणी जाव समणाउसो	५।२३	५।१६
ओहिनाणी रूविदव्वाइं जाणइ पासइ जहा नंदीए जाव भावओ	८।१८६	नंदी सू०२२
ओरालेणं जाव किसे	२।६६	२।६४
कक्खिए जाव कलुस०	६।२३२	२।२७
कक्खियस्स जाव कलुस०	११।८४	२।२७
कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहिय-विणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ		

घणवाए०	१।३०५	१।२९७
चउक्क जाव पहेसु	९।२०८	२।३०
चउत्थ जाव विचित्तेहिं	११।१६९	२।६३
चउभगो	३।१५७	३।१५४
चउभगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इह वि भाणियव्व, नवर अणगारे इह गई च इह गते चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेस त चेव जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए हता पभू ! से भते ! कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ	७।१६९-१७२	६।१६३-१६७
चंदिम जाव तारारूवा	६।१४३	६।८३
चक्केण जाव पकढिज्ज०	१६।६७	ओ० सू० १९
चक्खिदिय जाव परिणया	८।३४	८।३४
चच्चर जाव बहुजणसद्दे इ वा जहा ओववाइए जाव एव	९।१५७	ओ० सू० ५२
०चडगर जाव परिक्खित्त	९।१६५	९।१६२
चरमाणे जाव एगजवुए	१६।४८	१।७
चरमाणे जाव जेणेव	१५।१४५	१।७
चरमाणे जाव विहरमाण	१३।१०१	१।७
चरमाणे जाव समोसढे	१८।१३७	१।७
चरमाणे जाव सुहसुहेणं	९।२२३	१।७
चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।११,४४३	१।११
चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था	२।४९,६६	२।३१
चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव	२।६६	२।६४
चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे	१६।९१	१६।९१
चेव जाव अप्पवेयण०	७।२२६	७।२२६
चेव जाव अप्पवेयण०	१८।१००	५।१३३
चव जाव चिट्ठित्तए	५।१११	५।११०
चेव जाव महावेयण०	७।२२६	७।२२६
चेव जाव महावेयण०	१८।१००	५।१३३
छट्ठछट्ठेण जाव आयावेमाणं	१५।१७९	३।३३
छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स	११।१८७	११।१८६
छट्ठं त चेव जाव जिणसद्दं	१५।१३	२।११०;१५।१२

जहा ओववाइए जाव अभिनंदंता	६।२०८	ओ०सू० ६८
जहा ओववाइए जाव गगण०	६।२०४	ओ०सू० ६४
जहा ओववाइए जाव गहणयाए	११।८५	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव लूहाहारे	२५।५७१	ओ०सू० ३५
जहा ओववाइए जाव सत्थवाह०	६।१५८	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव सव्वगाय०	२५।५७१	ओ०सू० ३६
जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए	२५।५६६	ओ०सू० ३४
जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे	१२।१६०	७।१२२
जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते	७।१६६	७।१७६
जहा कोहे तहेव	१२।१०४	१२।१०३
जहा खंदए जाव अणंता	११।१०८	२।४५
जहा खंदए जाव गढपट्ठे	१३।१४२	२।४६
जहा खंदए जाव परिक्खेवेण	११।११०	२।४७
जहा खंदए जाव सव्वण्णू	१२।२१	२।३८
जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ	५।४६-५०	२।८-१२
जहा खंदओ जाव अण्णेसु	६।१३७	२।२४
जहा खंदओ जाव से	६।१५०	२।५२
जहा गोयमसामी जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०७
जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिसंसाहणया	२५।५८५	१४।३२
जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं	११।५६	३।३३
जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइम-साइम जाव सयमेव	३।१०१,१०२	३।३२,३३
जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं	१६।६८	१५।११६
जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ	१२।३४	६।१४०
जहा नंदीए जाव भावओ	८।१८७	नंदी सू० २५
जहा नाणावरणिज्जं	६।३४	६।३४
जहा नियठुद्देसए जाव तेण	११।७६	२।११०,११।७३
जहा पंचमसए जाव जे	६।१२२	५।२५५
जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	७।२३१	१।४३३

जहा पण्णवणाए जाव नालियरी	८।२१७	प० १
जहा पण्णवणापदे जाव फला	८।२१८,२१९	प० १
जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव	१८।१८०,१८१	१८।१७८,१७९
जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा	१।१३६-१३८	१।१३३-१३५
जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे	१२।११३	१२।१०२
जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा	३।६०-६३	३।५६-५९
जहा पादुब्भवा	३।६५-६७	३।५७-५९
जहा बितियसए जाव जीवियास	८।२७२	२।९५
जहा भासा तहा भाणियव्वा किरियावि जाव करणओ	१।४४३	१।४४३
जहा भासा तहा मणे वि जाव नो	१३।१२६	१३।१२४
जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ	११।१५९	राय०सू० १६१
जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण०	१३।९८	राय०सू० १८५
जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं	१३।८७	राय०सू० ७५५
जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ	१०।४४	१।२८८
जहा विजयस्स जाव जम्मजीवियफले	१५।१५९,१६०	१५।२६,२७
जहा संवुडे नवरं आउयं च ण कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ सेस तहेव जाव वीईवयइ	१।४३८	१।४७
जहा सत्तमसए जाव एगतपंडिया	८।२७८	७।२८
जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया०	८।४२३	७।११६
जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं	११।९८;१३।९०	७।३
जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो	२५।५६७	७।२४
जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगंतबाला	८।२७३	७।२८
जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो	१८।१५९	७।२०
जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से	१०।१४	७।१२६
जहा सत्तमे सए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से	१८।१३९	७।२१६
जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव	१५।१०७	१५।१०४
जहा सालीणं तहा एयाणि वि नवरं पच संवच्छराइं सेसं त चेव	६।१३०	६।१२९
जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे	१३।१०२	११।५८; राय० सू० ६७३,६७४
जहा सिवस्स जाव विब्भंगे	११।१८७	११।१७१
जहा सिवे जाव पडिगया	१५।७८	११।८२

भवित्ता जाव पव्वयामि	१३।१०८,११०	९।१६७
भविस्सइ जाव निच्चे	१०।५१	२।४५
भावियप्पणो जाव तस्स	१८।१५९	१८।१५९
भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी	१२।२१	२।५५
भिज्जति जाव काये	१३।१२८	१३।१२४
भीए जाव संजायभए	१५।६९	२।४९
भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ	२५।५३	२५।५०
भेदो सव्वो भाणियव्वो	५।६२	२।१३८
भोगा पुच्छा	७।१३४	७।१२९
मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए	१५।९८	१५।९८
मदरचूलियाए जाव पडिवुद्धे	१६।९१	१६।९१
मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि	१२।१५	२।९७
मज्झिमाइं जाव अडमाणे	१५।८२	२।१०९
मट्टिया जाव गायाइं	१५।१२९	१५।१२०
मट्टिया जाव विहरइ	१५।१३२	१५।१२०
मद्दुया जाव एव	१८।१४३	१८।१४३
०मणुस्स जाव वधे	८।३६८	८।३६८
मणुस्साउए वि एव चेव, देवा जहा नेरइया	१।११५	१।११५
मणुस्साउयं दुविहं	५।६२	प० १
मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवरं सिद्धवज्जा भाणियव्वा	१।३८०,३८१	१।३७५,३७६
मणुस्सा जहा जीवा	७।४६	७।४२
मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्त जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खण आहारेंति सेस जहा नेरइयाणं जाव वेयणा	१।८६-९५	१।६०-६९
मणुस्सा जाव उववत्तारो	७।२०५	७।१९२
मणुस्साण जाव वेमाणियाणं	१४।३५	१४।३३
मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाण	१।१०६,१०७	१।१०४
मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया०	२।९५	वृत्ति; ओ०सू० २६; राय० सू० ६८६
महज्जुईए जाव कहिं	३।९८	३।२८

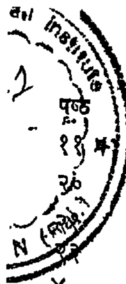
सेसं तं चेव	१४।२०	१४।१८
सेसं तं चेव	१८।१०९	१८।१०८
सेसं तं चेव जाव अंतं	१४।१०६	१४।१०२
सेसं तं चेव जाव करिस्संति	८।८९	८।८८
सेस तं चेव जाव परिट्ठावेंयव्वा	८।२४९	८।२४८
सेसं तं चेंव जाव वत्तव्व	१२।१६१	१२।१५९
सेसं तं चेव नवरं	११।६८	११।६४
सेस तं चेव सव्व०	९।१५५	९।१५१
सोइंदिए जाव फासिंदिए	१६।१८	२।७७
सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए	१।३४७;३।१९१	२।७७
सोयणयाए जाव परियावणयाए	७।११४;१२।१४	७।११४
सोहम्मकप्पउड्ढलोगखेत्तलोए जाव अच्चुय०	११।९४	अ०सू०१८९
सोहम्मकप्पो जाव कम्मासीविसे	८।९५	८।९५
हंता जाव भवइ	३।१४७	३।१४७
हट्ठ जाव हियए	९।१३९,१६४	२।४३
हट्ठ जाव हियया	५।८७;९।१४०,१४२	२।४३
हट्ठतुट्ठ	१५।२५	२।४३
हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव कूवे	११।१४८	११।१३४
हट्ठतुट्ठ जाव सद्दावेति	२।९७	२।४२; राय०सू०६९०
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	२।६८;११।१३४;१५।१३८,१५३;१८।१३८	२।४३
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।११०;५।८४;११।१३३	२।४३
हट्ठतुट्ठे जाव हियए	२।५२	२।४३
हत्थ वा जाव ऊरुं	१६।४९	१६।४९
हत्थं वा जाव ओगाहित्ता	५।११०	५।११०
हत्थ वा जाव चिट्ठति	५।१११	५।११०
हत्थ वा जाव चिट्ठित्तए	५।१११	५।११०
हत्थ वा जाव पसारेत्तए	१६।११९	१६।११८
हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे	१६।९१	१६।९१
हालाहलाए जाव पासित्ता	१५।९७	१५।८३
हियकामए जाव हिय	१५।९५	१५।९२
हिरण्णं वा जाव परिभाएउं	११।१६०	११।१५९
हीलेत्ता जाव आकड्ढ	३।४५	३।४५
हेऊहिं य जाव कीरमाणं	१५।११९	१५।११६
हेऊहिं य जाव वागरण	१५।११७	१५।११६

परिशिष्ट—२

पूरकपाठ

('नेरइया जाव वेमाणिया' तथा 'नेरइया जाव सिद्धा' का पूरक पाठ)

१. नेरइय
२. असुरकुमार
३. नागकुमार
४. सुवण्णकुमार
५ विज्जुकुमार
६. अग्गिकुमार
७. दीवकुमार
८. उदहिकुमार
९. दिसाकुमार
१० वायुकुमार
११. थणियकुमार
१२. पुढविकाइय
१३. आउकाइय
१४. तेउकाइय
१५. वाउकाइय
१६. वणस्सइकाइय
१७. वेइंदिय
१८. तेइंदिय
१९. चउरिंदिय
२०. पंचिंदिय
२१. मणुस्स
२२. वाणमंतर
२३. जोइसिय
२४. वेमाणिय
२५. सिद्ध



शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	°भय°	°भया°
[illegible]	१७	परिणामेति	परिणामेति
[illegible]	१७	मस्साणु	मणुस्सा
[illegible]	६	नेरइइ	नेरइए
४०	५	°वउत्ताय	°वउत्ते य
४०	६	वट्ठमाण	वट्टमाण
४६	२८	पुट्टं	पुट्ठ
३१	१७	वेदेति	वेदेंति
४८	२१	उड्डंजाणू	उड्ढजाणू
५१	१०	°ट्ठिति	°ट्ठितो
७७	७	दुक्तवा	दुक्खा
८९	२८	बलय°	वलय°
९३	५	तोरेइ	तीरेइ
१०३	११	°सुद्दिट्ठ°	°मुद्दिट्ठ°
१०३	१४	°बासेहिं	°वासेहिं
१०४	२४	विउलस्य	विउलस्स
११७	६	धण्मत्थि°	धम्मत्थि°
१२८	५	जारिसिया	तारिसिया
१३७	२१	ढिच्चा	ठिच्चा
१४४	२३	जंदूदीवे	जवूदीवे
१४७	११	जाव	जाव ४
१४७	१३	न० ४,५, ६	नं० ५, ६, ७
१४७	१५	जाव ७	जाव
१५१	४	असुरण्णो	अमुररण्णो
१५७	५	सहत्ण°	सहत्थ°
१६३	१८	गतित्तए	गमित्तए
१७४	२०	उड्ढावाया	उड्ढवाया
१७७	१	पलिअ	पलिओवमं
८४	३	°जोयसणसय-हस्साइं	°जोयणसय-सहस्साइ
८५	८	–वग्गणायण°	–वग्गणाठाण°
९१	६	वि, तया	तया
९१	९	°समुहस्स	°समुद्दस्स
०९	२२,२४,२५	नं० ६,७,८	न० ७,८,९
२९१	५	दीणस्सरा[१]	दीणस्सरा
		अणिट्ठस्सरा	अणिट्ठस्सरा[१]
३४०	१४	तस्स० भयणाए	यह पक्ति १६३ सूत्र के अत मे है
३४७	१८	अणादिय°	अणादीय°
४३७	१०	माइणे	माहणे
५०३	३	अज्झस्थिए	अज्झत्थिए
५२३	१७	अणुद्धय°	अणुद्धुय°
५२८	१९	सया—	राया—
५७९	१८	उवज्जति	उववज्जति
७६०	७	°गम्ममण-मारगा	°गम्ममाण-मग्गा
७७९	२५	सव्ढुव	सव्वट्ठ
७८७	१३	सजय	सजम
८२१	१४	महिंदाण	–माहिंदाण
९२०	१२	सेलोसि°	सेलेसि°

पाठान्तर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	परित्थणो°	परित्थणे°
२६	५	अणू°	अणु
३६	१०	अते	अत
८६	११	°भोति	°भोती
९३	२	(७१३)	(७।१३)
९८	६	मणूस्सा	मणुस्सा
१००	४	अहियजिय	अहियुजिय
१०३	१२	त्रैर्युक्ता	तैर्युक्ता
११२	१	°द्वयोवर्नायो°	द्वयोर्वाचनयो°
११२	९	चउव्वीसाए	चउव्वीसाए
१४४	१२	एतदवर्णन'''सन्निभि	एतद्वर्णन'''सन्निभ
१६०	३	टितिय	तितिय
१८६	१	व्मायु	°मायु
२००	४ प०१	हरिणेगमेसि	णेगमेसि
२००	४	र्वाचनायोः	र्वाचनयो
२१०	९, १-९	१-१०	९, १-९
४८५	२	प्रमो°	प्रथमो°
५१६	११	पडिबुद्ध	पडिबुद्धा
८९५	३	°षठ	षष्ठ°